श्री

जैनकथारत्नकोष

भाग त्रीजो.

आ पुस्तकमां

मोहविवेकनो रास तथा श्रीधर्मनाथनुं स्तवन

अने

श्रीसम्यक्त्वसित्तरी ग्रंथ मूल, बालावबोध तथा प्रत्येक बोल उपर आवेली दार्ष्टांतिक कथाओ सहित छे.

ते ग्रंथो

समस्त साधु श्रावक वर्गने भणवा वांचवा माटे घणाज उपयोगी जाणीने

श्रावक भीमसिंह माणके

श्रीमोहमयी पत्तन मध्ये

निर्णयसागर नामना मुद्रालयमां मुद्रित कराव्यो छे.

संवत १९४६ सने १८९०

श्री जैनकथारत्नकोष.

नाग त्रीजो.

प्रस्तावना.

आ श्रीजैनकथा रत्नकोष नामना पुस्तकनो त्रीजो नाग गपीने प्रसिद्धतामां मूकेलो ठे, जेमां प्रथम अत्युत्तम मोहविवेकनो रास गपेलो ठे, जेनी अंदर उपमितिनवप्रपंच नामना ग्रंथनी माफक विवध प्रकारें मोह राजा तथा कर्म परिणाम राजा अने तेमनां कुटुंबादिकनुं तथा धर्म परिणामराजा अने सम्यग्दर्शन नामें प्रधान तेमज विवेकादिक वगेरेनुं वर्णन करेलुं ठे, ते वांचवाथी वांचनारने यथार्थ संसारस्वरूप स्वतः जाणवामां आवशे.

ते पठी बीजो ग्रंथ महोपाध्याय श्रीविनयविजयजी विरचित श्रीधर्मनाथजीनुं स्तवन १३० गाथानुं दाखल करेलुं ठे. ते ग्रंथ पण उपलाज ग्रंथने घणुं करी मलता विषयवालोज ठे. ते पठी त्रीजो ग्रंथ दर्शनसित्तरी नामे ठे. ते ग्रंथमां समकेतनी चार सद्दहणा आदिक सडशठ बोलनुं सविस्तर वर्णन करेलुं ठे, अने ते वली प्रत्येक बोलनी उपर घणीज रसिक अने हावेहूब तेज विषयने दर्शावनारी तादृश उपदेशनी सूचक एवी महोटा महोटा प्रानाविक पुरुषोनी कथाउ आवेलीउ ठे, तेथी ते वांचवाथी वांचनारने अपूर्व बोध थयाविना रहेशेज नहिं, एवा महा आनंदकारी पूर्वोक्त ए ग्रंथो एतत्पुस्तक गत मुद्रित करेला ठे.

दर्शनसित्तरी ग्रंथनी एकज प्रत महारी पासें घणीज अशुद्ध लखेली होवाथी तेने शुद्ध करी गपवाने अर्थें बीजी प्रत मेलववा माटे घणोज प्र

यत्न कर्यो परंतु क्यांहिथी प्रत मली शकी नहीं माटे एकज प्रत उपरथी म्हारी यथाशक्ति शोधन करीने ए ग्रंथ छाप्यो छे तथा वली ए ग्रंथमां साक्षी दाखल अनेक स्थले जूदा जूदा शास्त्रोनी गाथाउ अने श्लोको मागधी भाषा तथा सस्कृत भाषामां आवेला छे, तेने शुद्ध करवा माटे कोइ पण साहामी प्रत नही मलवाथी तेमां अशुद्धताना दोष साधारण वाचनार साहेबोने पण दीठामां आवशे तो चतुरजनोने दीठामां आवे तेमां तो कहेवुंज शुं ? माटे महान्पुरुषो म्हारामां ग्रंथ शोधन करवानी हानशक्ति जाणता छतां पण म्हारी उपर अप्रियता न आणतां पोतें सुधारी वाचशे अने हुं म्हाराथी थयेली भूलोने माटे समस्त वांचनारा साहेबोनी समक्ष म्हारा शुद्ध अंतःकरणथी मिछ्छाडुक्कड देउं छुं.

दर्शनसित्तरी ग्रंथने कथाउ सहित बराबर धारणामां राखवाथी समकेतना सडसठ बोल मांहेला कया कया बोल कया कया सम्यक्दृष्टि जनोमां पामीयें? एवुं अनुमान करवानी शक्ति आदिक बीजा पण मोक्षमार्गना साधनने प्राप्त करावनारा एवा अनेक उत्तम गुणोनो लाभ थवाथी दूर रहेवाने लीधे यशंकीर्त्तिनी वृद्धि होवाथी आ भवमां पण सर्व सज्जनोमां अग्रेसरनी पदवीने पामशे. ए ग्रंथमां केटली कथाउ छे अने ते कया कया उत्तम जनोनी छे? इत्यादि बाबतो जो सामान्यथी जाणवी होय तो ते पासेना पानामां अनुक्रमणिका जोवाथी जाणवामां आवशे.

मोहविवेकनो रास घणुकरी मारवाडदेशमां रचेलो होवाथी तेमां आवेली भाषा पण घणी खरी मारवाडदेशनेज मलती होवाथी ते भाषामां हुं विशेषे करी अजाण होवाने लीधे तेम वली ए ग्रंथनी मात्र एकज प्रत म्हारा हस्तगत होवाथी वधारे शुद्धता करवानुं माहाराथी बनी शक्युं नथी.

आ ग्रंथो केवा रसिक छे, ते विषेनी तारीफ मारा मोढाथी नहिं करवा रकतां हुं एम धारुं छुं के सुज्ञ वांचनाराउ पोतेज ते ग्रंथो वांचवाथी तेनी तारीफ कर्या वगर रहेशे नहि. किंबहुविलेखनेन शुभमस्तु.

अस्य पुस्तकस्यानुक्रमणिका.

प्रथम मोहविवेकना रासनी अनुक्रमणिका.

त्रीजो ग्रंथ सम्यक्त्व सप्ततिका बालावबोध तथा कथासहित छे, तेनी अनुक्र०

॥ अथ ॥

॥ पंमित श्रीधर्ममंदिर विरचित श्रीमोहविवेकनो रास प्रारंभः ॥

तत्र प्रथम खंमः

॥ दोहा ॥

॥ चिदानंद चित चाहशुं, प्रणमुं प्रथमोल्लास ॥ तेज तमस जींत्यां जिणे, लोकालोक प्रकाश ॥ १ ॥ गुण अनंत गुरुजन तणा, दयाकुशल नंमार ॥ ज्ञान दान दीये जिके, ते प्रणमुं सुखकार ॥ २ ॥ ज्ञान वडुं संसारमां, ज्ञान ज्योति जगमांय ॥ ज्ञान देव दिलमां धरुं, ज्ञान कल्पतरु बाय ॥ ३ ॥ अनंत सिद्धमां ज्योति ए, साधारण महाधाम ॥ मुनि मनपंकजमां धरे, सारे वंबित काम ॥४॥ ज्ञानी पण वचनें करी, कही न शके जसु पार ॥ आतम अनुनवशुं लहे, चिदानंद विस्तार ॥ ५ ॥ कर्म जाति बहु वर्गणा, फिर रही बे जसु पास ॥ पण तेहने लागे नहिं, ज्युं रविवादल रास ॥ ६ ॥ पुण्यपापथी ए नहिं, अनुपम ज्योति अनंग ॥ जन्म कह्यो जोगीसरें, उदासीनता संग ॥ ७ ॥ चन्द्र दीप मणि नानुनी, ज्योति देशथी होय ॥ जडता दाहकता तिहां, इहां कलंक न कोय ॥ ८ ॥ नोग मांहि वसतां थकां, पहोंचाड्या इण पार ॥ क्रोड वर्ष कष्टें करी, न तख्या बहु संसार ॥ ए ॥ काम क्रोध न रहे तिहां, जिहां जागी ए ज्योत ॥ बालबुद्धि जाणे नहिं, नवजल तारण पोत ॥ १० ॥ नाद वाद तप मौन धर, आसन आश निरोध ॥ इणशुं नर लाने नहिं, स्वानाविक ए बोध ॥ ११॥ नमो नमो सरस्वति नणी, कर्म अलुखता दूर ॥ नानिपुत्र ब्रह्माथकी, उपनी अनुपम नूर ॥ १२ ॥ निर्मल मानससर वसे, अवर मूकी परिवार ॥ हंस केलि त्यां नित करे, सरस्वति वाहन सार ॥ १३ ॥ ते सरस्वति आतम निकट, वहे रहे निश दीस ॥ अवर कोइ जाणे नहिं, इक जाणे योगीश ॥१४॥ नीच गमन पाषाण बहु, जडता जाल प्रकार ॥ अवर नदी दूषण घणां, ए निर्मल निर्धार ॥१५॥ जिन वाणी सरस्वति कही, बीजी सरस्वति नांही ॥ नव्य लोकहितकारिणी, जयवंती जगमांही ॥१६॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ नमणी खमणी ने मनगमणी ॥ ए देशी ॥ श्रीजयशेखर आखे सुरि न्दा, सुणजो रोचक नविजन वृंदा ॥ अध्यातमनो ए अधिकार, मीठो मा नुं अमृतधार ॥ १ ॥ मूरख मोहदशामां राचे, लौकिक चतुर कथा करि माचे ॥ कही परने ज्ञान दिखावे, आप प्रबोधमां कबहुं नावे ॥ २ ॥ पढि गुण ग्रंथ वडाई पाइ, शान्ति दशा मनमें कबु नांइ ॥ ज्युं नइक गज मो ती धारे, पण तेहना गुण फल न विचारे ॥ ३ ॥ शृंगारमां बहु बे नर र सिया, शान्तितणे घर विरला वसिया ॥ शीत तापमां बहु दिन होई, शुन जाणे मेरे दिन कोइ ॥ ४ ॥ अग्नि पडे जे पब्बरसेंती, बहुला लाने धरती सेंती ॥ चन्इकान्ते जे अमृत वरसे, तेहवो समरस विरलो फरसे ॥ ५ ॥ अणवाव्यां पण वननां धान, उपजे निपजे को नहिं मान ॥ शालिनां जतन घणां वलि कीजें, उत्तम लोकां आदर दीजें ॥ ६ ॥ सम रस शालि सरीखो जाणो, बीजा रस तुब मनमां आणो ॥ समरस अनुनवतां सु खदाइ, बीजा रस डुःख राचे नाइ ॥ ७ ॥ उत्तम नर उत्तम कुल जायो, तिण ए नाग्यसंयोगें पायो ॥ मूढ लोक बीजा रस सेवे, अंतरदृष्टि ते कब हुं न देवे ॥ ८ ॥ साचो रस समरस रस राजा, शिवसुख अमृत आपे ताजा ॥ कविन कषाय विकार विदारे, जे सेवे तसु पार उतारे ॥ ए ॥ वन ताडीना मूकी तमासा, पुजल परणन परणी वासा ॥ जूठी रामत जूठा पासा, होय रह्या कांय परना दासा ॥ १० ॥ अत्तरवास सुवासमां ली णा, ते नर जगमां जाण प्रवीणा ॥ मनगज समता अंकुश दीजें, अध्या तम अमृत रस पीजें ॥ ११ ॥ विवेक वीरनो वास वसीजें, समता रसनो स्वाद लहीजें ॥ बीजा रस कूचा जाणीजें, नरनव केरो लाहो लीजें ॥ १२ ॥ शान्ति शिरोमणि नवरसमांहि, गावो तसु गुण मन उन्नाहि ॥ ए सेवंतां शिवसुख आवे, मोह महिपतिनो नय जावे ॥ १३ ॥ काम अ ग्नि बीजा रस बाले, समता रस साहामो न निहाले ॥ वीर विवेक परस्प र प्यारो, मोह रायने ए रस खारो ॥ १४ ॥ अध्यातम शैलीनो साचो, रा जनीतिमां नहिं जे काचो ॥ कोविद कविता गुणनो धारी, ते इण ग्रंथत णो अधिकारी ॥ १५ ॥ पहेली ढालें शान्तरस गायो, उदासीन में मंदिर पायो ॥ नूर नविक जन मनमां नायो, धर्ममंदिर कहे सुख सवायो ॥ १६ ॥

॥ दोहो ॥

॥ आचारिज कहे सांजलो, शान्तिरसक जे होय ॥ तेंहतणां लक्षण कहुं, परखेजो सहु कोय ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ आनंद समकित उच्चरे रे लाल ॥ ए देशी ॥ शान्ति सदा रस सेवियें रें लाल, कीजें एहशुं प्रीत सुखकारी रे ॥ ब्रह्म मुहूर्त्त प्रातनो रे लाल, तिहां कीजें एह रीत सुखकारी रे ॥ शांति सदा रस सेवियें रे लाल ॥१॥ आलस निद्रा बे तजे रे लाल,आत्मचिन्तक होय सु० ॥ स्थिर मन तन वचने करी रे लाल,ज्ञान नयनशुं जोय सु० ॥शां०॥२॥ कामीनेंवादी हुवे रे लाल, दंनी लोनी लोल सु० ॥ बहिर्मुखी कुमती सदा रे लाल,गीत गायन रंग रोल सु०॥शां०॥३॥ मुंजाणो इन्द्रिय विषे रे लाल,मानी क्रोधनो गेह सु०॥ विश्वासघाती वक्रता रे लाल, तुरत दिखावे छेह सु० ॥ शां० ॥ ४ ॥ एवा दोष जिहां नहिं रे लाल, तेहिज पुरुष प्रधान सु० ॥ रोष धरे नहिं दूहव्या रे लाल, मान दीयां नहि मान सु० ॥ शां० ॥ ५ ॥ हुं कुण क्यांथी आवियो रे लाल, कुण छे माहरुं रूप सु० ॥ मित्र शत्रु कुण माहरा रे लाल, मोह माया ए कूप सु० ॥ शां० ॥ ६ ॥ संबल सार्थें शुं हशे रे लाल, कइ ज्योतिमां जाय सु० ॥ वैराग्यें मन वालियुं रे लाल, इम आतमशुं धाय सु० ॥ शां० ॥ ७ ॥ द्रव्य नयातम आतमा रे लाल, एक निश्चें नहिं नेद सु० ॥ व्यवहारे बहु नेद छे रे लाल,तिणमांहे नव खेद सु० ॥ शां० ॥८॥ अंतरंग बहिरंगना रे लाल, धर्म पटंतर जोय सु० ॥ परमाणु मेरु शैलनो रे लाल, एवडो अंतर होय सु० ॥ शां० ॥ ए ॥ काने पाप सुणे नहिं रे लाल, परदोष देखे न कोय सु० ॥ पंमित पण मौनता नजे रे लाल, सम रस साधे सोय सु० ॥ शां० ॥ १० ॥ साध्य दशा साधक नजे रे लाल, अन्यासे नर जेह सु० ॥ इन्द्रियनी वृत्ति वश हुवे रे लाल,देखे स्वरूपने तेह सु० ॥ शां० ॥ ११ ॥ बहिरातमता मूकीने रे लाल, अंतर आतम लीन सु० ॥ रूपातीत ध्यान धावता रे लाल, मूक प्रथम ध्यान तीन सु० ॥ शां० ॥ १२ ॥ ते परमातमता नजे रे लाल, सम रस साधक जेह सु० ॥ दोष सकल दूरें हूवे रे लाल, आवे ज्ञान अछेह सु० ॥ शां० ॥ १३ ॥ बिहुं नेदें सहु जीव छे रे लाल, नव्य अनव्य प्रकार सु० ॥ नव्य ते सिद्ध

होशे सही रे लाल, अभव्य फिरे संसार सु० ॥ शां० ॥ १४ ॥ सिद्ध ते तीन प्रकार छे रे लाल, दूर आसन ने मद्ध सु० ॥ पुजल अर्द्ध सीजशे रे लाल, अंतरे कहियें सिद्ध सु० ॥ शां० ॥१५ ॥ अंतर मुहूर्त्त सीजशे रे लाल, ते आसन कहाय सु० ॥ ए बेहु विच जे हुवे रे लाल, मध्यम सिद्ध सुहाय सु० ॥ शां० ॥ १६ ॥ इहां मध्यम सिद्धनो कहुं रे लाल, आतमनो अधिकार सु० ॥ मोह विवेक हंस चेतना रे लाल, वलि एनो परिवार सु० ॥ शां० ॥ १७ ॥ भविक भणी प्रतिबोधवा रे लाल, कल्पना कीधी एम सु० ॥ यांन बोल्या पल्लव भणी रे लाल, ए पण दृष्टांत तेम सु० ॥ शां० ॥ १८ ॥ परमारथ साधन भणी रे लाल,कीजें एह उपाय सु० ॥ जन्म जरा दुःख मेटीयें रे लाल, ज्ञान लब्धि सिद्ध थाय सु० ॥ शां० ॥ १९ ॥ आतमनो अनुभव हुवे रे लाल,पाप तिमिर दुःख दूर सु० ॥ धर्ममंदिर ज्ञान सेवतां रे लाल, सासतां सुख भरपूर सु० ॥ शां०॥२०॥ सर्व गाथा ॥५३॥

॥ दोहा ॥

॥ निश्चय नय निजगुण करी,सदा विराजे एह ॥ आतम अविकारी अचल, व्यवहारियें धरि देह ॥ १ ॥ माया नारी वश कियो, चेतन राजा जेम ॥ मोह विवेक विरतंत सब, भवि जन सुणजो तेम ॥ २ ॥ वृद्ध वचन अनुसारथी, ए अधिकार करेइ ॥ बालक अटवी ऊतरे, गुरुजन हाथ धरेइ ॥ ३ ॥ पद्मनाभ भगवंतनो, शिष्य भावि अणगार ॥ धर्मरुचि नामें भलो, कहेशे सकलविचार ॥ ४ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ इमर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥ जंबुद्दीप ए जाणियें रे, गोलतणी परें होय ॥ मध्य मेरु नाभि समो रे, दीसते अरका जोय ॥ भविकजन,सुणजो ए अधिकार ॥१॥ ज्युं लाभे अनुभव सार,ज्युं पामे भवनो पार ॥भ०॥सु०॥ ए आंकणी ॥ मेरुथी दक्षिण दिश भलो रे,भरत क्षेत्र कहेवाय ॥ रत्न लाभ लोभें करी रे, समुद्र निकट रहेवाय ॥ भ० ॥ सु० ॥ २ ॥ ए अवसर्पिणीमां हुवा रे, तीन आरा बहु मान ॥ चोथा आरा छेहडे रे, हुवा श्री वर्द्धमान ॥ भ० ॥ सु० ॥ ३ ॥ सात हाथ सुप्रमाण छे रें, सोवन वरण शरीर ॥ सिंह लंछन शोभे भलो रे, जिनवर श्री महावीर ॥ भ० ॥ सु० ॥ ४ ॥ तस पद पंकज भमर ज्युं रे, सेवे श्रेणिक राय ॥ गिरुउ श्रावक गु

एों नख्यो रे, मगधेसर कहेवाय ॥ न० ॥ सु०॥५॥ राजगृही नगरीतणा रे, सघलां सुखिया लोक ॥ सौम्यदृष्टि स्वामीतणी रे, वाधे सघला थोक ॥ ॥ न० ॥ सु० ॥ ६ ॥ अरिनो नाव रथ चक्रमें रे, लाजे तेहने राज ॥ तेम प्रताप वाधे घणा रे, सारे सहुनां काज ॥ न० ॥ सु० ॥ ७ ॥ धर्म अर्थ काम तीन ए रे, साचवे समय सावधान ॥ देव परीक्षा पहोंचियो रे, दीपायो धर्मवान ॥ न० ॥ सु० ॥ ८ ॥ मीनग्राही ऋषि देखीने रे, चूको नहि सद्भाव ॥ समकित साचो राखियो रे, नवजलतारण नाव ॥ ॥ न० ॥ सु० ॥९॥ दार कुमार नाइ पुत्रनो रे, वात संबंध विचार ॥ अवर आगमथी जाणजो रे, इहां न कह्यो विस्तार ॥ न० ॥ सु० ॥ १० ॥ अरिहंत नक्ति आदें करी रे, वीश स्थानकमां केवी ॥ तीर्थंकर गोत्र बांधियुं रे, शुद्ध आतम सुविसेवी ॥ न० ॥ सु० ॥ ११ ॥ समकितधारी जे हुवे रे, अपतित धारा पाय ॥ वैमानिक वरजी करी रे, अवरगतें नवि जाय ॥ न० ॥ सु० ॥ १२ ॥ श्रेणिक समकित लानथी रे, पेहलुं बांध्युं आय ॥ ए कारण जाणो इहां रे, पहेली नरकें जाय ॥ न० ॥ सु० ॥ १३ ॥ रुंधीजें दरियावने रे, अर्जुन बाण रोकाय ॥ रुंधीजें वलि वीजली रे, कर्म उदय न रहाय ॥ न० ॥ सु० ॥ १४ ॥ स्वकृतनावना नावतो रे, निर्जर तो निज कर्म ॥ अति वेदना होशे नहिं रे, स्थिर रहेशे निज धर्म ॥ न० ॥ सु० ॥ १५ ॥ सहस्र चोराशी वर्षनो रे, पाली आयु निदान ॥ गज जिम गरता लंघशे रे, वारु वधशे वान ॥ न० ॥ सु० ॥ १६ ॥ मति श्रुत अवधि ज्ञानें करी रे, शोनतो होशे तेह ॥ अवतरशे ए नरतमां रे, अघपावकमां मेह ॥ न० ॥ सु० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूछे शिष्य किणे समे, कुण नामें जिनराय ॥ कोण गामे कोण पुर वसे, हवे गुरु कहे पसाय ॥ १ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ नल राजारे देश, होजी पिंगलहूती पलाणिया ॥ ए देशी ॥ ए अवसर्पिणी एम, होजी सघली उतरी जिण समे ॥ बीजी उत्सर्पिणी तेम, होजी वधतो समे दुःखने समे ॥ १ ॥ पेहलो आरो अति दुष्ट, होजी उतर्यो बीजो लागसी ॥ ए कांइक छे शुद्ध, होजी मेघ घणा त्यां वरससी

॥ २ ॥ नसम समी नूमि तेह, होजी ताता निवाहतणी पेरें ॥ समय स्व नावे मेह, होजी तिहां किणें शुन्न इम अनुसरे ॥ ३ ॥ पुष्करावर्त्त बहु मेह, होजी वरसशे शुन्न धारा करी ॥ त्यार पछी क्षीर जेम, होजी वरसशे घृत धारा धरी ॥ ४ ॥ मीठी धरती थाय, होजी चीकणी बहु रस सारणी ॥ प्रीतमनो संग पाय, होजी ज्युं नारी सुख धारिणी ॥ ५ ॥ वसुधा वाध्यो वान, होजी वृक्ष अंकुर प्रगट थया ॥ हर्षित हूइ जीहान, होजी वहाला मल्या ज्युं दुःख गयां ॥ ६ ॥ समय स्वनावें होय, होजी नूमि सबे वसुधारिका ॥ प्रगट्या पर्वत जोय, होजी रात्रि समे ज्युं तारिका ॥७॥ स्थिर परन्नावथी एम, होजी उपचय चय होवे सदा ॥ पुजल परणित तेम, होजी नगवंत नांख्यो इम मुदा ॥८॥ बीजो आरो बहु जाय, होजी त्रीजो आरो निकटें यदा ॥ इणिपरे नरतें थाय, होजी चढत पडत रीत ए तदा ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ मित्रप्रन्न संनूम वली, सुप्रन्न स्वयंप्रन्न तेम ॥ दत्तसूक्ष्म सुबन्धु तिम, अनुक्रमें कुलगर एम ॥ १ ॥ वैताढ्यगिरि निकटें होशे, शान्तिहार पुर नाम ॥ कुलगर होशे सातमो, सुमति नाम अन्निराम ॥ २ ॥ सुन्नागी सुखियो घणुं, नोग पुरंदर काम ॥ सुमति यथार्थ सुमतिधर, वधती होशे माम ॥ ३ ॥ तसु घर नद्रा नारजा, शील गुणे शिरदार ॥ शील सोवननी कसवटी, प्रमदा प्रेम उदार ॥ ४ ॥ पहेली नरकें पाथडो, सीमंतो इण नाम ॥ त्यांथी श्रेणिक आतमा, अवतरशे इण ठाम ॥ ५ ॥ मानसरोवर हंस ज्युं, मुक्ताफल सीपमांय ॥ नद्राकुख अवतारशुं, सुरतरु सम जसु ठाय ॥६॥ चौदे स्वप्नां देखशे, सुख सूती ते नार ॥ सुमति स्वमतिशुं आखशे, उत्तम स्वप्न विचार ॥ ७ ॥ तिण प्रस्तावें आवीने, इन्द्र कहेशे एम ॥ तीन नुवन शिरसेहरो, पुत्र होशे बहु प्रेम ॥ ८ ॥ शुन्न लक्षण कुख ताहरी, रयण वैरागर खाण ॥ मंदिरनी तुं कंदरा, गर्न्न कल्पतरु जाण ॥ ए ॥ सुर नर किन्नर मधुप गण, जस पद पंकज लीन ॥ प्रथम तीर्थंकर होयशे, अधिक अधिक परवीण ॥ १० ॥ एम कही इन्द्र गया पछी, हर्षित तन मन होय ॥ गर्न्नतणी रक्षा करे, पथ्य नोजन ले जोय ॥ ११ ॥ तब दोहला पूरा होशे, गर्न्नतणे अनुसार ॥ नव मासे अधिके थये, सुत होशे सुखकार ॥ १२ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ एक दिन दासी दोडती, आइ कुसने पासरे ॥ ए देशी॥ छप्पन दिशनी कुंवरी मिली, साचवे निज निज कम्म रे ॥ आसन कंपे अविधें करी, जाणियो जिनवर जम्म रे ॥१॥ जगतगुरु जनमिया शुन्नदिने, सुमति घर उत्सव थाय रे ॥ नारकी पण सुख पामियो, गायो सुरवधू आय रे ॥ जगतगुरु जनमिया० ॥ २ ॥ पद्म वासा वसवा नणी, पद्मनी वृष्टि बहु होय रे ॥ देवता नक्ति नावे करी, समकित बीज पण बोय रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ चोसठ सुरपति आवशे, मेरु शिखरें लेइ जाय रे ॥ जन्मोत्सव विविधें करी, पुण्यनो लान लेवाय रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ आनंद उलट न्नावशुं, पूजा रची बहु प्रेम रे ॥ मातानी पास आणी धरे, कहे होजो कुशल नें क्षेम रे ॥ ज० ॥५॥ हेमनी कोडी त्यां वरसीने, देवता स्थानक जाय रे ॥ मात ने तात मन हरखियां, निरखियो पुत्र सुहाय रें ॥ ज० ॥ ६ ॥ पद्मनी वृष्टि पुहवी तले, पग पग हुइ अन्निराम रे ॥ एहनो अर्थ मन आणीने, होयशे पद्मनान नाम रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ मानवी दानवी देव ए, पालियें लालियें तेम रे ॥ अंगुष्ठ पान पीयूषथी, तनुतणी पुष्टता एम रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ अंकथी अंक अपछर घणी, हाथथी हाथ वली लेइ रें ॥ कोड कर होड कर खेलवे, सुरवधू नरवधू केइ रे ॥ ज० ॥ ए ॥ बालकरूप धरी देवता, खेलशे तेहनी साथ रे ॥ हर्ष धारे मनमां घणो, सहजशुं जो ग्रहे हाथ रे ॥ ज० ॥ १० ॥ आठ वरसना हुया जिसे, आपथी पंम्ति एह रे ॥ तात इम जाणीने तेहने, राज देशे बहु नेह रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ तरुणता संपदा साहिबी, अंतर एह त्रिदोष रे ॥ पथ्यन्नोजन उदासीनता, जे धरे तास बहु तोष रे ॥ ज० ॥ १२ ॥ उद्यम देश साधनतणो, कीयो तिणे तिण समे आय रे ॥ पूर्णनइ माणिन्नइ देवता, सेनानी तसु थाय रे ॥ ज० ॥ १३ ॥ युद्धनुं काम ते सुर करे, अनुपम पुण्य पमूर रे ॥ दानव मानच देवता, सेवशे आवि हजूर रे ॥ ज० ॥ १४ ॥ देवसेना नाम तव थयो, नुवनमां नूरि विख्यात रे ॥ पुत्रसम प्रेमें प्रजा पालतो, धारतो राज्यंग सात रे ॥ ज० ॥१५॥

॥ दोहा ॥

॥ इक दिन सेवक वीनवे, सुण स्वामी सस्नेह ॥ मयगल मस्तो मनहरु, शैलोपम सम देह ॥ १ ॥ चन्डतणी परें ऊजलो, चार दंत गजराज ॥

आज राज आव्यो अछे, रिपु गण वटिका वाज ॥ २ ॥ नवि जाणुं आयो कवा, किण प्रेख्यो किण हेत ॥ इन्द्र कीधुं तुऊ नेटणो, मूक्यो ए गज सेत ॥ ३ ॥ हाथी घणा तुम राजमां, ए सम को नहिं एक ॥ हस्तीशालायें आवियो, आपथी धरि सुविवेक ॥ ४ ॥ राजा आव्यो त्यां किणे, सेवकनां सुणी वयण ॥ हस्ती रयण दीठो खरो, आनंद पायो नयण ॥ ५ ॥ उपयोगें करी निरखियो, नगवंत ज्ञान विशेष ॥ वैताढ्य वनवासी करी, नाठो दवने देख ॥ ६ ॥ बहु शुन लक्षण देखीने, पटहस्ती राय कीध ॥ तसु बेसी फिरशे धरा, विमलवाहन नाम दीध ॥ ७ ॥ पद्मनान देवसेन वली, विमलवाहन त्रण नाम ॥ अर्थ युक्त इणि परें होशे, नोगवशे सुख काम ॥ ८ ॥ नोग कर्म खपवा नणी, केवल करशो राज ॥ पुण्य पाप विण नोगव्यां, न लहे धर्म जहाज ॥ ए ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ रसियाना गीतनी देशी ॥ ली ली लोकांतिक सुर वीनवे, सुण स्वामी अरदास ॥ सुज्ञानी ॥ राज धरा मूको हवे मूलथी, धर्म तीर्थ परगास ॥ सुज्ञानी ॥ ल० ॥ १ ॥ तुं ज्ञानी तुं ध्यानी ध्याइयें, त्यागी सागी रे होय ॥ सुज्ञानी ॥ संगी रंगी तुं कबही नहिं, शिवरूपी शिव जोय ॥ सुज्ञानी ॥ ल० ॥ २ ॥ तुं दानी तुं मानी दीपतो, वाणी सुणी हवे तेह ॥ सुज्ञानी ॥ दान धर्म दीपायो देइने, सोवन धारा रे मेह ॥ सुज्ञानी ॥ ल० ॥ ३ ॥ वरसी दान ते मेह समान छे, निवृत्ति हुइ जब तास ॥ सुज्ञानी ॥ प्रगटी सुरुचि शरद मनमां नली, निर्मल जीवन राश ॥ सुज्ञानी ॥ ल० ॥ ४ ॥ पातक पंक पलाया तिण समे, हरख्यां हंसनां वृंद ॥ सुज्ञानी ॥ सरस हुआं फल सघलां बीजशुं, विकस्यां नवि अरविंद ॥ सुज्ञानी ॥ ल० ॥ ५ ॥ मुगता मारग हुआ मनहरु, साधु नणी सुख थाय ॥ सुज्ञानी ॥ संयम लेवा उद्यम तव करे, पितृ परलोकें रे जाय ॥ सुज्ञानी ॥ ल० ॥ ६ ॥ त्रीश वर्ष पण होशे तिण समे, पुत्रने देशे रे राज ॥ सुज्ञानी ॥ दीक्षा उत्सव करशे देवता, सघला मली सुरराज ॥ सुज्ञानी ॥ ल० ॥ ७ ॥ शिबिका बेसी सुरनर वृंदशुं, नव नव नाटक साज ॥ वैरागी ॥ जय जय धन धन शब्द सहु नणे, साधो आतम काज ॥ वैरागी ॥ ल० ॥ ८ ॥ उपवन आवी शिबिकाथी उतरी, आनरण सकल उतार ॥ वैरागी ॥ नमो नमो श्री

सिद्ध जणी कहे, सावद्य सघलां निवार ॥ वैरागी ॥ ल० ॥ ए ॥ निश्चें मन आतमशुं जावता, शत्रु मित्र समता रे तास ॥ वैरागी ॥ घर्म पवन शीत सबलां जालशे, गिरि ज्युं धीरमवास ॥ वैरागी ॥ ल०॥ १० ॥ धन घाती मातीं वृक्षावली, दूर करे बल फोर ॥ वैरागी ॥ जावत ध्यान कुठार करें ग्रही, एकाकी आप जोर ॥ वैरागी ॥ ल० ॥ ११ ॥ देवता नर तीर्यंचें जे किया, सबल परिसह जेह ॥ वैरागी ॥ सहिया वहिया कर्म उदय करी, अनुलोम प्रतिलोम तेह ॥ वैरागी ॥ ल०॥१२॥ बार वरस पक्ष तेर उपर थकां, लेशे केवल ज्ञान ॥ वैरागी ॥ समवसरण करशे सुरपति तदा, जोयणनो तसु मान ॥ वैरागी ॥ ॥ ल० ॥ १३ ॥ कनक सिंहासन आदि देइ करी, प्रतिहारज अड सार ॥ वैरागी ॥ देशना देशे मधुर ध्वनियें करी, जवि जनने उपकार ॥ वैरागी ॥ ल०॥१४॥ समकित केइ देशविरत केइ, केइ ले संयम जार ॥ वैरागी ॥ संघ चतुर्विध स्थापना होयशे, धर्म उदय सुखकार ॥ वैरागी ॥ ल० ॥ १५ ॥ एकादश गणधरनी स्थापना, त्रिपदी देइरे कीध ॥ वैरागी ॥ शिष्य घणा होशे तसु सेहथें, प्रगटी आतम ऋद्धि ॥ वैरागी ॥ ल०॥१६॥ जगवंत देश विदेशें विचरशे, तारण तरण जहाज ॥ वैरागी ॥ धर्ममंदिर कहे धन वासर तिको, वांदीजें जिनराज ॥वैरागी ॥ ल०॥१७॥

॥ दोहा ॥

॥ पद्मनाज जिनवर तणो, साधु गुणे शिरदार ॥ काम क्रोध जीत्या जिणें, धर्मरुचि अणगार ॥ १ ॥ किण प्रस्तावें पूछशे, कहो स्वामी मुऊ एह ॥ केवल होशे के नहिं, मुऊ मन छे संदेह ॥२ ॥ जगवन् जांखे सुण ऋषि, सुग्राम नामें ग्राम ॥ तस उपवनमांहे तुऊे, केवल पद अजिराम ॥३॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ जरत नृप जावशुं ए ॥ ए देशी ॥ धर्मरुचि एम सांजली ए, ले जिनवर आदेश, महामुनि सेवियें ए ॥ ए टेक ॥ चाली ते तिहां जायशे ए, तसु वनने परदेश ॥ महा०॥ १ ॥ एकादशमी प्रतिमा धरी ए, ध्यान धर्यां लयलीन ॥ म० ॥ क्षपकश्रेणी क्षणमां करि ए, आवशे गुणगणें क्षीण ॥ म० ॥ २ ॥ तेरमे केवल पामशे ए, लोकालोक प्रकाश ॥ म० ॥ केवल महिमा सुर करे ए, आणी अधिक उल्लास ॥ म० ॥ ३ ॥ देवनां डुंडुजि वाजशे ए, जय जय शब्द सुहाय ॥ म० ॥ ग्रामना लोक सहु आ

वशे ए, वंदन कारण धाय ॥ म० ॥ ४ ॥ गामनो चोधरी आवशे ए, महिमा देखण काज ॥ म० ॥ चमत्कार चित पामशे ए, धन्य धन्य ऋषि राज ॥ म० ॥ ५ ॥ जाप होम कीजें घणा ए, एको न आवे देव ॥ म० ॥ अणतेड्या आवी करी ए, लाख झानें करे सेव ॥ म० ॥ ६ ॥ देवे नहिं लेवे नहिं ए, आदर न करे कोय ॥ म० ॥ दर्शन स्वप्नें दोहिलुं ए, ते सुर सेवक होय ॥ म० ॥ ७ ॥ प्रभुता जवजावें करी ए, मानव मान करेइ ॥ म० ॥ अनुपम प्रभुता एहनी ए, समता दमता धरेइ ॥ म० ॥ ८ ॥ रूडो रूप सोहामणो ए, यौवन लावण्य जोर ॥ म० ॥ तप जप तेज दिवाकरु ए, कष्ट क्रिया पण घोर ॥ म० ॥ ९ ॥ एम उल्लसित परिणामशुं ए, जाव जगति मन काम ॥ म० ॥ चरण कमल वांदी करी ए, बेसी यथायोग्य गम ॥ म० ॥ १० ॥ देशना देइ रह्या पछी ए, एकांत वेला पाय ॥ म०॥ ग्रामणी कर जोडी करी ए, पूछशे चित्त लगाय ॥ म० ॥ ११ ॥ तुम दर्शन थी पामिया ए, विस्मय वारंवार ॥ म० ॥ तमें कोण क्यांथी आविया ए, ए ऋद्धि केहे प्रकार ॥ म० ॥ १२ ॥ ते विरतंत कहीजियें ए, ज्युं मन आनंद थाय ॥ म० ॥ वचन सुधारस पीजियें ए, जवनी प्यास बुझाय ॥म० ॥ १३ ॥ देवानुप्रिय सांजलो ए, महोटुं चरित्र छे एह ॥म०॥ स्थिर मन करि शुज जावशुं ए, धर्म उपर धरि नेह ॥ म० ॥ १४ ॥ प्रथम खंम पूरो थयो ए, साते ढालें सार ॥ म० ॥ दयाकुशल पाठकवरु ए, तसु सान्निध्य सुखकार ॥ म० ॥ १५ ॥ धर्ममंदिर गणीयें कह्यो ए, पद्मनाज अधिकार ॥ म० ॥ सुणतां जणतां शिवकरु ए, श्रीसंघने जयकार ॥ म० ॥ १६ ॥

इतिश्री प्रबोधचिन्तामणौ ढालजाषाप्रबन्धे पद्मनाजजिनचरित्र धर्मरुचि मुनिमोक्षाधिकार नामा प्रथमखंमः संपूर्णः ॥१॥

॥ अथ द्वितीयखंम प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे बीजे खंम बोलशुं, आतमनो अधिकार ॥ आलस छंघ तजी करी, सुणजो जवि चित्त धार ॥ १ ॥ ग्रामणी पूछयो तेहनो, उत्तर आखें एम ॥ ऋद्धि सिद्धि जिनवर लही, धर्मरुचि कहे तेम ॥ २ ॥ स्थिर वसतां संसार पुर, नामें नगर कहाय ॥ अनंत जीव लोकें जर्यो, घृतघट केरें

न्याय ॥ ३ ॥ हूआ होशे जे अछे, ग्राम नगर नग राशि ॥ ए सहु ते पुरने अछे, एके खूणे वास ॥ ४ ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ए, पाटक तीन प्रकार ॥ उत्तम मध्यम जघन्य जीव, वसवानो व्यवहार ॥ ५ ॥ कमी कीटक आदें करी, इन्द्र अंत सहु जीव ॥ आप आपणा ठाममां, मग्न रहे निशिदीव ॥ ६ ॥ क्युं कामण इण पुर कियां, वास न छोड्यो जाय ॥ दुःख दूपण देखे घणां, तोही आवे दाय ॥ ७ ॥ अवर नयर प्रायें हुवे, वासक दे उदवास ॥ अधिकायी ए नगरनी, कदी न होवे नाश ॥ ८ ॥ आषाढा सम उदधि सहु, क्रीडा गिरिसम मेर ॥ गति आगति नाटक तिहां, होय रह्यां बहु वेर ॥ ए ॥ तिण नगरें राजा अछे, हंसराज अभिराम ॥ आत्म दृष्टी उलखे, तास कहुं गुण ग्राम ॥ १० ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ नायकानी देशी ॥ अथवा ॥ तसु घरणी मृगावती रे ॥ ए देशी ॥ संसार नगरीनो धणी रे,अनुपम रूप निधान रे सोभागी ॥ गुण तेहना कोण दाखवे रे लाल, जो करे सहस विधान रे सोभागी ॥ हंस राजा गुण सांभलो रे लाल, पावन करो निज कान रे सो० ॥ हं० ॥ १ ॥ प्रत्यक्ष केई एहना रे, गुण मणिरयण प्रकाश रे सो० ॥ केइ अगम अपार छे रे लाल, उज्ज्वल गुण हिमराश रे सो० ॥ हं० ॥ २ ॥ कोटि ज्ञानें ग्रंथें भणे रे, केइ तप तपे लाख रे सो० ॥ ते पण सकल स्वरूपने रे लाल, कही न शके मुख भाख रे सो० ॥ हं० ॥ ३ ॥ अंगुलि मेरु उपाडियें रे, बांहे समुद्र तरेय रे सो० ॥ एवा शूरा सांभल्या रे लाल, नृप गुण सहु न धरेय रे सो० ॥ हं० ॥ ४ ॥ एक समयमां संचरे रे, लोकने अंतें वेग रे सो० ॥ एक समय अवर न को अछे रे लाल, जागती जेनी तेग रे सो० ॥ हं० ॥५॥ ज्ञानसागर पण ए सही रे, समकित मोती जेथ रे सो० ॥ ग्रंथ अर्थ लहेरां घणी रे लाल, पवन विभाव छे नेथ रे सो० ॥ हं० ॥ ६ ॥ स्वाभाविक गुण जेहनो रें, केवल ज्ञान विलास रे सो० ॥ सूर्य ज्योति ज्युं जागती रे लाल, दीपावे आकाश रे सो० ॥ हं० ॥ ७ ॥ वर्णाश्रमण पण नही रे, रंग विरंग न थाय रे सो० ॥ संघयण संठाण ए नहिं रे लाल, अकल स्वरूप सुहाय रे सो० ॥ हं० ॥ ८ ॥ आर्य अनार्य ए नहिं रे, बाल न बुढो एह रे सो० ॥ जंगम स्थावर ए नहिं रे लाल, स्थूल न नहानी देह रे

सो० ॥ हं० ॥ ए ॥ रूपी रसियो ए नहिं रे, गंध न लेवे कोय रे सो० ॥ फरसे नहिं ए फरसने रे लाल, ज्योति स्वरूपी सोय रे सो० ॥ हं०॥ १० ॥ निर्मल स्फटिकतणी परें रे, निश्चय नय करी जोय रे सो० ॥ कर्म उपाधि मल्यां थयां रे लाल, बहुविधरूपी होय रे सो० ॥ हं० ॥ ११ ॥ परगुण ने वश आवीयो रे, निज गुणने वीसार रे सो० ॥ चर स्थिर सघले संचरे रे लाल, अशुद्ध योग प्रकार रे सो० ॥ हं० ॥ १२ ॥ काष्ठमां पावक पाइ यें रे, तिलमां तेल ज्युं होय रे सो० ॥ गोरसमां घी भालियें रे लाल, मा टीमां हेम होय रे सो० ॥ हं० ॥ १३ ॥ क्षीर नीर न्यायें करी रे, होय र ह्यो एक मेक रे सो० ॥ देहमांहे रह्यो उलखे रे लाल, जसु हैडे सुविवेक रे सो० ॥ हं० ॥ १४ ॥ पंचभूत भेलां करे रे, नाम कर्म वश पाइ रे सो० ॥ सेनानी सूत्रधार ज्युं रे लाल, सेना रथंग मिलाय रे सो० ॥ हं० ॥ १५ ॥ सकल पदारथ लोकमां रे, दिखलावे छे एम रे सो० ॥ दीपक तम निशि मंदिरें रे लाल, प्रगट प्रकाशे तेम रे सो० ॥ हं० ॥ १६ ॥ कर्ता भोक्ता ए सही रे, गमनागमन विचार रे सो० ॥ जब लग कर्मे विंटियो रे लाल, तब लग ए व्यवहार रे सो० ॥ हं० ॥ १७ ॥ एह विना जग शून्य छे रे, चंड विना जेम रात रे सो० ॥ वदन कमल नयणा विना रे लाल, शोभे नहिं तिल मात रे सो० ॥ हं०॥ १८ ॥ आतमना गुण आखिया रे, धर्म रुचि अणगार रे सो० ॥ धर्ममंदिर कहे सांभलो रे लाल, हवे पटराणी विचार रे सो० ॥ हं० ॥ १९ ॥ सर्वगाथा ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चेतना राणी रायनी, चमकी चतुरा नार ॥ प्रीतमशुं राती रहे, घ रनी जाणे सार ॥ १ ॥ संवित १ प्रज्ञा २ चेतना, ३ आतपज्योति ४ उदा र ॥ इत्यादिक जसु नाम छे, विविधरूप विस्तार ॥ २ ॥ मूल रूप केवल दशा, अनुपम महिमा निधान ॥ ज्युं कर्त्रिम तिनमें नहिं, परमास्पंद प्रधा न ॥ ३ ॥ तेह रूप आतम निकट, रहे न देखे एह ॥ ज्ञानावर्णादिक घणी, लाग रही छे खेह ॥ ४ ॥ बीजुं रूप राणीतणुं, बुद्धि इस्यो विख्यात ॥ अनंत गुणें हीणो अछे, मूल रूपथी गात ॥ ५ ॥ पांचांसुं मलती रहे, श्रवण मनन परचार ॥ भूपति करणी जे करे, बुद्धितणे अनुसार ॥ ६ ॥ बुद्धितणां बे रूप हुवे, कुबुद्धि सुबुद्धि विशेष ॥ ज्युं धरती एकरूप छे, खा

री मीठी देख ॥ ७ ॥ सुबुद्धि कुबुद्धि बेउ घरणी, व्यवहार वर्त्तण काज ॥ सूर्य छबी निशि सुख अछे, इणिपरें विधरे साज ॥ ८ ॥ सुबुद्धितणे वारे करे, नृपति उत्तम काम ॥ कुबुद्धितणे वारे करे, पापतणो जे धाम ॥ ९ ॥ सुबुद्धि शीख सुख दाखवे, राजा नावे दाय ॥ पथ्य अनें हित शीखवे, प्रायें मधुर न थाय ॥ १० ॥ कुबुद्धि नारीशुं नरपति, अहोनिश राखे रंग ॥ नदीपूर धननो धणी, ढले नीचसुं संग ॥ ११ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ बींदलीनी देशी ॥ सीता तो रूपें रूडी, जाणे आंबा माले सूडी हो ॥ सीता अति शोहे ॥ ए देशी ॥ तिण नगरीयें एक नारी, वसे माया कामणगारी हो माया मन मोहे ॥ कर्म प्रकृति नाम बीजो, आत्मदामनिका त्रीजो हो ॥ मा० ॥ १ ॥ काम कुतूहल जाणे, तिण सघला घरमें आणे हो ॥ ॥ मा० ॥ चंचल विजली जेसी, चमकंती चाले तेसी हो ॥ मा० ॥ २ ॥ नामिनी जोग नलेरी, तिम मलपे शेरी शेरी हो ॥ मा० ॥ हाव नाव बहु जाणे, तिम नरनां मन वश आणे हो ॥ मा० ॥ ३ ॥ कूड कपटनी गेह, जसु हैडानो नहिं छेह हो ॥ मा० ॥ सोले कषाय शृंगारा, सजी चाली राज डुवारा हो ॥ मा० ॥ ४ ॥ दीठो राय तिण नारी, चंचल चतुरा अति सारी हो ॥ मा० ॥ आंखतणे फुरकारे, राय कीधो आपणे सारे हो ॥ ॥ मा० ॥ ५ ॥ बिहुं राणीशुं मेल, करवा वांछे छे नेल हो ॥ मा० ॥ सुबुद्धिशुं मांही अंगीठी, करे मुखनी वात ते मीठी हो ॥ मा० ॥ ६ ॥ कुबुद्धिशुं महा प्रेम धारी, करे मांहोमांहे यारी हो ॥ मा० ॥ नव नव राग विलासा, देखावी राय कियो दासा हो ॥ मा० ॥ ७ ॥ हंस राजा वश कीधो, माया मनवंछित सीधो हो ॥ मा० ॥ अनंत दलिक पुण्य पाप, बंधन बांध्यां बहु व्याप हो ॥ मा० ॥ ८ ॥ राजा मन नवि कोपे, नव नवली प्रीति आरोपे हो ॥ मा० ॥ बांध्यो पण वडवेगी, जायें सिद्ध शीला लग तेगी हो ॥ मा० ॥ ९ ॥ नरता ने नंनेरे, सद्बुद्धिशुं मनसा फेरे हो ॥ मा० ॥ माया कुबुद्धितणो एकारो, अबे सुबुद्धितणो वसे वारो हो ॥ मा० ॥ १० ॥ मायानुं कह्युं माने, सद्बुद्धिने कीधां काने हो ॥ मा० ॥ डुर्बुद्धिशुं घणी प्रीत, वली मायाशुं घर रीत हो ॥ मा० ॥ ११ ॥ राजा आगल माया, डुर्बुद्धि गुण वदे सवाया हो ॥मा०॥ डुर्बुद्धि माया मलियां, अहनिश माणो

रंग रलियां हो ॥ मा० ॥ १२ ॥ सुबुद्धिने वारें वासे, पियु नावे तेहनी पासें हो ॥ मा० ॥ सुबुद्धिने को नहिं मान, मायानो वाध्यो वान हो ॥ ॥ मा० ॥ १३ ॥ सुबुद्धि राणी इम ध्यावे, हवे प्रीतम हाथ न आवे हो ॥ मा० ॥ साची वात ए जोइ, लोक परघरभंजा होइ हो ॥ मा० ॥ १४॥ बेहेनड शोक्य ए मेरी, मायायें ते पण फेरी हो ॥ मा० ॥ घरनो भेद ए नारी, तिण कांइ न फेरे सारी हो ॥ मा० ॥ १५ ॥ बे नारी बे पासी, इ णथी हुं जाउं नासी हो ॥ मा० ॥ कामण करी पियु बांध्यो, तनु बगड्यो अन्न ज्युं रांध्यो हो ॥ मा० ॥ १६ ॥ नारी चरित्र बे भारी, मो विण कु ण जाणणहारी हो ॥ मा० ॥ नृपने सकल बतावुं, जो अवसर सखरुं पा वुं हो ॥ मा० ॥ १७ ॥ अवसर औषध लीजें, नवले तप क्युंही न दीजें हो ॥ मा० ॥ अवसर नदियां तरियें, नव पूर न भरवा करियें हो ॥ मा० ॥ १८ ॥ अवसर वेढ निवारे, बुध तेहिज वेला विचारे हो ॥ मा० ॥ सुबु द्धि इस्युं मन आणी, कोइने न कही हित वाणी हो ॥ मा० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मायाथी सुख सेवतां, पुत्र थयो परधान ॥ मोह नाम जग परगडो, वाध्यो सघले वान ॥ १ ॥ मोहथकी माया हवे, मायाथी मोह जाण ॥ अशुद्ध निश्चय नय जोवतां, कर्मतणी ए खाण ॥ २ ॥ बीजथकी सहकार बे, सहकारें बीज जोय ॥ पर्वथकी इक्षु नीपजे, इक्षुथकी पर्व होय ॥ ३ ॥ बगलांथी इंमां हुवे, इंमांथी बग देख ॥ ए अनादि संबंध बे, व्यवहारें बहु भेख ॥ ४ ॥ दुर्बुद्धिने वह्नभ घणुं, खेलावे धरि कोड ॥ मोह कुंवर मनोह र थयो, बीजो नावे जोड ॥ ५ ॥ माया दुर्बुद्धि एणी परें, मोह वधारे दो य ॥ नवि जाणे को पुत्र ए, बीहुंमें कहेनो होय ॥ ६ ॥ सहजे मेलो मोह ए, जनकजणी करे द्रोह ॥ हेतविना सहु लोकशुं, वैर वधारे मोह ॥ ७ ॥ पामातुर नरने सदा, मीठी खाज सुहाय ॥ पण ते दुःखदायक घणुं, मो ह इसी पेरें थाय ॥ ८ ॥ दुर्बुद्धि माया मोह मली, केद कियो हंसराय ॥ तेह दशा हवे वर्णवे, सहु सुणजो मन लाय ॥ ९ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ चरणाली चामुंम रण चढे ॥ ए देशी ॥ नायक लायक बे घणुं, पडियो परवश जायो रे ॥ जुआरी पर हारियो, ऋद्धितणो व्यवसायो रे ॥ नायक०

॥ १ ॥ दिन उगें ज्युं चन्द्रमा, हिम पड्यां ज्युं वृक्षो रे ॥ कान्तिकला ज्युं हीन ए, हूतो अति हि दक्षो रे ॥ नायक० ॥ २ ॥ निर्लक्षण नारी मल्यां, एक फजेती जोयो रे ॥ रंक भयो रजवट गयो, घेहलानी परें होयो रे ॥ ॥ नायक० ॥ ३ ॥ मूढ भयो मद आलसु, मूक भयो वली अंधो रे ॥ बो बडो बोखो लघु भयो, मायाने प्रतिबंधो रे ॥ नायक० ॥ ४ ॥ मोह मा हा मद प्रेरियो, सूक्ष्म निगोदें जायो रे ॥ वली बादर निगोदमां, अनंत काल रहिवायो रे ॥ नायक० ॥ ५ ॥ पृथ्वी पाणीमां ते उपजे, वाय वन स्पति तेमो रे ॥ सूक्ष्म बादर बे भम्यो, असंख्याता भव एमो रे नाय ॥ क०॥ ६ ॥ क्रमी कीटक कुंथु भयो, कीटिका भ्रमर पतंगो रे ॥ विकलेन्द्रि यमां बहु भम्यो, माया मानिनी संगो रे ॥ नायक० ॥ ७ ॥ उरपरि भुज परि खेचरा, जलचर जीव विशेखो रे ॥ पंचेन्द्रिय तिर्यंचना, भवनो के हो लेखो रे ॥ नायक० ॥ ८ ॥ साथ हुइ माया नारी, साते नरक देखा य रे ॥ वायुवशें ज्युं पानडुं, जल थल सघले जाय रे ॥ नायक० ॥ ए ॥ हंस विचारे एकदा, किमही माया जायो रे ॥ नागी बांहतणी परें, लाग रही गल धायो रे ॥ नायक० ॥ १० ॥ अनंत काल भव पंथ छे, पंथी सम नृप जायो रे ॥ फरतां थाको एकदा, नरवपु पुरमां आयो रे ॥ नायक० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पुर पेसंतां इक मल्यो, मनरूप बालक कोय ॥ आलिंगन आवी दी यो, शकुन भलुं ए होय ॥ १ ॥ अति सूक्ष्म तनु जेहनुं, सुंदर चंचलरूप ॥ आलस नहिं उद्यमधरु, इम चिन्ते मन भूप ॥ २ ॥ पांचे इन्द्रियनी क्रिया, मालम करशे मोही ॥ परपंची परधान ए, होशे राजनी सोही ॥ ३ ॥ इम जाणी आदर दियो, माथे फेरी हाथ ॥ मधुर वचन बतलाइने, तुर त लियो ते साथ ॥ ४ ॥ औदारिक पुद्‌गल ग्रही, तनु पुर वास वसाय ॥ प्राण उदान अपान वली, इत्यादिक पंच वाय ॥ ५ ॥ व्यापारी महोटा जिहां, पांचे इन्द्रिय सार ॥ आणी तेह वसाड्या, नगर हुउ शिरदार ॥ ६ ॥ इंमा पिंगला नारी तिहां, राय मार्गे सुखदाय ॥ नव द्वारें करी शोभतो, भुजअर्गल कहेवाय ॥ ७ ॥ सातुं धात कपाट वली, निपजाया बहु मान ॥ जब मन परजापति थयो, तब कीनो परधान ॥ ८ ॥ माया महिला रायनो, क्षण इक न तजे साथ ॥ इण कारण अधिकार सब, मान प्रधानने हाथ ॥ ए ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ धणरा ढोला एना गीतनी देशी ॥ इण अवसर हवे एकदा रे, रूठी माया नारी॥मनना मान्या ॥ प्रीतमशुं कलहो करे रे, मानवती निर्धार ॥ मनना मान्या ॥ कह्युं कीजें हो सुजाण कह्युं कीजें, नीच मायाशुं मोहिनी उतार ॥ मनना मान्या ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सुबुद्धि कहे कर जोडिने रे, सांजल तुं नरतार ॥ म० ॥ एह दशा तुमची नहीं रें, आपो आप विचार ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ २ ॥ पंमित तुं जग परगडो रे, नीचशुं संग निवार ॥ म० ॥ हुं नारी तुमने कहुं रे, तेह नहिं व्यवहार ॥ म० ॥ ॥ कह्युं० ॥ ३ ॥ व्यसन वगोवे वाहला रे, उत्तमने पण एह ॥ म० ॥ मुख मीठा धीठा जिके रे, अंत दिखावे छेह ॥ म० ॥ क० ॥ ४ ॥ नोला तो नूले सदा रे, एह अनादिनी रीत ॥ म० ॥ पंमितही जो पांतरे रे, क्युं रहेशे शुन नीत ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ ५ ॥ तुं उत्तम शिरसेहरो रे, नेहडो इणशुं निवार ॥ म० ॥ नीच कीचमां इहां रहे रे, निज पदने संनार ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ ६ ॥ घरणी परणी जे तजे रे, क्षत ऊपर ए खार ॥ म० ॥ प्रीतम पल्लव झालीने रे, वीनवुं वारंवार ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ ७ ॥ चातुर पण आतुर सदा रे, कर्म उदय वश होय ॥ म० ॥ पण कबही पाठी लिये रे, आप विचारी जोय ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ ८ ॥ तें शिर चाढी एहने रे, घरधणियाणी कीध॥ म०॥ चारवाकमती हशे रे, घरनो नेद इण दीध ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ ए ॥ पोषी पण द्वेषी नइ रे, शोषी नहिं ए लगार ॥ म० ॥ दूध नुजंगी पाइयें रे, वाध्यो विषनो नार ॥ म० ॥ कह्युं० ॥१०॥ मधुबिन्दु सम सुख देइने रे, दे डुःख मेरुसमान ॥म०॥ हठ करे शठ नावें चढी रे, वाध्युं अति अनिमान ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ ११ ॥ विषवेली व्याली कीधुं रे, झाली पावक जाल ॥ म०॥ ए पातकथी नवि टले रें, पाप सरोवर पाल ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ १२ ॥ पाणीथी पावक कीधो रे, अमृतथी विष थाय ॥ म० ॥ अंगारा वरसे चन्द्रथी रे, रविथी तम प्रगटाय ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ १३ ॥ धूल उडे सागरथकी रे, पथ्यथकी थाय रोग ॥ म० ॥ वर स्वरूपी तो नणी रे, एह कर्मनो योग ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ १४ ॥ पाप क्रिया जे ए करे रे, तसु नोक्ता तुं थाय ॥ म० ॥ रागवशें जाणे नहिं रे, ए कामण कहेवाय ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ १५ ॥ एहनो शील शठ एहवो रे,ज्युं

कायरनी बांह ॥म०॥ कमल नाल पुण ते धरो रे, वली वादलनी गंह ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ १६ ॥ वेन्नुघर रायन्नुज जिमे रे, खल वाणी वारि तेह ॥ म० ॥ मुख मीठी ए हठी खरी रे, निपट नहिं जसु नेह ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ १७ ॥ तीन न्नुवनत्रायक हतुं रे, बल तहारुं ते केथ ॥ म० ॥ प्रन्नुता ते ताहरी किहां रे, रंक थयो रह्यो एथ ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ १८ ॥ प्रायः स्त्री जगमां अछे रे, रांढुं विण पगपाश ॥ म० ॥ रात विना अंधकार ए रे, पुरुष न्नणी करे दास ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ १९ ॥ पाणी विना ए पुरुष ठे रे, धूल विना रज लेप ॥ म० ॥ मदिरा विण मदमत्तता रे, क्युं रज नीरें क्षेप ॥ म० ॥ कह्युं० ॥ २० ॥ सुबुद्धि शीख इणि परें कही रे, प्रीतमने पर धान ॥ म० ॥ धर्ममंदिर गणि इम कहे रे, अजहुं माया मान ॥ म० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वलि राणी इम वीनवे, सुण आतम माहाराय ॥ हुं पण एहथकी मरुं, नावुं तुमचे पाय ॥ १ ॥ माया पुत्र कुपुत्र जे, मोह इस्यो जस मान ॥ तुम द्रोही किण गुण करी, जीवन प्राण समान ॥ २ ॥ माया दुर्बुद्धि कामिनी, बेहू एकज साथ ॥ बेहू तजवा योग्य ठे, सुण साहिब मुज नाथ ॥ ३ ॥ निर्माल्य फूलतणी परें, अब जो ठोडे एह ॥ राहुमुक्त ज्युं चंद्रमा, सघली शोन्न धरेह ॥ ४ ॥ हितवत्सल प्रियन्नुं कह्यो, सघली वात विचार ॥ राजा सुणि बोल्यो नहिं, चिंतवे सुबुद्धि विचार ॥ ५ ॥ प्रायः पुरुष कठोर दृढ, मन वच कायामांहिं ॥ नमती खमती प्रेमें करी, क्युंही रीझे नांहि ॥ ६ ॥ नारी सारीनी परें, तुरत फरे लही दाव ॥ कोमल कमलतणी परें, मृडु मन मुग्ध स्वन्नाव ॥ ७ ॥ नदीयां मीठां जल ग्रही, सिंधु समीपें जाय ॥ खारो जीवन खार मुख, करि तसु सहामो थाय ॥ ८ ॥ प्रीत रीत धर्म नीतिने, मूकें सगुणो स्वाम ॥ तो न्नावी न मटे सही, सहजें होसें काम ॥ ९ ॥ सुबुद्धि इस्युं मन चिंतवी, जाय रही निज ठाम ॥ संक्लेश स्थानक तजे, संत सदा सुखधाम ॥ १० ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ चूनडीनी देशी ॥ अथवा ॥ कनकमाला इम चिंतवे, प्रेखी प्रद्युम्न स्वरूप रे, मन मोह्युं अमारुं नंदना ॥ ए देशी ॥ क्षण अंतर मायामानिनी, मन मान तजीने आइ रे ॥ सूर्य द्यूति अलगी गयां, जेम यामिनी आवे धाई रे

॥ १ ॥ मन मोह्यो माया कामिनी, नीको मटको एह रे ॥ ठमके चमके पगलां भरे, चपला चमके देह रे ॥ म० ॥ २ ॥ शोक्य तणी शंका नहिं, रंग राती माती लाल रे ॥ खीर नीर ज्युं मिल गइ, फूलवासना एक निहाल रे ॥ म० ॥ ३ ॥ हालचाल मायातणो, राजानो को नहिं चार रे ॥ मन मंत्री पण हवे चिंतवे, काम करवुं ए अनुसार रे ॥ म० ॥ ४ ॥ माया राणीशुं करे, नीत मुजरो मन परधान रे ॥ अवसरने ते उलखे, जे होवे बुद्धिनिधान रे ॥ म० ॥ ५ ॥ काम काज मायातणुं, मन मंत्री समारे सार रे ॥ खिजमत छोडी रायनी, माया सेवे करी इक तार रे ॥ म० ॥ ६ ॥ माया पण जाणे खरो, ए सेवक में सिरदार रे ॥ कृपण भाव वजीरशुं, नवि कीजें ए व्यवहार रे ॥ म० ॥ ७ ॥ माया मान्यो मंत्रवी, अति वाध्यो साध्यो राज रे ॥ जोध जुवान हुउ जिसे, करे परणवानो साज रे ॥ म० ॥ ॥ ८ ॥ व्याकरणी कहे षंढ ए, ते शब्दतणे अनुसार रे ॥ पण परमारथ जोवतां, पुरुषोतम दीठ उदार रे ॥ म० ॥ ए ॥ हवे दुर्बुद्धिने छे पुत्रिका, नामें प्रवृत्ति प्रसिद्ध रे ॥ मायाने कहे मंत्रीयें, त्रण पुत्री लेइ दीध रे ॥म०॥ १० ॥ सगपण नवि हूउ हवे, प्रवृत्ति मोह बहु प्रीति रे ॥ कुटुंब सहु भेलुं रहे, करे रंग रली निज रीत रे ॥म०॥ ११ ॥ सुबुद्धि सुणी ए वारता, मनमांहे कियो योग रे ॥ भडा भरणी ने योगिणी, त्रण मली हूउ कुयोग रे ॥ म० ॥ १२ ॥ भाग्यवशें भूपति घरे, भेली थइ त्रण नार रे ॥ प्रवृत्ति कुबुद्धि माया वधू, ते राजाने शिर भार रे ॥ म० ॥ १३ ॥ राजा तो जाणे नहिं, वश पडियो वानर जेम रे ॥ मायाकामिनी नाचवे, नृप राचे नाचे तेम रे ॥ म० ॥ १४ ॥ परणावीने वश कियो, मन मंत्री जे परधान रे ॥ इण थंभा पग आरोपिया, मायानो वाध्यो वान रे ॥ म० ॥ १५ ॥ १३४॥

॥ दोहा ॥

॥ सुबुद्धि राणी मन चिंतवे, कीजें कोइ उपाय ॥ घरनां सूत रहे जिणे, ए मुझ आवे दाय ॥ १ ॥ आलोचीजें केहशुं, केहशुं कीजें वात ॥ घरमांहे ए साथशुं, न भिले मारी धात ॥ २ ॥ आपो आप विचारिशुं, बेसीने एकांत ॥ राजा सम आज मंत्री छे, जिम तिम ए हिततंत्र ॥ ३ ॥ तो हवे हुं पण एहने, निज पुत्री परणाव ॥ सगपण साधुं एहशुं, दीसे छे ए दाव ॥ ४ ॥ पुत्री छे शुभ लक्षणी, रत्नकूखी कहेवाय ॥ जो कोइ क

ए पेदास हूय, तिणथी ए दुःख जाय ॥५॥ नानाने पण सुख करे,बेसाडे निज राज ॥ माया मोह कुबुद्धिने, काढि समारे काज ॥६॥ इम आलोची मंत्रीने, बोलावी कहे एम ॥ स्वामी धर्मधर तुं सही,धरजे हुं कहुं तेम॥७॥

॥ ढाल बही ॥

॥ मेरी बहेनी कहे कांइ अचरिज वात ॥ ए देशी ॥ मुऊ हर्ष हूउं बे ए सही, सुण मंत्री कहुं तेह ॥ पुत्री निवृत्ति बे माहरी, परणीजें सस्नेह ॥ मंत्री मानजे ए माहरो उपदेश, अनुपम सुख लहेश, हर्षित होशे नरेश ॥मंत्री०॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ रत्नकूखी मुऊ पुत्रिका, निवृत्ति एहवे नाम ॥ परणावुं बुं तोलणी, होशे वंबित काम ॥मं०॥ २ ॥ मंत्री मनमांहि चिंतवे, बेलियें केम करी लाब ॥ आदर देइ घर आणियें, नवि कीजें पूठ गाब ॥ मं० ॥ ३ ॥ इम जाणीने मन मंत्रवी, परणियो निवृत्ति उल्लास ॥ बिहु नामिनी सुखशुं रमे, नव नव रंग विलास ॥ मं० ॥ ४ ॥ इम जाणीने मन मंत्रवी, पडवो वारो वास ॥ इक शंखिणी इक पद्मिनी, दुर्गंध इक फुलवास ॥ मं० ॥ ५ ॥ जूजूइ प्रकृति मिले नहिं, पश्चिम प्राची जोय ॥ अस्त उदय संगतिथकां, सूर्य सम पियु होय ॥ मं० ॥ ६ ॥ वारो हुवे जब प्रवृत्तिनो, तब करे पाप अघोर ॥ निवृत्तिने वारे थये, पाप खरे अति जोर ॥ मं० ॥ ॥ ७ ॥ दुर्बुद्धि माया बे मली, गुण वर्णवे मुख एम ॥ तुं वडनागी मंत्रवी, बे स्त्री परण्यो प्रेम ॥ मं० ॥८॥ वल्लना होवे दुर्लना, गुण करी आप समान ॥ सरिखा सरिखो जो मले, तो करे सहु गुणग्राम ॥ मं० ॥ ए ॥ तम गुण सरखी प्रवृत्ति बे, अति चपल चतुरा नार ॥ सकल क्रियामां पंमिता, कामकद्ध सिरदार ॥मं०॥ १० ॥ ए सुबुद्धिनी जे बोकरी, आलसु नड़ाकार ॥ कर्महीण दीसे अबे,क्रियागुण न लगार ॥मं०॥ ११ ॥ तुऊ गुणथकी विपरीत बे, तो किस्युं आदर मान ॥ अजगर ज्युं उंघी रहे, न करे लौकिक काण ॥मं०॥१२॥ शांत दांत सरिखी दीसती, क्युं नहिं लाव ने साव॥ कामकद्ध माणस नहिं, तेहशुं केहो नाव ॥ मं० ॥ १३ ॥ राज बीज वली मोह बे, माया तणो अंगजात ॥ एशुं प्रीत घणी करो, होशे जगतमें ख्यात ॥मं०॥ १४ ॥ को पर्व अवसर जाणीने, निवृत्तिने बोलाय ॥ क्षण एक तेहशुं सुख लहो, तुरत करो विदाय ॥मं०॥१५॥ बेउ नारीशुं एम मंत्रवी, सुख नोगवे संसार ॥ धर्ममंदिर कहे ते सुणो,विवेकतणो विस्तार ॥मं०॥१६॥

॥ दोहा ॥

॥ शीप स्वाति जल कण लही, मोती धारे जेम ॥ निवृत्ति नारी जन मियो, शुभ लक्षण सुत एम ॥ १ ॥ नानी सुबुद्धि भणी हूउं, मनमां हर्ष अपार ॥ नाम विवेक दीयो भलो, सब जनमां सुखकार ॥२॥ विमल कमल कोमल तनु, नीलवट टीको नूर ॥ मोह इस्यो तम जीपवा, अभिनव ऊग्यो सूर ॥३॥ राजा रलियायत थयो, रंग ढंग तसु देख ॥ संग भलो एनो सही, रत्न विवेक विशेष ॥ ४ ॥ परम प्रतीत पवित्र तनु, अनुपम कुंवर विवेक ॥ परम ऋद्धि प्रापतिकरु, ए सम अवर न एक ॥ ५ ॥ खेलावे खंतें करी, राजा अवसर पाय ॥ सुबुद्धि मने सुख ऊपजे, आनंद अंग न माय ॥ ६ ॥ माया डुर्बुद्धि प्रवृत्तिने, मनमां थयो विषाद ॥ निवृत्तिने बेटो हूउं, वधशे वाद विवाद ॥ ७ ॥ विष वैरी पावक ऋणो, अल्पेशुं नित हाल ॥ बांधी जें कांइ हवे, पाणी पहेली पाल ॥ ८ ॥ रखे राजा मंत्री भणी, मलशे वारं वार ॥ तो बाजी हाथाथकी, जाशे पहेले पार ॥ ९ ॥ मोह विवेक बेहू रमे, देखे राजा हंस ॥ बेहु प्रवृत्ति मले नहिं, ज्युं वायस ने हंस ॥ १० ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ केइक वर लाधो ॥ ए देशी ॥ माया डुर्बुद्धि बे मली, मन चिंते एह विचार रे ॥ वश करजे वारु ॥ प्रवृत्ति भणी इणिपरें कहे, शीख सांभल पुत्री सार रे ॥व०॥१॥ तुं चतुरा चपला छे घणुं, नवि जाणे उंम्हा भेद रे ॥व०॥ शांत दांत तुझ शोक्य छे, तसु पुत्र हुवो गयो खेद रें ॥ व० ॥ २ ॥ पुत्रवती प्रिया मानीयें, घर सघलुं तेने हाथ रे ॥व०॥ पुत्रपखें शी पद्मिणी, सही पुत्र अछे घर आथ रे ॥व०॥३॥ पुत्र विवेक हुआ पछी, नृप मंत्री बेहु एह रे ॥व०॥ निवृत्ति भणी आदर करे, छानो न छिपे कदी नेह रे ॥व० ॥४॥ आज पछी तुं पियुप्रत्यें, तन मन वचनें एकांत रे ॥व०॥ भाव भक्ति एम साचवे, जेम वश हुवे तुझ कांत रे ॥व० ॥ ५ ॥ निवृत्तिथकी मन उत रे, कांइ करजे एवी वात रे ॥व०॥ कर्म क्रिया केलवे भली, मुझ वाधे अंगनी धात रे ॥ व० ॥ ६ ॥ निवृत्तितणे वारे अछे, तुझ जेम करे ते लाज रे ॥व०॥ शोक्यतणी शंका किसी, ए शीख धरे मन आज रे ॥व०॥७॥ शोक्य शूनी वली सायणी, वलगी न भली तुं जाण रे ॥व०॥ शोक्य कही शूली जिसी, शुं कहिजें तेह वखाण रे ॥व०॥८॥ शीख इसी परें सांभली,

रहे प्रवृत्ति पियु पास रे ॥व०॥ क्षण अंतर अलगी रही, जेम तनु गाया इ
क वास रे ॥ व० ॥ ए ॥ रात दिवस ऊनी रहे, खिजमतगारी मनखंत रे
॥व०॥ सकल काम संसारनां, साधे नव नवी नंत रे ॥व०॥१०॥ प्रवृत्ति
नारी मन मंत्रवी, वश कीधो आपणो नाथ रे ॥व०॥ निवृत्ति नणी आ
वा न दें, सहु सरखो मिलियो साथ रे ॥व०॥ ११ ॥ उवट चाल्यो मंत्रवी,
जीव घात करे निश्शंक रे ॥व०॥ मृषा बोले धन हरे, परदारा सेवे वंक रे
॥व०॥१२॥ नव नव परिग्रह मेलिया, मद मांस नखे दिन रात रे ॥व०॥
परद्रोही मोही हुउं, आरंनी दंनी जात रे ॥ व० ॥ १३ ॥ आर्तध्यानी आ
करो, वली द्रोह तणा परिणाम रे ॥व०॥ तंडुलमत्स्य तणी परें, दूर ध्या
नी आतु जाम रे ॥ व० ॥ १४ ॥ तेली बेलतणी परें, खरवृत्ति नमाडे नूर
रे ॥ व० ॥ ज्युं तरुवरने उखेडिने,वाहे बहु जलनुं पूर रे ॥ व० ॥ १५ ॥
माया मन हरखी घणुं, हवे मंत्री अमारे सार रे ॥ व० ॥ सोहागिणी
गात्री तिका, जेणें वश कीधो नरतार रे ॥ व० ॥१६॥ सर्वगाथा ॥१०३॥

॥ दोहा ॥

॥ मायासेंती मन मल्यो, हवे केहने ए पाड ॥ उबलियो जलनिधि
जिस्यो, हवे केही तसु आड ॥ १ ॥ पवने प्रेस्यो अग्नि ज्युं, मयगल मातो
जेम ॥ प्रेस्यो नूख्यो वाजि ज्युं, धावे इत उत तेम ॥ २ ॥ पंफ हूइ पन्नग त
णे, क्युं कुपथानो रोग ॥ विख लेप्यो ज्युं तीर ए, तिम मन माया योग
॥ ३ ॥ थाको थलमें हुवे नहिं, नवि बूडे जलपूर ॥ सांसीणो न हुवे क
दा, पर्वत चढे सनूर ॥ ४ ॥ अग्निमांहि नमतो थको, न वले सबलो वेग ॥
अलख अगोचर संचरे, नवि पामे उद्वेग ॥ ५ ॥ रज्जु पास जंजीरशुं, न
विहुं बांध्यो जाय ॥ मंत्र यंत्र औषध करी, वश क्युंही नवि थाय ॥ ६ ॥
धाम काम रामा रमा, नेली कीधी नूर ॥ नृपति न पामे सिंधि ज्युं, लख
आवे जलपूर ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ घर आंगण सुर तरु फल्यो जी ॥ ए देशी ॥ मेमत्त मंत्री चिंतवे जी,
हवे मुज हाथे राज ॥ राजा परजा मो वश्यु जी, आनंद अधिको आज ॥
कर्मगति कठिन कही जिनराज ॥ १ ॥ ते निज श्रवणे सांनली जी,- नवि
जन नावमें आय ॥ क० ॥ ए आंकणी ॥ राय वधास्यो हाथशुं जी, नाना

थी वड कीध ॥ घर अधिकारी स्थापियो जी, निज मुद्रा जसु दीध ॥क०॥२॥ तेहवे मंत्री रायने जी, द्रोह करे अति जोर ॥ बांध्योथो पहेली सही जी, निवड बंधन करे उर ॥ क० ॥ ३ ॥ आप वधार्यो आपने जी, पीडाकारी जोय ॥ काष्ठ वधारे वन्हिने जी, काष्ठही बाले सोय ॥क०॥ ४ ॥ अल्पशक्ति राजा थयो जी,मूल नहिं ते नूर ॥ धूलपमल धूवे करी जी,ढांकी राख्यो सूर ॥ क० ॥ ५ ॥ मन मान्युं मंत्री करे जी, न्यायें न्याय विचार ॥ बांधे छोडे आपथी जी, हेतु अवर न लगार ॥क०॥ ६ ॥ मोजो माणे मन घणी जी, ज्युं लहरी दरियाव ॥ लूंटे खूटे लोकने जी,लाधो आपणो दाव ॥क०॥७॥ लाख क्रोड वरसां लगें जी, तप करे धर्मनी खंत ॥ ते पण मनना प्रेरिया जी, सातमी नरकें जंत ॥क० ॥८॥ भोग भला सुख भोगवे जी, तेने आपे मोख॥ सघली करणी एहनी जी, दोष अने गुणपोष ॥ क० ॥ ए ॥ तप जप दान दया सही जी, मन विण सघलो छार ॥ मनमेलु महोटो कह्यो जी, ऊतारें भवपार ॥ क० ॥ १० ॥ किण अवसर मन मंत्रवी जी, दीठो विवेक कुमार ॥ सौम्यवदन सरिखी कला जी, बोलाव्यो सुखकार ॥ क० ॥ ११ ॥ चित्त चितारी निवृत्तिनें जी, आय खडी ते एम ॥ सद्बुद्धिने संभारिने जी, विसरी विद्या जेम ॥ क० ॥१२॥ समरी देवीनी परें जी, उभी आवी पास ॥ नयणांनो मेलो हुउ जी, उलस्यो अंग उल्लास ॥क०॥१३॥ माता पण आवी अछे जी, निजपुत्रीनी लार ॥ बांध्यो राजा उलखी जी, दूरथकी निज नार ॥क० ॥ १४ ॥ शक्ति नहिं मलवातणी जी, परवशने परकाश॥ दासतणी परें हुइ रह्यो जी, प्रमदा नावे पास ॥ क० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजा हवे निज निंदतो, संभारें सोवार ॥ माया साधारण वधू, से व्यां एह विकार ॥ १ ॥ सुबुध्दि प्रिया में ताहरी,शीख धरी नहिं कांय ॥ ते ए चोरतणी परें, बंधन एवडां थाय ॥ २ ॥ प्रौढी पावन तुं प्रिया, निर्मल गंगानीर ॥ ते तो तुं गुण आगली, हीर क्षीर दंभीर ॥ ३ ॥ तुं चिन्तामणि सारिखी, में छोडी मति मूढ ॥ मायाकाच करें ग्रही, जग सघलोइ ढूंढ ॥४॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ वीर सुणो मोरी वीनती ॥ए देशी॥ पियु आखे प्रिया सांभलो, तुझ महोटी हो जगमांहे माम ॥ परउपकारी परगडी, आवीने हो कीजें निज

काम ॥पि०॥१॥ घरनी सोह घरणी हाथे, ए वाणी हो में साची दीठ॥ कथन न मान्युं ताहरुं, परसंगें हो हुवो हुं धीठ ॥ पि० ॥ २ ॥ तुज प्रसादथी पामियें, निज पदवी हो जे त्रिभुवन राज ॥ तुज विण दासपणुं नज्यो, परघरनां हो कीजें छे काज ॥ पि० ॥ ३ ॥ क्यां बांध्यो क्यां रूंधियो, क्यां पीड्यो हो क्यां वींटयो जोय ॥ क्यां मसल्यो क्यां हत हुउं, क्यां किंकर हो क्यां सेवक होय ॥पि० ॥ ४ ॥ हाल हुकम हुयो किहां, निर्धनिया हो कीधी बहु जात ॥ नव नव रंग किया तिहां, में सघली हो न कहाये वात ॥ पि० ॥ ५ ॥ तुज विरहो वारु नहिं, में जाएयुं हो हवे पामी शीख ॥ माया मनमंत्री मली, मुज कीधो हो इण आप सरीख ॥ पि० ॥ ६ ॥ में मंत्री महोटो कियो, इण कीधो हो मुज एह प्रकार ॥ स्वारथियां सघलां मल्यां, हवे सुंदरि हो तुंहीज आधार ॥ पि० ॥ ७ ॥ वांछे रविने शीतमे, जल वाह्यो हो नावाने धाय ॥ दृग वंछे अंधक नरु, तममांहे हो दीपक आवे दाय ॥ पि० ॥ ८ ॥ इण परि हुं हवे तो नली, चित्त चाहुं हो मूकुं परसंग ॥ दीनदयाल दया करी, हवे राखो हो मुजसेंती रंग ॥ पि० ॥ ए ॥ शीलवती साची तिका, जे न तजे हो पति आपदमांय ॥ सयण तिके साचा सही, दुःखमांहे हो काढे ग्रहि बांय ॥ पि० ॥ १० ॥ में अवहीला जे करी, ते खमजो हो तुं सुगुणी नार ॥ रोष रखे मनमें धरो, इम बोल्यो हो नृप वारंवार ॥ पि० ॥ ११ ॥ इण अवसर दुर्बुद्धि राणी, अणचिन्ती हो आवी तिण ताम ॥ तासु नयें करि त्रासवी, मा बेटी हो जाये निज धाम ॥ पि० ॥ १२ ॥ बहु दिवसें मलिया हुता, मनमंत्री हो निवृत्ति विवेक ॥ सुबुद्धि राणी सार्थे हुती, नृप पासें हो आया था छेक॥ पि० ॥ १३ ॥ देखी शके नहिं दुर्जना, संत मेलो हो तेहने न सुहाय ॥ धर्ममंदिर धन ते नरु, जे न करे हो वेढ राड उपाय ॥ पि० ॥ १४ ॥

॥ दोहो ॥

॥ माया नारी प्रवृत्ति बे, ए पण आवी तेथ ॥ राजा मंत्री कुबुद्धि वली, मलि रलि बेगा जेथ ॥ १ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ देशी हांजरनी ॥ अथवा ॥ काल अनंतानंत, नवमांही नमतां हो जे वेदन सही ॥ ए देशी ॥ आइ नारी अचान, तीनुं मिल कर हो नरपति

नी कने ॥ उत्तंनो दिये एम, ए क्युं आइ हो जे कीधी मनें ॥ १ ॥ अ मशुं एवी प्रीत, फिर अम शोकडी हो मुख क्युं लगाइयें ॥ अहोनिश की जें सेव, जीजी करिने हो तुऊने गाइयें ॥ २ ॥ उत्तंना वली एम, मंत्री ने पण हो माया उच्चरे ॥ प्रकृति बुरी क्युं नारी, राज पधास्या हो निवृ त्तिनें घरे ॥ ३ ॥ इति तत्त्वहग मूकी, तें बोलाइ हो सुबुद्धि नणी इहां ॥ निंबु रसनी नाय, दीसतो हेज हो निलता जिहां तिहां ॥४॥ नोलो तुं मन मंत्री, ए मुऊ वातां हो साची ने सही ॥ सुबुद्धि मली जो एथ, तो मुऊ प्रनुता हो स्थिरता नां रही ॥ ५ ॥ इम समजाव्यो मंत्री, माया नारी हो वचन कही घणां ॥ प्रकृति नणी कहे एम, करजे पुत्री हो आलोच मन तणा ॥ ६ ॥ देशवटानी वाट, निवृत्ति नारी हो जिण परें ए लहे ॥ की जें तेह उपाय, तो ए प्रनुता हो निज हाथे रहे ॥ ७ ॥ विषमति पियुनी ऊाली, आलस मूकी हो काम करीजियें ॥ तुऊ सखिया पचवीश, किरि या सारी हो साथें लीजियें ॥ ८ ॥ कायिक्यादि प्रसिद्ध, धारां धीरां हो नव नव नायका ॥ ए पंचवीशमां इक टाली, इरियावहिया हो तुऊ नेह लाइका ॥ ए ॥ निवृत्ति नारी जेह, इणशुं नासे हो उन्नी ना रहे ॥ मारो ने विश्वास, चोवीशसेंती हो तुऊ आज्ञा वहे ॥ १० ॥ ए सखियां अनि राम, जिण जग सघलो हो जेर कियो नलो ॥ सबलो सजियो साज, नि वृत्तिसेंती हो हवे कर साफलो ॥ ११ ॥ चोवीशे लेइ साथ, पियुशुं खेले हो नव नव रंगशुं ॥ सखीयांनां सुख देख, पियुडो मोह्यो हो प्रमदा संग शुं ॥ १२ ॥ विन्रम विविध विलास, मुखनां मटकां हो लटकां अति म ल्यां ॥ गायां वायां गीत, प्रीतम त्रूठो हो मुख पासा ढल्या ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे प्रीतम सुण तुं प्रिया, मनमांहि लीजें हूंश ॥ नवि पूरुं जो आ जथें, तो तुऊ गलाना सूंश ॥ १ ॥ प्रवृत्ति कहे सुण साहिबा, निवृत्ति तारी नार ॥ ते मुऊ हैडामां सही, वेऊ करे ज्युं सार ॥ २ ॥ गोमुख घर णी ए अबे, थाढी शीली सार ॥ बरफतणी पर पीडवे, एनी वात अपार ॥ ३ ॥ तमथी पण गुदरे नहिं, नाजे करण विकार ॥ गरव महेली गेहिनी, एनो उलटो चार ॥ ४ ॥ माता पण ने एहनी, सूबानी सिरदार ॥ वैराग ण शी वावरी, न धरे लोकाचार ॥ ५ ॥ दोषवती जाणी करी, राजा दीधी

ठोड ॥ निज पुत्री पण तेहवी, सरखा सरखी जोड ॥ ६ ॥ गीत गान गावें नहिं, हास्य विलास न कोय ॥ स्नान पान वली मान नहिं, व्यसन रसन नवि होय ॥७॥ जो अमनें दीधो अछें, उजगरो अधिवास ॥ देशवटो निवृत्तिने, दीजें ए अरदास ॥ ८ ॥ नागण तो मुख विष कही, वींछण पुछ विष होय ॥ शोक्य नीच कां सापिणी,आदि अंत विष होय ॥ ए ॥ सालतणी परें काढवे, सुतसेंती ए नार ॥ तो अमने सुख ऊपजे, जीवन प्राणाधार ॥ १० ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ कुंवर इस्यो मन चिंतवे ॥ अथवा ॥ मेरी बहेनी कहे कांइ अचरिज वात ॥ ए देशी ॥ ए अरज मानी मंत्रवी, निवृत्ति कीधी विदाय ॥ आपद तेह सती तणी, कविजनथें हो क्युं वरणी जाय ॥ १ ॥ माया मन उत्सव घणो रे ॥ ए टेक ॥ हवे सीध्यां हो सघलांई काज ॥ उद्यम सफल ए हूउ रे, हवे होसी हो मोहकुंवरने राज ॥ माया० ॥ २ ॥ परवश पड्यां जे मानवी, वली कामणी रे हाथ ॥ तसु बुद्धि यामिनीमां सही, नही उगे हो न्यान वासरनाथ ॥ मा० ॥ ३ ॥ माता पिता पग लागिनें, निज पुत्र साथें लेह ॥ नीसरी निवृत्ति तिहांथकी, पंथ चाली हो पंथी परे तेह ॥मा०॥ ४ ॥ निष्कंटक राज हवे हुउ, नीसरी निवृत्ति नारी ॥ प्रचंडपवनें प्रेरियो, जेम चाले हो ध्वज अंचल चार ॥ मा० ॥ ५ ॥ इम मन मंत्री दह दिशें, नमी रह्यो अहोनिश तेह ॥ क्षण एक पाछो नवि वले, वधि तृष्णा हो नावे तसु छेह ॥मा०॥ ६ ॥ डुर्बुद्धि माया प्रवृत्तिशुं, ज्ञीनो रहे निशि दीस ॥ वली वीनव्यो सघले मली, हवे पूरो हो इतनी जे जगीश ॥मा०॥ ७ ॥ मोहने राजा कीजियें, ए अधिक मन उत्साह ॥ तुझशुं सघलो होयशे, ए अवसर हो लाजीजें कांह ॥मा०॥ ८ ॥ सुत सहित निवृत्ति पण नहिं, सद्बुद्धि राजा दूर ॥ आपणो अधिपति ए किहां, सुख होशे हो सघलां नरपूर ॥मा०॥ए॥ जोरावर ए जोध छे,निजगुणें करि विख्यात॥ आज उदय एनो अछे, ढील न करो हो हवे एहिज वात ॥ मा० ॥ १० ॥ मनमंत्री मानी वारता, मोहने राजा कीध ॥ अति घणां वाजां वाजियां, मनमांहे हो सघलां थइ सिद्ध ॥मा०॥ ११ ॥ होकार करता नरपति, सुरपति सघला जेह ॥ पूजाव्या मोह राजा थये, अति अनमी हो तीन भु

वनमें जेह ॥मा०॥१२॥ मोह राय पण हवे मंत्रवी, मानियो अतिही उदार ॥ रूण एक अलगो नहिं करे,मुख आगें हो सघलो कामदार ॥मा०॥१३॥ अति सबल राज वध्युं हवे, जेम वधे वड जल पाय ॥ सुख भोगवे मोह भूपति, नीत नवला हो आनंद मन थाय ॥मा०॥ १४ ॥ गुणवंत गुरु पाठकवरु, श्रीदयाकुशल उल्लास ॥ तसु शिष्य धर्ममंदिर कहे, ए बीजो हो खंड मोहविलास ॥मा०॥ १५ ॥ इति श्रीप्रबोधचिंतामणौ भाषा ढाल प्रबंधे पंडितधर्ममंदिरगणिविरचिते मोहविवेकोत्पत्तिमनःप्रधानोत्पत्तिमोहराज्य स्थापननामा द्वितीयः खंडः संपूर्णः ॥ २ ॥ सर्वगाथा ॥ २६२ ॥

॥ अथ तृतीयखंड प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ पार्श्वनाथ प्रसादथें, प्रगटे नवे निधान ॥ अलिय विघ्न दूरें हरे, जपतां जेहनुं नाम ॥१॥ मोहराय हवे चिंतवे, नगरी अविद्या नाम ॥ पुरी पुराणी छे सही, ते सखरी मुफ गाम ॥ २ ॥ साज करी रहियें तिहां, भय केहनो नवि थाय ॥ राजानी ए नीति छे,न रहे एकण ठाय ॥३॥ धननीरी धरणी बहु, विविधें करे विचार ॥ गुणवंत ते गाफल नहिं, स्वारथ साधे सार ॥ ४ ॥ इम चिंतवी पुर सज करी, सघलां लोक वसाय ॥ संसारी प्राणी भणी, दीठां आवे दाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ पांचमी तपविधि सांभलो ॥ ए देशी ॥ नगरी निरखो मोहनी, नाम अविद्या जासो रे ॥ शोभा सखरी तेहनी, नीको निविड निवासो रे ॥ नगरी० ॥ १ ॥ त्रण अज्ञान त्रिकोट छे, ते नगरीनी पासें रे ॥ कोसीसां सोहे जिहां, कर्म प्रकृति प्रकाशे रे ॥ न० ॥ २ ॥ देव नरक पशु मानवी, ए गति चार प्रतोली रे ॥ तीखी तृष्णा खातिका, अति ऊंडी तसु दोली रे ॥ न० ॥ ३ ॥ रमणी भोग ते वाडियां, मुखकमलें करी सोहे रे ॥ समर कुंवर रमतो रहे, यौवनरूप मन मोहे रे ॥ न० ॥ ४ ॥ पाप अढार तटाक ते, ते अति ऊंडां दीसे रे ॥ शठ हठवाद ते खाल छे, उन्माद जल तिहां हीसें रे ॥ न० ॥ ५ ॥ क्रीडा वापी कामिनी, शृंगार रस करि गाढी रे ॥ करपदकमलें शोभती, सरली सुंदर टाढी रे ॥ न० ॥ ६ ॥ कामासन आ

सन जिहां, चोरासी बाजारो रे ॥ परिणाम क्षण क्षण जीवडा, तेहिज घर वि स्तारो रे ॥ न० ॥ ७ ॥ नगरीविच जे लोक छे, ते तो मदरा माता रे ॥ नगरीने छेहडे वसे, ते कछु सरल कहाता रे ॥ न० ॥ ८ ॥ थोडे लाभे लोक जे, मनमां हर्षित थाय रे ॥ थोडे अलाभें जे नरा, दीन थइने जा य रे ॥ न० ॥ ए ॥ ममत्वोपद्रव देवता, नगरीनी रखवाली रे ॥ सान्निध्य खबर भली करे, ज्युं वाडीमां माली रे ॥ न० ॥ १० ॥ नाचे कूदे केइ नरा, केइ वाद विचारे रे ॥ नंदे वंदे केइ स्तवे, केई याचक वारे रे ॥न०॥ ११ ॥ कोपे रोपे गर्वने, जोपें करण न जीपे रे ॥ आक्रंद रोवन केइ करे, मिथ्या मति अति दीपे रे ॥ न० ॥ १२ ॥ धसमस धंधामां फिरे, शिकथा विकथा कारी रे ॥ गावे वावे केइ नरा, फेरे कपटनी सारी रे ॥ न० ॥ १३ ॥ नि र्विचार सहु लोकने, राजाना अति रागी रे ॥ नगरी वर्णी एहवी, मोह राजा वडभागी रे ॥ न० ॥ १४ ॥ सर्वगाथा ॥ १ए ॥

॥ दोहो ॥

॥ हवे राजा वर्णन सुणो, वली एहनो परिवार ॥
कवि कल्पना उपमा करी, कहे सघलो विस्तार ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ देशी कुंमखडानी ॥ अथवा ॥ रंगी ले सारथी ॥ ए देशी ॥ मूढ संगति परखद भली रे, महेल कुवासना तेथ ॥ महीपति मोहना ॥ सिंहासन मति भ्रंश छे रे, छत्र असंजम जेथ ॥ म० ॥ १ ॥ खड्ग निर्भ्रंछन कर ग्रहे रे, तेर क्रिया अंगी सार ॥म०॥ पांचे इन्द्रिय परवडी रे, पांचेई हथीयार ॥म०॥ ॥ २ ॥ अरति अने रति बे खडी रे, चामर ढालणहार ॥ म० ॥ पाखंमी बहु पोलिया रे, स्वामी धर्म सिरदार ॥ म० ॥ ३ ॥ बहुविध संज्ञा नट ति हां रे, नाटक करे उदार ॥ म० ॥ कामिक श्रुत तिहां गाइयें रे, राजाने सु खकार ॥ म० ॥४॥ भुजबली भीमतणी परें रे, शृंगार सखर करेइ ॥म०॥ चार्वाक मित्र मानतो रे, अधिको मान धरेइ ॥ म० ॥ ५ ॥ पटराणी जड ता कही रे, गुण गण रूप रसाल ॥ म० ॥ तस कुखि कंदर केशरी रे, मद न पुत्र वड भाल ॥ म० ॥ ६ ॥ राग द्वेष आरंभ वली रे, ए पण पुत्र छे तास ॥म०॥ जोरावर सघला अछे रे, जींप शके कुण जास ॥ म० ॥ ७॥ चिन्ता प्रमुख पुत्री घणी रे, रण करवाने शूर ॥ म० ॥ भाइनी परें भड अ

छे रे, दिन दिन अधिके नूर ॥ म० ॥ ८ ॥ कर्म क्रिया जाणे घणी रे, मं त्री मिथ्यादृष्टि ॥ म० ॥ छाप धरी जेहनी नरा रे, हींमे सघली सृष्टि ॥ म० ॥ ए ॥ डुष्ट योग मनना जिके रे, तेहिज सामंत सार ॥ म० ॥ सात व्यसन सेवे सदा रे, राज्यतणा आधार ॥ म० ॥ १० ॥ मंमलिक राजाने अछे रे, क्रोध मान लोभादि ॥ म० ॥ दंभ जोरावर जोध छे रे, पग पग जींपे वाद ॥ म० ॥ ११ ॥ सेनानी परमाद छे रे, कुध्द करणने जोध ॥म० ॥ शान्ति माहा सुभटां भणी रे, जींत्या जेणें रोध ॥म०॥ १२ ॥ चंमभाव कोटवाल छे रे, तस्कर फालणहार ॥ म० ॥ शेठ जिहां व्याक्षेप छे रे, म हाजनने सुखकार. ॥ म० ॥ १३ ॥ पाप परिग्रह अति घणो रे, तेहिज अधिक भंमार ॥ म० ॥ संग कुसंग दाणी तिहां रे, पुरोहित पाप प्रचा र ॥ म० ॥ १४ ॥ आलस शय्यापाल छे रे, शठ हठ छाहलदार ॥ म० ॥ निंदककांभुंगा घणा रे, कुकवि बहु सूत्रार ॥ म० ॥ १५ ॥ तंबोली प्रेम राग ते रे, मुखशोभा परकार ॥म०॥ हर्ष शोक बे मल्ल छे रे, क्रीडा कौतुक सार ॥ म० ॥ १६ ॥ विषय विकार चाकर घणा रे, एवो राज्य पमूर ॥ म० ॥ धर्ममंदिर धन ते नरा रे, मोहथकी वसे दूर ॥ म० ॥ १७ ॥ ३७॥

॥ दोहो ॥

॥ हवे निवृत्तिनी वारता, सुणजो भविजन तेह ॥
शील सत्य मनमां धरे, साधवी लक्षण एह ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ कर्म परीक्षा करण कुंवर चल्यो रे ॥ ए देशी ॥ धर्म सहाय करी कामनी चली रे, निवृत्ति नीके नूर ॥ आपद संपदमां जे स्थिर रहे रे, नरनारी ते शूर ॥ धर्म० ॥ १ ॥ मोह महिपतिने भय नासती रे, पवनतणी परें तेह ॥ सुत सखरो पण साथें शुं करे रे, भावी न चले जेह ॥ धर्म० ॥ २ ॥ मारग लांघ्यो अति धणो कामिनी रे, थाकी राणी थाय ॥ विसामो मन जाणे लीजियें रे, सखरें गाम सुहाय ॥ ध० ॥ ३ ॥ ब्रह्मपुरी इक भाली भामिनी रे, इहां रहेवानो लाग ॥ मंत्र पवित्र पाणी करी छांटियें रे, पूजी जें वली आग ॥ ध० ॥ ४ ॥ यज्ञस्थंभ मांमयो छे यागें करी रे, सकल स फाइ सार ॥ वेदपाठी ब्राह्मण मुख उच्चरे रे, वेदकंठें उच्चार ॥ ध० ॥ ५ ॥ माष अने जव तिल सहु भेलीने रे, होम करे बहु भाति ॥ खीजड पीपल

लाकड मेलियां रे, धर्म तणी मन खांति ॥ ध० ॥ ६ ॥ छागना कानमां मं त्र जणी करी रे, बलि करे ब्राह्मण तेह ॥ देवने तृप्ति होशे एहथी रे, सर ग होशे स्वदेह ॥ ध० ॥ ७ ॥ निवृत्ति एवी हिंसा देखीने रे, मनमां चिन्ते एम ॥ ब्राह्मण ते सम दम क्षमता धरे रे, ज्ञानी निर्मम हेम ॥ध०॥७॥ मन शुचिकारक संतोषी सदा रे, त्यागी करुणावंत ॥ सत्यवादी सूधा ब्रह्म पारखु रे, आरज अनुपम संत ॥ ध० ॥ ए ॥ भ्रमभूला ए ब्राह्मण नाम थी रे, गमरी प्रवाहें लोक ॥ वेदमंत्रें करि छागने स्वर्ग छे रे, मन वंछित लहे थोक ॥ ध० ॥ १० ॥ छागतणी परें वहालाने करो रे, सखरी गति उपचार ॥ दुर्गतियें कां मूको बापडा रे, वेद उपर एक तार ॥ ध० ॥ ११ ॥ वेदमंत्रें करी कन्या व्याहियें रे, ते पण विधवा थाय ॥ मंत्रतणी जो शक्ति तिहां गई रे, ल्यो परतो मन लाय ॥ ध० ॥ १२ ॥ वेदपाठी ब्राह्मणने ताडतां रे, पीडा न हुवे लगार ॥ तो ते छागने पीडा नहिं हुवे रे, मंत्रश क्ति श्रीकार ॥ ध० ॥ १३ ॥ सिंह सर्पनो याग कह्यो नहिं रे, बापडां ब करां अनाथ ॥ दुर्बलघाती देव अछे सही रे, नबलाने कोण साथ ॥ ध० ॥ १४ ॥ परमेश्वर ए खावां सरजियां रे, एहवुं बोले एह ॥ खादकथी पण पापी आगलो रे, हिंसा दीपावे तेह ॥ ध० ॥ १५ ॥ यागहिंसाने हिंसा नवि कहे रे, चार्वाक मतना धार ॥ प्राण हरे जो पंचेन्द्रिय तणां रे, लघु जीव केही सार ॥ ध० ॥ १६ ॥ शिव ते सर्ग तीर्थ जलने कहे रे, पूजे गो पशु मंद ॥ गृहधारीने गुरु करी सर्दहे रे, देव अग्नि सुखकंद ॥ ध० ॥ १७ ॥ ए सघला मुक्त शौक्य प्रवृत्तिना रे, पक्षपाती परधान ॥ एम जा णीने निवृत्ति नीसरी रे, धरे तेम धर्मध्वनि ध्यान ॥ ध० ॥ १८ ॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विसामो लेवा भणी, वली जोवुं कोइ गाम ॥ फरतां एक दीठुं तिहां, ब्रह्ममतीनुं ठाम ॥ १ ॥ वैरागी बेठा घणा, कोपिन वसन धरेइ ॥ हाथ कमंमल दंमधर, जप अक्षमाल धरेइ ॥ २ ॥ स्थानक वारु देखिने, सुतशुं बेठी ठाम ॥ एक ब्रह्म जगमां अछे, शब्द सुण्यो ए ताम ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ जंबूद्वीप मझार, भरत क्षेत्रमांहे ॥ ए देशी ॥ सुत बोल्यो सुण मात, वचन हुवे तीके, जे कोइ तत्त्व सम जाणियें ए ॥ ब्रह्म विना सब जूठ,

एकांत मतधरु, इहां रहेवा मन नाणियें ए ॥ १ ॥ साधक व्यवहार नेद, निरत कारण नलुं, उरहो अवलंब ए सहि ए ॥ निश्चयने ग्रहे एह, कीरिया दूषवे, खोटाग्रुंवणशे नहिं ए ॥ २ ॥ ग्रंथथकी करे बोध, तप जप खप करे, उद्यम पण सवि आचरे ए ॥ मुखथी बोले एम, ए सहु जूठ ठे, नय प्रमाण नवि उच्चरे ए ॥ ३ ॥ स्याद्वाद नहिं एथ, जे साचो सही, स कल रसायण साधकू ए ॥ कपटी कूडा एह, स्वपर रूपनुं, परमारथना बा धकू ए ॥ ४ ॥ वली कहे जगमां एक, आतम व्यापियो, ब्रह्म स्वरूपी ए हुउ ए ॥ ज्युं आकाशें चन्द्र, एकज ठे सही, जल प्रतिबिंब जूउ जूउ ए ॥ ५ ॥ उपजे विणसे नूर, जलकल्लोल ज्युं, नाना महोटा दीसता ए ॥ पण ते एक स्वरूप, अवर न को अठे, एह अर्थ कहे हीसता ए ॥ ६ ॥ के उत्तम के नीच, के सुर नारकी, आरज म्लेछ के आखियें ए ॥ के ना री के खंज, के नर तिर्यंच, मोरपिछ सम साखीयें ए ॥ ७ ॥ के पंमित के मूढ, के रंक राजवी, इत्यादिक नेद अनुसरे ए ॥ कर्म न माने हेत, सह ज स्वनाव ए, बदरी कंटकनी परें ए ॥ ८ ॥ आतमगुण पर्याय, अनंत माने नहिं, बोले बालकनी परें ए ॥ परिणामी बे द्रव्य, आतम पुजल, एक विवेचन ना करे ए ॥ ९ ॥ सत्ता शाश्वतरूप, निज निज द्रव्यनी, मर्यादा मूके नहिं ए ॥ द्रव्य अने पर्याय, नेदानेद जे, स्याद्वादी समजे सही ए ॥ १० ॥ इहां नव सीके मात,विवेक सुतें कह्यो, माता वचन प्र माणियो ए ॥ उठि चली पंथमांही, पुत्र प्रेरी थकी, नेद नलो मन आ णीयो ए ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ ७० ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुबुद्धि सुता हवे चालतां, तापस आश्रम दीठ ॥ विसामो इहां ली जियें, सखरी ठाया मीठ ॥ १ ॥ बूढा तापस अति घणा, जटा जूट बहु नार ॥ हाथ अक्षमाला अठे, नाम नारायण सार ॥ २ ॥ शिष्य घणा चिहु दिश जइ, मूल कंद फल लेह ॥ वनत्रीही आणे घणा, नोजन अर्थे तेह ॥ ३ ॥ शुक सारो पंखी नणी, राम नाम शीखाय ॥ पादप सींचे वा रिशुं, धर्म न धर्म उपाय ॥ ४ ॥ निवृत्ति नारी चिंतवे, ए पण मोहें लीन ॥ शम दम करुणा को नहिं, ज्ञान गुणें करि हीन ॥ ५ ॥ शुक्ता नामिनी बे तजी, नजी न अंतर दृष्टि ॥ कोड क्रिया अफली हुवे, ज्युं उखरमें वृष्टि

॥ ६ ॥ आरंभ मिथ्यामति घणा, निरवद्य नहिं ए गाय ॥ भ्रांत थयां प ण ढंभियें, नदीकूलनी छाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ मेरे अरहनां ॥ ए देशी ॥ सुबुद्धि सुता वली त्यांथकी रे हां, धरि धीरज मनमांहि ॥ धर्म धुरंधरा ॥ चाली चतुरा चोंपशुं रे हां, फाली पुत्रनी बांहि ॥ ध० ॥ १ ॥ तुं सुत सुरतरु छांही, तो सम अवर को नांह। ॥ध०॥ ए आंकणी ॥ इक पुर बेठी कामिनी रे हां, कोलधर्म सुणी कान ॥ ध० ॥ विसामो इहां लीजियें रे हां, जो रहे आपणो मान ॥ ध० ॥ २ ॥ ए धर्म सेवे घणुं रे हां, तरुणपणे नर नारि ॥ ध० ॥ आकर्षे लोको भणी रे हां, धर्म शब्द सुखकारि ॥ ध० ॥ ३ ॥ संत साधु मुख उच्चरे रे हां, आयाने बहु मान ॥ ध० ॥ मंमल मांभे मन रली रे हां, गावे गीत ने ज्ञान ॥ध०॥ ४ ॥ रंभा चंभा दीक्षिता रे हां, धर्म दारा छे एह ॥ ध० ॥ सेव्यां शक्ति होशे सुखी रे हां, मन मत धरो रे संदेह ॥ ध० ॥ ५ ॥ मद्य मांस खातांथकां रे हां, इण गमे दोष नांहिं ॥ ध० ॥ इम सुणी निवृत्ति चिंतवे रे हां, धिक् धिक् एहनी छांहिं ॥ ध० ॥ ६ ॥ मोह मंत्रीना दास ए रे हां, संग भलो नहिं एह ॥ ध० ॥ निवृत्ति तिहां हूती चली रे हां, शीलवती गुणगेह ॥ ध० ॥ ७ ॥ अवर नगर दीठुं भलुं रे हां, बौधमतीनुं गाम ॥ ध० ॥ आतमनी चर्चा करे रे हां, ए होशे अभिराम ॥ध०॥ ८ ॥ तसु मुख एहवुं सांभल्युं रे हां, आतम क्षण क्षण नांहि ॥ ध० ॥ पुण्य पाप केहने नही रे हां, शून्यपणो जगमांही ॥ ध० ॥ ९ ॥ माता पूछे सुत भणी रे हां, एहशुं आखे एम ॥ ध० ॥ विवेक पुत्र तव बोलियो रे हां, सुण माता कहुं तेम ॥ ध० ॥ १० ॥ बोधने कहियें पुत्र तुं रे हां, पिता भणो छो नांहि ॥ ध० ॥ व्याह भोगवेला जूउ रे हां, एक पिता क्युं सांही ॥ ध० ॥ ११ ॥ अपराध को बीजो करे रे हां, अवर दंमीजें कोइ ॥ ध० ॥ राजनीति पण उलवी रे हां, धर्मभणी किहां होइ ॥ ध० ॥ १२ ॥ शय्या सखरी सूइयें रे हां, पीजें खीर प्रभात ॥ध०॥ भोजन मीठुं कीजियें रे हां, सांख्यमतीनी वात ॥ ध० ॥ १३ ॥ सौगत मत ए सांभली रे हां, निवृत्ति नारी न सुहाय ॥ ध० ॥ तत्त्व कपूरने कर ग्रह्यां रे हां, दूषण न आवे दाय ॥ ध० ॥ १४ ॥ मुग्ध मानव मृगपाश ए रे हां, भव अटवीमां भूर ॥ ध० ॥ निरखी निरखी पग मंमियें रे हां, इणशुं

रहियें दूर ॥ ध० ॥ १५ ॥ आगें चाली उतावली रें हां, न रही एक पल मा त ॥ ध० ॥ कपिल योगी पण मल्यां रे हां, तिणशुं न करी वात ॥ध०॥ १६॥ सेवक सघला मोहना रे हां, निवृत्ति नारी मन जाण ॥ ध० ॥ वैरीनी परें परहर्या रे हां, नूले नांहि सुजाण ॥ ध० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥ ए४ ॥

॥ दोहो ॥

॥ इण परि सघली नूमिका, नमती नमती नूर ॥
विसामो लाधो नहिं, खेद करे जे पूर ॥ १ ॥

॥ ढाल ठठी ॥

॥ रहो रहो रहो रहो वालहा ॥ ए देशी ॥ प्रवचन पुर गइ पाधरी, पुण्य तणे अंकूर लाल रे ॥ निकट नावी निरखे सहि, पापीयडा ठे दूर लाल रे ॥ प्र० ॥ १ ॥ चारित्र प्रासादने ऊपरें, धर्मध्वज लहकाय लाल रे ॥ दूरथकी पण देखतां, आनंद अंग न माय लाल रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ पुण्य पवित्र परि णामथी, उपदेश नगरमां जोय लाल रे ॥ पाप कर्म चंमालनुं, पग पेसार न कोय लाल रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ साधु शिरोमणि संत जे, नगर मध्यें रहे तेह लाल रे ॥ देशव्रति ने समकिती, बाहिर वसिया अठेह लाल रें ॥प्र०॥४॥ प्रवचन पुर वासी घणा, सघला सुखियां लोक लाल रे ॥ तत्त्वतणे सुख आगलें, तृण सम सुख सुरलोक लाल रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ त्यांथकी मुक्ति पुरी नणी, साथ चले दिन रात लाल रे ॥ चोर चरड लागे नहिं, नीति त णी नहिं वात लाल रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ तसु पुरवासें वन अठे, इंड्रियदमन ठे नाम लाल रे ॥ निवृत्ति नारी देखियो, अनुपम ए अनिराम लाल रे ॥प्र० ॥ ७ ॥ साधुवदन ते कुंन्द ठे, जिन वचनामृत नीर लाल रे ॥ नूर नविक पंथी नणी, जाये नवनी पीर लाल रे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ धर्मवचन फल फूटरां, योगी मधुकर सार लाल रे ॥ निवृत्ति विसामो तिहां लियो, खेद गमावणहा र लाल रे ॥ प्र० ॥ ए ॥ योग त्रिनूमि आवास ठे, तिहां इक नरने दीठ लाल रे ॥ दिलनर दर्शन तेहनुं, अमृतथकी पण मीठ लाल रे ॥ प्र०॥ १० ॥ विद्यानो नंमार ठे, जाणे सघली वात लाल रे ॥ वंदना कीधी नारियें, जं गम तीरथ जात लाल रे ॥ प्र० ॥ ११ ॥ हाथ जोडीने पूठे सता, कोण तुं स्वामी आख लाल रे ॥ इण वनमांहे क्युं रहे, साचुं सघलुं दाख लाल रे ॥ प्र० ॥ १२ ॥ पुरुष कहे सुण सुंदरी, मारी सघली वात लाल रे ॥ वि

मलबोध नामें अछुं, सिद्धपुरुष विख्यात लाल रे ॥ प्र० ॥ १३ ॥ इण पुर मांहे राजवी, अरिहंत नाम छे जास लाल रे ॥ तसु आदेश लही करी, इण वाडीमें वास लाल रे ॥ प्र० ॥ १४ ॥ आवास पहेली जूमिका, बेसीने आराम लाल रे ॥ राखुं सुख नरपूरशुं,वृत्ति हुवे अजिराम लाल रे ॥प्र०॥१५॥ राजाना परसादथी, मुजने एहवुं ज्ञान लाल रे ॥ आगम नीगम वारता,सघलांने समाधान लाल रे ॥ प्र० ॥ १६ ॥ कर जोडीने कामिनी, जाखे पुरुषने एम लाल रे ॥ उपकारी शिर सेहरो, सुणजे हुं कहुं तेम लाल रे ॥प्र० ॥ १७ ॥ अबला नारी एकली, नहानो पुत्र ए साथ लाल रे ॥ जमणतणुं छुःख शुं कहुं, इक जाणे जगनाथ लाल रे ॥ प्र० ॥ १८ ॥ मया करीने जोइयें,ए बालकनो हाथ लाल रे ॥ कहियें होशे एहने,प्रजुता संपद साथ लाल रे ॥प्र०॥ १९ ॥ हुं नजरें जे देखशुं, वारु एहनी वार लाल रे ॥ ए सघलुं मुजने कहो, आणी मन उपकार लाल रे ॥ प्र० ॥ २० ॥ ११५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिद्ध पुरुष बोल्यो हवे,सुण जामिनी छुःख तुज ॥ दूर गयां हवे जाणजे, ए वाचा छे मुज ॥ १ ॥ ए बालक जे ताहरो, उत्तम लक्षणवंत ॥ सकल वातनो हुं कहुं, ए माने एकंत ॥ २ ॥ तत्त्वरुचि नामा पुत्रिका, महारी छे मनुहार ॥ शुजाचार दारा कुखें, उपनी ते निर्धार ॥३॥ तेसेंती तुज पुत्रने, परणावो बहु प्रेम ॥ अविचल जोडी एहनी, होशे कुशला क्षेम ॥ ४ ॥ वर कन्या बेहू जलां, लेहशे जोग संयोग ॥ चंद्र अने पूनम तणो, पूरण मलियो जोग ॥ ५ ॥ एह वचन सुंदर सुणी, देखी कन्या सार ॥ लावण्य लक्षण देखिने, पामी हर्ष अपार ॥ ६ ॥ जाग्य जलुं मुज पुत्रनुं, ए घर घरणी थाय ॥ घरमें लक्ष्मी आवती, क्युं छेलीजें पाय ॥७॥ निद्रालु शय्या लहे, तरष्यो अमृत पान ॥ जूख्यो पायस नां तजे, लाधो रंक निधान ॥ ८ ॥ निवृत्ति नारी मानियुं, सिद्धवचन शिरदार ॥ लग्न तेह दिन साधियुं, न कर्यो कोइ विचार ॥ ९ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ छुलह छुलह किसन हो, छुलहिणी राधिका जी ॥ ए देशी ॥ कुंवर कुंवर विवेक हो, लाधी तत्त्वरुचि जी, परणे परम उल्लास ॥ विलंब विलंब न कीधो हो, वहाले वागमें जी, विस्तरीयो जसवास ॥ कुं० ॥ १ ॥ म

नमें मनमें हो, महोत्सव मांड्यो अति घणो जी, ते जाणें जगदीश ॥ जुगति जुगति जोडी हो, मिली हेमज्युं जी, वाणी विशवा वीश ॥ कुं० ॥ ॥ २ ॥ माणिक माणिक जोडी हो, हेमनी मुद्रडी जी, बेउनो उन्नय संयोग ॥ संपद संपद मिलतां हो, होवे सोहिली जी, किहां माणस संयोग ॥ कुं० ॥ ३ ॥ विमल विमलबोध कहे, सुण सगी जी, आपद दुःख मन नाण ॥ वाधे छे वाधे छे पण, बीजें चन्द्रमा जी, आतलें पंमित वाण ॥ कुं० ॥ ४ ॥ सुखी सुखी हो, आयां आपद नवि रहे जी, राहु मुखें जेम चंद ॥ धीरज धीरज खमजे हो, आपद उपनां जी, वायें न चले गिरिंद ॥ कुं० ॥ ५ ॥ आजथी आजथी होशे हो, एनी शुन्न दशा जी,आपद् अलगी थाय ॥ प्रगट प्रगट होशे हो, पुण्य पाधरां जी, सब जनने सुखदाय ॥ कुं० ॥ ६ ॥ उद्यम उद्यम बतावुं हो, नाल तुऊ फले जी, अनुपम छे उपाय ॥ निष्फल निष्फल न होवे हो, निश्चय जाणजो जी, परतो पूरण थाय ॥ कुं० ॥ ७ ॥ सर्वगाथा ॥ १३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रवचन पुरनो छे धणी, राजा अरिहंत नाम ॥ नाव शत्रु जित्या जिणें, अतुली बल अनिराम ॥ १ ॥ नुक्ति मुक्ति दाता सकल, अचिंत चिन्तामणि जोय ॥ कामकुंन सुरतरु घणा, ए सम अवर न कोय ॥ २ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ हां हां चन्द्रावती क्यां गइ ॥ ए देशी ॥ शोना साहेबनी घणी, मोपें कहीय न जायो रे ॥ स्थूलदृष्टि करि वर्णवुं, निश्चें अनुनव पायो रे ॥ शो० ॥ १ ॥ तीन छत्र शिर शोनतां, तीन नुवन ठकुराई रे ॥ तीन गढें करी राजतो, रत्न त्रय सुखदाई रे ॥ शो० ॥ २ ॥ सिंहासन उज्ज्वल नलुं, अशोक वृक्ष वलि होय रे ॥ नविजन ताप बुऊायवा, अद्भुत जलधर जोय रे ॥ शो० ॥ ३ ॥ मिथ्या तिमिर नसायवा, सूरज सम छे तेजो रे ॥ धर्मचक्र जसु आगलें, देव धरे धरि हेजो रे ॥ शो० ॥ ४ ॥ ईति नीति जाये सवे, जंबुक ज्युं सिंह सादें रे ॥ फूल फगर वरसा हुवे, वलि सुर डुंडुनिनादें रे ॥ शो० ॥ ५ ॥ जाति वैर मूकी करी, सुरनर ने तिर्यंचो रे ॥ पर्षदमें आवी मले, एवो छे जिहां संचो रे ॥ शो० ॥ ६ ॥ अचरिज मूल जे इन्द्र छे, कोसुरने नवि देखे रे ॥ ते सघला किंकर इहां, निरुपम एह

वशेखें रे ॥ शो० ॥ ७ ॥ अतिशय एहना अतिघणा, कहेतां नावे पारो रे ॥ केवलज्ञान दिवाकरु, अनंत वध्यो विस्तारो रे ॥ शो० ॥ ८ ॥ जामाता जो एहने, सेवे स्थिरकरि चित्तो रे ॥ ससरे एवुं आखियुं, अनंत हुशे तुज वित्तो रे ॥ शो० ॥ ए ॥ एम सुणी निवृत्ति नारी, हरखी अतिहि उल्लासो रे ॥ मन संदेह विलय गयो, परम प्रतीत प्रकाशो रे ॥ शो० ॥ १० ॥ ल इ आदेश उठी करी, पुत्रवधूनी संगें रे ॥ प्रवचनपुर पेसण जणी, निवृत्ति चली मन रंगें रे ॥ शो० ॥ ११ ॥ चित्रारो तारो पामीने, अधिक किरण जानु थाय रे ॥ विवेक तिसि परें देखियो, प्रमदा परणी आय रे ॥ शो० ॥ १२ ॥ नगर नजीक आव्या जिसें, पाखंमी मलिया यारो रे ॥ तब वि वेक देखी करी, सुंदर रूप अपारो रे ॥ शो० ॥ १३ ॥ कपट निपट मुख केलवे, बगलानी पर तेहो रे ॥ बोलावे आडा फरी, वश करवा धरि नेहो रे ॥ शो० ॥ १४ ॥ मित्र सुणो इक वारता, बेसी शीतल गया रे ॥ नग री लोक गुमान ढे, अम घर आवो सुहाया रे ॥ शो० ॥ १५ ॥ संकीर्ण पुरमें अबे, आ रुसनाइ जायगा रे ॥ खिजमत करसां में घणी, हैडे ध रि मन रागा रे ॥ शो० ॥ १६ ॥ पुरनृपशुं पण थाहरे, इवडो केहो का जो रे ॥ उजारो नृपनो नलो, आसंग न करो ताजो रे ॥ शो० ॥ १७ ॥ वली ए राजा एहवो, टाढो शीलो होय रे ॥ काम न काढे केहनो, मुनि वर सो मुख जोय रे ॥ शो० ॥ १८ ॥ माया बोडावे मनथकी, प्रीत रीत नवि जाणे रे ॥ शत्रु मित्र सरखा गणे, आप रुखो एक ताणे रे ॥ शो० ॥ १ए ॥ स्वार्थमें पण एहनी, उदासीनता लाने रे ॥ तुं प्राणी नोलो अ ढे, बाथ जरे कां आजें रे ॥ शो० ॥ २० ॥ लोकाचार न लेखवे, तोष रो ष न जणावे रे ॥ पुरुष वेदन को नहिं, नेदन कोइ न पावे रे ॥ शो० ॥ २१ ॥ निंदा स्तुति बेक मली, इम पाखंमी कीधी रे ॥ धर्ममंदिर कहे सांजलो, विवेकतणी मति सीधी रे ॥ शो० ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ १५५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वली पाखंमी बोलिया, वीर विवेकने एम ॥ अम ठाकुरने सेवजे, म नवंछित लहे जेम ॥ १ ॥ पाले ताडे फिर करे, हरि हर ब्रह्मा देव ॥ जग सघलोही जुगतिशुं, अहनिश सारे सेव ॥ २ ॥ नीर करे जगतांतणी, अ रि नाखे उथेड ॥ सेवक सखरा एहना, को न करे तसु छेड ॥ ३ ॥ तूठ्यां

प्रभुता दे सही,रूठ्यां ले उद्दाल ॥ परतो श्रम देवातणो,श्रावी नजर नि हाल ॥४॥ मोक्षभणी जो चाह छे,अलवे देशे एह ॥ शिव दे छे जिन पण सही, कष्ट त्यागशुं तेह ॥५॥ खातां पितां विलसतां, जो लाभीजें मोक्ष ॥ निज मारग लाधां थकां, कोण ले विषमो दोष ॥६॥ जंगम स्थावर एहना, सेवक सघला लोक ॥ कोई विरलो होश्सी, जिन रवि दर्शन कोक ॥ ७ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ श्रीचंद्रा प्रभु प्राहूणा रे ॥ ए देशी ॥ वीर विवेक वदे इस्युं रे, उत्तर श्राखुं सार रे ॥ सिंह तणी परें गाजियो रे, पर मत मान उतार रे ॥वी० ॥ १ ॥ मुजनें तुमें केम भोलवो रे, सरस्वतीने श्यो पाठ रे ॥ वचन तमा रां बावलां रे, चंदन नहिं वंश काठ रे ॥ वी० ॥ २ ॥ में मिथ्यामति तुम तणी रे, जाणी छे निर्धार रे ॥ धूवाडे करी जाणियें रे, पाप करो उपचार रे ॥ वी० ॥ ३ ॥ देवभणी थें उलव्यो रे, उचित देव प्रकाश रे ॥ मोहतणा थें मित्र छो रे, तुमशुं केहो वास रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ देवानो जे देव छे रे, श्री वीतराग विशेष रे ॥ पाच छते कोण काचने रे, हाथ ग्रहे कुण देख रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ कंचन पीतल अंतरो रे, खजुउ सूरज जेम रे ॥ तृण तरुवर नो अंतरो रे, देव कुदेवनो तेम रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ निष्कलंकी जिन देव छे रे, उज्ज्वल अनुपम एह रे ॥ दोष वशें करि दूषवो रे, पण ए गुणनो गे ह रे ॥ वी० ॥ ७ ॥ दृष्टिराग छे दोहिलो रे, मूक्यो क्युंहि न जाय रे ॥ मो हें घेलां माणसां रे, सूधो नावे दाय रे ॥ वी० ॥ ८ ॥ मूको मिथ्यावादनें रे, गुण ऊपर करो राग रे ॥ शम दम संतरसी खरो रे ॥ कां छोडो ते माग रे ॥ वी० ॥ ए ॥ मदन नहिं मद लोभता रे, तृष्णा नहिंय तरंग रे ॥ विषय विकार इन्द्रियतणा रे, नहिं रामानो संग रे ॥ वी० ॥ १० ॥ मम ता रमता रोषता रे, हास्य विलास न तास रे ॥ आशापाश न वासना रे, एहवा गुण प्रकाश रे ॥ वी० ॥ ११ ॥ देव भलो दिलमां धरो रे, भूलो भूं मे भमे रे ॥ श्रीवीतराग विना नहिं रे, दाता शिव सुर शर्म रे ॥वी०॥१२॥ संसारी सुख कारणें रे, लीजें वस्तु जिकाय रे ॥ तास परीक्षा सहु करे रे, एहनी क्युं नवि थाय रे ॥वी०॥१३॥ तत्त्वपरीक्षा जोग छे रे, मानुष मोटी जात रे ॥ ते लही परमार्दे करी रे, न धरे भांति उभांत रे ॥ वी० ॥ १४ ॥ ते पशु नर रूपें करी रे, शृंग नहिं पुछ कोय रे ॥ भूला भवअटवीविषे रे,

भूला मृगसम जोय रे ॥ वी० ॥ १५ ॥ देव तमारा देखिया रे, रागी ला गी एह रे ॥ वामा कामी मोहिया रे, निपट विटंब अछेह रे ॥वी०॥१६॥ मुक्ति हुवा कां अवतरे रे, दैत्य निपाया कांय रे ॥ खेले कां संत होइने रे, मायाशुं मनसाय रे ॥ वी० ॥ १७ ॥ शस्त्र धरे माला धरे रे, नार धरे अंगमांही रे ॥ वाहन बेसी चालतां रे, ए देव शोजा नाहीं रे॥वी०॥१८॥ जगन उपायो तिण समे रे, व्याधि जरा दुःख रोग रे॥नीपाया कां जाणि ने रे, जगवंताने क्रम जोग रे ॥ वी० ॥ १९ ॥ आत्म दिश व्योम काल जे रे, वस्तु अखंडित एह रे ॥ कुण उपजावे एहने रे, आदि न लाजे छेह रे ॥ वी० ॥ २० ॥ मुख्य आत्म द्रव्य आखियां रे, ज्ञान.ते सकल स्वरूप रे ॥ एह विना थें जाणजो रे, सघलो छे अंधकूप रे ॥ वी० ॥२१ ॥ सकल पदारथ शाश्वता रे, द्रव्य गुणें करि होय रे ॥ परजाय फिरता रहे रे, एह स्वजाव तुं जोय रे ॥ वी० ॥ २२ ॥ राजस तामस सत्त्व जे रे, एह उपाधि संसार रे ॥ ज्ञानादिक गुणें शोजतो रे, देव तिको निर्धार रे ॥ वी०॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ वली पाखंमी बोलिया, सुण विवेक वर वीड ॥ कर्मजोगमें पण कह्यां, ते शिव हाथें हीर ॥ १ ॥ जिण जेवो क्रम आचस्यो, तेहवुं फल दें ईश ॥ एह वचन सुणि तिण समे, विवेक वदे मन हींस ॥२॥ कर्मानुसारी तुमत णो, देव हुउ निर्धार ॥ तो क्युं थें कर्मा जणी, नवि मानो सविचार ॥ ३ ॥ कर्मवशें जगजीवडा, सुख दुःख लाजे जोय ॥ पण परमेश्वर केहने, जलो बुरो नहिं होय ॥ ४ ॥ थें आखो जिन देव ए,रूसे तूसे नाहिं ॥ एह वात साची सही, पण अचरिज इणमांहि ॥५॥ जक्त तिके सहजें लहे, अनुपम लील विलास ॥ जक्त नहिं जे जिन तणा, ते लहे बंधन पास ॥ ६ ॥ ऋतु वसंत छाया लहे, तरुवर नवलां पान ॥ वली वारद वूठे थके, सघले वाधें वान ॥ ७ ॥ इणे दृष्टांतें सुख लहे, जिनवर सेवे जेह ॥ सहेजें समियो ला जिने, शिव पण पामे तेह ॥ ८ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ मन मधुकर मोही रह्यो ॥ ए देशी ॥ विवेक कहे वली सांजलो, तु मचा देव छे एह रे ॥ पाले ताडे लोकने, शूरा सखरा एह रे ॥ वि०॥१॥ ए गुण देखी रंजिया, तो जग जींत्या राय रे ॥ देव कहे सघला सही, ञु

क्ति मुक्तिना दाय रे ॥ वि० ॥ २ ॥ गोपी वहाली जेहने, तेनें कीधो देव रे ॥ मूढमतें एम वर्णवो, मुक्ति दासी करे सेव रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ कोप शाप देवे घणा, अर्धांग राखे नार रे ॥ नाटक हास्य विलासियो, क्युं ते देव विचार रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ पूजा शोभा देखिने, हर्ष धरे मनमांहि रे ॥ खावे पीवे खुश करे, देवपणुं ते नांहीं रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ लोक घणे सेवक भये, तो ते देव न थाय रे ॥ मोहतणा सेवक घणा, देव करो मन लाय रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ संसारी करणी करे,मग्न रहे मनमांहि रे ॥ देव म जाणो तें हने, मृगतृष्णाजल नाहीं रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ देव निरंजन ध्याइयें, ध्यान धरी शुद्ध होय रे.॥ अंतर आंख उघाडीने, भात भली परें जोय रे ॥ वि० ॥ ८ ॥ साचुं रूप जाण्या विना, भूले छे संसार रें ॥ पण परमार्थें प्रीछजो, सीप ए रूपुं सार रे ॥ वि० ॥ ए ॥ साचो देव लही करी, भूठो नावे दाय रे ॥ क्षीरसमुद्र लही करी, खारे जल कोण नहाय रे ॥ वि० ॥ १० ॥ महारुं नाम विवेक छे, समजावुं सब लोय रे ॥ झवेरी जाणे आंतरो,काच मणिमें होय रे ॥ वि० ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ २०४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण वचनें पारखंभीने,जीपि नगरमें आय ॥ माता मुनिशाला रही, सुत पुर देखे जाय ॥ १ ॥ तिण अवसर हवे निवृत्तिनो, मनमंत्री पिउ सार ॥ बहु विरहो न खमी शक्यो, आयो मिलण विचार ॥ २ ॥ पिउ बोल्यो सुण हे प्रिया, तुं शुभ नारी होय ॥ मुज वचनें तुं नीसरी, रोष न आण्यो कोय ॥ ३ ॥ तुं सत्यवंती साधवी, सूधी सखरी नार ॥ तब में प्रवृत्ति वशें करी,दीधी चित्त उतार ॥ ४ ॥ इक दिन तुज गुण सांभख्या, तिणे मिलवाने आय ॥ तुज सुत वीसरतो न छे, गुणवंत आवे दाय ॥५॥ तुज सुत परण्यो तिणे समे, हुं पण छानो तेथ ॥ गुप्तपणे आव्यो हतो, विमलबोध छे जेथ ॥ ६ ॥ वारु वीर विवेक ए, परणी तत्त्वरुचि नार ॥ करशे काम जिको हवे, तिहां आवीश संभार ॥ ७ ॥ दोष न आण्यो पाछलो, पिउशुं हिलमिल होय ॥ सोवन भागोही मिले, पछर न मिले कोय ॥ ८ ॥ एह वचन श्रवणें सुणी, कुलवंतीने कोश ॥ पगशुं पाछा ठेलियें, तोही न आणे रोष ॥ ए ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ हरिया मन लागो ॥ ए देशी ॥ इक दिन माता सुत जणी, शीख कहे मन लाय रे ॥ सुत सुण सोजागी ॥ तुं माह्यो शाणो अछे,मात जणी सुखदाय रे ॥ सु० ॥ १ ॥ हित वाणी पाणी जणी, राखण तुं छे जोग रे ॥ सु० ॥ पक्कघडो काचो नहिं, साचो सखर संयोग रे ॥ सु० ॥ २ ॥ हितवाणी कामधेनु छे, सतपुत्रकाने आय रे ॥ सु० ॥ दुष्ट कुसुत मातं गने, घरमां कह्यो क्युं जाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ सघलांने रुचती नथी, गुरु जन वाणी एह रे ॥ सु० ॥ अमृतथी अधिकी अछे,जाणे स्वादी जेह रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ शुज उपदेश विना फिरे, नर नारी जगमांहि रे ॥ सु० ॥ लाव एय लक्षण बाहिरा, ज्ञान हैये जसु नांहीं रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ मात वाणी जाणे सही, अमृत धारा मेह रे ॥ सु० ॥ उखर क्षेत्रतणी परें, मत देखा डे छेह रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ प्रवृत्ति शोक्य शमवा जणी, कीजें कोइ उपाय रे ॥ सु० ॥ एह अवस्था तिणे करी, जमवारो क्युं जाय रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ पिउ वियोग स्थान नृंशता, सुबुद्धि तणो नहिं योग रे ॥ सु० ॥ ए डुःख सघलां नवि गणुं, शुजपुत्रने संयोग रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ धन जरिया जंमार जे, खातां खूटी जाय रे ॥ सु० ॥ अक्षयनिधि पुत्र संपदा, संसारीने था य रे ॥ सु० ॥ ९ ॥ माता सदाइ पुत्रनी, आशा राखे जूर रे ॥ सु० ॥ ते तुऊ पुत्र रतनथी, क्युं मन न रहे सनूर रे ॥ सु० ॥ १० ॥ सुकरी रास जीने घणा, पुत्र हुवा शी सिद्ध रे ॥ सु० ॥ सिंहिणी एको सुत जणे, स घलोई सुख दीध रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ कुलमंदिर दीपक सही, कुलजामि नी चंद रे ॥ सु० ॥ कुलगाडी धुर धवल छे, सुपुत सदा सुखकंद रे ॥ सु० ॥ १२ ॥ तमरूप वैरी वश करे, मील कमल उल्लास रे ॥ सु० ॥ सुपुत्र सू रज उगे थके, शोजावे घरवास रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ हवे तुं ए नगरीनो ध णी, सेव निरंजन देव रे ॥ सु० ॥ जास प्रसाद लह्यां थकां,सकल करे तुऊ सेव रे ॥ सु० ॥ १४ ॥ मोह महीपति जीपतां, ऊपर करसी एह रे ॥ सु० ॥ सेवक पण एहना अछे, मोह दावानल मेह रे ॥ सु० ॥ १५ ॥ उलग करजे एहनी, आठ पहोर अप्रमत्त रे ॥ सु० ॥ साचो ऊतरजे सही, सा च जलो जग मित्त रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ न रुचे कूड ए स्वामीने, कांई ति ल तुष मात रे ॥ सु० ॥ सेवा प्रमादने वेर छे, गाय अने वाघ जात रे ॥

॥ सु० ॥ १७ ॥ नक्षण ए ते स्वामीनां, सेवक चूका जाण रे ॥ सु० ॥ प्रमादने वश हुइ रह्या, मोहें लीधा ताण रे ॥ सु० ॥ १८ ॥ तेनणी प्रमाद बोडीने, खीजमत करजे खास रे ॥ सु० ॥ प्रस्तावें सघली करे, आपणी जे अरदास रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ शीख इसी माता तणी, शीश चढाई तेण रे ॥ सु० ॥ धर्ममंदिर कहे हवे सुणो, विवेक वदे हरखेण रे ॥ सु० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ पय प्रणमीने बोलियो, मीग वचन विचार ॥ नर पशु पंखीमें सही, मात हुवे सुखकार ॥ १ ॥ पण साची माता तिका, आखे शीख सुझान ॥ हेमकोडि हितकारिणी, नहिं ते शीख समान ॥ २ ॥ मानी बे शीख ते सही, मातु जे जे दीध ॥ सुधाकुंनमां नाइयें, कामगवी पय पीध ॥ ॥ ३ ॥ नंदन वन निरख्यो कियो, बावन चंदन लेप ॥ इणि परें सुख मुजने थयुं, सुणि तुम वचन अपेख ॥४॥ माता वचन उथापशे, सो सत पुत्र न होय ॥ सुख नापे माता नणी, व्याधि रूप ते जोय ॥५॥ इम माता हर्षित करी, ऊठ्यो कुंवर तिवार ॥ माता हाथ माथें धरी, जाये राजडुवार ॥६॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ रामचंडके बाग, चांपो मोरि रह्यो री ॥ ए देशी ॥ परखदा आतम नाव, मांहि विराज रह्यो री ॥ श्रीजगनाथ नरेंइ, निरखी हर्ष गह्यो री ॥ १ ॥ बत्र ढले सिरदार, सिंहासन पर राजे ॥ धर्म धनुष धरि हाथ, करणी खड्ग ते बाजें ॥ २ ॥ तवना बे कर जोड, पय प्रणमी ने करे री ॥ तीन नुवननो नाथ, अनुपम शोन धरे री ॥ ३ ॥ अष्टांग योगना धार, योग जोग नले री ॥ हृदय कमल तुऊ धार, ध्येयशुं जाय मिले री ॥ ४ ॥ ॥ श्लोक ॥ अष्टांगयोगाः ॥ संयमो नियमश्चैव, करणं च तृतीयकम् ॥ प्राणायामः प्रत्याहारः, समाधिर्धारणा तथा ॥ १ ॥ ध्यानं चैतस्य योगस्य, ज्ञेयमष्टांगकं बुधैः ॥ पूर्णांगक्रियमाणस्तु, शुक्रमे स्यादशोचता ॥ २ ॥ सुर नर नमरा नूर, सेवे पाय सदा री ॥ तुऊ पयपंकज सार, मनमें अधिक मुदा री ॥ ५ ॥ ज्योतिरूप जगनाथ, केवलरूप नयो री ॥ स्याद्वादी सुखरूप, नूप अनूप नयो री ॥ ६ ॥ नाव कर्म मल बोडी, आपें रूप विराजे ॥ तो सम अवर न कोय, दिन दिन अधिक दिवाजे ॥ ७ ॥ नव नव नमतां आज, दर्शन तुमचो दीठो ॥ आज अधिकआनंद, लोचन अमिय प

इछो ॥ ८ ॥ सुरतरु सम तुं राय, बीजा नृप करीरा ॥ तुं जातिनो हेम, अ वर ते धातु कथीरा ॥९॥ शम दम सघला नाव, आनंद अधिक घणा री ॥ तम सेव्यां लहे लोक, नहिं कांइ रिद्धि मणा री ॥ १०॥ रविथी नासे घूक, मोरथी नासे नुजंगा ॥ तेम तुज आणथी दोष, न करे को परसंगा ॥११॥ जंगम स्थावर जीव, तुं सघलां सुखदाइ ॥ मित्र अमित्र समान, ए तुममें अधिकाइ ॥ १२ ॥ तुम गुण केरो पार, कहेतां क्युंहि नावे ॥ पण आप णी मति सार, सेवक नाव जणावे ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इम स्तवना जिन राजनी, कीनी बे कर जोड ॥ वली पंचांगें पय न मे, मन मद मछर बोड ॥१॥ कृपा कटाक्षें जोइने, इम बोल्या जिनराज ॥ परखद बारां सांजलो, धरि चित्तमांहि समाज ॥२॥ वीर विवेक कहीजियें, ते बे एह कुमार ॥ नांतो नांत नली परें, तत्त्व बुद्धि नंमार ॥ ३ ॥ ना यक विना सेना किसी, ज्ञान विना ज्युं वाणि ॥ जल विण सरवर को नहिं, गुण विण लाल कबाण ॥४॥ धर्म कर्म तिम ए विना, सखरो नावे धात ॥ नली बूरी सब नावनी, तुरत लखे ए वात ॥ ५ ॥ विकलेन्द्रियमां ए नहीं, पशु नरकमें नांहि ॥ प्रायः नरमां ए वसे, वली आरज कुलमांहि ॥६॥ त्यां पण को विरला कने, पूरण लाने एह ॥ बीप घणी सघली नहिं, मोती धारे जेह ॥७॥ अहंकार इणमें नहिं, कृपणनाव नहिं कोय ॥ मीठा बोले मुख हसे, धर्मवंत वलि होय ॥ ८ ॥ लाजवंत मतिवंत ए, पर दोष ढंकण हार ॥ सुखमांहे मूंके नहिं, दीन हीन दुःख चार ॥९॥ विण उपकारें उपकरे, निर्मल गंग तरंग ॥ मुजने ते होय वालहो, जे करे एहनो संग ॥१०॥ मुज पें आयो ए सही, अधिकार लेवा काज ॥ ते नणी एहने में कियो, इण पुर नो शेठराज ॥ ११ ॥ एह वचन नृपनुं सुणी, सघले कीध प्रमाण ॥ न गरमांहि वासो दियो, कुंवर लहे बहु मान ॥ १२ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ चित्रोडा राजा रे ॥ ए देशी ॥ इक दिन अरदासा रे, करे कुंवर प्र काशा रे, मोह जीपण आशा वासा, आणीयें रे ॥ साहिब जिन राजा रे, अति सबल दिवाजा रे, फिर वेरी हुवा बे ताजा, जाणीयें रे ॥ १ ॥ मन मछरालो रे, दुःख खेतनो मालो रे, अति पापनो जालो आलो, मोह बे रे

॥ अविद्या गढ कीधो रे, निज वंछित सीधो रे, जाणे जल ज्युं पीधो, वड ए मोह छे रे ॥ २ ॥ हाथी भला घोडा रे, वली मानव जोडा रे, बहु रा ख्या छे होडा, होडी तुम तणी रे ॥ सघलो जग जीत्यो रे, हूउ छे वदीतो रे, वैरी अनीतो छीतो, सहु भणी रे ॥ ३ ॥ मोहराजा जोरें रे, आज स खरो तोरे रे, कहे हरि आवे कोरें, एहने रे ॥ तपसी तप चूके रे, मोह पासें ढूके रे, धर्म सघलो ते लूंटे, भोरे तेहने रे ॥ ४ ॥ कुलवंत कहीजें रे, आचारे छीजें रे, मोहें करी भींजे, रीझे रागमां रे ॥ देव दानव नागा रे, इण आगें भागा रे, पूग वली नावे सरगा, मागमें रे ॥ ५ ॥ वेद मंत्रना पाठा रे, तो पण जाये नाठा रे, इण मोहना काठा भाठा, कुण सहे रे ॥ पशु पंखी जीत्या रे, जस खाटे वदीता रे,बहु काल व्यतीता, अंत न को लहे रे ॥ ६ ॥ तुम सेवक भांख्या रे, तो पण मोह राख्या रे, कोइ जोर न चाले पाले, को नहिं रे ॥ अतुली बल दीसे रे, पाप विशवा वीशे रे, सघलानां मन हींसे, छे सही रे ॥ ७ ॥ तमचो मुख जोइ रे, हरखे सब कोइ रे, पर पूरें न होइ, हमणां छे जिस्या रे ॥ मोह राय अलेखे रे, जग सघलो पेखे रे, जाणो विशेषें, हमणां ए दशा रे ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वली विवेक वांचे घणा, मोहतणा अवदात ॥ जगगुरु तुं सब जा ण छे, तो पण सुणजो वात ॥ १ ॥ जीव हणावे लोकपें, कूड शीखावे जोर ॥ वाट पडावे धन हरे, परदारक अति घोर ॥ २ ॥ छल बल साधे अति घणा, जोडे धननी राश ॥ लोलुप लोभी लंपटी, व्यसन न मूके पा स ॥ ३ ॥ शीखावे सघला जणा, पापतणी बहु वात ॥ संतति सखरी हो यसी, गरवतणो करो घात ॥ ४ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ वेगवती तिहां बांभणी ॥ ए देशी ॥ मोहतणो महिमा सुणी, भवि जन आतम भावो रे ॥ उदय अधिक आवे छते, वाधे मोहनो दावो रे ॥ मो० ॥ १ ॥ पूजावे पीपलभणी, देवरावे दवदारो रे ॥ पावस पात्रने पो षियें,ए ए मोह विकारो रे ॥ मो० ॥ २ ॥ लाख पीपी फल जेहनां, कृमि कीटकनोगेहो रे ॥ पीपल पीतरा उछरे, ए ए मोह अछेहो रे ॥मो०॥३॥ पूजावे निर्जीवनें, नागतणे आकारो रे ॥ सापतणी हिंसा करे, ए ए मोह

विकारो रे ॥ मो० ॥ ४ ॥ शत्रु वडो संसारमां, पावक पाप निधानो रे ॥
पूजीजें पुण्य कारणें,ए ए मोह विधानो रे ॥ मो० ॥ ५ ॥ आरंन अधिका
जेहथी, वाधे नवजल पूरो रे ॥ कन्यादान कहीजियो, ए ए मोह अंकूरो
रे ॥ मो० ॥ ६ ॥ बाहिर शुचि जलथी हुवे, तिहां माने धर्मनावो रे ॥ ती
र्थंकरजी न आदरे, ए ए मोह सनावो रे ॥मो०॥७॥ माखी मधु दानें दिये,
होमे धान्य अपारो रे ॥ धर्म बुद्धि तिणशुं धरे, एए मोह प्रकारो रे ॥मो०
॥ ८ ॥ पति मूकी पर पुरुषने,सेवे साहमी शुद्धि रे ॥ एकाकार करी मली,
ए ए मोह कुबुद्धि रे ॥ मो० ॥ ए ॥ सुरनि मुख पुंछें कहे,बहु देवोनो वा
सो रे ॥ शुद्ध कहे मल मूत्रनें, ए ए मोह विलासो रे ॥मो० ॥ १० ॥ सं
सारी देवां कने, मागे मोक्ष गमारो रे ॥ गेहीने गुरु करि गणे,ए ए मोह
विकारो रे ॥ मो० ॥ ११ ॥ गेही धर्म महोटो सही, जसु आश्रय सब को
यो रे ॥ इम बोले जगमां घणा, मोहें मोह्या लोयो रे ॥ मो० ॥ १२ ॥
सोनानी सुरनि करी, मंत्र नणी विप्र लेह रे ॥ नाग करी वहेंची लिये,
ए पण मोहना गेह रे ॥ मो० ॥ १३ ॥ कर्षणी कहे अम उपरा, धर्मी
केहा होय रे ॥ पशु पंखी नर कण ग्रहे, अमथें मोह ए जोय रे ॥ मो०
॥ १४ ॥ वेद पुराणें पालियो, वली मार्कंम पुराणो रे ॥ निशिनोजन क
रवुं नहिं, समजो चतुर सुजाणो रे ॥ मो० ॥ १५ ॥ सूरज किरणें फरसि
यो, गंगारो पण पाणी रे ॥ पीवा योग्य पावन अछे, निशि नवि पीवे धी
रो रे ॥ मो० ॥ १६ ॥ एह वचन निज ग्रंथरो, माने नहिय लगारो रे ॥
रसना लोनी हुइ रह्या, ए ए मोहविकारो रे ॥ मो० ॥ १७ ॥ अवर घरे
बेठो पिता, पिंम लहे नहिं नोरा रे ॥ मूढमति मूंजी रह्या, ए ए मोहना
दोरा रे ॥ मो० ॥१८॥ तो परनव पहोतो पिता, निज घर बेठो पुत्रो रे ॥
पिंम दियो पहोंचे नहिं, परतिख देख पवित्रो रे ॥ मो० ॥ १ए ॥ परणावे
वृद्धा नणी, चेतननी परें जाणी रे ॥ ग्रंथ रचे व्यनिचारना, ए ए मोह
नी खाणी रे ॥ मो० ॥ २० ॥ चेतनने माने नहिं,शून्य गिणे संसारो रे॥
क्षणिकवाद केई धरे, मोहतणा विस्तारो रे ॥ मो० ॥ २१ ॥ काननमां मृ
गलां रहे, सूकां तृण आहारो रे ॥ ते मृग मारे मानवी, एए मोह प्रका
रो रे ॥ मो० ॥ २२ ॥ मोह सोह बाधा घणी, राज्य वध्यो अति जोरो रे
॥ तमची आणा माने नहिं, बल बलि कोइ फोरो रे ॥ मो० ॥ २३ ॥ ती

न लोक नायक तमें, मोह ईशं पणएमो रे ॥ एक मियानमांहे कदा, ख
ङ्ग रहे बे केमो रे ॥ मो० ॥ २४ ॥ तम सेवकपें लीजीयें, नेट नली सो
वारो रे ॥ जोरो तोरो जाबतो, जाग जितरो विस्तारो रे ॥ मो० ॥ २५ ॥
वैराजो ए हुइ रह्यो, साहिब गरिबनिवाजो रे ॥ धर्ममंदिक कहे ते सुणो,
जे बोल्या जिनराजो रे ॥ मो० ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वत्स स्वछ मति ताहरी, तुं विवेक वड वीर ॥ उपकारें ए वीनति,
नविकतणी करे नीर ॥ १ ॥ हुं ज्ञानें देखूं अछुं, सघलीही ए वात ॥ कर्म
उदय अधिको अछे, तिण नहिं बणती धात ॥ २ ॥ धीर वीर पुरुषें घणो,
वध कीधो बहु वार ॥ पण ए फिर फिर पालवे, अनंतकाय अनुहार ॥३॥
महोटो खल ए मोह छे, महोटो रिपु ए जाण ॥ विषम व्याधि वारु नहिं,
विष नरियुं ए वाहाण ॥ ४ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ क्षण लाखेणो रे जाय ॥ फूलडानी देशी ॥ मोहवशें वली मानवी रे,
माताशुं करे प्रेम ॥ मदमाती ने कामिनी रे,उलटी चाले एम ॥ विवेकी,धि
क् धिक् मोह विकार ॥ संसारी प्राणी नणी रे, नव जल एह अवतार ॥
वि० ॥ १ ॥ पति परदेशें पूठलें रे, पर नरशुं रमे रंग ॥ गर्न तजे मलनी
परें रे, न करे करुणा संग ॥ वि० ॥ २ ॥ जनकतणो वली जोयजो रे, सु
तशुं प्रेम उदार ॥ धन प्रनुता लुब्धोथको रे, घात करे अविचार ॥ वि०
॥ ३ ॥ मात पिता मूके सही रे, नाइ बेहेन सगीन ॥ प्राण तजे प्रेमें करी
रे, वनिता वचन आधीन ॥ वि० ॥४॥ देश फरे गिरि शिर चढे रे, लंघे न
दीय नवाण ॥ जे कामणने कारणें रे, ते पण न करे काण ॥ वि० ॥५॥
प्रेम घणो सुतशुं धरे रे, माता वलिय विशेष ॥ धोवे मल मूत्र धूरथकी रें,
विरचे नव नव वेष ॥ वि० ॥ ६ ॥ परणावे प्रेमें करी रे, सुंदरि सुंदर देख ॥
यौवन मदमातोथको रे, न धरे वचननी रेख ॥ वि० ॥ ७ ॥ धरती धन
लोनीथकां रे, धंध करे मिलि नाय ॥ कथन कोइ माने नहिं रे, चाले आ
पणी दाय ॥ वि० ॥ ८ ॥ काया कंचन सारिखी रे, उपरथी देखाय ॥ शा
रद संध्यावान ज्युं रे, क्षणमें खेरू थाय ॥ वि० ॥ ए ॥ माया छाया
सारिखी रे, घन धन मेले रे जेह ॥ स्थिरता ते रहेशे नहिं रे, तडके

लागे नेह ॥ वि० ॥ १० ॥ आश्रव अधिका मेलिया रे, नव नव बंधन थाय ॥ काम क्रोध लहरी वधे रे, ज्युं जल पवन पसाय ॥ वि० ॥ ११ ॥ मात पितादिक एहवा रे, सघला सखायी न होय ॥ पण संसारी प्राणि या रे, प्रायें एहवा जोय ॥ वि० ॥ १२ ॥ ज्युं बीली बिलमें अछे रे, सा पां केरो वास ॥ पण आशंका आणियें रे, इम समदिट्ठि उदास ॥ वि० ॥ १३ ॥ सागर तरतां सोहिलो रे, दव उलायो रे जाय ॥ सुर सान्निध्य गिरिनें खणे रे, पण वश मोह न थाय ॥ वि० ॥ १४ ॥ नूख्यो राक्षस राखियो रे, तीखे शत्रु सहाय ॥ मीण दांत लोह चावियो रे, पण ए विष म कहाय ॥ वि० ॥ १५ ॥ सेवक पण जे मोहना रे, स्वामी सरिखा रे ते ह ॥ कण कण कीधा फिर मले रे, पारद नारकी जेम ॥ वि० ॥ १६ ॥ अनादि अनंत पण ए सही रे, अनादि सांत पण एह ॥ सादि सान्त पण जे अछे रे, तुमची संगति जेह ॥ वि० ॥ १७ ॥ मोह एह बहु रूपियो रे, सेवक पण बहु रूप ॥ एकाकी प्राणी नणी रे, लागी रह्या वडे नूप ॥ वि० ॥ १८ ॥ तुज बेलीथी एहना रे, बेली अनंत अपार ॥ क्युं जीपाये वेगशुं रे, तुंहिज आप विचार ॥ वि० ॥ १९ ॥ चूंप करी हमणां ते नणी रे, अ वसर समयो देख ॥ शिव साधे समवायशुं रे, ए स्याद्वाद विशेष ॥ वि० ॥ २० ॥ मोहवशें होवे जिणे रे, तेह अछे प्रतिकार ॥ ते पण कहिशुं तो नणी री, सुण एक अपर विचार ॥ वि० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लोक तणे अंते अछे, उंची अनुपम सार ॥ सिद्धपुरी नामें नली, स घलामां सिरदार ॥ १ ॥ नव्यनणी जे योग्य छे, पण करे विरलो वास ॥ हेम संग लाने नहिं, सघली माणिक राश ॥२॥ जन्म जरानुं दुःख नहीं, आपद गर्न न वास ॥ धन मन बंधन को नहीं, आतम सहज विलास ॥ ३ ॥ आधि व्याधि बाधा नहिं, शीत रीत नहिं कांय ॥ नूप धूप रूप रंग शा, विरस फरस नहिं थाय ॥ ४ ॥ केवल केवल ज्ञानमां, परनो नहिं प्र संग ॥ ज्ञान सुधा करि थापिया, परम उल्लास उतंग ॥ ५ ॥ ते पुरनी इछा करी, यत्न करे बहु लोय ॥ पण फिर मोहतणी पुरी, पामे प्रापत सोय ॥ ६ ॥ शिवपुर मग जाणे नहिं, जूठे मारग नाल ॥ मुग्ध मीन ज्युं मानवी, फसी रहे जग जाल ॥ ७ ॥ ज्ञान क्रिया वैराग्य तिम, मारग सू

धो जेह ॥ सद्दहणा साची नहिं, भ्रामक भावे तेह ॥ ८ ॥ निकट मुक्ति छे जेहने, ते पण मोह छलाय ॥ सागर कंठें पण रह्यो, पोत चलावे वाय ॥ ए ॥ मोहथकी बीये घणुं, शिवपुर जावणहार ॥ बोलावीने तेहने, करजे हर्ष अपार ॥१०॥ तूं साथें हूआं थकां, भय नहिं तेहने कोय ॥ गरुड पंखीथी नासही, भुजंग जाति जे होय ॥ ११ ॥ पहेलां पण शिव पुर तणो,मारग वह्यो एम ॥ इणिपरें राजा आखियो,तहत्ति कियो सब तेम॥१२॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ वधावानी देशी ॥ वधावो हे वीर विवेकने, जगनाथें हे आपणो जाणी दास के ॥ पुण्यरंग पाटण आवियो, राज्य दीधुं हे मानुं भानु उल्लास के ॥ व० ॥ १ ॥ सेवक सखरा आपिया, साथ पूरो हे शूरो सुगुण सनूर के ॥ साहिब हुकम कियो वली, तुज ससरो हे विमलबोध पमूर के ॥ व० ॥ २ ॥ तेहने निजपुरनी धरे, कोटवाली हे दीजें सुखकार के ॥ वनपाल कता मूकशो, मुज वचनें हे न्यायें सुविचार के ॥ व० ॥ ३ ॥ आदेश लेई तिहांथकी, वीर आयो हे निजपुरने गाम के ॥ धर्म ध्यान ध्वज आगलें, मुख आगें हे आगें करि अभिराम के ॥ व० ॥ ४ ॥ माता मन आनंदशुं, वलि वनिता हे वनिता लीधी साथ के ॥ प्रेमनिधान प्रतीतनी, घरमांहे हे मांहे प्रथम ए आथ के ॥ व० ॥ ५ ॥ जय जय शब्द हुवे घणा, गुण गावे हे भावें गुणि जन सार के ॥ पुण्यरंग पाटणराजियो, सिद्ध विद्या हे विद्याधर ज्युं तार के ॥ व० ॥ ६ ॥ वाजित्र गुरु उपदेशनां, अति वाज्यां हे गाज्यां गुहिर गंभीर के ॥ आडंबर अधिको करी, पुर पेठो हे साथें वडवीर के ॥ व० ॥ ७ ॥ महोटा महाजन आविया, राज मुजरो हे कीधो उदार के ॥ आनंद अधिक हुआ घणा, पुरमांहे हे वरत्यो जय जयकार के ॥व० ॥८॥ कोटवाल ससरो कियो, प्रभुवाणी हे जाणी कीध प्रमाण के ॥ ढंढेरो करुणा तणो, पुर फेरयो हे फेरयो वीरनी आण के ॥ व० ॥ ए ॥ दूर कीया पापी नरा, पुण्य धारी हे सारी नगरनो वास के ॥ दुष्ट दुर्दांत जन काढिया, राख्यो नहिं हे तिहां छलनो पास के ॥ व० ॥ १० ॥ राज्य भलो हवे भोगवे, शिव मारग हे मार्गेनुं मुख तेह के ॥ भोलावे भवि साथने, भव वारें हे सारे सुख गुणगेह के ॥ व० ॥ ११ ॥ माताने सुखणी करी, जसु सीखें हे हुआ नवेय निधान के ॥ मन मंत्री पण वेगशुं, आवे जावे हे प्रम

दा प्रेम निधान के ॥ व० ॥ १२ ॥ अचरिज धरतो मंत्रवी, सुत देखी हे पेखी हर्ष अपार के ॥ लाज रहे सुत पुत्रथी, नवि निंदा हे नानोही नरसार के ॥ व० ॥ १३ ॥ वीर विवेक वाध्यो घणुं, सुख पायो हे श्रीजिनचंद पसाय के ॥ त्रीजो खंम पूरो थयो, ए सुणतां हे नविजन आवे दाय के ॥ व० ॥ १४ ॥ दयाकुशल पाठकवरु, तसु शिष्य हे धर्ममंदिर गणिसार के ॥ ए संबंध कियो नलो, सुखदायी हे श्री संघने जयकार के ॥ व० ॥ १५ ॥ इति श्री प्रबोधचिन्तामणौ ढाल नाषा प्रबंधे पंमित धर्ममंदिरगणिविरचिते मोहराजविवेकपाणिग्रहणप्राज्य राज्यप्राप्तिवर्णननामा तृतीयःखंमः संपूर्णः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ खंम प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीगुरु चरण प्रसादथी, लहियें लील विलास ॥ मंगल माला संपजे, दिन दिन अधिक उल्लास ॥ १ ॥ तिण प्रस्तावें मोह हवे, नगरी अविद्यामांही ॥ चार्वाक मित्र नणी कहे, इक दिन वात उन्नाही ॥ २ ॥ आजसमे मो उपरें, द्वेष धरे नहिं कोय ॥ एक विवेक विना सहु, परम मित्र जग होय ॥ ३ ॥ पहेले पण उल बल करी, मुजने जीत्यो एण ॥ ते वेला मुज संनरे, नीति रहे वे तेण ॥ ४ ॥ चार्वाक तव बोलियो, मोहराय सुण सिंह ॥ शाल कंगाल विवेक ठे, तिणसुं केहो बीह ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ वेगें पधारो हो महेलथी ॥ ए देशी ॥ मठराजो मोह बोलियो, चारवाक सुण मित्र ॥ नेद न जाणे तुं एहनो, ठानी बुरी ए शत्र ॥ म० ॥ १ ॥ मनमंत्री मूरख थयो, जीवतो मूक्यो एह ॥ में पण न कह्युं मंत्रीने, केद करी धरो एह ॥ म० ॥ २ ॥ इण द्वेषी जीवता ठतां, क्युं सुख पामे जीव ॥ एको रोगज अंगमां, उन्माद रहे जस जीव ॥ म० ॥ ३ ॥ विरुउ वैरी जागतां, निश्चिंत सुए जे राय ॥ बंध हुउ ते जाणजो, नीतिवचन कहेवाय ॥ म० ॥ ४ ॥ नानो वैरी न जाणियें, विश्वास न धरो तास ॥ मनमें वलगी कीटिका, हाथीनो करे नाश ॥ म० ॥ ५ ॥ अवगुणियें नहिं रिपु गुणी, नानो सो पण जेह ॥ वृक्ष अंकूर उग्यो थको, प्रासाद पाडे तेह ॥ म० ॥ ६ ॥

दुःख पाम्यो नानो थयो, पर हथ हूउं जोय ॥ हलाहल विष तिल समुं, दुःखदायी क्युं न होय ॥ म० ॥ ७ ॥ कबइक फिरतां जायसी, प्रवचन पुरमां वास ॥ तो हाथे आवे नहिं, जिम सिंह गिरिमां निवास ॥ म० ॥ ८॥ राजनीति मांहे कह्युं, वैरी निज वश राख ॥ परवाणी कानें सुणी, दैत्य समोवड नाख ॥ म० ॥ ए ॥ खरी खबर लीधा विना, साल समान ए थाय ॥ खबर नणी चर मूकियें, ए मुज आवे दाय ॥ म० ॥ १० ॥ मित्र कहे वारु अछे, साहिब एह विचार ॥ तुरत तेडाव्या तिणे क्षणे, आखे सकल प्रकार ॥ म० ॥ ११ ॥ पाखंमादिक दंन वली, सखरा सेवक जेह ॥ शीख कहे नृप तेहने, काम करो ससनेह ॥ म० ॥१२ ॥ पुत्र सहित निवृत्ति वधू, किहां नाठी किण गाम ॥ जग सघलो ढूंढी करी, खबर करो अनिराम ॥ म० ॥ १३ ॥ स्वामी वचन शीशें धरी, सेवक चाल्या ताम ॥ शूरवीर साहसिकधरु, स्वामीतणुं करे काम ॥ म० ॥ १४ ॥ गाम गाम पुर ते फरे, वन वन तरु तरु तेह ॥ वानरनी परें जोवतां, स्वामी धर्म सस्नेह ॥ म० ॥ १५ ॥ यत्न करी जूवे घणुं, पण को न कहे वात ॥ पग पग पूछ्या अति घणा, न पडी शुद्ध तिल मात ॥ म० ॥ १६ ॥ फरतां दूर देशांतरें, पुण्यरंगपाटण जाय ॥ वात सकल तिहांकिण लही, पण पुरमां न जवाय ॥ म० ॥ १७ ॥ छाना बाहार छूपी रह्या, को तरुनो लेइ संग ॥ कोटवाल तिहां नीसर्यो, चोकी करतो चंग ॥ म० ॥ १८ ॥ नाग्य जोग आवी जुडी, दूषणा ऊपर चोट ॥ सिद्धि हुवे क्युं तेहने, जसु दिलमांहे खोट ॥ म० ॥ १ए ॥ कोटवाल सम ऊालिया, काठा बांध्या तेह ॥ समकित नटने वश कर्या, ताडन तरजन देह ॥ म० ॥ २० ॥ मिथ्यामती पाखंम वली, दंन प्रमाद विशेष ॥ समकित शूरें कूटिया, मोहतणा दास देख ॥ म० ॥ २१ ॥ विवेकतणी तिण शुद्धि लइ, ताडन पण लही तेथ ॥ हर्ष विषाद बेहु लह्या, पुण्यरंगपाटण जेथ ॥ म० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ छाना नाग तिहांथकी, रही न शक्या तिहां तेह ॥ जिम दावानल देखीने, मृग नासे लेइ देह ॥ १ ॥ मोह नणी आवी मल्या, प्रणम्या स्वामी पाय ॥ विलखाणा ते देखीने, मोह वदे चित्त लाय ॥२॥ तुमचो मुख आखेय छे, नागा आव्या आज ॥ में आगेंही जाणियो, तुमथी नहुवे काज ॥३॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ देशी पारधियानी ॥ अथवा ॥ बांगरियानी ॥ अथवा ॥ डुर्गपाल दलेलशुं रे, उत्तर पाछो देह रे॥ पुरोहितजी ॥ ए देशी ॥ वली राजा इम बोलियो रे, मुज नट दंन कहाय रे॥ दंन दरिया ॥ ते नवि दीसे स्थानकें रे,जीवन सम मुज थाय रे ॥ दं० ॥ मेरे कामित काम करीया, मेरे राज धुराकों धरीया, हुं चाहुं दर्शन तुज रे ॥ दं० ॥१॥ ए आंकणी ॥ ते हाथें मुज राज्य छे रे, जमणी बांह सहाय रे ॥ दं० ॥ विरुइ वेला एहनी रे, न सुणावे माहाराय रे ॥ दं० ॥२॥ डुष्ट स्वप्न नवि देखियुं रे, अंग न फरक्युं कोय रे ॥ दं० ॥ शकुन विरोधी न ग्रह्यां रे, ए चिंता क्युं होय रे ॥ दं० ॥ ३ ॥ इम सुणि सेवक आपणी रे, मांभी कहे सब वात रे ॥ दं० ॥ दंनें अमने मूकिया रे, इहां रह्यां न बने धात रे ॥ दं० ॥ ४ ॥ साहिबने जाइ कहो रे, ए सघलो परकार रे ॥ दं० ॥ हुं छानो वेषांतरें रे, लेशुं सकल विचार रे ॥ दं० ॥ ५ ॥ काचे कामें आवतां रे, न रहे सेवकधर्म रे ॥ दं० ॥ आव्यो मुजने देखजो रे, वैरीनो लही मर्म रे ॥ दं० ॥ ६ ॥ इम सांजली मोह नृपति रे, आनंद अधिक उत्साह रे ॥ दं० ॥ सजामांहे बेठो थको रे, दंन तणा गुण गाय रे ॥ दं० ॥ ७ ॥ छल बल बुद्धि निधाननो रे, माजी घरनो स्थंन रे ॥ दं० ॥ जीवन तुं चिरंजीवजे रे, थारां चरित्र अचंन रे ॥ दं० ॥ ८ ॥ सेवक ए जंबुक थया रे, तुं पंचायण सिंह रे ॥दं०॥ विरुवा वैरी चिहुं दिशें रे, तिहां पण नाणी बीह रे ॥ दं० ॥९॥ सेवक प्राण जणी गणे रे, तृणसम स्वामी काज रे ॥ दं० ॥ ए सेवक धर्म सांजल्यो रे, तें राख्यो ते आज रे ॥ दं० ॥ १० ॥ नृपति जीपत ते करी रे, वैरीनां बहुवृंद रे ॥ दं० ॥ संसारी रीत जामिनी रे, त्यां तुं पूरणचंद रे ॥ दं० ॥ ११ ॥ साटे मांहे तूं सही रे, घाटे हाटें दीठ रे ॥ दं० ॥ राजें काजें धनें वनें रे, सघलेही तुं मीठ रे ॥ दं० ॥ १२ ॥ तुम विण फीका फूस छे रे, लावण्य तुज विण नांहिं रे ॥ दं० ॥ कारज सघलां अन्य छे रे, तूं मीठो ते मांही रे ॥ दं० ॥ १३ ॥ वीरसजा ए माहरी रे, मोतीमाला जेम रे ॥ दं० ॥ मध्यनायक मणि तूं अछे रे, हजीय न आयो केम रे ॥ दं० ॥ १४ ॥ एह वचन क्रोधादिकें रे, सुजटें सुणियुं आम रे ॥ दं० ॥ रीष राजानी जाणीने रे, उठी चल्या फिर ताम रे ॥ दं० ॥ १५ ॥ पुण्यरंगपाटण उपवनें रे, छाना रहिया जाय रे

॥ दं० ॥ पूर दरियावतणी परें रे, मांहे पग न देवाय रे ॥ दं० ॥ १६ ॥ कूरगडु साधु क्रोधें ग्रह्यो रे, बाहुबलि मानें तेम रे ॥ दं० ॥ लोनें केसरी रुषि ग्रह्यो रे, कामें श्रीरहनेम रे ॥ दं० ॥ १७ ॥ खाली फिरी पाछा गया रे, राजा करशे रीष रे ॥ दं० ॥ एम जाणी ताके घणुं रे, चोर परें निश दीस रे ॥ दं० ॥ १८ ॥ ए सेवक विवेकना रे, बंदी कीधा जाण रे ॥ दं० ॥ जोरो करीने ले चल्या रे, मोह नगरी दिश ताण रे ॥ दं० ॥ १९ ॥ बाहु बली रहनेमजी रे,युद्ध करे तिण साथ रे ॥ दं० ॥ आतम घरे आया वही रे, साचा देखाया हाथ रे ॥ दं० ॥२०॥ कूरगडादिक रुषिने ग्रही रे, मोह पुरें लेइ जाय रे ॥दं० ॥ राजासुं मुजरो कस्यो रे,खाट करीने आय रे ॥ दं० ॥ २१ ॥ दुर्गति कारागारमें रे, लेई घाल्या तेह रे ॥ दं० ॥ वैरीने वश ते थया रे, पामे दुःख अछेह रे ॥दं०॥२२॥ वली राजा पूछे कहो रे, दंनतणी कोइ वात रे ॥दं०॥ दर्शन दीठे तेहने रे, मुजने हुवे सुखशात रे ॥दं०॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ तिण अवसर दंन आवियो, अणचिंत्यो तिण गाम ॥ राजा अति अ नो थयो, दंन देखी अनिराम ॥ १ ॥ करि प्रणाम बेसे जिसें, आलिंगन दे राय ॥ रोम रोम उलस्या घणुं, आनंद अंग न माय ॥ २ ॥ कुशल क्षेम पूछे प्रथम, नलें आयो वड वीर ॥ बोल्यो स्वामी पसायतें, तरि आयो रि पु नीर ॥ ३ ॥ सुण साहिब सघलो कहुं, वाततणो विस्तार ॥ राय विवे कनो जाबदो, दीठो अधिक अपार ॥ ४ ॥ कोटवाल करडो तिहां, नगरत णो रखवाल ॥ धर्मरीत राखे खरी, ज्युं पाणी ने पाल ॥ ५ ॥ नगरमांहि पेसण न दे,तब कीधी में बुद्ध ॥ साहिब काम सुधारवा, में वंच्या बहु मुद्ध ॥६॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ वहालेसर मुज विनति॥गोडीचा राय ॥ ए देशी ॥ पुण्यरंग पाटण पेसवा ॥रंगीला॥ में कीधा जाति नेष रे ॥ रंगीला राय ॥ कपट क्रिया करणी करी ॥ रं० ॥ अवसर एवो देख रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ १ ॥ नूर नविक आवी मल्या ॥ रं० ॥ पण न जणाव्यो नेद रे ॥ रं० ॥ वचन जिके हूं उच्चरुं ॥ रं० ॥ तहत्ति करे ध्रुवेद रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ २ ॥ नोजन सखरां में लह्यां ॥ रं० ॥ ते नृति नेख प्रसाद रे ॥ रं० ॥ सुरमुद्रा पण आदरी ॥ रं० ॥ कीधा बहु ला वाद रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ ३ ॥ कीरति कारण आचर्यां ॥रं० ॥ आवश्य

क उच्चार रे ॥ रं० ॥ पण अंतर भेद्यो नहीं ॥ रं० ॥ आत्म प्रत्यें प्रतिकार रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ ४ ॥ दीधी बहुली देशना ॥ रं० ॥ पररंजनने काज रे ॥ रं० ॥ मिथ्याभाव मूक्यो नहिं ॥ रं० ॥ महेर करी मोहराज रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ ५ ॥ श्रावकनो भेख आदर्यो ॥ रं० ॥ उच्चरतो नवकार रे ॥ रं० ॥ निशि रूषि शाला सूइने ॥रं०॥ उपधि लई कीध विहार रे ॥ रं०॥पु०॥६॥ परभातें पूजा रची ॥ रं० ॥ मुखो मुखशुं लाय रे॥रं०॥ धातु रत्न प्रतिमा ग्रही ॥ रं० ॥ नाठो स्वामी पसाय रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ ७ ॥ याचना मिष करी पेखियो ॥ रं० ॥ घर घर दीठ आचार रे ॥ रं० ॥ कूड कपट बहु केलव्यां ॥ रं० ॥ साहिब सान्निध्यकार रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ ८ ॥ नर नारी बहु छेतर्यां ॥ रं० ॥ नव नवा कीधा भेख रे ॥ रं० ॥ हवे पुर वर्णन सांभलो ॥ रं० ॥ दीठो जेह विशेष रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ ९ ॥ नगरीने चिहुं दिशि अछे ॥ रं० ॥ नीयतिको प्राकार रे ॥ रं० ॥ खातिका धर्मनी वासना ॥ रं० ॥ प्रासाद परिणाम सार रे ॥ रं० ॥ पु० ॥१०॥ लेश्या धवली छोहशुं ॥रं०॥ उज्ज्वल कीधी तेह रे ॥ रं० ॥ ऊंची भूमि निवास छे ॥ रं० ॥ साधु जन धर्म नेह रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ ११ ॥ चार भेद धर्म ध्यानना ॥ रं० ॥ तेहज पोल्यो चार रे ॥ रं० ॥ अनुप्रेक्षा चारे अछे ॥ रं० ॥ दृढ किमाड उदार रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ १२ ॥ इन्द्र प्रशंसे जेहने ॥ रं० ॥ श्रीसंघ महाजन तेथ रे ॥ रं० ॥ योगासन बाजार छे ॥ रं० ॥ पुण्य करियाणुं जेथ रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ १३ ॥ समता शेरी मोकली ॥ रं० ॥ बाधा न लहे कोय रे ॥ रं० ॥ ब्रह्मपुरी सोहे भली ॥ रं० ॥ सुखियां सघलां लोय रे ॥ रं० ॥ पु० ॥१४॥ ज्ञान सरोवर शोभतूं ॥ रं० ॥ गुप्ति भली छे पाल रे ॥ रं० ॥ हंस घणा क्रीडा करे ॥ रं० ॥ शान्ति सरस रस शाल रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ १५ ॥ जीव दया देवी भली ॥ रं० ॥ नगरतणी रखवाल रे ॥ रं० ॥ सखरी चरचा कूपिका ॥ रं० ॥ घर घर नयन निहार रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ १६ ॥ आत्मभावना भावतां ॥ रं० ॥ षट् रूतुहीका चात रे ॥ रं० ॥ केहा गुण तसु दाखवुं ॥ रं० ॥ दीठां आवे धात रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ १७ ॥ ते आगल पुर ताहरुं ॥ रं० ॥ दीन हीन दुःख जाल रे ॥रं०॥ कांइ शोभा धरे नहिं ॥रं०॥ रतन आगल ढेखाल रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हंस कहे सुणजो वली, नगरी लोक विचार ॥ अंतर ए में देखियुं, सरशव मेरु प्रकार ॥ १ ॥ थीणद्धी निद्रा घणी,तुज लोकामें दीठ ॥ जाग रुक ते लोक छे, चेतन चातुर मीठ ॥ २ ॥ अल्प हेत भारत करे, प्रायें ताहरां लोक ॥ वेढ नाम ते नवि लिये, तिलभर नांही शोक ॥ ३ ॥ बंधन बहुलां इहां लहे, ताडन तर्जन जोर ॥ तिहां कोई जाणे नहीं, बंध किस्या परिघोर ॥ ४ ॥ दीन हीनता ए लहे, क्षण क्षण वारोवार ॥ नव नव मंगल ते लहे, सार समाधि विचार ॥ ५ ॥ इहां राजा दंमे घणुं, लोक न आवे दाण ॥ राज प्रजा ते एक छे, हितवत्सल ते खाण ॥ ६ ॥ अछे लोक अति क्लेशसूं, धन पामे छे कोय ॥ सहजें धन पामे घणा, ए अचरिज तिहां जोय ॥ ७ ॥ इहां धन धरती गाडियें, अधोगमनने हेत ॥ तिहां देवल दानें करी, वाहीजें शुभ खेत ॥ ८ ॥ लाभतणो सांसो इहां, उद्यम अधिका घोर ॥ निश्चें लाभ तिहां सही, अल्प उद्यमें जोर ॥ ए ॥ इहां बमणे लाभें करी, हर्ष धरे सहु कोय ॥ लाभ अनंतें पण तिहां, आश धरे नहिं जोय ॥१०॥ हीन वस्तुमां पण सही, लाभ अनंतो थाय ॥ उडद दान दीनां थकां, कंचन कोडी आय ॥ ११ ॥ नरपति सुरपति ताहरा, सेवक सघला जेह ॥ ते तसु नगरी दास सम, एवडो अंतर एह ॥ १२॥ इहां लोकांने सुत अछे, ते पण वैरी थाय ॥ लोक विदेशी फिरी तिहां, हितवत्सल लघुभाय ॥१३॥ एहवां लोक हूं निरखतो, इक दिन सभा मझार ॥ राजऋद्धि देखण भली, उभो जाय तिवार ॥ १४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ राजा जो मिले ॥ ए देशी ॥ साधुनी परखदा ज्योति स्वरूप, तिहां नृप वीर विवेक अनूप ॥ राजा सांभलो, मेरी अरजयकी रिपुने कलो ॥ सत्त्व सिंहासन मांड्युं सार, गुरु आदेश छे छत्राकार ॥ रा० ॥१॥ ए आंकणी ॥ श्रीं ह्रीं बेउ पासें नार आचार,राजाने चामर ढालणहार ॥ रा० ॥ कर्म विवर भलो छे खवास, तिण महाजन आणीजें पास ॥ रा० ॥ २ ॥ ब्रह्मतणा जे जाणणहार, गायन गीत करे विस्तार ॥ रा० ॥ शुभ लेश्या ते नटवी नारी, थेइ थेइ नाटक नाचे उदार ॥ रा० ॥ ३ ॥ स्याद्वाद मुख लीधो ताम, मीठो अमृतथी असमान ॥ रा० ॥ थिगत हूआ ते सघला

लोय, नीकी नटवी नाचती जोय ॥ रा० ॥ ४ ॥ निश्चें व्यवहार लोचन दोय, तिण करी जोतां आनंद होय ॥ रा० ॥ एह रसायण इणहीज ठाम, नहिं को दीसे बीजे गाम ॥ रा० ॥ ५ ॥ सुणवा इछा सुणियें जेह, ग्रहण धारण उह कहीयें तेह ॥ रा० ॥ इणिपरें आठे ही गुणसार, पहिस्या मोतिना तिणे हार ॥ रा० ॥ ६ ॥ आ गाथा माहेला आठगुणनां नाम कहे छे १ गर्व न होय, २ निंदा न होय, ३ कटुकनाषी न होय, ४ अप्रिय न होय, ५ बोलवामां क्रोध न होय, ६ काव्य शरीर लक्षण चेष्टाविषये मौनी होय, ७ पूर्व अवगुण न कहे, ८ स्वात्मा न प्रशंसे ॥ इति ॥ ढाल पूर्वली ॥ सूरितणा गुण छत्रीश होय, आयुध धारे सबलां जोय ॥ रा० ॥ सुविचार बालपणानो मित्र, तिणसुं पहिलो राखे चित्त ॥ रा० ॥ ७ ॥ आगाथामां कहेली सूरिना छत्रीश गुणनां नाम कहे छे १ स्वरूपाधिक, २ तेजस्वी, ३ जुगप्रधान, ४ आगम जाण, ५ मधुरवाक्य, ६ गंनीर, ७ बुद्धिवंत, ८ उपदेश देवाने तत्पर, ९ परगुणनाषी, १० अवगुण न कहे, ११ सौम्य, १२ शिष्यसंग्रह, १३ अवग्रहवंत विकथात्यागी, १४ चंचलता, रहित उपशांत हृदय, १५ क्षमा सहित, अहंकार रहित, १६ कपट रहित, १७ निर्लोनी, १८ तपस्या करे, १९ संयम पाले, २० सत्य बोले, २१ अदत्तत्यागी, २२ शुद्ध परिणामी, २३ परिग्रह रहित, २४ ब्रह्मचर्य पाले, अने बार नावना नावे, ए छत्रीश गुण पूर्व ढाल ॥ तत्व रूची पटराणी सार, मानुं लक्ष्मीनो अवतार ॥ रा० ॥ नव वैराग्य वडो छे पूत, न्यायें राजनो राखे सूत ॥ रा० ॥ ८ ॥ संवेग निर्वेद पुत्र सुजाण, तेज प्रताप घणो ज्युं नाण ॥ रा० ॥ दुश्मन दूर करे पायमाल, जोरावर जोधा वड नाल ॥ रा० ॥ ॥ ९ ॥ पुत्री चारे चतुरां दीठ, करुणा मैत्री मुदता मीठ ॥ रा० ॥ चोथी उपेक्षा नामा सार, सूरि गुणें करी छे सिरदार ॥ रा० ॥ १० ॥ समकित मंत्री छे जसु पास, राजानो पूरण विश्वास ॥ रा० ॥ आर्जव मार्दव ने संतोष, शम रस सामंत नहिं को दोष ॥ रा० ॥ ११ ॥ सात तत्त्व ते साते अंग, राज्यतणा राजे अति चंग ॥ रा० ॥ दानादिक चारे धर्म नेद, चतुरंगसेना नहिं को खेद ॥ रा० ॥ १२ ॥ विमल बोध कोटवाल प्रधान, परमागम नंमार निधान ॥ रा० ॥ क्षायोपशम समकित नाव विलास, दाणी दाण लिये उल्लास

॥ रा० ॥ १३ ॥ न्याय संवाद नामा बे शेठ, सघला लोक बे जेहने हेठ ॥ रा० ॥ पांचे व्यवहार चोधरी पांच, ऊगडामांहे न करे खांच ॥ रा० ॥ १४ ॥ सामायिक आवश्यक सार, पुरोहित पदवीनो अधिकार ॥ रा० ॥ प्रायश्चित्त ते नीरनी धार, निर्मल करवानो आचार ॥ रा० ॥ १५ ॥ सुख समाध ते शय्यापाल, तंबोली धर्मराग विशाल ॥ रा० ॥ शुद्धाशुद्धप्रणाम पमूर, कोडि ज्ञानें सेवक शूर ॥ रा० ॥ १६ ॥ ए सघला निज स्वामी आण, नवि लंघे कांइ मुखनी वाण ॥ रा० ॥ धर्म मंदिर कहे हवे वली दंन, आगल वात कहे बे अचंन ॥ रा० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तिण अवसर तिण परखदा, मांहें कीध पुकार ॥ मोह निह्न सेवक करी, चोरी देश मऊार ॥१॥ पुरजन ऊाली लेई गया, आपणी लांघी कार ॥ सांजली नृप विवेक तब, कीधो कोप अपार ॥ २ ॥ मुख बोले वली एहवुं, मेलो मोह नरेश ॥ तीन भुवन राजा थयो, न थइ तृप्ति अजेश ॥ ३ ॥ में प्रभुता निज गुण लही, देखी शके नहिं एह ॥ लोनी लोन वशें करी, लेहशे लंगर बेह ॥ ४ ॥ राज तेज तेहज खरो, ज्यां रहि रिपु उपचार ॥ दिनकर कर दीठां थकां, केम रहे अंधकार ॥ ५ ॥ इण वैरी जन्मां थकां, प्रभुता न लगे मीठ ॥ माटी कुंन मुखें रह्यो, मोघर नलो न दीठ ॥ ६ ॥ इम आलोची मंत्रीने, बोलायो नृपाल ॥ मतिनिधान तुं मंत्रवी, प्रभुता वन रखवाल ॥ ७ ॥ बल बल कांइ केलवी, जिंपीजें रिपु एह ॥ राज काज स्थिरता रहे, बुद्धि बतावो तेह ॥ ८ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ मोरा साहिब हो, श्री शीतलनाथ के ॥ ए देशी ॥ मंत्रीसर हो महोटो मतिवंत के,कर जोडीने वीनवे ॥ सुण साहिब हो मुऊ गुरु बे जाण के, आगम नीगम अनुनवे ॥ १ ॥ ते गुरुने हो में राख्यो पूठ के, राज्य वधे के युं रहे ॥ ब्रह्म बोल्यो हो तमचो रिपु मोह के, जोरावर अति गहगहे

आ चौदमी गाथामां लखेला पांच व्यवहारनां नाम कहे छे. १ लज्जावंत, २ प्रायश्चित्त शुद्ध, ३ दोष प्रकाशीन, ४ ग्रंथ निर्वाह, ५ उपत्सर्ग अपवाददर्शी. अथवा कालादिक पांच कारणनां नाम कहे छे ॥ कालो सहाव णियइ, पुव्वकयं पुरिसकारणे पंच ॥ मिच्छत्तं तं चेव ऊसग्ग संवुदोति सम्मत्तं. अर्थः-१ काल, २ स्वभाव, २ नियतित, ४ पूर्वकृत,५ पुरिसकार.

॥ २ ॥ गुरुरुवाच ॥ मोह जीत्या हो तुमची वृद्धि होय के, ते तो इण परि जीपियें ॥ पुरवचनें हो जगमांहि विख्यात के, सर्वज्ञ राजा दीपियें ॥ ३ ॥ तसु राणी हो केवलसिरी जाण के, निर्मलरूप निधान छे ॥ तसु लीणो हो रहे निशिदिन राय के, दिन दिन चढतो वान छे ॥ ४ ॥ तसु संवर हो महोटो उमराव के, सामंतमां सिरदार छे ॥ तसु घरणी हो मुमुक्षा नाम के, जोगीसर हैयें हार छे ॥ ५ ॥ तसु पुत्री हो संयमसिरी नाम के, सकल जीवां हितकारिणी ॥ तसु कन्या हो परणो विवेक के, तेह होशे जयकारिणी ॥६॥ कन्यानी हो सखियां सुखकार के, पांच अने त्रण आखीयें ॥ एकेकी हो जीपे छे मोह के, एह वचन गुरु भाखियें ॥ ७ ॥ इरजामुख हो धर्म रुचि अणगार के, करकंडू भाषा आदरी ॥ वेयर स्वामी हो कीधी आहार शुद्धि के, देवनी भिक्षा नही भखी ॥८॥ पडिलेहण हो वल्कलचीरी कीध के, समिति चोथी तिणे अनुसरी ॥ ऋषि ढंढण हो परठवतां सार के, पांचमी समिति विधें करी ॥ ए ॥ प्रसन्नचन्द्रें हो करी मननी गुप्ति के, धोयां दुष्कृत ध्यानशुं ॥ मेतारज हो धरि भाषा गुप्ति के,क्रौंच उपर दयावानशुं ॥ १० ॥ तनु निश्चल हो अनुभव तिणे पाय के, चिलातीपुत्र ते परगडो ॥ इणे राखी हो तनुनी शुद्धि गुप्ति के, परमातम ध्यानी वडो ॥ ११ ॥ ए आठे हो सखियां अभिराम के, संयमश्री साथें रसी ॥ ए परण्यां हो पीछें विवेक के, मोह भणी करशे वसी ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राय विवेक ए सांभली, मनमां करे विचार ॥ एक म्यानमां क्युं रहे, बे सारी तरवार ॥ १ ॥ सुतवंती शीलधारिणी, घरमां बेठी नार ॥ ते ऊपर क्युं आणियें, साल समान विचार ॥ २ ॥ गाढागारीनी परें, कलहो करशे दोय ॥ घरट समोवड दो घरणी, प्रीत करण सम जोय ॥ ३ ॥ बीजी परणे सुख भणी, मूढ जिको नर होय ॥ इक दिशि ऊग्यो सूर पण,बीजी पडतो जोय ॥ ४ ॥ इम चिंतातुर देखीनें, आइ तत्त्वरुचि नार ॥ मुख हसिने एम उच्चरे, सुण साहिब भरतार ॥ ५ ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ बे कर जोडी वीनवुं जी ॥ ए देशी ॥ कर जोडी कामिनी कहे जी, तुं नर नाथ कहाय ॥ चिंता बहु नारी तणी जी, नबला नरने थाय ॥ रा

जेसर प्रमदा परणो तेह ॥ जिण परण्या प्रौढी हुवे जी, आतम रूद्धि अबे ह ॥ रा० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ कुलवंती कामणी तीका जी, बहु मिलिया जस लेह ॥ अवधि आया नां तजे जी,फटक न दाखे बेह ॥ रा० ॥ २ ॥ जगति जुगति मूके नहिं जी, नर्त्तानी नली नार ॥ सागर नदियां सो फि रे जी, गंगा महिमा अपार ॥ रा० ॥ ३ ॥ पुरुष रीति बीजी अबे जी, ना री रीत न कांय ॥ वेली वृक्ष समान बे जी, पण क्युं सरिखा थाय ॥रा० ॥ ४ ॥ वृक्षें हस्ती बांधीयें जी, वेली न धरे जाण ॥ इणि परें पुरुष प्रधा न बे जी, न करो कांही काण ॥ रा० ॥५ ॥ बहु नारी परण्याथकां जी, पुरुष नणी नहिं दोष ॥ संयमश्री आयांथकां जी, हुं न धरुं मन दोष ॥रा०॥६॥ निकला विकल धणी हुवे जी,नारी न तज्यो जाय ॥ दुःख सुख सरसुं माबली जी, सारस सम नवि थाय ॥ रा० ॥ ७ ॥ जिण आयां निज जय हुवे जी, हुं सेवुं तसु पाय ॥ एह वचन सुणि नारीनुं जी, हरखी बोल्यो राय ॥ रा० ॥ ए ॥ शोक्यें एहवुं सहु पढें जी, तो हुइ जयत अपार ॥ विलंब न कीजें तो हवे जी, सुण मंत्री शिरदार ॥ रा० ॥ ॥ ए ॥ अति उज्ज्वल परिणाम बे जी, तेहिज सेवक थाय ॥ परधानें ए मूकियो जी, उत्तगशे जिण राय ॥ रा० ॥ १० ॥ महिर नली मो उप रे जी, राखे श्रीजिनराज ॥ कन्या तेह देवावशे जी, बांह ग्रह्यानी लाज ॥ रा० ॥ ११ ॥ मंत्री सज्ज करी नरा जी, मूक्या जिनवर पास ॥ ए वि रतंत सहु लही जी, लई आयो चारुनास ॥ रा० ॥ १२ ॥ मत विश्वास करो हवे जी, वैरी वाध्यो वान ॥ आज राज्य अतुली बली जी, कोइ प्रग ट्यो निधान ॥ रा० ॥१३॥ तसु पुर नर नारी धरे जी, तुमशुं जाति वैर ॥ ॥ मंत्री जापतो उपरा जी, साधे सगलो नयर ॥ रा० ॥ १४ ॥ वस्त्र तजे तप आदरे जी, लिखन पठन ध्यान लीन ॥ कामण टुमण आचरे जी, तुजने करवा क्षीण ॥ रा० ॥ १५ ॥ तुज नगरी लोकां नणी जी, लोनावे मुख मीठ ॥ आप सरिखा आचरें जी, एवुं अचरिज दीठ ॥ रा० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मोह महीपति एहवो, दंन मुखें सुणि वाद ॥ फालभ्रष्ठ वानर जि स्यो, पामे चित्त विषाद ॥ १ ॥ वैरी वधतो देखीने, मनमां करे विचार ॥ तिणं अवसर हवे मोहसुत, अरज करे अवधार ॥ २ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ देशी कडखानी ॥ तार किरतार,संसार, सागरथकी॥ ए देशी ॥ वात हवे तातजी, सांजलो मयणनी, एवडी चिंत मन, कांइ आणो ॥ मुज स रिखा सुत, सेवक ताहरे,कुण अछे तुज सम,राय राणो ॥वा०॥ १ ॥ बंध नरवृंद, करशुं घणा देख तुं, इन्द्र ने चन्द्र सब, पाय आणुं ॥ सकज सुत घर छते, जनक चिन्ता करे, मूढता केहनी, चित्त जाणुं ॥वा० ॥२ ॥ पुत्र हुं आपनो, तो नवि बीहीजीयें, रवि तणो पुत्र, शनि लोक आखे ॥ छीप सुत मोतीडां, मातनो घात करी, सकज सुत एहनें, कोण दाखे॥वा० ॥ ३ ॥ तातने शात सुख, संपजे जिणथकी, कमलथी जेम् सर, सोह पा वे ॥ पुत्रना पदकज, पालणे प्रीछियें, लोक वैरी तिके, जासु गावे ॥वा० ॥ ४ ॥ नाम अभिराम, अंगज किस्युं कीजियें, अंगनो मेल, अंगज कहीजें॥ तेह नाखी दिये, वनतणां फूलनें, वास गुणराशि, शिर पर वहीजें ॥ वा० ॥ ५ ॥ धीरता वीरता, मन धरी जे रहे, सांकडे आणीने, शत्रु पाडे ॥ जगतिमें नीर, पावक भणी उंटवे,तेहने वाडवा, ग्नी नसाडे ॥ वा० ॥ ६ ॥ एहवां आकरां, वचन सुणि पुत्रनां, मोहनें मन हुउं, सुख सवायो ॥ सा धु साबाश, साबाश तुं सुत भणी, आज तें पुरुषता, बल जणायो ॥ वा० ॥ ७ ॥ एहवे तेजें करी, वंश दीपाइयो, सन्य संदोह, अंदोह टाल्यो ॥ राज्यनो भार, सुविचार सुत कंध हवे,शत्रु जल गाहवा,पोत भाल्यो ॥वा० ॥ ८ ॥ काष्ठथी घणुं हुउं, धूम पावकथकी, तनुथकी व्याधि, बुध चन्द्र देखो ॥ वृक्षथी लाख छे, नीरथी पंक छे, एहवा पुत्र,कुपुत्र लेखो ॥वा०॥ ए ॥ धूमथी मेह छे, बिंब पाषाणथी, पंकथी कमल मणि, सर्प माथे ॥ कलश माटीथकी,एहवा पुत्र हुवे, वंश विभूषणा, शोभ साथें ॥वा०॥१०॥ ताहरी अंग, जगावणी एहवी, शत्रु दल धान, ने घरट भारी ॥ लोक आ नंद करी, तो भणी वर्णवे, जूठ ते दीठ निज, दृग पसारी॥ वा० ॥ ११ ॥ हस्ति ज्युं मस्त वली, ताहरे मित्र छे, जगतने जीपतो, मधु कहीजें ॥ फू टरां फूल जे, बाण छे ताहरे, रिपु भणी जीपतां, साथ लीजें ॥वा०॥ १२ ॥ मनतणा अतिघणा, घोर परिणाम छे, तेहज ताहरा, दास ताजा ॥ सार शृंगार तें, सैन्य साथें लिया, मेघ घनघोर धुनि,तेहज वाजां ॥वा० ॥१३॥ माहरो मंत्री, मिथ्यात्व नामा भलो, तेह पण ताहरे,साथ सारु ॥ रंजती

प्रीति वली, रति भली भारजा,शुद्धनी सिद्ध,अब जात वारु ॥वा०॥ १४ ॥ नारिनी गोठ, ते जोगणी ताहरे, मंत्रनी तंत्रनी,घात जाणे ॥ कुपथ कथा ग्रहे, लोकने भोलवे, रिपुतणा सैन्यनी, वात आणे ॥वा०॥१५॥ गीतनी रीति ने, नाटक नाचतां,हाव ने भाव, प्रमदा विलासा ॥ चारु मणिहार, हथियार साथें धरे, मुखतणा मागिया, होय पासा ॥ वा० ॥१६॥ हास्य ने जूवटो, बे जणा ताहरा, अंगना चंग, रखवाल राखे ॥ रामत अति घणी,तेह दासी भली, काम ने काज, सब तासु आखे ॥वा०॥१७ ॥ सुख अभिमान, सन्नाह तुं पहेरजे, नेत्रने पान, कुपाटोप धरजे ॥ विषय इंद्रियतणा, चंचल हय घणा, मत्त उन्माद, मातंग वरजे ॥ वा० ॥ १८ ॥ रथ घणा साबता,जेह मनोरथा, पायक लायक, प्रेम पूरा ॥ नायका सायका, वरसती फोजमां, शोभशे जीपशे, शत्रु शूरा ॥ वा० ॥ १९॥

॥ दोहा ॥

॥ मोहराय इणपरें कह्यो, मदनतणो परिवार ॥ राय विवेकने जीपवा, शीख दिये सुविचार ॥ १ ॥ पुत्र सुपूत तुं माहरे, राजनीतिनो जाण ॥ मति वेशासे केहने, ए माहारी छे वाण ॥ २ ॥ थोडुं बोले बहु करे, अति उत्सुक मन होय ॥ धीर वीर होवे खरो, छल बल करजे जोय ॥ ३ ॥ जोगी जंगम जटिलने, नर नारी तिर्यंच ॥ तरुण वृद्धने पीडवे, कां न करे खल खंच ॥ ४ ॥ क्षत्री क्षमा न आदरे, याचक लाज न कांइ ॥ वेश्या प्रेम धरे नहिं, काम अर्थ किम थाय ॥ ५ ॥ अवसर विण गुण दोष छे, दोष हुवे गुणपोष ॥ स्नान समे वस्त्र मूकियें, वांको डुम लहे तोष ॥ ६ ॥ जग सघलो जुगतें फरी, साधे सघलां गाम ॥ प्रवचनपुर मत पेसजे, अरिहंत राजा गाम ॥७॥ शूरवीर तेहज खरो, जोवे ठाम विशेष ॥ पाडे मयगल भींतने, गिरि पाडे नहिं देख ॥ ८ ॥ एक गाम जीतो नहिं, कां नहिं यशनी हाण ॥ वन घन छाया नहिं नसे, इक तरु छेद्ये जाण ॥ ए ॥ पिता शीख इणि परें कही,शिर पर धारी मयण ॥ चारवाक पंभित भणी,बोलावी वदे वयण ॥ १० ॥ कुंवर भणी वढवातणो, मुहूरत जोवो सार ॥ चार्वाक हवे बोलियो, सुण साहिब सुविचार ॥ ११ ॥ भोग क्षीर तिण क्षीर कलि, गुरु नारी धिक्कार ॥ वृष्टि वाउलमें अपशकुन, एता गमन निवार ॥१२॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ चतुर सनेही मोहनां ॥ ए देशी ॥ मोह महीपति सांजलो, बीज जली तिथि जोय रे ॥ चन्द्र उदय हूआं थका, गोधूलिक शुन्न होय रे ॥ मो० ॥ १ ॥ माततणे पाये नमी, तिलक करायो हरखी रे ॥ लीधी माता बहेननी, आशिष अधिकी निरखी रे ॥ मो० ॥ २ ॥ आदेश ताततणो ग्रह्यो, नाइशुं बाढु मलिया रे ॥ प्रेमें मित्र कलत्रशुं,लोचन हुवे गलगलियां रे ॥ मो० ॥ ३ ॥ पापश्रुत नट ए नलां, बिरुद नणीजें सारो रे ॥ कुमित्र प्रसंग मातंग छे, तसु पर बेशी कुमारो रे ॥ मो० ॥ ४ ॥ चतुरंगी सेनाग्रही, वड वडा योद्धा साथें रे ॥ शूरा पूरा शोनता, जयलक्ष्मी धरे हाथे रे ॥ मो० ॥ ५ ॥ काम तणी कटकी चढी, तिहां नारीसुख शूरा रे ॥ हास्य विलास हेतें करी, अधिका सोहे सनूरा रे ॥ मो० ॥ ६ ॥ बाण ते कामक टाक्ष छे, चूहांको धन लीधो रे ॥ ढाल ते घुंघट पट धरी, बाण चलावे सीधो रे ॥ मो० ॥ ७ ॥ रोदन मोदन मदनना, नव नव रंग तरंगो रे ॥ मोहें सुर नर मोहिया, चूक्या इणने संगो रे ॥ मो० ॥ ८ ॥ पशु पंखी पण जीपियां, एकेन्द्रिय पण जीत्या रे ॥ किंकर काम तणा घणां, पसऱ्या सबल अनीता रे ॥ मो० ॥ ९ ॥ इन्द्राणी रूपें करी, इन्द्रने जीत्यो कामो रे ॥ स्त्रीरयणें जीपवा, चक्रवर्ती अनिरामो रे ॥ मो० ॥ १० ॥ अनमी आण धरे नहिं, वांकी टेढी पागें रे ॥ जोधा राव घणा अछे, पण किंकर स्त्रीआगें रे ॥ मो० ॥ ११ ॥ त्रिवल्ली त्रिपथ कहीजियें, नारी उदरें होवे रे ॥ काम पिशाच तिहां वसे, मूढा नर जे जोवे रे ॥मो०॥१२॥ पाधोटे पंक्तिनणी, शुचिने रुचिकर हसतो रे ॥ अरध करे धीरज नणी, जिहां तिहां ए धसमसतो रे ॥ मो० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कामतणी फोजां फरी, चिहुं दिशि सारे जग्ग ॥ कोई शर सांधे नही, योषित जोधें नग्ग ॥ १ ॥ ब्रह्मापुर कानें सुण्यो, राय प्रजापति होय ॥ ब्रह्म तेज सब जगतनो, जनक कहीजें सोय ॥ २ ॥ एहनो थें टालो करो, आखे आगें वाण ॥ कोइ कालनो मोकरो, छोडो ब्रह्मा जाण ॥३॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ राग धमाल ॥ अथवा ॥ पर घर गमन निवारियें ॥ ए देशी ॥ इणि

परें बहुपरें वारियो, पण न टल्यो काम कुमार हो ॥ ब्रह्मापुर जाइ ढूकियो, निज तेग जगावणहार हो ॥ इ० ॥१॥ फोज विदा करी नारिनी, चिहुं दिशि पासें लीधो घेर हो ॥ ब्रह्मा पण ध्यान कोटमां, लीणो बे न हुवे जेर हो ॥ इ० ॥ २ ॥ रागदूत विचमें फिरे, आखे मत करजो खेड हो ॥ कोट उंट लीधी अछे, पण मयण न गोडे केड हो ॥ इ० ॥ ३ ॥ तीन जगत ए साधतो, आव्यो छे तुमपें धाय हो ॥ तनक तनक तुऊ कोटने, करशे तुऊ आण मनाय हो ॥ इ० ॥ ४ ॥ सावंत्री जोध मूकियो, इणसेंती राखो रंग हो ॥ ब्रह्मा पण मन चिन्तव्युं, इण साथें न हुवे जंग हो ॥ इ० ॥ ५ ॥ सावंत्रीसेंती मिल्या, उठीने अंगो अंग हो ॥ चतुर हतो पण चूकियो, जेर दीधो जोर अनंग हो ॥ इ० ॥ ६ ॥ ब्राह्मण सघला बांधिया, वनिता जोध पलमांही हो ॥ अनमी कोइ न पेखियो, धर्म धीरज किणमां नांहिं हो ॥ इ० ॥ ७ ॥ ब्रह्मापुर जीपी चल्यो, आगें ते मयणकुमार हो ॥ जमुनाकांठें आवियो, करतो जग चरित्र अपार हो ॥इ०॥८॥ श्याम वर्ण इक सांभलो, पुरुषोत्तम नाम धराय हो ॥ वैकुंठनाथ वखाणियें, अवतार लिया मन दाय हो ॥ इ० ॥९॥ मत्स्य कूर्म नरसिंहना, वामन बलिराजा बंध हो ॥ भार्गव पण एहिज थयो, नवि राख्यो क्षत्रीगंध हो ॥ इ० ॥ १० ॥ दशरथ सुत पण ए हुवो, रावणने मास्यो एण हो ॥ जादव कुलमें अवतस्यो, विरची माया हरखेण हो ॥ इ० ॥ ११ ॥ कंस हण्यो नाग नाथियो, नवला जसु अवदात हो ॥ दानव मानव जीपिया, कुण आखी शके तसु वात हो ॥ इ० ॥ १२ ॥ सागर मथियो भुजबलें, गिरिवर उपाड्यो जोर हो ॥ पंचजन्य परगट कियो, जस शब्द अछे अति घोर हो ॥ इ० ॥ १३ ॥ चक्र गदा शारंग धरे, इन्द्रसेंती जसु प्रीत हो ॥ आज न को एहवो अछे, इणशुं मांभे अनीत हो ॥ इ० ॥ १४ ॥ ज्ञानी मानी पण सही, मधुसूदन ए गोपाल हो ॥ मयण वयण इम सांभली, अति कोप्यो क्रूर कराल हो ॥ इ० ॥ १५ ॥ गोपी जोधा मूकिया, जीपवाने किसन मुरार हो ॥ नयण बाण तीखे करी, भेद्यो लक्ष्मी भरतार हो ॥ इ० ॥ १६ ॥ हास्य राशि रति केलिशुं, वश कीधो केशवराय हो ॥ छल बल कोइ न केलव्यो, रंगरातो मातो थाय हो ॥ इ०॥१७॥ वृंदावनमें खेलतो, गोपियोनी पूरे आश हो ॥ कुसमां करी शिर सेहरो,

विरचे ज्युं कोइ दास हो ॥ ६० ॥ १७ ॥ थाकी गोपीने धरे, निज हाथे सारिका जेम हो ॥ वस्त्र उपाड्यां तेहनां, प्रगटे तिणशुं बहु प्रेम हो ॥ ६० ॥ १९ ॥ वृक्ष उपर चढीनें रहे, गोपियोनां अंबर लेह हो ॥ नव न वि काम विडंबना, करतां नहिं आवे छेह हो ॥ ६० ॥ २० ॥ जोरावर हू तो घणुं, पण हार्यो एकण सार हो ॥ धर्ममंदिर कहे धन तिके, जे जीपे काम विकार हो ॥ ६० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जयंतहत्रा हूई करी,चाल्यो तिहांथी मयण ॥ कोइ अनमी छे वली, इम बोले मुख वयण ॥१॥ किणहिकें आवीने कह्युं, सुण स्वामी मुज वात ॥ अचल एक कैलास छे, तिणपर शंभु कहात ॥ २ ॥ लोक कहे छे तेहने, महोटो श्रीमाहादेव ॥ जटामांहि गंगा वहे, चंद रहे नितमेव ॥ ३ ॥ पास त्रिशूल हथियार धर, वाहन वृषभ विख्यात ॥ जग संहारण जोध छे, अष्टमूर्त्ति कहेवात ॥ ४ ॥ तीन नेत्र छे जेहने, भूषण भस्म भुजंग ॥ जे ह कहे में मदननें, जीत्यो कीध अनंग ॥ ५ ॥ एह वचन सुणी कोपियो, मोह कुंवर मछराल ॥ ऊठ्यो मानुं केशरी, देवा रिपुशिर फाल ॥ ६ ॥ मंत्री कहे मूको तमें, जटिल योगनो धार ॥ कहो किम काढीजें कदे, तृण ऊपर तरवार ॥ ७ ॥ काम कहे मूकुं नहिं, मदनशत्रु कहेवाय ॥ स हस्र किरण उग्यांथकां, तिमिर भाव न रहाय ॥ ८ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ सुमति सदा दिलमां धरो ॥ ए देशी ॥ मदन मोह शर सांधियुं, बे हौ कीध गिरीश ॥ सलूणो ॥ कुसुम चाप करी चाढियो, शंकर ज्युं करी रीष ॥ स० ॥ म० ॥ १ ॥ धूणीधूप तूं कां सहे, छोड दिगंबर वेश ॥ स० ॥ हरिणाक्षी परणावस्यां, कर सखरो घरवेश ॥ स० ॥ म० ॥ २ ॥ महादेव बोल्या तिसे, तुं मन्मथ विख्यात ॥स०॥ पीछें बुद्धि ए दीजियें,पहेली सुण मुज वात ॥ स० ॥म०॥३॥ प्रेत वनें शंभु वसे, भोजन भिक्षा हाथ ॥स०॥ भाजन मनुज कपाल छे, तिल रति नहिं का आथ ॥स०॥म॥४॥ एह अ वस्था छे सही, कहो किण परघर थाय ॥ स०॥ नारी नदीनुं पूर छे, साग रमांहि समाय ॥स०॥म०॥५ ॥ रुंढ मुंम माला गले, आंख विरूप कहाय ॥ स० ॥ मुजथी नासे कामिनी, हंसी थल न सुहाय ॥ स० ॥ म०॥६॥

शाली दाल घृत घोल ते, नारी चाहे नित्त ॥ स० ॥ इहां निक्षायें जीमवो, देख घणो इहां मित्त ॥ स० ॥ म० ॥ ७ ॥ मंमन चंदन मागशे, वस्त्र घणां पटकूल ॥ स० ॥ चर्म बिछावण ए अबे, नारी नणी प्रतिकूल ॥स०॥ म० ॥ ८ ॥ हास्य वयण मुख धारती, त्रिवली रंग तरंग ॥ स० ॥ नारी नदिं ज्युं जाणियें, बूडे जे करे संग ॥ स० ॥ म० ॥ ए ॥ लोचन सहस्र तणो धणी, खबर न लाने कांय ॥ स० ॥ नारी निशा अंधकारमां, अवरने केम कहाय ॥ स० ॥ म० ॥ १० ॥ मन परिणाम ते वानरी, काम किरात करूर ॥ स० ॥ अजगर हास्य विलास बे, नारी अटवी नूर ॥स० ॥ म० ॥ ११ ॥ नारीथकी हुं बीहतो, पर्वत बेगो आय ॥ स० ॥ तपसी जोगी जाणीने, मूक तुं मननी दाय ॥ स० ॥ म० ॥ १२ ॥ मदन कहे नीलकंठने, केड न मूकुं कोय ॥ स० ॥ परण तुं पारवती नणी, शीलवंती ए होय ॥ स० ॥ म० ॥ १३ ॥ मदनवशें माहादेवजी, गोपी परण्या नार ॥ स० ॥ निक्षा तो नावे नहिं, सांनलजे नरतार ॥ स० ॥ म० ॥ १४ ॥ निक्षा सखरी निक्षुने, गेहीने न सुहाय ॥ स० ॥ धान्य घणुं घरमां हुवे, ते कहुं तुऊ उपाय ॥ स० ॥ म० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गौरी कहे माहादेवजी, जाउं कृस्मनी पास ॥ क्षेत्रनूमि ते आपशे, बीज धनद परकाश ॥ १ ॥ हल तो हलधर आपशे, यमघर महिष सुचंग ॥ वृषन एक तुऊने अबे, खेती कर मन रंग ॥ २ ॥ नातुं हुं लावीश नलुं, इम चलशे घरवास ॥ पण निक्षा नहिं जीमशुं, इम कीधो उपहास ॥ ३ ॥ काम विटंबन बहु करी, नव नव कर्म विकार ॥ कहेतां अंत न पामियें, इम जाणे किरतार ॥ ४ ॥ पाराशर जमदग्नि वली, चूकाया इणे काम ॥ तीन नुवन जींत्या इणे, फिरि फिरि सघले गाम ॥ ५ ॥ पुण्यरंगपाटणनी दिशें, चाल्यो मदन कुमार ॥ तिण वेला ते नगरमां, प्रगट्यो ए आचार ॥ ६ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ कोयलो पर्वत धूंधलो रे लोल ॥ ए देशी ॥ कर जोडी करे विनति रे लोल, मंत्री विवेकने एम रे ॥ राजेसर ॥ पुण्यरंगपाटणमां हुवे रे लोल, उत्पात सघला केम रे ॥ रा० ॥ क० ॥ १ ॥ गढ मढ मंदिर ध्रूजियां रे

लोल, नूकंप तारापात रे ॥ रा० ॥ शोणित बिन्दु आकाशथी रे लोल, वू
ठा न वारु वात रे ॥ रा० ॥ क० ॥ २ ॥ तिण अवसर किण आखीयो रे
लोल, आयो मोह कुमार रे ॥ रा० ॥ राजा प्रजा सहु शंकिया रे लोल,
नूंमा असुर अपार रे ॥ रा० ॥ क० ॥ ३ ॥ मंत्रीशुं नृप चिंतवे रे लोल, की
जें इणशुं जुऊ रे ॥ रा० ॥ जीतहुवा जो हुजीयें रे लोल, तो कीजें ए गु
ऊ रे ॥ रा० ॥ क० ॥ ४ ॥ मंत्री कहे सुण साहिबा रे लोल, गुरुनुं वच
न ले आम रे ॥ रा० ॥ संयम स्त्री परण्या विना रे लोल, कोइ न होवे का
म रे ॥ रा० ॥ क० ॥ ५ ॥ मोहतणो हजी जोर ले रे लोल, तिण ए मदन
दीपाय रे ॥ रा० ॥ ब्रह्मादिक जिंत्या इणें रे लोल, कीधा कोडि उपाय रे
॥ रा० ॥ क० ॥ ६ ॥ अवसरसेंती सिद्ध ले रे लोल, सघली वातामांही रे
॥ रा० ॥ आतम बल विण फोरव्यां रे लोल, कष्ट किया फल नाहिं रे ॥
रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ आपें पण एहनी परें रे लोल, पाम्या पराजय ठाम रे
॥ रा० ॥ तो हमणां ए श्रेय ले रे लोल, जाइ प्रवचन गाम रे ॥ रा० ॥
क० ॥ ८ ॥ वरशे संयम कन्यका रे लोल, तो ए ठार समान रे ॥ रा० ॥
अरिहंतशुं साचा हुआं रे लोल, वधशे आतम वान रे ॥ रा० ॥ क० ॥ ए ॥
आपणने कोइ आखशे रें लोल, कायर मूको माण रे ॥ रा० ॥ अवसर
जाणिने आखशे रे लोल, बहुविध लोकनी वाण रे ॥ रा० ॥ क० ॥ १० ॥
नलराजा पत्नी तजी रे लोल, रुखें मूकी नूमि रे ॥ रा० ॥ आतमहित
इण आचर्यो रे लोल, नायो अपयश धूम रे ॥ रा० ॥ क० ॥ ११ ॥ राय
विवेक वदे इस्युं रे लोल, ढील न कीजें आज रे ॥ रा० ॥ नाजन नोज
न सिद्ध ले रे लोल, केही कीजें लाज रे ॥ रा० ॥ क० ॥ १२ ॥ तुं पूंठे ते
आवजे रे लोल, सघला लोक लेइ साथ रे ॥ रा० ॥ हुं आगेंथी जाइने
रे लोल, उलगशुं जगनाथ रे ॥ रा० ॥ क० ॥ १३ ॥ इण अवसर नर
आविया रे लोल, पहेला मूक्या जेह रे ॥ रा० ॥ नमन करीने वीनवे रे
लोल, सुण साहिब ससनेह रे ॥ रा० ॥ क० ॥ १४ ॥ महेर घणी तुम उ
परें रे लोल, ते साहिबनी आज रे ॥ रा० ॥ कुशल प्रश्न बहु पूलिया रे
लोल, हर्ष घणो जिनराज रे ॥ रा० ॥ क० ॥ १५ ॥ मिलण नणी आवे
सही रे लोल, अम चरणे एक वार रे ॥ रा० ॥ इम कहीने अम मूकीया
रे लोल, वात नली निर्धार रे ॥ रा० ॥ क० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सेवक वाणी सांभली, हरख्यो राय विवेक ॥ मनवंछित मुज होय छे, शकुन हुआं अतिरेक ॥ १ ॥ आउ वचन साह्मो हुवे, उत्तम शकुन ते जाण ॥ बोलाव्या पुरुषोत्तमें, केही कीजें काण ॥ २ ॥ विवेकराय हवे चालिनें, प्रवचनपुरमें आय ॥ मंत्री पण पूठेंथकी, प्रजा लोक लइ जाय ॥ ३ ॥ सकल लोक राजा मली, अरिहंतनी छत्र छाय ॥ सुख समाधें जई रह्या, फर भय कोय न थाय ॥ ४ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ इक दिन नमि राजानो हाथी छूट्यो, अति मदमत्तथको ॥ ए देशी ॥ मयण तणां दल पूरां शूरां, पुण्यरंगपाटण आय रहे ॥ हां आय रहे ॥ शून्नुं नगर ते दीठुं सघलुं, मयण भणी ते जाय कहे ॥ हां० ॥ १ ॥ मयण कुंवर मन चिन्तवे एवुं, राय विवेक ते नासी गयो ॥ हां० ॥ नाम सुणीने न रह्यो ऊभो, जंबुक कायरकाय थयो ॥ हां० ॥ २ ॥ कुलाचार पण न कस्यो कोइ, क्षत्रीतणो धर्म नाख दियो ॥ हां० ॥ मंत्रीतणो सुत आखर एहज, राजा एहनें कोण कियो ॥ हां० ॥ ३ ॥ जाति उपर गयो न हुउ असली, भींत विना केम चित्र धरे ॥ हां० ॥ नासण विद्या धुरथी शीखी, ते नहिं विसरी चित्त खरे ॥ हां० ॥ ४ ॥ रणनी होंश रही मनमांहे, इण अवसर शठ ए नाठो ॥ हां० ॥ लोक लाज पण न गणी भोले, काम कियो अतिही माठो ॥ हां० ॥ ५ ॥ जिनवरनो पण भगतो युगतो, निर्मद निर्मम न्याय थियो ॥ हां० ॥ जें जेहवो नर सेवे तेहवो, फल पण हाथोहाथ दीयो ॥ हां० ॥ ६ ॥ जिनवर संगतिथी सिंहादिक, ते पण वैर विरोध तजे ॥ हां० ॥ कां भुरकी ए घाले माथे, शीतल सार समाधि भजे ॥ हां० ॥ ७ ॥ अरिहंत चरण शरण इणें लीधो, फालूं हमणां पुछ ग्रही ॥ हां० ॥ उंदर क्युं बिलमांहे छूटे, जो जब जावे साप वही ॥ हां० ॥ ८ ॥ पण मुज ताततणी ए वाचा, प्रवचन पुर मत जाय कदा ॥ हां० ॥ माहरी कीरति सघले हूइ, जयतपताका पाइ मुदा ॥ हां० ॥ ९ ॥ जयततणां निशान घुरायां, हथियार हवे सब म्यान करे ॥ हां० ॥ नवनवां भेटणां ले तो मन्मथ, निजपुर दिशिने पाउ धरे ॥ हां० ॥ १० ॥ नव रसमां इक सार शृंगारा, काम अयाणे मुख कीयो ॥ हां० ॥ शान्त भणी तें छेहडे थाप्यो,

मन्मथ उलस्यो एम हियो ॥ हां० ॥ ११ ॥ अनुक्रमें आयो अविद्या नगरी, तिहां किणे मेरो आवी दीयो ॥ हां० ॥ मोहरायने दीध वधाइ, सुत आयो यशपुंज लियो ॥ हां० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मोहराय मन हरखियो, आयो पुत्र प्रधान ॥ गुरु लघु रीत न काकरी, साह्मो जाय सुजाण ॥ १ ॥ मन्मथ तातजणी तिहां, तुरत कीयो परणाम ॥ सुत सखरा ते सलहियें, विनयवंत अभिराम ॥ २ ॥ मन वच काया प्रेम धरी, मलिया मनने रंग ॥ शीतल चंदन चंद ज्युं, सुखदायी सुत संग ॥ ३ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ देशी काछबानी ॥ अथवा ॥ वाग्यां जांगी ढोल, हे सखी वागा जांगी ढोल ॥ ए देशी ॥ वाग्यां गुहिर निशान, हे सखी वाग्यां गुहिर निशान, आयो लायक नंदन मोहरो ॥ हरख्यो सब परिवार ॥ हे सखी०॥ ह० ॥ निजकुल शेखर दीपे सेहरो ॥ १ ॥ वंचाणा वचननिनाद ॥ हे० ॥ वं० ॥ तिणे करी अंबर अधिको गाजीयो ॥ पुरजन करे उछरंग ॥ हे० ॥ पु० ॥ धन धन मोह महिपति राजियो ॥ २ ॥ नव नव पाप विकार ॥हे०॥न०॥ नटुआ नाचे राचे जन मना ॥ हाव जाव सुखकार ॥ हे० ॥हा०॥ मंगल गावे तिहां बहुला जना ॥३॥ पूर्ण कलश परधान ॥हे०॥पू०॥ शृंगार पाणि करीने अति जल्यो ॥ मलपति सोहव नार ॥हे०॥म० ॥ साह्मी आवी मंगल जय कर्यो ॥ ४ ॥ आश्रव गोख विशाल ॥ हे० ॥ आ०॥ तसुपर बेठां नर नारी घणां ॥ नृपसुत नयण निहाल ॥ हे० ॥ नृ० ॥ बोले ए सुत तेहने शी मणा ॥ ५ ॥ पुर पेसारो कीध ॥ हे० ॥ पु० ॥ मोहोलें आयो मन्मथ मानशुं ॥ मायादिक परिवार ॥ हे० ॥ मा० ॥ हरख्यो निरखी सुत मुख वानशुं ॥ ६ ॥ युगवर श्रीजिनचंद ॥ हे० ॥ यु० ॥ तास प्रसाद लही करी में कीयो ॥ चोथो खंम रसाल ॥ हे० ॥ चो० ॥ जणतां गणतां हीसे मुज हीयो ॥ ७ ॥ पावक प्रवर प्रसिद्ध ॥ हे० ॥ पा० ॥ दयाकुशल गणी गुरु प्रसादथी ॥ धर्ममंदिर कहे एम ॥ हे०॥ध०॥ अर्थ लह्यो ए में आगमथी ॥ ८ ॥ कर्म विचित्र कहाय ॥ हे० ॥ क० ॥ तेह तणो ए विवरो आखियो ॥ जविजनने सुखकार ॥ हे० ॥ ज० ॥ जिनवर वचन सुधारस

दाखियो ॥ए॥ इतिश्री प्रबोधचिंतामणौ ढालज्ञाषाबंधे मोहचरप्रेषण कंदर्प दर्पदिग्विजयवर्णननामा चतुर्थः खंमः संपूर्णः ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम खंमस्य प्रारंज्ञः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीशंखेश्वर सुखकरु, प्रणमूं पारस नाथ ॥ नाम लियंतां जेहनुं, आवे अविचल आथ ॥ १ ॥ इण अवसर मन्मथतणी, कीरति ज्ञाट करेइ ॥ नव नव बंद स्वबंदथें, वाणी रचना धरेइ ॥ २ ॥ जय जय जगने वल्लहो, जीव जीव चिरंजीव ॥ मोहराय नंदन निपुण, ज्ञव सुख माण सदीव ॥ ३ ॥ तुं शूरा शिरसेहरो, तुं वीरें विख्यात ॥ कुसुम शरें जीत्यो जगत, कोण कहीजें वात ॥ ४ ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वरा, इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र ॥ ज्ञूर सूर गुरु गरुड पंखि, जोगि जति नरवृन्द ॥५॥ तें जगमें जीत्या घणा, आण मनाई जोर ॥ काम पदारथ शिखव्यो, धर्म अर्थ शिवगोर ॥ ६ ॥ विषयतणां सुख तुं लहे, मात तात सुखकार ॥ इम आशीष सुणी करी, दीधुं दान अपार ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥ मात पिता ज्ञगिनी ने ज्ञाइ, पूछे मयणने एम जी ॥ जग जीपणनी वात कहीजें, बल बुद्धि कीधी जेम जी ॥ मा० ॥ १ ॥ मन्मथ मांड्रि कहीजे आगें, जीपणनी सहु वातजी ॥ नागो वीर विवेक विख्यातो, सांज्ञलिया अवदात जी ॥ मा० ॥ २ ॥ माता मन हरख्युं अति गाढुं, वखाणे वारंवार जी ॥ तुं चिरंजीवे वंश विज्ञूषण, धन धन तुऊ अवतार जी ॥ मा०॥३ ॥ बेटा बहुला होशे जगमां, पण तुऊ जोड न कोय जी ॥ तारा बहु आकाशें दीसे, चन्द्र समान न होय जी ॥ मा० ॥ ४ ॥ नयन अमारां चपल चकोरा, तुऊ मुख चन्द्र समान जी ॥ किण दिन सुत आवीने मलशे, हूतो ए मुऊ ध्यान जी ॥ मा० ॥ ५ ॥ आज मनोरथ सघला हूआ, सुरुतरु फलियो आज जी ॥ चातक मोर तणीपरें हरख्यो, तुऊ दर्शन घनगाज जी ॥ मा० ॥ ६ ॥ रति रंगीली तारी नारी, वसंत तारो मित्त जी ॥ स्नेह धरीने दिन दिन जोतां, मारग तारो नित्त जी ॥ मा० ॥ ७॥ रंगरलीशुं सघला मलिया, हू

उअति उछरंग जी ॥ नव नव नाटक गीत विनोदा,कर्म उदय परसंग जी ॥ मा० ॥ ८ ॥ घर घर मयणतणा गुण गरजे, कामकथा विस्तार जी ॥ ली नो जग सघलो कामरागें, काम विकार अपार जी ॥ मा० ॥ ए ॥ उत्सव काम तणा अति कीधा,कहेतां नावे पार जी ॥ नरथी आठ गुणो नारीनें, वल्लन्न काम कुमार जी ॥ मा० ॥ १० ॥ बहुलां सुख संसारनां विलसे, धरतो मन उछरंग जी ॥ धर्ममंदिर कहे धन धन ते नर, कामनो न करे संग जी ॥ मा० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मोह महीपति चिन्तवे, इक दिन एम विचार ॥ वीर विवेक नासी गयो, जीवतो दुःख दातार ॥ १ ॥ मंदमति मुज सुत अछे,बालक बुद्धि विचार ॥ नावी वात न चिन्तवे, ते छलियो संसार ॥ २ ॥ पंमित परखे पलकमें, बाधक साधक वात ॥ छल बल कल जाणे घणा, वीर विवेक कहात ॥ ३ ॥ पंमित तेहने वर्णवे, जे परिणामें मीठ ॥ काथ कटुक मुखरोगने, दूर करंतो दीठ ॥ ४ ॥ कारज तेहिज कीजियें, अंतें सुख दातार ॥ स्वाद मुखें किंपाक फल, आपे अधिक विकार ॥ ५ ॥ शत्रुथकां जे राज्य सुख, ते सुख स्वप्न समान ॥ अरिहंत नृपपासें रह्यो, करशे कोइ विज्ञान ॥ ६ ॥ इम मन चिन्तातुर थको, बेठो मोह नरिंद ॥ सघली मलि बेठी सना, बेठां नरनां वृंद ॥ ७ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ इक दिन माहाजन आवी ए ॥ ए देशी ॥ तिणसमे सेवक वीनवे, सुण साहिब सनेहो जी ॥ कालो रूप कुरूप छे, उंचो छे तसु देहो जी ॥ त्रूटक ॥ तसु देह उंचो, पुरुष कोइ, आवी उन्नो, तियां कणे ॥ कलिकाल नामें, नाम धरतो, नृप जणावे, मुख नणे ॥ दीदार तुमचो, देखवा ए,आयो छे तुम,गुण स्तवे ॥ राजरो हूकम, एथ आवे, तिण समय सेवक, वीनवे ॥ १ ॥ राजा तेहने तेडावियो, दीठो रूप तिवारो जी ॥ मानी वाघतणी परें, लूखो नूखो अपारो जी ॥ त्रू० ॥ अणपार नूख्यो, लोह जडियो, रूप कुरूपी, अति घणुं ॥ ते रूप देखी,सन्नाजननां, कंपियां मन, अति घणुं ॥ तिण आय राजा,पाय प्रणम्या, राजा पण, आदर दियो ॥ कर जोडि कन्नो, वदन आगें, राजा तेहने, तेडावियो ॥ २ ॥ तब राजा मुखें पू

ठियुं, क्षेम कुशल तुम होयो जी ॥ किण कारण चिर कालथी, तुऊ दर्शन ए जोयो जी ॥ त्रू० ॥ ए जोय दर्शन, हर्ष पाम्यां, आया थें, कारण कि से ॥ तव बोलियो ते, पुरुष प्रणमी, हेतु मुऊ मन, ए वसे ॥ इक मयण देखुं, जगत जीपी, जेण इवडो, यश लियो ॥ ए मयण देखो, नयन आगें, तव राजा, मुख पूठियो ॥३॥ बीजुं कारण ए अछे, तुऊ वेरी छे एको जी ॥ हाथ नायो तुऊ पुत्रने, जीवतो नाठो विवेको जी ॥ त्रू०॥ सुविवेक नाठो, तेह चिन्ता, राजन थें, मनमां धरो ॥ तेह चिंता जांजुं, रिपु विनासुं, जो मुऊे, सेवक करो ॥ माहरो पण, तेह वैरी, वयर लेशुं, ते पछें ॥ एवो कलि युग. पुरुष बोल्यो, बीजुं कारण, ए अछे ॥ ४ ॥ कलि बोल्यो सुण नृप ति, प्रवचन पुर तुऊ दूरो जी ॥ माहरे मन सुगमो अछे, लेउं तुऊ हजूरो जी ॥त्रू०॥ हजूर लेउं, देख तूं हवे, ज्ञान रक्षक, बांधशुं ॥ संवेग सामंत, जेह जोधा, तेह सघला, साधशुं ॥ वड वडा वीर, विवेक सघला, सबल हूता, शुज्ञमति ॥ हवे खबर पडशे, अणी माथे, कलि बोल्यो सुण, नृपति ॥ ५॥ देखे हाथ तुं माहारा, प्रवचन पुर उथेडो जी ॥ जोर न ज्ञाजे ज्यां लगे, नवि मूकुं तां केडो जी ॥त्रू०॥ केडो न मूकुं, ज्यां लगें, अवक्षीण न हुवे, ए खरो ॥ मुक्तिनो मारग, ज्ञांजी नाखुं, मदत जो, माहरी करो ॥ अरिहंत राजा, फे डि नाखूं, ध्रुजावुं, धर्मनी धुरा ॥ कलिकाल महारुं, नाम साचूं, देख हाथ तुं, माहरा ॥ ६ ॥ हरख्यो मोह नरेश ते, सांजली वचन करालो जी ॥ काम कहु नर ए खरो, अरिदलनो ए कालो जी ॥ त्रू० ॥ ए काल अरिदल, तणे माथे, उद्धत नर ए, आकरो ॥ चिर काल एहनी, स्थिति न होसी, तोही ज छे मुऊ, काजरो ॥ इम जाणिने निज, पास राख्यो, सार सेवक, सुखकरु ॥ बहु मान दीधो, वडो कीधो, हरख्यो मोह, नरेशरु ॥ ७ ॥

॥ दोहा॥

॥ राज काज लायक घणूं, कलियुग राख्यो राय ॥ रत्नथकी सेवक ज्ञ ला, जिणथी अरि जीपाय ॥ १ ॥ समय स्वज्ञावथकी हवे, अरिहंत मोक्ष सिधाय ॥ दिनकर आथमियें थके, तमनो जोरो थाय ॥ २ ॥ कलियुग फोज मुखी हुइ, सेना लेइ अशेष ॥ चिहुं दिशि पसरे पवन ज्युं, प्रवच नमांही विशेष ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ मेघ मन कांइ भ्रम भोले ॥ ए देशी ॥ राग द्वेष वली अति घणा जी, बांध्या वड विस्तार ॥ विषयतणी तृष्णा वधी जी, विषनी वेल अपार ॥ न विक जन, सुणजो कलियुग वात ॥ मूको बीजी तांत ॥ न० ॥ १ ॥ मन पर्याय ते केवल ज्ञानी, क्षपकश्रेणि सुप्रधान ॥ छेहला संयम तीन जे सखरा, उपशम श्रेणि विधान ॥ न०॥ २ ॥ पुष्कलाक लब्धि ने श्रीजिनकल्पी, चौद पूरव अति मान ॥ आदिम संघयण ने शुक्लध्याना, परम समाधि निधान ॥ न० ॥ ३ ॥ कलियुग आवते एटलां वानां, दूर कस्यां तिण वार ॥ अनुक्रमें दश पूर्वादिक मेव्यां, पूर्वानुयोग विचार ॥ न० ॥ ४ ॥ अंतर मुहूर्तमां पूर्व गुणतां, ते रही लब्धि विशेष ॥ संघयण सघला ते पण बांध्यां, छेवट्टो रह्यो देख ॥न०॥५॥ माहाप्राणायाम ध्यान जे धरता, महोटा श्री ऋषिराय ॥ ते पण दूर कियो कलिकालें, अशुन ध्यान दीपाय ॥ न० ॥ ६ ॥ इणिपरें जाये दिन दिन हीणा, कलियुग कीधूं जोर ॥ काम क्रोध ने वैर विरोधा, रौद्र आर्त अति घोर ॥ न० ॥ ७ ॥ संप्रति राजा अनुक्रमें हूउ, कलिशुं कीध संग्राम ॥ गाम गाम जिनचैत्य कराया, नाव नक्ति अभिराम ॥ न० ॥ ८ ॥ देश अनारजमें पण जिनवर, धर्म दीपायो सार ॥ कलियुग ने तिण कागो कूट्यो, धर्मराग मन धार ॥ न० ॥ ए ॥ ते राजा देवलोक गया पछी, व्याप्यो काल कराल ॥ वडवडा नृपतिनां मन फेस्यां, कीधी मिथ्याजाल ॥ न० ॥ १० ॥ नव नव प्रगट किया पाखंमी, हिंसा धर्म अपार ॥ दुर्भिक्ष पण कलियुगना सेवक, दोड्या वारोवार ॥ न० ॥११॥ जिनवर धर्म कियो तिण खंमित, सामाचारी नेद ॥ महेलां मन मुनिवरनां कीधां, सूधो संयम छेद ॥ न० ॥ १२ ॥ चार अछे अनुयोग जे महोटा, अल्प किया ते काल ॥ लेश देशथी मति श्रुत हूआ, बांध्यो जडता जाल ॥ न० ॥ १३ ॥ जिनशासननी रक्षा काजें, नावे देवी देव ॥ तप जप ध्यान तणो नहिं महिमा, धर्मतणी नहिं सेव ॥ न० ॥ १४ ॥ गणगछ नेद किया इण नूंमे, ऋषिमें घाली राड ॥ आत्मअंगमां थोडा बूझे, वेश नणि धरे वाड ॥ न० ॥ १५ ॥ सूत्र सकल माने नहिं जी, अर्थतणा करे नेद ॥ सर्दहणा जिन वचनें नांहिं, मिथ्या राखे खेद ॥ न० ॥ १६ ॥ नूर शूर नो लाया एणें, लोनतणे वश कीध ॥ निर्ग्रंथने पण सग्रंथ कीधा, मूर्छा मंति

इणे दीध ॥ भ० ॥ १७ ॥ निज गुणनो खप न करे कांइ, परगुण लेवा जाय ॥ सावद्य शास्त्र भणे घणां जी, कर्मबंध जिणे थाय ॥ भ० ॥ १८ ॥ लाल पाल रुषिजी करे जी, अवर जेह नर नार ॥ गजवृत्तिनें मूकी करी जी, लेवें खर आचार ॥ भ० ॥ १९ ॥ विकथा वाद बहु करे जी, आगम न जाणे सार ॥ भाव भेद समजे नहिं जी, बाहिज दृष्टि अपार ॥भ०॥२०॥ समवाये पांचे करी जी, स्याद्वाद सुखकार ॥ ते नवि बूजे धुरथकी जी, जिनमति मूल विचार ॥ भ० ॥ २१ ॥ नय प्रमाण निरखे नहिं जी, निश्चय नय न व्यवहार ॥ द्रव्य अने पर्याय न बूजे, कलियुगने परिवार ॥ भ० ॥ २२ ॥ श्रावक पण वली एहवा हूआ, ए जुगने परसंग ॥ देव न माने गुरु नवि मानें, धर्म उपर नहिं रंग ॥ भ० ॥ २३ ॥ गोगा मोगा ने महमायी, क्षेत्रपाल भली रीत ॥ तेहने सेवे मनशुं सूधा, अरिहंत न धरे चित्त ॥ भ० ॥ २४ ॥ नाटक गीत सुहावे भावे, जिनवाणी न सुहाय ॥ गुरु उपदेश सुणे नहिं कबहूं, घरधंधामां धाय ॥ भ० ॥ २५ ॥ त्याग धर्म करीने युं आखे, फल नव दीठूं कोय ॥ पूरी प्रतीति नाहिं धर्म ऊपर, सिद्ध किहांथी होय ॥ भ० ॥ २६ ॥ दान देइ बहु वंछा इहां राखे, त्याग न राखे भाव ॥ निर्वंछक धर्म मन आचरतां, थाये भवजल नाव ॥ भ० ॥ २७ ॥ माहा मंत्र नवकार तजीने, समरे बीजा मंत्र ॥ पुण्यानुसारी धनने अर्थे, धारे बहुला यंत्र ॥ भ० ॥ २८ ॥ धातुरवादी जूवटे खेले, वांछे धननी राशि ॥ पनरे कर्मादानने सेवे, श्रावक नाम उल्लास ॥ भ० ॥ २९ ॥ वार्दे कुपात्र मुखें धन खरचे,पात्र न पोष्यो जाय ॥ राजा धन दंभीने लेवे, कोडी दान न थाय ॥ भ० ॥ ३० ॥ आतम रूप न उलखे जी, ज्ञान न आणे चित्त ॥ काम क्रोध भीनो रहे जी, आरंभ अधिको नित्त ॥ भ० ॥ ३१ ॥ कलियुग समय स्वभावथी जी, श्रावक एहवा थाय ॥ धर्ममंदिर कहे विण भोगवियां, कर्म न मूक्यां जाय ॥ भ० ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अवर लोक पण कलियुगें, व्यापी पापी कीध ॥ कूड कपट छल बल घणा, कुमति कदाग्रह गृद्ध ॥ १ ॥ सेवक स्वामी छल करे, पिता पुत्र वली देख ॥ पति पत्नीशुं छल करे, लायें कुलनी रेख ॥२॥ न बनें सासू ने वहू, घरमां कलहो होय ॥ वीछू चटकानी परें, सासूवाणी जोय ॥ ३ ॥

वृद्ध तात हुवे जिसे, कथन न माने कोय ॥ अशन वसन आपे नहिं, पुत्र वधू वश होय ॥ ४ ॥ अल्प नरमने कारणे, खेल करे अति घोर ॥ मन संतोष धरे नहिं, तृष्णा वाधी जोर ॥५॥ नगिनी भ्रात तणे घरे, जन्म लगे रीसाय ॥ नाइ मांहोमांहि वली, परणी जूआ थाय ॥ ६ ॥ सगपण संपन को धरे,सहु स्वारथने थाय॥ परमारथ प्रीछे नहिं,कलियुग व्याप्यो आय॥७॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ धर्म हैये धरो ॥ ए देशी ॥ रस कसमां कलि व्यापियो रे, दिन दिन एहवो थाय ॥ मेह घणा वरसे नहिं रे, वाजे अधिका वायो रे॥ कलि कौतुक करे ॥ समयतणो वली जोरो रे, अल्प धर्म हूउ ॥ व्याप्यो पाप अघोरो रे ॥ कलि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पत्नीशुं प्रीत नहिं धरे रे, परनारी लो जाय॥ शीख नली घरनी दीये रे, ते मन नावे दायो रे ॥क०॥२॥ कपट करावे मित्रशुं रे,जननी जनकशुं जूऊ॥ कुबुद्धि शिखावे पापनी रे,आववा न दिये बूझो रे ॥क०॥३॥ स्वारथ लगें मैत्री करे रे,नियम संकट लगि जोय ॥ कष्ट पड्यां समकित तजे रे, एहवा धीरज होयो रे ॥ क० ॥ ४ ॥ थोडी शुन संपत्ति हुवे रे, कइयें विणसी जाय ॥ जो जीवे तो निर्श्रे हुवे रे, योवन धर्मी न थायो रे ॥ क० ॥ ५ ॥ दंन विना धर्म नवि करें रे, क्रोध सहित तप तुछ ॥ मान धरी श्रुतने नणी रे, धन मेले नहिं सुछो रे ॥क०॥ ६ ॥ व्यापारी चोरी करे रे, कुलवंत विट सम थाय ॥ कुल नारी गणिका परें रे, हसन वसन मन दायो रे ॥ क० ॥ ७ ॥ मुख मीठी वातां करे रे, कपट हैयामें राख ॥ कर्षणी अति आरंन करे रे, सामी नावे शाखो रे ॥ क० ॥ ८ ॥ उत्तम फल थोडां हुवे रे, खारां कडुआं लाख॥ अल्प क्षीर गायां हुवे रे, थोडी संतत शाखो रे ॥ क० ॥ ए॥ इम कलिपावक बहु करे रे, सुकृति दूधनो शोष ॥ कुमारपाल नृप अवतर्यो रे, करवा दूधने तोषो रे ॥ क० ॥ १० ॥ उपदेशें हेमसूरिने रे, दीपायो जिनधर्म ॥ उत्तम आचरणा करी रे, दूर कियां पाप कर्मो रे ॥ क० ॥ ११ ॥ अष्टादश देशा विषे रे, मार इसी मुख वाण ॥ कोइ न नांखे नर कदें रे, एवी जेहनी आणो रे ॥ क० ॥ १२ ॥ नरण पोषण नबलां करे रे, दीन हीन उद्धार ॥ नाव नक्ति धर्म रागियो रे, कीधां चैत्य अपारो रे ॥ क०॥ १३ ॥ कलियुग नुं मुख कालिशुं रे, चौलक रींऊ नरेश ॥ सात व्यसन नट कलितणां रे,

हणियां झाली केशो रे ॥ क० ॥ १४ ॥ अमार शब्द उद्घोषणा रे, तेह ज तीखां बाण ॥ कलिने लाग्यां अति घणां रे, पण न तज्यां कलिप्राणो रे ॥ क० ॥ १५ ॥ निरुपक्रम ए आउखे रे, वज्ररुषभ क्युं देह ॥ कइ कोइ पारद सेवियो रे, कलियुग नावे छेहो रे ॥ क० ॥ १६ ॥ गलिया ढोरतणी पेरें, रे होय रह्यो तिणिवार ॥ जीवतो मूक्यो नरपति रे, करुणा चित्त मझारो रे ॥ क० ॥ १७ ॥ चार वर्ण धर्म जिनतणो रे, सेवे नृप आदेश ॥ जीवदया पाले खरी रे, सघला देश विदेशो रे ॥ क० ॥ १८ ॥ अध्यातम गुरु दाखवे रे, जाणी जीव अजीव ॥ निज परगुण परगट कीया रे, धरी स्याद्वाद ज्ञान दीवो रे ॥ क० ॥ १९ ॥ केटलां वरस गया पछी रे, ते पण देवलोक जाय ॥ फिर जाग्यो कलियुग तदा रे, वलतो वश नवि थायो रे ॥ क० ॥२०॥ काम क्रोध जाग्या घणा रे, धर्मधन लूट्युं जोर ॥ दुर्गति जाये प्राणिया रे, करि करि पाप अघोरो रे ॥ क० ॥ २१॥ बहुत युगतांइ इम हूउं रे, कलिकेरो अधिकार ॥ ते पण समयो पामिने रे, क्षीण थयो जिणवारो रे ॥ क० ॥ २२ ॥ जिनवर प्रगट हुआ तदा रे, कलियुग पाम्यो नाश ॥ मोह सुणी मन झूरियो रे, सखर थयो मुझ दासो रे ॥ क० ॥ २३ ॥ अति सखरी मति रूपनो रे, चिरंजीव नवि कोय ॥ में आगेंथी जाणियो रे, स्थिरता वास न होयो रे ॥ क० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नविजन लोक मली करी, जाये अरिहंत पास ॥ कर जोडी ऊना कहे, सुण साहिब अरदास ॥ १ ॥ अमल चलाव्यो कलियुगें, करडो संघले गाम ॥ जीव घणा झाली करी, मूक्या मोहने गाम ॥२॥ करुणाकर करुणा करो, मोहतणो मद फेड ॥ जिणविध ए लोकांतणी, वैरी मूके केड ॥३॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ जी हो मिथिला नगरीनो ए धणी ॥ ए देशी ॥ जी हो जिनपति जगगुरु बोलिया, जी हो करुणानिधि कृपाल ॥ जी हो नविक नणी आश्वासना, जी हो दे जिनवचन रसाल ॥ चतुर नर चेतो चित्त मझार ॥ जी हो शिव अनिलाषा थाय छे, जी हो फलशे वंछित सार ॥च०॥१॥ ए आंकणी ॥ जी हो कलियुग शिव पुर जावतां, जी हो रोधक थियो असमान ॥ जी हो पापी पचीयो पापशुं, जीहो हवे वधियूं धर्म ध्यान ॥ च० ॥

॥ २ ॥ जी हो मोह विटंबन जे करे, जी हो जाणुं हुं हुं तेह ॥ जी हो अवसर विण उदासीनता, जी हो धर रहिया निज गेह ॥ च० ॥ ३ ॥ जी हो वीर विवेक वारु अछे, जी हो तुम दुःख फेडणहार ॥ जी हो संयमस्त्रीने परणिने, जी हो जीपशे मोह अपार ॥ च० ॥ ४ ॥ जी हो आखे स्वामी विवेकने, जी हो विलंब न कीजें सार ॥ जी हो निज भुज बल देखाडिने, जी हो थाउ संयम भरतार ॥ च० ॥ ५ ॥ जी हो वीरकुलें ए कन्यका, जी हो वीरव्रता गुण धीर ॥ जी हो शूरभणी परणे सही, जी हो कायरशुं नहीं शीर ॥ च० ॥ ६ ॥ जी हो कन्याना गुण सांभलो, जी हो अनुपम रूप निधान ॥ जी हो बीजी नारी तेणि पेरें, जी हो नहिं छे एह विधान ॥ च० ॥ ७ ॥ जी हो बीजी नारी सेवतां, जीहो देवता नासी जाय ॥ जी हो ए कन्या परण्याथकी, जी हो सेवक सुरपति थाय ॥ च० ॥ ८ ॥ जी हो बीजी नारी चालतां, जी हो पग पग बंधन थाय ॥ जी हो ए बंधनने छोडवे, जी हो परमानंद सहाय ॥ च० ॥ ९ ॥ जी हो बीजी नारी जुवानने, जी हो वांछे मननी खांत ॥ जी हो ए गरढा नरने खुशी, जी हो एहनी नवली भांत ॥ च० ॥ १० ॥ जी हो लोकनां दूषण जे अछे, जी हो भूषण एहने थाय ॥ जी हो भूख्यो दूबलो एहने, जी हो मनमां आवे दाय ॥ च० ॥ ११ ॥ जी हो अशन वसन वांछे नहीं, जी हो उष्ण न वांछे शीत ॥ जी हो केश न गूंथे एकठा, जी हो भूतल शय्या रीत ॥ च० ॥ १२ ॥ जी हो स्नान विना ए शुद्ध छे,जी हो भूषण विण ए रम्य ॥ जी हो विण जम्यां वलि धारती, जी हो गुण गण रयण अगम्य ॥ च० ॥ १३ ॥ जी हो वस्त्र विना गुपती रहे, जी हो सुरत विना सुखदाय ॥ जी हो प्रेम विना प्रीत धारती, जी हो परम समाधि उपाय ॥ च० ॥ १४ ॥ जी हो नरपति सुरपति ना गमे, जी हो हलधर पण न सुहाय ॥ जी हों एक विवेकी शुद्धशुं, जी हो प्रीति करे मन लाय ॥ च० ॥ १५ ॥ जी हो नियम कर्यो छे एणियें, जी हो राधावेध सधाय ॥ जी हो परणुं पियु प्रीछी सही, जी हो ए आव्युं छे दाय ॥ च० ॥ १६ ॥ जी हो ए कन्या हाजर अछे, जी हो वर तुं वीर विवेक ॥ जी हो परणावे संवर पिता, जीहो ढील न करियें छेक ॥ च० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एह वचन सुणी हरखियो, अरज करे मन लाय ॥ हुं तुमने शुं वीनवूं, तुं सर्वज्ञ कहाय ॥ १ ॥ संजालो सेवक अबूं, टाढो शीलो जोर ॥ कठिन सुणीजें कन्यका, वज्रतणी परें घोर ॥ २ ॥ पण तुऊ चरण प्रसादथी, अतुली बल मुऊ जोय ॥ मलयाचल संयोगथी, चंदन तरुवर होय ॥ ॥ ३ ॥ हूकम लह्यो संवर सुता, परणावे सुखकार ॥ साधे राधावेधने, ते सुणजो सुविचार ॥ ४ ॥

॥ ढाल बही ॥

॥ यत्तनीनी देशी ॥ स्वयंवरा मंफप मंफावे, तिहां वड वडा नूप बोलावे ॥ हीये निहचें थंन रोपे, अति ऊंचो सबल आटोपे ॥ १ ॥ आठे आरा आठ कर्म, अति काठा ते नहिं नर्म ॥ वेगें करी फिरता दीसे, मन वीर विवेकनूं हीसें ॥ २ ॥ वाणी गति विषमाकार, फरे चक्रतणे अनुहार ॥ तिणमांहे तत्त्व ते राधा, रूप पूतली कीध अबाधा ॥ ३ ॥ जीवना जे आठ प्रदेशा, निश्चल मध्य रहे सुदेशा ॥ बीजा असंख्याता जेह, ताता तेल तणी परें तेह ॥ ४ ॥ ते स्थंन तणे अति पासें, क्षमा ऊपर लेइ वासे ॥ धर्म नीरें करीने नरियूं, परमागम कुंन्न कर धरियूं ॥ ५ ॥ निज चेतन कीध कबाण, तिहां धूंनो धीरज बाण ॥ इत राताइ बहुला प्राणी, आइ ऊना कबाणने ताणी ॥ ६ ॥ थंनने पण हाथ लगाया, पण तत्त्व कला नवि पाया ॥ नाखीने तार कबाण, घणा नाठा मूढ अजाण ॥ ७ ॥ लोकें बहु हासा कीधा, फिर पाठा चाल्या सीधा ॥ हवे वीर विवेकनी वारी, आवि ऊनो करि हुसियारी ॥ ७ ॥ पहिला जगनाथने वंदे, वलतो गुरुचरण आनंदे ॥ वर तत्त्व कला जे राधा, सीखाइ जेण अगाधा ॥ ए ॥ आव्यो तिण कुंननी पासें, ऊाले बाण कबाण उल्लासें ॥ सीधो कुंनो हवे थापे, चरम चक्रतणे रूप व्यापे ॥ १० ॥ कर्मचक्र स्वरूपने देखे, कुंन्न दर्पणमांहि विशेषें ॥ लेइ बाण कबाण चढायो, टंकार शब्द सुणायो ॥ ११ ॥ ऊंची दिशि बाणने बांधे, नीची दृग् करुणा बाधे ॥ नावित करुणा करि गाढी, शुद्ध शील कछोटी माढी ॥ १२ ॥ क्रम चक्र फिरंतो धारी, तिहां अंतर् ज्ञान विचारी ॥ राधावेधना शेषने नेदे, शुद्ध आतम अनुनव वेदे ॥ १३ ॥ तब जय जय शब्द नणीजें, वली धवल मंगल पण दीजें ॥ वरसा

वे फूलने देवा, करे वीर विवेकनी सेवा ॥ १४ ॥ वर माला कन्यायें घाली, पासें उनी आठे आली ॥ सखियां ए प्रवचन माता, तसु उपनी अधिकी शाता ॥ १५ ॥ हर्षित हूआ अति प्राणी, तरष्यां ज्युं लाधे पाणी ॥ तिहां परम प्रमोद प्रकाशे, शुन नावना नाव निवासे ॥ १६ ॥ परसंगतणो हुउ त्यागी, सूधो मुनि मुख्य वैरागी ॥ संयमस्त्री परणी नारी, अरि जीपणने हुशीयारी ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चोरी चढवानी हती, होंश घणी मनमांहि ॥ पूगी तेह विवेकनी, धरि जिनवरनी बांहि ॥ १ ॥ तीन नुवनमें यश थयो, सारो हे संसार ॥ नाग अधिक ए वीरनो, लाधी संयम नार ॥ २ ॥ प्रेम घणो प्रमदा धरे, प्रीतमशुं रसरंग ॥ विलसे वीर विवेकशुं, अनुपम सुख अनंग ॥ ३ ॥ वासुदेव वली चक्रवर्ती, सुरपति नरपति वृंद ॥ एहना सुखथी पण अधिक, सुख शोना आनंद ॥ ४ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ श्रीजिनप्रतिमा हो, जिन सरखी कही ॥ ए देशी ॥ वैरागी सोनागी हो, वीर विवेक बे, निरुपम गुण मणि राशि ॥ उत्तम आतम हो, निज बल फोरियो, अंतर वास सुवास ॥ वै० ॥ १ ॥ ज्ञानावरणी हो, कर्म उदय करी, दोय परिसह धार ॥ दर्शन मोहथी हो, एक परिसहो, वेदनी थाय अग्यार ॥ वै० ॥ २ ॥ एकज होवे हो, अंतराय कर्मथी, चारित्र मोहथी सात ॥ एहवा परिसह हो, बाविश ऊपजे, सहे खमे दृढगात ॥ वै० ॥३॥ पंच महाव्रत हो, मेरु उपाडिया, तृण जिम न गणे नार ॥ बलवंत म होटो हो, रिपुदल जीपवा, चरण करण हथियार ॥ वै० ॥ ४ ॥ दिन दिन अधिको हो, संयम नारीशुं, अधिक अधिक सस्नेह ॥ तप जप तेजें हो, दीपे अति घणुं, क्रोध दावानल मेह ॥ वै० ॥ ५ ॥ करवतनी परें हो, कृत्रिवट दोहिली, शरणे राखणहार ॥ जंगम स्थावर हो, समनावें करी, राखे चित्त मकार ॥वै०॥६॥ इक दिन आवी हो, जिनपति वीनव्या, हुकम करो महाराज ॥ अरिदल नांजी हो, नव नव नयहरुं, वालुं शिवपुर राज ॥ वै० ॥ ७ ॥ समयें देखी हो, नगवंत नाखियो, न करो ढील लगार ॥ मोह महीपति हो, हवे तूं जीपसी, नहिं बे विघ्न विकार ॥ वै० ॥ ८ ॥ अ

धिक करारो हो, आश्रम मोह छे, हजीय न मूके केड ॥ तो हवें निज ब
ल हो, भुज बल फोरवी, अरि नाखुं उथेड ॥ वै० ॥ ए ॥ इणि परें चिन्ती
हो, जयभंभा भली, वजडावे शुभ वार ॥ कटक सहायी हो, सघलूं सज क
रें, अरि जीपण अधिकार ॥ वै० ॥ १० ॥ सामंत सखरा हो, साथे वड
वडा, पुत्र कलत्र परिवार ॥ हय गय पायक हो, रथ चतुरंगशुं, ते सुणजो
विस्तार ॥ वै० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जय जय शब्द सहु भणे, मांगलिक मुख चार ॥ अरिहंत सिद्ध ने
साधु धर्म, ए चारे सुखकार ॥ १ ॥ शीख दिये हवे जगगुरु, सुण विवे
क वड वीर ॥ समय मात्र पण मत धरे, प्रमादसेंती शीर ॥ २ ॥ माता
शीखें चालजे, बे नारी अनुकूल ॥ निश्चें सन्नाह तुं पहेरजे, अरि होशे
अकतूल ॥ ३ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ भविक कमल प्रतिबोधवा, साधु तणे परिवार ॥ ए देशी ॥ विनय
विवेक विचारशुं, करजे तुं महेलाण ॥ वेशास न करे केहनो, ए छे माहरी
आणो रे ॥ सुण सुण शुभमति, तुं छे चतुर सुजाणो रे तो पण आखियें,
रिपु जिपणरो टाणो रे ॥ सु० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जन्म थकी तुं जाण
छे रे, पूरो पात्र सुपात्र ॥ तो पण उपदेश जाणीने रें, थापीजें तुझ गात्रो
रे ॥ सु० ॥ २ ॥ तुझ वैरी तीखो अछे रे, तुं शीलो छे वीर ॥ बेहुमां बल
छे घणूं रे, उ पावक तुं नीरो रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ शांत रसीलो तुं अछे रे, तें
छे तामस धीर ॥ तुं सुरतरु छाया अछे रे, उ आतपनो भारो रे ॥ सु०
॥ ४ ॥ निज गुण ने मत मूकजे रे, रहेजे माता पास ॥ अमिय कचोलां
एहनां रे, लोचन छे गुण रासो रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ भव वैराग्य ए ताहरो रे,
सुत महोटो शिरदार ॥ मुख आगें राखे सही रे, जीपशे रिपु परिवारो रें
॥ सु० ॥ ६ ॥ संवेग निर्वेद लघु सुता रें, जय करशे तुझ जोर ॥ रण र
सिया रिपु जीपशे रे, आतमनो बल फोरो रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ समकित दृष्टि
जे मंत्रवी रे, धरजे फोजां मुख्य ॥ उद्यम सफलो ए हुशे रे, जाशे सघलां
दुःखो रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ शम दम तप जप उमरा रे, वड वडा वीर विख्या
त ॥ आदरजे तुं एहने रे, दुशमनने करि घातो रे ॥ सु० ॥ ए ॥ ज्ञान त

लार ए ताहरो रें, बुद्धितणो जंमार ॥ स्वसमय परसमय जाण छे रे, रिपु दल जार उतारो रे ॥ सु० ॥ १० ॥ सामायिक आदें करी रे, आवश्यक नि र्धार ॥ ते तुऊ पुरोहित आखियो रे, तेहने मत वीसारो रे ॥ सु० ॥११॥ दशविध यति धर्म हाथिया रे, फोजोना शणगार ॥ शीलंग रथ ते रथ जला रे, सज्या सहस अढारो रे ॥ सु० ॥ १२ ॥ नव नव तप जेद तुरंग छे रे, तीखा तेजी वेग ॥ ते ऊपर बेसी करी रे, दीपावे निज तेजो रे ॥सु०॥१३॥ शुज परिणाम ते साबता रे, पायक प्रौढा पमूर ॥ तुऊ मुख आगें रण नि डे रे, राखे आप हजूरो रे ॥ सु० ॥ १४ ॥ प्रायश्चित्त ते केम छे रे, तेहने लेजे साथ ॥ घायलने ए सज करे रे, सिद्धि सखरी जसु हाथो रे ॥सु०॥१५॥ राणी बेहु साथ ले रे, जे छे बुद्धिनिधान ॥ नारी जाण न परिहरे रे, कुण शूरो ए समानो रे ॥ सु० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इम सुणी वीर विवेक हवे, आवे नारी पास ॥ आखे सुंदरी सांज लो, धरि मनमां उल्लास ॥ १ ॥ जिनवर वचन हुउं अछे, नारी लेजो सा थ ॥ तुमचो श्यो आलोच छे, स्त्री बोली सुण नाथ ॥ २ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥वाडी फूली अति जली॥ मन जमरा रे॥ ए देशी॥ कर जोडी कामिनी कहे॥ मुऊ जमरा रे ॥ सुण साहिब जरतार॥ लाल मुऊ जमरा रे॥ कटक यात्रा जणी थें चल्या ॥मु०॥ में पण थाहरें लार ॥ ला० ॥१॥ तनु छाया ज्युं में अछां ॥मु०॥ केड न मूकुं आज ॥ला०॥ चंद्रकला चंद साथ छे ॥ मु०॥ वादल साथें गाज ॥ ला० ॥ २ ॥ साहिब बाग समान छे ॥ मु०॥ में वेली विस्तार ॥ ला० ॥ थें सरोवर नीरें जर्या ॥ मु० ॥ में कमलिनी सु खकार ॥ ला० ॥ ३ ॥ तुं जीवन तुं आतमा ॥ मु० ॥ तुं अम प्राणाधार॥ ला० ॥ तुम विरहो न खमी शकुं ॥ मु० ॥ देखी रह्यो किरतार॥ ला०॥४॥ शक्ति अमारी देखजो ॥ मु० ॥ रिपुदल जेलो जेथ ॥ ला० ॥ शूरा पूरा दे खशो ॥ मु० ॥ कसवटी अमची तेथ ॥ ला० ॥ ५ ॥ अवर नारी सम हुं नहिं ॥ मु० ॥ राजसुता रजपूत ॥ ला० ॥ रिपुदल तृणसम लेखवां ॥मु०॥ निज घर राख्यां सूत ॥ ला० ॥ ६ ॥ वीर विवेक खुशी थयो ॥ मु० ॥ प्रमदानी सुणि वात ॥ ला० ॥ सामंत सघला तेडिया ॥ मु० ॥ एह वि

चार कहात ॥ ला० ॥ ७ ॥ आप आपणी नारीने ॥ मु० ॥ लेजो सघ ली साथ ॥ ला० ॥ जीत हुशे ए शक्तिथी ॥ मु० ॥ कहियो छे जगनाथ ॥ ला० ॥ ८ ॥ प्रशम सामंतें तब ग्रही ॥ मु० ॥ क्षमा नारी जसु नाम ॥ ला० ॥ मार्द्दव वरी प्रिय नम्रता ॥ मु० ॥ साथ हुई अभिराम ॥ ला० ॥ ए ॥ आर्जव सामंतें ग्रही ॥ मु० ॥ प्रसन्नता नामे नार ॥ ला० ॥ संतोष सामंतें ग्रही ॥ मु० ॥ धृति ललना सुखकार ॥ ला० ॥ १० ॥ विमलबोध शुभ मार्गणा ॥ मु० ॥ लीधी सुंदर सार ॥ ला० ॥ पुरोहित आस्तिक्यबुद्धि ने ॥ मु० ॥ लीधी पत्नी तिवार ॥ला०॥ ११॥ शोहे सत्यवाणी वधू ॥ मु० ॥ वेदकता मंत्री नारि ॥ ला० ॥ भवमंदा पुत्र ते ग्रही ॥ मु० ॥ नारी प्रेम उदार ॥ ला० ॥ १२ ॥ इणि परें सघले साथीयें ॥ मु० ॥ साथें लीधी नार ॥ ला० ॥ हुकम हुवो साहिबतणो ॥ मु० ॥ वेगें हूइ असवार ॥ ला० ॥ १३ ॥ पांचेइ हथीयार बांधिया ॥ मु० ॥ जगमग ज्योति अपार ॥ ला० ॥ उज्ज्वल शुक्ल ध्यान छे ॥ मु० ॥ हथियारमां शिरदार ॥ ला० ॥ १४ ॥ जहर जोसण गुरुशीख ते ॥ मु० ॥ पहेरी रक्षा काज ॥ ला० ॥ सकल सजाइ लेइ करी ॥ मु० ॥ गमन करे माहाराज ॥ ला० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ साधु संयम गजराज दृढ, वरदायी वड वीर ॥ प्रवचन पुरथी चालिया, साथ वड वडा धीर ॥ १ ॥ मोह महीपति जीपवा, शूरा पूरा साथ ॥ वीर बलें धरता थका, जय लक्ष्मीना नाथ ॥ २ ॥ नव नव गुणगाण भूमिका, आक्रमता तिणि वार ॥ पसरी कीर्त्ति दहदिशें, हरख्यां लोक अपार ॥ ३ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ पास जिणंद जुहारियें ॥ ए देशी ॥ वरदायी वीर गाइयें, जग सघलेइ यशवासो रे ॥ हिंसक चोर नासी गया, तम नासें सूर प्रकाशो रे ॥ व० ॥ १ ॥ मिथ्याभ्रम दूरें गया, हवे कपट क्रिया रही दूरो रे ॥ अपूर्व करण करतो हवे, प्रतप्यो निज तेज पंडूरो रे ॥ व० ॥ २ ॥ भूर भविक भट कटकमां, आवीनें भेला थायो रे ॥ वाहलें जिम नदियां वधें, रिपु जीपण सबल उपायो रे ॥ व० ॥ ३ ॥ गाम नगरनां भेटणां, नव नवला सम रस लेवे रे ॥ नमता खमता तसु देखीने, उपदेश ते शिरपाव देवे रे ॥ व० ॥ ४ ॥ मंत्री सघलाने कहे, सुख थाशे धरो वीर आणो रे ॥ मोहतणो भय

मिट गयो, हवे धरजो मन शुन्न ध्यानो रे ॥ व० ॥ ५ ॥ डुःख दोहग दूरें गयां, गया आधि व्याधि विकारो रे ॥ रोध विरोध विलय गया, समतायें श्रीसुखकारो रे ॥ व० ॥ ६ ॥ परम प्रतीति प्रगट नइ, घन वूगो ज्युं हरि कायो रे ॥ पाप ताप दूरें गया, नवि लोकांने मन नायो रे ॥ व० ॥ ७ ॥ श्रीजिनचंद सूरीश्वरु, जसु नामें सुख अपारो रे ॥ दयाकुशल पाठकवरु, गुरु गिरुआ गुण नंमारो रे ॥ व० ॥ ८ ॥ तासु प्रसादें ए रच्यो, खंम पांचमो नवि उपकारो रे ॥ धर्ममंदिर कहे सांनल्यां, लानीजें सुख श्रीकारो रे ॥ व० ॥ ९ ॥ इतिश्री प्रबोधचिन्तामणौ ढालनाषाप्रबंधे कंदर्पोत्सवकलिकाल आगमविगमविवेक परिणयन प्रस्थानवर्णन नामा पंचमः खंमः ॥५॥

॥ अथ षष्ठ खंम प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजिनवास सुवास नित, महोटो महिमा निधान ॥ चरण कमल श्रीपासनां, प्रणमुं परम प्रधान ॥ १ ॥ इण अवसर हवे मोह नृप, चर मुख सांनली वात ॥ साधे सघला देशने, वीर विवेक विख्यात ॥ २ ॥ मानी मछरालो घणुं, पर उन्नत न सुहाय ॥ निज मंत्रीने तेडीने, आखे चित्त लगाय ॥ ३ ॥ आयो वैरी ठल करी, सिंहतणी परें एह ॥ पाठा पगलां देइने, फिर मांमधो मति गेह ॥ ४ ॥ में पहिलांही जाणियुं, अवसर साध्यो एण ॥ थें मनमां हरख्या घणुं, नागो कायर एण ॥ ५ ॥ मल्लतणो बल मल्ल विण, जाणे नहिं ठे कोय ॥ मुग्धमने थें मृग अठो, ठल बल हवें श्यो होय ॥ ६ ॥ नयण प्रमुख बोल्या हवे, सुण स्वामी मोहराय ॥ न करो चिन्ता एवडी, करशुं दाय उपाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ आज निहेजो रे दीसे नाहलो ॥ ए देशी ॥ मोह महीपतिने इम वीनवे, कर जोडीने काम ॥ तुज मुख आगें वड वडा वीर ठे, धर धीरज अनिराम ॥ मो० ॥१॥ ए कूकर ज्युं फिरे अब नासतो, देखाडुं हुं शूर ॥ खजूउ त्यां लगी ज्योति करे फिर्यो, ज्यां नवि उग्यो सूर ॥ मो० ॥ २ ॥ अवसरथकी जे तेज लही करी, नीच हूई डुःख जाय ॥ सूरज ज्योति न दाहक तेहवी, जेहवी वेलू थाय ॥ मो० ॥ ३ ॥ टीटोडी पंखीनी परें

हवे, पाउ धरे छे एह ॥ मिंमकनी परें सोर करे रह्यो, अल्प लहीनें मेह ॥ मो० ॥ ४ ॥ वरसालाना ज्युं वहे वायरा, ओछाना ज्युं नेह ॥ एहनी पण छे परहत्र संपदा, ऊटक दिखाडे छेह ॥ मो० ॥ ५ ॥ आज न कोइ तुज जोडें अछे, सुरपति नरपति जोय ॥ संसारी प्रभुता पूरी लही, तुज सम तुंहीज होय ॥ मो० ॥ ६ ॥ हेला खेलामां जग जीपीयो, तुं गिरुउ गंभीर ॥ नहानाशुं थें युद्ध करो नहिं, सरिखा सरिखी भीर ॥मो०॥७॥ जनकें काढयो घरथी एहने, फरियो देश विदेश ॥ अरिहंत नृप सेवाथी इणे लह्यो, ऋद्धितणो लवलेश ॥ मो०॥ ८ ॥ एहनी चिन्ता मनमां मत धरो, मत ल्यो एहनुं नाम ॥ चणक उछलियो भावि न भांजशे, लोक कुखाणो आम ॥ मो० ॥ ए ॥ इम सुणी मोह महिपति बोलियो, मलकीने मन मांही ॥ हाथ न देख्या छे तें एहना, तो इवडो मद कांही ॥ मो० ॥१०॥ अवगणना एहवी नवि कीजियें, ए झंमा असराल ॥ वैरी व्याधि न नहाना जाणियें, दुःख सरोवरनी पाल ॥ मो० ॥ ११ ॥ मोह नहीं के एह नहिं हुवे, बेहुमांहे एक वात ॥ अवसर आव्यां टालो किम हुवे, ताप मुखें गले धात ॥मो०॥१२॥ युद्ध कस्या पण क्षत्री धर्म नवि रहे, न धरुं ममता एह ॥ धर्ममंदिर कहे मोह महा बली,हुकम कीयो सुणो तेह ॥मो०॥१३॥

॥ दोहा ॥

॥ पाखंमी सेवक भणी, कहेवे छे वड वीर ॥ मिथ्यावाणी भेरी ए, वजडावो धरि धीर ॥ १ ॥ भेरी शब्द सुणी करी, सज्ज हुआ भट वृंद ॥ जय लक्ष्मी वरवा भणी, मन आणे आनंद ॥ २॥ मन्मथ सुत आदें करी, वड वड वीर नरिंद॥ सज्जाइ सबली करे, भांजण अरिदल फन्द ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥राग मारु अथवा ऋषभ देव मोरा हो॥ए देशी॥ अभिमानी हो राजा अभिमानी हो ॥ मोह महिपति कोपियो, मनमां रुद्र ध्यानी हो ॥ राजा अभिमानी ॥हो०॥१॥ जडता नारी तिणे समे, श्रृंगार बणावे हो ॥ मांगलिक मुख उच्चरे, अघ तिलक करावे हो ॥ रा० ॥ २ ॥ हिंसा हरिणाक्षी मली, जय मंगल गावें हो ॥ बाल गोपाल सहु भणे, मोह चढतें दावे हो॥ रा० ॥ ३ ॥ पाप शास्त्र भट बोलियो, बिरुदावली नीकी हो ॥ विवेक वीरनी होय जो, सेना सब फीकी हो ॥ रा० ॥४॥ अनरथ दंम कबाण लेई,

वांकी अति तीखी हो ॥ मति अज्ञान जाथडा जथा,बाणावलि शीखी हो ॥ रा० ॥ ५ ॥ ताप स्वजाव ते टोप ठे, तर्जन अति लीधी हो ॥ मद सन्नाह ते पहेरियुं, जिनशाली कीधी हो ॥ रा० ॥ ६ ॥ मिथ्यावाद वाजित्र घणां, वाजे तिण वेला हो ॥ वज्र थइ शूरा सहु,तब हूआ जेला हो ॥ रा० ॥ ७ ॥ जारी कर्मतणो उदे, मुहूर्त्त तिहां साध्यो हो ॥ नीच संग गज पर चढी, जाणे जय वाध्यो हो ॥ रा० ॥ ८ ॥ पाप विकार प्यादा घणा,मुख आगें कीधा हो ॥ आर्त्त ध्यान बंधूक लेई, हवे वंछित सीधां हो ॥ रा० ॥ ए ॥ पाप मनोरथ रथ जला, सजिया रण सारु हो ॥ काम विकार तुरंगमां, वायु वेग ज्युं वारु हो ॥ रा० ॥१०॥ अति अजिमान ते हाथिया, पर्वत सम दीसे हो ॥ मेघतणी परें गाजता, मोह देखी हीसे हो॥ रा० ॥ ११ ॥ प्रमाद सेनानी कियो, आप मोहें मान्यो हो ॥ चतुरंग सेनायें परवस्यो, अब नायक जाण्यो हो ॥ रा० ॥ १२ ॥ नरपति तेडीने कहे, होजे हवे शूरो हो ॥ तें श्रुतज्ञानी पाडिया, परतो तुऊ पूरो हो ॥ रा० ॥१३॥ मेरुथकी दक्षिण दिशें, प्रायें परमादो हो ॥ बांध्यो मोहप्रसादथी, अधिको उन्मादो हो ॥ रा० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणपरें जोरो मोहनो, सुणियो वीर विवेक ॥ सऊ हुवे इक तानशुं, जूऊणनी धरि टेक ॥ १ ॥ दृग्गोचर दल मोहनां, इक दिन मलियां आय ॥ पर दल दरियावेल ज्युं, कायरने मन थाय ॥ २ ॥ आनंद अधिको शूर मन, जाणे आज विवाह ॥ आरण जेलणरो करे, मनमांहे उत्साह ॥ ३ ॥ ऊबके दामिनीनी परें, कूदावे हथियार ॥ उन्नमिया आषाढ ज्युं, घोरघटा जलधार ॥ ४ ॥ समरावे रणजूमिका, विषम विदारे दूर ॥ वीर विवेकतणो जलो, राजनीति अंकूर ॥ ५ ॥ हवे मनमंत्री पण तिहां, आवे सुतने प्रेम ॥ क्षण विवेक क्षण मोहशुं, जाय मले ठे एम ॥ ६ ॥ तिहां जाये तब तेहनो, जय वंछे मन एह ॥ इण अवसर विच आविया, संधिपाल सुसनेह ॥७॥ इहां ठे अध्यवसाय ते, संधिपाल सुखदाय ॥ पहेली वीर विवेकने, अरज करे मन लाय ॥ ८ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ उठ कलालणी जर घडो हे, नयणे नींद निवार ॥ ए देशी ॥ सुण

साहिब अम वीनति हो, मन देइने आज ॥ सेवक में नहिं केहनो हो, साधुं अवसर काज ॥ रायजादा वीरा हो, थें राजन गे रढीयाल ॥ रा० ॥१॥ ए आंकणी ॥ हित वाणी छे अमतणी हो,हृदय कमल सुविचार ॥ तुं प्रभु आज हुउ सही हो, भाग्यतणे अनुसार ॥ रा० ॥ २ ॥ पण ए मोह नृप आवियो हो, जूनो राजा तेह ॥ अवगणियें क्युं एहने हो, अनंत गुणारो जेह ॥ रा० ॥ ३ ॥ कटक विकट सबलो घणो हो, वली पूरो परिवार ॥ चड शाखा ज्युं विष नख्यो हो, व्यापि रह्यो संसार ॥ रा० ॥ ४ ॥ कोट खजीनो कां नही हो, ज्युं मानस अंभोज ॥ सकल क्रियामें सुंदरु हो, कुण ले इणरो खोज ॥ रा० ॥ ५ ॥ इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र जे हो, माने एहनी आण ॥ अवर न को एहवो अछे हो, इणशुं साधे बाण ॥ रा० ॥ ६ ॥ जो थें मोह न मानियो हो, एने दोष न कोय ॥ हंस भणी वहालो नहिं हो, मेह क्युं नूंमो होय ॥ रा० ॥ ७ ॥ बहु जनने जे वालहो हो, तिणशुं क्युं रीसाय ॥ अन्न अधिक प्यारो सहु हो, अंत समे न सुहाय ॥ रा० ॥ ८ ॥ पग पग देखूं एहनो हो, लश्कर लांगर जोर ॥ मोह सेना सागर जिसी हो, तुफ दल एको कोर ॥ रा० ॥ ९ ॥ तीन भुवन मां ए अछे हो, तुं इक नरमें होय ॥ ते पण आरजमां वसे हो, तिहां पण भविजीव कोय ॥ रा० ॥ १० ॥ तिहां पण शुभ मतिमां वसे हो, वली रुचि शुद्ध प्रतीत ॥ ते लोकोनो राजियो हो, तुं छे लोकातीत ॥ रा० ॥ ११ ॥ ताहरी सेना पण सहु हो, तेहने मिलशे जाय ॥ ते मुख विरलो थोभशे हो, अर्क तूल करे न्याय ॥ रा० १२ ॥ कुण न सेवे तेहने हो, भव्य अभव्य अपार ॥ कोइक विरलो थोभशे हो, तुफ वेला निरधार ॥ रा० ॥ १३ ॥ तुं हमणां वाध्यो अछे हो, घटतां नहिं छे वार ॥ उ अनादि वाध्यो रहे हो, अमर कीधो अवतार ॥ रा० ॥ १४ ॥ तुं सेवकने सुख दिये हो, अखय अगोचर जेह ॥ उ इन्द्रियने सुख दिये हो, मुख मीठा छे तेह ॥ रा० ॥ १५ ॥ तुं सेवकने दाखवे हो, गिरि कंदर वन वास ॥ उ आपे सेवक भणी हो, मंदिर नारी विलास ॥ रा० ॥ १६ ॥ तुं परिवारने गोडवे हो, एकाकी वहराय ॥ उ मेले पुत्र मित्रने हो, लोकोने मन भाव ॥ रा० ॥ १७ ॥ बूढा सेवक ताहरा हो, जूना जर्जर तेह ॥ अंण तरुण तीखा घणूं हो, तसु सेवक सुसनेह ॥ रा० ॥ १८ ॥ तेह

नणी ते सेंती कीसी हो, खस खूटणनी वात ॥ फिरजावो निज घर नणी हो, अम मन एह सुहात ॥ रा० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इम कहीने चूप करि रह्या, संधिपाल तिणवार ॥ हसी करी वीर वदें तिहां, वाह वाह मतिसार ॥ १ ॥ मोहतणो महिमा कही, जाण्यां वचन विशाल ॥ क्युं कर ठानो होयशे, मा आगें मोशाल ॥ २ ॥ में जाण्यो प्रीछयो अछे, छल बल एहनुं दीठ ॥ व्याघ्रमुखें ए शियाल छे, तुमने लागे मीठ ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥ वीर विवेक वलतो कहे जी,सांनलो थें संधिपाल ॥ वीच करो नल माणसां जी,गुण कह्या आलपंपाल ॥ वी० ॥ १ ॥ मेह वहालो सहुने हुवे जी, हंसने न्याय सुहाय॥ पंख करे दिन तम करे जी, श्याम कब उज्ज्वल थाय ॥ वी० ॥ २ ॥ मानसवाही हंस छे जी, उज्ज्वल मोति आहार ॥ पंख बेहु धवली करे जी, दूध पाणी करे सार ॥ वी० ॥ ३ ॥ कटक घणुं तसु आखियुं जी, नुंगर तूस सम तेह ॥ त्यां लगी धूली उमे घणी जी, ज्यां लगी वूठो न मेह ॥ वी० ॥ ४ ॥ लोह सम ते जगमें घणा जी, हेम ते अल्प तुं जोय ॥ चंदन वन वन नवि हुवे जी, गज गज मोती न कोय ॥ वी० ॥ ५ ॥ तिमिरतणी परें ते घणा जी,सूरज एकज थाय ॥ अंकुश केवडो गज किहां जी, शंकुनी वात ठहराय ॥ वी० ॥ ६ ॥ रंकनां वृंद श्यां कामनां जी, एकज श्रीमंत सार ॥ सिंह एको बहु त्रासवे जी, शियालनी कांइ नहिं कार ॥ वी० ॥ ७ ॥ अमर थें एहने आखियो जी, देखश्यां ते हवे आज ॥ कसवटी आपथी आखशे जी, जूठी ए शरदनी गाज ॥ वी० ॥ ८ ॥ बाह्य सुख देखिने राचिया जी, एहना सेवक नूर ॥ अन्तर सुख नवि अनुनव्यो जी, आतम अनुनव नूर ॥ वी०॥ ९ ॥ नोग संयोग जे ए दिये जी,तिहां पण महारुं सुख ॥ एहथी निःकेवल नरक छे जी, घोर अति जोर दे दुःख ॥ वी० ॥ १० ॥ नव जल तारण एकला जी, कुटुंबनुं त्यां नहिं काम ॥ राग करी मोहिया मोहशुं जी, जाणियुं नहिं निज धाम ॥ वी० ॥११॥ थाहरो वांक इहां को नहिं जी,वड वडा नोलव्या धीर ॥ कृष्ण कलेवर लेइ

भम्यो जी,बलभद्र मोह करी वीर ॥वी०॥१२॥ क्रोधथी कंस चूक्यो सही जी, मान डुर्योधन देख ॥ दंभ उदायन नृप मारियो जी, लोभ संभूम विशेष ॥ वी० ॥ १३ ॥ कंमरिक प्रमादें पाडियो जी, चंमप्रद्योतन काम ॥ राग थी ब्रह्मदत्त डुःख लह्यां जी, द्वेषथी कोणिक आम ॥ वी० ॥ १४ ॥ व्यस नथी कीचक चूकियो जी, कपिल मिथ्यात्वथी जेम ॥ पाखंम संग कुसंग थी जी, बहु नर चूकिया एम ॥ वी० ॥ १५ ॥ जगत जन पीडिया बहु परें जी, मोह निःकारण शत्रु ॥ तेह अन्याय हुं केम सहुं जी, थें सुणो महा रा मित्र ॥ वी० ॥ १६ ॥ माहरे सेवकें को करे जी, आचस्यो होय अन्या य ॥ तेहनुं नाम लेइ दाखवो जी,शीख देउं सुखदाय ॥ वी० ॥ १७ ॥ ध र्मथी जय हुवे जगतमें जी, पापथी क्षय कहेवाय ॥ एह बेहु वातां अछे जी, आदरो मन तणी दाय ॥ वी० ॥ १८ ॥ जिम जिम खुंद खमे एहना जी, वली कीयां वचन प्रमाण ॥ तेम तेम ए शिर चढि गयो जी, शीख देऊं अभिराम ॥ वी० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एह वचन सुणि वीरनां, संधिपाल गया धाम ॥ हवे श्री वीरविवेक नृप, योद्धाने कहे आम ॥ १ ॥ शूरा पूरा सांभलो, आयो छे रण एह ॥ हाथ तमारा देखस्यां, अरि दल कादिम एह ॥ २ ॥ साथी हाथी छो तमें, अरिदल एह करीर ॥ जयलक्ष्मी वरस्यां हवे, जो करशो थें भीर ॥ ३ ॥ हार मुकुट केयूरें करी, शोभा शूरा नांहि ॥ रिपु सन्मुख घायें करी, यश पसरे जगमांहि ॥ ४ ॥ असि धारा तीरथ अछे, देवतणी गति देय ॥ निज भुज बल संभारिनें,साम धर्म धरि धेय ॥५॥ अंगज अंग ने अंगना,राज का ज जीव प्राण ॥ त्यां लगी सघला वल्लहा, ज्यां न मिले अरि बाण ॥६ ॥ वाहन कवचें शस्त्र भरि,वहे आमंबर एम ॥ अंतरंग साहस विना, जय प द प्राप्ति केम ॥ ७ ॥ बोलो कुंण क्यां शोभशे, निज निज लेइ परिवार ॥ कोण कोण केहने जीपशे तब बोल्यो सुत सार ॥ ८ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ राग सोरठ ॥ सेवा बाहिरो कहियें को सेवक ॥ ए देशी ॥ नंदन भव वैराग वदे तब, विनयवंत वरदाय ॥ साहिब आगें निज गुण वर्णन, कही किण कीधो जाई ॥ नं० ॥१॥ पण साहिब जे पूछी वाणी, तसु उत्त

र हुं आखुं ॥ अरि मुख काळुं पहेली अणियें, टेक जली परें राखुं ॥ नं० ॥ २ ॥ चक्रतणी परें जव जव फेरे, नूर जविकने जेह ॥ विपरित जाव अ जाव वडो अरि, हुं वश करशुं तेह ॥ नं० ॥ ३ ॥ शमरस रस आदि क रीने मह्हारा, अंतर सेवक ताजा ॥ करकंडू आदिक देईने, बाहिज सेवक साजा ॥ नं० ॥ ४ ॥ पंचम गुण ठाणकनी धरती, देश विरति जयदाई ॥ देशें ऊणी पूरव कोडी, मान्य कहुं मन लाइ ॥ नं० ॥ ५ ॥ धर्म ध्यान म ध्यम त्यां जाणो, प्रतिमा श्रावक केरी ॥ खट आवश्यक किरिया कीजें,व्रत लघु शुद्ध विहारी ॥ नं० ॥ ६ ॥ सडशठ प्रकृतितणो तिहां बांधी, मोहत णो मद गालूं ॥ अप्रत्याख्यानतणो क्षय कीधो, वैरकदमी वालुं ॥ नं० ॥ ७ ॥ आनंद ने कामदेव कहीजें, ते मुज सेवक सारो ॥ खट आवश्यक पु रोहित केरो, ए रणखेत विचारो ॥ नं० ॥ ८ ॥ हवे संवेग ने निर्वेद बेउ, लघु सुत जोला शूरा ॥ मोह महिपतिनुं दल मोडुं, जुजबली जीम स नूरा ॥ नं० ॥ ९ ॥ छठो सत्तम गुणठाण धरती,ते रण खेत बुहाख्यो ॥ अन्तर मुहूर्त्त स्थिति मति बेहु,चढी उतार निहाख्यो ॥ नं० ॥१०॥ त्रेसठ प्रकृति प्रमत्तें बांधे, सत्तर अठावन्ना ॥ मोहतणुं बल पल पल छीजे, सहु वदे धनधन्ना ॥नं०॥११॥ निरालंब धर्म ध्यान विशुद्धा,तेहिज अंतर वेली ॥ पां चे पांमव बाहिज सेवक, काढे मोहने ठेली ॥ नं० ॥ १२ ॥ अप्रमत्त गुण ठाणथी करसुं, अपूर्वध्यान विचारी ॥ गुणश्रेणीयें गुण निज संक्रम,क्रिया दूर निवारी ॥ नं० ॥ १३ ॥ सत्तम अंतें शुक्ल ध्याना, सामो आवे शूरो॥ मोह महीपतिनुं बल तूटे, अनुजव होय सनूरो ॥ नं० ॥ १४ ॥ इणि परें पुत्रें फोजां काढ्या, हवे समकित मंत्री बोले ॥ जवजल तारण पोत प्रवी णो, कुण आवे मुज तोलें ॥ नं० ॥ १५ ॥ ए संसार आदि अपारा, मि थ्याजूषण जारी ॥ त्यां जविजनने हाथ ग्रहीने, हुं उतारुं पारी ॥ नं० ॥ १६ ॥ देव गुरु धर्म तत्त्व देखाउं, जांजुं कर्म विकारा ॥ श्रद्धा करुणा आ त्मक माहरा, अंतर सेवक सारा ॥ नं० ॥ १७ ॥ बाहिज सेवक श्रेणिक केशव, इत्यादिक बहु लहिजें ॥ क्षायिक जाव खजीनो पामी, विरति क्रिया न वहीजें ॥ नं० ॥ १८ ॥ तेत्रीश सागर किंचित् अधिको, मान कहीजें एही ॥ चोथे गुणठाणे बहु लाजे, धर्मरागी गुण गेही ॥ नं० ॥ १९ ॥ प्रकृति सत्योत्तेर चोथे बांधें, जूंमी प्रकृति निवारे ॥ धर्म ध्यान मंदो सहु दीसे,

आरत रौद्र विचारे ॥ नं० ॥ २० ॥ मोहतणो मंत्री मिथ्यादृग्, ते हुं जीपन जोरें ॥ मोहतणुं दल मुडशे तबही, देखाडे निज तोरें ॥नं०॥२१॥ इणिपरें समकित मंत्रीयें आख्यो, शुक्र बल कीध प्रकाशा ॥ धर्ममंदिर कहे अधिको कीयो, वीर विवेक उल्लासा ॥ नं० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ उपशम शूरो बोलियो, सुण स्वामी मुफ वाण ॥ श्रेणिसुथिर रण आठमो, गुणगणे गुण खाण ॥१॥ आलस निद्रा जय सकल, दूर निवारुं संग ॥ क्रोध जोधने जीपशुं, नव गुणगणे रंग ॥ २ ॥ क्रोध दावानल क्रूर छे, संताप्यो संसार ॥ हुं सघलाने सुखकरुं, निज गुण अमृत धार ॥ ३ ॥ शत्रु मित्र सम भावने, अन्तर मुफ परिवार ॥ सागरचंद नाग दत्त बहु, बाहिज सेवक सार ॥ ४ ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ बेडले भार घणो छे राज, वातां केम करो छो ॥ ए देशी ॥ नवमे गुणगणे वली कभा, शूरा पूरा सारा ॥ मोहतणो हवे मद उतारूं, शुक्र ध्यान हथियारा ॥ महोटो मार्दव शूर सुजाण, अरज करे कर जोडी ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ गाढो अनमी मान जे वैरी, जीपीश हुं रिपु तेहो ॥ प्राणायाम ते अंतर सेवक, अति बल मन वच देहो ॥ म० ॥ २ ॥ बाहुबली गणधर इन्द्रभूता, ए मुफ बाहिर शूरा ॥ अहंकार छोडीने दीधो, अनुभव लीध सनूरा ॥ म० ॥ ३ ॥ आर्जव सामंत तिहां किणे बोल्यो, माया जीपणहारो ॥ शरणस्वरूपी शान्ति शिरोमणि, अंतरंग परिवारो ॥ म० ॥ ४ ॥ राजा पूछ्यो तेणे प्रकाश्यो, माया वचन अबोला ॥ कुल्ल क कुंवर प्रमुख मुफ बाहिज, सेवक राख अमोला ॥ म० ॥ ५ ॥ मोहत णो जे महोटो सेवक, दंभ कहीजें दरियो ॥ ते पण हुं नवमे गुणगणे, जीपण बीडो धरियो ॥ म० ॥ ६ ॥ संतोष महोटो सामंत कहीजें, ते हवे बोले एमो ॥ तृष्णा तरल तरंगिणी तरशुं, धरशुं धृति रति क्षेमो ॥ म० ॥ ७ ॥ परम समाधि तणो अंकूरो, ते मुफ वहालो जोधो ॥ कपि लादिक मुफ सेवक सारा, त्यागी अंतर सोधो ॥ म० ॥ ८ ॥ दशम गुणग ण ठाम लहीने, सूक्ष्म लोभने जीती ॥ संपरायकी कीरिया सघली, तब थें होय वितीति ॥ म० ॥ ९ ॥ उछाह सेनानी तिहांकणे बोल्यो, सुण

स्वामी मुऊ वातां ॥ सघली फोजामें हुं फिरशुं, में लाधी तुम धातां ॥ म० ॥ १० ॥ सघला शूराने उपकारुं, वड वड बिरुद संजारुं ॥ वेद विकार निवारण अंतर, सेवक सखरा धारुं ॥ म० ॥ ११ ॥ इन्द्रानुज ने महागिरि मुनिवर,बाहिज सेवक शूरा ॥ सघला शुन्न गुणगणामांहे, वजडावूं जयतूरा ॥ म० ॥ १२ ॥ विमलबोध कोटवाल कहे इम, सुण स्वामी मुऊ वाणी ॥ मोहमहिपतिना चर जालूं, निर्णय तुरत पिठाणी ॥ म० ॥ १३ ॥ चर्चन अर्चन अंतर सेवक, दृढमति दृढ धर्म धारा ॥ बाहिज सेवक धर्म रुचि प्रमुखा, बहुविध नक्ति विचारा ॥ म० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणि परें बीजो पण तिहां, निज निज बल परकाश ॥ मोहरायने जीपवा, आणे अधिक उल्लास ॥ १ ॥ वनिता पण सुनटां तणी, हरखी बोले एम॥ जिण विध प्रीतम जूऊशे, में पण जूऊं तेम ॥ २ ॥ निज प्रीतम पासें रहि, करश्यां शस्त्र प्रहार ॥ अबला सबला काम में, करश्यां स्वामी तिवार ॥ ३ ॥ इण परें सघला साथरो, साहस सबलो जोय ॥ राजा वीरविवेक तब, अधिको हर्षित होय ॥ ४ ॥ अधिकाधिक परिणामशुं, पर्यालोचन सार ॥ तेहिज वाजां वाजियां, शिवपद मंगलसार ॥ ५ ॥ इणि अवसर हवे मोह नृप, सऊ हुई सुविचार ॥ सघला जोधाने कहे, सुणजो ए निर्धार ॥ ६ ॥ चढशे वीर विवेक हवे, रण करवाने काज ॥ ढील न कीजें तो नलो, मुजरो द्यो मुऊ आज ॥ ७ ॥ कुण केही फोजें खडो, माजी होशे तेह ॥ नाम लेइने दाखवो, अरि मुऊ जाले जेह ॥ ८ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ देशी विंठीयानी ॥ मयण वयण तब उच्चरे, सुण तातजी साहिब आज रे लाल ॥ आप मुखें करी आपणी, कीर्त्ति करतां हुवे लाज रे लाल ॥ म० ॥ १ ॥ तृणसम अरिदल जाणजो, दावानल सम मुऊ जोर रे लाल ॥ नासोकड हवे न्हासशे, मुऊ आगल ए ठे चोर रे लाल ॥ म० ॥ २ ॥ लघु नाइ श्रीनेमरो, वली आषाढ ऋषि नंदिषेण रे लाल ॥ आईकुमर कुलवालूउ, में जीत्या मन हरखेण रे लाल ॥ म० ॥ ३ ॥ वड वडा शूरा एहना, जीत्या कहुं केतां नाम रे लाल ॥ ठल बल करीने ठेतर्या, मुऊ साथी ठे अनिराम रे लाल ॥ म० ॥ ४ ॥ मणिरथ चंद प्रद्योतन, म

धु कुमर अने गर्दभिल्ल राय रे लाल ॥ नाम लेइ केता गणुं, सेवक बाहि ज कहेवाय रे लाल ॥ म० ॥ ५ ॥ फूल वसंत अंबुद घटा, कोकशास्त्र शृं गार संजोग रे लाल ॥ स्नान अने मद पान ते, मुझ अंतर सेवक जोग रे लाल ॥ म० ॥ ६ ॥ राग वदे हवे सांजलो, हुं जतन करुं रागंध रे ला ल ॥ मयण तणो पण मित्र छुं, जोडुं हुं सघली संध रे लाल ॥ म० ॥७॥ किहां किहां आंख बे, किहां चंद अबे किहां मुख मुद रे लाल ॥ पर वाला किहां अधर बे, ए उपमा राग निरुद्ध रे लाल ॥ म० ॥८ ॥ किहां हीरा किहां दशन बे, किहां कनककलश मांसग्रंथ रे लाल ॥ किहां वापी किहां नाजि बे, पण रागवशें ए संथ रे लाल ॥ म० ॥ ए॥ सडण पडण विध्वंस बे, अंग अशुजतणो जंमार रे लाल ॥ ते देखाडी जोलवुं, जोराव र राग अपार रे लाल ॥ म० ॥ १० ॥ मीठा मन्मथ बोलडा, मिलवो जि लवो बहु प्रेम रे लाल ॥ अंतर सेवक बे बहु, माहरे जोरावर एम रे ला ल ॥ म० ॥ ११ ॥ इन्दुषेण बिन्दुषेण जे, चिलाती चोर इलापुत्र रे लाल ॥ बाहिज सेवक माहरा, पहेलाथी महारा मित्र रे लाल ॥ म० ॥ १२ ॥ द्वे ष वदे हवे सांजलो, हुं करडो शूरो तुऊ रे लाल ॥ कुण अबे जगमें तिको, जे करशे मुझशुं जुऊ रे लाल ॥ म० ॥ १३ ॥ चंम रुद्र बिजत्समां, दर्शन अति जयनो हेत रे लाल ॥ सन्मुख कुण जोई शके, रिपु जिपुं उजे खेत रे लाल ॥ म० ॥ १४ ॥ मत्सर निंदा पिशुनता, संग्राम शराप ने मर्म रे ला ल ॥ आक्रोशन अति चंमता, अंतरसेवक धर्म रे लाल ॥ म० ॥ १५ ॥ कौरव ने चंमकोशियो, पालक ने संगदेव रे लाल ॥ कमठादिक बहु प्राणि या, साचवे बे माहरी सेव रे लाल ॥ म० ॥ १६ ॥ हवे मिथ्यामंत्री बोलि यो, सुण मारी शक्ति अनंत रे लाल ॥ तीन जुवनमां प्राणिया, मुऊ सा न्निध्यथी जामंत रे लाल ॥ म० ॥ १७ ॥ जाति योनि कुल कोडी ए, नहिं कोइ बे ते ठाम रे लाल ॥ सेवक वीर विवेकना, बहु झाली पीड्या आम रे लाल ॥ म० ॥ १८ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मने, वश पड्यां प्राणी जेम रे लाल ॥ अंतरंग मुऊ कामना, किंकर सघलाये तेह रे लाल ॥ म० ॥१ए॥ मति विपरीत तणा धणी, पालक कपिलादिक तेम रे लाल ॥ बाहिज सेव क बहु अबे, पार नावे गणतां एम रे लाल ॥ म० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्याम शरीरी दूबलो, मींघो जोर अनंत ॥ लाल रंग लोचनधरु, त्रासे तेहथी संत ॥ १ ॥ क्रोध जोध छे एहवो, ते बोल्यो सुण स्वामि ॥ कुण मुफ होड करे इहां, ते दाखे तसु नाम ॥ २ ॥ नयण वयण करी हो ठ बहु, धूजावुं हुं जोर ॥ नरक भुजंगें बहु वसुं, थोडो बीजी ठोर ॥ ३ ॥ चंमनाव डुर्वचनता, तामस वैर सराप ॥ ए मुफ सेवक शाश्वता, कुण सहे एहनो ताप ॥ ४ ॥ संन्यासी शिशुपाल नृप, कुरुड दीपायन जोय ॥ ब्रह्मदत्त आदें करी, बहु सेवक मुफ होय ॥ ५ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ राजीमती राणी इणिपरें बोले ॥ ए देशी ॥ सुणजो स्वामी अंतरजामी, हवे अहंकार कहे शिर नामी ॥ सु० ॥ तीन भुवनमां वासो मेरो, मानवमांहे देखो घणेरो ॥ सु० ॥ १ ॥ विद्या ज्ञान तणो फल हारे, जे नर होवे माहरे सारे ॥ सु० ॥ गुरुजननो पण माहरे लेखो, मयमत्त हाथीनी परें देखो ॥ सु० ॥ २ ॥ चक्रवर्त्ति आप तप चाख्यो, मेरो स्वरूप इणीपरें नांख्यो ॥ सु० ॥ दूर विनीत मुफ नाव सदाइ, सेवक सेवे चित्त लगाइ ॥ सु० ॥ ३ ॥ चमर दानव ने प्रतिवासुदेवा, लाखे ज्ञानें करे मुफ सेवा ॥ सु० ॥ दंन कहे मुफ वातां महोटी, अवसर नावे एह हथोटी ॥ सु० ॥ ४ ॥ पीणा सर्पतणी मुफ करणी, अंतरमां कातर अनुसरणी ॥ सु० ॥ मीठुं बोलुं पाशमां पाडुं, सूक्ष्म बादर निगोद देखाडुं ॥ सु० ॥ ५ ॥ जूठुं बोलुं ठल बल साधूं, वेश्या संघाती डोह आराधुं ॥ सु० ॥ अंगारमर्दक आषाढनूता, कपट करा मुनि नारे जूता ॥ सु० ॥ ६ ॥ महाबल वनिता गोत्र जे धरियो, पीठ महापीठ तेहिज वरियो ॥ सु० ॥ सेवक सखरा तिर्यंच मांहे, संसार फेरुं फाली बांहे ॥ सु० ॥ ७ ॥ लोन बोल्यो हुं महोटो वीरो, हुं संसारें जाचो हीरो ॥ सु० ॥ आदर मान दीये मुफ देवा, नरवर पन्नग सारे सेवा ॥ सु० ॥ ८ ॥ जल थल गिरिवर नूमि पराइ, ते अवगाहुं क्षणमें जाइ ॥ सु० ॥ नूख तृषा तप शीत न जाणुं, लालच नें सुख सब लोनाणुं ॥ सु० ॥ ९ ॥ ममता आरंन मूर्छा महोटी, कृपण साहस ए सेवक कोटी ॥ सु० ॥ सुनूम चक्री अने नृपनंदा, लोनउदय केशरी मुनिचंदा ॥ सु० ॥ १० ॥ अंतर बाहिज सेवक जाफा, कोइ न लाने अमची माफा ॥ सु० ॥ हवे प्रमाद ते शूर

सवाइ, राजा आगें बोल्यो धाई ॥ सु० ॥ ११॥ उंची पदवी कोइक चढियो, माहरी शक्ति तुरत ते पडियो ॥ सु० ॥ चउदे पूर्वधरे केइ मुनीशा, उपशान्तमोही जेह जोगीशा ॥ सु० ॥ १२॥ तेह निगोदें जाये सीधा, प्रमादना संग जेणें लीधा ॥ सु० ॥ स्नान मज्जन जलकेलि शिखाउं, नाटक चेटक बार देखाउं ॥ सु० ॥ १३ ॥ पासें खेलुं विकथा भाखुं, परनी निंदा ते पण दाखुं ॥ सु० ॥ वैर विरोधना वंश वधारुं, आलस उंघ घणेरी धारुं ॥सु०॥ १४ ॥ तेरे काठिया व्यसन जे साते, तिणसुं मेरे मिलती धाते ॥ सु० ॥ नट विट संगति विषया अंशा, अंतर सेवक मुज अवतंसा ॥ सु० ॥१५॥ मंगू शैलक मरीच वदीतो,कुंमरीक सौदास में जीत्यो ॥सु०॥ बाह्य सेवक इम केता दाखुं, मुज गुण निज मुख केता भांखुं ॥ सु० ॥ १६ ॥ धर्ममंदिर कहे प्रमाद घोरा, वीर विवेकशुं न चले जोरा ॥ सु० ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणिपरें सामंत बोलिया,शूरा पूरा साथ ॥ मोह शील हवे पाखथ्यो, नावे केहने हाथ ॥ १ ॥ जूठी ने सत्यामृषा, डुंद दमामा दीध ॥ हलका रे रण जीपवा, अमलकराए कीध ॥ २ ॥ शुभध्यान अपध्यान बे, आमा साहामा होय ॥ शुद्धाशुद्ध उपयोग असि,महिप वृषभ युद्ध जोय ॥ ३ ॥ अपध्यान नर बोलियो, करि पहिलो हथियार ॥ जोरावर मुज शस्त्र छे, इणसुं जीत अपार ॥ ४ ॥ रहनेमी नल राय बहु, चूकायां नर नार ॥ मुज आगें तूं नां टके,नाश मूक हथियार ॥ ५ ॥ शुद्धध्यान बोल्यो हवे, तुं महेलो मनमांहि ॥ शीख इसी शूरा कहे, तुं कायरनी बांहि ॥६॥ दृढप्रहारी चिलातीयसुत, हत्याकारक जेह ॥ में तास्या एक पलकमें, बांह ग्रहीने तेह ॥ ७ ॥ बहुकालें तुं आवियो, सांकडे माहारे साथ ॥ हवे जीपीने मूकशुं, जो करशे जगनाथ ॥ ८ ॥ इणिपरें बेहु कटकमां, सज्ज थई तिण वार ॥ निज निज बल परकाशता, वदे ते वारो वार ॥ ९ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ तुंगिया गिरि शिखर सोहे ॥ ए देशी ॥ बूजनो हवे जूज सुणजो, भविक जन मन लाय रे ॥ अवर जूजे नरक जइयें, एहथी शिव थाय रे ॥ बू० ॥ १ ॥ मिथ्यात्व तेहिज राति बहुली, ज्ञान भानु प्रकाश रे ॥ तिण समे मांहो मांहि अडिया, भीडिया धरिय उल्लास रे ॥ ॥ बू० ॥२॥ जोध

शूरो क्रोधसेंती, जूके वीर प्रसिद्ध रे ॥ आवश्यक पुरोहित जूके, जय प्र तिज्ञा कीध रे ॥ बू० ॥ ३ ॥ नइ नाव ते तुरंग बेसी, जूके मार्दव रुठ रे ॥ सरल असि हथियार लेइ, धायो मानने पूठ रे ॥ बू० ॥ ४ ॥ आर्जव ने संतोष बेहु, विवेकना वड वीर रे ॥ माया लोनशुं सबल जूके, कां न करे तकसीर रे ॥ बू० ॥ ५ ॥ अतिघोर पहिला रूप जाणो, अनंतानुबंधि या चार रे ॥ छेदवा अपूर्व करणें, हुउ क्षेमाचार रे ॥ बू० ॥ ६ ॥ स्याद्वा द सिंधुर बेसि आवे, मंत्री सम्यक् दृष्टि रे ॥ आस्तिक्य आयुध हाथ लेइ, बोलावे रिपुदृष्टि रे ॥ बू० ॥ ७ ॥ मिथ्यात्व मोहनो मंत्री आयो, पंच रूप विकार रे ॥ एक घायें हण्या पांचे, समकित जोर अपार रे ॥ बू० ॥ ८ ॥ उपशमादिक वीर संग लइ,अप्रत्याख्यानी शत्रु रे ॥ गुणगण च ढतां नूमि चांपी, अरण्या हरख्या मित्र रे ॥ बू० ॥ ए ॥ हवे तिहां नय वैराग्य वीरें, वही आयो ज्यां मयण रे ॥ सज्ज हूई मदन बोल्यो, सांनल मोरां वयण रे ॥ बू० ॥१०॥ विषमशर हुं जगतजीता, तें सुण्यो नहिं कान रे ॥ माहरां बाण ते उरग सरिखां, उतारुं तुज मान रे ॥ बू० ॥ ११ ॥ नासवानी कला ताहारी, तातनीशरे चित्त रे ॥ तुं नाश हवणां कहुं तुजने, पस्ताइश तुं चित्त रे ॥ बू० ॥ १२ ॥ पुरुष नारी पंढ वेदें, रूप कीधां म यण रे ॥ वचन ए वैराग सुणिने, कोपियो कहे वयण रे ॥बू० ॥ १३ ॥ तीन रूपें हुं न बीहुं, सांनलजे तुं काम रे ॥ प्रबल पायक ताम दीसे, ज लद नावे जाम रे ॥ बू०॥१४॥ इम कहीने पेहेला, तिणे ते षंढनारी वेद रे ॥ शूर थइ वैराग्य वीरें, अरितणो कियो छेद रे ॥ बू० ॥ १५ ॥ उदासी नता गज राज चढिया, बरछी अनित्यता नाव रे ॥ संवेग नें निर्वेद नाइ, आया तिण प्रस्ताव रे ॥ बू० ॥ १६ ॥ हास्य ने रति अरति शोकां, छेदि या तिण वार रे ॥ पछे तिणें पुंवेद छेद्यो, नाग विषय विकार रे ॥बू०॥१७॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे वलि सम संतोष नट, रणखेत खुंदे जोर ॥ संजलना क्रोधादि सब, छेदें निज बल फोर ॥ १ ॥ विकट कटक नासी गयो, मोहतणुं बल क्षीण ॥ जीपे धीर विवेकना, सबल शूर परवीण ॥२॥ डुर्नेर संजलना न णी, खंम खंम बहु कीध ॥ दशमे गुणगणे क्षपक, संतोषें यश लीध ॥३॥ आतम उद्यम जागियो, ज्ञान ध्यान नरपूर ॥ हरख्या वीर विवेक नट, मो

ह सुनट चकचूर ॥ ४ ॥ मोहकटकनी योषिता,निजपति पडिया देख ॥ जल सूकां ज्युं कमलिनी, जीवन विण तनु शेष ॥ ५ ॥ मोहराय मन चिन्तवे, मुऊ नट पडिया नूर ॥ नोंय नारी हवे नासतां, सन्मुख हो तुं शूर ॥ ॥ ६ ॥ शूर नणी दोय गति कही, जय अथवा के नाश ॥ रूपक श्रेणी रण नूमिमां, आवे अधिक उल्लास ॥ ७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ देशी सूंबना गीतनी ॥ अथवा ॥ लागो सबल संग्राम, लागो सबल संग्राम, बे दल जूऊे नगरी बाहिरें हो ॥ ए देशी ॥ मोह महीपति आप, मोह महीपति आप ॥ आवे हो आवे हो, गज पर बेसी जूऊमें हो ॥ सबला करतो नाद ॥ स० ॥ नासो हो नासो हो, अध्यातम मूकी बूऊने हो ॥ १ ॥ देव दानव कुण होड ॥ दे० ॥ आगें हो आगें हो, नागा नय खमियो नहिं हो ॥ बीवरावे अति घोर ॥ बीव० ॥ वड वड हो वड वड उपशम शूरा नणी सही हो ॥ २ ॥ ध्रूज्या कायर प्राणी ॥ ध्रूज्या० ॥ आयो हो आयो हो,मोह महीपति आकरो हो ॥ पीपल पान समान ॥ पी० ॥ धीरज हो धीरज, न रहे कोइ वातरो हो ॥ ३ ॥ अंधारुं आकाश ॥ अं० ॥ ढाई हो ढाई हो, रजें करी सघली दशे दिशा हो ॥ हाक अधिक हूंकार ॥ ॥ हाक० ॥ सुनटां हो सुनटां हो, उपर शूर पडे धसी हो ॥ ४ ॥ लागे सबल संग्राम ॥ लागे० ॥ बे दल हो बे दल हो,जूऊे बूऊे कोविदा हो ॥ घोडा घोडे घेर ॥ घो० ॥ हाथी हो हाथी हो,हाथीशुं जूऊे तदा हो ॥ ५ ॥ पायक पायक लाग ॥ पाय० ॥ माजी हो माजी हो, माजीशुं नीडीया नला हो ॥ आवे राय विवेक ॥ आवे० ॥ हाथी हो हाथी हो, बेसी चढती कला हो ॥ ६ ॥ बरठी शुकलध्यान ॥ ब० ॥ ऊगमग हो ऊगमग हो, सोहे हाथे जेहने हो ॥ नव वधूनो परिवार ॥ नव० ॥ साथें हो साथें हो, वपुकारे सहु तेहने हो ॥ ७ ॥ मोह वदे तब आय ॥ मोह० ॥ वीरा हो वीरा हो, धीरा हवे होशो नहिं हो ॥ नाश तुं चतुर सुजाण ॥ नाश० ॥ थारी हो थारी हो, मूलगी वातां ए सही हो ॥ ८ ॥ धर्म धार तुं माग ॥ धर्म० ॥ मूको हो मूको हो, जीवतो तुऊने जाणते हो ॥ सुनट पड्या मन जाण ॥ सु० ॥ बेग हो बेग हो, करशुं अमृत आणने हो ॥ ए ॥ मो हुंते सब कोय ॥ मो हुं० ॥ जीवे हो जीवे हो, जोधा सघला माहरा हो ॥ शुद्दर व

डनी न्याय ॥छु०॥ शाखा हो शाखा हो, बेयां फिर पल्लवधरा हो ॥१०॥ जीत्या हो त्रणे लोक ॥जीत्या०॥ एहवो हो एहवो हो,मन्मथ तें सुणियो हशे हो ॥ तेहनो गुरु हुं तात ॥ ते०॥ जाणे हो जाणे हो, जूठे क्युं आ तम कसे हो ॥ ११ ॥ वज्र गदा हथियार ॥ वज्र० ॥ मुजने हो मुजने हो लागे नहिं ए सदा हो ॥ मंत्र तंत्र विष व्याल ॥ मंत्र० ॥ नावे हो नावे हो, मुज नेडा कोविदा हो ॥ १२ ॥ में बहुलां रण कीध ॥ में० ॥ कागं हो कागं हो, तरकस हाथ बे माहरा हो ॥ तुं शीलो सुखकार ॥ तुं० ॥ कोमल हो कोमल हो, पुजल तन बे ताहरां हो॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मोह राय गर्वें चढयो, वली बोले सुण वीर ॥ बहु वेला तुज हाथ मां, पहिराया जंजीर ॥ १ ॥ आदिम चक्री सुत जलो, नाम मरीच विख्या त ॥ सागर कोडाकोडिमें, फेख्यो एम कहात ॥ २ ॥ रसनेन्द्रिय मुज सेव कें, कंमरीक तुज वीर ॥ क्षणमांहे बांधी करी, सातमी मूक्यो मीर ॥ ३ ॥ सत्यकी श्रेणिक आदि दे, तुज सेवक अति सार ॥ अविरति माहरी नारि यें, बांधी लिया तेवार ॥ ४ ॥ जीत्या केता आखियें, तुं पण नागे तेथ ॥ लाज तजी आयो वली, श्युं खाटिश तुं एथ ॥ ५ ॥ इम सुणी वीर विवे क हवे, उत्तर आखे एम॥ निज मुख इद प्रशंसतो, लघुता न लहे केम ॥६॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ प्रजु नरक पडंतो राखी, वाणी जाणी ॥ ए देशी ॥ राजा एसा वच न न बोलिश, गर्वतणुं तुं गेह हो ॥ शारद जलदनी गाज सरिखी, वाणी जाणी एह हो ॥ रा० ॥ १ ॥ मादल महोटा नाद करे बहु, अंतर पोला जाण हो ॥ अंतें साचा ते नहीं काचा, एह वडानी वाण हो ॥रा०॥२॥ पूर्ण कलश नां बलके जरियो, गला गेंकर जोइ हो ॥ उबले तोय अल्प पामीने, ए उत्तम तुज होइ हो ॥ रा० ॥ ३ ॥ पाकां पीपल पानतणी प रें,खड खड करे तुं आज हो॥ ते खडखड हुं आज उतारुं,जो करशे जि नराज हो ॥ रा० ॥ ४ ॥ मत मुजने तुं शीलो जाणे,धूरथकी हूं क्रूर हो॥ अग्नि जाल उपरथी बाले, मूल हणे जलपूर हो ॥ रा० ॥ ५ ॥ हुं हिम नी परें गाढो गाढो,तुज दल वृक्ष अपार हो ॥ झांखर कीधा पल जरमांहे, हवें तहारी बे वार हो ॥ रा०॥ ६ ॥ हय गय सेवक सघला नाग, खोइश

खजानो तुझ हो ॥ धिक् धिक् तुझने धीठ हूइने, करवा आव्यो जूझ हो ॥ रा० ॥ ७ ॥ नाश तुं हमणां जीवतो मूकुं, खोटी कां धरे धीर हो ॥ पाल तूटी तो किण परें रहेशे, सरवरकेरो नीर हो ॥ रा० ॥ ८ ॥ चेतन वृंदें शूरे संते, जीपी मूक्यो तेह हो ॥ निर्लज्जनी परें आवे दोडी, एहवी ता हरी सोह हो ॥ रा० ॥ए॥ माहरा सेवक मुझशुं रुशी, कोइक तुझपें आय हो ॥ पण ते अंतर सेवक महारो, स्वामी धर्म सुखदाय हो ॥ रा०॥१०॥ नोलवियो तें नरतनणी बहु, पण नूलो नहिं तेह हो ॥ अनुनव रसियो सेवक मेरो, परम अध्यातम गेह हो ॥ रा० ॥ ११ ॥ पांचे पांमवें बे ना इ हणिया, ते सहु कर्त्तव्य तुझ हो ॥ उत्तम जाणी में उद्धरिया, होड करिश क्युं मुझ हो ॥ रा० ॥ १२ ॥ हत्याकारक अर्जुनमाली, दृढप्र हारी वलि देख हो ॥ तें अधिकारी नरकना कीधा, में सुख दीधां अलेख हो ॥ रा० ॥ १३ ॥ तें कन्यानो शिर छेदायो, मनमें न करी लाज हो ॥ तेह चिलातीने में दीधो, स्वर्गतणो सुखसाज हो ॥ रा० ॥ १४ ॥ जूनो जर्जर देह देखीने, करुणा आवे मुझ हो ॥ निला वृक्षने अग्नि प्रजाले, तोइये नीरस शुक हो ॥ रा० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणि परें वीर विवेकनी, वाणि सुणी नृप मोह ॥ वृद्ध हूउ पण तरुण हुइ, कोप्यो अधिकें छोह ॥ १ ॥ निज हथियारें वरसतो, हणवा वीर विवेक ॥ वहि आयो तिहां वाघ ज्युं, बे जूझ्या अतिरेक ॥ २ ॥ मल्लतणी परें बे जणा, जूझे मांहोमांहि ॥ अंजनगिरि हिमगिरि मल्या, सुर साखी रह्या तांहि ॥ ३ ॥ वीरविवेकें मोहने, उपाडियो ग्रहि पाय ॥ नाख्यो धरणी ऊपरें, क्षीण हूउ स सकाय ॥ ४ ॥ डोही तुं सब जगतनो, पापी पाप निवास ॥ विरुइ विष वेली हती, ते नणी कीजें नाश ॥ ५ ॥ देव समर तुं आपणो, जे सारे तुझ काज ॥ नवि छूटे तुं झालियो, यज्ञतणो अज आज ॥ ६ ॥ सुत सहोदर कोई अवर, कवट चालणहार ॥ नरपति तसु राखे नहिं, ए नृपनीति विचार ॥ ७ ॥ जननी जनक न को इहां, राखि शकें नहिं तोहि ॥ पापतणां फल आइयां, दोष नहिं छे मोहि ॥ ८ ॥ साक्षीधर हुं हुं सही, किंचित कारण होय ॥ पाप फल अघ वृक्षना, ते मारे छे तोय ॥ ए ॥ इम कही वीर विवेक तब, ब्रह्मशस्त्रशुं मोह ॥ हणियो

सुर नर देखतां, आतम अनुबल सोह ॥ १० ॥ ज्ञानावरण्यादिक प्रकृति, सेवक नाग शेष ॥ जय जय शब्द कराइया, जीत्यो वीर विशेष ॥ ११ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ नयन निहालो रे नाहला ॥ ए देशी ॥ जडता फूरे रे योषिता, फूरे माया रे मात ॥ ए अवस्था रे क्युं थइ, तुं जग अमर कहात ॥ज०॥१॥ तुं जगजीवन वालहो,तुं अम प्राणाधार ॥ जे वृक्ष वलगी रे वेलडी, ते वृक्ष पाम्यो संहार ॥ ज० ॥२॥ आश घणी मनमां हती, ते रही दीसे रे आज ॥ वल्लन तुं डुरलंन ठे, मन मान्यो महाराज ॥ ज० ॥ ३ ॥ तुं सम अवर न कोय ठे, पूरण मननी आश ॥ तुऊ गुण केता रे दाखवूं, तों वि णश्यो घरवास ॥ ज० ॥ ४ ॥ ए तनु दीपकवाट ठे, तुं वहालो तैल पूर ॥ तुं सरवर में माठली, में कमलिनी तुं सूर ॥ज० ॥ ५ ॥ तुं वादल में दा मिनी, तुं तरुवर में पान ॥ तुं मानसर में हंसली, तुं उत्तमंग में कान ॥ ज० ॥ ६ ॥ दाडुर चातक मोर हे, तुं गिरुउ घन मेह ॥ दर्शन प्यास बु ऊाइयें, इम किम दीजें रे ठेह ॥ज० ॥ ७ ॥ कोमल कुमुदिनी मे अठां, तुं ठे चन्द समान ॥ तुं तरुवरमें पंखिया, कुण हवे देशे रे मान ॥ ज० ॥ ८ ॥ इण परें माया रे योषिता, फुरती धरती ढली ताम ॥ मोहतणो परि वार जे, बीजो पण गयो आम ॥ ज० ॥ ए ॥ मोहतणुं मृत्यु देखीने, हर ख्या सुर नर राय ॥ फूलतणी वृष्टि वीरनें, शिरपर कीधी रे आय ॥ ज० ॥ १० ॥ जय जय शब्द सहू कहे, थारी शक्ति अपार ॥ हिमगिरि हीर त णी परें, तुऊ गुण निर्मलहार ॥ ज० ॥ ११ ॥ ऐरवत नरत विदेहमें, तुं हिज सखरो हेत ॥ सकलशरीरी रे जीवने, तुं सुख बीजनो खेत ॥ ज० ॥ १२ ॥ तुं हितवछल मात ज्युं, विघ्न विदारण वीर ॥ कलियुग पावक जीपवा, अधिकुं निर्मल नीर ॥ ज० ॥ १३ ॥ तुं साहिब शिर सेहरो, नूर नविक सुखकार ॥ नवनय हरण हरायवा, तुं पंचायण सार ॥ ज० ॥ १४॥ कज्जल यमुनाजल कोकिला,एहो कालो रे पाप ॥ ते गयो दूरें आ जथी, दूर गयो डुःख व्याप ॥ ज० ॥ १५॥ उदयाचल जिनशासनें, तुं उ गो अब सूर ॥ तिमिरपाखंम दूरें गयां, दिन दिन अधिक पंडूर ॥ ज० ॥ १६ ॥ रवि तो उगे आथमे, चन्द कलंकी रे होय ॥ मणि तो पत्थर आ खियें, सुरतरुने वृक्ष जोय ॥ ज० ॥ १७ ॥ ताहरी उपम जे हुवे, ते जंग

में नहिं दीठ ॥ अधिकुं अमृत पानथी, तुऊ दर्शन अम मीठ ॥ ज० ॥ १ ७ ॥ श्रीजिनराज मया करी,ए ऋद्धि आइ रे तोहि ॥ वीरविबुध शिर से हरो, दिन दिन अधिकी रे सोह ॥ज०॥१ए॥ इणि परें सुरनर किन्नरें,गुण गाया धर्म टेक ॥ धर्ममंदिर धन ते सही, सेवे वीर विवेक ॥ ज० ॥२०॥

॥ दोहा ॥

॥ जयत हूइ जाणी करी, हरखी वीरनी मात ॥ पुत्र समीपें आइने, आखें मधुरी वात ॥ १ ॥ चिरंजीव जीवन जगत, तीन जुवन विख्यात ॥ सुत संगम शीतल इस्यो, चंदन चन्द्र कहात ॥२॥ साची धारा दूधनी, तें धावी हे मुऊ ॥ स्वछ वत्स तुं हवे थयो,शोज वधी बहु तुऊ ॥ ३ ॥ चित्त मनोरथ माहरा, जव्य जीव किध एह ॥ सिद्धि प्रतें पाम्या सही, ए ऊपम सस्नेह ॥ ४ ॥ सिंह समा हुं तुऊ सुतें, गंजि शके कुण मोह ॥ बीजानी मा बापडी, कुण जणशे सम तोह ॥ ५ ॥ अविचल ऋद्धि होजो सदा, धर्म नीति आधार ॥ निज कुल दीपायो खरो, सकल जीव सुखकार ॥ ६ ॥ एह वचन निर्वृत्तिनां, सुणियां वीर विवेक ॥ मध्यजाव जावी रह्यो, निजगुण निर्मल टेक ॥ ७ ॥ रण खेतर रह्यो मोहनो, सघलोई परिवार ॥ एक तात मन तिहां किणे, जीवतो दीठ तिवार ॥ ७ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ पियु चले परदेश, सबे गुण ले चले ॥ ए देशी ॥ तिण वेलां त्यां वीर विवेकें तातने, निरख्यो परख्यो क्षीण खरो तसु गातने ॥ नांहि विलेपन कर्म तणो नहिं अति घणो, अति नहिं चंचल अंचल ऊपम किम जणो ॥ १ ॥ मूके बहु निःश्वास आश मन संजरे, मोहशुं सबलो स्नेह मेह आंसू ऊरे ॥ आथमियो मोह सूर निशि सहू को कहे, सिंह गयो जिम हरिण वनमां आवी रहे ॥ २ ॥ राज काज सुख साज सहु मुऊ हाथथी, रागादिक परिवार प्रवर्तनो नाथ थो ॥ हे हे दोषी देव तें ए वडो शुं कियो, चिन्तामणि मोहराय उल्लासीने दीयो ॥ ३ ॥ जक्ति युगति जरपूर जली परें मुऊ हती,हवे कुण करशे सेव देव मन जावती ॥ विरह विलाप संताप तातने जाणीने, आयो राय विवेक नेक मन आणीने ॥ ४ ॥ वीर कहे सुण वात तात हवे माहरी, ए मार्यो जे मोह सोह सवि ताहरी ॥ तीन जुवन दुःखदाय राय मोह ए हतो, पाप ताप

बहु व्याप कला गुरु ए हतो ॥ ५ ॥ जीव हणाय बणाय वहे जूठो सदा, पर धन हरण परदार सेवे छे ए मुदा ॥ मित्रशुं द्रोह विछोह करी धन मे लवे, निशिदिन मदिरा पान खान छाक्यो लवे ॥ ६ ॥ जीव जणी ए नरक निगोद लइ फेरवे, नूख तृषा तप शीत रीत पण जेरवे ॥ आधि व्याधि बहु साध अगाध समुद्र छे, ज्ञान ध्यान बुध पान जणी मुनि क्षुद्र छे ॥७॥ करडो एह कपूत कुकर्मतणो धणी, एहना बहु अपराध सह्या में अवगणी ॥ धिक् धिक् तुजने प्रेम जे मोह वधारियो, शान्ति प्रकृति मुज जाण तिहांथी वारियो ॥ ८ ॥ निवृत्ति ताहरी नारी सारी पुत्र हूं हतो, हवे मुज घरमें आवणरो कर तुं मतो ॥ लोक कथीरतणी जूषा तुज तनु हती, हेमतणी हित सोह तोहि दूखही रती ॥९॥ देवनिरंजन ध्यायो आयो मुज गेहमें, आल पंपाल विचार विकारे कारमे ॥ लोक कहेशे वाह वाह मंत्री तो जणी, जक्तिजाव जरपूर करश्यां तुम तणी ॥ १० ॥ एह वचन सुणी मंत्री विचारे मन करी, वीर विवेक विचार कहे छे हित धरी ॥ पण माहरी सुख वात धात मोहशुं मिले, विरशुं नवली प्रीत रीत कहो किम जिले ॥ ११ ॥ एहनी माता शाता मुजथी नवि लही, ते दुःख हियामांही नाहिं कहो किम सही ॥ पुत्रवधूने हाथ साथ जीमण हूशे, आंगुलियानीशान तान मन ने कशे ॥ १२ ॥ जववैराग्य प्रमुख ए कहेशे मो जणी, तात तणो नहीं बाप साप ए घरधणी ॥ पुत्रतणे बहु मान न कोइ विचरशे, तो पण नयणां शान वान उतारशे ॥ १३ ॥ रत्नराय मन जंग मिले कहो किणि परें, शीलजणी कोपाय वास जेलो वसे ॥ साप उशीशें धार कहो कुण नर रहे, ए ऊपम अवधार विचार मंत्री कहे ॥ १४ ॥ मोह दशा विपरीत जीत नवि अनुसरी, तो क्युं रहियें नेह गेह किणशुं धरी ॥ मनमेलुं परिवार सार विण रस नहिं, तोशुं ए घर वास दास परनारही ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इम आलोची मंत्रवी, दीरघदर्शी एह ॥ वीर विवेक जणी कहे, सुण सुपूत सस्नेह ॥ १ ॥ तुज वाणी हितकारिणी, मीठी अमृत धार ॥ पण परचित्त चिर कालनो, मोह हूतो मनोहार ॥ २ ॥ एह गये थइ ना रहे, मन मंत्री निर्धार ॥ इणशुं वाचा में करी, हुं थारी बुं लार ॥ ३ ॥ बोल कोल किम पलटियें, उत्तम ए आचार ॥ ते संबल सखरो दियो, हितशि

क्षा सुविचार ॥ ४ ॥ तुं आज्ञा दे मंत्रीने, ज्युं करे अग्नि प्रवेश ॥ अति आग्रह कीधां थकां, वींददीयो आदेश ॥ ५ ॥ चढी गुणठाणे बारमे, नाव तीर्थ जल स्नान ॥ स्नातक क्षायिक कुंमममां, शुद्ध हुयो बहु मान ॥ ६ ॥ अंतराय प्रचला प्रमुख, इंधण कर्म विशेष ॥ शुक्ल ध्यान पावक प्रबल,मन मंत्री शुद्ध शेष ॥ ७ ॥ साखी वीर विवेक हुय,वली बीजो परिवार ॥ गत वीर जग तीवेद हुय, नस्म थयो तिणवार ॥ ८ ॥ मूल ज्योति परगट नइ, प्रगट्यो चेतन राय ॥ इण अवसर हवे मूलगी, चेतन राणी आय ॥ ए ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ थारो केशरियो कसनीनो ॥ ए देशी ॥ अब चेतना श्री वीनवे राणी ॥ सुणजो साहिब जी ॥ आज अवसर पायो मनहर प्राणी ॥ सु० ॥ हुं एटला दिन जे तुमपें नाइ ॥ सु० ॥ ते सब गुनहो बक्शज्यो मन लाइ ॥ सु० ॥ १ ॥ हुं अविहड नेहो मनमां धरती ॥ सु० ॥ हवे आप मिल्या ज्युं मेहने धरती ॥ सु० ॥ हवे जूआ न हूआ कबही वहाला ॥सु०॥ ऊख मारो माया दोषी काहला ॥ सु० ॥ २ ॥ हवे हुं तुम चरणनी हुइ दासी ॥ सु० ॥ ज्युं मानसरोवर हंसी वासी ॥ सु० ॥ ए मोह अने मन मंत्री थारे ॥ सु० ॥ तब तांइ रुसणो हूतो मारे ॥ सु० ॥ ३ ॥ इतरा दिन माया जालें बांध्यो ॥ सु० ॥ हवे परमानंद पद पूरण लाध्यो ॥ सु० ॥ इतरा दिन वयरी वश पडियो ॥ सु० ॥ तिहां बंधन संधन सबलो अडियो ॥ सु० ॥ ४ ॥ हवे ज्ञान गुलाब करी अंग नीनो ॥ सु० ॥ थारो मूलगा रूपरो मुजरो कीनो ॥ सु० ॥ मानुं वादल मूक्यो सूरज शोहे ॥ सु० ॥ मानुं राहें मूक्यो शशिधर मोहे ॥ सु० ॥ ५ ॥ मानुं निर्धूम पावक प्रबल सुहायो ॥ सु० ॥ मानुं माटीथी ए कंचन आयो ॥ सु० ॥ जाणे खाण खणंतां माणक पायो ॥ सु० ॥ तुं अनुपम दीपक तेज सवायो ॥सु०॥६॥ ए हेम तणो सिंहासन देवा ॥ सु० ॥ रचियो ले बेसो करशे सेवा ॥ सु० ॥ उपदेशदियो हवे मनने रंगें ॥ सु० ॥ नवि लोक नणी सुख तुमचे संगें ॥सु० ॥ ७ ॥ इम वयण सुणी पटराणी केरां ॥ सु० ॥ हंस राजाने मन हर्ष घणेरा ॥ सु० ॥ हवे प्यारी केरो विरहो नांही ॥ सु० ॥ निजरूप विराज्यो निज गुणमांही ॥ सु० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जय जय शब्द सहु जणे, धन धन तुं माहाराय ॥ न्यायधर्म दीपा वियो,तेरम गुणठाणां पाय ॥१॥ निज पद प्रभुता पद लह्यो, लाधो मूलगो राग ॥ बंधन अरि दूरें गया, परमहंस नृप राज ॥ २ ॥ सुरपति नरपति भावशुं,मन मद मत्सर छोडि ॥ भव भय बंधन मूकवा,सेवे बे कर जोड ॥३॥ वाणी इणि परें भांखशे, भविजनने उपकार ॥ निज गुण परगुण कर्म रिपु, विवरो धरजो सार ॥ ४ ॥ मोहराय जीत्या विना, शिवपद लहियें केम ॥ जीपणनी विधि में कही, सघली मांडी एम ॥ ५ ॥ विनय विवेक विचार णा, आतमनो गुण एह ॥ वस्तुथकी जोतां थकां, उपावन धरी नेह ॥६॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ कपूर हुवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ ग्रामणी आगें ए कह्यो रे, सघलो ए विरतंत ॥ परम हंस हुं इणी परें रे, हुउं निरख तुं संत रे प्राणी ॥ कर श्री आतमधर्म, जीपीजें ज्युं कर्म रे प्राणी ॥ क० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ हंस नाम ते माहरुं रे, मूल गुणें निर्धार ॥ रूढ नाम ते धर्मरुचि जी, एह अरथ अवधार रे प्राणी ॥ क० ॥ २ ॥ माया मोह ए में किया जी, नाना रूप प्रकार ॥ सुमति विवेक विना सहू जी, भरिया पाप भंडा र रे प्राणी ॥ क० ॥ ३ ॥ आपद संपद नवि लहे जी, ज्ञानतणो कियो मान ॥ भूलो भ्रामक भावशुं जी, न धस्यो निरंजन ध्यान रे प्राणी ॥ क० ॥ ४ ॥ बहुविध जीवायोनिमें जी, बहुविध धरियां नाम ॥ नानाविध त्यां दुःख सह्यां जी, सघली फरसी ठाम रे प्राणी ॥ क० ॥ ५ ॥ समयतणो बल साधीनें जी, श्रीपरमेष्ठि पसाय ॥ मलिया विवेक वैराग्यशुं जी, में जी त्यो मोहराय रे प्राणी ॥ क० ॥ ६ ॥ मोह जीप्यो माया गई जी, नाठा वि षय विकार ॥ निज गुण मणि करि शोभतो जी, परतिख देख तुं सार रे प्रा णी ॥ क० ॥ ७ ॥ चेतना पटराणी मली जी, नीके निर्मल नूर ॥ सतीय शिरोमणि शोभती जी, दीठो आनंदपूर रे प्राणी ॥ क० ॥ ८ ॥ राणी गुण केता कहुं जी, गणतां नावे पार ॥ अविचल पद हवे एहथी जी, ग्रामणी तुं अवधार रे प्राणी ॥ क० ॥ ९ ॥ कर्म भरम दूरें गया जी, आयो आप स्वभाव ॥ ज्ञान सूरज उग्यो सही जी, नाठो विकल विभाव रे प्राणी ॥ ॥ क० ॥ १० ॥ इम सुणी ग्रामणी आखशे जी, साची सघली वात ॥ ए

भव मुऊने तें दीयो जी, भेदाणी मुऊ धात रे प्राणी ॥ क० ॥ ११ ॥ मोह माया करी नवि लख्यो जी, एह स्वरूप विचार ॥ मिथ्या तिमिर दूरें गयां जी, स्वामी मुऊने तार रे प्राणी ॥ क० ॥ १२ ॥ भूर भरम नाशी गया जी, सूरज साचो दीठ ॥ ए विरतंत में अनुभव्यो जी, अमृतथी बहु मीठ रे प्राणी ॥ क० ॥ १३ ॥ आप समोवड मुऊ करो जी, अवधारो अरदास ॥ चरण न ठोडुं ताहरां जी, ठोडि विभवनो पास रे प्राणी ॥ क० ॥ १४ ॥ संवेग निर्वेद देखिने जी, धर्मरुचि अणगार ॥ देशे दीक्षा तेहने जी, आणी मन उपकार रे प्राणी ॥ क० ॥ १५ ॥ ग्रामणी दीक्षा लेइने जी, रहेशे गुरुनी साथ ॥ तप जप संयम खप करे जी, होशे सहुनो नाथ रे प्राणी ॥ क० ॥ १६ ॥ ग्रामणी कर्म खपाइने जी, लेहशे केवल ज्ञान ॥ लोकालोक विलोकशे जी, अनुपम रूप निधान रे प्राणी ॥ क० ॥ १७ ॥ मुक्तें जाशे मुनिवरु जी, ए जिनधर्म पसाय ॥ धर्ममंदिर गणि तेहनां जी, चरण नमे चित्त लाय रे प्राणी ॥ क० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चेतना राणी एकदा, अवसर समयो देख ॥ हंसरायने वीनवे, वारू वात विशेष ॥ १ ॥ ज्ञान अंतर दर्शन वली, अनंत वीर्य सुखकार ॥ अविचल पद पुर परगडो, तिहां जइयें अवधार ॥ २ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ अस्थिर आ संपदा रे ॥ ए देशी ॥ काया नगरी कारमी रे, अशुचि तणो भंमार ॥ सात धात नव बारणां रे, मांस रुधिर विस्तार ॥ वालेसर वीनवो रे आ तम तुं अवधार ॥वा०॥ ए आंकणी ॥१॥ चर्म मांस आंता शिरा हाडें करी रे, बंधाणो जस बंध ॥ लाल सिंहासन मल मूत्रशुं रे, वास रह्यो दुर्गंध ॥ वा० ॥ २ ॥ दमक चमक कंचन जिसी रे, परि पुजल परसंग ॥ सुरति मूरति सोहिणी रे, क्षणमें पामे भंग ॥वा०॥३॥ मणिमुक्ताफल ए नहिं रे, कंचन रंग न होय ॥ मोही जन मोही रह्या रे, वार वार मुख जोय ॥वा०॥४॥ अन्न पान घृत गोल जे रे, सखरां फल फूल पान ॥ चूआ चंदन अरगजा रे, तनु संगें मणि जाण ॥ वा० ॥ ५ ॥ नक्र चक्र मछ कछपा रे, नकुल उंदर सिंह साप ॥ भूत प्रेत मंत्र शाकिनी रे, गुल्म ग्रंथि वात ताप ॥वा० ॥६॥ चक्र धनुष बाण खड्ग जे रे, बरठी तुंब बंदूक प्रहार ॥ इत्यादिकथी

नय धरे रे, पग पग विघ्न विकार रे प्राणी ॥ वा० ॥ ७ ॥ रोग शोक रिपु रोषथी रे, सबलो तनु सूकाय ॥ दुष्ट दृष्टि रुषि कोपथी रे, नस्म समोवड थाय रे प्राणी ॥वा०॥ ८॥ स्नेह राग शोष नयथकी रे, कोमल तनु कुमलाय ॥ अति आहार शीत तापथी रे, घात पात वश थाय रे प्राणी ॥वा०॥ ९॥ अंग संग पंक नीरमें रे, वसीयो कमल समान ॥ सर्पशिरें ज्युं मणि रहे रे, आप अलेप सुजाण रे प्राणी ॥ वा० ॥ १० ॥ पांच नूत जड एक मिल्या रे, नाम कर्म संयोग ॥ तुं पवन प्रकार लही करी रे, ज्युं वादलनूं जोर रे प्राणी ॥ वा० ॥ ११ ॥ चिदानंद तुं ज्योति छे रे, अविनाशी अविकार ॥ इहां रहेवुं तुजने नहिं रे, आपो आप विचार रे प्राणी ॥ वा०॥ १२ ॥ अनंत वार लेइ मूकियां रे, एहवा देहस्वरूप ॥ हवे कांहीं धरवूं नहिं रे, स्वयंरूप चिद्रूप रे प्राणी ॥ वा०॥ १३ ॥ एह वचन निज नारीनूं रे, मान्यूं आतम राय ॥ परम ब्रह्म पद पामवा रे, कीधो एह उपाय रे प्राणी ॥ वा० ॥ १४॥ जोग निरुंधन साचवे रे, तन मन वचन प्रकार ॥ प्रकृति पच्चासी छोडवे रे, लागीथी ज्युं छार रे प्राणी ॥ वा० ॥ १५ ॥ गुणठाण चौदमे स्थिर रहे रे, लघु अक्षर पंच सार ॥ चेतना राणी परवर्यो रे, जाये मुक्ति मझार रे प्राणी ॥ वा० ॥ १६ ॥ बाण छुटो जिम धनुषथी रे, निर्लेप तुंबी देख ॥ दीप शिखा उंची धसे रे, युगतें कीध विशेष रे प्राणी ॥ वा० ॥ १७ ॥ अतुली बल ए आतमा रे, एक समयमां जाय ॥ रिजुगति समश्रेणें करी रे, परमानंद पद थाय रे प्राणी ॥ वा० ॥ १८ ॥ परम ध्यान पद पामियो रे, परम मंगल परकाश ॥ धर्ममंदिर कहे ए सुण्यां रे, थाये अधिक उल्लास रे प्राणी ॥ वा० ॥ १९ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ प्रणमी पास जिनेसर केरा ॥ ए देशी ॥ हवे शिवपद गुण स्थानकगुण थुणियें, आगम अर्थथकी ज्युं सुणियें ॥ अचल अक्षय पद एहज कहियें, चौदे राज शिरोपर वहियें ॥ १ ॥ नर लोक जेती लांबी पहोली, छत्राकारें अतिही धवली ॥ सिद्ध शिला उपर आकाशें, निज निज अवगाहन करी नासे ॥ २ ॥ ज्ञानावरण गयाथी पायो, केवल ज्ञान अनंत समायो ॥ दर्शनावरण गयाथी आयो, दर्शन अनंततणो सुख नायो ॥ ३ ॥ चारित्र क्षायिक

समकित लीधो,बेहु मोहतणो क्षय कीधो ॥ वेदनी जातां अनंत सुख सारा, अनंत वीर्य हूआ विघ्न निवारा ॥ ४ ॥ अक्षय स्थिति हूइ आयु खपाया, क्षायिक पारिणामिक तसु भाया ॥ नाम कर्म गया ते अशरीरी,गोत्र गया अवगाहन धीरी ॥ ५ ॥ गर्भ प्रसवनी वेद न बांही, वेदनी कर्मतणो बल नांहि ॥ विषय कषायतणा भय नावे, योग वियोगनो दुःख न पावे ॥ ६ ॥ लेवा देवा न करे सेवा, धन वन मनरी ममता न धरेवा ॥ जल थल जाउं आवूं जोरा, तिहांकिणे केहनो न चले तोरा ॥ ७ ॥ मंस मसक कुड जीवनी पीडा, माखी भमरी कीडी तीडा ॥ वींबु शाप विरोधी जीवा, नांहीं अंधारो नांही दीवा ॥ ८ ॥ साते भयनी का नहिं भीति, रितुपालटणरी का नहीं रीति ॥ मंत्र यंत्र को जाणां जोशी, नहीं को गायां भेसां घोसी ॥९॥ राजा रंक न कोइ लोका, आधि व्याधि नहिं कोइ शोका ॥ डाकिनी शाकीनी व्यंतर दोषा,आशा पाशा नहीं को शोषा ॥१०॥ अशन वसन नहीं रमणी रंगा, हास विलास तणी नहीं संगा ॥ खाट पाट नहीं पोढी सेजा, रुसे तूसे नहीं को हेजा ॥११॥ भूख तृषा तप शीत न बाधा,कोइ न बोला घाट न वाधा ॥ मंदिर महिल न कोइ विमाना, कोई न करे आदर माना ॥ १२ ॥ तप जप किरिया शील न पाले, दान दया वली कोइ न निहाले ॥ ध्यान नहिं को धर्मनी चर्चा, देवतणी नहिं सेवा अर्चा ॥ १३ ॥ पाप ने पुण्यतणा नहिं बंधा, आश्रव संवरनो नहिं संधा ॥ गुणगणा नहिं चढण उतारा, ए साधकता नहिंय लगारा ॥ १४ ॥ छेदन भेदन नहिं को खेदा, शोषण तोषण वर्णन वेदा ॥ शब्द रूप रस फरस न गंधा, स्थिति गति सुख दुःख नही प्रतिबंधा ॥ १५ ॥ उपम दीजें एहनी जीकाइ, ते जगमांहे वस्तु न कांइ ॥ ज्योति रूप तणे अनुसारें, पंडित नर मनमें अवधारे ॥ १६ ॥ सुरपति नरपतिनां सुख जेतां, सघलां भेलां कीजें तेतां ॥ तेहथकी अनंत कहीजें, संपूरण सुख ते नवि छीजे ॥ १७ ॥ केवल ज्ञानी शिव सुख देखे, कही न शके ते सुख सुविशेषें ॥ इन्द्रियनां सुख ते दुःख लेखे, संसारी मीठां करि देखे ॥ १८ ॥ स्थिर पद स्थानक इणि परें पायो, भविजन सुणतां सुख सवायो ॥ धर्ममंदिर कहे धन धन तेहा, ए पद पामे पूरण जेहा ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ परम हंस राजा तिहां, राज करे नितमेव ॥ प्रह उठीने प्रणमतां, मन वंछित ततखेव ॥ १ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ देशी हंसलानी ॥ निश्चें गुण हंस रायना, ते सुणजो हो नविजन मन लाय के ॥ हंस जी नलो नलो ॥ हंस राजा हो अति धवल सुहाय के ॥ हं० ॥ लोकालोक विलोकिने, सुख माने हो निजपद सुपसाय के ॥ हं० ॥ १ ॥ बंधन सवि दूरें गयां, ज्योति प्रगटी हो अतिही उदार के ॥ हं० ॥ अलख अरूपी आतमा, अविनाशी हो परब्रह्म प्रकार के ॥ हं० ॥ २ ॥ अकथ अकर्ता ए सही, चिद्रूपी हो चिदानंद विलास के ॥ हं० ॥ विषयातीत अजीत ए, चिन्मूरति हो चिन्मय सुप्रकाश के ॥ हं० ॥ ३ ॥ अगुरु लघु गुण शोनतो, खेम रूपी हो माहाधाम निधान के ॥हं०॥ परम प्रबोध प्रकाश ए, संघाती हो शिवरूप प्रधान के ॥ हं० ॥ ४ ॥ ज्ञानादिक गुण शोनता, ज्ञानदृष्टि हो निज सकल स्वरूप के ॥ हं० ॥ निष्कलंकी निर्लेप ए, निःसंगी हो निर्जोगी नूप के ॥ हं० ॥ ५ ॥ द्रव्य गुणें करी एक छे, ज्ञान दर्शन हो चारित्र अनंत के ॥ हं० ॥ संसारी सुख जे धरे, तो तेहने हो दुःख माने संत के ॥ हं० ॥ ६ ॥ अविकारी अविकारनुं, सुख माणे हो निज गुण निर्माय के ॥ हं० ॥ वचन अगोचर एहनां, गुण वर्णन हो केवली न कहाय के ॥ हं० ॥ ७ ॥ संसारी सुख एकठो, सहु कीजें हो मन बुद्धि विज्ञान के ॥ हं० ॥ एहथकी अधिको सही, लवें सत हो सुर सुख निधान के ॥ हं०॥८॥ हंस राजा सुख अगलें,अनंत नागें हो हीणो सुख तेह के ॥ हं० ॥ सदा विराजित एहवा, गुण प्रगट्या हो नावे तसु छेह के ॥ हं० ॥ ए ॥ किण इक नृप ज्युं आणियो, निन्न वननो हो उपकारी जाण के ॥ हं० ॥ सघलां सुख तेहने दियां, नव नवलां हो दियां खान ने पान के ॥ हं० ॥ १० ॥ फिरी ते अटवीमां गयो, आवी मीलियो हो सघलो परिवार के ॥हं०॥ पूछी वातां सुखतणी, कही न शके हो सघलो विस्तार के ॥ हं० ॥ ११ ॥ सरखां करीने दाखवे, ते वनमां हो नहिं कांइ वात के ॥ हं० ॥ इणी परें सुख हंस राजनां,कही न शकुं हो सघलां विख्यात के ॥ हं० ॥ १२ ॥ कारमुं सुख संसारनुं, रोग शो

के हो भरियुं भरपूर के ॥ हं० ॥ परम पवित्र प्रधान ए, अघभंजन हो रंजन बहु नूर के ॥ हं० ॥ १३ ॥ महिमा ब्रह्म विलासनी, कही न शके हो सुरगुरु पण एह के ॥ हं० ॥ धर्ममंदिर कहे वंदणा, कर जोडी हो धरि धर्म सनेह के ॥ हं० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मंगल कारण ए सही, मांगलीक सुखरूप ॥ ज्ञेय ध्येय करी धवल पद, आतम आप स्वरूप ॥ १ ॥ परम देव पण ए सही, तारण तरण सु एह ॥ परम समाधि स्वरूप ए, ज्ञानरतन गुणगेह ॥२॥ ब्रह्मरसायण संग थी, हेम कुधातु विकार ॥ तिम ए अंतर आतमा, परमातमता सार ॥ ३ ॥ त्यां लगि मीठा अवर रस, ज्यां लग ए नव दीठ ॥ ज्यां अमृत चाख्युं नहिं, त्यां जल स्वादो मीठ ॥ ४ ॥ खट् दर्शन नदीयां समां, निज निज नय विस्तार ॥ सघला नय समवायधर, जिन मत सागर सार ॥ ५ ॥ स्याद्वाद मति अनुसरे, ते पामे ब्रह्मरूप ॥ एह विना सघलां गणो, भव संसार स्वरूप ॥ ६ ॥ उद्यम संसारी सकल, सफल निष्फल पण होय ॥ ए अमोघ फल ल्यो सदा, इहां संदेह न कोय ॥ ७ ॥ ज्ञानी ज्ञानें राचशे,अज्ञानी अज्ञान ॥ ज्ञानतणा गुण सेवतां,ज्ञान ध्यान बहु वान ॥८॥

॥ ढाल उगणीशमी ॥

॥ इणिपरें भाव भक्ति मन आणी ॥ ए देशी ॥ धन धन धर्मरुचि श्रीऋषिराया, आत्म धर्म बताया जी ॥ ग्रामिणी प्रमुख भविक जन ताख्या, आतम काम समाख्या जी ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ आतम सुरतरु कामित दाता, काम धेनु विख्याता जी ॥ रत्न चिंतामणि कामित कुंभा, आत्म महिमा अचंभा जी ॥ ध० ॥ २ ॥ परमातम सेवो भवि प्राणी, ए शिवपद सहि नाणी जी ॥ रसना पामी सफली गणियें, जो जिनधर्म गुण थुणीयें जी ॥ ध० ॥ ३ ॥ पुण्य पाप बेहुए जवासी, इणथी होय उदासी जी ॥ आतम केरुं रूप निहालो, विषयथकी मन वालो जी ॥ ध० ॥ ४ ॥ निजगुण परगुण बेहू बूझे, अंतर गति तसु सूझे जी ॥ बाहिज तप जप बहुलां साधे, विरला ज्ञान आराधे जी ॥ ध० ॥ ५ ॥ देश विराधक ज्ञानी होवे, जो प्रमादने सेवे जी ॥ अज्ञानी किरिया गुण भरियो, देशें आराधक वरियो जी ॥ ध० ॥ ६ ॥ आराधक ज्ञानी आगममें, साचो शुद्ध शम दम

में जी ॥ अज्ञानी आराधक नांहिं, जो तप जप खपमांही जी ॥ ध० ॥७॥ मांगलीक महोटो धर्म जाणो, मंत्र महा मन आणो जी ॥ भावना सूधी आतम भावो, परमानंद सुख पावो जी ॥ ध० ॥ ८ ॥ ध्येय न गेय न हेय न कोइ, अंतर ज्ञानें जोई जी ॥ प्रह उठीने कीजें प्रणामा, फले मनोरथ कामा जी ॥ ध० ॥ ९ ॥ प्रबोधचिंतामणि ग्रंथ प्रसिद्धो, श्रीजयशेखर कीधो जी ॥ मोह विवेकतणा अधिकारा, गिर्वाण वाणी सारा जी ॥ध०॥१०॥ मंदमति जे मनमें आणे, आलस पण अंग आणे जी ॥ तिणे ए ढाला भाषा प्रबंधे, भविजनने सुख संधे जी ॥ ध० ॥ ११ ॥ श्रीजिनधर्म सूरीश्वर राजे, दिन दिन अधिक दिवाजे जी ॥ आदेश तास लही चोमासा, कीधी धर्म उल्लासा जी ॥ ध० ॥ १२ ॥ श्री मुलतान नगरमें सोहे, पार्श्वनाथ मन मोहे जी ॥ तासु पसायें चोपाइ कीधी, मंगलमाल प्रसिधी जी ॥ ध० ॥ १३ ॥ अध्यातम शैली मन लाइ, सुखानंद सुखदायी जी ॥ धर्म धुरंधर श्रावक संगें, वाधे ज्ञान सुरंगें जी ॥ ध० ॥ १४ ॥ उद्यम आदर एहनो जाणी, ए रचना मन आणी जी ॥ लाभ थयो मुझने धर्म ध्याना, भविजनने वध्यो ज्ञाना जी ॥ ध०॥ १५ ॥ सतरेशें इकताले वर्षें, उज्ज्वल पक्ष शुभ दिवसें जी ॥ मागशिर दशमी स्थिर शुभयोगा, चौपाइ थइ सुप्रयोगा जी ॥ ध० ॥ १६ ॥ वडवखती खडतरगण इंदा, युगवर श्रीजिनचंदा जी ॥ भुवनमेरु गणि सुमति सुरंगा, पूज्यतणा शिष्य चंगा जी ॥ ध० ॥ १७ ॥ पुण्य रत्न वाचक परधाना, तासु शिष्य बहु माना जी ॥ दयाकुशल पाठक पद धारी, सुविहित साधु विहारी जी ॥ ध० ॥ १८ ॥ तसु शिष्य धर्ममंदिर गुण गावे, चढती दोलत पावे जी ॥ रूपरत्न सुख संपति वाधे, जो जिनधर्म आराधे जी ॥ ध० ॥ १९ ॥ सुणतां भणतां पाप पलावें, ज्ञान कलादिक पावे जी ॥ जे नर होशे जाण प्रवीणा, ते इण अधिकारें लीणा जी ॥ ध० ॥ २० ॥ मोहतणा जे मेलू होइ, ते इण साहमो न जोइ जी ॥ कहेशे कल्पना कूडी आखी, किण दीठी कुण साखी जी ॥ ध० ॥ २१ ॥ वार विवेकतणा जे भाई, करशे प्रीति सवाइ जी ॥ आतम ज्ञानतणा जे रसिया, तसु मन वचन ए वसिया जी ॥ ध० ॥ २२ ॥ परमादी प्रायें संसारी, शुद्ध उपयोग विसारी जी ॥ आगमथी उपरांठो जे हो, मिच्छामि दुक्कड तेहो जी ॥ ध० ॥ २३ ॥ ज्ञानतणी ए मंजरी महके;

नव नव ढाले लहके जी ॥ चतुराने ए कंठें गाजे, आतमगुण धरी राजे जी ॥ ध० ॥ २४ ॥ छ खंमें करी चोपाइ दीपे, मिथ्यानावने जीपे जी ॥ आतमदर्शी अर्थ करेशी, आनंद अंग महेसी जी ॥ ध० ॥ २५ ॥ नाव नक्ति करी नविजन नणशे, जे कोइ आवी सुणशे जी ॥ धर्ममंदिर कहे ए परधाना, आपे नवेइ निधाना जी ॥ ध० ॥ २६ ॥ इतिश्रीप्रबोधचिंतामणौ ढालनाषाप्रबंधे पंमितश्रीधर्ममंदिरगणिविरचिते मोहविवेकसंग्राम हंसराजपरमपदप्राप्ति ब्रह्मस्वरूपवर्णननामा षष्ठः खंमः समाप्तोयम् ॥६॥ अस्मिन्ग्रंथे खंम ६, तन्मध्ये प्रथम खंमे ढाल ७, द्वितीय खंमे ढाल ११, तृतीय खंमे ढाल १६, चतुर्थ खंमे ढाल १३, पंचम खंमे ढाल १०, षष्ठखंमे ढाल १ए, सर्व संख्या ढाल ७६. अस्मिन् ग्रंथे सर्व गाथा संख्या १७१२, श्लोक संख्या २३२५ ॥ इति श्रीपंमितधर्ममंदिरविरचित मोहविवेकरासः समाप्तः ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीउपमिति नवप्रपंच आश्रयी धर्मनाथजीनी विनति रूप स्तवन प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ चिदानंद चित्तवूं, चिंततीर्थंकर चोवीश ॥ जगउपगारी जगतगुरु, ज्योतिरूप जगदीश ॥ १ ॥ आपे आपविचारतां, लहियें आपस्वरूप ॥ प्रगटे ममतातृण छिपे, समता अमृतकूप ॥ २ ॥ जब लग जग नूलो नमे, तब लग शिवपुर दूर ॥ जब लग हृदय न ऊगमे, आतम अनुनव सूर ॥ ३ ॥ मनबंधव विनति करूं, छोडी चपल स्वनाव ॥ सङ्घ थइ संनालियें, आवियें आतम नाव ॥ ४ ॥ केवल चिन्मय चतुर तुं, तूं होंसी तूं हंस ॥ अलख अरूपी अकल गति, अविनाशी अवतंस ॥ ५ ॥ लब्धि सिद्धि लहरी जलधि, महिमानिधि महाराज ॥ मोहादिक वयरी विकट, तिणे लोपी तुऊ लाज ॥६॥ राजऋद्धि तुऊ सवि हरी, दाख्यां डुःख अनेक ॥ अब आतम आलस तजी, चेत चेत धरि टेक ॥७॥ नाम गाम तस दाखवे, उपगारी अरिहंत ॥ आपबलें अरि जीतियें, साहज दे नगवंत ॥ ८ ॥ आराधो आदर करी, अडवडियां आधार ॥ विनय करीने वीनवो, शरणागत साधार ॥ए॥

॥ चोपाइ ॥ पाटणएक अनोपम वसे, नवचक्रज नामें उल्हसे ॥ नयरतणो महोटो विस्तार, आदि नहीं जस अंत न पार ॥ १० ॥ चो विश मारग पोढी पोल, लाख चोरासी चौटां उल ॥ चौटे चौटे हाट अनेक, वाणिक व्यवहारी नहिं छेक ॥ ११ ॥ व्होरें वणजे वस्तु अनंत, वसे घणा त्यां संत असंत ॥ बहु धनपति निर्धन पण घणा, नाटक कौतुक नी नहिं मणा ॥ १२ ॥ कोइ उपराजे कोइ निर्गमे, नला चतुर त्यां नूला नमे ॥ छोरी छोरी नव नव साथ,विछड्यां साजन नावे हाथ ॥ १३ ॥ थो क थोक जन जोई नाट, जोइ जोइ जाये जुइ जुइ वाट ॥ उपजे विणसे व स्तु असंख्य, तेहतणी कुण जाणे संख्य ॥ १४ ॥ चार नयर ते मांहे रहे, पार एक एकनो कुण लहे ॥ पापी पिंजर पशु संस्थान, मांनव वास ने बु द्धिनिधान ॥ १५ ॥ रायाराय करम परिणाम,राज करे त्यां अति उद्दाम ॥ जगमां जस परताप प्रचंम,सबल निबल शिर पाडे दंम ॥ १६ ॥ सेव करे जस राणो राण, त्रिन्नुवन कोइ न लोपे आण ॥ सूरज शशी करे जस चा करी, आश आशंक जेनी आकरी ॥ १७ ॥ जे कीडीने कुंजर करे, कीडी कुंजर थइने फरे ॥ करें रांक राजाने धसी,राज दीयें निर्धनने हसी ॥ १८ ॥ जन परमेश्वर एहने कहे, कृत्त्व विधाता करि सईहे ॥ नाग्य दैव खुदा ए होय, अवर न करता हरता कोय ॥ १९ ॥ आठ बंधवे छे नूपाल, तेमां चार महाविकराल ॥ नाण दंसण आवरण अनंत, विघ्नमोहनी अति ब लवंत ॥ २० ॥ ए चारे घनघाती कह्या, आतमरूप रोकीने रह्या ॥ वाद ल विंट्यो दिनकर जिस्यो, राहें जिम पूनिम शशि ग्रस्यो ॥ २१ ॥ जलमां हे कादव जिम मल्यो, लोहमांहे विश्वानल नल्यो ॥ मणिवैडूर्यज मेलो थयो, गइ ज्योती दर्पण काटयो ॥ २२ ॥ इणिपरें रोकी आतम रूप, उपा डी नाख्यो नवकूप ॥ नाण दंसणावरणे आवर्यो, आतम अज्ञानी थइ फर्यो ॥ २३ ॥ जे अनंतबल ते बल हीन, विघनराय कियो जीव आधी न ॥ मोहनीय तो छे डुरदंत, ते आगल कहिशुं विरतंत ॥ २४ ॥ नाम गोत्र आयुष वेदनी, एह वात समजे नेदनी ॥ पुण्य पाप सुख डुःख थइ मले, पिंजरमां प्रजुने सांकले ॥ २५ ॥ त्रस थावर अति सुक्ष्म थूल, पृथ्वी पा णी वन तरु मूल ॥ अग्निवाय कीडी कंथुउ, नामकर्मथी चेतन हुउ ॥ २६ ॥ माखी मधुकर काछब मीन, गोह जुजंगम उंदर दीन ॥ गाय तुरंग

म ऊंट गयंद, हरिण रोझ शीयाल मयंद ॥ २७ ॥ चातक चकवा चास चकोर, नाम नरेसर अतिहि कगेर ॥ पशुसंस्थान नयर मांहिं नखा, एम प्राणी बहु रूपें करया ॥२८॥ निखररूप कीधा नारकी, नामकरम आज्ञा मारकी ॥ विबुध निधान नयर जनघणा, कीधा सुंदर सोहामणा ॥ २९ ॥ मानववास वसे मानवी, तेहनी पेर किधी नवनवी ॥ कोइ सुंदर कोइ कुत्सित अंग, कोइ गोरा कोइ काजल रंग ॥३०॥ कोइ उंचा कोइ अतिवामणा, कोइ सुखिया कोइ डुखी दूमणा ॥ कोइ सुसर कोइ दूसर हुआ, सकल लोक गुण इम जूजुआ ॥ ३१ ॥ गोत्रकर्मनो जुउविशेक, निर्मलवंश किया नर एक ॥ एक कीया माणस कुलहीन, निर्बल निर्धन निर्गुण दीन ॥३२॥ आयुरायनो ए अधिकार, हडिबंधन बांध्यो संसार ॥ तेहना हुकम थयाविण सरे, कोइ जवांतर नवि संचरे ॥३३॥ रायवेदनी रंगे रमे, सुख असुख थइने परिणमे ॥ ए चारे जवना थिर थोज, जिम मंदिरना मंमन मोज ॥ ३४ ॥ हवे कहिशुं मोहनीय नरेश, जिणे जीत्या सवि देशविदेश ॥ जिणे जीत्या सवि सुर नर राय, मुनि केताइ लगाव्या पाय ॥३५॥ एहतणो पोढो परिवार, नाना महोटा सवि कुंझार ॥ एहनुं मन अटवीमां वास, इंडादिक सेवे जिम दास ॥ ३६ ॥ नदी प्रमत्तता डुर्मति नीर, चित्तविक्षेप मंमप तस तीर ॥ बेसे चतुर तृष्णा चोतरे, विपर्यास आसन ऊपरें ॥ ३७ ॥ बल साते बंधवनुं एह, पुष्ट करे आणी मन नेह ॥ एहथी राय कर्म परिणाम, राज्य करे अविचल अजिराम ॥३८॥ मोह तणी पटराणी सार, माहा मूढता नामें नार ॥ कंत कामिनी सबल सनेह, एक जीव दीसे दोइ देह ॥३९॥ मिथ्या दर्शन महेंतो तास, सदा रहे नरपतिने पास ॥ स्वामिजक्त सबलो बुधिवंत, राजकाज सवि चलवे तंत ॥ ४० ॥ त्रण जग वरते जेहनी आण, वश कीधा सवि जाण अजाण ॥ मोहरायना सवि आरंज, थोजावण जाणे थिर थंज ॥ ४१ ॥ जे अर्धांगें राखे नार, करे जपमाला कर हथियार ॥ हसे रुवे तुसे दे श्राप, तेवा देव मनाव्या आप ॥ ४२ ॥ जे आरंजी जे परिग्रही, जस बहु तृष्णा तृप्ति नहीं ॥ घरबारी जे गुरु पूजाय, ए सवि महेंता तणो उपाय ॥ ४३ ॥ होम हवन हिंसा ज्यां घणी, दया दान मूक्या अवगणी ॥ जिम जग एवे धर्मे धसे, तिम मिथ्यामति महेंतो हसे ॥ ४४ ॥ वीतराग जे निर्मलदेव, तेहनी न करे जावे सेव ॥ ब्रह्मचारी विरति गुणवं

त, ते ज्ञानी गुरु नावे चित ॥ ४५ ॥ दयामूल जिन नाषित धर्म,तेहने जाणे ए सवि नर्म ॥ मिथ्यादर्शन महेंता तणा, ए करतूत अछे अतिघणा ॥ ४६ ॥ कुदृष्टिनामें तरुणी तास, सदा रहे जे पियुनी पास ॥ सकल चलावे घरनो नार, रमे निचिंतो तस नरथार ॥ ४७ ॥ केतेइक जिनशासन लही, महेंतानी आज्ञा शिर वही ॥ सूत्र तजी उत्सूत्रें पड्या, मत वाह्या ते मोहें नड्या ॥ ४८ ॥ कोई जटाला कोइ शिरमुंम, कोइ रक्तांबर कोइ करदंम ॥ बार लगावे मागे नीख,ए सवि महेंता केरी शीख ॥४ए॥ मोहरायनो कूंवर वडो, राग केशरी अति वांकडो ॥ सबल प्रतापी शक्ति अनंत, राणी मूढतानो जे कंत ॥ ५० ॥ त्रण रूप ए नरपति तणां, एक ए कथी बीहामणां ॥ काम स्नेह राग ए दोय, त्रीजो रागदृष्टि तिम जोय ॥ ५१ ॥ विषयतणा रस जे विष जिस्या, ते पहेले रूपें मन वस्या ॥ बीजे रूपें धन परिवार, ते ऊपर प्रतिबंध अपार ॥ ५२ ॥ त्रीजे रूपें आपआपणा, महंत सद्धर्मां सोह्यामणा ॥ ए त्रण रूपें राजकुमार, जेर करी मूक्यो संसार ॥५३॥ मोहरायनो बीजो पूत, द्वेष गयंद छे नांगडनूत ॥ वांकूमुख लोचन विकराल, जलहलती जाणे दव ज्ञाल ॥ ५४ ॥ निर्विवेकता एनी नार, धरे अंगगुण पियु अनुसार ॥ इणे रुंध्यो जब हृदय डुवार, तव न वि आवे विनय विचार ॥ ५५ ॥ रागकेशरीनो विस्तार, चारसुता वलि नंदन चार ॥ अनंतानुबंधी अपच्चरकाण, पच्चरकाण संजल परमाण ॥ ५६ ॥ पहेली दृढ घनवंशी जिसी, मींढसींग सम बीजी कशी ॥ त्रीजि गोमूत्रिका सम होय, चोथी छोई सरखी जोय ॥ ५७ ॥ ए चारे वहे नर बलवंत, जाणें बांध्या जीव अनंत ॥ कूडकपट बहु परें केलवे, नरय तिरयगतिशुं मेलवे ॥ ५८ ॥ माया चारे ए दीकरी, जिस्यो कुंन तिसी ठीकरी ॥ पुत्र लोनना एनां नाम, पिता सरीखा सुत परिणाम ॥ ५ए ॥ पहेलोपुत्र रंग करमजी, बीजो कादव समगत नजी ॥ त्रीजो दीप मली सम कह्यो, चोथो हलद रंग सम लह्यो ॥ ६० ॥ द्वेषगजेंद तणा सुत आठ, जेवो तरुअर तेवो काठ ॥ क्रोध मान ए दो चार चार, अनंतानुबंधादिक धार ॥ ६१ ॥ अनंतानुबंधी जे क्रोध, मोहरायनो सबलो जोध ॥ जाव जीव साधे संग्राम, गिरिरेखा जिम नावे ठाम ॥६२॥ बीजो वरस लगें नवि मले, शररेखा वरसालें नले ॥ त्रीजो रजरेखा सम होय, चोथो जलरेखा सम जोय ॥

॥ ६३ ॥ शैलथंन सम पेहेलो माण, अस्थिथंन सम बीजो जाण ॥ त्रीजो काठ सरिखो धीठ, चोथो नेत्रलता जिम ईठ ॥ ६४ ॥ मोहरायना ए पोतरा, सोले नीच जिस्या कूतरा ॥ समकित देशविरति चारित्र, वीतराग पद वीना सत्र ॥ ६५ ॥ फोजदार मोहरायनो, कोइ न कले जेनो मायनो ॥ मदनराय महोटो मूगल, जिणे जीत्या सुर नर नूपाल ॥ ६६ ॥ राखे पंच कुसुमनां बाण, कंपावे तिहुअणनां प्राण ॥ योध जुवान वडो जग जेठ, दानव देव करावे वेठ ॥ ६७ ॥ रति प्रिती घरणी दोइ तास, जे साथें अविहड घरवास ॥ खटऋतु सेवे जेना पाय, विधु वसंत सुरिजन सुख दाय ॥ ६८ ॥ ब्रह्मा निज पुत्रीशुं रम्यो, इंद्र अहल्या चरणे नम्यो ॥ कृष्ण थया गोपीना दास, ए सवि मन्मथ तणा विलास ॥ ६९ ॥ त्रिजुवन नूप धरे त्रण रूप, पुरुष नपुंसक नारि अनूप ॥ त्रिहूं रूपें त्रण जगने दमे, ए वश लोक घणां डुःख खमे ॥७०॥ अरति हास्य नय शोक डुगंठ, रति ठए सुनट मरोडे मूठ ॥ इणिपरें कामतणो परिवार, करे रणांगण रिपुसंहार ॥ ॥७१॥ राग कुंवरनी सबल जगीश, विषयाजिलाष वडो मंत्रीश ॥ पांचे इंडिय जास आधीन, सवि जग जीव कस्या जिणे दीन ॥ ७२ ॥ कृष्ण नील कापोती लेश, त्रण साहेली नवनव वेश ॥ संख्या रहित अशुन परिणाम, सबल शिपाइ करे संग्राम ॥ ७३ ॥ हास्यतणी नारी तुब्रता, नय नार्या हीण सत्त्वता ॥ नव आस्था ले घरणी शोक, ए त्रिहुं निर्लज कीधां लोक ॥ ७४ ॥ हरख विषाद वडा जूजार, मोहरायना चामरधार ॥ वलि धनगर्व धरे शिर ठत्र, मुखरजाव दे बीडीपत्र ॥ ७५ ॥ विकथा वात सुणावे घणी, चारे चतुरा चिहुंदिशि तणी ॥ अविरति रांधण रांधे अन्न, निज्ञ पोलण करे जतन ॥ ७६ ॥ परनिंदा चंमालिणी नार, सदा बुहारे नव दर बार ॥ खासां साते व्यसन खवास, मोहरायने सोहे पास ॥ ७७ ॥ प्रौढा पापस्थान अढार, अटल उमराव वडा जूजार ॥ इणिपरें सुनट तणी बहु कोड, सेवे मोहनृपति कर जोड ॥ ७८ ॥ इणिपरें अल्प कह्यो अधिकार, मोहनरेश्वरनो विस्तार ॥ हवे वर्णवुं धर्मनरिंद, राज करे जग सुरतरु कंद ॥ ७९॥ सात्त्विक मानस नामें नगर, अति सुवास जिम महके अगर ॥ ज्यां दानादिक गुणनो वास, ज्यां सहजें शुनमति अन्यास ॥ ८० ॥ गिरिविवेक सोहे तस पास, अति उत्तंग जिस्यो कैलास ॥ ज्यां चढतां लहियें निर

धार, जगत त्रण केरो विस्तार ॥ ७१ ॥ गिरिविवेक ऊपर अति सखर, अ
प्रमत्तता नामें शिखर, नगर जैनपुर त्यां उल्हसे, सदा सुखी त्यां नविज
न वसे ॥ ७२ ॥ तेह नयरमांहे इक चित्त, समाधान मंमप सुपवित्त ॥ ते
ह तले रहेतां संताप, सवि जाये प्रगटे सुख व्याप ॥ ७३ ॥ निःस्पृहता
नामें वेदिका, तिहां विराजे डुख नेदिका ॥ ज्यां बेग विषयादिक नोग, व
स न करे न होये डुःख सोग ॥ ७४ ॥ जीव वीर्य त्यां आसन चंग, ज्यां
उपजे समरंग अनंग ॥ जस अनुनावें चेतन कला, प्रगटे चिहुदिशि अ
ति निर्मला ॥ ७५ ॥ चारित्रधर्म तिहां माहाराज,राज्य करे अति सुंदर सा
ज ॥ वदन अनोपम जेनां चार, दान शील तप नाव उदार ॥ ७६ ॥ इण
रूपें ए जग उद्धरे, सकल जीवने आनंद करे ॥ ऊतारे नवसायर पार,पो
होंचाडे शिवनयर मजार ॥७७॥ विरतिनाम जस नारि अनूप, पियुसरखुं
जस सकल स्वरूप ॥ मुक्तिपंथ देखाडे हसी,तेहने धन जस हैडे वसी ॥७८॥
वडो कुंवर तेनो यतिधर्म, जे सेहजें आपे शिवशर्म ॥ लघुनंदन श्रावक आ
चार, अंग तुंग सोहे जस बार ॥ ७९ ॥ सामायिक बेउवठाव, परीहार सु
विसुद्ध सहाव ॥ सुद्दुम संपराय अहरकाय, पंचरूप वड कुंवर राय ॥८०॥
अवर रूप वलि दश एहनां, नाम सुणो कहियें तेहनां ॥ खंती अज्जव म
द्दव मुत्ति, सत्य शौच तप संयम गुत्ति ॥ ८१ ॥ ब्रह्मचर्यने अकिंचन्य, ए
ह रूप सेवे ते धन्य ॥ रूप एकमांहे प्रतिरूप, तेह अनेक धरे वररूप ॥
॥ ८२ ॥ रूप बार सुणियें तपतणां, सतर संयमनां सोहामणां ॥ इणिपरें
कहेतां नावे पार ॥ चारित्रधर्म तणो विस्तार ॥८३॥ तिम सद्भाव सरलता
नार ॥ यतिधर्म घरणी मनुहार ॥ एक एक विना नवि रहे, स्त्रीनरतार स
बल सुख लहे ॥ ८४ ॥ श्रावकधर्म तणी पतिव्रता, बे नारी सद्गुण रक्तता ॥
सम्यग्दर्शन महेतो धीर ॥ धर्मरायनो वडो वजीर ॥८५॥ सप्ततत्त्व मंदिर
मां रमे, शमसंवेग दया परिणमे ॥ शुन आस्था वलि नवनिर्वेद, इष्ट मित्र
जसु टाले खेद ॥ ८६ ॥ मैत्री मुदिता करुणा सार, मध्यस्थता सहियर प
रिवार ॥ सुदृष्टिनाम गुणरयणें नरी, महेताने घर अंतेउरी ॥ ८७ ॥
सारे सवि नविजननां काज, सदा संनाले नरपति राज ॥ देखाडे शिवमा
रग जोग, तेहथी रहियें शुन संयोग ॥ ८८ ॥ विमलबोध मंत्रीसर वीर, च
तुर विचक्षण साहस धीर ॥ जाणे सकल लोकनी वात, पार नही

जस मति अवदात ॥ ९९ ॥ अतीत अनागत ने वर्तमान, मंत्री जाणे सवि विज्ञान ॥ काल सभाव सवि जाणे सोय, इस्यो चतुर नहिं बीजो कोय ॥१००॥ पांच रूप धरे ते वली, श्रुत मति अवधि मनस केवली ॥ पांचे रूपें प्रगट प्रताप, धर्म कर्म सवि दाखे आप ॥ १०१ ॥ अधिगति नामें तस कामिनी, शुभ परिणाम तणी सामिनी ॥ निज पियु तणी वधारे लाज, सारे धरमरायनां काज ॥ १०२ ॥ सेनापति साचो संतोष, जेह निवारे सघला दोष ॥ इणिपरें धर्म रायनी फोज, करे भविक मनमांहे मोज ॥ १०३ ॥ कबहिक जोर करे मोहराय, धर्मरायनो टाले गाय ॥ धर्मराय जब करे संग्राम, मोहतणो तव टाले गाम ॥ १०४ ॥ इणिपरे दोय कटक करे जूझ, भविकलोक मन अहनिशि गूझ ॥ कोइहारे कोइ जीतें कदा, ए रीते वर्ते छे सदा ॥ १०५ ॥ उत्कट कर्मी केरे चित्त, मोहराय व्यापी रह्यो नित्त ॥ धर्मराय त्यांथी रह्यो दूर, जिम रजनी मुख नाठो सूर ॥१०६॥ हुए अनुकूल करम परिणाम, भवस्थिति केरो हुए विराम ॥ नियति काल जब मिले स्वभाव, उद्यम उपजावे सद्भाव ॥ १०७ ॥ ए पांचे जन टोलें मली, आतम शक्ति करे निर्मली ॥ तब चेतन मन चिंता थई, हे हे ए गति मुझशी भई ॥ १०८ ॥ हुं पुरुषोत्तम परम स्वरूप, नाथ निरंजन त्रिभुवन भूप ॥ कीधो करमें हूं सांकडो, मोह महा डुशमन वांकडो ॥ १०९ ॥ राख्यो काल अनंत निगोद, कुगति भमाडी कीधो खोद ॥ रांक तणीपरें जग रोलव्यो ॥ भले धुतारे हूं भोलव्यो ॥ ११० ॥ समजी आव्यो सद गुरु पाय, पूछ्यो शिवपुर तणो उपाय ॥ तब सदगुरु शिव मारग कह्यो, ज्ञान दर्शन चारित्र सद्दह्यो ॥ १११ ॥ देखाड्या मोहादिक दोष, कर्ता कर्म मरमना पोष ॥ तेह तणी देखाडी रीत, लहे राज महोटा रिपु जीत ॥ ११२ ॥ चारित्र धर्म कियो अनुकूल ॥ मोहतणुं उखेड्यूं मूल, धर्म नरेशरनो परिवार ॥ रमे रंग भर हृदय मझार ॥११३॥ दोहा ॥ जब डुश्मन दूरें गया, विरसा विषयकषाय ॥ राज लहे तब आपणुं, उत्तम आतम राय ॥११४॥ संतोषी सुखियो रहे, सदा सुधारस लीन ॥ इंडादिक तसु आगलें, दीसे डुःखिया दीन ॥ ११५ ॥ ते सुख नहिं सुररायने, ते नहिं रायां राय ॥ जे आतम सुख अनुभवे, सम संतोष पसाय ॥ ११६ ॥ परवशता पाछी वली, गई दीनता दूर ॥ आश पराई जब तजी, जीव झीले सुख

पूर ॥ ११७ ॥ फूरीने फंखर थया, मुख मूके निःश्वास ॥ कामी कामिनी पग पडे, आश करे इम दास ॥ ११८ ॥ अग्नि आपथी ऊपजे,तृष्णा आप जलाय ॥ आपें आप विचारतां, आपहि आप बुझाय ॥ ११९ ॥ आशा बंधन बांधियो, जग सघलो मूंझाय ॥ रहे उदास जे आश तजि, जीव न्मुक्त कहाय ॥ १२० ॥ आश करो अरिहंतनी,जग थई रहो उदास ॥ विनय अनोपम एह सुख, अनुजव लीलविलास ॥ १२१ ॥ आशी पारागो टको, तापें फाटी जाय ॥ तिम आशा मन मानवी, न लहे मुक्ति उपाय ॥१२२॥ जेह निराशी गोटको, ते होय सहज अजंग ॥ तरुआनो मल अप हरी, रूपूं करे सुरंग ॥ १२३ ॥ तेम निराशी मन हरे, सवि आतम संताप ॥ आतम परमातम हुए, विनयविचारो आप ॥ १२४ ॥ विनय विचारी आदरो, समता शिवपुर वाट ॥ आरति नावे आशनी, उपजे नहीं उच्चाट ॥ १२५ ॥ विरुई आशा विषयनी, ऊखेडो विष वेल ॥ रोपो समता सुरलता, विनय रमो रस खेल ॥ १२६ ॥ काट न लागे कनकने,जिम रहेतां रज पास ॥ तिम कर्मे नवि जेदियें,आतम राम उदास ॥१२७॥ इम उदास रस चाखतां ॥ शिथिल होय जव बंध ॥ शुकल ध्यान तब ऊपजे, पावन परम सुगंध ॥ १२८ ॥ शुकलध्यान जब थिर करी, चंचल मन कल्लोल ॥ केवल ज्ञान तरंगमां, आतम करे फकोल ॥ १२९ ॥ कर्म घनघाति क्षय गयां, तब प्रगटी निज ज्योत ॥ तिम वादल विघटी गया, उदयो रवि उद्योत ॥१३०॥ माखणथी जब जल बल्यूं, तब प्रगटयूं घृत रूप ॥ तिम घनघाती मल बले,प्रगटे ज्ञान अनूप॥१३१ ॥ मन वच काया थिर करी,परम शुकल धरि ध्यान ॥ चारे कर्म दही लहे,परमानंद निधान॥१३२॥ सिद्ध सदा सुख अनुजवे, अनुपम काल अनंत ॥ अजरामर अविचल रहे, प्रणमूं ते जगवंत॥१३३॥ धरमनाथ आराधतां,ए सवि सीझे काज ॥ अंतरंग रिपु जीतियें, लहियें अविचल राज ॥१३४॥ धर्मनाथ अवधारियें,सेवकनी अरदास ॥ दया करीने दीजीयें,मुक्ति महोदयवास ॥१३५॥ वास न द्यो जो मुक्तिनो,तो द्यो सहज उदास॥ तेह लही अमें साधशूं,सहेजें शिव अभ्यास ॥१३६॥ सत्तरशें सोलोत्तरे,सुरत रही चोमास ॥ स्तवन रच्यूं में अल्पमति, आतम ज्ञान प्रकाश ॥१३७॥ श्रीविजयदेव सूरि पटें, श्रीविजय प्रज सूरि ॥ श्रीकीर्त्तिविय वाचक तणो, विनय विनय रसपूरि ॥ १३८ ॥ इति॰॥

१५

॥ श्री चरमजिनेश्वराय नमः ॥

अथ

॥ बालावबोधसहिता श्रीसम्यक्त्वसित्तरी प्रारंनः ॥

तत्र प्रथम

॥ बालावबोध कर्त्तानुं मंगलाचरण ॥

॥ अनुष्टुब्वृत्तम् ॥

॥ नत्वा श्रीपार्श्वमर्हंतं, स्मृत्वा च श्रुतदेवताम् ॥ श्रीमत्सम्यक्त्वसप्तत्याः, कुर्वे बालावबोधनम् ॥ १ ॥ अर्थः—त्रेवीशमा तीर्थंकर श्रीपार्श्वनाथ अरिहंतने नमस्कार करीने तथा श्रुतदेवतानुं स्मरण करीने श्रीमत्सम्यक्त्व सप्ततिका ग्रंथना बालावबोधने हुं करुं बुं ॥ १ ॥ मूल गाथा ॥ दंसण सुद्धि पयासं, तिब्रयरमपछिमं नमंसिन्ना ॥ दंसणसुद्धि सरूवं, कित्तेमि सुआणुसारेण ॥ १ ॥ अर्थः—दर्शन जे सम्यक्त्व, तेनी शुद्धि जे निर्मलपणुं, तेथी जेने केवलज्ञानरूप प्रकाश एटले अजवालुं थयुं बे, एवा अपश्चिम एटले बेल्ला चोवीशमा तीर्थंकर जे श्रीमहावीरस्वामी तेमने नमस्कार करीने दर्शनशुद्धि जे सम्यक्त्वशुद्धि तेनुं स्वरूप जे लक्षण तेने श्रुतानुसारें एटले आगमने अनुसारें हुं कहुं बुं. अर्थात् हुं मारी मतिथीज कहेतो नथी, किंतु आगमनो नाव लश्ने हुं कहुं बुं. ए अनिप्रायथी ग्रंथकर्त्तायें पोताने ग्रंथकर्त्तापणानुं अनिमान नथी. एवुं सूचन कर्युं बे ॥ १ ॥

हवे सम्यक्त्वनुं स्वरूप कहे बेः—

॥ दंसणमिह सम्मत्तं, तं पुण तत्तबसद्दहणरूवं ॥ खश्ये खउवसमियं, तहोवसमियं च नायवं ॥ १ ॥ अर्थः—इह एटले आ शास्त्रने विषे अथवा जिनशासनने विषे दर्शन जे बे, तेने सम्यक्त्व कहियें. तं पुण एटले ते वली तत्तबसद्दहणरूवं एटले ते तत्त्वार्थश्रद्धानरूप बे. एटले आ पदें करी अन्य तीर्थीना दर्शनने सम्यक्त्व न कहियें. एम ग्रंथकारें जणाव्युं, केम के ते अन्य तीर्थमां तत्त्वार्थश्रद्धान नथी.

हवे ते सम्यक्त्वना घणा प्रकार बे, तेमां पण मुख्य त्रण प्रकार बे, ते कहे बेः— एक क्षायिक, बीजुं क्षायोपशमिक, तथा त्रीजुं औपशमिक, एम (नायवं के०) जाणवुं ॥ २ ॥

आ गाथामां पहेलुं क्षायिकसम्यक्त्व कह्युं छे. परंतु पहेलुं जीव, औपशमिक सम्यक्त्व पामे छे. ए औपशमिकसम्यक्त्वना बे प्रकार छेः—तेमां एक नैसर्गिक तथा बीजुं आधिगमिक. तिहां जे गुरुना उपदेश प्रमुखनी अपेक्षाविना जातिस्मरण ज्ञानने बलें पूर्वभवना स्मरणादिकें करी प्राप्त थाय छे, तेने नैःसर्गिक औपशमिकसम्यक्त्व कहियें; अने जे गुरुना उपदेशें करी प्राप्त थाय तेने आगमिक औपशमिकसम्यक्त्व कहियें.

ए औपशमिकसम्यक्त्वनी उत्पत्ति आवी रीतें थाय छेः—कोई जीव चारे गतिमांनी कोई पण गतिमां फरतो छतो अकामनिर्जरायें करी यथाप्रवृत्तिकरणें करी ज्ञानावरणादि सात कर्मनी एक कोडाकोडी सागरोपमनी मांहे स्थिति करे;जेम नदीनी पासेंना अथवा नदीमां आवेला पर्वतना पाषाण एक बीजा सार्थे घसातां घसातां सहजेंज गोलाकार बनी जाय छे, तेम ते पण जाणवुं. ते समय ग्रंथिभेदी अंतरकरण करतोज औपशमिकसम्यक्त्वनुं उपार्जन करे, तेवारें अर्द्धपुद्गलपरावर्त्तनीमांहे शेष संसार करे ॥ यदुक्तं ॥ "अंतो मुहुत्तमित्तं, पिफासिअं जेहिं हुज्ज सम्मत्तं ॥ तेसिं अवड्ढपुग्गल, परिअट्टो चेव संसारो " एम ए औपशमिकसम्यक्त्वनो काल अंतर्मुहूर्त्तनो होय छे॥

हवे क्षायोपशमिकसम्यक्त्वनुं स्वरूप कहे छेः—के जे जीव, अंतरकरण करे नहिं, ते यथाप्रवृत्तिकरण, अपूर्वकरण तथा अनिवृत्तिकरण, ए त्रण करणें करी मिणाला कोद्रवना दृष्टांतें मिथ्यात्वदलिकना त्रण पुंज करे. तेमां एक शुद्ध पुंज, बीजो मिश्रपुंज अने त्रीजो अशुद्धपुंज; तिहां जेम मीणाला कोद्रवाने धोइ करी उपरथी मीण उतारी चोखा करीने एक ढगलो करियें, तेम जे मिथ्यात्वना पुद्गलने चोखा करी ढगलो करे, ते शुद्ध पुंज कहियें; तथा वली कांइक धोया कांइक अणधोया रहे, तेवा पुद्गलने मिश्र पुंज कहियें, अने जे सर्वथा अणधोयाज होय, तेने अशुद्ध पुंज कहियें. ए कोद्रवाना दृष्टांतें मिथ्यात्वना दलिक पण जाणी लेवां. ते त्रण पुंज मांहेला शुद्ध पुंजनो वेदनार जीव, क्षायिकोपशमिकसम्यक्त्व पामे.

॥ हवे क्षायिकसम्यक्त्वनुं स्वरूप कहीयें छेयेंः—जे जीव, अनंतानुबंधीया क्रोध, मान, माया, लोभ तथा मिथ्यामोहनीय, मिश्रमोहनीय अने दर्शन मोहनीय, ए सात प्रकृतिनो क्षय करे, ते जीवने क्षायिकसम्यक्त्व प्राप्त थाय छे. क्षायिकसम्यक्त्व पाम्या पछी तेज भवमां, अथवा बीजा भवमां अ

थवा त्रीजा जवमां अथवा चोथा जवमां ते जीव, मोक्षे जाय बे. पांचमो जव सर्वथा थायज नहीं ॥ यडुक्तं पंचसंग्रहे ॥ " तश्य चजबे तंमिज, जवंमि सिझंति दंसणे खीणे ॥ जे देव निरयसंखा, ज चरमदेहेसुते हुंति " ए क्षायिकसम्यक्त्व अपौजलिक होय बे अने औपशमिकसम्यक्त्व तथा क्षायोपशमिकसम्यक्त्व ए पौजलिक होय बे. केम के, ए बन्ने सम्यक्त मिथ्यात्व पुजल चोखा कस्याथी उत्पन्न थाय बे, माटें पौजलिक कह्या बे. वली क्षायिकसम्यक्त्व मुक्तिनेविषे सिद्धना जीवोमां पण पामीयें. ए संक्षेपथी बीजी गाथानो अर्थ कह्यो ॥ २ ॥

॥ हवे ए सम्यक्त्वनेविषे अन्यतर सम्यक्त्व कहेवा गुण संयुक्त जव्यप्राणी पामे, ते कहे बेः—अवजन्नियं मिन्नत्तो, जिणचेश्य साहुपूयणुज्जुत्तो ॥ आयारमठ मेयं, जो पालइ तस्स सम्मत्तं ॥ ३ ॥ अर्थः—जेणे मिथ्यात्व बांमधुं बे, एवो जव्य जीव सम्यक्त्वने पामे, ते मिथ्यात्वना पांच प्रकार बेः—एक आजिग्रहिक, बीजो अनजिग्रहिक, त्रीजो आजिनिवेशिक, चोथो सांशयिक, अने पांचमो अनाजोगिक. ए पांच प्रकारना मिथ्यात्वनो सर्वथा त्याग करे. तेवारें जीवने शुद्ध देव, शुद्ध गुरु तथा शुद्ध धर्मनी सद्दहणारूप सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय.

तेमां शुद्ध देव, ते जिन वीतराग जे अढार दोष रहित बे. अने चैत्य ते देव, गृहप्रतिमा स्थापना जिन जाणवा. तथा शुद्ध गुरु ते सुसाधु सुविहित शुद्ध प्ररूपक, दशविध यतिधर्म संयुक्त होय ते साधु जाणवा. तेजनी पूजाने विषे जे उद्युक्त उजमाल तत्पर होय तथा निःशंकितादिक आठ प्रकारना आचारने पाले, तेने सम्यक्त्व होय ॥ ३ ॥

हवे ते सम्यक्त्व शुद्धिनेविषे दृष्टांतगत आरामनंदननी कथा कहे बेः—आ जंबुद्दीपने विषे अर्द्धचंद्राकार जरत क्षेत्र बे. तेमां लक्ष्मीपुर नामनुं नगर बे, ते एवुं तो सुशोजित बे के, जाणे लक्ष्मीनुं रमण करवानुंज स्थान होय नहिं ! तेमां विक्रम एवे नामें राजा राज्य करतो हतो. एना चार जाइयो हता. तेजनां नामः—विमलबुद्धि, बुद्धिसागर, सुबुद्धि, तथा विशालबुद्धि. ए चारे, पोताना नाम जेवाज परिणाम वाला हता. तेजमांना विशालबुद्धिने पद्मश्री नामनी स्त्री हती. तेमां पण पोताना नामना जेवाज परिणाम हता. कोइ कालें तेना जेष्ठोनी स्त्रीना उदरथी पुत्र पुत्रीयोनो

जन्म थयो. तेना निशाल घरेणां, तथा पाणिग्रहण प्रमुख महोत्सव जो इनें मनमां अत्यंत दुःखने पामी. अने घरनी वाडीमां जइने रोती थकी कहेवा लागी के हा दैव !!! मारी जेठाणीयोने पुत्र तथा पुत्रीयो छे तेना पाणिग्रहण वगेरेना महोत्सव थाय छे. अने हुं अधन्य तथा अजागिणी छुं के जेथी मनें एक पुत्र के पुत्री कांइ पण नथी,एवा खेदने पामवा लागी. एम तेने रोती जोइने एक वांदरी पासें आवीने कहेवा लागी के, हे सखि! तुने एवडुं शुं दुःख थयुं छे के जेथी तुं रडे छे ? ते मने कहे. हुं तारुं दुःख मटाडुं ॥ यतः ॥ दुक्खं तासु कहिज्जइ, जो होइ दुक्ख फेडण सम त्थो ॥ जो नवि दुहिए दुहिउ, तासी किस कहिज्जए दुक्खं॥ त्यारें पद्मश्री बोली के मारी बधी जेठाणीउने बेटा बेटी छे. तेउना जन्मादिकना महोत्सवो थाय छे. अने मारे पुत्री पुत्रादिक कांइ नथी तेथी हुं रडुं छुं. ए दुःख जो ताराथी टली शके तो टाल. एवुं सांजली ते वानरी तरत वनमां जइने एक औषधि लावी. ते तेने आपीने कहेवा लागी के हे सखि ! रुतु स्नानने दिवसें ए औषधिने पाणीमां घसीने पीजे. तो तेज रात्रें तने पुत्र गर्ज थशे. एवां तेनां वचन सांजलीने ते संतोष पामी अने वानरीने कहेवा लागी के जो मने गर्ज थशे. तो तने आ लाख टकानो हार आपीश! पण तुं वांदरी छतां माणसनी जाषा केम बोले छे? तेवारें वांदरी बोली के, मारी पासें विद्या छे, तेने योगें मनुष्य जाषा पण जाणुं छुं अने वांदरी जाषा पण जाणुं छुं. एम कहीने ते वांदरी जती रही.

पछी पद्मश्रीयें रुतु स्नान करी ते औषधि निर्मल पाणीथी घसीने तेनुं पाणी पीधुं. तेज रात्रिनेविषे तेने पुत्र गर्ज रह्यो. अनुक्रमें गर्जनी वृद्धि थतां दिन पूर्ण थएथी वानरनी आकृतिवाला पुत्रनो जन्म थयो. एवुं एक परिचारिकाना मुखथी सांजलीने ते घणुं दुःखने पामी. ने विचारवा लागी के अरे!!! वानर पुत्र थएलो शो अर्थें आवशे ! एथी तो उलटी लोकोमां हांसी थशे. एवो विचार करीने पोतानी दासीना हाथे घरनी पासेना आराममां तेने मूकावी दीधो. तेने पेली वानरी आवीने लइ गई अने पोताना स्थानमां जइ पोताना पतिने कहेवा लागी के हुं गूढगर्जा हती तेथी मारो गर्ज कोइने जणायो नही. हाल मास पूरा थयेथी में पुत्र प्रसव्यो छे. एम पोताना पति यूथाधिप वानरने समजाव्यो. पछी ते वांदर कु

मार स्तनपानविना डुःखी थवा लाग्यो. तेने जोइने वांदरी पोतानी एक सखीने कहेवा लागी. के मारा स्तनोमां दूध आवतुं नथी. माटें तुं आ बालकने धवराव. एवुं तेनुं बोलवुं मानीने ते बीजी वांदरीयें धवराववा मांमयो, तेथी ते पुष्ट थयों. पढी कोइक समयनेविषे फरी ते पद्मश्री पूर्वोक्त बागमां जइने करुणस्वरें रोवा लागी.

अहो नवि जीवो,ए दाखला उपरथी संसारना जीवोने केहेवां डुःख ढे,ते तमारा ध्यानमां आव्यां हशे ! संसारी जीव डुःखीज होय ढे. अने जे संसारसंबंधी सुख दीठामां आवे ढे ते पण डुःखने सुख मानेलुं ढे. जुवो के,गर्न धारण करवो, ते प्रत्यक्ष स्त्रीने डुःख दायक ढे केम के, गर्नवती स्त्रीने सुखें ऊंघ आवती नथी, पेट नरी खवातुं नथी. पोतानी इहाप्रमाणे चाली शकातुं नथी, अने वधारे मनने चेन पडतुं नथी वगैरे डुःख थाय ढे. तेनें सुख मानीने ते स्त्री मनमां फूलाय ढे, अने ज्यारें गर्न धारण करेलो नथी होतो, त्यारें ऊंघ सारी रीतें आवे ढे,पेट नरी खवाय ढे, पोतानी इहा प्रमाणें गमे त्यां जवाइ अवाइ शकाय ढे तथा मनमां चेन रहे ढे, एवुं सुख ढतां तेने डुःख मानीने चिंता कर्यां करे ढे के मने गर्न रहे तो सारुं ! एवा रीतें डुःखने सुख मानी लेवुं ए संसारनुं स्वरूप ढे. एनो विचार चतुर नरोयें सारी रीतें करी लेवो जोइयें. हवे ते वांदरीयें पद्मश्रीने रोती सांनली तेथी तेनी पासें आवीने कहेवा लागी के बाइ ! मारी वात सांनल. हुं वांऊणी हती,अने संतान नहीं होवाना डुःखथी महा पीडा पामती हती. तेथी गमे तेम करीने मने संताननी प्राप्ति थाय तो वांऊीयानुं मेणुं टले, एवो विचार करतां अचानक ते दिवस में तने एज कारणसर रोती जोइ ते संधियें मारुं कार्य साधी लेवानी इहाथी तने में एवी औषधि आपी के जेथी वानर पुत्रनोज जन्म थाय. तेम थयाथी मारी इहा में पूर्ण करी लीधी ढे. हवे बीजी औषधि हुं तने आपुं ते पूर्वेनी पठें घसीने पान करजे, जेथी तुने मनुष्य पुत्र थशे. एमां संशय आणवो नही. ए बोलवा उपर पद्मश्रीयें विश्वास करीने रुतुस्नानने दिवसें तेम कीधुं. तेथी गर्न रह्यो ने मास पूरा थयेथी तेने शुन दिवस शुन वार तथा शुन मुहूर्त्तना समयें एक पुत्रनो जन्म थयो. त्यारें विशालबुद्धियें महोटो महोत्सव कर्यो. पुत्र जन्मथी आखा कुटुंबने आनंद थयो. ते पुत्रनुं नाम

आरामनंदन एवुं राख्युं. तेना पालन पोषणने अर्थे सारी सारी धाव राखी, तेथी जेम नंदनवनमां कल्पवृक्ष वृद्धिने पामे, तेम तेपुत्र ऊछरवा लाग्यो. एम अनुक्रमें आठ वर्षनो थयो, त्यारें नीशाले जणवानेमाटे मोकल्यो. केम के, पुत्रनी लालना पांच वर्ष सुधीज करवी, त्यार पछी ते ताडना करवा लायक थाय छे, माटे लालना करवी नहीं. तेम कस्वाथी ते बगडी जाय छे. अने खराब टेववालो थाय छे, तेथी ताडनाज करवी जोइयें छै यें. तेम शोल वर्ष सुधी करियें. पछी पुत्रने मित्र जेवो गणियें. कह्युं छे के, " लालयेत् पंचवर्षाणि, दशवर्षाणि ताडयेत्॥ प्राप्ते तु षोडशे वर्षे, पुत्रं मित्रवस्समाचरेत् " ॥

पछी आरामनंदन, निशालमां जणीने बहोंत्तेर कलानो पारंगामी थयो. एम करतां ते यौवन अवस्थाने पाम्यो. त्यारें मातापितायें महोटा उत्सवथी एक पद्मावती नामनी राजकन्यानी साथें तेनुं लग्न कर्युं. पछी जेम धरणेंद्र अने पद्मावती आनंदथी रमण करे, तेम ते बेहु सुखविलासमां रमवा लाग्या तेथी काल व्यतीत थवानी पण तेनें खबर पडती नथी. केम के, सुखना दिवस गयेला जणाता नथी. यदुक्तं–" तहिं देवा वंतरिया, वरतरुणी गी य वाइय रवेणं॥ निच्च सुहिया पमुइया, गयंपि कालं न जाणंति." कोइ ए क समयने विषे ग्रीष्म ऋतु आवी, त्यारें एवो तो ताप पडवा लाग्यो के, तेथी लोकने महा संताप उत्पन्न थयो. तेथी आरामनंदन अने पद्मावती ए बन्ने साथें नर्मदानदीमां जलक्रीडा करवा गयां. त्यां क्रीडा करतां पद्मा वतीयें नदीमां तरती एक फूलनी कंचुक दीठी. त्यारें आरामनंदनने क हेवा लागी के हे प्राणप्रिय! पेली, फूलनी कंचुकी तरती जाय छे, ते मने आणी आपो. ए पहेरवानी मने होंश थई छे? ते पूरी करो. आरामनंद न बोल्यो के, अगाध जलमां हुं केम जई शकुं? अने ते कंचुक तने केम लावी आपुं? एवो हठ तुने करवो जोइतो नथी माटे ए वातने तुं मूकी दे, तेवारें पद्मावती बोली के, जो ए कंचुक मने मले तोज हुं जीवुं, अ न्यथा हुं मरण शरण थाइश! कह्युं छे के " बालानामबलानां च, नृपा णां च विशेषतः॥ तथा च पापसक्तानां, दुर्निवार्यः कदाग्रहः " एटले बा लक, अबला, राजा अने पापासक्त मनुष्यनो कदाग्रह दुःखें करी पण निवारण थाय नहीं. जुवो के, सीताना कदाग्रहथी राम सुवर्णना मृग

पाछल दोड्यो, तेम पद्मावतीना कदाग्रहथी आरामनंदन पद्मावतीने त्यांज मूकीने एक नावडीना हाथे प्रवहण सज्ज करावी तेने साथें लई तेणें अगाध जलमां प्रवेश कर्यो. कंचुक आगल तरतुं जाय अने तेनी पाछल नाविका चाली जाय. एम करतां रात्रि पडवा मांडी पण पेलुं कंचुक हाथमां आव्युं नहीं. एटलामां जेम कोई माणस पाणीमां तरतां थाकी गयाथी विशामो लेवाने एक ठेकाणे स्थिर थई रहे, तेम ते कंचुक थंजी रह्युं, त्यारें आराम नंदने ते उचकी लेवाने हाथ घाल्यो एटले ते कंचुक जेना माथामां छे, एवी एक दिव्य स्वरूप हार कुंमलादि आजूषणें मंमित एवी एक स्त्री पेदा थई. तेने जोईने ते कुमार विस्मय पाम्यो. अने पेला ना विकने तथा नावडीने एक कोरें मूकी दईने कौतुक जोवाने अर्थे पेली स्त्रीनी पाछल लाग्यो. कह्युं छे के,:– "विद्यार्थी च धनार्थीच, स्त्रीयार्थी चैव विशेषतः ॥ अलसा न जवंत्येते, तथैवं कौतुकप्रियाः" जावार्थः–विद्यार्थी, धनार्थी, तथा स्त्रीयार्थी ए त्रणे ने आलस थतुं नथी, केम के, तेउने ते उद्योगकौतुकनी जेवो लागे छे.

पछी ते स्त्री ते नदीमांथी निकलीने, ते नदीने किनारे एक कालिका देवीनुं देहेरुं हतुं तेमां जइ, श्रीकालिकानी प्रतिमा हती तेने पेलुं पुष्पनुं कंचुक पहेरावीने कहेवा लागी के हे स्वामिनि ! तुं घणा कल्याणनी करना री थजे. एवी प्रार्थना करी, बाहेर नीकलीने अदृष्ट थइ गई. आरामनंदन ते देवीने निर्माल्य थयेलुं कंचुक लइ हर्षने पामीने नदीने किनारें आव्यो. त्यां जुए छे तो नाविक तथा नावडी ए बेमांनुं एके देखातुं नही. त्यारे तेनुं नाम लइ महोटे सादें हाको मारतो थको त्यां जटकवा लाग्यो. ना विक गुम थइ गयो जाणीनें जयने पामवा लाग्यो. तेथी एक पाणीनी प रब हती, तेमां जइने सूतो. कह्युं छे के "अतिभुक्तवतां पुंसां, चिंतार हितचेतसां ॥ अति प्रवासश्रांतानां, निद्राहि सुलजा मता" जावार्थः– जेणें अति जोजन कर्युं होय, जेनुं चिंतारहित चित्त होय, अने जे अति थाकेलो होय तेने सहज निद्रा आवी जाय छे. पछी ते परबनी उपर फ रता फरता केटलाएक चोरो आवी चड्या. त्यां पेला पुष्पना कंचुकनो सु वास फेली रह्यो हतो तेथी ते चोरोयें विचार्युं. के आहीं कोइ जोगी पुरुष होवो जोइयें, एवुं अनुमान करीनें ते परबमां पेठा. त्यां आरामनंदनने लूटी लेवाना निमित्तें तेनो जाडो लीधो, पण पेला पुष्पना कंचुक विना

बीजुं कांई तेनी पासेंथी मल्युं नही. तेथी तेज कंचुक लइने पेला चोरो बाहेर नीकली चालता थया. कुमर अति थाकेलो होवाथी सूतो तेवोज घोर निद्राने वश थई जवाने लीधे रातनी चोरोनी हकीगतविषे तेने कांइ पण खबर पडी नही. सवारनो ऊठी जुवे छे तो ते कंचुक देखायुं नहीं, तेथी ते अति खेदने पाम्यो. ने विचारवा लाग्यो के हुं कंचुकविना पद्मावतीने मुख केम देखाडी शकीश ! एवी चिंतवना करतो शून्य चित्तें जमवा लाग्यो. जमतां जमतां एक लक्ष्मीना निवास जेवा पाटण नामना नगरनी पासें आवी पहोतो. तेनी मांहिलीकोरें चाल्यो, नगरना चहूटामां आवी जुवे छे तो एक शिखरबंध प्रासाद दीठामां आव्युं. तेमां जिनप्रतिमा जाणी, शुद्धसम्यक्त्वधारी छे माटे हर्षने पाम्यो. अने आकस्मिक महान लाभ थयो. एम जाणीने देव जुहारवाने प्रवेश कस्यो. मांहे जइने चैत्यवंदन कीधुं. ते समयें एक सागर नामना श्रेष्ठीयें तेने दीठो. अने परदेशी जाणीने तेने पोतानी पासें बोलाव्यो. तेनां वचन तथा सौभाग्य जोइने अति खुशी थयो. तेथी आग्रह करीने घेर तेडी गयो. अने स्नान वगेरे करावी सारी सामग्री सहित भोजन कराव्युं. पछी सागर श्रेष्ठीना आग्रहथी जेम पिताने घेर पुत्र रहे,तेम त्यां ते रह्यो. केटला एक दहाडा रह्या पछी वर्षाकाल आव्यो. सारी परें वर्षा थइ. समस्त पृथ्वीरूपिणी स्त्रीयें नीलां तृणोरूपी नीलां कंचुक पहेस्यां. सर्व नदी नवाण प्रमुख पाणीथी भरायां.

हवे कोइएक समयनेविषे लक्ष्मीधर राजानो मुख्य हस्ती पाणी पीने पाछो वल्यो, त्यारें एक स्थलनेविषे कादवमां खूची गयो. तेने कोई कहाडी शके नही. कहाडवाना घणा उपायो कस्या, पण ते बधा निष्फल थया. ते जोइने राजा कहेवा लाग्यो के, आ हाथीने जे कोइ पुरुष कादवमांथी कहाढे, तेने वांछित दान आपुं. एवो शहेरमां पटह पीटाव्यो. ते पटहनो शब्द सांभली ते वातनो आरामनंदनें अंगीकार कस्यो. त्यारें तेनें राजाना नफरो राजानी पासें तेडी गया. अने तेनुं रूप देखीने राजा खुशी थयो. पछी ते कुमार राजाने कहेवा लाग्यो के, तमारा मंत्री प्रमुखजो मने साहाय्य आपे, तो हुं कादवमांथी हाथीने कहाडुं. ते सांभलीने राजायें मंत्रीयोने साथें मोकल्या. तेमनी साथें ते हाथीनी समीप गयो. अने मंत्रीयोने कह्युं के सो हाथसुधी आ भूमिकाने इष्टिका (ईंट)

थी बंधावो. मंत्रीयें तत्काल इष्टिकाउं मंगावी अने ते नूमिका बंधावी. त्यारें कुमारें हाथीने खावाने शेरडी मंगावीने हाथीनी पासें नाखतांज तेणे ते यथेष्ट खाधी. तेथी हाथीना अंगमां बल आव्युं. पठी ते तलावमांथी नीक करावीने जे ठेकाणें हाथी खूची गयो हतो ते ठेकाणुं पाणीथी नरावी नाख्युं. अने एक हाथणीने त्यां मंगावीने हाथीनी पासें ऊनी करी. तेने जोई हाथी पोताना शुंढादंम वडे तेनी योनिनो स्पर्श करतो उतो महाकामातुर थयो. त्यारें आरामनंदने मावतने कह्युं के, आ हाथणीने हवे हलवे हलवे दूर खसेडो. त्यारें मावतें पेली हाथणीने त्यां खसेडी कांइक दूर करी. तेनी पाठल हाथी पण बल करीने ते कादवमांथी नीकलवा लाग्यो. एम क्रमें करी ते हाथी आखो नीकलीने हाथणीनी पाठल दोडवा लाग्यो. दोडतो दोडतो गजशालामां ज्यां हाथणी आवी ठे तेनी पूठें ते हाथी पण आव्यो. तेने हाथीना सेवकें आलानस्तंनने विषे बांध्यो. आखा नगरमां जय जयकार थयो. राजा कुमारनी बुद्धि देखीने खुशी थयो. पठी तेने पोतानी पासें तेडीने स्वादिष्ठ नोजन कराव्युं, अने कह्युं के वर माग. ते सांनलीने कृतज्ञोनेविषे शिरोमणि जे आरामनंदन ते कहेवा लाग्यो के, महारी तरफथी सागर श्रेष्ठीने तेडावीने नगर शेठनी पदवीयें थापी महत्त्वपणुं आपो. राजायें सागर श्रेष्ठीने तेडावीने तेने श्रेष्ठिपद आप्युं. आखा नगरमां मुख्य कीधो तेथी सागर श्रेष्ठी आनंदने पाम्यो. खुशी थयो थको पोतानी पुत्री कुमरने देवा लाग्यो कुमरें कह्युं के, मारे एक स्त्री पद्मावती ठे. तेम ठतां बीजीने हुं शुं करुं! तेमां वली में तमने पिता करी मान्या ठे, तेथी तमारी पुत्री ते मारी बहेन थइ, तेनी साथें हुं पाणिग्रहण केम करुं?

एवी रीतें आरामनंदन सागर श्रेष्ठीने घेर रहेतां थकां केटलोएक काल वीती गया पठी एक दिवसें ते सागरश्रेष्ठीने कहेवा लाग्यो के, मारे अन्य देशमां व्यापारने अर्थें जवानी मरजी थाय ठे, माटें द्रव्य आपो तो माल लई वहाणोमां नरीने मारी इछा हुं पूर्ण करुं! व्यापारमां जे लान थशे, ते हुं तमने आपीश. मारे तेमांथी कांई पण राखवुं नथी. हुं तो मात्र देशाटन करीनें कौतुक जोईश. एवुं तेनुं बोलवुं सांनली अने तेने नाग्यशाली जाणीने ते वात कबूल करी. पठी कुमारें वहाणोमां चोखा नर्या,

आठ दूजणी जेंषो चढावी. साकर, सोपारी तथा नागरवेल प्रमुख केट लाएक जोग्य पदार्थों जखा. मुशल, ऊखल, घरंट, प्रमुख उपयोगी पदार्थों साथें लीधा. रांधवासारु ठामडां, सारां सारां वस्त्रो तथा शस्त्रो पण साथें लीधां. एक अर्द्धवृद्धा स्त्री साथें रसोई करवाने लीधी. एवी बधी सामग्री एकज वहाणमां जरी ते वहाण एटलुं तो महोटुं हतुं के तेनी ऊप सात तो सढ चडता हता, ते वहाणना मालेकने मन मानतुं नाणुं आपीने जाडे बांधी लीधुं. पछी शुज दिवस, शुज वार तथा शुज लग्न प्रमुख जोइने ते कुमार प्रवहणनी ऊपर चढयो. कह्युं छे के, "न निमित्तं द्विषां क्षेमो, नायुर्वैद्यकविद्विषाम् ॥ गुरुद्विषां नहि ज्ञानं, न मुक्तिर्देवविद्विषां" जावार्थः—ज्योतिषना द्वेष करनाराने क्षेम न होय, वैद्यकना द्वेष करनारने आयु न होय, गुरुना द्वेष करनारने ज्ञान न होय, अने देवनो द्वेष करनारने मुक्ति न होय. पछी शुज मुहूर्त्तें वहाण दरियामां हंकारी दीधुं. दैवयोगें पवन सारो लाग्यो तेथी सारी रीतें पंथनुं उल्लंघन थवा मांम्युं. वहाणमां सर्व जोग्यपदार्थो होवाथी घरनी पठेंज निशान, शरणाई प्रमुख वाद्य वागी रह्यां छे, गणिका नाची रही छे, तेनी साथें मधुर गायन थइ रह्युं छे, अने नाना प्रकारें समुद्रना मोजानी गर्जना थई रही छे, तेथी अति आनंद थइ रह्यो छे. एम करतां कोइक कालें ते वहाण एक द्वीपमां जई पहोतुं. रस्तामां मीठा पाणीनी कांइक ताण थइ जवाथी त्यां जमीन ऊपर ऊतरीने लोको पाणी जरवा लाग्यां. पण आरामनंदने तेम न करतां पोतानुं वहाण त्यांज राखवानो निश्चय कर्यो. त्यारें बीजा साथेंनां वहाणोवाला तेने कहेवा लाग्या के, आगल कोण जाणे क्यां पाणी मलशे माटे आंही पाणी जरी लइने अमारा वहाणोनी साथें वहाणने हकारो, तो सारुं. अहीं अमस्तो काल गमाववो ते सारुं नथी. ते सांजलीने ते कुमार कहेवा लाग्यो के, मारे तो आहींज रहेवुं छे, तमारे जवुं होय तो सुखेंथी जाउ. त्यारें तेउ बोल्या के, शुं तमारे अहीं समाधि करवी छे? कुमारें कह्युं के मारा शरीरनी प्रकृति सारी नथी तेथी हुं थोडोएक काल आहींज कहाडीश. पछी ज्यारें तबीयत सुधरशे, त्यारें आवीश; अथवा तमें ज्यारें पाछा फरशो, त्यारें हुं तमारी साथें चालीश. एवी रीतें सघलाने समजावीने विदाय कर्या. तेउ वहाणो हकारीने चालता थया.

कुमारें पोतानुं वहाण त्यांज राख्युं. पछी पोताना माणसो पासेंथी चावल प्रमुख जे वस्तुउ साथें लीधेली हती, ते नीचें किनाराऊपर उत रावी. चोखा सारी रीतें साफ कराव्या. भेंषो दोवरावीने दूध कढाव्युं. अने तेने जमावीने दही कीधुं. तेना करंबा कीधा. ते ज्यारें समुड्नी रेल आववानो समय थाय, त्यारें पोताना दासोनी मारफतें केटलीएक छाणा नी करेली गरम राख त्यां दिये, तेनी वासथी त्यांना मत्स्य त्यां आवे, अने पोताना देहनी खरज टालवाने अर्थें आलोटवा लागे, ते समयें ते कर्पूरवासित करंब नाखी दिये, तेने खावानेमाटे रसनाना स्वादी जलना जीवो संख्याबद्ध त्यां आवे. एम करतां केटलाएक दिवसो वीती गया. दररोजना सहवासथी ते जलचरो निर्भय थइ गया. अने जेम कमलना गंध ऊपर भ्रमरो आवी मले, तेम ते जलजंतुउ विश्वास राखीने आवी एकठा थाय, अने ते करंबा खावा लाग्या. ते जंतुउ आस्ते आस्ते मनुष्योनो एवो विश्वास करवा लाग्या के, कोइनो भय न राखतां नियम समयें आवीने पोतपोताने ठेकाणे खावा मंमी जाय. एक दिवसें सर्वथी आगल एक जलजंतु आवीने पोतानो आहार खाइ ते ठेकाणें एक रत्न नाखीने चालतो थयो. कुमारें ते रत्न लइ लीधुं, ने मनमां घणो हर्ष पा म्यो. ते दिवस बीजा सर्व जलजंतुउयें पोतपोताना करंबा खाईने ते स्थल मां रत्न नाखी जवानो चाल कस्यो. एम दररोज जेटलां रत्नो एकठां थाय तेटलां रत्नो भेंषोनां छाणनां छाणां थापी तेमां नाखी दिये. तेनी चाकरोने पण खबर पडे नहीं. कह्युं छे के, " अपरीक्ष्य न कुर्वीत,मर्मज्ञः स्वानुजीवि तम् ॥ मर्मज्ञोडुर्जनोलोकः, संतापयति सज्जनं " भावार्थः—पोताना चाकर नी परीक्षा लीधा विना तेने पोतानो मर्म कहेवो नहीं; केम के, कोई डु र्जन मनुष्य होय तो सज्जनने पीडा करी दिये छे. पेलां रत्न घालीने छा णां करेलां जूदां राखतो जाय, अने रत्न विनानां जे छाणां करे, ते जुदां राखे. एवी रीतें बुद्धियें करी घणां रत्नो एकठां करीने गुप्त राख्यां.

हवे पूर्वे कंचुको लेवा माटे स्त्रीनी केडे लाग्यो हतो तेवारें पोतानी नाव नावडायाने भलावी हती तिहां ते नावडीयो नाव बांधीने निश्चिंत सूतो तेने निड्रा आवी गइ एवामां समुड्नी वेलना जोरथी नावना बंधन त्रूटां पाणीना कल्लोलनी प्रेरणायें नाव समुड्मां पडयुं पछी ते कल्लोलें हणा

तुं हणातुं फरतुं फरतुं कुमरना प्रारब्धना योगें पाछुं तेज द्वीपने विषे आव्युं तेने कुमार जोइने खुशी थयो. नाविक ऊतरी आवीने पोताना ध णीने पगे लागो. अने सर्व हकीगत कही संभलावी. भावी पदार्थ को इनाथी टलतो नथी. एम तेनुं समाधान करीनें मत्स्यो माटें तैयार करे ला करंबा जमवाने आप्या. नाविक घणा दिवसोनो भूख्यो हतो तेथी सारी रीतें खाइ धरायो. कुमारें पण पोताने थएली रत्नप्राप्ति विना बाकी नी सघली हकीगत तेने कही संभलावी.

पेलां साथेनां वहाणो जे देशांतरें गयां हतां, तेउना मालेको पोतानो माल वेचीने प्रारब्धानुसार लाभ मेलवी पाछा ए द्वीपने विषे आव्या. प्रथ मनी पेठें वली पण पाणी भरवाने नीचें ऊतर्या. पोताना साथीने आवी मल्या. पछी कहेवा लाग्या के, हवे तो तमें अमारी साथें चालशो के नहीं? कुमर बोल्यो के, हा हवे हुं तमारी साथें आववानें तैय्यार छुं. पछी पोता नी सर्व तैय्यारी करवा लाग्यो. बे जातिनां छाणां कर्यांहतां, ते पोताना वहाणमां भर्यां ते जोईने पेला व्यापार करी आवेला वाणीयाउ मश्करी करवा लाग्या, ने कहेवा लाग्या के,आ छाणां वहाणमां शा सारु भरो छो? तेना करतां अमारो माल भरो, तो अमें तमने भाडुं आपीयें. एटली तो पेदाश करी चालो. कुमर बोल्यो के, भाई अमारे एटलुंज घणुं जे पोताने गमे, ते सारुं कहेवाय. कह्युं छे के, "कोईने कांई गमे,कोइने कांई सुहाय॥ गाडूं भर्युं सोपारियें,सेठ बहेडां खाय." पछी संकेत प्रमाणें बधां वहाणो साथें हकार्यां. चालतां चालतां ज्यारें मध्य पंथें आव्यां, एटले डुर्वात व हावा लाग्यो. वहाणो माहादरियामां डुर्वाटें पड्यां. तेथी घणा दिवसो नीक ली गया. त्यारें इंधणां खूट्यां. एटले बधानी नजर पेला छाणां ऊपर गई. अने कुंवरने पूछवा लाग्या के,भाई छाणां अमने आपशो के? कुमर बोल्यो के, भाई एम ते कांई थतुं हशे! पोतानो माल बीजाने कोइ रीतें अपाय नहीं. त्यारें ते बिचारा निराश थया, अने काचुं धान्य खावा लाग्या. ते थी पेटमां डुःखवा मांड्युं. अने रोग उत्पन्न थवानो संभव थयो. त्यारें फ री पूछवा लाग्या के, भाई! थोडाक छाणां वेचातां आपशो? जे कीम्मत मागो, ते अमें आपीयें. कुमर बोल्यो के, एक सरतथी हुं छाणां आपुं. जे वां छाणां हुं तमनें आपुं, तेवां पाछां हुं लेउं! ते तेमणें कबूल कर्युं,अने

ते प्रमाणें खत लखी आप्युं. तेमां साथेंना बीजा माणसोनी साक्षीयो न खावी. पछी जे न्हाना नावमां रत्नरहित छाणां हतां ते गणी आप्यां. तेथी वाणीया खुशी थया. अने कहेवा लाग्या के,जो छाणां हतां तो अमें जीवता रह्या, नहिं तो मरी जात. माटें तमो अमारा उपगारी थया छो. कुमारें कह्युं के, भाई उपकार शानो ! जेवां दीधां तेवां लेशुं. पछी दैवयागें सारो पवन नीकल्यो, तेथी वहाणो रस्ते चढ्यां. केटलाएक दिवसें क्षेमकुशलें पोताना नगरमां आवी पहोता. वहाणोथी उतरी वधामणीये वधामणी दीधी. व्य वहारीया सामे आव्या. तेमने सारी रीतें मल्या. सागरश्रेष्ठीने वधामणी दी धी. ने कह्युं के, तमारां वहाणें अमारा जीवो बचाव्या छे. जो तमारा वहा णमां छाणां भरेलां न होत तो अमें बधा मरीजात. रस्तामांज आडबंदरें वहाण नांगरी, त्यांज ऊतरी छाणां थापीने भरी लाव्यानुं अमारा प्रार ब्धेंज आरामनंदनने सूचव्युं होय नहिं? एम भासे छे. बीजुं कांई कमायो नहीं तो शुं थयुं ! क्यां तमारा घरमां कांई कोइ वस्तुनी कमती छे ! एवां मर्मनां तथा चानकनां तेउनां वचनो सांभलीने सागरश्रेष्ठी मनमां कांईक खिन्न थयो. तेथी ते कुमरनी सामे आव्यो नहीं.

पछी बधा सफर करी आवेला वाणीयाउ पोतपोताना सामर्थ्य प्रमा णें भेट लईने प्रथम लक्ष्मीधर राजाने मलवा गया. तेउनी साथें आराम नंदन आव्यो नहीं, पाछल रही गयो. बधा भेट मूकीने राजाने मल्या ते थी राजा अति हर्षित थयो. अने तेउना मालनुं दाण उंछुं कर्युं. एटलामां पेलो कुमार पण एक अति उत्तम रूमालमां छाणां नाखीने राजाने भेट देवा आव्यो. तेवारें बाहेर पोलीयाने कह्युं के, राजाने खबर करो के, आ रामनंदन आपने मलवानी चाहना करे छे ? ते वात पोलीयायें राजाने जइ कही. राजायें तुरत तेडावी लीधो. त्यारें तुरत आवीने प्रथम पहेलां छाणांनी चंगेरी राजानी पासें भेट दाखल राखी. राजायें पासें लेई जोई तो मांही छाणां दीठामां आव्यां. ते जोइने लोक सर्व हसवा लाग्यां अने राजायें विचार कर्यो के ए पोतें माहाबुद्धिमान् छे. माटें भेट दाखल छाणां मू कवानुं कांइ प्रयोजन होवुं जोइयें. कह्युं छे के, "निरर्थं न प्रवर्त्तेत,जनो बुद्धि मतांवरः ॥ प्रदोहको नृपस्याग्रे, मृद्रुपायनमातनोत् " भावार्थः—श्रेष्ठ बु द्धिमान् पुरुष जे छे, तेउनी प्रवृत्ति प्रयोजन विना होती नथी. एवो विचार

करीने राजायें पेली रूमालनी गांसडीमांथी एक ढाणुं काहाड्युं, अने ते कुमारनेज आप्युं, कुमारें राजी थइ लइने ते ढाणुं नांग्युं. तेमांथी एक रत्न नीकल्युं. ते अमूल्य रत्न जोइने राजा चमत्कार पाम्यो कुमरने घणुं सन्मान दीधुं अने कह्युं के हे कुमरजी महारी पुत्री तमें परणो. कुमरें कह्युं हवे परणीश. एम कही पढी अनुक्रमें सर्व ढाणां नांगी देखाड्यां. ते प्रत्येकमां एक एकथी अधिक किम्मतनां रत्नो नीकल्यां. ते बधां राजाने अर्पण करीने कुमर बोल्यो के, महाराजा महारी ऊपर कृपा करीने मारो माल जोवाने मारी सार्थे दरियाना कांठा ऊपर पधारो. ए बोलवुं मान्य करीने राजा समुद्रना किनारापर गयो. त्यां ढाणानी राशिमांथी घणांक ढाणां नांगी देखाड्यां,तेउमां एक एकथी अधिक किम्मतवालां एवां रत्नो नीकलवा लाग्यां. एम बधां ढाणां रत्नोवालां देखीने राजा अति अजायब थयो. अने तेनी सार्थे पेला वाणीयाउ पण चक्क बनी गया. तेउनां मुख कालां थइ गयां. मनमां चिंता करवा लाग्या के, आवां ढाणां ते आपणे क्यांथी आपशुं ! आपणें जे आनी मश्करी करता हता,ते एक कोरें रही अने उलटी आपणी मश्करी थइ. माह्या माणसें कह्युं बे के कोइनी ऊपर हसवुं नही, ते शीखामण आपणे प्रत्यक्ष पाम्या बैयें, हवे आपणी शुं वले थशे ?

पढी पेला कुमरें राजानी आज्ञा मागीनें ते बधां ढाणामांथी रत्नो कहाडीने सागरश्रेष्ठीने घेर मोकलावी दीधां. ते जोइ सागरश्रेष्ठी अति आनंदित थयो. कह्युं बे के, 'जरथी जबर पण जीताय' तेम राजा तथा सागरश्रेष्ठी ए बन्ने वश थइ गया. गाममां महोटो अधिकारी सागरश्रेष्ठी जाणी वाणीयाउनां पोतीयां नीकली जवा लाग्यां,अने घेलाना जेवा बनी गया. बेवट ना इलाज थइ सर्वे मलीने सागरश्रेष्ठीने घेर आव्या. अने अति करगरीने कहेवा लाग्या के, अमें आरामनंदन पासेंथी ढाणां लइने तेथी रसोइ करीने बाली नाख्यां अनें जे राख थइ ते समुद्रमां नाखी दीधी. तेमां कांइ रत्नो अमने दीठामां आव्यां नहिं. तेंम बतां अमें लखी आप्युं बे के,तमारां बीजां ढाणांनां जेवांज ढाणां पाढां आपवां, ते पालवुं जोइयें. अने एटली अमारी शक्ति नथी. बीजो अमारो कोइ इलाज चालनार नथी,मात्र अमारुं जे कांइ माल मता वगेरे बे, ते जोइयें तो तमें लइ लियो. अमें राजी खुशीथी आपवाने तैय्यार बैयें. पण तेवां ढाणां अमें क्यांथी

आपीयें? तेम छतां जेम आपनी मरजी होय तेम करवाने अमें हाजर छैयें. एवां अति दीनतानां वचन सांभळीने कुमर बोल्यो के,भाइयो हुं तमने म्हारुं लेणुं माफ करुं छुं.हवे सुखें जइने तमे तमारो माल उतारो,अने तेनो विक्रय वगेरे करीने पोताना कृत्यमां लागो. हुं मारुं लेणुं कोइ दहाडे तमारी पासें मागनार नथी. तमें जीवता रह्या, तेथी जे पुण्य कर्म बंधायुं, तेज मारा लेणामां मनें मळ्युं. एम हुं मानी लइश. एम कहीने पेलुं लखत फाडी नाख्युं. पान सोपारी मंगावी बधाने आपीने विदाय कर्या. तेथी बधा हर्षित थइ कुमारनी कीर्त्ति गाइने पोत पोताने घेर गया.

आरामनंदन विचार करवा लाग्यो के, आजे घणुं द्रव्य मने मळ्युं छे, तेनुं मारे शुं करवुं! कह्युं छे के, "दानं भोगोनाश,स्तिस्रोगतयो भवंति वित्तस्य॥ यो न ददाति न भुंक्ते, तस्य तृतीया गतिर्भवति." भावार्थः—वित्त एटले धन तेनी त्रण गति थइ शके छे. दान, भोग अथवा नाश. तेमां पेहेला बे प्रकार नहीं कर्याथी त्रीजो नाश नामनो प्रकार थाय छे. माटे शुभकार्यने अर्थे द्रव्य खरचवुं, तेज योग्य छे. पछी चैत्योपाश्रय, साधर्मिवात्सल्य, साधुजन पोषण, बंदीजनमोचन, दीनोद्धार, तथा याचक जन संतोष, इत्यादिकने विषे लक्ष्मीनो उपयोग करवा लाग्यो. भलें दिवसें घणो महोत्सव करी राजकन्या परण्यो, तेनीसाथें सात भूमिना आवास मांहे क्रीडा करतो रहे छे अमुलिक रत्न वटावी खरचीने यश लीये छे.

एम करतां कोइ एक समयें अर्द्धरात्रिने विषे निद्रामां सूतो हतो तेमां तेने एक स्वप्न लाधुं, तेमां तेणें एवुं जोयुं के,लक्ष्मीपुर नामना नगरमां नर्मदा नदीना तटनी उपर पद्मावतीयें अग्निनी चिता करावी अने तेमां पेसवानी तैय्यारी करी छे. एटलामां जागी उठ्यो. तेवारें माहा दुःखने पामीने चिंतवना करवा लाग्यो के,मुजने पुष्पनुं कंचुक मळ्युं नहीं, ते तो रह्युं, पण उलटो पद्मावतीनो वियोग थयो. ते विरहथी दुःखी थइ थकी तेणें अग्निमां प्रवेश तो नहिं कर्यो होय? जो एमज थयुं होय तो महारुं जीवितव्य शा कामनुं छे? आटला दिवस सुधी ते खचित जीवती रही नहिंज होय! तेणें अग्निनी चितामां पडीनेज प्राण खोयां हशे, एमां संशय नथी! मनें स्वप्न लाधुं ते खरुंज होवुं जोइयें. जो एम थयुं होय तो हुंज खरेखरो स्त्रीघातो थयो छुं. तेनुं मने पाप लागुं! हवे मने पण शरीर राखीने शुं

करवुं ठे? तेथी कोइ पर्वतने विषे अनशन व्रत लइने प्राणनो त्याग करवो. एवुं चिंतवी राजा अने पोतानी स्त्री तथा सर्व परिवार पासेंथी शीख मागी, राजायें कह्युं इहां सुख मूकीने केम जाउ ठे? तमें कहो ते अमें आपीयें! कुमरें कह्युं के हाल म्हारे घेर जवानी उत्कंठा ठे माटे रजा आपो हुं फरीने तरत इहां आवीश. पठी सागरश्रेष्ठीनी पासें घेर जवानी रजा लइ विदाय थइने एक पर्वत ऊपर गयो. त्यां एक योगी मंत्र साधना करतो बेठेलो दीठो. तेम योगी पण कुमरने जोइने विनय प्रतिपत्ति करीने कहेवा लाग्यो के, मारा नाग्यने लीधेज तुं आहीं आव्यो ठो, में पूर्वें मंत्रसाधना करी पण उत्तरसाधकविना सर्वे निःफलथई हवे जो उत्तर साधना तुं करे, तो म्हारो मंत्र, साध्य थाय.

एवुं ते योगीनुं बोलवुं सांनलीने कुमारें विचार कर्यो के, मरवाने अर्थें तो हुं अहीं आव्योज ठुं, तेम करतां परोपकार कांइ थाय तो सारुं ठे. परोपकार करवो ए मनुष्य मात्रनो धर्म ठे. पठी योगीना कहेवा प्रमाणें उत्तरसाधकपणुं कबूल कर्युं. त्यारें योगी एक अग्निकुंममां होम करवा लाग्यो अने कुमारने कह्युं के जो नूत, प्रेत, पिशाच तथा वेतालादिक कोई विघ्न करवा आहीं आवे, तो तेनुं तुं निवारण करजे. कुमार हाथमां खड्ग लईने चोकी करतो रह्यो. एटलामां एक वेताल त्यां आव्यो, तेनी सामें कुमार खड्ग लईने दोड्यो. बन्ने बाथोबाथ आव्या. कुमारें वेतालने नीचें नाखी दीधो. अने साहसिक थइ वेतालनी ऊपर चढी बेठो वेताल वश थई रह्यो. अने कहेवा लाग्यो के, हुं ताहारुं पराक्रम जोईने राजी थयो ठुं. माटें कांई वर माग, कुमर बोल्यो के ज्यारें हुं तनें संनारुं, त्यारें आवजे ते वात कबूल करीने वेताल जतो रह्यो. पठी कुमर योगीनी पासें जई ऊनो रह्यो. ते समयमां योगीनी पासें मंत्राधिष्ठायक देव आवी कहेवा लाग्यो के, जे तुं कहे, ते करुं! योगी बोल्यो के, जे पुरुष आ अग्निना कुंममां प्रवेश करे, तेने सोनानो करो. ते तेणें कबूल कर्युं. त्यारें रातां कणेरनां फूलोनी माला ते कुमरना गलामां घाली तथा रतांजलिना रसना ठांटा नाख्या. अने कहेवा लाग्यो के, आ कुंमने तुं प्रदक्षिणा कर. त्यारें शुद्धसम्यक्त्ववान् जे पेलो आरामनंदन, ते नवकार मंत्रनुं स्मरण करतो थको प्रदक्षिणा देवा लाग्यो. तेनी पाठल योगी पण प्रदक्षिणा देतो चाल्यो.

लाग फाव्याथी योगीयें कुमरने जपाडीने पेला कुंममां नाखी दीधो. तेवोज पोताना साहसपणाथी ते फाल देतो बाहिर आवी पड्यो. अने ते योगीने जालीने अग्निना कुंममां नाखी दीधो. के तत्काल ते योगी सोनानो पुरुष बनी गयो. कुमारें सम्यक्त्व अने नवकार, जापनुं महात्म्य देखीने धर्म जपर अति आस्ता करी. कह्युं ढे के, "वने रणे शत्रुजलाग्निमध्ये, महार्णवे पर्वतमस्तके वा ॥ सुप्तं प्रमत्तं विषमस्थितं वा, रक्षंति पुण्यानि पुरा कृतानि" नावार्थः—वनमां, युद्धमां, शत्रुउमां, जलमां, अग्निमां, महार्णवमां, पर्वतना मस्तकने विषे, निद्रामां,प्रमत्त अवस्थाने विषे महासंकटनी अवस्थामां,पूर्वें करेलां कर्मो रक्षा करे ढे. पढी ते कुमार सुवर्णना पुरुषने त्यांज दाटीने त्यां निशानी करीने दक्षिण दिशा तरफ चालतो थयो. रस्तामां जतां एक ठेकाणें एक योगीनी चेली, पोतानी बीजी चेलीयोने कहे ढे के, तमने आटली बधी वार क्यां लागी ? ते चेलीयो बोली के स्वामिनि ! अमें रस्तामां एक कौतुक दीतुं, त्यां अमने वार लागी. वली ए वात पण आपने सांनलवा जेवी ढे. कह्युं ढे के, "वार्त्ता च कौतुकवती विषदा च विद्या, लोकोत्तरः परिमलश्च कुरंगनाजेः॥ तैलस्य बिंडुरिव वारिणि डुर्निवार,एतत्रयं प्रसरतीति किमत्र चित्रम्" पढी पेली गुराणी योगिणी तथा एक कोरें जनो रहेलो कुमर ए बन्ने सांनले ढे, अने पेली चेलीयोमांनी एक चेली बोले ढेः—के आ जंबुद्वीपमांना नरतक्षेत्रमां वैताढ्य नामनो पर्वत ढे. तेनी दक्षिण श्रेणीयें एक मंगलावती नगरी ढे तेनो विद्युन्माली नामनो विद्याधर राजा अष्टापद पर्वत तरफ जतो हतो. चालतां चालतां ह्रीपुर नामना नगरमां जई पहोतो. त्यां एक उद्यानने विषे महेंद्रराजानी स्त्री रतिसुंदरी पोतानी सखीयोनी साथें जलक्रीडा करती हती, तेने जोवा सारु विद्युन्माली विद्याधर एक महोटा वृक्ष जपर चडीने बेगे. अने तेउनी सर्व रमत जोया करे ढे, एटलामां रतिसुंदरी पोतानी क्षेमकरी सखी प्रत्यें पूढवा लागी के, मारा धणीने फूलनुं कंचुक मल्युं के नहीं? क्षेमकरी बोली के तारा पुण्यना योगें मल्युं. रतिसुंदरी बोली के,केम प्राप्त थयुं? क्षेमकरी बोली के, चोरोयें नगरमां चोरी करी, ते बधा पकडाया. तेउने बांधीने कोटवाल राजानी पासें लई गयो. राजायें न्याय करीने तेउनां घर लूटी लेवानुं ठराव्युं. अने कह्युं के, जे माल नीकले ते माल धणीयोने आपो, तेउयें पोतपोतानो

माल उलखीने लइ लेवो. एवी राजानी आज्ञाथी ते चोरोनां घर लूंटतां तेमां पुष्पनुं कंचुक नीकल्युं. ते सेवकें राजाने आणी आप्युं. राजा जोइने राजी थयो. ते कंचुक राजायें तारा सारु राख्युं छे. बीजी कोइ स्त्रीने आप्युं नथी. एवी वात सांभलीने रतिसुंदरी कहेवा लागी के, क्षेमंकरी सखी तुं जईने राजानी पासेंथी ते कंचुक लइ आव. जेथी ते कंचुक पहेरीने हुं राजानी पासें जाऊं, अने तेना अर्द्धासने जइ बेसुं. ए वात मानी, ते क्षेमंकरी राजानी पासें गइ अने जइने तेनी पासेंथी पेलुं कंचुक मागी लई राजी थती पाछी आवे छे. एटलामां विद्युन्माली विद्याधरें ते कंचुकने अधर हाथमांथी ऊचकी लीधुं. अने पोताना घेर लइ जइ पोतानी मानीती स्त्रीने देवा लाग्यो. ते जोइने बीजी स्त्री बोली के, ए कंचुक जो एने आपशो,तो हुं अग्निमां बलीने मरीश. पछी ते बन्ने शोक्यो कंचुक सारु वढवा लागी. त्यारें पेला विद्याधरें विचार्युं के हमणां ए बन्नेमांनी एकेने कंचुक मलवुं जोइतुं नथी. एम कर्याथी कजीयो मटशे. एवो संकेत करी ते कंचुक लइ कोइ छाने ठेकाणे राखीने पोतें अष्टापद पर्वत तरफ तीर्थयात्रा करवा गयो. ए आश्चर्य जोवाने अमें ऊभी रहीयो हती. तेथी वार लागी. ए अमारो अपराध थयो ते क्षमा करो. एटली वात पेली चेलीयें कही ते आरामनंदन कुमरें सांभली लीधी. अने कंचुकनी खबर मली तेथी खुशी थयो. पण मनमां तर्क थयो के मारी स्त्रीयें अग्निमां प्रवेश कर्यो होय तो कंचुकनी शोध मलेली शे कामें आवे ! ! पछी मनमां निश्चय कर्यो के जो एम थयुं हशे तो मारे पण योगीना कुंडमां बली मरवुं. हवे शोध केम मले के, पद्मश्री बली मुई के जीवती छे ! एनी शोध करवा नगरमां तो जवुं न जोइयें. केम के, त्यां गयाथी जो जीवती होय, तो तो ठीक, पण जो मरण पामी गइ होय तो पाछा फरवुं मुश्कील थाय. अने त्यां प्राण त्याग पण थाय नहीं. ने आखो जन्म दुःखमां कहाडवो पडे, ते आर्तध्यानथी धर्मनी साधना पण थाय नहीं, ने पछी अतोभ्रष्ट ने ततोभ्रष्ट थया जेवुं बने. माटे मने जे स्वप्न लाधुं, ते खरुं होवुं जोइयें. नहिं तो एवुं स्वप्न केम लाधे. मारी स्त्रीनी सार्थे मारी तीव्र प्रीति हती, तेम तेनी पण माराविषे तीव्र प्रीति हती, तेथीज तेनी प्रीतिना पुद्गल मारा अंतःकरणमां प्रवेश करीने स्वप्न रूपें थया. एवुं खचीत मानवुं जोइयें छेयें.

एवो निश्चय करीने अग्निना कुंडनी पासें ते कुमर आव्यो, अने नवकार मंत्र जपवा लाग्यो. एटलामां एक पासेंना वृक्षमांथी एक लेख ते कुमरनी पासें आवी पड्यो. ते लइने वांचवा लाग्यो. स्वस्तिश्री लक्ष्मीपुरथकी श्रीविक्रमराजा यथास्थाने आरामनंदनप्रति आलिंगन होजो. तारी स्त्री पद्मावती तारा वियोगथी अग्निमां प्रवेश करतां हतां में आठ वर्षनो अवधि करीने जीवती राखी छे. त्यारथी तारी शोध करवाने ठेकाणे ठेकाणे शुक तथा वानरादिकोने मोकल्या छे. माटें जो आठ वर्षमां तुं आवी पोहोंचीश नहीं, तो तारी स्त्री अग्निमां प्रवेश करशे. तेनो दोष अमारे माथे नथी. तेथी जेम बने तेम जलदी घेर आव" ए प्रमाणें वांचीने कुमर मनमां विचार करवा लाग्यो के, स्वप्ननो अर्थ अने आ पत्रनो अर्थ मलतो आव्यो खरो, पण आकाशमांथी लेख केम पड्यो! एवी आशंकाथी ऊपर जोवा लाग्यो, एटले एक वानर दीठामां आव्यो. त्यारें ते नीचें आवीने पगे लाग्यो. अने सघलो समाचार मुखथी कही संजलाव्यो. त्यारें तेनी पाकी खात्री थइ, पण कंचुक विना ठाले हाथे जवुं ते सारुं नहीं. जो कंचुक साथें लइ जाउं, तोज खरी खूबी कहेवाय! एवो निर्धार करी एक वृक्षनुं पत्र लइने तेनी ऊपर एक वल्लीना रसवडे लख्युं के, " मने तमारुं पत्र पहोच्युं. ते वांचीने घणो संतोष थयो छे. हवे हुं शीघ्रज आवी पहोचीश. पद्मावतीने स्वस्थ करी राखजो. अने महारा प्रेमें करी जुहार अंगीकार करजो " एवुं लखी ते पत्र पेला वानरने आपीने विदाय कर्यो, अने पोतें कंचुक लेवाना हेतुथी त्यांथी चालतो थयो.

मार्गमां जतां एक ठेकाणे केटलाएक व्यंतरो वानराउनां रूप धारण करीने रमता हता, ते तेणें दीठा. तेउमां कोइ राजा थयो छे, कोइ मंत्री बन्यो छे, कोइ आमात्य थयो छे, कोइ सचिव थयो छे, कोइ सेनाधिपति थयो छे, कोइ स्वार थया छे, कोइ पदाति थया छे, तथा कोइ जासूद प्रमुख राज्य चर्या करी रह्या छे. एवा समयमां एक अनुचरने राजायें आज्ञा करी के सूतारनी पासें जइने काष्ठना मयूरो घडावी लाव. ते काम ते त्वराथी जइ करी आव्यो, अने राजाने जणाव्युं के माहराज! आपनी आज्ञा प्रमाणे मयूरो सर्व तैय्यार छे. राजायें तरत सर्व मयूरो पोताना मंत्री प्रमुखने वेहेंची आप्या अने एक सारो मोर जोइने पोतें राख्यो. पछी ते मोर ऊ

पर बेसीने पोताना सैन्य सहित वैरीने जीतवाने चाल्यो. तेउनी साथें आ रामनंदन पण कौतुक जोवाने नीकल्यो. चालतां चालतां नीलमुख वानरना वननी पासें आवी पहोच्या. त्यारें मोरनी स्वारीयें जे कालमुख वानर चडी आव्यो हतो, ते पोताना सैन्यसहित वाहनथी नीचें ऊतरी पायदलरूप तैय्यार थयो अने पेला काष्ठना मोरो एक कोरें राखी मूक्या. ए लश्करने जोईने नीलमुख वानर सामे चडी आव्यो. अने पोतानी साथेंना सैन्यने व्यूहरचनायें करी सज्ज करि राख्युं. पछी परस्पर युद्ध थवा मांड्युं. वानराउ चीचीरीयो करी करी तथा दांत घसी घसीने एकबीजाने मारवा लाग्या. तेउने सेनाधिपतियो हिम्मत देवा लाग्या. एम घणा कालसुधी युद्ध थयुं, त्यारें बन्ने सैन्योना वानराउ अति थाकी गया. तेथी केटलाएक नासवा लाग्या, अने केटलाएक शिथिल थई गया. एवुं जोईने कालमुख तथा नीलमुख ए बन्ने शत्रुउ सामसामे आवी गया, अने आपसमां लडवा लाग्या. तेमां कालमुख वानर जे प्रथम घणुंज अभिमान करीने सामे चाली आव्यो हतो, तेने नालमुख वानरें युद्धमां पराजय कर्यो. त्यारें जेम वायुयें करी तृणो विखराइ जाय, तेम कालमुखनुं लश्कर वीखराई गयुं. बधा वानराउ ज्यां त्यां नासवा लाग्या. एवा टांकणामां कुमर, पेला मोरोमांथी एक मोर लईने तेनी उपर बेशी आकाशमार्गे करी वैताढ्य पर्वतनी ऊपर मंगलावती नगरी प्रत्यें गयो. त्यां अवसर जोईने विद्युन्माली विद्याधरना मालीयामां चोथीभूमिना गवाक्षें सुवर्णमय पर्यंक ऊपर पडेलुं कंचुक दीठुं, ते उपाडी चालती वखतें महोटे सादें पोकार करी कहेवा लाग्यो के, हुं आरामनंदन आ महेलमांथी पुष्पनुं कंचुक लई जाऊं छुं. जे वीर सुभट होय ते मारी पाछल बेशक आवे. एम कही मयूर वाहन उपर चडीने पोताना नगर तरफ जवा नीकल्यो. एटलामां विद्युन्माली विद्याधरनी स्त्रीयोयें बुंब करी के, घरमांथी कोई चोर पुष्पनुं कंचुक चोरी लेई जाय छे. तेने पकडीने तेनी पासेंथी ते कंचुक लई लियो. ते सांभलीने कटक एकठुं थयुं, तेने साथें लईने ते बन्ने स्त्रीयो कुमरनी पाछल लागीयो. कुंवरने आवी घेर्यो, त्यारें कुमरें विचार कर्यो के हवे शुं करवुं ! पोतानां कर्यां पोताने नड्यां. जो में जाण कर्युं न होत तो आवुं बन्युं न होत. पण ते सारुं कहेवाय नहीं, ने चोरमां खपीयें. माटें जे थयुं ते ठीकज छे. सारुं

नरसुं थवुं कर्मना हाथमां छे ! एटलामां पेला वेतालनी वात याद आवी. तेथी तेनुं स्मरण कर्युं के, ते आवी पासें उनो रह्यो, अने पूछवा लाग्यो के शुं आज्ञा छे ? ते फरमावो. त्यारें आरामनंदने पोतानी बधी हकीगत संन लावीने कह्युं के, जो आ कंचुक हवे जलदी मारी स्त्रीने जइ नहीं आपुं,तो ते चितामां पडीने पोताना प्राणनो त्याग करशे. माटें हुं आ आपी आवुं ति हांसुधी आ लश्करने अटकावी राख. एवुं सांजलीने वेतालें कह्युं के, में पण आवतां मार्गमां एक नगरनी बाहेर चिता खडकेली जोइ ते ए कारण सरज हशे माटें तमें जलदी जाउ. हुं लश्करने अटकावी राखुं छुं.

एवुं वेतालनुं बोलवुं सांजलीने कुमारने वधारे चिंता उत्पन्न थई, केम के, आठ वर्षनो अवधि पूरो थवा आव्यो हतो. पछी कुमर उतावलो चालतो थयो, हवे त्यां पद्मावती पणराजाने कहे छे के आठ वर्ष पूरां थयां तो पण मारो पति आव्यो नहीं,हवे चितामां हुं प्रवेश करीश. एम कही सर्व जनोने यथायोग्य रीतें मलीने तथा पंचपरमेष्ठिनुं स्मरण करीने ते चितामां आवी पडी. एटलामां आकाश मार्गे मयूरना वाहन उपर बेठेलो कुमर आवी पहोतो, अने ते मयूर तथा कंचुकने एक कोरें मू की नमस्कार मंत्र जणी कहेवा लाग्यो के, मारी स्त्री पद्मावती जो सुशी ल होय अने जो शीलनो महिमा होय तो अमे बन्नेने कल्याणनी प्राप्ति थजो. एम कही तेणे चितामां प्रवेश कर्यो. ते समयें देव सहायथी ते प्रज्वलित अग्नि शीतल पाणीना जेवो थई गयो. त्यारें जेम पाणीमांथी माणस बाहिर नीकले,तेम ते बन्ने स्त्रीपुरुष, बाहेर नीकल्यां. एवुं कौतुक जोइने रा जा प्रमुख सर्व नगरनां लोको अति हर्षने पाम्यां; अने आनंदना निशाण वाग्यां. हवे एज समयमां पेलुं कटक वेतालनी साथें युद्ध करतुं करतुं,ए नगर पासें आव्युं. तेने जोतां कुमरें अग्निमां प्रवेश कर्यो तेथी तेउयें जाण्युं के अ माराथी मरीने आम कर्युं जणाय छे. तेथी त्यां पडेलुं ते कंचुक ते विद्याधर नी स्त्रीउयें उपाडी लीधुं पण एटलामां तो अग्नि शीतल थई गयो ने ते बाहेर जेमना तेम नीकल्यां,ते जोईने तेउ विस्मय थया. एवो शीलनो महिमा जोई बधा विद्याधरो तथा मनुष्यो आश्चर्यने पाम्या. कुमरें राजाने आवी नम स्कार कर्यो. माता पिताने आवी पगे लागो. पद्मावती पण सासु ससराने

पगे लागी. तेउयें कह्युं के "हेवधू ! पुत्रवती नव" एवो आशीर्वाद दीधो. सर्व लोकोने अति हर्ष थयो, जिनधर्मनो महिमा प्रगट थयो.

पछी ते विद्याधरीयोयें कुमरने सर्व वृत्तांत पूछयाथी तेणें अथथी ते इति सुधी सर्व वृत्तांत कही संजलाव्युं, तेथी ते कंचुकविषे कदाग्रह मूकी दइने पोताने हाथे पद्मावतीने ते कंचुक पहेराव्युं. पछी राजा, राणी, कुमर तथा पद्मावती प्रमुख सर्व नगरमां गयां. याचक लोकोने घणां दान दीधां, परिजन प्रमुख सर्व जनोनें यथायोग्य पहेरामणी प्रमुख आप्यां. बन्ने विद्याधरीउयें पद्मावतीने बेन करी मानी. ते विद्याधरीयोने तेउना लश्कर सहित केटलाएक दिवस सुधी राखी, सारी रीतें मिजमानी प्रमुख करीने जेम बेनने सासरे मोकलीयें, तेम विदाय करी. पछी आरामनंदनें वेतालने हाथे पेलुं सोनानुं पुतलुं मंगाव्युं. ते शुजमुहूर्त्तें गृहनेविषे लावीने राख्युं, ने पेला वेतालने रजा आपी. हवे ते सोनाना पुतलानो उपयोग एवो कर्यो के, जिनजुवन, जिनबिंब, बिंबप्रतिष्ठा, जीर्णोद्धार, साधु, साध्वी, श्रावक तथा श्राविका लक्षण चतुर्विध संघनुं पोषण, साधर्मिक वात्सल्य, प्रमुख श्रेष्ठ कार्यमां इव्यनो खर्च कर्यो.

हवे कोइ एक समयने विषे ते नगरनी बाहिर उद्यानमां ज्ञानजानु नामना आचार्य आवी समवसर्या. तेनी उद्यान पालकें आवी वधामणी दीधी. तेने राजायें पोताना राज्य चिन्ह राखीने बाकीनां जे अंग ऊपर आजूषण पहेर्यां हतां,ते सर्व वधामणी देवा बदल आपी दीधां. पछी राजा, राणी, कुमर, तथा पद्मावती प्रमुख सर्व जन महा आमंबरथी वांदवा गयां. पंचाजिगम साचव्या, गुरुने वांदी करीने यथा स्थानकें बेठां. आचार्यें धर्मदेशना देवा मांमी. ते सांजलीने राजा अने राणी प्रतिबोधने पाम्यां अने महोटे आमंबरें दीक्षा लीधी. आरामनंदनने राज्य दीधुं पछी कुमार, पेला सोनाना पुतलाना योगथी जिनशासननी उन्नति करवा लाग्यो.

एकदा समयें पद्मावतीयें स्वप्नमां पूर्ण कलश दीठो. ते वृत्तांत आरामनंदनने तेणें कह्युं. त्यारें तेणे कह्युं के हे चतुरा ! तुने पुण्यवान् पुत्र थशे. अनुक्रमें दिन पूरा थयाथी पुत्रनो जन्म थयो. ते समयें जन्ममहोत्सव कर्यो. अने तेनुं नाम पूर्णकलश राख्युं. वली कोइएक समयें आरामनंदनना सम्यक्त्वनी परीक्षा लेवाने अर्थें कोइएक देवांगनायें पूर्णकलशना अंगमां

ज्वर उत्पन्न कर्यो. तेथी ते माहापीडाने पामीने व्याकुल थयो. तेने जोइ ने कुमर तथा पद्मावती अति दुःख करवा लाग्यां. ज्वरनिवृत्तिना घणा उपाय कर्या, पण कोइ उपाय लागे नहीं. एवामां एक मंत्री आव्यो, ते णें एक मंमल मांम्युं. अने एक कन्याने बेसाडी पूछवा लाग्यो. ते कन्या ना मुखद्वारा ते देवता कहेवा लाग्यो जो आरामनंदन निष्कपट भावें यक्ष नी पूजा करे, तो आ बालकने समाधानी थाय. नहीं तो कुमरनुं मरण थशे. त्यारे आरामनंदन बोल्यो के, गमे तेम थाय, पण हुं तो सर्वथा श्री वीतरागदेवनी प्रतिमा विना कोइ बीजी प्रतिमानी पूजा करुं नहिं. देव अरिहंत अने गुरु सुसाधु जे अर्हंतनी आज्ञा पाले छे ते, तथा धर्म अर्हंतनो भांखेलो. ए त्रण तत्त्वनी हुं सद्दहणा करुं. जो सारुं थवानुं हशे, तो एथी ज थशे. नहीं तो दैव करे ते खरुं ! एवुं तेनुं बोलवुं सांभली सर्व लोक क हेवा लाग्यां के, एवो हठ करवो जोइतो नथी. अने यक्षनी पूजा करवी जोइयें के जेथी पुत्र जीवतो रहे. आरामनंदन बोल्यो के सम्यक्त्वना प्रसा दें तथा पद्मावतीना शीलना प्रभावथी सर्व सारुंज थशे. एवुं तमारे निश्चें करी जाणवुं. एवी तेनी सम्यक्त्व उपर दृढता जोइने ते देवांगना राजी थइने कहेवा लागी के, हे आरामनंदन ! तुं धन्य छे. के जेणें सम्यक्त्व नेविषे आवी दृढता करी छे. आटली बधी खटपट तारा सम्यक्त्वनी प रीक्षा जोवा सारु मेंज करी छे. बीजो कोइ भाव मनमां आणवो नहिं. एवुं कही ते देवता अदृश्य थइ गयो. ते जाणे पोतानी साथें ते ज्वरने प ण लइ गयो होय नहिं ? एटले पूर्ण कलशने तरत समाधि थइ. पछी ते पुत्र क्रमें करी महोटो थयो, घणी राजकन्याउने परण्यो, तेउनी साथें ना ना प्रकारना सुखभोग भोगववा लाग्यो. त्यारें आरामनंदन तथा पद्मावती ए बेहु साथें त्रिकरण शुद्धें सम्यक्त्व सहित श्रावकनो धर्म पालीने स्वर्गें गयां. एवी रीतें सम्यक्त्व उपर आरामनंदननी कथा युक्त सम्यक्त्वनुं स्वरूप कहीने त्रीजी गाथानो अर्थ पूरो कर्यो ॥ ३ ॥

हवे सम्यक्त्वनी शुद्धि केम थाय ? तें कहे छे.

॥ तस्स विसुद्धनिमित्तं, नाऊणं सत्तसट्ठि ठाणाइं ॥ पालिज्ज परिहरिज्जच, जहारिहं इछ गाहाउ ॥४॥ अर्थः—ते सम्यक्त्वनी विशुद्धिने निमित्तं तेना (सतसट्ठिठाणाइं के०) सडशठ स्थानक नाऊणं एटले जाणीने तेमां जे पा

लवा योग्य होय ते पालवां, अने जे त्याग करवा योग्य होय ते त्यागवां. जगतमां जीवादिक सर्व पदार्थ मध्यें केटलाएक ज्ञेय एटले जाणवा योग्य छे. तथा केटलाएक उपादेय एटले ग्रहण करवा योग्य छे, अने केटलाएक हेय एटले त्याग करवा योग्य छे. एम इहां ए गाथामां यथायोग्यें छे.

हवे ते सडसठ बोल बे गाथायें करी कहे छेः–

॥ चउ सद्दहण तिलिंगं, दस विणय तिसुद्धि पंचगय दोसं ॥ अठपजावण भूसण, लक्कण पंचविह संजुत्तं ॥ ५ ॥ छविह जयणागारं, छभ्भावण भाविय च सम्मत्तं ॥ छठाणा इय सतस, ठि दंसण भेयं विसुद्धं च ॥६॥ अर्थः–चार वस्तुनेविषे सद्दहणा राखवी,तथा सम्यक्त्वना त्रण लिंग जाणवां, दश प्रकारें विनय जाणवो,सम्यक्त्वनी त्रण प्रकारनी शुद्धि एटले निर्मलता जाणवी तथा (पंचगयदोसं के०) पांच दूषण जेने विषे निवृत्त थएलां छे, एवुं सम्यक्त्व जाणवुं, आठ प्रकारनी सम्यक्त्वनी प्रभावना जाणवी,एटले आठ प्रकारे सम्यक्त्वनुं भावन दीपन एटले आठ प्रकारें सम्यक्त्व दीपावीयें. तथा सम्यक्त्वना पांच भूषण एटले आभरण जाणवां; जेम घरेणायें करी पुरुष तथा स्त्री प्रमुख शोभे छे, तेम ए पांच आभरणे करी सम्यक्त्व शोभे छे. तथा सम्यक्त्वनां पांच लक्षणोयें करी युक्त थवुं ॥५॥

॥ सम्यक्त्वनी छ प्रकारनी जयणा छे,सम्यक्त्वनेविषे छ आगार छे; ते अपवादस्थानक जाणवां. सम्यक्त्व छ भावनायें करी भावित छे; जेम फूलें करी तिल वासित होय छे तेम भावनायें करी सम्यक्त्व वासित करीयें. तथा सम्यक्त्वनां छ स्थानक छे. ए सडसठ लक्षणयुक्त भेदें करीने सम्यक्त्वनी विशुद्धि एटले निर्मलता थाय छे. एवा सम्यक्त्ववान् ते शुद्ध सम्यक्त्वी कहेवाय छे. ते जेम श्रेष्ठ पुरुषने विषे बहोंतेर कलाउ,तथा रुडी स्त्रीनेविषे चोशठ कलाउ दीठामां आवे छे, तेम शुद्ध सम्यक्त्वीमां यथायोग्य रीतें हेयोपादेयपणे ए सडसठ प्रकार दीठामां आवे छे ॥ ६ ॥

हवे प्रकरण कर्त्ता, निष्कपट वृत्तिथी कहे छेः–

॥ पुव्वमुणीण कयाणं, गाहाणमिमाण किंपि भावछं ॥ थोवरकरेहिं पयडं, वुछं संखेवरुइ पछं ॥ ७ ॥ अर्थः–पूर्व मुनियें एटले पूर्वाचार्योयें करेली ए बे गाथाउनो किंपि एटले कांइक संक्षेपें करी भावार्थ एटले रहस्य, जेमां थोडा अक्षरो अने अर्थ घणो ए प्रकारें जेम प्रगट थाय एटले

आगलो सांभलनारो वांचनारो भव्य प्राणी जेम समजे. तेवी रीतें कहुं छुं. एनो हेतु ए छे के, सांप्रतकालना मनुष्योनी घणा विस्तृत अर्थ ऊपर रुचि होती नथी; किंतु संक्षेप अर्थना रुचिवाला घणा छे. तेउने जेवी रीतें पथ्यनी परें हितकारी थाय, तेवी रीतें भावार्थ हुं कहुं छुं ॥ ७ ॥

हवे ए सडसठ भेदमांथी चार सद्दहणाने विवरी देखाडे छेः—

॥ परमठ्ठ संथवो खलु, सुमुणिय परमठ्ठ जइ जण निसेवा ॥ वावन्नकुदिठ्ठीण य, वज्जण मिह चउह सद्दहणं ॥ ८ ॥ अर्थः—प्रथम परमार्थसंस्तव, ते रहस्यार्थनो तत्त्वभूत जे अर्थ तेनुं ग्रहण करवुं संस्तव परिचय करवो. प्रतिदिन तत्त्वज्ञाननो अभ्यास करवो; तेना ऊपर प्रीति राखवी; तथा विरस अर्थनो त्याग करवो; अतत्त्वनो परिचय करवो नहीं. अने तेनी ऊपर रुचि पण राखवी नहीं एटले हंसना जेवी बुद्धि राखवी. जेम क्षीर अने नीर एकठां थई गयेलां होय तेमांथी नीर नाखी दइने हंस क्षीरनुं ग्रहण करे छे; तेम असारनें मूकीने सारनुं ग्रहण करवुं. माटे हंसना जेवुं थवुं पण भूंड तथा कागडाना जेवुं न थवुं, केम के भूंड तथा कागडानो एवो स्वभाव होय छे के, सार वस्तुनो त्याग करीने असार वस्तुनुं ग्रहण करे छे. तेम जे प्राणी श्रीवीतरागदेवने मूकीने सरागी देवनी पूजा प्रमुख करे, तथा सुगुरु मूकीने कुगुरुनी सेवा करे, विनयमूल तथा दयामूल धर्म मूकीने अविनयमूल तथा हिंसामूल धर्मनो आदर करे, ते पुरुष भूंड तथा कागडाना जेवा जाणवा. माटे तेवा न थतां हंसना जेवुं थवुं.

हवे ते परमार्थ संस्तव केवी रीतें प्राप्त थाय? ते कहे छेः—

(सुमुणिय के०) भला जाण्या छे (परमठ्ठ के०) परमार्थ जेणें एवा जे (जइजणनिसेवा के०) यतिजन तेनी निरंतर सेवा करवी यदुक्तं, " तेणं समएणं पासासव विज्जा मुणीपवरा थेरा भगवंतो जाइ संपन्ना कुल संपन्ना बलसंपन्ना रुवसंपन्ना चरित्तसंपन्ना लज्जासंपन्ना लाघवसंपन्ना उयसी तेअसी वच्चंसी जिअकोहा जिअमाणा जियमाया जियलोहा जियनिद्दा जियइंदिया जिअपरिसहा जीवियास मरण भय विमुक्का जावकुंतियावरण भूया विहरंति तहारुवाणं भंते समणाणं माहणाणं पज्जुवासमाणस्स किंफला पज्जुवासणा पन्नत्ता, गोयमा, सवणफला सेणं भंते सवणे किंफले नाण फले. नाणे किंफले विन्नाणे फले. विन्नाणे किंफले प

च्चरकाण फले पच्चरकाणे किंफले संजम फले संजमे किंफले अणेहाय फले अणेहाय किं फले, तव फले, तवे किं फले वोदाण फले, वोदाणे किं फले अकिरियाफले, अकिरिया किं फला सिद्धि पज्जवसाण फला." माटें एवा यति जननी सेवा करवी.

हवे एवा यति जननी सेवा करवानी जावना केम उत्पन्न थाय? तेनो हेतु कहे बे (वावन्नवज्जणं के०) विणगानुं तथाकुदृष्टिनुं वर्ज्जन एटले त्याग कस्याथी एवो जाव उत्पन्न थाय बे. एटले सम्यक्त्व तथा चारित्रथी ज्रष्ट थयेला एवा जे कुमत्यादिक बे तेने विणगा कहीयें, तेउनो त्याग करवो. यतः "जगो देवायवो, वसही आसन्न असइ पुत्तोय ॥ गुरुदेवाणय डुगो, निछम्मा पंच पन्नत्ता." जावार्थः—एमनो संग करवाथी सम्यक्त्व मलिन थाय बे, माटें एउनुं वर्जन करवुं जोइयें, जेम काजलना संगथी सारुं उज्ज्वल वस्त्र पण कालुं थाय, ते पाबुं टले नहीं तेम कुमत्यादिकनी साथें व्यापार, सेठ वाणोत्तरी, विवाह, उजाणी, प्रमुख परिचय करवो नहीं, एकठा साथें बेसवुं नहीं, साथें जवुं आववुं नही, तेनी साथें लेण देण करवी नहिं इत्यादिक बीजो पण कोइ प्रकारनो व्यवहार तेनी साथें करवो नहिं. यडुक्तं "त्यज डुर्जन संसर्गं, जज साधु समागमम्॥ कुरु पुण्य महोरात्रं, स्मर नित्य मनित्यताम् ॥ जावार्थः—डुर्जनना संसर्गनो त्याग कर, साधुनो समागम कर, रात्रि दिवस पुण्य कर, अने सारासारनो विवेक कर. एटलाज कारणमाटें शास्त्रमां कह्युं बे कें, जे कुमत्यादिकनी धर्मकरणीनी प्रशंसा कस्याथी तेउनी वृद्धि कस्या जेवुं थाय बे, अने तेउनी साथें परिचय कस्याथी तेउनी धर्म करणीनुं अनुमोदन कस्या जेवुं थाय बे; माटे कोई प्रकारें तेउनो परिचयज न करवो. कह्युं बे के, "अंबस्सय निंबस्सय डुएहंवि समागयाइ मुल्लाइं ॥ संसग्गीय विणगो, अंबो लिंबत्तणं पत्तो" जेम लींबडाना जाडना संसर्गथी आंबानो विनाश थाय बे, तेम नरसी संगतिथी बुद्धिज्रंश थाय बे. जेम कांजीथी दूध फाटीने विणसी जाय बे, पण कांजीमां कांई वणसवुंज नथी. केम के, ते तो प्रथमथी ज वणसेली बे. तेम नरशी संगतिथी साराने माघ लागे बे, पण नरसानें कांई थतुं नथी. केम के,ते तो प्रथमथीज नरसो होय बे. माटें चतुर लोको विचारी जो जो.

चोथी सदहणा, ते (कुदिठ्ठिणय के०) कुदृष्टि जे मिथ्यादृष्टि जीवो ते नी संगतिनो त्याग करवो. जेम कुमत्यादिकना संगतिनां दूषण कह्यां, ते मज मिथ्यादृष्टिनी संगतिनां पण दूषणो जाणी लेवां. अहीं कोई आशंका करशे के बन्ने सरखी रीतें त्याग करवा योग्य छे, अने बन्नेनां दूषणो पण सरखां छे त्यारें पासछा अने मिथ्यादृष्टिने जुदा जुदा कहेवानुं कारण शुं? तेनो उत्तर आवी रीतें छेः—के अभिनिवेश मिथ्यात्वनो धणी कुमति होय ते कुमतिनो उपदेश देतो थको अनंत संसारनी वृद्धि करे. तथा श्रीतीर्थं कर देव अने सुविहित आचार्य, उपाध्याय, साधु, साध्वी, श्रावक, श्रा विका प्रमुखनी आशातना करे छे, वली वखाण करतां रौद्रअध्यवसायी थाय छे. केम के, ते व्याख्यान करतां प्रसंगें जेथी पोताना मतनुं स्थापन थतुं होय, तेनी अधिक प्रशंसा करे तेथी अनादि कालनो परंपरायें चा ल्यो आवेलो जे सुमतिमार्ग, तेनी उत्थापना थाय, इत्यादि अध्यवसायवा लो अनंत संसार वधारे छे. एमां कांई आश्चर्य नथी. अने मिथ्यादृष्टिने तो श्रीतीर्थंकर, आचार्य, उपाध्याय, साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका प्रमु खनी आशातना करवानो प्रसंग आवतो नथी. तेम छतां जो मिथ्यादृ ष्टियें करीने आशातना करे, तो पण कुमतिमांज खपे. अने तेनीज पंक्तिमां गणाय. तेमज मिथ्यादृष्टिने उत्सूत्र भाषानो पण प्रसंग आवतो नथी, केम के, ते सूत्रोने जाणतो होय तो तेने विषे उत्सूत्र भाषणनो संभव थाय; पण ते श्रीजिनशासनमांहे प्रवीण नथी माटे प्रतिमादिकनी उत्थापना करवाथी ते रौद्र अध्यवसायवाला थता नथी. माटे वावन्न एटले मि थ्यात्वमां व्यापन्न अने कुदृष्टि ए बे जुदा कह्या. ए चार बोलनेविषे सद्द हणा राखे, एटले जे करवा योग्य होय ते करे अने जे छांमवा योग्य अ र्थात् न करवा योग्य होय तेनो त्याग करे ॥ ८ ॥

हवे फरी एहिज परमछसंथवो एटले परमार्थ संस्तवनुं वर्णन करे छेः—

॥ जीवाइ पयछाणं, संतपयाईहिं सत्तहिं पएहिं ॥ बुद्धाणवि पुणस्सव णं, चित्तणं संथवो होइ ॥ ए ॥ अर्थः—(जीवाइ पयछाणं संत पयाईहिं पएहिं के०) संतपदआदि दई सात पदें करी जीवादिक छ पदार्थोनुं स्वरू प जाणवा माटे (पुणस्सवणं के०) पुनः पुनः तेनुं श्रवण करवुं, (बुद्धाण वि के०) बुद्धजे पंमितो होयते पण नवा नवा गीतार्थना मुखथी सांभल्या

करे ते श्रवण करीने तेनुं (चित्तणं के०) चिंतववुं चिंतन अथवा मनन करवुं, अने पछी तेने दृढ धारी राखवुं. एटले फरी ते वीसरी जाय नहीं एवो पाको निदध्यास करवो. बुद्धिमां सारी रीतें ठसावी राखवुं, तेम न कस्या थी ते निष्फल थाय छे,जेम पर्वत ऊपर वर्षा थयाथी ते पाणी तरत सूका इ जाय छे, तेथी कांइ फलनी उत्पत्ति थती नथी,अने मालवानी स्निग्ध चीकणी भूमिनेविषे वर्षाद थइ छतां त्यां पाणी तरत सूकाइ जतुं नथी, तेथी गोधूम, चणक, तथा शेलडी प्रमुख नाना प्रकारनी भली भली वस्तु उ नीपजे, माटें श्रोतायें रुंगरनी जमीन जेवुं न थवुं, किंतु मालवानी ज मिन जेवुं थवुं. के जेथी श्रोताजनने सम्यक्त्वनी उत्पत्ति थाय. पछी ते स म्यक्त्वनी वृद्धि थयाथी देशविरति, सर्व विरति, उपशमश्रेणी, क्षपक श्रेणी तथा केवलज्ञानादिकनी निष्पत्ति थाय. एवी रीतें (संथवो होइ के०) संस्तव थाय छे. हवे मूलमां कह्युं छे के, संत पदादिकें करी जीवादिक छ पदार्थो जाणवा. ते कहे छेः– " संतपय परूवणया, दव्वपमाणं च खित्त फुसणा य ॥ कालो य अंतरं चेव, भावे अप्पाबहुं तहा. " एनो अर्थ क हीयें छैयें. प्रथम सत्यपदनी एटले छतापदनी प्ररूपणा करवी; त्यां जीव द्रव्य छतुं छे केम के ए शुद्ध पद छे माटे सत्य छे. जे शुद्ध पद होय छे, ते सत्य होय छे. जेम घट पद शुद्ध छे एक पदपणामाटे ते सत्य छे. जे एक पद होय ते सत्य होय छे, एटले जेनी साथें बीजुं पद मलीने समा सांत थयेलुं न होय ते एकाकी पद कहेवाय छे, ते सत्य होय छे. जेम 'घट' ए पद एकाकी छे एटले समास वगरनुं छे, माटे सत्य छे. केम के, ए पद सत्य पदार्थने विषय करे छे, अने जे संयोगी पद होय ते सत्य प ण होय छे ने असत्य पण होय छे. जेम के, 'आकाशकुसुमं' ए पद आ काश अने कुसुम ए बे पदोना संयोगथी थयुं छे, माटे असत्य छे, तेमज गर्दभशृंग प्रमुख असत्य पदार्थोने विषय करनारां जे पद होय ते सर्व अ सत्य एटले अछतांज जाणवां, अने राजपुत्र प्रमुख सत्य वस्तुने विषय करवावालुं संयोगी पद पण सत्यज होय छे. परंतु वस्तुने विषय करनारुं ए क पद तो नियमथी सत्यज होय छे. ए युक्तिथी जीवपद एकाकी होवाथी सत्य छे,एवी रीतें अस्तित्व पदनी जे प्ररूपणा करवी ते प्रथम पद जाणवुं.

बीजुं दव्वपमाणं एटले द्रव्यनुं प्रमाण करवुं त्यां जीवद्रव्य अनंत छे,

ते प्रत्येक जीवड्व्यना लोकाकाश प्रदेशना प्रमाणनी परें असंख्यात प्रदेश ले, एटले जीवड्व्य अनंत मली अनंत प्रदेशमय ले, एवी रीतें जीव ड्व्यनुं जे प्रमाण करवुं, ते बीजुं ड्व्य प्रमाण पद जाणवुं.

त्रीजो खित्तफुसणाय एटले क्षेत्रस्पर्शना चौद ते रज्ज्वात्मक जीव लोकनी ले.एटले जीवड्व्य मात्र चौद रज्ज्वात्मक लोकमां ले,पण अलोकमां जीवड्व्य नथी. अथवा ज्यारें केवली नगवान् केवल समुद्घात करे ले, त्यारें आत्मप्रदेशों करी चौद रज्ज्वात्मक जीवलोकनेज स्पर्शे ले, पण अलोकनेविषे स्पर्शना करे नहिं. केम के,आत्माना प्रदेश लोकाकाशना प्रदेशो जेटलाज ले,माटें तेटलीज स्पर्शना थइ शके ले,ए रीतें त्रीजुं क्षेत्रस्पर्शन जाणवुं.

चोथो कालोय एटले कालथी जीवनी आदि नथी, तेम अंत पण नथी, माटे अनादि अनंत ले. ए रीतें चोथुं कालपद जाणवुं.

पांचमो अंतरद्वार ते सर्व जीवड्व्य असंख्यात प्रदेशवाला ले, माटें तुल्य ले. अने तेउना ज्ञानादिक पर्यायो प्रत्येक जीवना जुदा जुदा ले एम ड्व्यनी अपेक्षायें सर्व जीवड्व्य अंतर रहित ले, अने पर्यायोनी अपेक्षायें अंतर सहित ले. तथा बीजे प्रकारें अंतर विचारीयें तो पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, तथा त्रसकाय. ए चारे कायना जीवो असंख्याता उत्पन्न थाय ले, अने चवे तो पण असंख्याता चवे ले,तेमज वनस्पतिकायमां एक समयमां अनंत जीव ऊपजे ने चवे ले. तथा त्रसकायमां एक समयमां असंख्याता जीव उपजे तथा असंख्याता चवे, पण जीव कोइ एक समयमां उपजे चवे नहीं एवो आंतरो नथी एटले विरह काल नथी ॥ यतः ॥ "अत्री अनंता जीवा, जेहिं न पत्तो तसाइ परिणामो ॥ उववज्जंति चयंति य, पुणोवि तत्थेव तत्थेव " ए पांचमुं अंतरद्वार जाणवुं.

हवे लटुं नावद्वार कहे ले. ते नाव ल प्रकारनो लेः– औदयिक, औपशमिक, क्षायोपशमिक, क्षायिक, पारिणामिक तथा सान्निपातिक, एवं ल. तेमां जीवने जीवत्व ले ते पारिणामिक नावे ले.केम के,नव्यजीवो जे ले ते नव्यज ले अने अनव्य ते अनव्यज ले. परंतु नव्य ते अनव्य थाय नहीं,अने अनव्य ते नव्य थाय नहिं. माटें पारिणामिक नावें कहेवाय ले, ए लटुं नावपद जाणवुं.

तथा सातमुं अल्पबहुत्वद्वार ते पृथ्वीकायथी अपूकाय जीवो अधिक,

अप्कायथी तेउकाय जीवो अधिक, तेउकायथी वायुकाय जीवो अधिक, तथा वायुकायथी वनस्पतिकाय जीवो अधिक छे. एम जीवनुं अल्प तथा बहुत्व जाणवुं. एवी रीतें जीवादिक पदार्थो बधा पदो साथें विचारवा अने तेउनो पुनः पुनः जे विचार करवो, तेने परमार्थ संस्तव कहियें ॥ए॥

हवे ए उपर जिनदास श्रावकनुं उदाहरण कहे छेः—

॥ आ जंबुद्वीपमांना जरत क्षेत्रमां एक मथुरा नामनी नगरी छे. तेमां जिनदास नामनो एक श्रावक हतो. ते शेठ श्रावकना एकवीश गुणोयें करी संयुक्त हतो. आठम प्रमुख पाखीने दिवसें पौषध करवामां तत्पर रहेतो. ए शिवाय सर्व प्रकारें धर्मनो एवो तो रागी हतो के, जेवा श्री जगवती सूत्रनेविषे तुंगीया नगरीना श्रावको वखाण्या छे तेना जेवी योग्यता वालो हतो, तेउनी तुल्यना करनारो हतो. तेनी साधुदासी नामनी स्त्री हती, तेमां पण नामना जेवाज गुणो हता. अने तेवाज परिणामो पण हता. ते स्त्रीपुरुष बन्नेयें गुरुना मुखें बार व्रत उच्चारतां घरे चतुःपद बांध्याथी घणो आरंज थाय छे. तेथी तेनां पच्चरकाण लीधां हतां. एवी रीतें शुद्ध सम्यक्त्वनुं मूल जे बार व्रत तेने पालतां छतां सुखें कालक्रमण करे छे.

हवें तेने घेर प्रतिदिवस एक आहिरणी, दहीं, दूध तथा घृत, देवाने आवती हती, तेनी साथें लेवड देवडनो संबंध थयो. कोइएक समयें ते आहिरीणीनी छोकरीना विवाहनो अवसर आव्यो, त्यारें तेने घेर जिनदासें पापड, वडी, फाफडा,सेव, तथा खारां सालणां प्रमुख वस्तु मोकली दीधी. ए वस्तुउ तेने विवाहमां घणी उपयोगमां आवी तेथी विवाह दीप्त थयो अने ते आजीरी पण मनमां घणी संतोषने पामी. विवाह वीती गया पछी पोतानी उपर थएलो उपकार फेडवाने अर्थें ऊजला दूध जेवा त्रण त्रण वर्षना बे वाछडां लईने जिनदासने न कलवा देतां आंगणामां आवी बांधी गइ. पछी ते अत्यंत उज्ज्वल अने गंगाजल जेवा निर्मल वाछडां जिनदासना जोवामां आव्यां अने मनमां जाण्युं के, पेली आहिरिणी प्रत्युपकार करवाने आ बांधी गई छे. हवे एनुं करवुं शुं ! जो ए पशुउने पालुं, तो व्रत जंग थाय,अने जो मूकी देउं तो ए बेहु जीव हलादिकमां जोडाइने दुःखी थाय, तेनुं पाप मने लागे “ इतो व्याघ्र इतस्तटी ” ए न्यायप्रमाणें मने थयुं छे. त्यारें तेना स्त्रीयें कह्युं के,आपणो नियम जंग तो थाय के जो पो

ताना स्वार्थें एउने वहेल गाडा प्रमुखमां जोतरीयें ? परंतु अनुकंपा बुद्धियें पालतां नियम नंग थतो नथी. माटें मूकी देवा करतां दयाबुद्धियें पाल्याथी कांइ दोष नथी. एम तेणे गुरु लाघव विचार करीने बेहु वाछडां राखी ली धां. तेउने पोषवा सारु खावा पीवाने फासु पाणी तथा फासु चारो आपे. एम करतां अनुक्रमें ते अत्यंत श्रेष्ठ बलद थया. जिनदास श्रावक आठम पाखीना चोविहार पोसह प्रमुख करे, धर्मशास्त्र वांचे, तेनी संगतिथी ते बलदो पण श्रावक थया. पोताना धणीनी साथें आठम पाखी प्रमु खना चोविहार उपवास करवा लाग्या. कह्युं छे के, संगत छे ते, महोटी वस्तु छे, यतः ॥ अंजणचरकु संगेण, मालासंगेण सुत्त हियएणं॥ तहा सज्जणसंगेणं, सव्ववत्नुण गोरवं ” जेम चक्कुनी संगतिथी अंजन नेत्रमां वास करी शके छे, मालानी संगतथी सूत्र हृदय ऊपर रही शके छे, तेम सज्जननी संगतिथी सर्वे वस्तुने गौरव आवे छे. पछी ते बलदोनुं एवुं स्व रूप जाणीने जिनदास शेठ तेउनुं पुत्रनी परें वधारे पालण पोषण करवा लाग्यो. कोइएक समयें निंम्बीरमण नामना यक्कनी यात्रा आवी, त्यां लो को पोतपोतानी वहेलोमां बेशीने जवा लाग्या. ते अवसरें जिनदासनो एक मित्र हतो, ते तेने पूछ्याविना वाछडां छोडी गयो. अने तेउने पो तानी वहेलमां जोडीने चोगानमांहे घणा दोडाव्यां. लाकडीथी घणो मार मास्यो, परोणाना प्रहार दीधा, एम निर्दयपणे तेउने घणो संताप कस्यो. तेथी त्रूटा पड्या, पछी तेणें पाछा आवी आंगणे गमाणमां बांधी मूक्या, अने पोतें चालतो थयो. जिनदास शेठ आवी जूवे छे तो बलदोना अंग ऊपर रुधिर वही रह्युं छे; अने अति वेदना पामी रह्या छे. तेथी ते घणुं दुःख पाम्यो. ते बलदोनी आगल चारो पाणी मूक्युं, पण तेउनाथी कांइ खवायुं पीवायुं नहीं. त्यारें दूध तथा साकर प्रमुखनुं पाणी पीवरावता ला ग्या, पण तेने तेउ, सामे पण जुए शेना! त्यारें शेठें जाण्युं के ए हवे जीव वाना नथी पछी तेमनी अनशननी मनसा जाणीने अनशन व्रत कराव्युं, नमस्कारमंत्र दीधा, ते तेउयें सद्दह्या. एम मननी समाधिसहित काल क रीने ते नागकुमारनी जातिमां देवो थया. पछी जेम पुत्रना मरणथी दुःख थाय तेनी पेरें ते शेठ अने शेठाणी बन्नेने अति मातुं लाग्युं. ते बन्ने ब लद कंबल अने शंबल एवां नामे नागकुमार देवो थया. कोइ एक समयें

श्रीमाहावीर जगवान नावमां बेठेला ठतां कोइ सुदास नामना मिथ्यात्व दृष्टि देवें तेमने मरणांत उपसर्ग करवा मांम्यो. ते वखतें कंबल आवी ने ते मिथ्यादृष्टि देवनी साथें लडवा लाग्यो, अने संबलें ते नाव सुखें थी पहेले पार पहोचाड्युं. सुदाढदेव हारीने नाशी गयो. अने जगवंतनो मरणांत उपसर्ग तेणें टाल्यो. पठी श्री जगवंतने वंदना करीने कंबल अ ने शंबल पोताने ठेकाणें गया. पणे जिणदासश्रेष्ठी तथा तेनी स्त्री साधु दासी श्राविका बेहु जण वृषजना विरहें करी अति दुःखित थयां थकां वैराग्यने पाम्यां. अने विशेषथी श्राद्धधर्म आराधी आगमार्थनो परिचय करतां मरण पामीने स्वर्गनेविषे गयां. त्यार पठी अनुक्रमें मोक्ष पामशे. ए चार सद्दहणामांहेली पहेली सद्दहणानुं स्वरूप कह्युं ॥

हवे सद्दहणानो बीजो जेद कहे ठेः—

॥ गीयत्थियं चरित्तय, सेवा बहुमाण विणय परिसुद्धी ॥ तत्तावबोह जो गा, सम्मत्तं निम्मलं कुणइ ॥ १० ॥ अर्थः—गीतार्थ तिहां गीत एटले सूत्र अने अर्थ एटले तेनी वृत्ति, जाष्य, निर्युक्ति तथा चूर्णि प्रमुख पंचांगीरूप अर्थना जाणनारा जे होय तेने गीतार्थ कहीयें ॥ यतः ॥ गीयं जन्नइ सुत्तं, अत्थो तस्सेव होइ वरकाणं ॥ उजएणय संजुत्तो,सो गीयत्थो मुणेयव्वो ॥

तथा (चरित्तय के०) सर्व विरतिरूप चारित्र जाणवुं. ए बन्ने एटले गीतार्थ ठतां चारित्रवंत जे होय, तेने सुविहित शुद्ध प्ररूपक कहियें. मात्र जे ज्ञानवान होय ते सुविहित कहेवाय नहिं, तेम मात्र क्रियावान् पण शुद्ध प्ररूपक न होय; माटें ज्ञान अने क्रिया ए बन्ने साथें मले, तोज सुविहित शुद्ध प्ररूपक कहेवाय. कह्युं ठे के, " हयं नाण कियाहीणं, हया अन्नाणउ किया ॥ पासंतो पंगुलो दद्धो, धावमाणो य अंधउ ॥ १ ॥ संजोगसिद्धीइं फलं वयंति, न एगचक्केण रहो पयाइ॥ अंधोय पंगूयवणेसमिच्चा, ते संपउंता नयरं पविठा ॥ २ ॥ क्रियाहीन ज्ञानी त्याग करवा योग्य ठे, अने ज्ञान विना मात्र क्रियावंत पण त्याग करवा योग्य ठे, केम के ज्ञान पांगला जेवुं ठे, अने क्रिया आंधला जेवी ठे. ज्ञानवानने बधुं जाण्यामां आवे, पण क्रिया विना कार्य सिद्ध करी शके नहीं; अने क्रियावान् कार्य सिद्ध करवाने समर्थ ठे. पण अज्ञानी होवाथी तेने मार्गने मार्गनी खबर नथी. जेम आंधलो चालवा समर्थ ठे अने पांगलो

मार्ग देखाडवा समर्थ छे. एम बेहु मल्यां वांछित नगरें पहोंचे. तेम जे ज्ञान अने क्रिया बन्नेयें करी युक्त होय, तेज सुविहित गीतार्थ कहेवाय. तेनी सेवा करवी एटले परिचर्या करवी; ते सेवा बहु मानें करी अंतर्गत बहु प्रीतियें करी करवी. विनय एटले मन, वचन, तथा कायायें करी. आनंदें करी स्तुति तथा अभ्युत्थान प्रमुख करबुं. ए बन्ने प्रकारें निर्मल सेवा थाय छे. ते आगमना रहस्य जाणनाराने योग्य छे. एथी सम्यक्त्वनी निर्मलता थाय छे, माटें सुविहित गीतार्थ होय तेनांज सेवा तथा विनय प्रमुख करवां; एना योगथकीज निर्मल सम्यक्त्व थाय छे ॥ १० ॥

॥ एनी उपर पुष्पचूला साध्वीनुं उदाहरण कहे छेः– आ लाख योजन प्रमाणवाला पूर्णचंद्राकार जंबुद्वीपमां तेना एकशो ने नेवुंमा नाग जेटलुं आ नरत क्षेत्र छे. तेमां एक पुष्पनद्रिका नामनी नगरी छे. ते गंगाना तट उपर छे. तेमां पुष्पकेतु नामनो राजा राज्य करतो हवो. तेनी पुष्पवती नामनी राणी विनयवंत तथा शीलवान् होती हवी; तेनी साथें विषय सुख नोगवतां एक पुत्र अने एक पुत्रीनो जन्म थयो. तेउनां नाम पुष्पचूल तथा पुष्पचूला राख्यां. ए नाई बेन बन्ने रूपें सरखां, शरीरें सरखां, तथा गुणें करी सरखां हतां. ते कालांतरें तरुण अवस्थाने पाम्यां. एटले तेउनां लग्न करवानो विचार चाल्यो. राणी प्रमुख सर्व स्वजनोयें संसारनी रीति प्रमाणें पोतपोताना अनिप्रायो जणाव्या. ते योग्य छतां राजा पापबुद्धिने वश थई सर्वेने लोपीने नाइ बेनने परणावी दीधां. कह्युं छे के "न गुणंति कुलं न गुणं, ति पावयं पुणमविय न गुणंति ॥ इस्सरिएणहि मत्ता, तहेव परलोयमिह लोयं" जे स्त्रीने विषे मत्त थएला पुरुषो छे ते, कुल, पाप, तथा पुण्य, कांइ गणता नथी. तेमज तेने आ लोक अने परलोक सरखाज छे. हवे पुष्पचूल अने पुष्पचूला बेहु धणी धणीयाणी विषय नोगवतां जोइ पुष्पवती राणीयें राजाने अन्याय करतो वार्यो, पण राजायें कांहिं मान्युं नहिं. त्यारें तेणें वैराग्य पामी दीक्षा लीधी. पछी अनुक्रमें सारी रीतें दीक्षा पाली स्त्रीवेद छेदीने देवनी गतिने प्राप्त थइ. त्यां अवधिज्ञान प्रयुंज्युं. ते समयें ते नाइ तथा बेननो संनोग देखीने तेउने प्रतिबोध करवाना हेतुथी पुष्पचूलाने स्वप्नमां नरकनुं डुःख देखाडवा लागी. एटले ते साते नरकपृथ्वीनां डुःख देखीने महा नयने पामवा लागी. जाग्या पछी पण जेनुं शरीर कंपवा ला

ग्युं. ते सर्व दुःख पोताना पति पुष्पचूलनी पासें कहेवा लागी. एवुं प्रति दिने थवा लाग्युं. त्यारें पुष्पचूलें सर्व अन्य दर्शनीयोने तेडावीनें ते स्वप्न नो खुलासो पूछ्यो, त्यारें ते सर्व पोतपोताना मत प्रमाणें नरकनां दुःख कहेवा लाग्यां. पण तेमांनुं एके स्वप्नना अनुसारें मले नहीं, तेथी पुष्प चूलानुं मन माने नहीं. पछी राजायें अन्निका पुत्र नामना जैन आचार्यने तेडावीने पूछ्युं, के तमारा दर्शनमां नरकनां दुःख कहेवां कह्यां छे? त्या रें आचार्यें निःशंकपणे जैनमतमां जेवां साते नरकनां दुःख कह्यां छे. ते विस्तारें कही देखाड्यां, ते सांजलीने राणी कहेवा लागी के मारी पठें तमें पण स्वप्नमां दुःख देखो छो, एवुं जणाय छे! आचार्यें कह्युं के, अमें स्वप्न मां नरकनां दुःख देखता नथी, पण अमारा जैनशास्त्रना अनुसारें जाणी यें छैयें. राणीयें कह्युं, के ते शास्त्र कयां छे? ते कहो. तेवारें आचार्यें निरया वलिका नामना उपांगना आलावा कही संजलाव्या. त्यारें राणीयें पूछ्युं के, एवां नरकनां दुःख कोण पामे? आचार्य बोल्या, सांजलोः- "कहणं जं ते जीवा नेरइयाउ अत्ताए कम्मं पकरंति, गोयमा महारंजयाए महापरिग्ग हयाए कुणिमाहारेणं पंचिंदिय वहेणं इच्चेएहिं ठाणेहिं जीवा नेरइयाउ अ त्ताए कम्मं पकरंति" एवुं सांजलीने राणी कहेवा लागी के, तमें मारो सं शय निवृत्त कस्यो. तमारी वार्त्ता मारा स्वप्नने मलती आवी. पछी राणीयें घणा आदरें करीने ते गुरुनी वंदना करी, अने तेमने उपाश्रये पहोंचता कीधा. त्यार पछी वली कोइएक समयें पेलो पुष्पावतीनो जीव थएलो देव, ते पुष्पचूलाने स्वप्नमां बार देव लोकनां सुख देखाडवा लाग्यो. ते वा त पण ते पोताना पतिने कहेवा लागी. तेथी फरी तेणें अन्यदर्शनीयोने तेडाव्या, ने तेउने स्वर्गनां सुख केहवां छे? एम पूछ्युं. त्यारें तेउयें कह्युं के रूडुं खावुं, सारुं पीवुं, स्त्रीविलास प्रमुख सुख जोगवियें, आनंदमां रहि यें, एज स्वर्गनां सुख छे. एवी वातो पुष्पचूलाना मनमां बेसे नहीं. त्यारें राजायें अन्निकापुत्र आचार्यने तेडीने पूछ्युं. के तमारा शास्त्रमां स्व र्गनां सुखविषे केवी रीतें कह्युं छे? त्यारें तेमणें शास्त्रने अनुसारें बार देव लोकनो विचार, नव ग्रैवयेक पांच अनुत्तर विमाननो विचार कहेवानो आरंज कस्यो. ते पेली राणी लक्ष दइने सांजलवा लागी. तो पोताना स्व प्ननी साथें बधी वातो मलती आवे छे. एम जाणीने ते अति राजी थइ.

ने ते आचार्यने पूछ्युं के एवा सुखनी प्राप्ति केम थाय ? आचार्यें कह्युं के सांभळोः– कहणं भंते जीवा सुहं कम्मं बंधंति, गोयमा सम्मद्दंसणसुद्धीए पसन्न मण वयण काय जोगेणं इंदिय निग्गहेणं कोह विजएणं धम्म सुक्कझाणेण आयरिय उवझायाणं साहु साहम्मियाण भत्तीए दाण सील तव भावण प्पभावणाए वेराग्गेणं निस्संगयाए संविभागेणं इच्चेएहिं दसहिं ठाणेहिं जीवा सुहं कम्मं बंधंति" ए शुभ कर्म बंधथकी जीव स्वर्गेनां आयु बांधे, काळ करी स्वर्गे जाय. तथा "एगदिवसंपि जीवो, पवज्ज मुवागउ अणुम्रमणो ॥ जइवि न पावइ मुरकं, अवस्स वेमाणिउ होई." एवी रीतें जीव स्वर्गेनां सुख पामे छे. एवुं सांभळीने पुष्पचूला कहेवा लागी के, स्वामी ! आप उपाश्रयनविषे पधारो. हुं मारा धणीने समजावीने त्यां आवी दीक्षा लईश मारा धर्माचार्य आप छो, माटें मारे आपनी पासेंज दीक्षा लेवी छे. कह्युं छे के, "सम्मत्तदायगाणं, दुप्पडियारं भवेसु बहुएसु ॥ सवगुण मेलियाहिवि, उवयार सहस्स कोडीहिं." एवुं कही गुरुने वांदीने उपाश्रयें विदाय कस्या. पछी पुष्पचूल राजाने सारी रीतें समझावीने पुष्पचूला राणीयें तेज आचार्यनी कने महामहोत्सव सहित दीक्षा लीधी. अने राजाना आग्रहथी त्यांज गुरु रह्या. अन्यदा प्रस्तावें आगल बार वर्षनो दुष्काळ पडशे, एवुं ज्ञानवडे जाणीने ते आचार्य सर्व साधुउने सुभिक्ष देशनेविषे विहार कराववा लाग्या, त्यारें पुष्पचूला साध्वीयें कह्युं के, सुखें करी समस्त यतिने देशांतरने विषे विहार करावो. हुं आपनुं वेयावच्च करीश. ते सांभळी तथा लाभ जाणीने पडिवज्ज्युं. पछी पुष्पचूला घणी भक्तियें करी सेवा प्रमुख करवा लागी. प्रतिदिन मनोज्ञ आहार पाणी लावी आपे; अने गुरुने सारी रीतें साचवे. यतः "पुस्रेहि चोइया पुरकडेहिं, सिरि भायणं भविय सत्ता ॥ गुरुमागमेसिभद्दा, देवयमिव पज्जुवासंति." एम करतां सदैव गुरुभक्तिना अध्यवसायें करी ते पुष्पचूला साध्वी, शुभ भावनायें करी क्षपक श्रेणि पामी; अनुक्रमें केवळ ज्ञान ऊपन्युं. तो पण तेविषे गुरुने कांई न जणावतां प्रथमनी पठेंज गुरुभक्तिमां तत्पर रही. यतः "जो जस्स य जारिसयं, पुविं भत्तिं कुणंतिउ होइ ॥ सो तस्स तारिसियं, कुणेइ जाणज्जइ न नाणी." ते साध्वी गुरुना मननो अभिप्राय जाणीने जे वस्तुनी तें

मने इच्छा होय, ते लावी आपे. ते जोईने गुरुने आश्चर्य थाय. तेथी पूछे के, मारी इच्छाप्रमाणेंज तुने क्रिया करवानुं केम सूझे छे? त्यारें ते साध्वी कहे के जे जेनी सदैव सेवा करे, ते तेनी प्रकृति स्वभाव जाणी लिये छे. एक समयनेविषे मेघ, वृष्टि करतां छतां ते साध्वीयें गुरुनी इच्छाने अनुकूल आहार आणी आप्यो. गुरुयें पूछ्युं के, वर्षा छतां केम आहार आण्यो? साध्वीयें कह्युं के, स्वामी! अचित्त अप्कायना मार्गें हींमतां आहार मल्यो, ते आण्यो छे. ए निर्दोष छे. गुरुयें पूछ्युं के, अचित्त अप्कायनो मार्ग तें केम जाण्यो? साध्वीयें कह्युं के, आपना प्रसादें करी जाण्यो. गुरुयें कह्युं कांई ज्ञान? साध्वीयें कह्युं, आपना प्रसादें. गुरुयें पूछ्युं, प्रतिपाति के अप्रतिपाति? साध्वीयें कह्युं, अप्रतिपाति. गुरुयें पूछ्युं, केवलज्ञान? साध्वीयें कह्युं, आपना प्रसादें. त्यारें ते आचार्यें कह्युं के, में केवलीनी आशातना करी. केम के केवली पासेंथी विनयवेयावच्च प्रमुख कराव्यां. एवी रीतें पोताने निंदवा लाग्या. घणी चिंता करवा लाग्या. जे मने हजी केवलज्ञान उत्पन्न थयुं नथी. अने ए साध्वी धन्य छे, के एने थोडा कालमां केवलज्ञान ऊपनुं! एवो ते आचार्यना मननो आशय साध्वी केवलज्ञानथी जाणीने कहेवा लागी के, हे गुरुजी! आप खेद नहिं करो, आपने गंगानदी ऊतरतां केवलज्ञान ऊपजशे. हवे आचार्य गंगानदीना तीर ऊपर जई पेले पार ऊतरवामाटे एक नावमां बेठा, तेमां बीजा पण केटलाएक लोक बेठा हता, जे बाजु आचार्य बेठेला हता, ते बाजुयें एक मिथ्यादृष्टि देवांगना आवी नावने बूडाडवा लागी अने नावमां पाणी भरावा लाग्युं, त्यारें लोकोयें ते आचार्यने त्यांथी ऊठाडीने बीजे ठेकाणें बेसाड्या. त्यारें ते ठेकाणें पाणी भरावा लाग्युं; अने ते ठेकाणेथी नाव बूडवा लाग्युं. एवी रीतें लोको जुदे जुदे ठेकाणें ते आचार्यने बेसाडे, ते ठेकाणें नाव बूडवा लागे, एम थवा लाग्युं. तेथी लोकोयें आचार्यने ऊपाडीने पाणीमां नाखी दीधा. त्यारें पेली देवागनायें नीचे त्रिशूल धर्युं. ते शरीरमां भोकायाथी त्रिशूल लोहीयें भराई गयुं, तेथी अप्कायनी विराधना थवा लागी. ते पापनी ते गुरुनिंदा करवा लाग्या. एटले मारा रुधिरथी अप्कायनी विराधना थाय छे! तेथी हुं हिंसक ठरुं छुं. एवी रीतें जीवदयाना शुभ अध्यवसायने लीधे क्षपकश्रेणि आरोहीने अंतगड केवली थया. ते स

मयें देवोयें केवल ज्ञाननो महोत्सव कस्यो. त्यां प्रयाग एवे नामें तीर्थ थयुं. ते लोकने कामित दानथकी ते तीर्थनो महिमा वध्यो. हवे पुष्पचूला साध्वी पण अनुक्रमें वेदनीय, नाम, गोत्र अने आयु, ए चार कर्म क्षय करीने मोक्षें पहोती. एवी रीतें " सुमुणिय परमठ्ठ जइ जणनिसेवा, ए सदहणानो बीजो भेद उक्त दृष्टांत सहित जाणवो. "

हवे वावन्न वज्जणं, ए सद्दहणानो त्रीजो भेद कहे छेः—

॥ वावन्न दंसणाणं, निण्हव हाछंद कुग्गह हयाणं ॥ उम्मग्गु वएसेहिं, बलावि मइलिक्क ए सम्मं ॥ ११ ॥ अर्थः—मिथ्यात्वें करी व्यापन्न एटले नष्ट, दर्शन अर्थात् मिथ्यात्वें करी व्याप्त छे सम्यक्त्व जेनुं तेने वावन्न दंसण एटले व्यापन्नदर्शन कहियें. तेना धरनारा एवा निन्हव एटले भगवंत श्रीवीतराग देवनां वचनोना उछापनार. यथाछंद एटले पोतानी इछायें प्रवर्त्ते, गुरुनी इछाप्रमाणें चाले नहीं ते. एविषे श्रीप्रवचनसारोद्धार सूत्रमां कह्युं छे के, " पासछो उस्सन्नो, होइ कुसीलो तहेव संसत्तो ॥ अहछंदोवि य एवं, अवंदणिज्जा जिणमयंमि " तेमां पासछाना बे प्रकार छेः— एक देशपासछो, बीजो सर्वपासछो, तेमां जे शय्यातर पिंड सामे आवेलो पिंड, नित्यपिंड तथा अग्रपिंड कारण विना लिये, ते देशथी पासछो कहेवाय. अने केवल लिंगधारी होय ते सर्वथी पासछो जाणवो.

उत्सन्नना पण बे प्रकार छेः— एक देशोत्सन्न बीजो सर्वोत्सन्न. तेमां " आवस्सय सज्झाए, पडिलेहण झाण निरक अभत्तठे ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे निस्सीयण तुयट्टे " भावार्थः—आवश्यक सझायादिक करे नहीं, अने जो करे तो अधिका उंछा करे. तेने देशथकी उस्सन्नो कहियें. अने ऋतुबद्ध कालनेविषे पीठ फलग निःकारण वावरे, तथा स्थापनापिंड भोगवे, संथारो पाथस्यो राखे, तेने सर्वथकी उसन्नो कहियें.

कुशीलीयाना त्रण प्रकार छेः— ज्ञानकुशील, दर्शनकुशील, तथा चारित्रकुशील. तेमां जे " काले विणये बहुमाणे " इत्यादिक आठ प्रकारें ज्ञानाचार विराधे, तेने ज्ञानकुशील कहियें, " निस्संकिय निक्कंखिय " इत्यादिक आठ प्रकारें दर्शनाचार जे विराधे, तेने दर्शन कुशील कहियें, अने " पणिहाण जोगजुत्ता " इत्यादिक आठ चारित्राचार विराधे, तथा

कारण विना मंत्र, यंत्र अने तंत्र प्रमुख कोइने करी आपे, निमित्त कहे, तथा औषधादिक उपचार करे, तेने चारित्र कुशील कहियें.

अने संसक्त एटलें जेम बलदनी आगल तेना खाणनो सूंडलो राख्यो होय, ते खाण ते बलदें खाधुं होय, तेथी ते सुंडलो कांइक उच्छिष्ट खाणथी खरडायेलो होय, ने कांइ अनुच्छिष्टथी खरड्यो होय. तेम जे कांइक मूलगुण तथा उत्तरगुणनो विराधक होय ने कांइक अविराधक होय, तेने संसत्तो जाणवो. तेना बे नेद छेः— एक संक्लिष्ट अने बीजो असंक्लिष्ट. तेमां जे पांच आश्रवनेविषे प्रसक्त होय, त्रण गारवें करी प्रतिबद्ध होय, कोइ गृहस्थ तथा गृहस्थिणीना छोकरा छोकरीनी चिंता करे, अने तेउना दुःखें दुःखी अने तेउना सुखें सुखी थाय. तेने संक्लिष्ट संसक्त कहियें, तथा कोइ पासह्नो मले तो पोतें पण तेनी साथें पासह्नो बनी जाय, संवेगी मले तो संवेगी जेवो थइ जाय, एवी रीतें जे जेवो मले तेनी साथें स्फटिक मणिनी पठें अथवा तेलनी पठें तेवो थइ जाय. तेने असंक्लिष्ट संसक्त कहियें.

अहाछंदविषे कहे छेः— " उस्सत्त मायरंतो, उस्सुत्तं चेव पन्नवेमाणं ॥ एसोहु अहाछंदो, इच्छाछंदोत्ति एगठा " नावार्थः— जे पोतानी इच्छायें चाले, तेने इच्छा छंद कहियें.हवे 'कुग्गह हयाणं' खोटे हठे करी हणायेला, जे कदाग्रहनी शास्त्र साख दिये नहिं,तथा सुविहित शुद्ध प्ररूपक आचार्य पण साख दिये नहीं एवो हठ पकडीने बेसी रहे,पोतानो हठ मूके नहीं, तेने कुग्रह हत कहियें. एवाना 'उम्मग्गुवएसेहिं' एटले उन्मार्गना उपदेशें करी (बलावि के०) बलात्कारपणे प्रथमथीज (ए सम्मं के०) ए सम्यक्त्व (मइलिज्ज के०) मलिन थाय छे, माटे तेवानी देशना प्रमुख पण सांजलवी नहीं. केम के, नरसी वात सांजल्याथी पण पाप लागे छे. जेम मशिनो घणो संग करनारना कपडां कालां थाय छे. तथा लशण खाधाथी मुख गंधाय छे, तेम एवानी संगत कस्याथी सम्यक्त्व मलीन थाय छे ॥ ११ ॥

॥ एनी उपर जमालीनुं दृष्टांत कहे छेः—"आजीवगगणनेया, रज्जसिरिं पयहि ऊणय जमाली ॥ हियमप्पणो करित्तो, नयवयणिज्जो इह पडंत्तो " इति उपदेशमालायां. ब्राह्मणकुंम गामनी पश्चिम दिशानेविषे एक क्षत्रियकुंम नामें गाम छे. त्यां जमाली नामनो क्षत्रिय अति ऋद्धिमान् होतो हवो. ते नगवंत श्रीमहावीरस्वामीनी पुत्रीने परण्यो. तेनी साथें पांचे इं

ड्रियोनां विषयसुख जोगववा लाग्यो, हवे कोइ एक समयें त्यां श्रीम हावीरस्वामी पधाख्या. तेमने नंदीवर्द्धन राजा प्रमुख वांदवा आव्या; त्या रें जमाली क्षत्रिय पण वांदवा आव्यो, ने धर्मदेशना सांजलीने प्रतिबोध पाम्यो. पढी घेर जइ पोताना माता पिताने समजावी पोतानी स्त्री सहि त महोटा महोत्सवें करी दीक्षा लीधी. तेनी साथें बीजा पांचशें क्षत्रिकु मरें दीक्षा लीधी. अनुक्रमें अग्यार अंग जण्यो. एक दहाडे श्रीजगवंत प्र त्यें पूढ्युं के स्वामी! आपनी आज्ञा होय, तो हुं आ पांचशें यतिनी सा थें देशमां विहार करुं? ते सांजलीने जगवान् मौन धारण करी रही गया. कांइ जबाव वाल्यो नहिं. फरी बीजी वार पूढ्युं, तेनो पण उत्तर वाल्यो नहिं; तेमज त्रीजी वार पूढ्युं तो पण तेमज मौनपणे रह्या. केम के, के वली जे वातमां लाज जाणे, तेनीज आज्ञा आपे. अने जेने आज्ञा मा नतो जाणे, तेनेज निवारे. जगवंतें जाण्युं के मारो वाख्यो रहेशे नहिं. ए वि हार करवाने अति उत्सुक थयो ढे तेने हुं शा सारु वारुं? माटें जगवंतें मौन धारण कर्युं. त्यारें आज्ञा लीधा विनाज जमालीयें जगवंतथी जुदो विहार कख्यो. ते फरतो फरतो सावड्ढी नगरीमां आवी पहोतो. त्यां कोष्ट क चैत्यमां पांचशें यतियोनी साथें आवी ऊतख्यो. अने जगवान् श्रीमहा वीर, चंपानगरीमां पधाख्या. जमालीने अरसाहार, विरसाहार, अंताहा र, पंताहार तथा तुच्छाहारें करी शरीरनेविषे तीव्र दाहज्वर उत्पन्न थयो. तेनी वेदना खमाय नहिं.त्यारें एक वेयावच्चकरनार यतिने कह्युं के हुं बेशी शकतो नथी, माटे एक संथारुं पाथरो. ते सांजली यति संथारुं पाथरवा गयो. त्यां कांइक वार लागी. तिहां सुधी जमालीथी वेदनाने लीधे बेसा युं नहिं. तेथी वारंवार पूढवा लाग्यो के,अरे संथारुं पाथख्युं के नहिं? यति यें कह्युं के, हा पाथख्युं. त्यारें ते त्यांथी ऊठीने ज्यां पेलो यति संथारुं पा थरतो हतो, त्यां गयो. जुवे ढे तो हजी संथारुं पथराय ढे. तेथी पेला यतिने कह्युं के, तें केम कह्युं जे में संथारुं पाथख्युं? यतियें कह्युं के, पाथरवा मांम्युं, ते पाथख्युं कहेवाय. ते समयें जमालीना मनमां एवो संकल्प ऊ पनो के, श्रीजगवान् महावीरस्वामीयें जे करवा मांम्युं ते कीधुं, एवुं जे वचन कहेलुं ढे, ते खोटुं ढे. जे कीधुं तेज कीधुं कहेवाय. माटे चलमा णेचलिए, उदीरिज्जमाणे उदीरिए, वेदिज्जमाणे वेदिए, पहिज्जमाणे पहि

णे,छिज्जमाण छिन्ने, निज्जमाणे निन्ने, दज्ममाणे दग्ते, मेज्ञमाणे मेए, तथा निज्जरिज्जमाणे निज्जरणे. ए नवे पद असत्य छे. केम के, जे चाल्युं तेज चाल्युं कहेवाय; एमज नवे पद जाणी लेवां.

पछी ते पोतानुं मत यतियोने समजाववा लाग्यो. तेमां केटलाएक जे मुग्ध यतियो हता, तेउयें तो तेनुं मत मानी लीधुं. अने केटलाएक जेउ समजु हता तेउयें मान्युं नहिं. तेउ मनमां विचार करवा लाग्या के, नग वान् श्रीमहावीर केवलज्ञाननास्कर तेमनां वचन खोटां केम थाय? एम जाणी पोतानी सद्दहणाथी चल्या नहिं. केटलाएक दिवस पछी जमालीने समाधि थइ. त्यारें फरी विहार करवा लाग्यो. तेनी साथें जे तेना मतने मलता यति हता, तेउ रह्या अने जेउ अणमलता हता, तेउ त्यांथी नीक ली जइने चंपानगरीमां ज्यां नगवंत हता, त्यां आवी प्रनुने वांदीने रह्या. केटला एक दिवस पछी जमाली पण चंपानगरीमां श्रीवीरनगवंतनी पासें आव्यो. अने अति दूर पण नहिं तेम अति पासें पण नहिं एवा मेलमां रहीने पूछवा लाग्यो के, जेम तमारा बीजा यतियो छद्मस्थपणे विहार करीने छद्मस्थपणेज रह्या छे. तेवो हुं नथी. हुं तो छद्मस्थपणे विहार क रीने केवलीपणे विचरुं छुं, जेम तमें केवली छो, तेम हुं पण केवली छुं. एवी रीतें बराबरी करवा लाग्यो, ते वात गौतमस्वामी सांखी शक्या न हिं. ने मनमां विचारवा लाग्या के,महोटुं आश्चर्य छे. उस, जे सूर्यनी बराबरी करे? गरुड, शेषनागनी बराबरी करे? तेम ए नगवाननी बराबरी करे छे. एम जाणी गौतम तेने पूछवा लाग्या. अरे जमाली! जोतुं केवली छो तो मारा प्रश्ननो उत्तर आप. लोक शाश्वत छे के अशाश्वत छे? अने जीव शाश्वत छे के, अशाश्वत छे? एवुं सांनलीने जेम मंत्रथी वश थएलो साप हाली शके नहीं. जेम खील्यो अग्नि आघो चाली न शके,तेम ते गौतमना प्रताप नामकर्मने लीधे तेनी आगल जमाली मूकनी पठें बनी गयो. कांहि जबाप देवायो नहीं.बोल्या विना एमने एम रही गयो. कांइ प्रत्युत्तर देवानुं सूजे नहीं एम जाणीने तेने नगवंत कहेवा लाग्या के,ए प्रश्ननो उत्तर तो मारा छद्मस्थ शिष्यो पण दइ शके. तो तुं केवली छतां केम ताराथी उत्तर देवातो नथी? एवुं सांनलीने जमालीने घणुं मातुं लाग्युं,तेथी नगवाननी आज्ञा उल्लंघी त्यांथी नीकलीने निन्हवपणे विचरवा लाग्यो. अने केट

लाएक मुग्ध पुरुषोने पोताना कुमतमां आणवा लाग्यो. एम घणा वर्ष सुधी निन्ह्वपणुं नोगवीने अंतसमय जाणी अणसण कर्युं. पंदर दिवसनुं अणसण पालीने पापने अणआलोए अपडिक्कमे थके काल करीने बठा लांतक देवलोकनेविषे तेर सागरोपमने आउखे समस्त देवोमांहे ढेडनी बराबर किल्बिषी देवोमां जइ देवपणे उपनो.

गौतमस्वामीयें जमालीनुं मरण सांनली श्रीनगवान् प्रत्यें पूछ्युं के, हे नगवन्! जमाली काल करीने क्यां गयो? नगवाने कह्युं, मह्यरो कुशिष्य जमाली लांतक देवलोकें किल्बीषी देव थयो छे. उक्तंच ॥ जमालिणाम कुसिस्से आयरिय पडणिए, उवज्ञायपडणिए, कुलपडणिए, गणपडणिए, संघपडणिए, आयरिय उवज्ञायाणं अजसकारए, अवस्तुकारए, अप्पाणं च परंच तडुनयं च वुग्घाएमाणे, वुप्पायमाणे, बहुइं वासाइं समणं परियायं पाउणंति, पाउणित्ता, अद्धमासिआए संलेहणाए, तेसिं नत्ताइं, अणसणाए छेदित्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइय, अप्पडिक्कंते, कालमासे, काले किच्चा लंतए कप्पे उववन्नुं, जमालिणं नंते ताउ देवलोगाउ आउक्खएणं नवक्खएणं ठिइक्खएणं कहिंउववज्जिहंति गोयमा चत्तारि पंच तरिक्ख जोणिय मणुस्स देवनवग्गहणाइं संसारं अणुपरियट्टित्ता तउ पच्छा सिज्झिहंति जाव अंतकरिंति ॥ इति नगवतीसूत्रे ॥

हवे जमालीना नव आश्रयी ग्रंथांतरथी लखीयें छैयें. " आयरियपरंपरए, ण आयगजोउ आणुपुवीए ॥ कोवेइ छेयवाइ, जमालिमांसं स नासिहिं ॥ १ ॥ व्याख्याः– आचार्यनी परंपरायें अनुक्रमें आव्यो जे अर्थ ते प्रत्यें (कोवेइ के०) कूप्यति दूषयति एटले कोपतो दूषवतो कहेवो थको? तोके (छेयवाइ के०) छेकवादी एटले हुं मह्यो छुं, एवुं अनिमान धरतो थको एवो जमाली नामा निन्ह्व ते नासनी पेरें कयमाणेकडे इत्यादि नगवंतना वचन उछापन करतो थको ते नाठो एटले संसारचक्रवालमांहे परिभ्रमण करवे करी अदृश्य थयो. एना दृष्टांते जे प्राणी स्वमत कदाग्रहें करी एके वचननुं उत्सूत्र नाषण करशे (सनासिहिं के०) ते नासशे. एटले संसारचक्रवालमांहे नमशे अदृश्य थशे. इति सूयगडांगनिर्युक्तौ ॥

इव्यलिंगें करी निन्ह्वना गणनो स्वामी पोतानी राज्यश्री प्रत्यें ढांमीने माहामहोत्सव सहित दीक्षा लीधी. एवो जे जमाली ते जो आपणा आ

त्मानो हितवंछक थयो होत, तो जगवानना "कयमाणेकडे" इत्यादिक वचन उत्थापत नहीं, तो इहलोकें लोकनिंदाने विषे पडत नहीं अने निन्हव कहीने लोक वगोएुं करत नहिं. पण जगवंतनां वचन उत्थापीने निन्हव थयो, लोकोमां निंदा पाम्यो, वगोवाणो अने जगवानें कुशिष्य करी बोलाव्यो, वली संसारमां अनंता जव करशे. ए उपदेशमालानी हेयोपादेय वृत्तिमां तथा उपदेशमालानी सिद्धर्षिकृत वृत्तिमां कह्युं छे.

ते जमालीनो जीव तिर्यंच तथा मनुष्य तथा देवताने विषे केटलाएक जवच्रमण करीने दुरंत घणाकालें श्रीमाहाविदेहने विषे मनुष्य जन्म पामी मोक्षनगरें जाशे. ए उपदेशमालानी कर्णिकामां कह्युं छे.

हमणां लांतकदेवलोकथी चवीने पछी तिर्यंच तथा मनुष्यने विषे पांचवार जमीने छेहडे सम्यक्त्व पामी मोक्षप्रत्यें पामशे. इति वीरचरित्रे ॥

तथा वीरजगवाननी पुत्री महासती साधवी हती, तेणें जइने जमालीने प्रतिबोध्यो पण बूज्यो नहीं, निन्हव थयो घणीज तपस्या करी तो पण अनंतसंसार उपार्ज्यो, ए वात श्रीसोमसुंदर सूरिकृत उपदेशमालाना बालावबोधमां तथा श्रीहीरविजयसूरिप्रसादें करेला प्रश्नोत्तरसमुच्चय ग्रंथमांहे कही छे. तथा श्रीजगवतीसूत्रानुसारें पन्नरजव संसारमां करवा कह्या छे. इत्यादिक घणा ग्रंथोनी जूदी जूदी साख जोइने जमालीना जव आश्चर्य कोइ हठ करशो मां. ज्यां जेहवो पाठ देखो, त्यां तेहवुं व्याख्यान करजो. तत्त्व तो केवलीगम्य छे. छेवट केवलीयें दीठुं होय अने जे केवलीयें कह्युं होय, तेज प्रमाण छे, एम कहेजो. जेथी बूटकबारो थाय पण पोताना हठथी नवा अर्थ करशो नहीं, जे ए वातनेविषे हठें करीने स्वमत कदाग्रह पोषशे, ते जमालीनी पेठें दीर्घसंसार परिच्रमण करशे. अने ते जमालीनीज पंक्तिमां बेठो गणाशे. ए त्रीजी सद्दहणानुं स्वरूप कह्युं.

हवे कुदृष्टि वर्ज्जन रूप सद्दहणानो चोथो जेद वखाणे छेः—

॥ मोहिज्जइ मंदमई, कुद्दिठि पयणेहिं गुविल छंडेहिं ॥ दूरेण वज्जियवा, तेण इमे सुद्ध बुद्धीहिं ॥ १२ ॥ अर्थः—(मोहिज्जइ के०) मोह पमाडीयें अज्ञान मांहे पाडीयें (मंदमई के०) मंदमति एटले तुच्छ बुद्धिवाला जीवो प्रत्यें जे कारणमाटे जे उत्तम बुद्धिवाला जीवो छे तेमने तो मिथ्यात्वीनी संगति लागेज नहीं जेम सर्पना मणिने सर्पनी दाढा संबंधी

जे विष छे, तेनी संगति लागेज नहिं. सहामुं विषने उतारी नाखे, परंतु केटला एक जीव वस्त्र सरिखा छे ते जेम वस्त्रने जेह्वा रंगमां नाखीयें तेवो रंग लागी जाय. तेम केटला एक मनुष्यो पण वस्त्रनी पेठेंज " जब गया तब रंगिळ्ळा " एटले ज्यां गया त्यां रंगाइ जाय, एवा छे. तेमने मोह पमाडीयें, ते शेणें करी मोह पमाडीयें ? तो के (कुदिछिवयणेहिं के०) कुदृष्टि जे मिथ्यादृष्टि त्रणशें त्रेशठ पाखंमीयो छे, तेमने वचनें करी ॥ यतः ॥ असिइसयं किरियाणं, अकिरिय वाईण होइ चुलसीई ॥ अन्नाणिय सत्तठी, वेणइयाणं तु बत्तीसा ॥ १ ॥ अथवा कुदृष्टिनां वचन जे रामायण नारतादिक शास्त्रें करी मुग्धमति जीवोने मोह पमाडीयें, तेने आगम शास्त्र सांनलतां मीठां न लागे अने कुशास्त्र सांनलवाने उजाता जाय.

ह्वे ते कुदृष्टिनां वचन कहेवां छे ? तो के (गुविलढंढेहिं के०) गहन गहनांतर कपटनां प्रतिपादक छे, जे शास्त्रोमां पूर्वापर संबंध मले नहिं एवा वचनोनी रचना करेली छे, एवां छे माटे ते जीवने मिथ्यात्वमां पाडे, तेथी ते कुदृष्टिनां वचन (दूरेण वज्जियव्वा के०) दूरथी वर्ज्जवां. अर्थात् सांनलवां नहीं. उक्तं च उपदेशमालायां ॥ आलावा संलावा, विसंनो संथवो पसंगो य ॥ हीणायारेहि समं, सव्वजिणंदेहि पडिकुठो ॥ १ ॥ (तेण के०) ते कारणमाटे (इमे के०) ए कुदृष्टिनां वचन जे छे, तेने (सुद्ध बुद्धीहिं के०) शुद्ध एटले निर्मल बुद्धिवाला जीवें, सांनलवां नहिं ए सद्दहणानो चोथो नेद कह्यो ॥ १२ ॥

ह्वे एनी उपर गिरिशुक अने पुष्प शुकनो दृष्टांत कहे छेः—

॥ कादंबरी अटवीमां वटवृक्ष ऊपर सूडानां बे बच्चां ह्तां, ते बेहु सहोदर हतां, तेमांथी एक बच्चांने निल्ल लइ गयो ते पर्वतनी पालीमां वध्युं. ते नणी तेनुं गिरिशुक नाम थयुं. अने बीजुं तापसें लीधुं ते तापसोनी पुष्प वाडीमां महोटुं थयुं तेथी तेनुं नाम पुष्पशुक पाड्युं. एकदा वसंत पुरनो स्वामी वक्रशिक्षित घोडायें अपहर्यो थको अटवीमां आव्यो, ते राजाने देखी निल्लनो पालेलो शुक बोल्यो के, अरे निल्लो हुसीयार थाउ. कोइक असवार रूडा आनरणें अलंकृत थको एकलो जाय छे, माटे तेने लूंटो, मारो, फाडो. ते वचन सांनली राजा नयच्रांत थयो थको घोडाने उतावलो चलावतो आगल तापसोने आश्रमें आव्यो, तेने दूरथी आव

तो देखी पुष्पशुक कुलपतिने कहेवा लाग्यो के, हे स्वामिन्! कोइ एक रू डो असवार अतिथि आपणी पासें आवे छे, माटे आसन आपो. खान पान तैय्यार करी एनी परोणागत करो. ते सांजली तापस सावधान थ या. राजाने आसन आपी आगल वनफलादिक मूक्यां. राजा वनफल आ रोगी स्वस्थ थइ पछी बेहु सूडाना बोलवामां महोटो तफावत जाणी आ श्चर्य पाम्यो थको पूछवा लाग्यो. के तमें बेहु सूडा सरखा देखाउ छो. तेम छतां गुण दोषमां एवडो श्यो अंतर पड्यो? ते सांजली पुष्पशुक कहेवा लाग्यो के हे राजन्! अमारा माता पिता एकज छे, साथेंज जन्म्या छैयें, पण तेणे रात्रिदिवस चोरोनी संगति करी छे,अने मने तापसोनी संगत छे. माटे जेवी संगत तेवी बुद्धि थाय छे,ते वचन सांजली राजा हर्ष पाम्यो,ए टलामां राजानुं लश्कर पण त्यां आवी पहोच्युं, पछी राजा तापसो पा सेंथी रजा मागी पोतानी नगरीयें आव्यो, अने संगतने लीधे दोष गुण प्राप्तिनी प्रशंसा करवा लाग्यो. इति कथा ॥ ए सुविहित शुद्ध प्ररूपकना मुखथी शास्त्र सांजलवां पण अन्य दर्शनीउना कुशास्त्र सांजलवां नहिं. एवो सद्दहणानो चोथो जेद दृष्टांतसहित कह्यो ॥

इतिश्रीतपागछालंकार जट्टारक श्रीहीरविजयसूरीश्वर पट्टालंकार श्रीवि जयसेनसूरीश्वर पट्टप्राजाविक श्रीविजयदेवसूरि विजयमानराज्ये महो पाध्याय श्रीसकलचंद्रगणिशिष्य श्रीजंबूद्वीप प्रज्ञप्तिउपांगवृत्तिकारक महो पाध्याय श्रीशांतिचंद्रगणि शिष्योपाध्याय श्रीरत्नचंद्रगणिजिः श्रीसम्यक्त्व रत्नाधिष्ठान श्रीसूर्यपुरादि चतुर्विधसंघस्य चतुर्दशाष्टम्यादिपर्वसु अप्रमत्त तपपौषध प्रतिपालनार्थं विरचिते श्रीसम्यक्त्वप्रकाशिनामनि श्रीसम्य क् सप्ततिप्रकरणबालावबोधे चतुर्नेदश्रद्धानस्वरूपनिरूपणनामा प्रथमोऽ धिकारः संपूर्णः ॥ १ ॥

हवे समकेतना त्रण लिंग कहे छेः—

॥ परमागम सुस्सूसा,अणुराउ धम्म साहणे परमो ॥ जिणेव गुरु वेया वच्चे, नियमो सम्मत लिंगाइ ॥ १३ ॥ अर्थः—प्रथम (परमागम सुस्सू सा के०) परम प्रकृष्ट आगमने विषे शुश्रूषा एटले सांजलवानी वांछा होय यतः ॥ सुस्सूसइ पडिपुछइ, सुणेइ गिण्हईय एयावि ॥ तत्तो अपोह एवा, धारेइ करेइ वा सम्मं ॥ यदागमः ॥ सवणे नाणेय विन्नाणे,पच्चरकाणेय सं

जमे ॥ अनिएहए तवे चेव, वोदाणे अकिरिय निवाणे ॥१॥ समकेत धारी होय ते आगम सांजलवा वांछे. ए सम्यक्त्वनुं पहेलुं लिंग एटले चिन्ह जाणवुं.

बीजुं (अणुराउधम्मसाहणे परमो के०) धर्मसाधनने विषे मननी परम प्रीति पूर्वक परम अनुराग होय, एटले धर्म करवाने विषे उत्कृष्ट उजमाल होय, धर्मकार्यमां अंतराय न करे, जे धर्म करतो होय तेहने सहाय आपे, ए बीजुं धर्म साधनने विषे अनुराग रूप लिंग जाणवुं ॥

त्रीजुं (जिणेव के०) रागादिक अढारदोषें रहित एवा जिनेश्वर देव च केतां वली (गुरु के०) पंचाचारना प्रतिपालक गुरु, तेमना (वेयावच्चे के०) वेयावच्च करवाने विषे (नियमो के०) नियमवंत होय एटले महारे आ अमुक वेयावच्च अवश्य करवुंज. ए रीतें सम्यक्त्व धारीने श्रीजिनदेव तथा गुरु जे सुसाधु तेना वेयावच्चने विषे राग होय. ते त्रीजुं लिंग जाणवुं ॥ उक्तं च ॥ दसविहे वेयावच्चे पण्णत्ते तं जहा आयरिय वेयावच्चे,उवझाय वेयावच्चे, थेर, तवस्सि, सेह, गिलाण, कुल, गण, संघ, साहम्मिय वेयावच्चे॥ इति स्थानांगसूत्रे ॥ वेयावच्चेणं भंते जीवे किं जणइ, वेयावच्चेणं तित्थयर नाम गोय कम्म निबंधइ ॥ इति उत्तराध्ययन सूत्रे ॥ ए त्रण (समत्तलिंगाइं के०) सम्यक्दृष्टिनां लिंग एटले चिन्ह जाणवां ॥

हवे एज त्रण लिंगनुं विशेषें स्वरूप कहे छेः—

॥ तरुणो सुही वियद्दो, रागी पियपणयिणीजुउ सोउं॥ इच्छइ जह सुरगीयं, तउहिया समय सुस्सूसा ॥ १४ ॥ अर्थः—(तरुण के०) युवान वय वालो वली(सुही के०) सुखी होय तेवा पुरुषने स्वभावेंज गीत नाट्यादिक वल्लन होय यतः ॥ नवि अच्छि नवि अहोहि,पाएण तिहुअणंमि सो जीवो ॥ जो जुव्वण मणुयत्तो, वियारहीउ सया होइ ॥ इति ॥ १ ॥ तथा (वियद्दो के०) विदग्ध एटले दक्ष होय एटले तरुण तथा सुखी होय परंतु जो विदग्ध एटले दक्ष चतुर न होय तो तेने गीतादिक वल्लन न होय माटे जेम तरुण तथा सुखी कह्यो तेम वली माह्यो चतुर पण कह्यो ॥ यतः ॥ भणी न जाणे गणी न जाणे,ऊंचो बेठो माले ॥ महीषी आगल किन्नर गाये, ऊंघे ने उंगाले ॥१॥ तेमाटे विदग्ध पण कह्यो वली कहेवो होय ? तोके (रागी के०) वसंत भैरवादिक छत्रीश राग तथा ते रागनी मूर्छना तथा रुषभ प्रमुख सात स्वर, त्रण ग्राम, त्रण मात्रा प्रमुखनो जाण होय,

तेने रागी कहीयें जेमाटे कोइ विदग्ध होय पण जो राग रागणीनो जाण न होय तोपण तेटली तेमां चतुराइ न्यून कहेवाय. केम के सर्वे चातुर्यमां रागनुं चातुर्य आवडवुं ते अत्यंत दुष्कर छे,तेमाटे ते रागनो जाणनारो पण होय ए पण विशेषण लीधुं,वली कहेवो होय? तोके जेम श्रीरामचंद्रने सीता वल्लन्न हती, पांमवोने द्रौपदी वल्लन्न हती, श्रीकृष्णने राधा, ईश्वरने पार्वती, इंद्रने इंद्राणी, नल राजाने दमयंती राणी, अत्यंत वल्लन्न हती तेम ते पण (पियपणयिणी के०) अत्यंत प्रिय एवी प्रणयिनी एटले स्त्री तेणे करी (जुत्त के०) युक्त होय एटले मुख तो पूर्णचंद्राकार होय, नाल अर्द्धचंद्र समान होय, होठ प्रवालाना रंग जेवा होय, नासिका दीपशिखा समान होय, तथा मुखमांहे जाणे हंसनी पंक्तिज बेठी होय नहिं? एवा दांत होय,विशाल नीलोत्पल समान नेत्र होय, कामराजाने हिंचकवाना हिंमोला सरखा कान होय, तेमज हार, अर्द्धहार, कुंमल, बाजुबंध, कटिमेखला, कंकण, मुद्रिका, नेपुर आदिक अनेक आन्नरणें करी अलंकृत होय,एवी स्त्री ते पूर्वोक्त पुरुषनी पासें बेठी थकी पाननी बीडी करी आपती होय, कटाक्ष बाणें करी मारती होय, एवो पुरुष (जह के०) जेम (सुरगीयं के०) सुर जे देवता तेहना गीत प्रत्यें (सोउं के०) सांनलवाने (इच्छइ के०) इछे छे एटले मनुष्यने देवतानां गीत क्यांथी सांनलवामां आवे तेमाटे जेवा देवतानां गीत होय तेवां गीत सांनलवानी इछा करे. एवो अर्थ करवो ए जेम पूर्वोक्त तरुणादि गुणवालो ते देवता संबंधी गीत सांनलवानी इछा करे तेम उत्तम श्रावकने (तउहिया के०) तेथकी पण अधिक (समय के०) सूत्र सिद्धांत तेने विषे (सुस्सूसा के०) शुश्रूषा एटले सांनलवानी इछा होय ॥ १४ ॥

हवे ए शुश्रूषा धर्म उपरें सुंदर्शनशेठ अने अर्जुनमालीनो दृष्टांत कहे छेः— एहज जंबूद्वीपें दक्षिणन्नरतक्षेत्रने विषे मगधदेशें राजगृही नगरीमां श्रेणिकराजा राज्य करे छे, तेनो अन्नयकुमार मंत्रीश्वर छे, ते राज्यनीति चलावे छे. तिहां अर्जुन नामें एक महर्द्धिक माली वसे छे. ते प्रतिदिन जलपानानिग्रह संयुक्त पोतानो कुलदेवता मुजरपाणि नामें यक्ष छे, तेनी पूजा करे छे. एकदा प्रस्तावें ते माली हाथमां करंमीयो लइ पोतानी न्नार्या सहित फूल लेवाने माटे उद्यानमां गयो, तिहां फूल लइ यक्ष प्रत्यें पू

जवा निमित्तें देवगृहमांहे पेठो, एनी बंधुमती नामें स्त्री अत्यंत रूपें करी सुंदर छे.

एवामां राजगृहनगरीने विषे छ गोष्ठील पुरुष वसे छे. ते सात व्यसनना सेवनारा छे, तेउ अर्जुनमालीनी स्त्रीने घणा दिवसथी ताके छे, पण अ वसर पामता नथी. ते आजे अवसर पामी मुङ्गरपाणि यक्षना देरासरमां हे छाना रह्या छे, ते जेवो अर्जुनमालीयें देरासरमां प्रवेश कर्यो, तेवोज ते छ पुरुषें तेने हालीचाली शके नहिं. एवा आकरा बंधने बांध्यो, अने ते मालीने देखतां तेनी स्त्री बंधुमती साथें भोग भोगवा लाग्या, ते देखी मालीने घणो क्रोध चड्यो, पण करे शुं? जे पोतें बांध्यो पड्यो छे उठी शक्तो नथी ॥ यतः ॥ सह्यंते प्राणिभिः सर्वैः, पितृमातृपराभवाः ॥ भार्यापराभवं सोढुं, तिर्यंचोऽपि नहि क्षमाः ॥ १ ॥

पछी ते माली, यक्षप्रत्यें उलंभो देवालाग्यो के हे यक्ष! तुं म्हारो कुलदेवता छो, तह्मारी प्रतिदिवस हुं पूजा करुं छुं. तेम छतां तह्मारा देखतां मुझने बंधने बांधीने म्हारी स्त्रीनी साथें स्वेछायें रमे छे, तेथी हुं जाणुं छुं जे तुझमां कांइ शक्तिज नथी निरर्थक हुं पाषाणज पूजुंछुं. एवुं सांभलतां ज यक्ष कोपायमान थयो थको मालीना शरीरमांहे संक्रम्यो तेवारें जेम सडेली दोरी त्रोडी नाखीयें तेम ते बंधन त्रोडी नाख्यां, अने पल्यसहस्र प्रमाण लोहनो मुजर यक्षनी प्रतिमाना हाथमां हतो ते एणे हाथमां ली धो, ते मुजरें करी बंधुमती सहित छ गोष्ठीलपुरुषने मारी नाख्या, पछी प्र ति दिवस छ पुरुष अने एक स्त्री एम सात माणसने मारे, तेवारें क्रोध उपशमे, तेथी आखी राजगृही नगरीमां हाहाकार थयो. राजायें पडह वजडाव्यो के ज्यांसुधी अर्जुन माली सात माणसने मारीने पोताने स्थानकें न गयो होय, तिहांसुधी कोइ माणसे बाहिर निकलवुं नहीं. एम छ महीना वीत्या.

एवामां नामे पण सुदर्शन अने परिणामें पण सुदर्शन एवो सुदर्शन नामे शेठ तिहां वसे छे. ते धर्मने विषे परमरागी छे आगम सुणवाने रुचि वंत छे, दश प्रकारना मिथ्यात्वनो छांन्डनार छे, हवे ते सुदर्शनशेठ भगवं त आव्या सांभली मातपिता प्रत्यें महाकष्टें समजावीने प्रभुने वांदवा नि कल्यो. तेवामां यक्षावेशें अर्जुनमाली पण हाथमां मुजर उपाडीने सुदर्शन शेठने मारवा दोड्यो तेने आवतो देखी उत्तरासंगें भूमिका पूंजी भगवंत

ने नमस्कार करी,अरिहंतादिक चारनुं शरण करी चोराशी लाख जीवायो नि खमावी, अढार पापस्थानक आलोइ, नंदी, सागारिक अणसण करी, महासमाधिवंत थको उपशमनो आगार, सकलगुणसागर एवो थको काउ स्सग्गें ऊजो रह्यो. तेना महिमाथकी ते यक्ष मुजर लेइ मालीना शरीरमां थी निकली पोताने स्थानकें गयो, तेथी ते माली अचेतन काष्ठनी पेठें निःसत्त्व थइ धरतीयें पड्यो, तेवारें सुदर्शनशेठ काउस्सग्ग पारी माली पासें जइ तेने शीतलोपचारें करी सावधान कस्यो, तेथी माली ऊठी उजो थयो अने कहेवा लाग्यो के, हे शेठ ! तमें क्यां जाउ ठो ? शेठें कह्युं के, हुं उद्याननें विषे श्रीमहावीर देव पधास्या ठे तेने वांदवा तथा तेनी पासें धर्म सांजलवा जाउं छुं. माली कहेवा लाग्यो मुजने पण धर्म सांजलवानी अने जगवंतनां दर्शन करवानी इछा ठे, माटे मने पण तेडी जाउ. तेवा रें सुदर्शन शेठ तथा माली बेहु जण समवसरणें गया. तिहां प्रजुने वांदी ने यथायोग्य स्थानकें बेठा,बार पर्षदा मली. जगवान् पण देशना वचना मृतसुधारस वरसाववा लाग्या. मालीने वैराग्य उपन्यो अने सोचना कर वा लाग्यो. जे एवडुं में पाप कस्युं, माटे हा हा इति खेदे हुं नरकें जइश ! ! !

॥ यतः ॥ जय के जिवा सोयणिया,जवंति गोयमा अपामिय जिणदिस्का उ, असुअसिद्धंत वयणाउ, अबोहिलाजाउ, अकयधम्माउ, अगहियअणु व्वयाउ. अठ मय पंच पमाय चउक्कसाय संजुत्ताउ,अखामिय सव्वजीवाउ,अ णालोइय सव्व पावाउ, जे जीवा परलोयं गछंति, ते सोयणिया हवंति, ज उ अणंत संसारे सयल डुहनिदाणे, निच्चं हं अणुहवंता चिठंति.

हवे जगवंत अर्जुनमाली प्रत्यें कहे ठे के, हे अर्जुन ! तुं शोच म कर. हजी सावधान था. यतः ॥ पछावि ते पयाया, खिप्पं गछंति अमर जव णाइं ॥ जेसिंपिउजवोसं,जमोय खंतिय बंजचेरं च ॥ १ ॥ जेमाटे दीक्षा ल इ तप करीने कर्मक्षय करवाने तुं समर्थ ठे, एवुं जगवंतनुं वचन सांजली अर्जुनमालीयें दीक्षा लीधी, ठठ अठम दशम डुवालसादिक तप करी, लो कना आक्रोश निंदा, प्रहारादिकनी कदर्थना प्रमुख खमतो थको ठ मही नामां बे महीनानुं अनशन करी शुक्ल ध्यानरूप अग्नियें करी आठ कर्म रूप काष्ठने बाली मोक्ष नगरें पहोतो.

सुदर्शन शेठ पण प्रतिदिन आगम श्रवण करतो साधु साध्वीने अश

न, पान, खादिम, स्वादिम, वस्त्र, पात्र, कंबल, औषध, जेषजादिक प्रति लाजतो थको श्रावकनां बार व्रत पालीने स्वर्गे गयो. ए आगम शुश्रूषाने वषे सुदर्शन शेठनो संबंध कह्यो ॥ १४ ॥

हवे अणुरागोधम्मसाहणे परमो, ए सम्यक्त्वनुं बीजुं लिंग वखाणीयें बैयें.

॥ कंतारुत्तिण दीउ, घयपुस्से जुत्तुमिब्बइ बुहिउ ॥ जह तह सद्दणुठाणे, अणुरागो धम्मराउत्ति ॥१५॥ अर्थः-(कंतारुत्तिण के०) कांतार जे अटवीउ तेने उतरी आव्यो एवो (दीउ के०) द्विज जे ब्राह्मण तेनें प्रायें जोजन वाहालुं होय यतः ॥ वाटिका यत्र लज्यंते, न दूरं पंचयोजनं ॥ मोदका यत्र लज्यंते, न दूरं दशयोजनं ॥ ते माटे ब्राह्मण कह्यो, हवे ते ब्राह्मण (घयपुस्से के०) घृतें करीने पूर्ण जेनी ऊपर एक आंगुलनो उत्तम साकरनो जुको होय,एवा घेवर प्रत्यें (जुत्तुं के०) जोकुं एटले जमवाने (इब्बइ के०) इब्बे बे. वली ते ब्राह्मण कहेवो होय? तो के (बुहिउ के०) क्षुधितो एटले जूख्यो होय जे कारण माटें धरायाने कोई खावानी वस्तु वल्लन न होय अने जूख्याने विशेषें वल्लन होयज. माटे जूख्यो कह्यो (जह के०) जेम ए अटवीथी उतरेलो अने जूख्यो एवो ब्राह्मण ते घेवर जमवानी इब्बा करे (तह के०) तेम एज दृष्टांतें श्रावकने (सद्दणुठाणे के०) जला अनुष्ठान एवा जे पडिक्कमण, पोसह, सामायिक, देवजक्ति, गुरुजक्ति, साधर्मिकनी जक्ति प्रमुख जलां कार्य तेनें विषे (अणुरागो के०) अनुराग होय चित्त संबंधिनी अंतरंग प्रीति होय. तेने (धम्मराउत्ति के०) धर्मराग कहीयें तिहां जे दृष्टिरागथी तथा लोकदेखामणीयें करे. ते लेखामां गणाय नहीं ॥ यतः॥ गुणाः सर्वत्रमान्याः स्युः,किंतु नाडंबरो महान् ॥ विक्रियंते न घंटाजिः, गैविः क्षिरविवर्जिता ॥ १ ॥ किंपरजणबहुजाणा, वणाहिं वरमप्प सक्कियं सुकयं ॥ इय जरह चक्कवट्टी,पसन्नचंदो य दिठ्ठंता॥१॥ तथा धम्मासद्धाएणं जंते जीवे किं जणइ, गोयमा धम्मासद्धाएणं सातासुक्खेसुविरज्झमाणे विहरइ ॥ आगारधम्मंचणं चयति, अणगारेणं जीवे सरीरमाणसाणं दुक्खाणं बेदण जेदण संजोगादिणं वोब्बेय करेइ. अव्वाबाहं चणं सुहं निवत्तेति ॥ १५ ॥

हवे एनें विषे आरोग्यद्विजनो दृष्टांत कहे बेः-उज्जयणी नगरीयें देवगुप्त नामा ब्राह्मण तेने घेर जगतने आनंदनी करनारी एवी नंदा नामें जा

र्या छे, ते स्त्री भरतारने विषय सुख भोगवतां एक पुत्र थयो, पण ते पूर्व कृत अशुभकर्मनें योगें रोगीयो थयो, तेना शरीरमांथी एके रोग जाय न हिं. तेथी लोकोयें तेनो रोगी ब्राह्मण एवुं नाम दीधुं ॥ यतः ॥ टुंटत्तं मूअत्तं, वहिरंते चेव चरकु हीणत्तं ॥ डुहियत्त डुप्पगत्तं,जीवहिं साफलं नेयं ॥१॥ तथा ॥ तिहिंगाणेहिं जीवा,असुभदाहाउ अत्ताए कम्मं पकरेंति तं जहा पाणे इवाइत्ता भवइ, सुसंवाइत्ता भवइ,तहारूवं समणं वा माहणं वा हिलित्ता, नंदित्ता, खिंसित्ता, गरहित्ता, अविमन्नित्ता, अमणुन्नेणं, अपीइकारगेणं, असणं पाणं खाइमं साइमेणं पडिलाभेत्ता भवइ ॥ इच्चेहिं गणेहिं जीवा असुभदीहाउ अत्ताए कम्मं पकरेंति ॥

हवे एकदा प्रस्तावें तेहने घेर साधु वहोरवा आव्या. तेवारें ब्राह्मणें पोतें उठीने रुडे अन्नपानें करी तेनी पडिलाभना करी ॥ यतः ॥ दानं स्वान्निजहस्तेन, मातृहस्तेन भोजनम् ॥ तिलकं गुरुहस्तेन, परहस्तेन मर्दनम् ॥ १ ॥ ते साधुने अन्न पान देइने पोताना रोगीपुत्रने तेडी साधुने वंदाव्यो, पगे लगाड्यो अने पूछवा लाग्यो के,स्वामी ! एवो कोइ औषध प्रसाद करो के जेथकी आ महारा पुत्रनें समाधि थाय. साधु बोल्या के गोचरीयें आव्या अमें कांइ पण कहीयें नहीं. माटें अमें जिहां उतरया छैयें. तिहां प्रस्तावें आवो. तो वांदजो.

वली ते ब्राह्मण बे पहोर पछी पुत्रने लइ साधुनी पासें गयो. तेमने साधुयें कह्युं के, एणे पाछले भवें प्राणिवध कीधो छे, तेनुं ए फल पाम्यो छे. जेमाटें ॥ वह मारण अप्भरकाणं, वाणं परधण विलोवणाईणं ॥ सव्व जहणो उदउ, दसगुणिउ इक्कसिकयाणं ॥ १ ॥ तेमाटे तमें हवे धर्म करो, के जेना पसायथी रोग नाश पामे. एम कही ते साधुयें एक साधुनो धर्म अने बीजो श्रावकनो धर्म एम बे प्रकारनो धर्म कह्यो. ते सांभलीने पिता पुत्रें बेहु जणे श्रावकधर्म अंगीकार करी बार व्रत उच्चरी साधुने वांदी,बेहु घेर आव्या. पछी जेम चिंतामणि रत्न पामीने तेनो आदर करियें,तेम ते बेहु समकेतरत्न पामीने आदर सहित धर्म आराधन करता हवा.

हवे एकदा प्रस्तावें इंद्रमहाराज सभामांहे ते ब्राह्मणोनी एवी प्रशंसा करवा लाग्यो के एमने कोइ पण धर्मथकी चलावी शके नहीं. एवा ते दृढधर्मी छे. ते सांभली बे देवता ते रोगीया ब्राह्मणनी परीक्षा करवा माटें

वैद्यनुं रूप धारण करी तेना घर आगल आव्या, अने कहेवा लाग्या के अमारुं औषध ले, तो तुऊने समाधि थाय. तेने ब्राह्मणें पूढ्युं के, कयुं औषध खवरावो ढे? तेवारे वैद्य बोल्या के, प्रथम प्रहरें मध खावुं, अने पाढले प्रहरें मद्यपान करवुं, तथा रात्रियें माखणमिश्रित कूरनो करंबो खावो, तेनी उपर वली मांस खावुं. एवा चारे अन्नक्ष्य विगयनां औषधो सांन्नलीने ब्राह्मण पोताना मनमां धूज्यो अने विचार्युं जे एवडुं महोटुं पाप करीने पढी नरकमां जइ पडवुं ढे, जे माटें ॥ मद्ये महुंमि मसंमि, नवणीयं चउबए॥ उवङ्कंति असंरका, तवणा तब जंतुणो ॥ १ ॥ ते माटें ए सावद्य औषध न करवुं. ए मने जे रोग थयो ढे, ते तो एकज न्नवमां डुःख आपनारो ढे, पण व्रतन्नंग करवानां माहापाप शास्त्रमां कह्यां ढे॥ यतः ॥ वयन्नंगे गुरुदोसो, थोवस्सवि पालणं गुणकरियं॥ गुरुलाघवं च नेयं, धम्मंमि अउंय आगारा ॥ १ ॥ इति पंचाशकसूत्रे ॥ ते माटें सर्वथा व्रतन्नंग नहींज करुं. एवो तेनो हठ जोइने माता, पिता तथा राजा प्रमुख वडेरा लोको कहेवा लाग्या के, तुं ए औषध कर के जेथी घणा कालना रोगनी समाधि थशे तो पढी नीरोगी शरीरथी घणा प्रकारना धर्मकार्य करीश, अने व्रतन्नंग थशे तेनुं प्रायश्चित्त लेंजे. तेवारें ब्राह्मण बोल्यो ॥ यतः ॥ जइ जीवियस्स इक्कस्स, कारणे हणइ जीव कोडीउ ॥ ताकी सासयन्नावं, तमिल्लपडिवङ्काएकहवि ॥ १ ॥ माटे जो एम करवाथी लान्न थतो होय तो सनत्कुमार नामा चोथो चक्रवर्ती हतो, तेणें शा माटें औषध कर्युं नहीं? पण तेणें एवुंज विचार्युं जे आ रणीयुं आव्युं ढे तेनो रण आपी समजावीने उगाडी मूकीयें? तों रूडुं थाय. तेम मुऊने पण ए रोग वेदवाथी पूर्वकृत कर्म क्षय थाय ढे, माटे सर्वथा सावद्य न करुं. पण रीश करी हांकी काहाढीयें, तो मातुं लागे, ते माटें ए कर्मनुं रुण आपी दइयें, तो रूडुं देखाय. एम कह्या नंतर वली पण देवोयें घणोये चलाववा मांड्यो पण सर्वथा रंचमात्र चलाय मान थयो नहीं. तेवारें देवो प्रगट थइ पगे लागी कहेवा लाग्या के, धन्य ढे तुऊने अने धन्य ढे तहारा दृढधर्मने, जेवी इंद्रमहाराजें तहारी प्रशंसा कीधी तेवोज तुं ढो. एवुं कही तेना शरीरसंबंधी सर्व रोग मटाडी तेना घरने विषे रत्ननी वृष्टि करी देवता पोताने स्थानकें गया. नगरमांहे श्रीजिनधर्मनी प्रशंसा

थइ. लोकोयें तेनुं आरोग्यद्विज एवुं नाम पाड्युं, ते ब्राह्मण घणा वर्ष प र्यंत श्रावकधर्म पाली स्वर्गे पहोतो. अनुक्रमें मोक्षमां पण जाशे. ए धर्म रागनी उपर आरोग्यद्विजनी कथा कही ॥

हवे देवगुवरुनुं वेयावच्च रूप समकेतनुं त्रीजुं लिंग कहे छेः—

॥ पूयाइए जिणाणं, गुरुणा विसमणाइए विविहे ॥ अंगीकारो निय मो ,वेयावच्चे जहा सत्ती ॥ १६ ॥ अर्थः—(जिणाणं के०) श्रीजिनेश्व रनी (पूयाइए के०) पूजा ते बे प्रकारें छे एक द्रव्यस्तवरूप अने बीजी नावस्तव रूप, तिहां श्रावकने तो द्रव्यस्तव अने नावस्तव ए बेहु उचित छे अने साधुने तो एकज नावस्तव उचित छे. इहां अष्टप्रकारी, सत्तर प्र कारी अने एकवीश प्रकारी पूजा आदिक ए सर्व द्रव्यस्तव कहीयें. यतः ॥ उक्कोसं दव्वथयं, आराहिय जाइ आवुअं जाव ॥ नावछएण पावइ, अं तमुहूत्तेण निवाणं ॥ १ ॥ तथापि द्रव्यस्तव जे छे, ते नावस्तवनुं कारण छे. ॥ यतः ॥ समयंमि दव्वसच्चो, पायंसोजो गया ए रूढो त्तिणि, रुवम च रित्तो बहुहा, पउंग नेउपलंनाउ ॥ १ ॥ मिउपिंमो दव्वघडो, सुसावगो तहय दव्वसाहुत्ति ॥ साहुय दव्वदेवो, ए माइजउ सुए नणियं ॥ १ ॥ ता नावछ पहेऊ, जो सो दव्वछउ इहं इछो ॥ जो पुणऐवं नूउ, सअप्पहाणो परं होति ॥ १ ॥ इति षष्ठे द्रव्यस्तव नावस्तव नामा पंचाशके ॥

जे साधु थइनें द्रव्यस्तव करे, ते आज्ञा विराधक थाय ॥ यतः ॥ न यवं जेणं केइ साहू वा साहुणीवा, निग्गंथे अणगारे दव्वछयं कुजा तेणं किं आलोवेज्जा ॥ गोयमा सेणं अजएवा, असंजए वा, देवनोइवा,देव गा चगे वा, जावणं उमग्गपए इवा, डुसप्पिय सीलेइवा, कुसीलेवा, सछंदचा रिएवा,आलो वेज्जा ॥ इति माहानिशीथे ॥ तेमाटें साधुने द्रव्यस्तव न कर वुं अनें श्रावकने द्रव्यस्तव कीधा पछी नावस्तव करवुं. ए देव आश्रयी कह्युं.

हवे (गुरुणाविसामणाइए के०)गुरुनो विश्रामणादिक (विविहे के०) विविध प्रकारनुं वेयावच्चनो अंगीकार करे,तेने विषे निश्चल होय एटले गु रुने यथाशक्तियें शुद्धमान अशनादिक आपवा तथा कारणें द्रव्य, क्षेत्र, काल, नाव, विचारीने तेमज पात्र, अपात्र, गीतार्थ, अगीतार्थ, प्रमुख उत्सर्ग अपवाद विचारीने जो सर्वथा शुद्धमान वस्तुनी अप्राप्ति देखाय, तो अशुद्धमान पण आणी आपे ॥ यतः ॥ संथरणंमि असुद्धं, डुएहंवि

गिलाणं तदित पाणहियं ॥ आउरदिंडं तेणे, ते चेवहिय असंघरणे ॥ १ ॥
तेने गुरुसंबंधि वेयावच्च कहीयें, तेने विषे (नियमो के०) नियम होय, एटले आटलुं वैयावच्च करवुंज एवो होय पण यथाशक्तियें नियम करे, केम के केटलाएकने द्रव्यनी शक्ति होय पण कायानी शक्ति न होय, तथा केटलाएकने कायशक्ति होय, पण द्रव्यनी शक्ति न होय. तेमज केटलाएकने द्रव्य अने काय बेहु शक्ति होय अने केटलाएकने बेहुमांहेली एके शक्ति न होय, तेमाटे यथाशक्तियें वेयावच्च करवुं कह्युं, पण यथा शक्तियें न करे तो तेनें दोष लागे ॥ १६ ॥

ए उपर दृष्टांतरूप कथा कहे बेः— माहाविदेहक्षेत्रें वज्रनाभ राजा चक्रवर्त्ती पदवी भोगवी वैराग्य पामी दीक्षा लइ चौद पूर्व भणी आचार्य पदवी पामी विहार करता हवा. तेना बाहु, सुबाहु, पीठ अने महापीठ, ए चार लघु भाइ बे, तेमणें पण दीक्षा लीधेली बे. अगीयार अंगना भणनारा बे. ते चारमां बाहुमुनीश्वर बे, ते पांचशें साधुनुं वेयावच्च करे, नित्यप्रत्यें यथेष्ट शुद्धमान अशनादिक गृहस्थना घरथी लावी आपे, लगारमात्र रीश न करे, अभिमान न करे, कोइने तुं कार रेकार न करे, देइने पश्चात्ताप न करे, ईर्ष्या न करे, पांचशें साधुने रूडां मिष्ट वचने बोलावी रूडा मिष्ट भातपाणी आपी संतोष पमाडे, अने सुबाहुमुनि महाभक्तिपूर्वक पांचशें साधुने विश्रामण करे.

अने पीठ तथा महापीठ ए बे साधु सद्यायध्यान काउस्सग्गादिक क्रिया करता थका सुखें चारित्र पाले, एकदा वज्रनाभ आचार्य बाहु अने सुबाहु ए बेहु साधुउना साचा गुणनी प्रशंसा करता थका कहेवा लाग्या के, माहारा गछने विषे ए बे साधु धोरी बे, जेमाटे बाहुसाधु तो पांचशें साधुउने अशनादिक शुद्धमान आहारें करी पोषे बे, अने सुबाहुमुनि पांचशें साधुनुं वेयावच्च करे बे. एवी गुरुना मुखथी यती प्रशंसा सांभलीने पीठ अने महापीठ, ए बे साधु मत्सर धरवा लाग्या जे आपना गुरु ए साधुउनाज गुणनुं वर्णन शुं करे बे ? एवी ईर्ष्या करता हवा. अने माया कपटथी वधारे तप करवा लाग्या. अंतें आचार्यसहित पांचे जण चारित्र पाली तपस्याकरी बेहेले अनशन करी सर्वार्थसिद्धि विमाने पहोता. तिहांथी चवीने वज्रनाभनो जीव, श्रीआदिनाथ प्रथम तीर्थंकर थया अने

बाहुनो जीव चवी जरतचक्रवर्त्ती थयो. तथा सुबाहुनो जीव चवी बाहुबली थयो. तथा पीठनो जीव चवी जरतचक्रवर्त्तीनी सुंदरी नामें जगिनी थइ. तथा महापीठनो जीव बाहुबलीनी जगिनी थइ. ईर्ष्या कस्या माटे मायातपना प्रजावें स्त्रीवेद पाम्या ॥

जरतनो जीव, पांचशें साधुनी जक्ति करवाथी चक्रवर्त्तीनी पदवी पाम्यो. अने आ अवसर्प्पिणीमां प्रसादप्रतिष्ठा बिंबप्रतिष्ठाने विषे तथा संघवीनां तिलकने विषे आदि करी अने बाहुबल पांचशें साधुनुं वेयावच्च करवाथी अतुल पराक्रमी थयो. संग्राम करतां जरतचक्रवर्त्तीने पण हराव्यो, अने तेणें वैराग्य पामी दीक्षा लीधी. तेमज ब्राह्मीयें पण श्री ऋषजदेव पासेंथी दीक्षा लीधी अने सुंदरी दीक्षा लेती हती. तेने जरतचक्रवर्त्तीयें रूपसुंदर जाणी स्त्रीरत्न करवा माटें दीक्षा लेवा न दीधी पण जरतदिग्विजय करवा गया पठी सुंदरीयें श्रीऋषजदेवने पूठ्युं जे, स्त्रीरत्न मरीने क्यां जाय ? जगवानें कह्युं के, ठठी नरकें जाय. ते सांजली खेद पामी थकी साठ हजार वर्षपर्यंत आंबिल तप कस्युं तेथी शरीर डुर्बल थइ गयुं, जरत आव्या पठी डुर्बलतानुं कारण कुटुंबीयोना मुखथी सांजली सुंदरीने दीक्षा लेवानी इह्वा जाणी आज्ञा आपी, पोतें वैताढ्यथी स्त्रीरत्न लाव्या. अनुक्रमें पांचे जीव मोक्षें पहोता माटे वेयावच्चना एवां फल जाणी गुरुनुं वेयावच्च करवुं. ए सम्यक्त्वना त्रण लिंगनो बीजो अधिकार कह्यो.

इति श्रीतपागह्लीय शांतिचंड्गणिशिष्य रत्नचंड्गणिविरचित श्रीसम्यक्त्वरत्नप्रकाश नामनि श्रीसम्यक्त्वसप्ततिकाप्रकरणबालावबोधे सम्यक्त्वलिंगत्रयस्वरूपनिरूपणनामा द्वितीयोऽधिकारः संपूर्णः ॥ २ ॥

हवे दशप्रकारना विनय करवारूप त्रीजो अधिकार कहीयें ठैयें.

॥ अरिहंत सिद्ध चेइय,सूएय धम्मेय साहुवग्गेय ॥ आयरिय उवद्याए, पवयणे दंसणे विणउ ॥ १७ ॥ अर्थः—एक अरिहंतनो विनय, बीजो सिद्धनो विनय, त्रीजो चैत्यनो विनय, चोथो (सूएय के०) द्वादशांगीरूप श्रुतनो विनय, पांचमो धर्मनो विनय. ठठो (साहुवग्गेय के०) साधुवर्गनो विनय, सातमो आचार्यनो विनय, आठमो उपाध्यायनो विनय, नवमो प्रवचननो विनय अने दशमो (दंसणे के०) दर्शन एटले सम्यक् दर्शन तेनो (विणउ के०) विनय जाणवो ॥ १७ ॥

१ श्रीसीमंधरादिक वीश विहारमान तीर्थंकरनां नामस्मरणादिकें करी, तेमना चरित्र वांचवे करी, गुणस्तुति करवे करी, जे भक्ति करवी ते अरिहंतनो विनय जाणवो.

२ नमो सिद्धाणं ए पद गणवे करी सिद्धनी अवस्था ध्यायी पूजा करवे करी सिद्धनो विनय थाय.

३ चैत्योद्धार करवे करी,प्रसाद करावबे करी, बिंबप्रतिष्ठा,बिंबपूजा, बिंबने मल टालवे करी, सत्तरभेदें पूजा करवे करी, बिंबने राज्यभय, अग्निभय, जलभयादिकथी राखवे करी, चैत्यपुंजवे करी, चैत्यने चुनादिकथी घोलवे करी एम अनेक प्रकारें चैत्यनो विनय जाणवो ॥

४ श्रुतलखाववे करी, पुस्तक साचववे करी,पुस्तकने शोधवे करी, ज्ञान भणवे भणाववे करी, पाठां पूंजणी रुमाल विटांगणा प्रमुख पुस्तकना उपकरण करवे करी, पुस्तकने अग्निभय जलभयादिकथी राखवे करी इत्यादिक अनेक प्रकारें श्रुतनो विनय थाय.

५ धर्मनी प्रशंसा करवे करी, मुग्धजनने धर्म पमाडवें करी, धर्मनी स्थापना करवे करी, पौषध सामायिक प्रमुख धर्म करवे करी, श्रावकना द्वादश व्रत पालवे करी, दशविध यतिधर्म पालवे करी धर्मनो विनय जाणवो.

६ साधुवर्गने अशनादिक आपवे करी,वातादिक विकारें तेलमर्दनादिक करवे करी,रोग उपने थके वैद्य तेडी लावी औषध कराववे करी,सन्निपातादिक रोगविशेषें आकरी चिकित्सा कराववे करी,परिश्रांत साधुने विश्रामण करवे करी,कांटा काढवे करी,ए रीतें विचित्र प्रकारें साधुवर्गनो विनय जाणवो.

७ आचार्य आवते थके तेमनी साहामा जाववे करी, कर्पूर तथा सुवर्णादिकना पुष्पोथी पूजवे करी, ग्रीष्मरुतुने विषे विलेपन करवे करी, आचार्यने योग्य एवा शुद्धमान वस्त्रादिक वहोराववे करी, आचार्य आवे थके उभा थावे करी, पुस्तक लखावीने आपवे करी, गुणप्रशंसा करवें करी इत्यादि अनेक प्रकारें आचार्यनो विनय जाणवो ॥

८ उपाध्यायनो विनय पण आचार्यनी पेठेंज जाणवो.

९ प्रवचननी प्रशंसा करवे करी, प्रवचननो उड्डाह टालवे करी, प्रतिष्ठादिक महोटा कार्य करवे करी, प्रवचनने दीपाववे करी, राजा तथा महन्यने प्रतिबोधवें करी इत्यादि अनेक प्रकारें प्रवचननो विनय थाय.

१० निःशंकितादिक गुणें करी शुद्धसमकित पालवाथी, नवा व्यवहा रीयाने प्रतिबोधी तेने समकेत आपवे करी,सम्यक्त्वना भूषणनुं स्वरूप जाणीने तेने आदरवे करी तथा सम्यक्त्वना दूषणनुं स्वरूप जाणी तेने परिहरवे करी दर्शननो विनय जाणवो. ए दश प्रकारनो विनय जाणवो ॥

हवे चार गाथायें करी ए दशनुं स्वरूप समजावे छे.

॥ अरिहंता विहरंता, सिद्धा कम्मरकया सिवं पत्ता ॥ पडिमाउ चेइआइं, सुयं तु सामाइया ईयं ॥ १८ ॥ धम्मोचरित्त धम्मो, आहारो तस्स साहुवग्गत्ति ॥ आयरिय उवज्झाया, विसेस गुणसंपया तह ॥ १९ ॥ पवयणमसेस संघो, दंसण मिछंति इछ सम्मत्तं ॥ विणउ दस्सएहिमेसि, कायवो होइ एवं उ ॥ २० ॥ भत्तिबहुमाणोवन्न ,जणण नासण मवस्रवायस्सं ॥ आसायण परिहारो, विणउ संखेवउ एसो ॥ २१ ॥ अर्थः-(अरिहंता के०) अरिहंत ते कोने कहीयें जे (विहरंता के०) विहरमान तीर्थंकर सीमंधर प्रमुख जे कालें जे विचरता होय,तीर्थंकर नामकर्म उदय प्राप्त थयुं होय, समवसरणादिक ऋद्धि भोगवता होय, तेने अरिहंत कहीयें. यतः ॥ सत्तरिसयमुक्कोसं, जहन्न वीसम्मदस विहरंति ॥ जम्मंपइ उक्कोसं,वीस दस हुंति हु जहन्ना ॥ १ ॥ इति ॥

(सिद्धा के०) सिद्ध कोने कहीयें ? के जे (कम्मरकया के०) अष्टकर्मनो सर्वथा क्षय करीने (सिवंपत्ता के०) मोक्ष नगरें पहोता तेने सिद्ध कहीयें ते " जिणअजिणतिछतिछा " ए गाथाथी पन्नर भेदें जाणवा.

३ (पडिमाउ चेइयाइं के०) चैत्य ते प्रतिमा जाणवी, ते प्रतिमाने बेसवानां जे घर तेनें पण चैत्य कहीयें ॥ यतः ॥ देवेसु कोडिसयं, कोडी बावन्न लरक चउणवइ ॥ सह चउआलीसं,स त्तसया सिद्धि अप्पहिया ॥१॥ लरकतिगं एगनउइं,सहस्स विसाहिया य तिन्निसया ॥ जोइसिय वज्झिऊणं, तिरिय जिणबिंब संखइमा ॥ २ ॥ तेरस कोडि सयाइं, गुण नउइ कोडि सहि लरकाई ॥ भवणपईणं मझे, जोइसिएसु य असंखा ॥ ३ ॥ कोडि सयाइ पनरस, कोडी बायाल लरक अडवन्ना ॥ लरका बत्तीसंपुण, असीइ अहियाउ सवग्गं ॥ ४ ॥ ए शाश्वती प्रतिमानुं मान जाणवुं. ज्योतिषना विमानो असंख्यातां छे, तिहां चैत्य तथा जिनप्रतिमा पण असंख्याती छे.

४ (सुयंतु के०) श्रुत ते वली (सामाइयं ईयं के०) करेमि भंते सामाइयं

थी मांमीने यावत् दृष्टिथी वाद पर्यंत जाणवुं. आचारांगादिक अगीयार अंग अने बारमो दृष्टि वाद, ए सर्व श्रुत जाणवुं ॥ १७ ॥

५–६ (धम्मो के०) धर्म ते (चरित्तधम्मो के०) चारित्रधर्म जाणवो ढो (तस्स के०) ते चारित्रधर्मनो (आहारो के०) आधार ते (साहुवग्गत्ति के०) साधुनो वर्ग ढे इति एटले एम जाणवो. जे कारण माटें जेवारें कोइ पण साधु न पामीयें, तेवारें चारित्रधर्म पण न पामीयें, अने जेवारें साधु पामीयें, तेवारें चारित्रधर्म पण पामीयें ॥ यतः ॥ पुरिमंतिम अठठं, तरेसु तिब्रस्स नछि वुब्रेउ ॥ मझिवएसु सत्तसु, इतिय कालं तु वुब्रेउ ॥ १ ॥ चउनागं चउनागो, तिन्निय चउनाग पलिय चउनागो ॥ तिन्नेव य चउनागो, चउब्रनागोय चउनागो ॥ २ ॥ इति प्रवचनसारोद्धारे ॥

७ (आयरिय के०) आचार्य ते जे ज्ञानाचारादिक पंचाचार पालवाने विषे तत्पर होय, ढत्रीश गुणें करी बिराजमान सुविहित शुद्धप्ररूपक, सारणा, वारणा चोयणा पडिचोयणाने विषे तत्पर सांप्रत विजयमान,तपागच्छाधिराज श्रीविजयसेनसूरि पट्टालंकारहार हीर श्रीविजयदेवसूरीश्वर प्रमुख जाणवा ॥ यतः ॥ सम्मत्त नाण चरणा, पत्तेयं अठअठ नेइज्ञा ॥ बारस्स नेउ य तवो, सूरि गुणा हुंति ढत्तीसा ॥ १ ॥ अथवा ॥ आचाराइ य अठउ,तहचेव दसविहो उ ठियकप्पो ॥ बारस तव ढावस्सग, सूरिगुणा हुंति ढत्तिसं ॥ २ ॥ इति प्रवचनसारोद्धारे. ए ढत्रीशीयो घणा प्रकारें ढे.

८ (उवझाया के०) उपाध्याय ते जेनी पासें आवीनें सूत्र नणीयें, ते जाणवा. (तब के०) तिहां आचार्य अने उपाध्यायने विषे साधु थकी (विसेसगुणसंपया के०) विशेष गुण संपदा ढे, माटें साधुथकी जूदा कह्या ढे ॥ यतः ॥ पडिरूवो तेयस्सी, जुगप्पहाणंगमो महुरवक्को ॥ गंनीरो धीइमंतो, उवएसपरो य आयरीउ ॥ १ ॥ अपरिस्साविं सोमो, संगहसीलो अनिग्गह मईय ॥ अविकंचणो अचवलो, संपंत हियउ गुरू होई ॥ २ ॥ एवा श्रीआचार्य नगवान् तेना पदने जे योग्य होय,तेहने उपाध्याय पद देवाय. तेमाटें उपाध्याय पण एवाज गुणवंत जोइयें ॥ १९ ॥

९ (पवयण के०) प्रवचन ते (असेससंघो के०) अशेष एटले समस्त श्रीसंघनें कहीयें जेमाटें साधु, साध्वी, श्रावक, अने श्राविका, ए चारे श्रीतीर्थंकरनी आज्ञा पाले आज्ञायुक्त होय ते प्रवचन कहीयें ॥ यतः

॥ एगो साहु एगा, य साहूणी सावउ य सढीवा ॥ आणाजुत्तो संघो, सेसो पुण अहि संघाउ ॥ १ ॥ तो सगचूउ सूरि, डुप्पसहा साहुणीय फग्गुसिरी ॥ नाइलसड्ढो सढी, सवसिरी अंतिमो संघो ॥ २ ॥ दसपालिय जियकप्पा, वस्सय अणुउगदार नंदिधरो ॥ सययं इदाइनउ, छहुग्ग तवो दु हब तणू ॥ ३ ॥ गिहिवय गुरुत्त बारस्स, चउ चउ वरिसोकयछमो अंते ॥ सोहम्मि सागराऊ, होई तउ सिज्झिहि नरहे ॥ ४ ॥ सुयसूर संघ धम्मो, पुवण्हे छिज्जहीय गणिसायं ॥ निवविमलवाहणो सुहु,म मंति नयधम्म मझण्हे ॥ ५ ॥ वीसाणवास सहसा, नवसय तिमास पंचदिण पहरा ॥ इक्का घडिया दो पल, अरकर इगुयाल जिणधम्मो ॥ ६ ॥ इबं डुस्सम कालो, होइ इगवीस वास सहसेहिं ॥ डुस्सम डुस्सम कालो, एवइ माणोय नायवो ॥ ७ ॥ इति दीवालीकल्पे ॥ तेमाटें तीर्थंकरनी आज्ञा रहित जो घणोए संघ होय, तो पण तेने असंघ कहीयें. एटले टोलुं कहीयें.

१० (इबं के०) ए श्रीजिनशासनने विषे सिद्धांतना जाण पुरुषो छे, ते (दंसणमिबंतिसम्मत्तं के०) समकेतदर्शनने इबंति एटले वांछे छे,ते समकेत क्षायिकादिक पांच नेदें जाणवुं. जेमाटें जे शुद्धदेवने देवबुद्धियें, गुरुने गुरुबुद्धियें अने धर्मने धर्मबुद्धियें ग्रहण करे, तेने सूधुं समकेत कहीयें ॥ (विणउदस्सणहिमेसि के०) दशनो विनय यथायोग्य पणे जेहनो जेम करवो घटे, तेनो तेम विनय (कायवोहोइ के०) करवो होय ते (एवंतु के०) ए आगल कहेशे ते चार प्रकारें विनय करवो ॥ २० ॥

हवे चार प्रकारें विनयकरवो कह्यो, ते चार प्रकार कहे छेः–

एक (नत्ति के०) नक्ति करवे करी, बीजो (बहुमाणो के०) बहुमान करवे करी, त्रीजो (वन्नजणण के०) वर्णजनन ते प्रशंसा करवे करी,अने (नासणमवन्नवायस्स के०) अवर्णवादनुं नासण एटले टालवुं ते करवे करी एटले अवर्णवादने अणबोलवे करी,चोथो (आसायणपरिहारो के०) आशातनाना परिहारने करवे करी, (विणउसंखेवउएसो के०) ए विनय में शंक्षेपथकी कह्यो. बीजा ग्रंथोनें विषे विस्तारें छे पण इहां अल्पमति तुछमति जीवोने संक्षेपें कहीयें तो समजे माटे संक्षेपें कह्यो ॥ २१ ॥

हवे ए चार नेदनां लक्षण कहे छेः–

नत्ति बहिं पडिवत्ति, बहुमाणो मणसि निब्नरापिई ॥ वन्नजणणं तु तेसिं,

अइसयगुण कित्तणाईर्हि ॥ २२ ॥ उड्डाह गोवणाई, जणियं नासण मवस्सु वायस्स ॥ आसायण परिहारो, उचियासण सेवणाईर्हि ॥ २३ ॥ अर्थः— (जत्तिबर्हिपडिवत्ति के०) जे बाह्यप्रतिपत्ति करवी ते जक्ति कहीयें. जेम के उठी उजा थावुं. अशन,पान,खादिम,स्वादिमनो खप करी आणी आपवुं, पग धोवा, विश्रामणा करवी, तैलमर्दनादिक करवुं, औषध नैषज्य आणी आपवुं. इत्यादिक जेहने जे योग्य होय तेनी तेप्रमाणें जक्ति करवी. ते बाह्यप्रतिपत्ति जक्ति कहीयें ॥ यतः ॥ न देवपूजा न च पात्रदानं, न श्राद्धधर्मश्च न साधुधर्मः ॥ लब्ध्वापि मानुष्यमिदं समस्तं, कृतं मयारण्यविलापतुल्यम् ॥ १ ॥ इति ॥

२बीजो (बहुमाणोमणसिनिप्परापीई के०) बहु मान ते मनसि एटले मनने विषे निर्जर अंतरंग प्रीति राखवी केम के बहुमान विना जे कांइ करवुं ते सर्व निरर्थक जाणवुं ॥ यतः ॥ आकर्णितोपि महितोपि निरीक्षितोपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोसि जक्त्या ॥ यातोस्मि तेन जनबांधव दुःखपात्रं, यस्मात् क्रियाः प्रतिफलंति न जावशून्याः ॥ १ ॥

३ (तु के०) वली (तेसिं के०) तेनुं एटले पूर्वोक्त अरिहंतादिक दशेनुं (वन्नजणणंतु के०) वर्ण जनन एटले प्रशंसा करवे करी,श्रीजिन शासननी दीप्ति करवी (अइसयगुणकित्तणाईर्हि के०) अतिशय गुणते जे मांहे जे दीप्ता गुण होय तेना कीर्तनादिकें करी दीपावी देखाडवा ॥यतः॥ पंचर्हि ठाणेर्हि जीवा सुलजबोहियत्ताए कम्म पकरेंति तं जहा ॥ अरिहंताणं वन्नवयमाणे, अरिहंत पन्नत्तस्स धम्मस्स वन्नवयमाणे, आयरिय उवद्यायाणं वन्नवयमाणे, चाउवन्नस्स संघस्स वन्नवयमाणे, विवक्क तव बंजचेराणे देवाणं वन्नवयमाणे ॥ २२ ॥ तथा

(उड्डाहगोवणाई के०) उड्डाहने गोपवादिकें करी विनय थाय एम (जणियं के०) कह्युं छे एटले श्रीजिनशासननो उड्डाह सर्वथा ढाकवो पण प्रगट न करवो कदापि कोइवारें प्रगट थयो होय तो पण टालवो ॥ यतः ॥ चेइय दव्व विणासे, इसिघाय पवयणस्स उड्डाहे ॥ संजइ चउब्जंगे, मूलग्गी बोहिलाजस्स ॥ १ ॥ तथा (नासण मवस्सुवायस्स के०) अवर्णवादनुं नासण एटले टालवुं सर्वथा अवर्णवाद न बोलवो ॥ यतः ॥ किंजीवा देवकिब्बिसियत्ताए उववत्तारो जवंति. गोयमा जे इमे आयरि

य पडिणिया, उवज्झाय पडिणिया, गण पडिणिया, संघ पडिणिया, आयरिय उवज्झायाणं अयसकरा, अवन्नकरा, अकित्तिकरा, बहुहे असप्भावुप्भावणाहिं मिछत्ताभिणिवेसेहिय अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा, बहुहिं वासाइं सामणपरियाय पाउणंति पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कमितिए सुवा तिसागरोवम ठितिएसुवा तेरससागरोवम ठितिएसु वा ॥ इति जगवत्यंगे ॥

४ (आसायणपरिहारो के०) आशातनानो परिहार करवो, पूर्वोक्त अरिहंतादिक दशनी आशातना न करवी, तेमां जेहनी जेवी रीतें आशातना लागती होय तेनी तेवीरीतें आशातना करवानो परिहार एटले त्याग करवो. जेम जिनमंदिरनी जघन्यथी तांबूलादिक दशआशातना तथा उत्कृष्टी खेल आदिक चोराशी आशातना टालवी, तथा १ अरिहंताणं आसायणाए २ सिद्धाणं आसायणाए ३ आयरियाणं आ० ४ उवज्झायाणं आ० ५ साहूणं आ० ६ साहूणीणं आ० ७ सावयाणं आ० ८ सावियाणं आ० ९ देवाणं आ० १० देविणं आ० ११ इहलोगस्स आ० १२ परलोगस्स आ० १३ केवलिपन्नत्त धम्मस्स आ० १४ सदेव मणुआ सुरलोगस्स आ० १५ सव्व पाणनूअ जीव सत्ताणं आ० १६ कालस्स आ० १७ सुयस्स आ० १८ सुयदेवयाए आ० १९ वायणायरियस्स आ० ॥ २० जंवाइद्ध आ० २१ वच्चामेलियं आ० २२ हीणक्करं आ० २३ अच्चक्करं आ० २४ पयहीणं आ० २५ विणयहीणं आ० २६ जोगहीणं आ० २७ घोसहीणं आ० २८ सुठुदिन्नं आ० २९ डुठुपडिछियं आ० ३० अकाले कउ सज्झाउ आ० ३१ काले न कउ सज्झाउ आ० ३२ असज्झाए सज्झायं आ० ३३ सज्झाए न सज्झायं आ० ए तेत्रीश आशातना जाणवी. तथा गुरु संबंधिनी तेत्रीश आशातना जे जाष्य सूत्रादिकने विषे कही छे, ते पण त्यागवी ॥ यतः ॥ आसायण मिछत्तं, आसायण वज्जणाउ सम्मत्तं ॥ आसायणा निमित्तं, कुवइ दीहं च संसारे ॥ १ ॥

हवे ए आशातनानो परिहार केम करवो? ते कहे छेः—(उचियासणसेवणाईहिं के०) उचित एटले योग्य एवा आसनने सेवनादिकें करी करवो यतः ॥ वंदंतिजिण दाहिण, दिसिठिया वाम पुरिस दिसि नारी ॥ नवकर

जहन्नु सहि,कर जिठ मज्जुग्गहो सेसो ॥ तथा ॥ चउदिसि गुरुग्गहो इह,अहु ठ तेरस करे सपर पक्के ॥ अणनुन्नाय ससज्जा,न कप्पए तज्ज पविसेउं ॥२३॥

॥दसभेय विणय मेयं, कुणमाणो मणुवोवि गयमाणो ॥ सद्दहइ विणय मूलं, धम्मंति विसोहए सम्मं ॥ २४ ॥ अर्थः–(दसभेयविणयमेयं के०) ए दश भेदनो विनय ते प्रत्यें (कुणमाणो के०) करतो थको एवो (म णुवो के०) मनुष्य उत्तम भव्यजीव ते कहेवो होय? तोके (विगयमाणो के०) विगतमान एटले गयुं छे अभिमान जेनाथकी एवो होय ॥ यतः ॥ कोहो पीई पणासेइ, माणो विणय नासणो ॥ मायामित्तिणि नासेइ, लोहो सव्वविणासणो ॥ १ ॥ तथा ॥ मर्द्दयमानमत्तगजदर्प्पी, विनयसरीरविना शनसर्प्पी ॥ क्लिणोदर्प्पद्वेषवादनोपी, यस्य न तुल्यो भुवनेऽकोपि ॥ २ ॥ ए आमराजाने अभिमान टालवा माटे बप्पभट्टसूरिनुं कहेलुं वाक्य छे ते संबंध बप्पभट्टसूरिना प्रबंधथकी जाणवो ॥

ते पुरुष (विणयमूलधम्मं के०) विनय छे मूल जेनुं एवो जे धर्म तेनें (सद्दहइ के०) सर्द्दहे (इति के०) ए प्रकारें (सम्मं के०) समकेत प्र त्यें (विसोहए के०) विशुद्ध करे निर्मल करे ॥ यतः॥ इणमेव निग्गंथ पा वयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुस्सं नेयाउ असंसद्धं सल्लंकत्तणं सिद्धिम ग्गं मुत्तिमग्गं निज्जाणमग्गं निव्वाणमग्गं अवितह मवि संधिसव्वडुरकपहीणम ग्गं इत्तठिया जीवा सिझंति बुझंति मुच्चंति परिनिग्घायंति सव्वडुरकाणमंतं करं ति. एम सम्यक्त्व शुद्ध करे. श्रीजिनशासननेविषे विन यमूलधर्म जाणवो.

ग्रंथांतरें बावन प्रकारें विनय कह्यो छे ॥ यतः ॥ तिज्ञयर सिद्ध कुलग ण, संघ किरिय धम्म नाण नाणीणं ॥ आयरिय गुरुवज्जाय, गणीणं तेर स पयाइं ॥ १ ॥ अणसायणाय भत्ति, बहुमाणो तहय वस्सु संजलणा ॥ तिज्ञयराइ तेरस, चउगुणा हुंति बावन्ना ॥२॥ इति प्रवचनसारोद्धारे ॥२४॥

हवे विनय उपर कथा कहे छे. आ भरतक्षेत्रने विषे कुसुमनामा नग र छे, तिहां जेम अलका नगरीने विषे धनद तथा जेम देवलोकने विषे इंद्र अने आकाशने विषे चंद्रमा शोभे,तेम ते नगरीने विषे धनद एवे ना में राजा राज्य करे छे. तेने पद्मावती एवे नामें स्त्री छे, ते स्त्री भर्त्तार सं सार संबंधी सुख भोगवतां घणे मनोरथें तेमने घेर पुत्रनो जन्म थयो, ते नुं भुवनतिलक एवुं नाम दीधुं. पछी ते कुमर अनुक्रमें जेम शुक्लपक्षनो

चंद्रमा वधे,तेम महोटो थयो. तेने निशालें ज्ञणवा मोकल्यो ते सर्व. कलामां प्रवीण थयो, राजधुरंधर थयो.

एकदा प्रस्तावें राजा राज्यसजा जरी बेठो छे. एवामां सुवर्णदंम हस्त धार पोलीयो आवी विनति करवा लाग्यो के हे स्वामिन्! रत्नस्थलपुरनो स्वामी अमरचंद्रराजा छे तेनो प्रधान आव्यो छे, ते तमारा दर्शन वांछे छे मार्टे शी आज्ञा आपो छो? राजायें कह्युं एने तेडी लावो. प्रतिहार तेडी आव्यो. प्रधानें प्रणाम करी विनति करी के हे स्वामी! रत्नस्थलपुरनो स्वामी अमरचंद्रराजा तेहने यशोमती एवे नामें पुत्री छें, ते तमारा पुत्र जुवनतिलक कुमरना गुण सांजली तेनी ऊपर गुणानुरागिणी थइ छे. अने कहे छे के परणुं तो जुवनतिलक कुमरनेज परणुं अन्यथा बीजाने परणुं नहीं मार्टे तमने अमरचंद्रराजायें विवाहनी विनति करवा मुऊने मोकल्यो छे, ते वात सांजली राजा हर्ष पाम्यो अने चतुरंगिणी सेना सहित तथा कंठरव एवे नामें सामंतसहित जुवनतिलककुमरने अमरचंद्रराजाना प्रधानपुरुषनी साथें मोकलतो हवो. ते अनुक्रमें सिद्धपुरनगरनी नजीक जइ उतस्या, लोक मेरा तंबु दीये छे, जमवानी सज्जाइ करे छे, एवामां अकस्मात् ते कुमर पोताना रथ उपरथी ढली पड्यो अने मूर्छा आवी गइ. पाषाणशिलानी पेठें अचेतन थइ पड्यो. तेवारें त्यां हाहाकार थइ रह्यो. तिहां अनेक वैद्य मांत्रिक तांत्रिक मल्या, तेणें घणा उपचारो कीधा, पण ते सर्व उषर जूमिकायें जेम वर्षाद निःफल थाय, तेनी पेरें निःफल थया. कंठरव सामंत घणुंज डुःख धरवा लाग्यो ॥यतः॥ कम्माणंठिइजीवा, ण गइ तह पुग्गलाण परिणामं ॥ सवणु चेव जाणइ, अहवा सवणुसरिसावि ॥१॥ नच्चंता कीडंता, कम्मं कुवंति निग्घणा जीवा ॥ पछा तस्स विवागा, रुअंति कलुणं महा डुरका ॥ २ ॥

एवामां जाग्ययोगें ते उद्यानने विषे कोइ केवलज्ञानी साधु पधास्या, देवतायें सुवर्णकमल रच्युं, तेनी ऊपर बेसी धर्मदेशना आपे छे. ते सांजली राजा प्रमुख सर्वलोक तेमने वांदवा गया अने कंठरव सामंतपण कुमरनें तेडी तिहां केवली पासें आव्यो. पंचाजिगम साचवी देशना सांजलवा बेठा. देशनामां केवलीयें कर्मस्थितिनो विचार कह्यो, तेवारें कंठरव सामंतें

पूछ्युं के हे भगवन्! आ भुवनतिलककुमरें श्यां कर्मकीधां छे? के जेने योगें एने अकस्मात् महारोग उपनो?

तेवारें केवलीभगवान् ते कुमरना पाछला भवनी कथा कहेवा लाग्या धातकीखंडना भरतक्षेत्रने विषे भुवनागार नामें नगर छे. तिहां एकदा प्रस्तावें आचार्य घणा साधुना परिवारें परवर्या थका पधार्या. ते गच्छमांहे वासव एवे नामें शिष्य घणो अविनीत छे, मुनिराजरूप हंसनी मांहे बगला सरखो छे, संक्लिष्ट अध्यवसायवालो महाकषायी विपरीत शिक्षित अश्वनी पेठें छे, तेने एकवार गुरुयें कह्युं के हे महानुभाव! तमें साधुउनो विनय करो, जेथी तमने रुडुं थाय ॥ यतः ॥ विणउ आवहइ सिरी, लहइ विणउ ज सं च कित्तिं च ॥ न कयाइ डुव्विणीउ, सुकज्ज सिंधि वियाणाइं ॥ मुलाउ खंधप्पभावो डुमस्स, खंधाउ पछा समुविंति साहा ॥ साहप्पसाहा विरुहंति पत्ता, तउसे पुप्फं च फलं रसो य ॥१॥ एवं धम्मस्स विणउ, मूलं परमो से मुखो ॥ जिणकित्ति सूअं सिंधि, निस्सेसं चाभिगछइ ॥ २ ॥

हवे ते शिष्य गुरुनी शिक्षा सांभली तेवारें कोपें बलतो थको बोलवा लाग्यो, के तमें एकला मनेज शुं कहो छो? बीजा अटला बेठा छे. तेने केम नथी कहेता? एकला महारी पछवाडेज काछडो बांधी लाग्यो छो? इत्यादि वचन बोलतो प्रद्वेष वहेवा लाग्यो. साधु ऊपर डुष्टात्मा थको साधुने मारवाने अर्थें उठ्यो, तेने बीजे साधुयें वारी राख्यो. पछी ते प्रद्वेषें करी पाणिपात्रमांहे तिलपुट विष नाखतो हवो. ते विष नाखीने वली बिहीतो थको उठीने नाशि गयो, मुग्ध यति पाणी पीवा लाग्यो, तेने शासनदेवतायें वारी राख्यो, अने कह्युं के हे साधु! तमें ए पाणी म पीयो. एमां पहेला पापीयें विष नाख्युं छे, पछी साधुयें ते पाणी जयणायें परठव्युं.

हवे ते वासव नामें कुशिष्य जे पोतानी मेलेंज भय पाम्यो थको नाशी गयो हतो, ते अरण्यने विषे भूख तृषा खमतो दावाग्निमांहे बल्यो, रौद्र ध्यानें बाल मरण करी सातमी नरकपृथ्वीने विषे तेत्रीश सागरोपमने आउखे नारकी थयो ॥ यतः ॥ संतिमेयं डुवेठाणं, अरकाया मारणंतिया ॥ अकाम मरणं चेव, सकाम मरणं तहा ॥ १ ॥ बालाणं आकामं तुमा, मरणं असतीभवे ॥ पंमियाणं सकामं तु, उक्कोसेणं सतीभवे ॥ २ ॥ इति श्रीउत्तराध्ययनसूत्रे ॥

हवे सातमी नरकथी चवी मत्स्यादिक तिर्यंचादिकना माहा उंमा जव जोगवतो थको साधुघातनी मनसानुं कर्म जे हतुं, तेने अकामनिर्ज्जरायें क्षय प्राय करतो करतो हमणां धनदराजानो पुत्र जुवनतिलक एवे नामें थयो छे. रुषिघातनुं कांइक कर्म शेष रह्युं हतुं, ते हमणां उदय आव्युं. तेमाटें अकस्मात् रोग ऊपनो, जेमाटें कर्म तथा रण ए बे सरखांज छे. जेम मागनार प्रस्ताव पामे अवश्य रण मागे, तेम कर्म पण प्रस्ताव पामे अवश्य उदय आवेज. तेवारें कुमरें केवलीप्रत्यें पूछ्युं,के महाराज ! ए मह्हारो रोग क्यारें उपशम थाशे ? तेवारें केवलीयें कह्युं के तें कर्मनो घणो जाग जोगव्यो, माटें हवे तरत क्षय थइ जाशे, पण तह्हारें हजी बीजां कर्म घणां छे, माटें ते तो जो तुं दीक्षा ले, तोज क्षय थाय. तिहां पूर्वजव सांजलवाथी कुमरने जातिस्मरण ज्ञान उपनुं, तेथी वैराग्य पाम्यो. तेवारें कंठरवादिक सामंतोनी साथें दीक्षा लीधी. पहेले जवें अरिहंतादिक दशेनी आशातना करी हती, तेहनी आलोयणाने अर्थें श्री अरिहंतादिक दशेनो विनय करवो अंगीकार कस्यो.

हवे दीक्षा लीधी सांजलीनें यशोमती मूर्छा खाइ जूमियें पडी तेने सखीयें शीतलोपचारें करी सावधान करी तेवारें विलाप करवा लागी, तेने सखीयें कह्युं के चिंता म कर. ए वर गयो तो जवा दे. अमें तुऊने बीजो राजकुमर जोइने पाणिग्रहण करावी देशुं. तेवारें यशोमती बोली के हे सखीयो ! तमें ए असत्य वचन म कहो. मह्हारे तो आ जवमां पति पण एज अने गुरु पण एज छे, माटें जो मह्हारो पति न थयो, तो हवे हुं एने मह्हारो गुरु करीश. एवुं कही ते कुमरी, माता पितानी आज्ञा मागी, दीक्षा लेइ विकृष्ट तपश्चर्या करती विचरवा लागी.

हवे कुमरनो परिवार पाछो वली गयो,तेणें जइ कुमरना माता पितानी आगल सर्व वात कही, ते सांजली कुमरना विरहथी राजा दुःख पाम्यो, अने दीक्षा लीधी, तेमाटें हर्ष पण पाम्यो ॥ यतः ॥ ते धन्ना ते साहू,तेसिं पसंसा सुरेहिं किज्जंति ॥ जेसिं कुडुंब मझे,पुत्ताई लिंति पवज्जं ॥१॥ ते धन्ना ते साहु,पवज्जंताण पुत्तपुत्तीणं॥ वीवाहम हुंसमिवं,कुणंति पवज्जमहिमं जे॥

हवे ते रुषि समस्तसाधुनुं एकाकीपणे वेयावच्च करवा लाग्यो, तेनीकेवलज्ञानी साधु पण प्रशंसा करवा लाग्या. जेम जरतचक्री अने बाहुबलीयें

साधुना विनयवैयावच्च कीधां, तेम एणें दशेनुं वेयावच्च कर्युं तेमां वली सा धुनुं विशेषथी विनय वेयावच्च करवा लाग्यो. तेम वली घणा नव्यजीवोने केवलकर्मनी निर्ज्जरा थवाना कारण माटें पोतानाज पूर्वला नवना करेलां कर्मनी धर्मकथा उपदेशमां संनलावीने प्रतिबोध देतो हवो. ते साधु जे कांइ धर्मोपदेश आपे तथा तप,जप, विनय वेयावच्चादिक जे कांइ करे, ते सर्व कर्म निर्ज्जरा हेतुयें करे, परंतु कांइ इह लोकना स्वार्थमाटें करे नहीं, जे माटें जे कोइ साधु इह लोकना स्वार्थें धर्मोपदेश करे,ते गृहस्थें सांनलवा पण नहीं ॥ यतः ॥ से जिरकूधम्म किट्टेमाणे, णो अन्नस्स हेउ धम्मं आ इस्केजा. णो पाणस्स हेउ धम्मं आइस्केजा. णो वच्छस्स हेउ धम्मं आइ स्केजा. णो लेणस्स हेउ धम्मं आइस्केजा. णो सयणस्स हेउ धम्मं आइ स्केजा. णो अन्नेसिविरुवाईणं कामनोगाणं हेउ धम्म माइस्केजा. णो अगिलाए धम्म माइस्केजा. नन्नछ कम्मं निज्जरछियाए धम्म माइस्केजा. इहखलु तस्स जिरकूस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म उछाय वीराअस्सि धम्मे समुछिया ते तस्स जिरकुस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म उछाणेणं उछाय ते वीराएवं सव्वोपगता ते एवं सव्वोविरता ते एवं सव्वोवसंता परिनि वुछा ॥ इति द्वितीयसूत्र कृतांगे ॥

हवे ते जुवनतिलक साधु निरपेक्षपणे दश प्रकारें विनय करी निरपेक्ष पणे तप करी, निरपेक्षपणे धर्मोपदेश आपी, पादोपगमन अणसण क री, सकलकर्म क्षय करी. आठ लाख पूर्व गृहस्थपणे, बहोंतेर लाख पूर्व साधुपणे, सर्व एंशी लाख पूर्वनुं आयु पाली मोक्षें पहोता. ए दश विनय नी उपर जुवनतिलक साधुनो दृष्टांत सांनलीने नव्यजीवें पण दश प्रकार नो विनय करवो. एज सांनलवानो सार ढे. इति श्रीतपोगच्छाधिराज वि जय देवसूरीश्वर विजयमान राज्ये महोपाध्याय श्रीसकलचंद्रगणिविरचि ते श्रीसम्यक्त्वरत्नप्रकाशनामनि श्रीसम्यक्त्वप्रकरणबालावबोधे दशप्रका रविनयस्वरूप वर्णननामा तृतीयोधिकारः संपूर्णः ॥ ३ ॥

हवे त्रण शुद्धिनुं द्वार कहे ढे.

॥ मण वाया कायाणं, सुद्धी सम्मत्त सोहिणी तछ ॥ मण सुद्धि जिण जिणमय, वज्ज मसारं मुणइ लोयं ॥ १५ ॥ अर्थः—प्रथम मन प्रशस्त राखवुं अने दर्शनना निःशंकितादिक आठ आचार ढे, ते मनें करी पाल

वा. तेने (मण के०) मनःशुद्धि कहीयें. अने एज आठ आचार जे प्रशस्त वचनें करी पाळे, ते (वाया के०) वाचा एटले वचनशुद्धि जाणवी. तेमज प्रशस्त कायायें करी पाळे, ते (कायाणं के०) कायसंबंधी (सुद्धी के०) शुद्धि जाणवी ॥ यतः ॥ मनः संवृणु हे विद्व, न्नसंवृतमना यतः ॥ याति तंडुलमत्स्योऽाक्, सप्तमी नरकावनिम् ॥१॥ प्रसन्न चंद्रराजर्षे, मनः प्रसरसंवरौ ॥ नरकस्य शिवस्यापि, हेतुन्नूतौ क्षणादपि ॥ २ ॥ सार्थं निरर्थकं वा यन्, मनः सुध्यानयंत्रितम् ॥ विरतं डुर्विकल्पेन्यः, पारंगांस्तां स्तुवे यतीन् ॥ ३ ॥ इति अध्यात्मकल्पडुमे ॥

ए त्रणे शुद्धि कहेवी छे ? तोके (सम्मत्तसोहिणी के०) सम्यक्त्वने शोधनारी छे. जो मनःशुद्धि होय तो समकेत शुद्धि थाय ते विना शुद्धि थाय नहीं. जेम के अनंतानुबंधीया चार कषाय क्षय थई जाय, तो जीव समकेत पामे, अने वळी पाछुं समकेत जाय, तेवारें पण अनंतानुबंधीयाना उदयथकी जाय, जेमाटें अनंतानुबंधीया चार कषाय, ते समकेतने घात करे, अने अप्रत्याख्यानीया चार कषाय ते देशविरतिने घात करे, तथा प्रत्याख्यानीया चार कषाय ते चारित्रने घात करे, तथा संजलना चार कषाय ते यथाख्यात चारित्रने घात करे, तेमाटें जिहां अनंतानुबंधीया चार कषाय होय, तिहां समकेत न होय तेथी त्यां मनःशुद्धि कहेवाय नहीं. केम के मनःशुद्धि जे छे, ते समकेतनी शोधनारी छे.

(तञ के०) तिहां ते सम्यक्दृष्टि जीव (मणसुद्धि के०) मनःशुद्धि करीज (जिण के०) श्रीवीतरागदेव अने (जिणमय के०) जिनमत ते श्रीवीतरागदेवें प्ररूप्यो जे धर्म ए बेहुने (वज्ज के०) वर्जीनें ते विना सर्व लोक प्रत्यें (मसारं के०) असार करी (मुणइ के०) जाणे एटले जगत मांहे सार ते एक श्रीवीतरागदेव अने बीजो श्रीवीतरागनो प्ररूपेलो धर्म ए बे वानां छे बीजो सर्व आळपंपाळ छे ॥ यतः ॥ श्रीवीतरागान्नपरोस्ति देव, स्तद्धर्मतोनास्त्यपरोहि धर्मः ॥ सम्यक्त्वलानान्न परोस्ति लानो,मोक्षानिलाषान्न परोनिलाषः ॥१॥ तथा अयसाउसो एस अट्ठे एसपरमट्ठे एस्से अणट्ठे । इति द्वीतियांगे ॥ २५ ॥

हवे मनःशुद्धि उपर नरवर्मराजानो दृष्टांत कहीयें छैयें. आ जंबूद्वीप मांहेला दक्षिणार्द्ध नरतने विषे विजयवती नामें नगरी तिहां नरवर्म नामें

राजा राज्य करे छे, तेने रतिसुंदरी नामें प्राणवल्लभा स्त्री छे, तेनी साथें विषयसुख भोगवतां तेने हरिदत्त नामें पुत्र थयो. हवे राजाने महाबुद्धिमान् एवा मतिसागर प्रमुख घणा प्रधान छे, तेमने राजभार सोंपी राजा पोतें प्रतिदिन पंमितनी साथें गोष्टि करे ॥ यतः ॥ गीतनाद विनोदेन, कालो गच्छति धीमताम् ॥ व्यसनेन हि मूर्खेण, निड्या कलहेन वा ॥ १ ॥

एकदा प्रस्तावें राजा सभाभरी बेठा छे, घणा पंमितो आव्या छे तेनी साथें मंत्रीश्वरो धर्मवाद करे छे. तेमां एक बोल्यो के, दाक्षिण्य औदार्यथी परोपकार करवो, लोक विरुद्ध वातनो त्याग करवो, ते धर्म छे. बीजो बोल्यो वेदमां कह्या प्रमाणें अग्निहोत्रादिक कर्मोनुं अनुष्ठान करवुं ते धर्म छे. त्रीजो बोल्यो जे, कुलक्रमागत चाल्यो आवे छे, ते धर्म जाणवो. चोथो नास्तिक बोल्यो के, धर्म नथी, अधर्म नथी, स्वर्ग नथी, नरक नथी, परभव नथी, पुण्यपापनो भोक्ता नथी, स्वर्ग नरकनो भोक्ता कोइ नथी, एवी रीतें नाना प्रकारना वाद चाल्या, पण ते मांहेली एके वात राजाना चित्तनेविषे बेठी नहीं, जे कारणमाटें मिथ्यावाद चर्चा खमे नहीं. कोड्वाना लोटना मांमा थाय नहिं. कह्युं छे के ॥ ताएयूं जे खमे नहीं ताणीयें तो त्रूटी जाय ॥ मांमा थाय तो गोधूमना थाय केम के ते ताएयुं खमे. पछी राजा विचारे छे जे ए सहु कोइ पोतपोताने मन मान्यो धर्म कहे छे. ए सर्व मिथ्यावाद छे. पण महाराचित्तें प्रतिभासतो नथी. ए सर्व कोड्वाना लोट सरखो छे. अने जे सम्यक् वाद छे ते गोधूमनी पडसूदी बराबर छे. एम राजा धर्मना संदेहमां हे पड्यो छे. पण तेमांनो कोइ भासतो नथी. एहवी राजाने मार्गानुसारिणी मति आवी छे तेमतिथी तत्त्वाभिनिवेश थाय, ते तत्त्वाभिनिवेशथी रूडी चेष्टा थाय ॥ यतः ॥ मग्गाणुसारिणोखलु, तत्ताभणिवेसउ सुहा चेव ॥ होइ सम्मता चेष्ठा, असुहाविय निरणुबंधंति ॥ १ ॥ इति यात्रापंचाशके ॥

हवे राजा शुद्धधर्मना कथकनी वांछा करे छे, एवामां प्रतिहारें आवी विनति करी के हे स्वामिन्! तमारो आ जन्मनो मित्र मदनदत्तशेठ छे, ते सिंहद्वारें आवी उभो रह्यो छे, तमारा दर्शनने वांछे छे. राजायें कह्युं के तेने तेडी लावो. प्रतिहार तेडी आव्यो. शेठ पण राजाने प्रणाम करी राजाना आपेला आसनें बेठो. राजायें पूछ्युं एटला वर्ष कया कया देशने विषे तमें परिभ्रमण कीधुं? अने केटलुं धन उपार्ज्युं? तेवारें मदनदत्त

बोल्यो के, हुं घणा देशोने विषे नम्यो अने तमारें प्रसादें घणुं धन पण पे दा कीधुं, तथा वली आ एकावली हार पाम्यो बुं, ते हे राजन्! तमें जू उ. ते हारने देखी राजा चमत्कार पाम्यो, अने पूछतो हवो के, देव ताने पहेरवा योग्य आ हार तुजने केम मल्यो? ए वात म्हारी आग ल कहे. तेवारें मदनदत्त कहेतो हवो के, वातनो रस हुंकार छे अने व ढवाडनो रस तुंकार छे, तथा तिरस्कारनो रस थुकार छे, निंदानो रस र कार, मित्राइनो रस हेकार, वेदनो रस ॐकार, यंत्रनो रस क्रोंकार छे, माटें सावधान थइ हुंकार आपो, तो वात कहुं. ते प्रमाणें राजायें कबूल करवाथी मदनदत्त कहेवा लाग्यो. हे स्वामी! तमारी पासेंथी शीख मा गी चाल्यो, ते पृथ्वीमंमल जोतो डुपदिका नामें अटवीमां गयो, तिहां तृ षा लागी गलुं तथा तालवुं सूकावा लाग्युं, पण पाणी किहांय मल्युं नहिं.

एवामां सकलगुणना आगार, क्षमासागर, अनेक देवतायें परवस्या देश नामृतें करी नव्यवृक्षने सींचता एवा श्रीगणधरनामा सूरिने में दीठा, ति हां में एकावलीहार तथा बीजां पण केटलाएक दिव्यआनूषणें शोजित अने पोतानी देवी सहित एवो एक देवताने धर्म श्रवण करतो दीठो,तेवारें हुं सूरि ने वांदी देशना सांजलवा बेठो. मने परम हर्ष ऊपनो. तिहां ते देवता पो ताना नाइनी पेरें प्रीतियें करीने म्हारी साहामुं जोइ रह्यो, अने निर्मलबु छियें करी परमानंद पामीने आचार्यप्रत्यें पूछवा लाग्यो के, हे स्वामिन्! आ पुरुष दीठाथी मुजने प्रीति उपजे छे, तेनुं कारण शुं?

तेवारें आचार्य कहेवा लाग्या,के हुं तुजने ए वात कहुं बुं ते तुं एकाग्र मनथी सांजल. कोसंबी नगरीयें विजयनामें राजा राज्य करे छे,तेने एक वि जय बीजो विजयंत, एवे नामे बे पुत्रो छे. तेमनी बालपणामांज जननी मृत्यु पामी छे तेथी बेहु नाई धावमातायें धवरावता थका म्होटा थया. यौवन पाम्या, तेवारें राजायें युवराज पदवी आपवानी मरजी करी.

एकदा ते बेहु नाई क्रीडा करवाने उद्यानमां गया छे, एवामां उरमान मातायें विचार्युं जे आ बे छोकराने मारी नाखुं, तो म्हारा छोकराने राज मलशे. नहिंका ए म्होटा छे, तेथी राजना मालेक थशे. एम विचारी छल पामीने लाडुआमां विष नेली धावनी साथें मोकल्या, ते लाडु निष्कपट पणे बेहु नाइयें खाधा, तेथी विषव्याप्त थया, तेने योगे मूर्छा आवी गइ,

परंतु एना नाग्यनेयोग्यें तिहां कोइ दिवाकर नामा रुषि निश्चल ध्यानक रीने अध्ययन करवा बेठा छे, तेना प्रनावथी जेनी ध्वजानेविषे गरुड छे एवो गुरुडध्वज नामें देवता त्यां आव्यो, एकाग्रपणे अध्ययन सांनलता थकां ते गुरुड देवताना महिमाथी बेहुनाइने विष उतरी गयुं. बे नाइ सावधान थया, तेवारें दिवाकर साधुने जइ वांद्या, तेमने गुरुडदेवतायें कह्युं के साधुयें गुरुडोपपात अध्ययन गण्युं,तेना महात्म्यथी हुं आव्यो,तेथी तमारुं विष उतरी गयुं, तमें जीवता रह्या. नहीकां उरमान मातायें आपेला विषथी मरण पामीने दुर्गतियें जवुं पडत. माटे आ साधुनो उपकार मानो. ते कुमरोने देवताना वचनथी अने साधुना उपदेशथी वैराग्य उपनो तेथी दीक्षा लीधी. घणा वर्षपर्यंत चारित्र पाली तपश्चरणा करी अंतें समाधि मरण पामी सौधर्मदेवलोकने विषे विद्युत्प्रन्न अने विद्युत्सुंदर एवे नामे देवता थया.

विद्युत्प्रन्न तिहांथी चवीने विजयवती नगरीने विषे मदनदत्त एवे नामें व्यवहारीयानो पुत्र थयो, पूर्वनवना अन्यास माटें ए मदनदत्तने देखवाथी तुऊने आनंद उपजे छे ॥ यतः ॥ नयणे कहिज्ज पेमं, नयणे दोसंपि परिफुडं कहइ ॥ नयणे कहिज्ज कामं, नयणे वेरग्गमुवदिसइ ॥ १ ॥

पछी ते देवता ए वृत्तांत सांनलीने हर्ष पाम्यो थको एकावली हार म्हारा कंठमां पहेरावतो हवो. वली ते देवता साधुप्रत्यें पूछतो हवो के, हे स्वामी! मुऊने आलस घणुं आवे छे तेनुं शुं कारण हशे? महारो कल्पवृक्ष प्रकंपायमान थाय छे,महारां वस्त्र रजें करी मलिन थाय छे. तेवारें साधुयें कह्युं के तहारुं आयुष्य हवे शेष अल्प रह्युं छे. देवतायें पूछ्युं के हुं चवीने क्यां उपजीश? साधुयें कह्युं तुं विजयवती नगरीयें नरवर्मराजाने घेर हरिदत्त एवे नामें पुत्र थाइश. तिहां तुं मदनना कंठनेविषे एज हार देखीने प्रतिबोध पामीश. एवुं साधुनुं वचन सांनली देवता हर्षवंत थयो थको साधुने वांदीने स्वर्गे गयो.

पाछलथी मदनदत्तें साधुने पूछ्युं, कहो स्वामी! ए हार देवता क्यां थकी पाम्यो? तेवारें साधु कहेवा लाग्या के,पूर्वें चमरचंचा राजधानीनेविषे नवो चमरेंड उपनो, तेणें अवधिज्ञानें जोयुं, तो पोताना मस्तक उपर सौधर्मेंडनुं सिंहासन दीठुं; तेवारें अमर्ष ऊपनो जे महारा मस्तक ऊपर कोण चढी बेठो छे? तेने लोकपालादिक कहेवा लाग्या के, स्वामी! ए सौध

मेंद्र ले. अनादिकालनी ए स्थिति ले, कोइथी टली जाय नहीं. इंद्रे कह्युं, पूर्वे सर्व इंद्र असमर्थ थया. कोइ टाली शक्यो नहीं,पण हुं टालीश. एम कही ते रीशने वशें सर्वेनुं कहेण अवगुणीने सुसीमार पुरना उद्यानने विषे श्रीमहावीरजगवान प्रतिमायें रह्या ले, तेनुं शरण करी चाल्यो ॥ य तः ॥ किंनिस्साएणं जंते असुरकुमार देवा उड्ढउप्पयंति गोयमा ॥ अरिहं तेवा, अरिहंत चेइयाणि वा, अणगारे वा जाविअप्पाणो निस्सियाए उड्ढ उप्पयन्तित्ति. ते समयने विषे श्रीमहावीर विद्यमान हता माटें तेमनुं शर ण करी चाल्यो. महाजयंकररूप विकूर्वी सौधर्मदेवलोकनेविषे गयो. तिहां जयंकररूप देखी देवांगना त्रास पामी सौधर्मदेवलोकनेविषे हालकल्लो ल थई रह्यो, इंद्रे अवधिज्ञानें करी जोयुं तो चमरेंद्रने दीठो, तेने आवतो जाणी वज्र मूक्युं, ते देखी अधोमुख फरी नाठो, तेवारें तेना कंठथकी आ हार इहांथी असंख्यातमे द्वीपें धरती उपर जई पड्यो.

हवे आगल चमरेंद्र नाठो जाय,ते केडें वज्र चाल्यो जाय. एटले इंद्रे वि चार्युं जे, चमरेंद्र सौधर्मदेवलोकमां आवे तेवारें एक श्री अरिहंत, बीजुं अरिहंतनुं चैत्य, तथा त्रीजुं जावितात्मा अणगार.ए त्रणनी निश्रायें आवी शके, अन्यथा ते आवी शके नहिं. ए चमरेंद्र श्रीमहावीर विद्यमान अरिहंत नी नीश्रायें आव्यो ले, तेमाटें रखे मारुं वज्र जगवंतनी आशातना करे! एहवुं विचारी इंद्र पण केडे थयो, तेथी चमरेंद्र अत्यंत सूक्ष्मरूप करी ज गवंतना पग वचें पेठो ने वज्र जेटले जगवंतना पगनी ढूंकडुं आव्युं, एट ले तो इंद्रे आवी लइ लीधुं. ते जगवंतना शरण कर्या, माटे चमरेंद्रने सौधर्मेंद्रे मूक्यो. पछी जगवंतने नमस्कार करी खमावी सौधर्मेंद्र सौधर्मदेव लोकें गयो. चमरेंद्र हार्यो तेथी श्याममुख थयो थको चमरचचा राजधानी यें आव्यो. ते चमरेंद्रनो हार विद्युत्प्रजदेवता पाम्यो. तेणें जाइनो प्रेम माटे विद्युत्सुंदर लघुजाइने ते हार आप्यो ने ते लघुजाइयें वली तुजने आप्यो, एवुं सांजली गुरुने नमस्कार करी तिहांथी चाल्यो, ते पच्चीश वर्ष लगण पृथ्वी उपर पर्यटन करी घणुं धन कमाइने तमारी पासें आव्यो लुं. हवे ते विद्युत्सुंदरदेव देवलोकथी चवी ताहरे घेर पुत्र पणे थयो ले.के नथी थयो? एवुं सांजली राजायें हरिदत्तकुमरने तेडावीने ते हार देखाड्यो. ने तेने ते

हार देखतांज जातिस्मरण उपनुं. तेथी पूर्वन्नव स्वरूप दीठुं, ने जेहवुं म दनदत्तें कह्युं हतुं, तेवुंज राजा आगल तेणें स्वरूप कह्युं.

हवे राजा चिंतववा लाग्यो के, जे प्रथम धर्मनो विवाद थयो, ते पुत्र नुं वृत्तांत सांन्नलवाथी मह्वारो सर्व संदेह पोतानी मेलें छेदाइ गयो. माटें आ त्रणे जगतमां एक श्रीअरिहंतनो धर्मज न्नव्यजीवोने संसारनी बीकने छेदनारो तथा स्वर्ग अने मोक्षना सुखनो दातार छे, एवो निश्चय कस्यो. एवा समयमां वनपालकें आवीने राजानें वधामणी आपी के, हे स्वामी! आजे नगर बाहिर पुष्पावतंसक नामा वननेविषे घणा शिष्यना परिवारें परवस्या, चार ज्ञानना धारक, सुरासुरें सेवित एवा गणधर नामें गुरु स मवसस्या छे, एवुं सांन्नलीने जेम मेघनो शब्द सांन्नली मोर हर्ष पामे, तेम राजा हर्ष पाम्यो थको वनपालकने वधामणी आपी संतोषित करी पोतें हस्ती उपर बेशी पुत्र, मित्रादिकेंसहित तेमज चतुरंगिणी सेना संघातें लइ आचार्यने वांदवा गयो, आचार्य प्रति पंचान्निगम साचवी वांदीने योग्य स्थानकें बेसी धर्मदेशना सांन्नलवा लाग्यो. तिहां गुरु कहेवा लाग्या के,हे न्नव्यजीवो! सर्वधर्मनुं मूल द्वार एटले बारणांरूप, धर्मनो आधार, धर्म नुं न्नाजन, धर्मनो निधान, ते समकितज छे, तिहां जे देवनेविषे देवनी बुद्धि, अने गुरुनेविषे गुरुनी बुद्धि तथा धर्मनेविषे धर्मनी बुद्धि, ते सम्य क्त्व जाणवुं. अने जे तेथी विपरीत ते मिथ्यात्व जाणवुं. ते माटें सम्यक्त्व विना मोक्षप्राप्ति नहिं, अने मिथ्यात्वविना संसारनी वृद्धि नहीं.

तिहां देव ते रागद्वेषरहित श्रीजिनेश्वर जाणवा, तथा जे पंचमहाव्रत धारी साधु ते गुरु जाणवा, अने श्री न्नगवंतनो कहेलो दयामूल धर्म ते धर्म जाणवो, ए त्रण तत्त्वना आराधनरूप समकेत पाले छते, ते पुरु षने नरक अने तिर्यंचनी गति केवारें पण प्राप्त न थाय, तथा देवगतिनां सुख, मनुष्यगतिनां सुख अने मोक्षनां सुख वश थाय, जे प्राणी एक अंतर्मुहूर्त्तमात्र पण समकेतने फरसे, ते निश्चेंथी अर्द्धपुजल परावर्त्तन मांहे सिद्धि पामे. एवो धर्म,गुरुपासेंथी सांन्नलीने राजा पोताना पुत्रसहित समकेतपूर्वक श्रावकनोधर्म अंगीकारकरी हर्षधरतो पोताने घेर आव्यो.

एकदा देवलोकमां इंद्रमहाराजें नरवर्माराजानी प्रशंसा करी जे ए रा जा समकेतमां एवो दृढ थयेलो छे,के देवताथी पण चलाव्यो चले नहिं,

तेवारें सुवेगनामें देवता ते वचन खमी शक्यो नहिं, ने विचार्युं के हुं जइ तेने समकेतथकी चलावुं, पछी त्यां आवी अनाचारी साधुउनुं टोळुं बनाव्युं एहवे नरवर्माराजा अश्वक्रीडायें निसर्‌या, तेणे ते टोळुं दीठुं. तेमां एक साधु, मदिरापान करे छे, एक साधु वेश्या संघातें क्रीडा करे छे, एक साधु उंघो कडें बांधी धनुष तीर ताणी मृगकेडें थयो छे. एम विचित्र प्रकारें साधुनां दुश्चेष्टित दीठां, त्यारें राजायें पूछयुं के, ए तमारो शो व्यापार? साधुउ कहेवा लाग्या के, अमो जे लोकने धर्मोपदेश दहियें छैयें, ते धूतीयें छैयें, परंतु अमें पोतें तो ए करणी करीयें छैयें. राजा चिंतवे छे जे, जिनशासन मार्ग विषम छे, पण मोक्षनो मार्ग छे. ए मार्गथकी जे पड्यो तो तेहनुं अनाग्य, ने जे ए मार्ग पामी पाधरो चाल्यो, पड्यो नहिं, तेहनुं लाग्य संमजवुं. एम उलटुं राजानुं सम्यक्त्व दीपतुं थयुं, पण लवलेशमात्र मलिन न थयुं. जेम सुवर्ण अग्निमांहे घालीयें तो दीप्त थाय, तेम राजानुं सम्यक्त्व थयुं, पछी राजायें ते यतियोने शिखामण दीधी, के आवुं चारित्र पामीने कां एवां नूंमां आचरण आचरो छो? तमें दुरंत नरक पामशो, एहवुं कही पापथकी निवर्त्तावतो हवो. देवता अवधि ज्ञानें करी जुवे छे तो राजानुं सम्यक्त्व चडतुं दीठुं, पण लेशमात्र पडतो परिणाम न दीठो. तेथी हर्ष पामी रूप प्रगट करी आवी पगें लाग्यो, ने कहेवा लाग्यो के, धन्य तमारो अवतार, जेवी सभामां बेठा इंद्रमहाराजें तमारी प्रशंसा करी तेहथकी सवाई प्रशंसाने तमे योग्य छो, एहवुं कही माथानो मुकुट आपी राजानी गुणस्तुति करतो थको स्वर्गें गयो. ने इंद्र आगल जेहवी वात हती तेहवी कही. ते दिनथकी राजा निर्मल सम्यक्त्व पालतो हवो. छेहडे हरिदत्त कुमर संघातें दीक्षा लेइ संयम पाली तप तपी स्वर्गें पहोतो, अनुक्रमें मोक्षपद पामशे. ए सम्यक्त्वने विषे मनःशुद्धि उपर नरवर्माराजानुं चरित्र सांजली मनःशुद्धि करवी.

हवे वचनशुद्धिनुं स्वरूप कहे छे.

॥ तिछंकर चलणारा, हणेण जं मझ सिझइ न कज्जं ॥ पछेमि तछ नन्नं, देवविसेसेहिं वयणसुद्धि ॥ २६ ॥ अर्थः—(तिछंकरचलणाराहणेण के०) श्री तीर्थंकरना चरण कमलने आराधवे करी पूजवे करी (जं के०) जे (मझ के०) महारा अंतराय कर्मने योगें करी पुत्र अथवा लक्ष्मी आदिक वस्तुसंबंधी कोइ पण (कज्जं के०) कार्य ते (नसिझइ के०) सिद्ध न थयुं.

तो (तत्र के०) ते कार्यनेविषे (पत्नेमिनत्नं के०) अन्य देवप्रत्यें आराधन करवा जाउं नहीं. ते अन्य देवनां नाम कहे बे. हरि, हर, ब्रह्मा, चंमी,चामुं मा, क्षेत्रपालादिक (देवविसेसेहिं के०) देवविशेष जाणवा, एटले वचनथी एवुं बोलुं, के नगवंतना पदकमल आराधतां अर्थसिद्धि थाउ. अथवा म हारा पूर्वकृत सबल अशुनकर्मने योगें ते अर्थसिद्धि न थाउ. तथापि हुं अ न्यदेवनी याचना करुं नहीं. ए (वयणसुद्धि के०) वचनशुद्धि जाणवी ॥२६॥

हवे ए वचनशुद्धि उपर धनपाल पंमितनो दृष्टांत कहियें बैये. सकल देशमंमन श्रीमालवदेश बे, तेमां उज्जयणी नगरीयें नोजराजा राज्य करे बे. अने तेहज नगरीनेविषे वेदाध्यायी षट्कर्मनेविषे निरत एवो सोमचंद्र नामें ब्राह्मण रहे बे. तेने सोमश्री एवे नामें नार्या बे, ते जेम चंद्रमाने रोहिणी वल्लन बे, तेम ते ब्राह्मणनें पण ते स्त्री अत्यंत वल्लन बे. सर्वगुण नी पात्र बे,तेने एक धनपाल अने बीजो शोनन, ए बे पुत्र बे. ते बेहु म होटा पंमित, सर्वशास्त्रना पारंगामी अने नोजराजानी सनाना मंमन बे.

हवे मध्यदेशने विषे वाराणसी नगरीमां गौतमगोत्री कृष्णगुप्त ब्राह्मण रहे बे, तेना बे पुत्र बे, एक महोटो नाइ श्रीधर अने बीजो लघुनाइ श्री पति बे, ते बेहु नाइ परस्पर प्रेमवंत चौद विद्याना जाण बे, ते प्रतिदिवस गंगास्नान करी ईश्वरनी पूजा करे. एकदा प्रस्तावें तेमने सोमेश्वर महा देवनी यात्रा करवानी मनीषा थइ. तेवारें बेहु नाइ पोताना खजानेविषे प्रज्वलित दीवा मूकी सोमेश्वरनी यात्रायें चाल्या, अनुक्रमें गुजरात देशें वर्द्धमान नगरें आवी रात वासो वस्या, तिहां बे पहोर रात्रि वीत्या केडें एक पुरुष दीगे, तेणे मस्तकें जटा मुकुटधारेलो बे, सर्वांगने विषे विनूति लगाडी, गले वासुकी नागनो हार पहेरेलो बे, नालस्थलनेविषे त्रीजुं लो चन धरे बे, आर्द्धांगें पार्वती बे, हाथमां त्रिशूल बे, माहापुष्ट शरीर अने उज्ज्वल वृषननुं वाहन बे, एवो ते पुरुष पहेला बे नाइयोनी आगल आ वी उनो रह्यो. तेने देखतांज बेहु नाइउ चमत्कार पाम्या थका तेने दंम वत् नमस्कार करी नाना प्रकारना बंदजातिनां नवां काव्य रची स्तववा लाग्या, तेवारें सोमेश्वर बोल्या के, तमें महारी यात्रा करवा आव्या बो ? अने तमारो अत्यंतनाव महारा उपर बे, एवुं जाणीने हुं तमारी साहामो आव्यो बुं. हवे तमारी यात्रा फलीनूत थइ. हुं तुष्टमान थयो जे मागो ते

आपुं. ते वात सांजली बेहु जाइ हर्ष पाम्या थका कहेवा लाग्या के, आ कायायें अमोने शिववास आपो, तेवारें सोमेश्वरें कह्युं के, जो तमोने शिववासनी इछा होय, तो एहिज नगरमां श्रीवर्द्धमानसूरि छे जेमनी धरणींद तथा पद्मावती सेवा करे छे. तेनी तमें पण सेवा करो अने तेना कहेवा प्रमाणें चालो,के जेथी अजरामर शिववास पामो. एवुं कही माहादेव अदृश्य थया. प्रजात समयें ते बेहु जाइ पूछता पूछता पौषधशालायें आव्या, तिहां साधुउने नाना प्रकारनां तप करता सद्याय करता दीठा, तथा केटलाएक साधु काउस्सग्ग धारी, एकादशांगी अध्ययन करता दीठा, जेवारें पौषधशालाना मध्यजागें आव्या, तेवारें मह्योटा पादपीठ सहित सिंहासन उपर बेठेला अने विद्यायें करी साक्षात् बृहस्पति संमान एवा श्रीवर्द्धमान सूरीश्वर प्रत्यें देखीने बेहु जाइ आवी तेमने पगें लाग्या. दर्शन देखतांज हर्ष पाम्या. आचार्यें पूछ्युं तमें कोण छो ? तेवारें तेणें सर्व वात अथथी ते इति पर्यंत मांमीने कही, ते सांजली वर्द्धमानसूरि खुशी थया, अने कहेवा लाग्या के, प्रथम तमें श्रीजिनशासननो मार्ग समजीने पछी दीक्षा ल्यो. एम कही बे जाइउने गुरुयें विनयमूल एवो श्रीजिनशासननो मार्ग समजाव्यो, तेथी जेम सूर्यनां किरण पसरवाथी अंधकारनो नाश थाय, तेम ते बे जाइनुं अज्ञान नाश पाम्युं अने सद्ज्ञाननो उद्योत थयो. तेवारें ते बेहु जाइयें दीक्षा लीधी. आचार्यें एकनुं जिनेश्वर अने बीजानुं बुद्धिसागर एवां बे नामो पाड्यां. ते बे साधु सर्वत्र विख्याति पाम्या, अनुक्रमें जिनागमना पारंगामी थया. सूरिना छत्रीश गुणें बिराजमान जाणी बेहु जाइउने आचार्यपद दीधां. अने श्री वर्द्धमानसूरीश्वर कहेवा लाग्या के, हे वत्सो ! तमें अणहिलवाड पाटण जाउ. तिहां चैत्यवासी छे,ते सुविहित साधुने पेसवा देता नथी, माटें तमें राजाने प्रतिबोध आपीने जेम सुविहित साधु तिहां सुखें विहार करी शके, तेम करो. एवी गुरुनी आज्ञा पामी पाटण गया पण तिहां रहेवाने कोइ स्थानकज मले नहीं.

हवे तिहां डुर्लजराजानो पुरोहित सोमेश्वर जट्ट छे,तेने घेर गया. ते पोताना पुत्रने वेद जणावे छे. पण वेदना अर्थ विषम छे, ते कहेता स्खलाय छे, तेवारें जिनेश्वरसूरियें ते वेदनी कांमीनो अर्थ अस्खलितपणे कह्यो, ते जोइ ब्राह्मण चमत्कार पामतो थको विचारवा लाग्यो के आ कोइ सा

त्कारकार ब्रह्मानुं रूप लइनेज आव्यो डे. तेवारें आचार्यने पूढवा लाग्यो के, तमें आ वेदनी कांमीना विषम अर्थ केवी रीतें जाणो डो ? तेने आचार्यें कह्युं, अमें ब्राह्मण हता हमणां जैनी दीक्षा लीधी डे,तेवारें सोमेश्वर नट्टें कह्युं के, तमें इहां रहो आपणे शास्त्रनी गोष्टि करियें आचार्यें कह्युं, चैत्य वासी अमोने रहेवा दीये नहीं. माटे अमाराथी इहां केम रहेवाय ?तेवा रें ते नट्टें पोतानी वेदशालामां आचार्योने राख्या. शुद्धमान अशनादिक आपी गोष्टि करतां सर्वशास्त्रोनेविषे दक्षपणुं देखी सोमेश्वर खुशी थयो.

एवामां चैत्यवासीना नफर आव्या ते आचार्यने काढवा लागा, तेवारें सोमेश्वरें डुर्लनराजाने जइ कह्युं के, तमारा राज्यने विषे तमो आम्रवृक्ष तो उन्मूली नाखो डो. अने अर्कतरु वावो डो. राजायें कह्युं ते केवी रीतें ? सो मेश्वरें कह्युं के आ सुविहित साधु सर्वशास्त्रना पारंगामी डे तेने गामथी बाहेर काहाडो डो अने चैत्यवासी जे सर्व वातें हीण डे,तेने राखो डो,एविपरीत डे.

• एवी वात सांजलीने राजायें सर्व चैत्यवासीयोने कहेवरावी मोकल्युं के, जे कोइ ए सुविहित साधुने पराजव करशे, तेने हुं महारा नगरमांथी बाहिर काहाडी मूकाश ? एवी रीतें डुर्लनराजानो आदेश पामी, ते बेहु आचार्य तिहां पाटणमां चोमासुं रह्या, पडी बीजा पण घणा सुविहित तिहां आववा लाग्या. ते सांजली श्रीवर्द्धमानसूरि घणो हर्ष पाम्या.

हवे जिनेश्वरसूरि विहार करता उज्जयणी नगरीनेविषे गया, तिहां सोमचंद्रब्राह्मणनी साथें प्रीति थइ. तेमना मुखथी चार वेदनां व्याख्यान सांजली, सोमचंद खुशी थयो. प्रतिदिवस आवी ज्ञानगोष्ठि करवा लाग्यो. एक दिवसें सोमचंद्रें कह्युं के,तमारा जेवा महोटा पुरुषो साथें माहारे प्री ति थयेली डे डतां जो तमें माहारा पूर्वजोयें निधान दाटेलुं डे, ते देखाडी नहीं आपो,तो ते प्रीति शा कामनी ? वली जो आप महारा पूर्वजोयें दाटेलुं निधान देखाडो ? तो तेमांथी अर्द्ध नाग तमोने आपुं. एवुं वचन सांजली गुरुयें तेमां लान जाणीने श्रुतज्ञानने बलें निधाननुं स्थानक देखाड्युं, प्र माण पण कह्युं. ब्राह्मणें ते निधान खोदावी तत्काल प्रगट कीधुं, हर्ष पा म्यो थको गुरुने कहेवा लाग्यो के,एनो अर्द्धनाग तमें ल्यो. गुरुयें कह्युं के, अमें तो निधान मूकीने दीक्षा लीधी डे. माटें एने लइने शुं करीयें ? सोम चंद्रें कह्युं महारी प्रतिज्ञाना क्यारें पण नंग न थाय, माटे तमें ल्यो.

लइने तमारुं मन माने तेम करजो. पण म्हारी प्रतिज्ञा पूर्ण करो.

गुरुयें कह्युं के,सर्वथा अमारे इव्यनो कांइ पण खप नथी. परंतु जो त ह्वारे प्रतिज्ञानो प्रतिबंध छे, तो तह्वारा बे पुत्रमांथी एक अमने वह्वोरावी आप, के जेथी तह्वारी प्रतिज्ञा पूर्ण थाय. सोमचंडें विचार करीने ते वच न अंगीकार कर्युं. पछी विचारीने निधान बे पुत्रने समजागें वहेंची आप्युं. पण बेहु पुत्र मह्वामिथ्याग्रस्त छे माटे तेनी आगल वात करी शके नहीं अने पुत्रो पण राज्यमानी, विद्या पारंगामी तथा धनाढय ए त्रणे गुणे क री अजिमानवंत छे, तेथी कहेवाय नहीं एम करतां सोमचंड छेह्ली अव स्थायें जेवारें रोगें पीडित थयो, तेवारें बेहु पुत्र आवी कहेवा लाग्या के, हे तातजी ! तमारे जे कांइ इछा ह्वोय, ते कह्वो, तो पूर्ण करीयें. तेवारें सो मचंडें कह्युं के, मह्वारी उपर रण छे,ते उपर राखीने मरुं छुं माटें तमें सुपु त्र छो, ते मह्वारुं रण उतारो. पुत्रोयें पूछ्युं के,तमारी उपर शुं रण छे ? को इनुं कांइ लीधुं ह्वोय तो कह्वो अमें तेने आपीने रणथी छोडावीयें? पितायें सर्ववृत्तांत कह्युं. तेवारें पुत्रो बोल्या, अमें तमारुं रण जरूर उतारशुं. तमें ते नी कांइ पण चिंता राखशो नहीं. एवुं पुत्रोनुं वचन सांजली सोमचंड हर्ष पाम्यो, अनुक्रमें परलोकें पह्वोतो. तेनी उत्तरक्रिया सर्व बेहु पुत्रें करी.

ह्वे बे जाइ विचार करे छे, के मह्वाधूर्त्त श्वेतांबरें आपणा पिताने छेतर्यो छे, धूत्यो छे, छलमांहे पाड्यो छे, एटलाजमाटें जो ह्वाथी मारमार करतो साह्वामो आवे तो पण श्वेतांबरनी पोशालमांहे पेसवुंज नहीं. ह्वे ए कार्य आपणने करवुं पडशे, नहीं कां पितानो बोल शी रीतें पले? पछी बे जाइउ मांथी धनपालें कह्युं,हुं पितानुं रण उतारवा माटें श्वेतांबर थाइश ? अने तुं घरमां रहे, तेवारें शोजन बोल्यो, मह्वाराथी घरनो जार उपडे नहीं. माटे तुं घरमां रहे अने हुं श्वेतांबरनुं वचन अंगीकार करीश. पछी समस्त स्वजन वर्गने पूछीने शोजन ब्राह्मण श्रीजिनेश्वरसूरि पासें आव्यो, तेने गुरुयें पू छ्युं. हे शोजन ! तुं केम आव्यो? तेवारें शोजनें कह्युं के, मुजने जैनदर्शन नी उपर श्रद्धा नथी. पण मह्वारा बापनुं रण उतारवा आव्यो छुं,माटें जे कह्वो, ते करुं. तेवारें गुरुयें कह्युं के, श्रद्धाविना अमें कोइने दीक्षा आपता नथी, माटें अमारी पासें रह्वीने अमारो मार्ग समजी लइ पछी तह्वारुं म न माने, तो दीक्षा लेजे. एम कह्वी तेने गुरुयें पोतानी पासें राख्यो. पछी

जेम जेम जिनशासननो मार्ग समजातो जाय तेम तेम मिथ्यात्व उंबुं थतुं जाय. एम जैनशास्त्र नणतां नणतां तेने जैनशासन उपर आस्था आवी, तेथी जेम सूर्य उग्याथी हिमनुं तेज गली जाय, तेम तेनुं मिथ्यात्व सर्व गली गयुं. तेवारें गुरुयें कह्युं, हे शोनन ! हवे तहारी इच्छा होय, तेम कर. तहारुं मन माने, तो दीक्षा ले. शोनन बोल्यो, मुऊने दीक्षा आपो महारे कांइ संसारनी गरज नथी. गुरुयें पण तेने रूडो दिवस जोइने दीक्षा आपी. पढी ते शोनन मुनि, शास्त्र नणतां नणतां महाप्राज्ञ समस्त शास्त्रना पारंगामी थया. पण धनपाल पंमितें काव्यशक्तियें राजा नोजने वश करी ना इना ःख माटे बार वर्ष पर्यंत पोताना देशमां यतिनो विहार बंध कीधो.

एकदा प्रस्तावें शोननसाधु गोचरीयें गया ढे, पण हजी गोचरीनो वखत थयो नथी, तेवामां देहरामां देव वांदवामाटे नवी थोइ करीने देव वांद्या. तिहां चोवीश तीर्थंकरनी स्तुति जोडवानुं ध्यान लाग्युं. हवे गोचरी पण करवी अने थोइ पण जोडवी. एम करतां कोइएक गृहस्थना घरने विषे गया, तिहां आहार लेवाने जोलीमांथी पातरां बाहेर काढ्यां, तेमां आहार लइने फरी पाढा पात्रां जोलीमां नाख्यां. तिहां एक पाषाणनी लोढी पडी हती, ते पण ते जोलीमांहे घालीने उपाश्रयें आव्या अने गुरु आगल गोचरी आलोइ पात्रां जोलीमांहेथी बाहिर काहाढ्यां तेवारें ते मांथी लोढी नीकली, गुरुयें पूढ्युं. हे वत्स! आ शुं लाव्यो ? तेवारें शोनन मुनि सावधान थयो, अने गुरु आगलें कह्युं के हुं थोयो जोडवाना ध्यानमां हतो तेथीलोढी नाखवानुं ध्यान रह्युं नहीं. तेवारें गुरुयें पूढ्युं थोइ केवा प्रकारनी जोडी ढे ते कही संनलावो. शोननें कह्युं, "नव्यांनोज विबोधनैकतरणेविस्तारिकर्मावली" इत्यादि चोवीश जोडाना यमकबंध ढन्नुं काव्य कही संनलाव्यां ते सांनली गुरु हर्ष पाम्या घणीक साबाशी दीधी.

एकदा गुरुयें कह्युं के, हे शोननमुनि ! तमें मालवे जइ धारानगरीने विषे धनपाल पंमितने प्रतिबोधीने जेम मालवामां यतिनो विहार थाय, तेम करो. एवी गुरुनी आज्ञा पामी शोननसाधु धारानगरीयें गया. ते वखत तिहां धनपालपंमित तंबोल चावतो रक्त होठें अश्वक्रीडायें निकल्यो ढे, ते मार्गमां सामो मल्यो. हवे शोननसाधुना आगला दांत महोटा ढे ते देखी ने ए शोनन ढे एवुं कांइ जाणतो नथी तेथी धनपाल हास्य करी कहेवा

लाग्यो के "गर्दभदंत! नमस्ते" ते सांभली शोभने विचार्युं जे जो पाछो उत्तर न आपुं, तो म्हारी पंडिताइ शा कामनी? एम चिंतवी शोभने कह्युं, "मर्कटास्य वयस्य सुखं" एवी रीतें पाछी बराबरीनी गाल सांभली, वैरीनाघा सरखी हैये लागी, पण पंडित जाणीने हर्ष पाम्यो थको कहेवा लाग्यो, "कस्य गृहे वसतिस्तव साधो?" तेवारें शोभनें कह्युं, "यस्य ममोपरि रुचिस्तस्य गृहे"

एवुं सांभली साधुनां वचन जाणीनें धनपालें पोतानुं माणस साथें मोकलीनें ते साधुने पोताना घरना उटला उपर उतारो दीधो. अने केटलिएक वार पछी अश्वक्रीडा करी पोतें पण घरें आव्यो. अने शोभननी साथें गोष्टि करवा बेठो. साधुने पूछ्युं जे तमें म्हारा भाइने ओलखो छो? शोभने कह्युं "तमें दीठे ओलखो!" तेवारें चमत्कार पाम्यो थको कहेवा लाग्यो के, शोभनसाधु तमेज छो के? शोभने कह्युं हुंज छुं. अने तमने वंदाववा आव्यो छुं. ते सांभली हर्षवंत थयो थको आहारने अर्थें पोताने घेर तेडी गयो. तिहां ते साधु शुद्धमान आहार लीयें, अने प्रतिदिन ज्ञाननी गोष्टि करे.

एकदिवस शोभनसाधु वहोरवा गया तेने वहोराववा माटे मश्करीमां त्रण दिवसनुं खाटुं दहीं आप्युं. तेवारें साधुयें कह्युं, ए अमारे कल्पे नहीं. तेने धनपालें कह्युं तमे ए खटपट मूको. खरुं कारण तो ए छे जे ए त्रण दिवसनुं दही खाटुं थइ गयुं छे, ते तमोने भावे नहीं तेमाटे ना कहो छो.

साधुयें कह्युं एमां जीवोत्पत्ति थइ छे धनपालें कह्युं जो एमां जीवो देखाडो तो तमारी वात सत्य मानुं? अन्यथा मानुं नहीं. तमें कपट करो छो.

साधु बोल्या, अमें कपट करता नथी ल्यो तमोने परीक्षा करवी होय तो जीवो देखाडी आपुं छुं. एम कही एक स्थालिकामां दधि लइ तेमां अलता पोथी पलाली नाखी अनें ते स्थालिका तडके मूकी तेने योगें सूक्ष्म बेंद्रियजीव अलता उपरें प्रगट दीसवा लाग्या. ते धनपालने देखाड्या धनपाल देखीने यतिनां वचन उपर आस्थावंत थयो.

एम प्रतिदिन श्रीजिनधर्मना रहस्य समजावतां धनपालने धर्मउपर आस्था आवती गइ, अने मिथ्यात्व अंधकारदल टलतुं गयुं तेथी सम्यक्त्व उद्योत प्रगट थयो तेवारें पोतें कुटुंबसहित गुरुपासें सम्यक्त्वमूल बार व्रत उच्चर्यां प्रतिदिवस प्रथम श्रीजिनबिंबनी पूजा करे, पछी पाणी

पीये. पूजा कस्याविना कांइ पण चीज मुखमां प्रक्षेपे नहीं. एम समकेतनी दृढता थइ. तेथी तेने मिथ्यात्व, दीठुं पण रुचे नहीं एवो थयो.

हवे एकदा प्रस्तावें नोजराजा आहेडे चड्यो छे. ते महोटो आहेडो कस्या पछी परिश्रांत थयो एक वृक्षनी नीचें आवी बेठो, अने पंमितोने कहेवा लाग्यो के, आखेटकनुं वर्णन करो तेवारें सर्व पंमितोयें जेने जेवी रीतें मनमां युक्तियो आवी, तेणें तेवी रीतें आखेटकनुं वर्णन कस्युं. पछी राजायें धनपालपंमितनी साहामुं जोयुं, पण धनपालपंमित तो शुद्ध समकेत धारी नवतत्त्वनो जाण छे, ते आखेटकनुं केम वर्णन करे? तेथी धनपालें विचार करीने नीचेंप्रमाणे काव्य कह्युं.

॥ श्रीनोजे मृगयां गतेपि सहसा चापे समारोपिते, ऽप्याकर्णांतगतेपि लक्षनिहिते प्येणांकलग्नेपि च ॥ न त्रस्तं न पलायितं न चलितं नोत्कूंजितं नो त्प्लुतं, मृग्यां मद्दशिनां करोति दयितां कामोऽयमित्याशया ॥१॥ अर्थः– श्रीनोजराजा मृगया करवा गया त्यां तत्काल धनुष्य उपर बाण चढावी लक्ष आपीने हरणनी पासें बाण आव्यो तो पण ते हरण नयने पाम्यो नहिं, तथा नासी पण न गयो, तथा ते स्थानक पण मूकी गयो नहिं, तथा शब्द पण बोल्यो नहिं, तथा उंची फाल पण मारी नहिं. कारण के ते मृगें एवो विचार कस्यो जे आ राजा छे तेज एक कामदेव छे ते मने वाहाली एवी मारी हरणी वश करी आपशे? एवी इच्छाथी त्यांज स्थिर थइ रह्यो.

॥ किं कारणं तुकविराज मृगा यदेते, व्योमोत्पतंति विलिखंति नुवं वराहाः ॥ देव त्वदस्त्रचकिताः श्रयितुं स्वजाति, मेके मृगांकमृगमादिवराहमन्ये ॥ २ ॥ अर्थः–राजायें प्रश्न कस्यो जे, हे कविराज ! हरणो आकाशमां स्फाल मारे छे,अने सूवरो नूमि विदारण करे छे,एनुं शुं कारण हशे? त्यारें धनपाल कवि तेनो उत्तर कहे छे के, हे राजन्! तारा शस्त्रनुं अत्यंत तीक्ष्ण तेज जोइने नयनीत थया थका स्वजातीय एटले ए मृगनी जातीनो जे चंद्रमामां रहेलो मृग, तेनो आश्रय लेवासारु मृगो आकाशमां उंची फालो मारे छे, अने सुवरो ते पोतानी स्वजातीनो मूल पुरुष जे आदि वाराह ते पातालमां छे तेनो आश्रय लेवामाटे पृथ्वी खोदे छे.

एम सांनलीने कोई द्वेषीयें राजाने कह्युं जे ए कवि जैनी छे, तेथी मृग

यानुं वर्णन करशो नहिं,ते माटे एने मृगयानुं वर्णन करवाने कह्यो. ते सां भळीने राजायें तेम कह्युं, ते उपरथी धनपाळ बोल्यो.

॥ रसातलं यातु यदत्र पौरुषं,कुनीतिरेषाऽशरणोह्यदोषवान् ॥ प्रहन्यते यद्बलिनाति डुर्बलो, हाहा महाकष्टमराजकं जगत् ॥ ३ ॥ अर्थः—जीवनी हिंसा करवी एवुं जे पराक्रम तेनो नाश थाउ. अरेरे ! ए महोटा कष्टनी वात ढे अने आ जगत् पण राजरहित देखाय ढे, जेमां अशरण तथा दोष रहित डुर्बळ एवा पशुउने बळवान् मारवा जाय ढे माटे ए अनीति ढे.

ए काव्य सांभळी राजा कोपायमान थयो अने लाळचोळ लोचन करी बोल्यो, हे धनपाळ ! ए तें शुं कह्युं ? तेवारें धनपाळ आ प्रमाणें बोल्यो ॥

॥ वैरिणोपिहि मुच्यंते, प्राणांते तृणभक्षणात् ॥ तृणाहाराः सदैवैते, हन्यंते पशवः कथं ॥ १ ॥ अर्थः—जो मुखमां तृण लइ शत्रु आवे, तो तेने तेनो वैरी मारतो नथी तो निरंतर तृण भक्षण करनार एवा पशुउने मारवां ते शुं कहेवाय ? ए श्लोक सांभळी राजा भोजने करुणा उपनी तेथी धनुष्य भांगी नाख्युं, बाण भांग्या अने जावजीवसुधी आखेटकनुं पच्चरकाण कीधुं. राजा खुशी थयो धनपाळनें सिरपाव आप्यो, पहेरामणी करी, साबासी दीधी, अने कह्युं के तें मुफने पापथकी निवर्त्ताव्यो, माटें तुं महारो उपकारी ढो.

पढी राजा आहेडाथी पाढो फरी पोताने घेर आवे ढे. तिहां मार्गमां घणा ब्राह्मणोयें मळी यज्ञमां होमवा सारु यज्ञस्तंभने विषे ढाग बांध्यो ढे, ते करुणास्वरें बुंबारव करे ढे, ते जोइ राजा धनपाळने पूढे ढे के, आ बकरो शुं कहे ढे ? तेवारें धनपाळ पंमितें नीचेंप्रमाणें एक काव्य कह्युं.

॥ नाहं स्वर्गफलोपभोगतृषितोनाभ्यर्थितस्त्वं मया, संतुष्टस्तृणभक्षणेन सततं साधो न युक्तं तव ॥ स्वर्गे यांति यदि त्वया विनिहता यज्ञे ध्रुवं प्राणिनो, यज्ञं किं न करोषि मातृपितृभिः पुत्रैस्तथा बांधवैः ॥१॥ अर्थः—हे राजा,आ बकरो एम कहे ढे जे हुं स्वर्गनो अभिलाषी नथी तथा तेना सुखनी प्राप्ति करवाने माटे तमारी पासें में याचना पण कीधी नथी,केवळ तृणभक्षण करीने सदा संतुष्ट एवो निरपराधी हुं ढउं, ढतां हे साधु ! मारी तमें हिंसा करो ढो, ए कर्म तमने योग्य नथी. अने यज्ञमां जीवनी हिं

सा करवाथी जो ते जीवने स्वर्गप्राप्ति थती होय तो माता, पिता, पुत्र, ना इयोयें करीने यज्ञ केम करता नथी ?

ए श्लोक सांनलीने राजायें पूछ्युं के,त्यारें शुं यज्ञ करवाथी स्वर्गनी प्राप्ति नहिं थाय ? त्यारें कवि बोल्यो.

॥ यूपं छित्वा पशून् हत्वा,कृत्वा रुधिरकर्दमम् ॥ यद्येवं गम्यते स्वर्गे, नरके केन गम्यते ॥ ६ ॥ अर्थः—यज्ञनो स्तंन तोडी नाखवाथी तथा पशुउनी हत्या करवाथी; तथा रुधिरनो कीचड करवाथी जो स्वर्गनी प्राप्ति थती होय, तो पछी नरकमां कोण जाय ? वली राजायें पूछ्युं के, यज्ञ केवी रीतनो करवो? ते कही संनलावो. त्यारें कवि बोल्यो.

॥ सत्यं यूपं तपोह्यग्निः, प्राणास्तु समिधो मम ॥ अहिंसामाहुतिं दद्या, देष यज्ञः सनातनः ॥७॥ अर्थः—सत्यरूप यज्ञस्तंन तथा तपश्चर्यारूप अग्नि अने पोतानां प्राणरूप समिध,अहिंसारूप आहुति,एवी रीतनो जे यज्ञ,तेज नाश रहित निर्दोष यज्ञ जाणवो. अने यज्ञ पण तेनेज कहेवो. अने हिंसा कारक जे यज्ञ, ते निंदवा योग्य छे. त्यारें राजायें पूछ्युं के, ए वात बीजाउने केम गमती नथी ? तेनो उत्तर कवि बोल्या.

॥ हिंसा त्याज्या नरकपदवी सत्यमानाषणीयं, स्तेयं हेयं सुरतविरतिः सर्वसंगान्निवृत्तिः ॥ जैनोधर्मो यदि न रुचते पापपंकावृतेन्यः, सर्प्पिर्दुष्टं किमलमियता यत् प्रमेही न नुंक्ते ॥८ ॥ अर्थः—नरकना मार्गरूप जे हिंसा तेनो त्याग करवो अने सत्य नाषण करवुं, चोरी न करवी, विषय सुखनो त्याग करवो, अने सर्व परिग्रहनो त्याग करवो एवा उपदेशरूप लक्षणें करी युक्त उत्तम जैनधर्म छे, ते छतां पापी लोकोने तें जैनधर्म जो रुचतो नथी तो त्यां दृष्टांत कहे छे के, जेम प्रमेह रोग ग्रस्त मनुष्यने घृत अरुचिकारक थाय छे,तो ते घृत काहिं दुष्ट कहेवाय छे? तेनी परें आहिं पण जाणवुं. ए वात सांनली राजायें बकरो मूकाव्यो, धनपालने घणुं सन्मान दीधुं, पछी राजा घरे आव्यो.

हवे एकदा प्रस्तावें राजा सरस्वतीकंगानरण एवे नामें शिवना प्रासादनेविषे धनपालने साथें तेडी गयो, तिहां राजायें पूछ्युं के, हे धनपाल ! आजना समयमां कोईमां एवुं ज्ञान छे, के जेथकी चमत्कार उपजे ? धनपालें कह्युं के, एवुं सम्यक्ज्ञान श्रीजिनशासनने विषे छे, अन्यत्र तो मि

थ्यात्व छे, ते सांजली धनपालने जूठो पाडवामाटे राजायें कह्युं के, आ प्रासादनां त्रण द्वार छे, ते मांहेला हुं कया द्वारमांथी पाछो नीकलीश? ते सांजली धनपाल पंमितें एक माटीना गोलामांहे कागल नाखीने थगीधर ना हाथमां आप्यो. अने थगीधरने कह्युं के,राजा बाहिर निकल्या पछी तुं आ गोलो राजाने आपजे. एम कही थगीधरने शीख दीधी. राजायें विचार्युं जे, त्रण द्वारमांथी एक द्वारनुं नाम एणें लख्युं हशे. माटे त्रणे द्वार ने पडतां मूकी शिलाटने तेडावी मंमपनी शिला पाछी हटावी उपरली वाटें राजा निकल्यो, निकल्या पछी थगीधरें माटीनो गोलो राजाने आप्यो राजायें ते गोलो जांजी मांहेथी कागल काहाढीने जोयुं, तो तेमां एवुं लखेलुं हतुं जे राजा शिलाट तेडी मंमपनी शिला पाछी करावी उपर द्वार करी निकलशे? ते वात वांचीने राजा चमत्कार पाम्यो अने धनपालने घणुं दान दइने श्रीजिनशासनने प्रशंसवा लाग्यो.

वली एकदा प्रस्तावें तेज शिवप्रासादने विषे धनपालपंमितने सार्थे तेडीने राजा गयो. त्यां राजाये तथा बीजा सर्व लोकोयें महादेवने नमस्कार कस्यो, अनें धनपालपंमितें न कस्यो, तेवारें राजायें कविने पूछ्युं के, तुं केम नमस्कार करतो नथी? तेवारें कवियें आ प्रमाणें कह्युं.

॥ जिनेंद्रचंद्रप्रणिपातलालसं, मया शिरोऽन्यत्र ननाम नाम्यते ॥ गजेंद्र गंमस्थलदानलंपटं,शुनीमुखे नालिकुलं निलीयते ॥ ए ॥ अर्थः—जिनेंद्ररूपी जे चंद्रमा तेने वंदन करवाने उत्कंवित थयेलुं जे मारुं मस्तक,ते जिनेंद्रविना बीजाने नम्युं नथी अनें नमस्कार करनार पण नथी; जेम हाथीना गंमस्थलपर बेसीने तेना मद ऊरणना सुगंध लेवामां लंपट, एवा जे च्रमरा ते कुतरीना मस्तक उपर बेसवाने कोइ दिवस इछता नथी. ते सांजली राजा रीशाणो अने विचायुं जे, आ ब्राह्मणनी जाति छे, ते अवध्य छे, पण एणे शिवने उछाप्या माटे एनां नेत्र काहाडी लेवां जोइयें. पछी धनपालने राजायें कह्युं जे, तुं मत्तद्वेषी छो. त्यारें फरी कवि बोल्यो.

॥ जवबीजांकुरजनना,रागाद्याः क्षयमुपागता यस्य ॥ ब्रह्मा वा विष्णुर्वा,हरिर्जिनो वा नमस्तस्मै ॥१०॥ अर्थः—मायारूपी प्रपंचना उत्पन्न करनारा एवा, जे काम, क्रोध, मद, मत्सर, लोज इत्यादिकथी रहित होय पछी

ते ब्रह्मा हो, वा विष्णु हो, वा महेश्वर हो, अथवा जिनेश्वर हो, तेने मारो नमस्कार होजो. ए श्लोकथी पण राजा बराबर प्रसन्न थयेलो न दीठो, तेवारें धनपालें राजानो अन्निप्राय जाणीने विचार्युं जे राजा खुशी थाय तेम करुं? पण श्रीजिनेंद्रविना अन्य देवनी स्तुति तो कदापि करुं नहिं.

हवे राजा महादेवनुं देहरुं मूकी पोताना घर न्नणी चाल्यो, मार्गमां एक वृद्धा मोशी मस्तक कंपावती हाथ धूजावती साहमी मली,ते जोइ रा जायें पोतानी साथेंना सर्व पंमितोने पूछ्युं जे आ मोकरी शिर धूणावती कर कंपावती शुं कहे छे? ते सांन्नली पंमितो कहेवा लाग्या.

तेमांएक पंमित बोल्यो ॥ दोहा ॥ कर कंपावे शिर धुणे, बूढी काहुं कहेइ ॥ हकारंता जम न्नडह, नन्नंकार करेइ ॥ १ ॥ बीजो पंमित बोल्यो के ॥ श्लोक ॥ जरायष्टिप्रहारेण,कुब्जीन्नूता हि वामना ॥ गतं तारुण्यमाणिक्यं,निरीक्तेत पदे पदे ॥ २ ॥ पछी राजायें धनपालनी साहामुं जोयुं, तेवारें धनपाल नीचें प्रमाणें श्लोक बोल्यो,

॥ श्लोक ॥ किं नंदी किं मुरारिः किमु रतिरमणः किं विधुः किं विधाता, किंवा विद्याधरोऽयं किमुत सुरपतिः किं नलः किं कुबेरः ॥ नायं नायं न चायं न खलु नहि न वा नैव चासौ न चासौ,क्रीडां कर्त्तुं प्रवृत्तः स्वयमिह हि तले न्नूपतिर्न्नोजदेवः ॥ ११ ॥ अर्थः—हे राजन्! आ मोशी तमोने जोइने एम कहे छे, जे आ कोण रुद्र छे? अथवा साक्षात् विष्णु छे? के कामदेव छे? तथा चंद्र छे? के ब्रह्मा छे? के कोइ गंधर्व छे? के इंद्र छे? के नलराजा छे? के कुबेर छे? नहिं नहिं आ रुद्र न होय, विष्णु न होय, मदन न होय, चंद्र न होय, ब्रह्मा, गंधर्व, इंद्र, नल, कुबेर एमांनो कोइ नथी! पण आ पृथ्वीपर क्रीडा करवासारु न्नोजराजा आवेला छे.

ए काव्य सांन्नली राजा घणो हर्ष पाम्यो. अने कहेवा लाग्यो के,हे धनपाल! वर माग. जे माग ते आपुं. तेवारें धनपालें कह्युं के,चक्षु युगल आपो. ते सांन्नली राजा धनपालमां मनोगत न्नाव ज्ञान देखी चमत्कार पाम्यो,पछी घणुं दान आपीने धनपालने खुशी कर्यो.

हवे धनपालपंमितें श्रीऋषन्नदेवना वर्णनमय श्रीऋषन्नपंचाशिका नामें ग्रंथ कर्यो, तेने शिलामां कोरवाने सरस्वतीकंठान्नरण प्रासादनेविषे स्थाप्यो. एकदा न्नोजराजानुं काव्य करी न्नोजराजाने संन्नलाव्युं, ते कहे छे.

॥अभ्युद्धृता वसुमती दलितं रिपूरः,क्रोडीकृता बलवता रिपुराज्य लक्ष्मीः॥ एकत्र जन्मनि कृतं तदनेन यूना, जन्मत्रये यदकरोत्पुरुषः पुराणः ॥ १ ॥

अर्थः—त्रण जन्में करी पुराणपुरुष जे विष्णु,ते जे कार्य करता हवा, ते त्रण कार्य युवान एवा नोजराजायें कर्यां,ते जेम के,विष्णुयें वाराहावतार मां पृथ्वीनो उद्धार कर्यो, अने नोजराजें आ जन्ममां पृथ्वीनो उद्धार कर्यो, विष्णुयें नृसिंहावतारमां हिरण्यकशिपुनुं उरःस्थल फाड्युं, आणे आ जन्में करी दुशमननुं हृदय स्फोटन कर्युं, विष्णुयें वामनावतारमां बलिराजानी सर्व राज्य लक्ष्मी लीधी, ने नोजराजाये आज जन्ममां दुशमननी राज्यलक्ष्मी लीधी छे. एवुं पोतानुं वर्णन सांनली राजा हर्ष पाम्यो थको ते ऋषनपंचाशिकानी शिला उपरें मणिमय कलश स्थापतो हवो.

एक दिवसें राजायें धनपालने पूछ्युं के, केम हमणां तमें राजसनाने विषे स्वल्प आव जाव करो छो? धनपालें कह्युं, स्वामी! में नरत राजानी कथा रचवा मांमी छे, तेमां वखत रोकवो पडे छे माटे बराबर अवातुं नथी. राजायें कह्युं,तो ते मुजने संनलावो. तेवारें धनपालें कह्युं. कया वखतें संनलावुं? तेनो निर्धार करी आपो. राजायें रात्रिनो वखत ठेराव्यो. पछी नित्यप्रत्यें रात्रिनी वखतें धनपाल कथा संनलाववा आवे, ते सांनलतां थकां राजाने एवो रस उपन्यो के रखे ने आ ग्रंथनो रस अन्यत्र जाय? एवा हेतुथी सोनानो थाल नीचें मंमाव्यो.

एकदा राजायें कह्युं के,हे धनपाल! तमें नरतने स्थानकें महारुं वर्णन करो. अने आयोध्याने स्थानकें उज्जयणी नगरीनुं वर्णन करो. तथा च रित्रने स्थानकने विषे महाकालनुं वर्णन करो, तो हुं तमोने घणुंज द्रव्य आपुं. अने मानमहत्त्व पण आपुं. तेवारें धनपालें कह्युं ॥ यतः ॥ जम्मह जिण पयपंकय, आराहणाउ न होइ मणइंछं ॥ तेणे नहु महकज्जं, कया वि इय रायमरकीवइ ॥ १ ॥ ते सांनली राजा क्रोधायमान थयो थको ते मूलपुस्तक लइ अग्निमांहे नाखी दीधुं, तेथी धनपालने दुःख लाग्युं, त्यांथी पोताने घेर आवी जुना मांचा उपर सुइ रह्यो, एवामां तेमनी पुत्री तिलकमंजरीयें आवीने पूछ्युं के, हे तातजी! तमोने एवडुं दुःख प्राप्त थयुं तेनुं शुं कारण छे? तेवारें धनपालें निःश्वास मूकी सर्व वृत्तांत कह्युं. ते सांनली तिलकमंजरी बोली, हे तातजी! तमें दुःख म करो. ए सर्व कथा

म्हारे मुखार्थें छे, में सांभली छे, तेवीज हैयामां धारी राखी छे. हुं तमोने लखावीश. ते सांभली धनपाल हर्ष पाम्यो थको स्नान करी देवपूजा कीधी. पछी ते कथारत्न, तिलकमंजरीयें लखाव्युं; माटें ते ग्रंथनुं नाम पण तिलक मंजरी एवुं राख्युं. पछी धनपालपंमित त्यांथी रीसाइने सांचोर नगरें गयो.

एवामां भोजराजानी सभाने विषे परदेशी वादी वाद करवा आव्यो, तेमणे भोजराजानी सभामांहेला सर्व पंमितोनें हराव्या, कोइनी पंमिताइ तेनी आगल टकी शकी नहीं. तेवारें राजाने धनपालपंमित सांभरी आव्यो माटे तेने तेडुं मोकल्युं, पण धनपालें कह्युं के, जो राजा पोतें आहीं तेड वासारु आवे, तो हुं आवुं, नहीं तो सर्वथा आवुं नहीं. तेवारें राजा पोतें जइ मनावीने तेडी लाव्यो, घणुंज मान महत्त्व दीधुं. धनपालनुं आववुं सांभलीने वादी चिंतातुर थयो. तेने रात्रियें सरस्वतीयें आवीने कह्युं के एक धनपालविना बीजा सर्वत्रस्थानकें तहारो जय छे, माटें धनपालपंमित नी साथें तुं वाद करीश नहीं. एवुं सरस्वती देवीनुं वचन सांभली ते वादी रात्रिभोज तिहांथी छानो मानो चालतो थयो. तेथी धनपालनो जय थयो. सर्वत्र कीर्त्ति पसरी, यशोवाद पाम्यो.

हवे धनपालपंमित एक श्रीवीतरागदेवनी स्तुति करे तेविना अन्यदेव नी स्तुति सर्वथा करेज नहीं. एवी वचनशुद्धिपूर्वक समकेत तथा बारव्रत पाली अंतसमयें अणसण आराधी स्वर्गें गयो. अनुक्रमें मोक्ष सुख पामशे? ए वचनशुद्धि उपर धनपालपंमितनी कथा कही. माटें वचनशुद्धिनुं आराधन करवुं. ए वचनशुद्धिनुं बीजुं द्वार कह्युं ॥ २६ ॥

हवे त्रीजुं कायशुद्धिनुं द्वार कहे छे.

॥ छिज्जंतो भिज्जंतो,पीलिज्जंतो य दह्यमाणोवि ॥ जिणवज्ज देवयाणं,ण णमइ जो तस्स तणुसुद्धि ॥ २७ ॥ अर्थः—खड्गादिकें करी (छिज्जंतो के०) छेदातो थको तथा कुंत भालादिकें करी (भिज्जंतो के०) भेदातो थको तथा घाणीमांहे घाली (पीलिज्जंतो के०) पीलातो थको हु इति निश्चें (य के०) वली अग्निमांहे (दह्यमाणोवि के०) दाजतो बलतो थको पण (जिणवह्यदेवयाणं के०) श्रीजिनेश्वरदेवने वर्जीने बीजा अन्य मिथ्यादृष्टि देवोने (जो के०) जे पुरुष (ण णमइ के०) न नमे, (तस्सतणु सुद्धि के०) तेने तनुशुद्धि कहीयें. एटले कायशुद्धि कहीयें. अर्थात् एक श्रीअरिहंत दे

वने तथा श्रीअरिहंतनी आज्ञाना प्रतिपालक जे साधु तेने प्रणाम करवो, पण बीजाने प्रणाम न करवो. एवो प्रथम प्रतिमापन्न श्रावकनी पेरें नियम राखे, तेने "रायाभिउगेणं" इत्यादिक ठ आगार मोकलां न होय तेने निरागार समकेत कहीयें. अने जे ठ आगार मोकलां राखे, तेने सागार समकेत कहीयें. प्रतिमाधर श्रावकनें निरागार समकेत होय. एवी रीतें जे मनःशुद्धि वचनशुद्धि अने कायशुद्धियें करी समकेत पाले अनुक्रमें तेने क्षायिक समकेत पण आवे ॥ १७ ॥

हवे कायशुद्धिनी उपर वज्रकरणराजानो दृष्टांत कहे ठे. अवंती देशमां दशपुर नामा नगरनो वज्रकरणनामें राजा ठे, ते एकदा आहेडे क्रीडा करवा गयो, तिहां घणी जीवहिंसा करी, तेमां एक सगर्भा मृगलीने मारी नाखी, तेनो गर्भ तडफडतो त्रूटी पड्यो, ते देखी राजा ध्रूज्यो; अने पश्चात्ताप करवा लाग्यो के हा हा ! ! में ए शुं अकार्य कस्युं, अरे मुज पातकीनी शी गती थाशे ! ! !

एवामां त्यां एक शिलापाट उपरें ध्यानारूढ थयेलो साधु दीठो तेने राजायें जइ नमस्कार कस्यो, यतियें धर्मलाभ दीधो. राजा बेसीने साधुप्रत्यें पूठवा लाग्यो के, तमें इहां आ शुं करो ठो? साधुयें कह्युं के, अमें अमारा आत्मानुं हित करीयें ठैयें. तेवारें राजा हसीने बोल्यो के, तमें भूख तृषा शीत तापादिक सहन करो ठो, ए शुं आत्महित करो ठो ? साधुयें कह्युं, जिहां अल्पकष्टथी घणुं सुख पामीयें, तेने आत्महित कहीयें; परंतु स्त्रीसंभोग मद्यमांसादि आहार करतां अनेक जीववध करवे स्वल्प सुख भोगवी पठी परभवें हजारो लाखो गमे वर्षो पर्यंत नरककुंभमांहे पचवुं पडे. हे राजन् ! तेने आत्महित न कहीयें. इत्यादिक धर्मनुं रहस्य कहीने ते साधुयें राजाने समजाव्यो. राजा धर्म पाम्यो समकेत उच्चस्युं, अने एवो नियम कस्यो के, आजपठी मिथ्यादृष्टि देव तथा गुरु प्रमुखने हुं महारी कायायें करी प्रणाम करुं नहीं एवो निश्चयथी दृढधर्म अंगीकार कस्यो.

हवे उज्जयणी नगरीयें सिंहरथ राजा ठे, तेणें वज्रकरण राजाने पोतानी सेवा निमित्तें तेडाव्यो, पण वज्रकरण नियमभंगनी बीकथी पोताना हाथनी मुद्रिकामां रत्नमय श्रीमुनिसुव्रतस्वामीनी प्रतिमा थापीने नमस्कार करती वखतें ते प्रतिमां सन्मुख प्रणाम करे, तेथी नियम अखंम

रहे. एवामां कोइक डुर्जनें ते सिंहरथराजा आगल चाडी करी जे वज्रकर णराजा कांइ तमने नमस्कार करतो नथी, पण वीटीमां गोठवेली पोता ना देवनी प्रतिमाने प्रणाम करे ढे. ए वात सांन्नली राजा कोप्यो अने विचाख्युं जे प्रन्नातें जइने एने काष्ठपंजरमां नाखुं, जो प्रणाम करे तोज मूकुं. एम सिंहरथराजाने ते रात्रियें उंघ आवती नथी तेवारें राणीयें पू ढ्युं, स्वामी तमोने एवडी शी चिंता उपनी ढे के उंघपण आवती नथी? राजायें वज्रकरणनी वार्त्ता सर्व राणी आगल कही संन्नलावी.

एवामां देवकुंन्नपुरनगरनो रहेवासी गुणसमुड् नामें वणिक तेनी यमु ना नामें न्नार्या ढे, तेनो चिबुक नामें पुत्र ढे, ते घणा करियाणां लइ उक्क यणी नगरीयें आव्यो ढे. अने ते नगरमां वखार न्नाडे लइ व्यापार करतो अनंगलता वेश्यानी सार्थे लुब्ध थयो थको तेणे सर्व ड्व्यनो व्यय करी नाख्यो. एकदा अनंगलतायें वणिकने कह्युं के, तुं राजानी राणीनां आन्न रण मने लावी आप, तो हुं तहारी सार्थे विषय सुख न्नोगवुं. तेवारें तेने संतोषवामाटें ते वणिक, राजाना मंदिरमां चोरी करवा पेठो, ते वखत ते राजानां वचन तेणे सांन्नव्यां. ते वणिक कर्मवशें चोरी करवा पेठो ढे, पण जातें परम श्रावक ढे, तेथी तेणें विचाख्युं जे महारो स्वामी वज्रक रणराजा समकेत धारी ढे,ते रखे ने बंधीखाने पडे, माटे चोरी पडती मू कीने एक वार तेने जइ खबर आपुं. पढी ते त्यांथी निकव्यो. दशपुरे आ वी वज्रकरण राजानी आगल वात कही,तेणें पूढ्युं तहारा जाणवामां के म आव्युं? वणिकें पोतानुं सर्व वृत्तांत कह्युं, तेवारें वज्रकरणराजा धान्य पाणीनो संग्रह करी कोटना दरवाजा बंधक री पोते मांहे रह्यो.

एवामां सिंहरथराजा पण चडी आव्यो. ते पण दशपुरना गढने वीं टी पडाव नाखी बेठो. केटलाएक दिवस पढी ते देश सर्व उजडजेवो थइ गयो. एवामां श्रीरामचंड्, लक्ष्मण अने सीता ए त्रणे जण दक्षिणदेश त रफ जतां ते देशमां आव्या. रामचंड्जीयें न्नरेला घर, हाट, सर्व सूना दे खीने ते देशवासी कोइ दरिड्री पुरुषने तेनुं कारण पूढवाथी तेणें सर्व हकी गत कही. ते सांन्नली रामचंड्जीयें ते पुरुषने दान आपी विसर्ज्यो. पढी लक्ष्मणजीप्रत्यें कहेता हवा के, वज्रकरण राजा आपणो साहामी न्नाइ शु द्धसमकेतधारी ढे, माटें एनुं सहाय करवुं. एम कही ते त्रणे जण दश पुर

नगरें आव्या. तिहां उद्यानमां उतारो करी लक्ष्मणने वज्रकरण पासें मोकल्यो, तेने देखी वज्रकरण उठी उनो थयो, आसन आपी सर्व पोतानुं वृत्तांत कह्युं. नोजननी सामग्रि करावी तेवारें लक्ष्मणें कह्युं के, महारो स्वामी रामचंद्रजी सीताजीनी साथें उद्यानमां बेठा छे, तेमने मूकीनें हुं नोजन न करुं. ते सांजली वज्रकरणराजा सर्व रसवती साथें लइ लक्ष्मणसहित उद्याननें विषे आव्यो. सर्वजणायें हर्षसहित नोजन कर्युं. रामचंद्रजीयें सिंहरथराजा पासें लक्ष्मणने मोकल्यो, तेणें जइ कह्युं के, हुं अयोध्यापति नरतराजानो मोकलेलो दूत छुं. अने वज्रकरणराजा नरतराजानो साहामी नाई थाय छे, माटे तमें एनी साथें मेलाप करो, अने युद्ध म करो. जो मेल नहीं करशो, तो तमारुं कर्युं तमें नोगवशो.

एवां लक्ष्मणनां वचन सांजलतांज सिंहरथें नृकुटि चडावीने नफरने हुकम कर्यो के, आ दूत छतां महारी साहामुं चडी चडी बोले छे, माटें एने गलुं फाली बाहेर काढी मूको. ते सांजली नफर उठ्या, एटलामां लक्ष्मण एक आलानस्तंन उपाडी सर्व नफरोने हतप्रहत करी सिंहरथनो मुकुट नांगी चोटली पकडी सिंहासनथी नीचें नाखी बेहु बाहु बांधीने उघाडे पगे रामचंद्रजी पासें लइ आव्यो. तिहां सिंहरथ कहेतो हवो के, हे स्वामी! में तुमने उलख्या नहिं, महारी नूल थइ माटें अपराध क्षमा करो. तेने रामचंद्रजीयें कह्युं के, वज्रकरणनी साथें मेलाप करी चालजे, अने आज पछी प्रणाम करवा बाबत एनुं नाम पण लईश नहिं. ते वात सिंहरथें कबूल करी. वज्रकरण साथें मेलाप कीधो. सिंहरथराजा रामचंद्रजीनी घणी नक्ति करवा लाग्यो, केटलाएक दिवस तेना आग्रहथी तिहां रही, पछी दक्षिणदेश नणी चाल्या. सिंहरथ उज्जयणीयें आव्यो, अने वज्रकरण दशपुरें गयो. तिहां खबर आपनार वणिकने आनरण आपी विदाय कर्यो. ते वज्रकरणराजा मन, वचन अने कायानी शुद्धियें समकेत पाली स्वर्गें पहोतो. अनुक्रमें मोक्षसुख पामशे. ए कायशुद्धि उपर वज्रकरणनो दृष्टांत सांजली मन, वचन अने कायानी शुद्धिपूर्वक समकेत पालवुं ॥

इति तपागछालंकार श्री शांतिचंद्रगणिशिष्य श्रीरत्नचंद्रगणिविरचितश्रीसम्यक्त्वरत्नप्रकाशनामनि सम्यक्त्वसप्ततिकाप्रकरणबालावबोधे त्रिशुद्धिस्वरूपनिरूपणनामा चतुर्थोधिकारः ॥ ४ ॥

हवे पांचमुं पांच दोष टालवानुं द्वार कहे छे.

॥ डुसिज्जइ जेइ इमं, ते दोसा पंच वज्जणिज्जाउ ॥ संका कंख विगिछा, परतिछ पसंस संथवणं ॥ २८ ॥ अर्थः–(जेइ के०) जे जीव, पांच दोषें करीने (इमं के०) आ समकेतने (डुसिज्जइ के०) दूषवे एटले दोष सहित करे, ते जेम कादवें करी वस्त्र मलिन करे तेम पांच दोषें करी समकेत मलिन करे छे. (ते दोसा पंच के०) ते पांच दोष (वज्जणिज्जाउ के०) वर्जवा ते पांच दोषनां नाम कहे छे. एक शंका, बीजो कांक्षा, त्रीजो वितिगिछा, चोथो परतीर्थिनी प्रशंसा अने पांचमो परतीर्थिनो संस्तव, परिचय.

हवे शंकादि दूषणोनुं स्वरूप कहे छे.

॥ देव गुरुम्मि तत्ते, अछि न वछित्ति संसउ संका ॥ कंखा कुमयहिलासो, दयादिगुणे लेस देसणउ ॥ २९ ॥ अर्थः–प्रथम शंकानुं स्वरूप गाथाना पूर्वार्द्धें करी कहे छेः–(देव के०) देवने विषे (गुरुम्मि के०) गुरुने विषे (तत्ते के०) नवतत्त्वादिक पदार्थोनेविषे (अछिनवछित्ति के०) अस्ति एटले, छे किंवा नास्ति एटले नथी इति एटले एवो जे (संसउ के०) संशय तेने (संका के०) शंका एवे नामें दूषण कहीयें. ते शंकाना बे भेद छे. एक सर्वथकी शंका अने बीजी देशथकी शंका जाणवी. तिहां धर्म अस्ति अथवा नास्ति एवी जे शंका ते सर्वप्रकारें शंका जाणवी. तथा बीजी देशथकी शंका ते धर्मपदार्थ तो छे परंतु आ धर्म जे कहे छे, ते खरो छे, किंवा आ अमुक धर्माचार्य जे धर्म कहे छे, ते खरो छे? वली जिहां जइ बेसीयें छैयें तिहां सहु पोतपोताना धर्म दीपावी देखाडे छे. तो हवे कयो धर्म खरो करी मानीयें? एवी तेनी शंका टलेज नहीं. पछी आपणपुं शंका आणीने बीजा घणा जीवोने श्रीजिनधर्मनी उपरें शंका उपजावे, तेथी सम्यक्त्वमोहनी कर्म बांधे, जमतां जमतां एकने अनाजमांहे माखीना पांखनी शंका आवी तेनी तेने भ्रांति थाय, पछी तेनाथी वली बीजा पासें बेठा होय तेने पण भ्रांति थाय. ए दृष्टांतें जाणवी. तेमाटे देव श्रीअरिहंत अढार दोषरहित, अने गुरुसुविहित शुद्धप्ररूपक संप्रति विजयमान श्रीतपागछाधिराज श्रीविजयदेवसूरि प्रमुख जाणवा. तथा धर्म तो श्रीअरिहंतभाषित जाणवो. ए त्रण तत्त्व निःशंकपणे अंगीकार करवां. एमां लगारमात्र पण शंका आणवी नहिं. जे निःशंकपणे समकेत पाले, ते दर्शनसंपन्न क

हीयें ॥ यतः ॥ दंसणसंपन्नयाएणं नंते जीवे किं जणयइ, दंसणसंपन्नाया एणं नवमिछत्त छेयणं करिंति परं नउक्काति परं अणुक्काएमाणे, अणुत्तरे णं नाणदंसणेणं अप्पाणं संजोए माणे सम्मंनावे माणेणं विहरतित्ति ॥

हवे एनेविषे आषाढनूति आचार्यनो दृष्टांत कहे छे. आ नरतक्षेत्रें अ योध्यानगरीयें आषाढनूति आचार्य आव्या, तेणें घणा चेला कस्या. ते स र्व चेलानी पासेंथी वचन लीधुं के, तमें देवता थाउ. तो मुऊने आवी क हेजो. पण देवोमां उपना पछी सर्व विषयासक्त थया थका कोइ पण आ चार्य पासें कहेवा सारु आवे नहिं. एकदा एक प्राणप्रिय परमवल्लन चेलो हतो, तेनी पासेंथी वचन लीधुं अने ते चेलायें काल करती वखतें कबूल कीधुं, जे हुं अवश्य तमारी पासें आवीश. पछी गुरुयें घणा दिवस वाट जोइ पण शिष्य आव्यो नहिं. तेथी गुरुने तत्त्वनी तथा परलोकनी आस्त उतरी गइ, नास्तिकमती थयो. चारित्र मूकीने स्वछंदी थको विचरवा लाग्यो. छ कायनी उपेक्षा करी पण वेष साधुनो राख्यो छे, उतास्यो नथी.

हवे पहेला देवता थयेला शिष्यें अवधिज्ञानें करी जोयुं तो गुरुने ना स्तिकपणे विचरता दीठा. पछी गुरुने प्रतिबोधवाने अर्थें एक महोटुं स्था नक विकूर्व्युं. तिहां पोतें देवतायें आवी नाटक करवा मांम्युं. एक गाम वालाने ते नाटक जोतां छ महीना वीती गया, ते नाटक जोतां नूख तृ षा आवें नहिं. पछी ते देवता बालकनुं रूप लेइ घणां आनूषण पहेरीने गुरु आगल आव्यो. गुरुयें पूछ्युं के, तुं कोण छो ? तेणें कह्युं जे महारुं नाम पृथ्वीकाइयो छे, गुरुयें तेनुं गलुं मरडीने सर्व आनरण लइ लीधां. वली केटलेक दूर जइ बालकनुं रूप लइ अटवीमां गुरु पासें आव्यो, तेवा रें गुरुयें पूछ्युं तहारुं नाम शुं छे ? छोकरायें कह्युं के महारुं नाम अपृका इयो छे, तेनां पण तेमज आनरण लइ लीधां. वली तेमज आगले जइ तेउकाइयो, पछी वली वायुकाइयो, वली वनस्पतिकाइयो, पछी त्रसकाइ यो, एम आगल आगल जइ जूदे जूदे नामें बालकने वेषें गुरुने मल्यो अने गुरुयें पण तेने मारीने प्रत्येक वखतें आनरण उतारी लीधां. वली आगल ते देव एक साध्वीनुं रूप विकूर्वी आंखमां अंजन नाखी कंकणादिक सर्व आ नरण पहेरी उनो. गुरुयें तेने जोइने कह्युं के, तुं महारी दृष्टिथी वेगली ज ती रहे. केम के तुं जिनशासनने विषे उम्नाहनी करनारी छो. ते सांनली

साध्वी बोली जे तमें मह्वारां बिइ जूर्ड बो, पण तमारी जोलीमां शुं बे, तेतो तपासो ? एवा मर्मनां वचन साध्वीना मुखथी सांजलीने शंका पा म्यो थको आगल चाल्यो, एवामां देवतायें राजानुं रूप बनाव्युं ते राजाने आचार्यें साह्वामो आवतो दीगे. ते राजा प्रथमथीज ए आचार्यनो नक्त बे एवा राजानुं रूप कर्युं बे तेणे आवीने आचार्यने खमासमण देइने वांद्या, अने सुखडीनी निमंत्रणा करवा लाग्यो पण आचार्यें जाण्युं जे पात्रुं उघा डीश तो आ आनरण राजाना दीगमां आवशे, माटें आह्वार लेवानो खप नथी, एम राजाने कह्युं. तो पण राजायें बलात्कारें सुखडी नाखवाने मिषें जोलीमां ह्वाथ घाल्यो, एटले आनरण ह्वाथमां आव्यां. ते जोइ रा जा क्रोधवंत थइ बोल्यो के,अरे पापिष्ट! मह्वारा ब बालक तेंज मार्या बे, आ आनरण सर्व मह्वारा बालकोनां बे. ते सांनली नयथी कंपतो थको आचार्य तिह्वांज ऊनो रह्यो. कांइ पण जवाब देइ शक्यो नहीं. तेवारें ते देवता पण चेलानुं रूप लइ आचार्यनी आगल आवी उनो रह्यो. अने पगे लागी कहेवा लाग्यो के,हे स्वामी ! आ नाटकादि कर्त्तव्य जे तमें जो यां ते सर्व मेंज करी देखाड्यां. तेने गुरुयें कह्युं में तह्वारी घणीए वाट जो इ पण तुं आव्यो नहिं, तेथी मह्वारी धर्म उपरथी आस्ता उतरी गइ, अ ने में नास्तिक मत आदर्यो. तेने देवतायें कह्युं देवलोकनां विषयसुख मू कीने आ मनुष्यक्षेत्ररूप उकरडामां कोण आवे? एकेकुं विषयसुख नोग वतां शेंकडा वर्ष वहीजाय. एटलामां तो मनुष्यना तुछ आउखां पूरां थइ जाय, पण हुंज तमारा स्नेह्वनो बांध्यो इह्वां आव्यो बुं. जूर्ड तमने एक मह्वारुं नाटक जोतां मात्र ब मह्वीना वीती गया. ए दृष्टांतें बीजा पण दे वलोक संबंधी सुख जाणी लेजो. माटें तमें ह्ववे कांहि पण श्रीजिनधर्मने विषे शंका करशो नहिं. हुं देवतानी ऋद्धि पाम्यो बुं, ते एज धर्मना पसा यथी जाणी लेजो. ए प्रमाणें गुरुने प्रतिबोध आपीने देवता स्वर्गें गयो.

गुरु पण अलोयणा प्रायश्चित्त लइने गबवासमांहे आवी चारित्र पाल वा लाग्यो. तीर्थंकरनी आज्ञा पालतां तथा गुरुनी आज्ञा पालतां आरा धक थाय. जे कारणमाटे आज्ञायें धर्म बे. यतः ॥ आणारुइणोचरणं, आणाएच्चियं इमंतिवयणाउ ॥ एतो अणान्नोगंमिवि, पस्स वणिज्जो इमो होइ ॥ १॥ एसा परायणाहिं, पयडा जं गुरुकुलं च मोत्तवं ॥ आयार पढम

सुत्ते, ए तोच्चिय दंसियं एयं ॥ २ ॥ एयंमि परिचत्ते, आणाखलु जगवंतो परिच्चत्ता ॥ तिएय परिवाए, दोण्हवि लोगाण चाउत्ती ॥ ३ ॥ नाणचरण परिणामे, एयं असमंजसं इमं होइ ॥ आसण सिध्धीयाणं, जीवाण तहाय नणियमिणं ॥४॥ नाणस्स होय जागी, थिरचरउ दंसणे चरित्ते अ ॥ धन्ना आवकहाए, गुरु कुलवासं न मुचंति ॥ ५ ॥ इति श्रीएकादश पंचाशके ॥ एम आषाढजूतिनो दृष्टांत सांजली त्रणे तत्त्वने विषे शंका गंमवी.

हवे कांक्षा नामें बीजा दूषणनुं स्वरूप कहीये बैयें.

(कंखाकुमयहिलासो के०) जे कुमतीनो अजिलाष होय, वांबा होय तेने कांक्षा कहीयें. ते कांक्षा शाथकी थाय? तोके अन्यदर्शनीयोमां (दयादिगुणे लेस देसणउ के०) दयादिक जे गुण तेनो लेश देखवा थकी कांक्षा थाय, एटले कोइक कुमति मिथ्यादृष्टि जीवमां दया, तप, संयमादिक बाह्यगुण होय, ते देखीने मूढपणाथी एवुं जाणे जे आ पण रूडुं करे बे, माटें एने आदरीयें तो पण जलुंज बे, एनी जक्ति युक्ति करीयें, तो सारी वात बे. एवी अन्यदर्शनीनेविषे अजिलाषा करे, ते कांक्षा कहीयें. ए थकी कांक्षा मोहनीयकर्म बंधाय, माटे एहवी सद्दहणा करवी के जे प्राणी श्रीजिनेश्वरदेवनी आज्ञा युक्त तप, जप, संयम, क्रिया, अनुष्ठान करे; तेहिज प्रमाण बे. अन्यथा तो अंधना गमननी बराबरी थाय. एटले अंध पुरुष घणुयें उजाय तो पण मार्ग पामे नहीं. तेम श्रीतीर्थंकरनी आज्ञा रहित जे कांइ करवुं, ते सर्व उन्मार्ग प्रस्थित कहीयें. तेनी करणी सर्वे अज्ञान कष्टमांहे गणाय माटें अन्यदर्शनीयोनां तप, जप, क्रिया अनुष्ठान देखीने कांक्षा न करवी ॥ यतः ॥ तेसि बहु माणेणं, उमग्गणुमोयणा अनिठफलं ॥ तम्हातिबगराणा, ठिएसु जुत्तोब बहुमाणो ॥ १ ॥ तेपुण समिया तिगत्ता, पियदढधम्मा जीइंदियकसाया ॥ गंजीरा धीमंता, पन्नु वणिज्ञा महासत्ता ॥ २ ॥ उसग्ग ववायाणा, वियाणगा सेवगा जहा सत्ती ॥ जावविसुध्धि समेया, आणारुइणोय सम्मत्ति ॥ ३ ॥ इति एकादशमसाधु पंचाशके ॥ १ए ॥

हवे एने विषे जितशत्रुराजा अने मतिसागर नामें प्रधाननी कथा कहे बे. जरत क्षेत्रने विषे वसंतपुर नामें नगर तिहां जितशत्रुराजा राज्य करे बे, ते नामें करी यथार्थज बे तेने मतिसागर नामें प्रधान बे, तेनुं

नाम पण यथार्थज छे. एकदा प्रस्तावें राजा सभा भरी बेठो छे, एवामां कोइक अश्वनो व्यापारी नाना देश तथा नानाजातिना घोडा लइ आव्यो छे, तेनी प्रतिहारें आवी खबर करी. राजायें व्यापारीने पासें बोलाव्यो तेणे पण पोताना घोडा राजाने देखाड्या तेमांथी जोइने चंद्रकीर्णवर्णे बे हांसला घोडा राजायें लीधा. पछी राजा, भोजन करी ते घोडानी परीक्षा करवाने अर्थें मंत्रीश्वरनी साथें अश्वक्रीडा करवा चाल्यो. एक अश्व उपर राजा बेठो अने एकनी उपर प्रधान बेठो. आगल चालतां ते घोडा विपरी तशिक्षित निवड्या तेथी ते राजा अने प्रधान बेहु जण निर्मनुष्य अटवी मां जइ पड्या. वली घोडा पण घणा दोड्या, माटें बेहु मरण पाम्या. अने राजा तथा प्रधान बन्ने भूख्या तरस्या अटवीनें विषे भमता भमता एक जलस्थानक पाम्या. तिहां स्नान, मज्जन करी निर्मल जल पीधुं. अने केट लाएक दिवस तिहां भूख्या बेसी रह्या.

राजानुं सैन्य पण खबर लेतुं लेतुं तिहां आवी पहोच्युं. सर्व जनोयें राजाने नमस्कार कर्यो. हवे राजा घणा दिवसनो भूख्यो हतो, तेणें मू र्खाइथी कंदोइने तेडी कह्युं के, म्हारा खावामाटे चणा, अडद अने चो ला वगेरेना मोदक तथा वटक प्रमुख रसवती करो. कंदोइयें पण तेमज चणक प्रमुख धान्यना मोदक तथा वटक प्रमुख सुस्वादिष्ट कीधां. राजायें श्राद्धना ब्राह्मणनी पेठें अतृप्तो थको घणादिवसनी भूख मटाडवामाटे चणानी रसवती खाधी. वली अडदनी रसवती खाधी. वली ते आस्वादिने चोलानी रसवती आस्वादी, एम अतृप्तथको घणो आहार राजायें कर्यो. वैद्यादिकें वार्यो तो पण निवर्त्यो नहीं. एम घणी जातिना पुष्ट आहार संपूर्ण कर्या. तेथी राजाने अजीर्ण रोग थयो, ते रोगनी घणी वेदना भो गवी आर्त्तध्यानी थको काल करी दुर्गति पाम्यो.

हवे मतिसागर प्रधान पोताना शरीरनुं स्वरूप जाणतो हतो, वमन वि रेचन प्रमुख करतो हतो, जलदोष काहाढी वैद्योक्तमार्गे अहार लेतो ह तो. तेथी शरीरपाटव पामी घणा वर्ष पर्यंत सुख भोगवी अंतें समाधि मरण करी स्वर्ग सुखनो भाजन थयो.

हवे एनो उपनय कहे छेः—राजामात्य ते संसारी जीव जाणवा. तेमां रा जा आहार लंपटी हतो तेथी चणकमाषादि कना मोदकादिक आरोगी अ

जीर्णादिक रोगें करी दुःखी थइ दुर्गति पाम्यो. तेम इहां ते राजाना जेवा जीव ते सार जिनधर्म मूकी अज्ञानदर्शनाभिलाष करी मरण पामी दुर्गति पामशे अने जेम मंत्रीश्वर वमनविरेचनादिकें जलदोष टाली पथ्याहार सेवी घणा दिवस सुख भोगवी समाधिमरण करी स्वर्गनुं भाजन थयो, तेम ते मंत्री जेवा जे जीव ते तपश्चरणादिकें करी कर्मदोष टाली एकाग्रमनें श्रीजिनधर्म आराधी पंडित मरण करी स्वर्ग तथा मोक्षनां सुख पामशे. एम कांक्षानेविषे नृप मंत्री कथा सांभलीने अन्यदर्शननी अभिलाषा न करवी.

हवे चिकित्सा दोष कहीयें छेयें.

॥ विचिगिछा स फलं पइ, संदेहो मुणिजणंमि उ दुगंछा ॥ गुणकित्तणं पसंसा, परिचय करणं तु संथवणा ॥ ३० ॥ अर्थः— श्रीजिनवचननो आराधन करवाना (फलं के०) फल (पइ के०) प्रत्यें जे (संदेहो के०) संदेह करवो (स के०) तेने (विचिगिछा के०) विचिकित्सा कहीयें. एटले मासक्षपण पक्षक्षपण छठ अष्टमादिक जे तप करीयें छेयें, तेथकी फल प्राप्ति थाशे ? किंवा नही थाय ? एवो संदेह आणवो नहीं; परंतु श्रीअरिहंतनी आज्ञा पूर्वक जे तप जपादिक शुभकरणी करवी तेनां फल स्वर्गापवर्गादिक छेज. एवो निश्चय राखवो ॥ यतः ॥ जोजहवायं न कुणइ,मिछदिठि तउहुको अन्नो ॥ वढइय मिछत्तं, परसंसं कज्जमाणेवि ॥ १ ॥ पूर्वें जे शंका दूषण कह्युं ते श्रीजिनभाषित नवतत्त्वादिक पदार्थोनेविषे संदेहरूप जाणवुं, अने तपश्चरणादिकना फल संबंधि संदेहरूप आ विचिकित्सा दूषण जाणवुं ए रीतें शंकाथकी विचिकित्सानो भेद समजवो.

हवे वली विचिकित्सानो बीजो भेद कहे छेः—(उ के०) तु एटले पुनः (मुणिजणंमि के०) मुनिजनने विषे (दुगंछा के०) दुगंछा करवी. ते जेम के, यतिना मलें करीने मलिन थयेलां एवां गात्र तथा वस्त्र देखीने नाक मरोडे अथवा एम कहे के,प्रासुक पाणीथी स्नान करे तथा वस्त्र धोइ नाखें तो शी हरकत छे ? एवी मनमां चिंतवणा करे, ते दुगंछा कहेवाय. पण यतिनें तो भगवाने अस्नानी तथा अदंतधावन वाला कह्या छे एवा भगवंतना वचननी अनास्ता आवी तेमाटे एने विचिकित्सा दोष कहीयें. एणे करी समकेत दूषाय तेथी आगले भवें कुरूप दुर्गंधपणुं पामे, अनंतसंसारपणे परिभ्रमण करवापणुं पामे ॥ यतः ॥ चत्तारि दुहं सिज्ञा पसुता सं

जहा ॥ तउ मा खलु पढमाउ डुहसेजा पसुत्ता तं जहा सेणंमुंमे नवित्ता, आगराउ अणगारीयं पवइए निग्गंथे पावयणं णो सद्दहइ णो पत्तियइ णो रोचयइ णिग्गंथं पावयणं असद्दहमाणे, अपत्तियमाणे, अरोएमाणे, मणं उच्चावचं नियछइ विणिग्घाय मावज्जाइ पढमा डुहसिज्जात्ति ॥

तया चत्तारि सुहसिसेज्जाउ पसुत्ता तं जहा ॥ सेणमुंमे निग्गंथे पावयणे निग्गंथं वा पावयणं सद्दहइ पत्तियइ रोएइ निग्गंथं पावयणं सद्दहमाणे पत्तियमाणे रोएमाणे णो मणं उच्चावचं नियछइ णोविणिग्घाय मावज्जाइ पढमा सुहसिज्जात्ति ॥ इति स्थानांगे चतुर्थस्थानके ॥

हवे एनेविषे शुजमतिराणीनो संबंध कहीयें बैयें. जंबुद्दीपना जरतक्षेत्रें वैताढ्य पर्वतनी दक्षिणश्रेणिने विषे गजपुर नामा नगरें जयसूरि विद्याधराधिपति राज्य करे बे, तेने शुजमति नामें प्रिय अग्रमहीषी बे, ते स्त्रीनो जरतारनी सायें विषयसमुइमां जीलतां सुखें काल जाय बे, एकदा प्रस्तावें कोइक जीव देवलोकथी चवीने शुजमतिनी कूखरूप शुक्तिकापुटनेविषे मोतीपणे आवी उपनो, ते गर्जने प्रजावें राणीने अष्टापदादिक तीर्थनी यात्रा करवानो दोहोलो उपनो, तेवारें राणीयें राजानी आगल आवीने कहुं के, स्वामी! तमारी संघातें मुजने अष्टापदादिक तीर्थनेविषे जइने देवपूजा करवानो जाव बे. ते सांजली जयसूरि राजा पूजानी सामग्री लइ शुजमतिने पण सायें विमानमां बेसाडी अष्टापद जणी चाल्यो. तिहां जइ विविध प्रकारें जगवाननी पूजा करी, दोहोलो पूर्ण कस्यो. अष्टापदथी पाबा वल्या. पढी मार्गमां आवतां एक वनने विषे डुर्गंध उबल्यो ते नासिकाथी खम्यो जाय नहीं. तेवारें राणी पतिने पूबवा लागी, के आवा चंपकादि तरुवनने विषे डुर्गंध श्यो उबले बे? के जे नासिकाथी खम्यो जातो नथी. तेवारें राजायें कह्युं जे आगली शिलापट्टने विषे ऊर्ध्वजुजादंम सूर्यनिवेशित दृष्टियुग एवा यति प्रत्यें तुं नथी देखती के शुं? ए महाऋषिना शरीरनो डुर्गंध उबले बे.

ते सांजली शुजमति कहे बे, के श्रीजिनशासनने विषे जेम सर्व विधिविधान रूडां कह्यां बे तेम जो यतिने प्राशुक जलथी स्नान करवुं कह्युं हत, तो शी हरकत हती? तेवारें राजायें कह्युं ए वचन बोलीश मां. जे कारण माटे कह्युं बे के ॥ शुचिर्नूमिगतं तोयं, शुचिर्नारी पतिव्रता ॥ शुचिर्न्यायरतो राजा, ब्रह्मचारी शुचिः सदा ॥ १ ॥ माटे ए यतिमहानुजावने अस्ना

नी थकां पण चारित्रगुणें करी पवित्रज कहीयें, तेवारें शुभमति कहेवा लागी के, घणादिवसनो मल शरीरने विषे निबिड थइ बेठो छे, तेने पाणी यें धोइने आपणे मल टालीयें एवी महारी इछा छे, एवां स्त्रीनां वचने करी राजायें पद्मिनीनी पुठें निर्झरणाना शुद्ध पाणी मगावीने यतिनुं शरीर पोताना हाथें पखाली पखालीने सर्व मलनो नाश कर्यो. ते यतिना मेल टालवानी साथें पोताना शुभनाव छे माटें पोतानुं कर्म पण नाश कर्युं, पछी प्रधान, बावना चंदन लइ केशरथी घसी तेनां विलेपन कर्यां. एम ते यतिनुं शरीर सोनानी प्रतिमा सरखुं कर्युं. पछी ते बेहु यतिने वांदी विमानें बेशी अन्यतीर्थें यात्रा करवा भणी चाल्यां. तिहांथी पाछा वलतां तेहिज रस्ते आव्यां. तिहां शुभमतियें यतिने घणाए जोया, पण दीठा नहिं. तेवारें प्रियपतिने कहेवा लागी के हे स्वामी! यति केम देखाता नथी? तेवारें राजायें कह्युं आ जूउ यतिना शरीरने तो भमरायें वींटी लीधुं छे, तेणे करी दग्धस्तंभ सरिखा देखाय छे आपणे जे श्रीखंम केशरादिकें करी विलेपन कीधुं, तेतो उलटुं यतिनें परिसहनुं कारण थयुं, तेथी भमरायें यतिने संताप्या, माटें हाहा!! गुण, ते दोषने अर्थें थयो.

पछी विद्याधर राजा तिहां आवीने यतिना शरीरथी भमराने अलगा करवा लाग्यो, एटलामां ते यतिने पण विषम परिसह सहन करतां घाती चार कर्मनुं क्षय थइ गयुं अने केवलज्ञान उपनुं, तत्काल चार निकायना देवता मल्या, सहस्र पांखडीनुं सुवर्णकमल रच्युं तेनी उपर बेसी केवली, धर्मदेशना देवा लाग्या. जयसूरिराजायें पगे लागीने कह्युं के, स्वामी! में तमोने परीसहनुं कारण कीधुं माटें महारो अपराध क्षमा करो. तेवारें साधु बोल्या के, तें तो भक्ति करी पण ते भक्तिनुं फल मुजने परीसह पणे परिणम्युं, ते माहारा पूर्वकृत कर्मने योगें जाणवुं ॥ यतः ॥ कोडाणं कम्माणं, डुविसाणं डुपडिक्कंताणं ॥ चइत्ता मुरको नच्छि, पुण अ वेइत्ता तवसीवाजो ॥ १ ॥ तथापि ॥ छियक्को मल मइलं, मुणिमणे कुणइ जिण मयवुगछं ॥ सो डुसिए सम्मत्तो, भवे भवे पावइ डुगछं ॥ २ ॥

एवुं गुरुनुं वचन सांभलीने शुभमति राणी पण गुरुप्रत्यें खमाववा लागी. मनमांहे खेद करवा लागी, तेने गुरुयें कह्युं के, हे शुभमति! तुं खेद म कर. तुजने निंदता गर्हतां खमतां मिछामिडुक्कड देतां घणुं कर्म विलय थ

इ गयुं. हवे एकभवें भोगववा जेटलुं शेष कर्म रह्युं छे, पछी ते स्त्री भरतार केवलीने वांदी पोताने नगरें आव्यां, अनुक्रमें पुत्रने राज्य आपी बेहु जणें दीक्षा लीधी. ते निरवद्य दीक्षा पाली बेहु सौधर्म देवलोकें देवदेवी थयां. हवे देवांगना चवीने सुरपुर नगरें सिंहरथ राजानी मदनावली नामें ते राजानी अत्यंत प्राणप्रिय स्त्री थइ, ते बेहु जण विषयसुख भोगवतां मदनावलीने पूर्वोक्त यतिनी डुगंछानुं कर्म उदय आव्युं, तेथी अकस्मात् तेना शरीरमांथी डुर्गंध उछल्यो ते घ्राणेंद्रियें खम्यो जाय नहिं. तेथी तेनी पासें कोइ रही शके नहिं. वैद्यने पूछ्युं तेवारें वैद्यें कह्युं के ए रोग अमारा अनुभव प्रमाणें असाध्य जणाय छे, ते सांभली राजायें अरण्यमांहे प्रासाद करावी आप्युं, तिहां ते राणी रही; अने राजायें ते महेलनी चारे दिशायें सुभटोने रक्षा करवा राख्या, राणी पोताना कर्मदोषनो वांक देखी तिहां रही.

एकदा ते प्रासादने विषे सूडा अने सूडीनुं जोडलुं आव्युं तेमां रात्रिने समे सूडी सूडाने कहे छे के, हे स्वामी! कोइ एवी रूडी वार्त्ता कहो, के जे थकी आपणी रात्रि सुखें वीती जाय, तेने सूडायें कह्युं के, कथा बे प्रकारनी छे. एक चरिया अने बीजी कप्पिया तेमांथी तमने कइ कथा सांभलवानी इछा छे? तेवारें सूडीयें कह्युं चरिता कथा कहो. ते सांभली सूडो कथा कहेतो हवो. अने सूडी तथा मदनावली राणी ए बेहु सांभले छे.

पूर्वें वैताढ्यपर्वतने विषे जयशूरविद्याधर राजा हतो, तेनी शुभमति नामें भार्या ते अष्टापदनी यात्रा करी पाछी वली तेवारें मार्गमां यतिना मलमलिन गात्र देखी डुगंछा करवा लागी, पछी पतिना कहेवाथी डुगंछाथी निवृत्तिने यतिनी पूजा करी, ते श्रावकधर्म पाली दीक्षा लइ सौधर्म देवलोकें देवांगना थइ. तिहांथकी चवीने सिंहरथराजानी मदनावली नामें स्त्री थइ छे. ए कथा सांभलतांज मदनावलीने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं. तेथी पोतानो पूर्वभव दीठो, तेवारें पोतानुं कर्म निंदवा लागी. वली सूडीयें पूछ्युं, स्वामी! ते मदनावली हमणां क्यां छे? सूडायें कह्युं, आ प्रासादनेविषे बेठी छे पूर्वले भवें यतिनी डुगंछा करवाथी डुर्गंध शरीर पामी छे. हवे जो ए सात दिवस सुधी त्रिकाल जिनपूजा करे, तो एनी डुर्गंध विलय थइ जाय. कपूर, कस्तूरी, जेवो शरीरनो गंध थाय. ते सांभली मदनावली हर्ष पामी; सूडी आगल पोतानुं वृत्तांत कह्युं. ए कथा कहीने सूडो सूडी बेहु अदृश्य

थइ गयां, अने मदनावलीयें विचार्युं जे ए सूडायें म्हारा पूर्वला नव शी रीतें जाण्या हशे ? एम चिंतवी पछी सात दिवस सुधी एकाग्रमनें करी त्रि संध्य जिनपूजा करी. तेवारें सातमे दिवसें शरीरथकी दुर्गंध नाश पाम्यो. अने कर्पूर, कस्तूरी, कमलगंध प्रगट थयो. तेनी सुभटोयें जइ राजाने व धामणी आपी. राजायें तेमने हर्षदान आप्युं. पछी राणीने हाथी उपर बेसाडी वाजते गाजते नगरमांहे पेसारो करी घेर तेडी लाव्या.

एकदा उद्यानपालकें आवी राजाने विनति करी के स्वामी! तमारा म नोरथ उद्यानने विषे एक साधुनें केवलज्ञान उपनुं छे. तेनो देवता महोत्स व करे छे, तेवारें मदनावलीयें कह्युं के स्वामी! चालो केवलीने वांदीयें. धर्मदेशना सांजलीयें अने आपणा मनना संदेह जांजीयें, पछी उद्यानपा लने वधामणी आपी राजा राणी बेहु वांदवा गयां. तिहां पंचाजिगम सां चवी पंचांग प्रणाम करी धर्मदेशना सांजलवा बेठां. देशना पूर्ण थयानं तर मदनावलीयें पूछ्युं स्वामी ! जेणें मुझ दुःखणीने प्रतिबोध दीधो, ते सूडो कोण हतो ? केवलीयें कह्युं के तहारो पूर्वला जवनो जरतार ते सूडाने रूपें आवी तुझने उपकार करी गयो. मदनावलीयें पूछ्युं ते देवता हमणां तमारी सजामां आव्यो छे ? केवलीयें कह्युं आ म्हारी सन्मुख बेठो छे. तेवारें सुवर्ण जरणें जूषितथकी मदनावली बे हाथ जोडी देवता प्रत्यें कहेवा लागी के, हे स्वामी! तमें अवसर जोइ म्हारी ऊपर घणोज रूडो उपकार कीधो. देव तायें कह्युं के, हुं हवे आजथी सातमे दिवसें चवीने विद्याधरनो पुत्र थाइश. तिहां तुं आवीने मुझने प्रतिबोध करजे. मदनावलीयें कह्युं के मने जाणवामां आवशे तो प्रतिबोध आपीश. ते सांजली देवता केवलीने वांदी स्वर्गे गयो.

हवे मदनावली वैराग्य पामीथकी राजाने समझावी दीक्षा लेती हवी. राजायें श्रावकधर्म पडिवज्ज्यो अने पोताने नगरें आव्यो. मदनावली साध्वी विविध प्रकारनां तप करती विचरे छे. एकदा ते साध्वी रात्रिने स मयें द्वारदेशें काउस्सग्गमां उजी रही छे. एवामां ते देवतानो जीव चवीने मृगांक एवे नामें विद्याधरनो पुत्र थयो छे. ते यौवन पामी विद्याशक्तिवं त थयो छे. ते विद्याधर पण तिहां आव्यो अने काउस्सग्ग धारिणी दुः ष्करकारिणी एवी मदनावली साध्वीने यौवनवंती देखीने कामें पीडित थ यो थको प्रार्थना करवा लाग्यो के, हे मदनावली ! तुं आवी म्हारा वि

मानमां वेस. आपणे बेहु यौवननो लाहो लहीयें, तुं आ तपस्यारूपी कुहाडे करीने शरीररूपी कल्पवेलीने शा सारु छेदी नाखे छे? ताहरे यौवने महारुं यौवन अने महारे यौवनें तहारुं यौवन फलवंत थाय, एम कर. इत्यादि घणी युक्तियें करी प्रार्थना करी पण मेरु पर्वतनी चूलिका जेम वायरे करी चलायमान थाय नहिं. तेम ते साध्वी पण चलायमान थइ नहीं. तेवारें वली अनुकूल परिसह करवा लाग्यो. तेम छतां अग्निथकी जेम सुवर्ण दीपे, तेम ते परिसहथी साध्वीनुं ध्यान दीपतुं थयुं. ते शुजध्यानने योगें साध्वीने तिहांज केवलज्ञान उपनुं. तेनो देवतायें महोछव कीधो. ते महोछव देखी मृगांक विद्याधर चमत्कार पाम्यो. पछी केवली थयेली साध्वीयें तेने पूर्वनव संजलावी प्रतिबोध आपीने कह्युं के, तुं सांसारिक मोह त्यागीने निःकेवल श्रीजिनधर्मनेविषे प्रीति कर. विद्याधरनें पोताना पूर्वला नव सांजलवाथी जातिस्मरण ज्ञान उपनुं. तेथी वैराग्य पामी स्वयमेव लोच करी प्रव्रज्या लइ बेठो. अने साध्वीनें कहेवा लाग्यो जे तमें रूडो प्रत्युपकार करी पोतानो बोल पाल्यो. पछी ते चारित्र आराधी तपस्या करी कर्म निर्घाटन करी केवलज्ञान पामी मोक्षें पहोच्यो. तेमज मदनावली साध्वी पण घणा दिवसपर्यंत केवलपर्याय पाली मोक्षें पहोची. ए विचिकित्सा उपर शुजमतिनो दृष्टांत सांजली विचिकित्सा करवी नहीं.

हवे चोथो प्रशंसा दोष कहीयें छेयें.

(गुणकित्तणंपसंसा के०) जे मिथ्यादृष्टिना गुणोनुं कीर्त्तन करवुं, तेने प्रशंसा कहीयें. तेमनी प्रशंसा करवा थकी मिथ्यात्वनी वृद्धि थाय, तथा मिथ्यात्वसंबंधी करणी करवानी इछा उपजे, एटले ए पण करणी रूडी छे, एवुं जाणी मिथ्यात्वनी करणी विशेषथकी करे ॥ यतः॥ आणाएअ वट्टंते, जो ववूहेइनोह दोसेणं ॥ सो आणा अणवछं,मिछत्त विराहणं पावो ॥१॥ इति एकादशमसाधु पंचाशके ॥

हवे ते प्रशंसा बे प्रकारनी छे. एक देशथकी अने बीजी सर्वथकी; तेमां जे सहु पोत पोतानो धर्म करे, ते रूडो छे, एवुं बोलवुं ते सर्वथकी प्रशंसा कहीयें, अने जे मिथ्यादृष्टिनुं एकीकरण वखाणवुं ते देशथकी प्रशंसा कहीयें. जेम जे कोइ चोरने वखाणे ते चोर होय जेम अजयकुमारें चोर वखाण्या ते जातें चांमाल हतो तेने बोध आपी आंबानी चोरी मनावी

पण ते जातें चोर न हतो तेम जे मिथ्यादृष्टिने वखाणे ते मिथ्यादृष्टिमांहे जले. तथा जे अनाचारीनें वखाणे तेने अनाचारी कहीयें ॥ यतः ॥ नवहिंगाणहिं समणे निग्गंछे संजोइयं विसंगजोइयं करेमाणे नाइकम्मइ तं जहा ॥ आयरिय पडिणीयं, उवज्ञाय पडिणीयं, थेरपडिणीयं, साहु कुल गण संघ नाण दंसण चरित्तपडिणीयं. जे घणीज मिथ्यादृष्टिनी अने कुमतिनी प्रशंसा करे ते दर्शन प्रत्यनीक मांहे गणाय. तेमाटे मिथ्यादृष्टिनी प्रशंसा न करवी ॥ यतः ॥ जे जिस्कुवा जिस्कुणीवा परपासंमाणं पसंसं करेज्जा, जे विपणंनिएहगाणं पसंसं करेज्जा, जेनिएहगाणं अणुकूलं जासेज्जा, जेणनि एहगाणं आययणंविसेज्जा, जे निएहगाणंगाथं सज्जं पयरकरंवा परुवेज्जा,जे णेनिएहगाणं संतीए कायकिलेसाइंए तवेइवा संजमेइवा माणेइवा विखा णेइवा सुएवा पडिच्छेइएवा अविमुहमुद्धपरिसामझगएसल्लाहिज्जो सेवियणं परमाहम्मि एसु उववज्जेजाणं जहा सुमति ॥ इति महानिशीथे चतुर्थाध्ययने॥

हवे ए मिथ्यादृष्ट्यादिकनी प्रशंसा करवानेविषे सुमतिनो दृष्टांत अने प्रशंसा अणकरवानेविषे नागीलनो दृष्टांत कथा रूपें कहीयें छैयें.

आ जरतक्षेत्रे मगधदेशें कुशस्थलपुरनगरने विषें जीवादिक नवतत्त्वना जाण एवा सुमति अने नागील एवे नामें बे जाइ घणा धनाढ्य वसे छे. अन्यदा अंतराय कर्मने योगें तेमनी पासेंथी धन जतुं रह्युं, तो पण पोतानुं सत्य मूकता नथी. कूड कपट छल छद्म नथी करता. प्रतिक्रमण पौषधादिक शुजकरणी कस्या करे, तेने कदापि मूके नहीं. एम करतां जेवारें अत्यंत ड्व्यहीन थया अने सगा सणेजाना स्वार्थ पहोंचता रह्या अनें मान महत्त्वपणुं पण उछुं थयुं, तेवारें बे जाइ विचार करवा लाग्या के, आपणे धनहीन थया तेथी सर्वत्र मानहीन थया ॥ यतः॥ जा वीहो ता पुरिसस्स, होइ आणावडिच्छउ लोउ ॥ गलीउ दयंघणं वि, जला विदूरं परिचयइ ॥ १ ॥ तेमाटे हवे आपणें परदेश जइयें के ज्यां आपणने कोइ उलखे नही. एवुं विचारी ते बेहु जाइ परदेशें चाल्या. वाटें चालतां चालतां पांच साधु तथा एक श्रावकने मार्गें जता दीठा. तेवारें नागीलें कह्युं के, हे जाइ सुमति ! आपणने ए सथवारो रूडो मल्यो माटें ए साधुनी साथें जइयें. ते वात सुमतियें कबूल करीने बेहु जाइ तेमनी संघातें चाल्या. आगल चालतां ते साधुनी नागीलें परीक्षा करी अने तेणे ते साधुमां केटलां एक अपलक्षण

दीठां. जेम खराब झवेरात होय ते झवेरीनी परीक्षायें पहोंचे नहीं, तेम ते साधुउने पण नागीलें पारखंभी कपटी जाण्या. परीक्षायें पोहोता नहीं तेवारें पोताना भाइ सुमतिने कहेवा लाग्यो के, आपणे एनी साथें जइशुं नहीं, कारण के बावीशमा तीर्थंकर श्रीनेमिनाथ भगवानना मुखथी में सां भळ्युं छे, के ॥ जहा एवंविहे अणगारे रुवे भवंति तेअकुसीले तेविट्ठीएविनि रीसिउ,ण कप्पंतीति ॥ कुसिलोसन्न पासछो, सछंदो सिढिलो तहा ॥ दिठ्ठी एवी इमं पंच, गोयमा न निरीसए ॥ १ ॥

तेमाटें ए सथवारो मूकी बीजो सथवारो जोइशुं, जे माटें एमनी साथें जातां पण आलापसंलापादिक थाय,ते थातां श्रीतीर्थंकरनी आज्ञानो अति क्रम थाय,तेथी जीव अनंत संसारी थाय ॥ यतः ॥ पमाएणं च रत्ताणं,णंत संसार वड्ढणं ॥ जम्मालि दुक्खा सावञ्ज,आयरिया ईण तिछयं ॥ १ ॥ आणाइविय सरणं, तप्भंगे जाण किं न भग्गंति॥आणं च अइक्कंतो,कम्मादेसा कुणइ सवं २

ते सांभळी सुमतियें नागीलने कह्युं के, तुं ए साधुउनो सथवारो मूकी जावा चाहातो होतो सुखें जा. परंतु हुं तो ए सथवारो मूकीश नहीं. तुं घेलो थयो छो. जे ए साधुउमां दोष देखे छे. पण ए साधुउ निर्दोष म हानुभाव छे. एम बेहु भाइ परस्पर विरोध बोलता थका पोतपोतामां अ प्रीति थावा लागी, तेवारें नागील कहेवा लाग्यो ॥ यतः ॥ जीवाणं चिय ए थं, दोस कमढजाल कसियाणं ॥ जे चउगइ निप्फिडणं, हेउवएसं न बुज्झं ति ॥ १ ॥ नोवेमि तुप्न दोसं, नायावि कालस्स देमिदोसमहं ॥ जहिय बु ध्दिएस, होयरावि भणिया पकुप्पंति ॥ २ ॥

एवुं नागीलनुं वचन सांभळीने सुमति जे छे,ते परिणामें दुर्मति छे, ते नागिलप्रत्यें कहेवा लाग्यो के, एक तुंहीज शास्त्रवादी आव्यो जे आवा म हानुभावना अवर्णवाद बोले छे. हुंतो जाणुं छुं जे ए साधुउनी उपरांत कोइ छेज नहीं. जे विचित्र प्रकारनां तप करे छे, गोचरीनी शुध्दि करे छे, तपें करी दुर्बल शरीरवाला थया छे, अने तुं महोटो श्रावक थइ पड्यो छो, के जे एवा महानुभावने कुशीलीया अने अनाचारी करी दीये छे. तेवा रें नागील बोल्यो जे, मुझने एनी उपर कांइ लगारमात्र पण द्वेषबुध्दि नथी. पण तीर्थंकर पासेंथी सांभळ्युं छे, जे एवा लक्षणें लक्षित जे होय, तेने कु शीलीया कहीयें, माटे तेवानुं मोहोढुं पण न जोवुं.

तेवारें सुमति बोल्यो के, जेह्वो तुं निर्बुद्धि छो तेवो तह्मारो तीर्थंकर प ण निर्बुद्धिज ह्शे, के जेणें एवा साधुउनी साथें संगत करवामाटे तुऊने निवाखो छे. एटलुं बोलतांज सुमतिनुं मह्होढुं नागीलें पोतानें हाथें करी ढांक्युं अने कहेवा लाग्यो के, हे नाइ! एवुं वचन मुखथी न बोल. श्री तीर्थंकरदेवनी आशातना करी अनंतसंसारी कां थाय छे? तुं ए साधु उनां तप क्रिया अनुष्ठान वखाणे छे पण हुं तो एमने बालतपस्वी जा णुं बुं, जेमाटें एमां कांइ साधुना गुण देखाता नथी, केम के गइकालें एम णे एक उढण विनानी स्त्री दीठी, तेने जोवा लाग्या पण तेनी उपरथी पोतानी दृष्टि पाछी खेंची लीधी नहीं. तेमाटे कह्युं छे के ॥ यतः ॥ चित्तभित्ति न निज्झाए, नारीवासु अलंकियं ॥ नरकरंपिव दिठूणं, दिठि पडिसमाहरे ॥ १ ॥ तथा वली तेने देखीने आलोयुं पडिक्कम्युं पण नहीं तथा आजे प्र नातें वस्त्रने छेहडे हरिकायनो संघट कीधो तथा काचा पाणीनो परिसंनो ग कीधो, इत्यादिक एनां घणांज विपरीत आचरण में दीठां. तेमाटें तुऊ ने कहुं बुं के, एनी संगति करवी तथा प्रशंसा करवी रूडी नथी.

ते सांनली सुमति बोल्यो के, नाइ! ए साधु कुशीलिया हो अथवा सु शीलिया हो, पण मह्हारे तो एनी साथेंज जावुं छे. माटें मह्हारो हाथ मू क. ए पछी ए लांबा निकली जशे तो हुं एमने मली शकीश नहीं. तेवारें नागीलें तेनो हाथ मूकी दीधो, सुमति त्यांथी जइनें पहेला साधुउने म ल्यो. अनुक्रमें ते साधुउनी पासेंथी ते सुमतियें दीक्षा पण लीधी. एम कु शीलीये कुशीलीया एकठा मल्या; जेम काजलमां काजल मली जाय तेनी पेठें जाणवुं. अनुक्रमें बार वर्ष पर्यंत महारौरव दुष्काल पड्यो. ते मांहे पांचे साधु घणा अनाचरण सेवी अंते अणालोइ अपडिक्कमी काल क री पिशाचादिक व्यंतरदेवोनां वाहनपणें उपना. तिहांथी चवी म्लेच्छदेश मां उपजशे. तिहां घणा जीवोनो वध करी मद्यमांस नक्षण करी सातमी नरकपृथ्वीयें जाशें. तिहांथकी चवी घणाकाल नमी त्रीजी चोवीशीयें व ली समकेत पामशे. ते समकेत पाम्या पछीना नवथकी त्रीजे नवें पांच साधुउमांथी चार साधु मोक्षे जाशे, अने पांचमो जे सर्वथकी मह्होटो छे ते तो अनव्य छे एकांत मिथ्यादृष्टि छे, ते केवारें मोक्ष पामशे नहीं.

वली गौतमस्वामीयें पूछ्युं के, हे नगवन्! सुमतिनो जीव नव्य छे के

अनव्य छे? नगवंतें कह्युं नव्य छें. तेवारें गौतमें पूछ्युं जो नव्य छे, तो ते काल करी किहां जइ उपन्यो? नगवान् बोल्या, परमाधामी देवनेविषे जइ उपन्यो. गौतमे पूछ्युं, हे स्वामी! नव्यजीव होय, ते परमाधामी देवमां उप जे? नगवाने कह्युं, हा उपजे. गौतमें पूछ्युं, कोण जीव उपजे? नगवाने कह्युं के, जे जीव माहामिथ्यात्वने उदयें करी पोताना गुरुनो तथा पोतानो उपरी जे आपणी उपर परम हितचिंतवतो होय तेनो परम हितोपदेश न माने ते द्वादशांगी रूप श्रुतज्ञान विराधी सिद्धांतनो मार्ग जाणी अणजा णी अनाचार प्रशंसीने परमाधार्मिक देवोनी जातिमांहे जइ उपजे, तेम ए सुमति पण अनाचारीनी प्रशंसा करी श्रीतीर्थंकरनी आशातना करी पर माधार्मिक देवमां जइ उपनो छे. वली श्रीगौतमे पूछ्युं आगल एनी शीग ति थाशे? नगवान् बोल्या, एणें अनाचारनी प्रशंसा करी तेथकी सन्मार्ग प्रनाशन वखाण्युं, ते कर्मना उदयथी अनंतसंसारीपणुं उपार्ज्युं, तेमाटे हुं एना केटला नव तुजने कहुं. एतो अनेक पुजलपरावर्त्त नमतां नमतां पण संसार परिभ्रमणनो पार पामशे नहीं. तो पण तुजने एना संक्षेपथी स्वल्प नव कहुं बुं, ते तुं सांनल.

आ जंबूद्वीपने वींटी रह्यो जे लवणसमुड तेमां जे स्थानकें गंगा अने सिंधु ए बे महोटी नदीयें प्रवेश कस्यो छे, ते स्थानकथकी दक्षिणदिशिना नागें वेदिकाथकी पंचावन योजन गया. पछी साडाबार योजन प्रमाण हाथीना कुंनस्थलनें आकारें साडात्रण योजन उंचो द्वीप छे, तिहां अत्यं त घोर अंधकारमय घडीयालने आकारें सुडतालीश गुफा छे. ते गुफाउने विषे जलचारी मनुष्य वसे छे. ते मनुष्य वज्रऋषननाराच संघयणवाला, माहाबलिष्ट पराक्रमवंत, साडाबार हाथ प्रमाण शरीरवाला, संख्याता वर्ष आउखाना धणी छे, तेमने मद्य मांस प्रिय छे, स्वनावेंज परस्त्री लंपट छे, देखवामां काले वर्णे, डुर्वर्ण, डुर्गंध, खरस्पर्शवाला मार्जार, राक्षसना जेवी कठिण नाषाना बोलनारा, एवा अंतरंग गोलीया मनुष्य छे तेनी अंतरंग गोली लेइ चमरी गायना श्वेतवालनी साथें गुंथी बेहु काने बांधी समुड्मां हे प्रवेश करीयें तो तेना महिमायें करी जलहस्ती, मघरमछ, कछप, सुसु मार, ग्रहादिक जलजंतुउथी नय थाय नहीं. अने समुड्मांहे पेशी समुड अवगाहीनें मनोवांछित रत्न लेइ घरे आवे. पण ते मनुष्योनी गोली काहा

डतां लेतां घणु डुःख उपजे, ते डुःख नारकीना डुःखनी साथें मेलवीयें ते टलां ढे पण ते जीवतांथकां तेहनी गोली काढी शकाय नहीं, जे कारण माटे ते मनुष्यो महाबलवंत होय ढे.

इहां श्रीगौतमस्वामीयें पूढ्युं के, हे जगवन्! ते मनुष्यनी गोली कया प्रकारें लेवाय? तेवारें जगवानें कह्युं, हे गौतम! तेहज लवणसमुड्नेविषे वज्रमय शिलासंपुट महाघरट्टने आकारें ढे. ते शिलासंपुट उघाडीने तेमां मधु, मद्य, मांसना जाजन मूके ते मूकनार रत्नद्दीपना वाणीया पापना प्राणीया एवा मनुष्य ढे. ते मनुष्यने आवतां जेटले ते देखे, तेटले ते रत्नवाणीयानें मारवाने अर्थें उजाता धाइ आवे अने रत्नवाणीया. पण जेवारें तेमने आवता देखे, तेवारें मधु, मद्य, मांसना खंमें जरेला तुंबडा नाखतां नाखतां ते रत्नवाणीयां पाढा नासे. अने पहेला अंतरंगगोलीया मनुष्य ते मधुआदिकने खावामाटे तिहां ते शिलासंपुटमांज रहे. ते खाइ रह्या नंतर फरी पण तेमनी पढवाडे दोडे. तेवारें वली पण ते तेवीज रीतें मद्यमांस नाखे. ए प्रमाणें जे स्थानकें वज्रमय शिलाघरट्ट उघाडा करी मूक्या ढे, तेमांहे मांसादिक गंधना खेंच्या खावामाटें प्रवेश करे अने रत्नवाणीया पण ते स्थानकें आवे, पढी सात आठ दिवस केडें सर्व हथीयारें सहित सन्नाह पहेरी ते शिलाघरट्टने चारें बाजु सात मांफले वींटी केटलाएक ते शिला संपुट एकठा मेलवे जो ते मांहेथी पण ते निकलवा पामे तो ते मनुष्यो सघलाये रत्नवाणीयानो प्रलय करे, एवा ते बलवंत ढे. आखो रत्नद्दीप उजड करे, पण ते घरट्टसंपुटमांहे आव्याथका पण मरे नहीं. अने तेनां हाडकाना खंम पण थाय नहीं. एवा ते डुर्मर ढे, तेमनां हाड पण वज्रमय ढे.

हवे ते रत्नवाणीया महाबलवंत वृषन जोतरी अरहट्टनी पेरें ते वज्रशिलासंपुट जमाडे. एवुं एकवर्ष पर्यंत करे, तिहां अंतरंग गोलिया एक वर्षसुधी महोटी वेदनाने अनुजवीने जो काल करे, तोपण तेना हाथ पग प्रमुखनां संधाण त्रूटे परंतु हाड खंमोखंम थाय नहीं. एटले हाडना कटके कटका थाय नहीं. हवे जेवारें ते मनुष्योना आंगुलि प्रमुख अवयव आटानी पेठें बाहेर पडता देखे, तेवारें रत्नवाणीया, ते शिलासंपुटनो उपरलो पुट परहो करे अने शोधी करीने तेहनी गोलीयो उपाडी लीये.

इहां गौतमस्वामी पूढवा लाग्या के, जूख्या तरस्या ढता एवी वेदनानें

अनुनवता थका पण एक वर्ष पर्यंत केम जीवता रही शके डे ? नगवानें कह्युं स्वकृतकर्मना उदयथकी जीवता रहे डे. हे गौतम ! ते सुमतिनो जीव परमाधार्मिक देवतामांहेथी चवीने अंतरंग गोलिया मनुष्यमांहे आवी उपजशे, तिहां वेदना नोगवी वली पण तेहज अवतार लेशे. एम अनुक्रमें सात नव तिहांज करशे. पढी नवमे नवें व्यंतरदेव थाशे, दशमो वनस्पतिमां लींबडानो अवतार लेशे, अगीयारमो मनुष्यमां स्त्रीपणे उपजशे. बारमो तिहांथी बही नरकपृथ्वीयें जाशे. १३ तिहांथी चवी कोढीयो मनुष्य थशे. १४ तिहांथी चवी यूथाधिपति हस्तिपणे उपजशे. १५ तिहांथी चवी अनंतकाय वनस्पतिमांहे. १६ तिहां अनंतो काल परिन्रमण करशे. १७ तिहांथी निकली मनुष्य थशे. १८ तिहांथी चवी स्वयंन्नुरमण समुइने विषे माहामत्स्य थशे. १९ तिहांथी मरी सातमी नरकपृथ्वीयें जशे. २० तिहांथी चवी बलदपणे ऊपजशे. २१ बलद मरीने मनुष्य थाशे. ए प्रमाणें घणा नव करी महाइन्यकुलनेविषे अवतार पामी दीक्षा लेशे. २२ तिहांथी अनुत्तरविमानें देवता थशे. २३ तिहांथी चक्रवर्त्ती महासम्यग्दृष्टि थाशे, ते चक्रवर्त्तीनी पदवी नोगवी पढी दीक्षा लइ यथोपदिष्ट दीक्षा पाली केवलज्ञान पामी २४ मोक्षे जशे. माटे हे गौतम ! ए सुमतियें कुशीलियानी संगति करी वली ते कुशीलियानी प्रशंसा करीने तीर्थंकरदेवनी आशातना करी तेथी अनंता नव संसारमां परिन्रमण करशे. अंतरंग गोलियानां डुःख पामशे, तेमाटें मिथ्यादृष्टि प्रमुखनी प्रशंसा न करवी ॥ इति महानिशीथना चोथा अध्ययनगत सुमतिनी कथा ॥

हवे पांचमो मिथ्यादृष्टिनो परिचय करवो ते दोष कहे डे. मिथ्यादृष्टि प्रमुखनी साथें जे (परिचयकरणंतु संथवणं के०) परिचयनुं करवुं तेने संस्तवन कहीयें, माटे ते सम्यक्दृष्टियें वर्ज्जवुं. केम के मिथ्यादृष्टिनी साथें परिचय करतां थकां बोधबीज जाय अने परिचय करवाथी एवा परिणाम थाय जेम के एनो धर्म पण रूडो डे. एवुं बोलतां थकां मिथ्यात्व तथा कुमतिनी वृद्धि थाय माटे मिथ्यादृष्ट्यादिकनो संस्तव टालवो ॥ ३० ॥

ए उपर सौराष्ट्रवासी श्रावकनो संबंध कहीये डेयें. सौराष्ट्रदेशने विषे कोणिक आचार्यनो उपासक, एक श्रावक ज्ञानादिक तत्त्वनो जाण डे. अन्यदा डुष्काल पडवाथी ते श्रावक मालवा नणी चाल्यो, मार्गमां बौध लो

को मल्या तेनी साथें जवा लाग्यो. तेवारें बौद्धोयें कह्युं के, आ अमारो उपधि उपाडो तो तमोने खावा सारु आपीयें ते तेणें अंगीकार कर्युं. पछी तेनी साथें परिचय करतां तेनो परिणाम एने परिणम्यो. अनुक्रमें चालतां मार्गमां असाध्य रोग ऊपनो, तेवारें तेने मार्गमां पडतो मूकी रक्त वस्त्र उढाडीने बौद्धो चालता थया, ते मरीने यक्षदेव थयो. तिहां अवधिज्ञान नो उपयोग दीधो. तेवारें रक्तवस्त्रें ढांकेलुं पोतानुं शरीर दीठुं, ते देखीने विचारवा लाग्यो जे, बौद्धना पसायथी हुं यक्ष थयो छुं, तो हवे बौद्धना शासननो महिमा वधारुं. एम चिंतवी जिहां बौद्ध भोजन करवा बेठा हता, तिहां जइने कंकण, केयूर, मुद्रामंडित पोतानो हाथ देखाड्यो, अने पोतानी सर्व हकीगत कही. वली लाडु तथा घेवर प्रमुख बौद्धोने खावासारु निरंतर आपवा लाग्यो. एवो प्रभाव देखी घणा लोक बौद्धना भक्त थया. सर्व कहेवा लाग्या जे बौद्धनुं शासन घणुं सारुं छे. जेमाटे एमने देवता आवीने गाडवा जेवडा लाडवा आपे छे.

एकदा उज्जयणी नगरीयें कोणिक आचार्य आव्या तेनी आगल श्रावकलोकोयें सर्व वृत्तांत कह्युं के, स्वामी! आ प्रकारें कुमतियोनी वृद्धि थाय छे. ते सांभली आचार्यें पोताना यतियोने शीखावी मोकल्या के, जेवारें हाथ निकले तेवारें कहेजो के हे यक्षोत्तम! तुं प्रतिबोध पाम. अने पंच परमेष्ठी नमस्कार संभार. तुं उत्तम श्रावक हतो छतां मिथ्यात्वनी वृद्धि केम करे छे? एवी आचार्यनी शिखामण सांभलीने यतियो तिहां गया तिहां यक्षनो हाथ निकल्यो तेने यतियोयें पकडी राख्यो अने गुरुयें कहेलो संदेशो कह्यो, ते सांभली यक्ष प्रतिबोध पाम्यो. तेना हृदयमांथी मिथ्यात्व ज्ञान गयुं. अने सम्यक्ज्ञान तेना हृदयमां आव्युं, तेवारें ते यक्षें उज्जयणीयें गुरुसमीपें आवीने पाप आलोववा कह्युं. गुरुयें तेने कह्युं के, पापनी आलोयणा एहज छे के तहारामां मिथ्यात्व व्याप्युं छे, तेनो त्याग कर. ते पण तेमज निरंतर तिहां आवीने सर्वजनने कहेवा लाग्यो के बीजां सर्व दर्शन मिथ्या छे एक श्रीजैनदर्शन छे, तेहज मुक्तिनुं अर्थी छे, माटे तेनेज आदरो. एम सर्वेनी आगल प्रतिदिन श्रीजिनशासनना गुण बोलतो विचरवा लाग्यो, तेथी घणालोको प्रतिबोध पामी बौद्धमत मूकीने श्री जिनधर्मना रागी थया. एवी सौराष्ट्रवासी श्रावकनी कथा सांभली अन्य

दर्शनीनो परिचय टाळवो जेम धंतुरानी संगतथी तैल विणसी जाय तेम मि थ्यात्वनी संगतथी समकेतनो विनाश थाय. तथा जेम मोघरानी संगतथी तै लमां सुगंध थाय, तेम सुगुरु तथा साधर्मीनी संगतथी समकेत सुगंधी थाय.

इति तपागच्छालंकारश्रीशांतिचंद्रगणिशिष्यश्रीरत्नचंद्रगणिविरचितश्रीस म्यक्त्वरत्नप्रकाशनामनि सम्यक्त्वसप्ततिकाप्रकरणबालावबोधे शंकादिपंच दूषणस्वरूपनिरूपणनामा पंचमोऽधिकारः ॥ ५ ॥

हवे छठुं आठ प्रभाविकोनुं द्वार कहे छे.

॥ सम्मं दंसण जुत्तो, स सई सत्ति प्पभावगो होई ॥ सो पुण इछ विसिठो, निद्दिठो सुत्त निईए ॥ ३१ ॥ अर्थः—जे (सम्मंदंसणजुत्तो के०) निरति चार पणे सम्यक्त दर्शनें करीने युक्त होय (स के०) ते पुरुष (सईस त्ति के०) छतिशक्तियें (प्पभावगोहोई के०) प्रभाविक होय श्रीजिनशा सननी दीप्ति करे, (सोपुण के०) ते पुरुष वली (इछ के०) इहां श्री जिनागमप्रणीतसूत्रने विषे ज्ञानादिक गुणें करी (विसिठो के०) विशि ष्ट प्रधान वचनादिक लब्धिनो धणी एवो (निद्दिठो के०) कह्यो छे ते जेम आकाशने विषे सूर्य, चंद्र अने घरने विषे जेम दीपक शोभे छे, अजवा लुं करे छे. तेम श्रीजिनशासनरूप आकाश तथा घर तेनेविषे सूर्य, चंद्र तथा दीपक समान ते पुरुष जाणवो. (सुत्तनिईए के०) सूत्रनी नीतियें करी जाणवो, सूत्र जे आगल पावयणी प्रमुख कहेशे, ते सूत्रने न्यायें कह्यो ॥३१॥

हवे ते प्रभाविक आठ भेदें छे, ते आठ भेद कहे छेः—

॥ पावयणी धम्मकही, वाई निमित्तिउ तवस्सी य ॥ विद्या सिद्धो य कई, अठेव पभावगा भणिया ॥ ३२ ॥ अर्थः—एक (पावयणी के०) प्राव चनिक, बीजो (धम्मकही के०) धर्म कथिक, त्रीजो (वाई के०) वादी, चोथो (निमित्तिउ के०) नैमित्तिक, पांचमो (तवस्सी के०) तपस्वी, (य के०) वली छठो (विद्या के०) विद्यावान्, सातमो (सिद्धो के०) सिद्ध (य के०) अने आठमो (कई के०) कवि ए (अठेव के०) आठज (प भावगा के०) प्रभाविक श्रीवीतरागें (भणिया के०) कह्या छे ॥ ३२ ॥

हवे प्रकरणकर्त्ता ए आठनुं स्वरूप कहे छेः—

॥ कालुचिय सुत्तधरो, पावयणी तिछवाहगो सूरी ॥ पडिबोहिय भवज

णो, धम्मकही कहण लद्धिल्लो ॥ ३३ ॥ अर्थः–(कालुचिय के०) कालोचित एटले जे कालें जेटलो उचित अर्थात् योग्य होय, तेटला वर्त्तमान (सुत्तधरो के०) सूत्रनो धारक होय उपलक्षणथी तेटला श्रुतना अर्थनो धारक पण लेवो, जेमाटे सूत्र अने अर्थ संयुक्त जोइयें. केम के अर्थविना सूत्र नथी अने सूत्र विना अर्थ नथी, जेम घृतविना दूध नथी अने दूध विना घृत नथी. ए दृष्टांतें जाणवो. ते (पावयणी के०) प्रावचनिक कहियें. एटले प्रवचन द्वादशांग गणिपिटक छे, जेहने ते प्रावचनिक जाणवुं उत्तम आचार्यादिकें प्रवचननो अभ्यास करवो. केम के प्रवचनना अभ्यास विना आलोचना दानादिक कल्पे नहिं. तेमाटे अर्थसहित द्वादशांगीनो जे धारक होय, तेने प्रानाविकाचार्य कहीयें ॥ यतः ॥ चत्तारि आयरिया पन्नत्ता, तं जहा सुत्तधरे एगे नामं णो अत्थधरे, अत्थधरे एगे नामं णो सुत्तधरे, एगे सुत्तधरेवि अत्थधरेवि, एगेणो सुत्तधरे णो अत्थधरे ॥ इति ॥

ते प्रावचनिक कहेवो होय? तोके (तित्थवाहगो के०) तीर्थ जे चतुर्विध श्रीसंघ तेनो वाहक एटले प्रवर्त्तक होय एटले चतुर्विध संघने शुभ मार्गने विषे प्रवर्त्तावे एवो (सूरी के०) आचार्य कहीयें. एटले जिनशासन ज्ञानवंतने आहारिक कह्यो ॥ यतः ॥ जयणाए इकम्मं, खवेई बहुआई वा सकोडीहिं ॥ तन्नाणी तिहिं गुत्तो, खवेइ ऊस्सासमाए नवे ॥ १ ॥ तथा ॥ जा जयमाणस्स नवे, विराहण सुत्तविहि समग्गस्स ॥ सहोइ निज्जरफला, अप्पविसोहिय जुत्तस्स ॥ १ ॥ ए प्रानाविकनो पहेलो नेद कह्यो.

हवे प्रानाविकनो बीजो नेद कहे छेः–(पडिबोहिय नवजणो के०) प्रतिबोध्या छे नव्यजनोने जेणें एवो (धम्मकही के०) धर्मकथिक नामें बीजो प्रानाविक कहीयें जे माटे (कहणलद्धिल्लो के०) कथनलब्धिवंतनो उपदेश लागे एटले लब्धिवंतना कथनथी सांजलनारने उपदेश लागे ते उपदेश पण नव्यने देवो कह्यो, तेनुं कारण ए छे जे अनव्यने तो उपदेश लागेज नहीं. परंतु नव्यने पण सामग्री मलेज उपदेश लागे ॥ यतः ॥ सामग्गी अनावाउ, ववहारिय रासि अप्पवेसाउ ॥ नवावि ते अणंता, जे मुक्क सुहं न पावंति ॥ १ ॥ माटे नव्यने पण एम छे तो अनव्यने तो मुक्तिनी वार्त्ताज करवी नथी. एटलामाटे मुक्तिगमन योग्य एवा व्यवहारराशिया जीव लेवा तेमां पण जे संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ता मनुष्य जाति

लेवा तेमां पण आचार, देश, कुल, धर्मश्रवण, श्रद्धानादिक पाम्या होय एवा जव्यजीव उपदेशने योग्य कह्या छे. तेने पण जे खीराश्रव, लद्धाश्र वादि लब्धिवंत होय तेहनो उपदेश लागे॥ यतः॥ जो हेउवायपरकंमि, हेउउ आगमंमि आगमिउ ॥ सो समय पन्नवउ, सिद्धंत विराहगो अन्ना ॥ १ ॥ एटला माटे कथनलब्धिवंत जोइयें एटले कथन करवानी लब्धि जेमां हो य तेनोज उपदेश लागे, कारण के, केटलाएक जणेला पण होय छे परंतु ते वखाण करी जाणे नहीं. ढाश बाकला जेवो अर्थ करे, तेथी लोक एवुं जाणे जे ए जणाज नथी, तेमाटे ए विशेषण सार्थकज जाणवुं ॥ ३२ ॥

॥ हवे ए प्रावचनिक तथा धर्मकथिक ए बेहु गुणने विषे श्रीवज्रस्वामी नो संबंध कहीयें छैयें. जरतक्षेत्रें अयवंती नामें देश तेमां तुंबवन नामे सन्निवेश छे. तिहां एक धनगिरिनामें इच्यसुत वसे छे. ते स्वजावेंज वैराग्य वंत छे, तेनां माता पिता पाणिग्रहण करवानुं कहे पण ते माने नहीं. ह वे तेज नगरमां धनपालशेठनी पुत्री सुनंदा छे, ते पोताना माता पिताने कहेवा लागी जे, हुं जो परणुं तो धनगिरिने परणुं, पण तेने धनगिरियें कह्युं, हुं वैरागी छुं माटें मह्यारो प्रतिबंध म कर, जिहां तह्यारा जाइयें दीक्षा लीधी छे, तिहां हुं पण दीक्षा लइश, एवुं जाणी जो मुऊने परणे तो सु खें परण. सुनंदायें कह्युं एक वार पाणिग्रहण करो, पछी जावे तेम कर जो. तेवारें धनगिरियें तेनो अत्यंत राग जाणीने पाणिग्रहण कीधुं. पण कह्युं के हुं दीक्षा लइश. तोपण स्त्रीनी जाति मायावी थाय छे, माटें मायायें करी धनगिरिने कहेवा लागी के जो एक पुत्र थाय, तो मह्यारे आधारजूत थाय माटे मह्यारी साथें विषयसुख जोगवो. पछी दीक्षा लेजो. ए वात मा नाने धनगिरि पण तेनी साथें संसारसुख जोगववा लाग्यो. एम करतां तेने उधान रह्युं अष्टापद तीर्थनेविषे गौतमस्वामी प्रतिबोधित तिर्यग्जृजंक देवतानो जीव देवपणाथी चवीने शुजस्वप्नें सूचित गर्जपणे आवी उपनो तेवारें धनगिरियें कह्युं के स्वप्ननें अनुसारें तह्यारे उत्तम पुत्र थाशे. एवात निश्चय जाणीने हवे तुं मुऊने दीक्षा लेवा दे. एम कही स्त्रीने समजावीने सिंहगिरिजी आचार्य पासें जइ धनगिरियें दीक्षा लीधी.

अनुक्रमें पुत्र जन्म थयो, तेवारें पाडोसण कहेवा लागी के आज जो एनो बाप होत तो पुत्रजन्मनो महोटो महोत्सव करत, बापविना बीजो

काण महोत्सव करे? एने बापें तो दीक्षा लीधी छे. ए वचन सांजलतांज पहेला बालकने जातिस्मरण उपनुं, तेवारें विचारवा लाग्यो जे, मुजने दीक्षा उदय आवे, एवो उपाय करुं. एवुं मनमां धारीने रुदन करवा लाग्यो, माताने संतापवा लाग्यो, माता एना रुदनथी सुइ शके नहीं, बेसी शके नहीं, जोजन करी शके नहीं, ए रीतें माताने घणुंज संताप करतो हवो. माता घणो उद्वेग पामी महोटे कष्टें करी छ महीना अतिक्रम्या.

एवामां उद्यानने विषे श्रीसिंहगिरि आचार्य पधास्या. तिहां आर्यसमित अने धनगिरि ए बे साधु सद्याय करी, उपयोग देइ गोचरीनी आज्ञा मागवा गुरुनी पासें आव्या. आचार्यें कह्युं आज तमोने उत्तम निमित्त उपनो छे, तेथी कोइ अपूर्व वस्तुनो लाज जोइयें, माटे सचित्तवस्तु पामो ते लेजो. नाकारो करशो मां. एम आज्ञा मागी गोचरीयें पधास्या, ते सुनंदाने घरे आव्या तेवारें छोकरे रोवा मांमयुं, माताने संतापवा मांमयो तेवारें सुनंदा करसंपुटें करी पुत्र आपवा लागी अने कहेवा लागी के आ लियो तमारो बेटो? एनाथी तमेंज सुख जोगवो. तेने धनगिरियें कह्युं के हमणां तो तुं आपे छे, पण पछी पश्चात्ताप करीश. तेवारें पाछो मागवा आवीश, तो हुं आपीश नहीं. सुनंदायें कह्युं महारे एनो खप नथी. हुं तमोने आपुं छुं; सुखें लइ जाउ. तेवारें धनगिरियें पडोशी लोकोने साक्षी करीने बालकने जोलीमांहे लीधो. लइने पाधरा उपाशरे गुरु समीपें आवी जोली मूकी. गुरुयें जोली उपाडी जोइ तो तेमां जार घणो जाण्यो, तेवारें बोल्या के, आ शुं वज्र छे के? एवुं कहीने जोली उघाडी तो मांहे दिव्यस्वरूप बालक दीठो. पछी तेनुं वज्र एवुं नाम दीधुं. उपाशरामां आव्या पछी बालकें रुदन करवुं बंध कीधुं. गुरुयें ते बालक साध्वीयोने आप्यो साध्वीयें सय्यातरनी आपनारी श्राविकाने धवरावयामाटे ते बालक सोंप्यो. तेणे धवरावी पाछो उपाश्रयें आवी पारणामां राख्यो. गुरु अन्यत्र विहार करी गया. हवे तिहां शालामां साध्वीउ जण्या करे छे, अने ए बालक छ महीनानो पारणामां पोढेलो छतां ते साध्वीउना पाठ सांजलीने पारणामां रह्यां थकां बालकें अगीयार अंगजणी मुख पाठें करी लीधां.

अनुक्रमें जेवारें ते बालक त्रणवर्षनो थयो तेवारें तेमां बत्रीशवर्षना माह्या पुरुषमां जेटलुं चातुर्य कला विज्ञान होय, तेटलुं दीसवा लाग्युं. ते

देखीने सुनंदानुं मन चलायमान थयुं. अने कहेवा लागी जे हुं म्हारो पुत्र पाछो लइ जइश. तेने संघें कह्युं के ए गुरुनो माल छे, ते कोइथी ले वाय नहीं अमाराथी अपाय पण नहीं तेवारें कजीयो करवा लागी छेव ट बालक नहीं मलवाथी राजदरबारमां गइ, गुरु पण अन्यत्र विहार करी पाछा आव्या. श्रीसंघनी विनतिथी गुरु पण राजदरबारमां गया. राजायें एवो न्याय कस्यो के, तमो बेहुजण पोतपोतानी तरफथी जुदी जुदी वस्तु उ बालकने आपो. तेमां जेनी वस्तुउ ए बालक लइ लेशे, तेने ए पुत्र आ पशुं. तेवारें सुनंदायें सुखडी तथा रमकडां प्रमुख बालकनी आगल मू क्यां पण बालकें तेनी साहामुं पण जोयुं नहीं. पछी धनगिरिजीयें रजोह रण, मुहपत्ति तथा नोकरवाली प्रमुख धर्मोपकरणरूप रमकडां बालकनी आगल मूक्यां, अने कह्युं के हे, कुमर! अमारी पासें तो ए धर्मनी रमत छे तहारुं मन माने, तो ले. ए रमत तुऊने नहीं गमे, तो संसारनी रमत ले. तेवारें कुमर रजोहरण प्रमुख सर्व वस्तु लइ तेने मस्तकें चडावी नाचवा कु दवा लाग्यो. ते देखी संघमांहे जयजयकार थयो. सर्व बोल्या जे आ बाल क पण श्रीजिनासननो प्राजाविक थयो. राजायें कह्युं के न्याय थइ चूक्यो. आ बालक गुरुने आपी द्यो. पछी तेने साध्वीउने उपाशरे राख्यो. केटलि एक प्रतमां आ ठेकाणे साध्वीउने जणतां जणतां बालकने अगीयार अंग मुख पाठें थयां, एवुं लख्युं छे. अने केटलिकमां पूर्वे बालकनी छ महीनांनी अ वस्थामां ए वात लखी छे, माटे जेम सुज्ञोने जाणमां होय ते प्रमाणे वांचवी.

पछी जेवारें वज्रकुमर आठ वर्षनो थयो तेवारें गुरुयें तेने दीक्षा दीधी, तेवखत सुनंदायें विचार्युं जे हुं हवे घरमां कोने अर्थे रहुं. एम चिंतवी सिंहगिरि आचार्य पासेंथी दीक्षा लीधी.

आचार्य अनुक्रमें उज्जयणीयें विहार करतां मार्गमां वज्रमुनिना पूर्वन्न व संबंधिनो मित्र जृंनक देवता हतो ते वज्रमुनिने देखी हर्ष पाम्यो. पछी परीक्षा करवामाटे वाणीयानो सथवारो विकूर्वीने जोजननिमित्तें गुरुने आग्रह करवा आव्यो के महाराज! शुद्धमान रसवती छे, माटे चेलाने मो कलो. गुरुयें आज्ञा आपी वज्रमुनि वहोरवा गया परंतु सूक्ष्ममेघ वृष्टि दे खी पाछा वल्या, तेवारें देवतायें वृष्टि रोकी राखी अने कहेवा लाग्यो के हवे पधारो. वज्रमुनि वहोरवा गया, तिहां तेणे कोलाफलनी भिक्षा देवा

मांमी. तेवारें वज्रमुनियें उपयोग दीधो, जे हमणां वर्षाऋतुमां कोलाना फल क्यांथी लाव्या हशे? तेनो हेतु समजातो नथी वली आना पग नूमिने अबता नथी माटे ए कोइ देवतायें छल कर्युं जणाय छे, तेथी मुज ने वैक्रियपिंम अकल्प छे एवुं कही, त्यांथी पाछा वल्या. एवी रीतनी आहारसंबंधी शुद्धि जोइने देवता हर्ष पाम्यो. पछी प्रगट थइ मुनिने वंदना करी कहेवा लाग्यो के में तमारी आहारशुद्धिनी परीक्षा करवामाटे आ कृत कर्युं, पण तमें महोटा यति छो, माटे चूक्या नहीं तो हवे माहारा अनुग्रहने अर्थें वैक्रिय बहुरूपिणी विद्या ल्यो. तेवारें वज्रमुनियें श्रीजिनशासननी प्रनावनाने अर्थें ते विद्या लीधी. देवता वांदीने पोताने स्थानकें गयो.

एकदा ज्येष्ठमासमां वज्रमुनि बाहेर गया छे, तेवारें तेहज देवता तत्कालना साकरचूर्णें नरेला घेवर लइने मुनिनें निमंत्रणा करतो हवो. ते पण मुनियें उपयोग देइ उनालो जाणी लीधां नहीं, तेवारें देवतायें संतुष्ट थइने मानुष्योत्तर पर्वतपर्यंत जावानी आकाशगामिनी विद्या आपी.

एकदा गुरु ठंमिलनूमियें गया छे अने बीजा साधुउ पण सर्व गोचरी प्रमुखें बाहेर गया छे, तेवारें वज्रमुनि बालक्रीडाथी साधुउना संथारादिक चारे बाजु मूकी, पाथरी, पोतें तेनी वचमां बेसीने गाढे स्वरें जेवी रीतें गुरु वाचना आपे, तेवी रीतें अनुक्रमें जूदी जूदी अगीयारे अंगनी वांचना देवा लाग्यो. एवामां गुरु आव्या तेमणे बारणे छाना उना रहीने सर्व वांचना सांनली ने घणो हर्ष पाम्या. पछी ते बालकने कांइ पण शंका न पडे तेवी रीतें गुरुयें महोटा स्वरथी निसिही कही, एटले वज्रमुनियें पण सर्व उपधि, स्थानकें मूकीने द्वार उघाड्यां, गुरुना पग पूंज्या, दांमो हाथथकी लीधो.

हवे गुरुयें विचार्युं जे एनी विद्या प्रगट करवी जोइयें, एम निर्धारी सर्व यतियोने तेडी कह्युं के, अमें गामडे विहार करशुं. तिहां सात आठ यति साथें लइशुं. बाकी तमो सर्व यतियो इहां रहेजो. तेवारें यतियोयें कह्युं अमने वाचना कोण देशे? गुरुयें कह्युं वज्रमुनि देशे. यतियें तहत्ति कही ॥ यतः ॥ सीहगिरिसुसिसाणं, नदं गुरुवयण सद्दहंताणं ॥ वयरो किरंदाई, वायणंति नवि कोवियं वियणं ॥ १ ॥ गुरुयें विहार कर्यो पाछल साधुउ सर्वे विनयवान् छे माटें गुरुनुं वचन प्रमाण करी विनयपूर्वक वज्रमुनि पासें वाचना लेता हवा. वज्रमुनियें ते साधुउने एवी युक्तिथी वाचना आपी के

जेथकी गुरु घणा दिवस वाचना आपवाथी जेटलुं नणावे, तेटलुं वज्रमुनियें एक वाचनामां नणावी दीधुं. तेथी साधुउ एवी चाहना करवा लाग्या के आपणा गुरु आववाने हजी चार दिवस वधारे लागे तो सारुं थाय, तो तेटलामां अमारुं अमुक श्रुतस्कंध पूर्ण थइ जाय.

पढी केटलाएक दिवस वीत्या केडे गुरु आव्या तेमनी साह्ামা साधुउ तेडवाने गया, तेवारें गुरुयें पूछ्युं, नो साधुउ ! तमारे वाचना सुखें थइ? साधुउ बोल्या, हा महाराज ! तमारे प्रसादें थइ. हवे अमारे वाचनाचार्य ए वज्रमुनिज होजो. यतियोयें वज्रमुनिनी घणी प्रशंसा करी तेवारें गुरुयें अगीयारे अंग वज्रने आपीने वांचनाचार्य कस्यो. अनुक्रमें गुरु दशपुर नगरें आव्या, अने वज्रमुनिनी पदानुसारिणी लब्धि देखी विचास्युं जे ए पूर्वाध्ययनने योग्य ढे. ए अमाराथी अधिक थाशे ॥ यतः ॥ चत्तारि सीसा पसुत्ता अइजाए समजाए अणुजाए कुलिगाले. ए चारमां वज्रमुनि अतिजात ढे माटे एने पूर्वान्यास करावीयें.

ते समयें दश पूर्वी श्रीनइगुप्ताचार्य अयवंतीमां ढे, ते विहार करवा असमर्थ ढे माटे तिहांज रहे ढे, एवुं विचारीने गुरुयें यतियोना संघनी साथें वज्रमुनिने उज्जयणीयें मोकल्यो. श्रीनइगुप्ताचार्यें तेनो विनय देखीने हर्ष सहित पूर्व नणाववा लाग्या. महाप्राज्ञ ढे माटे स्वल्पकालमां दश पूर्व नणी गया. अनुक्रमें सिंहगिरि आचार्य वली पण दशपुरें पधास्या अने विचास्युं के वज्रमुनिने जिहां पूर्व नणवानो उद्देश कीधो तिहांज अनुज्ञा करीयें. एम चिंतवी श्रीवज्रस्वामीने दशपुरनगरें तेडाव्या ॥ यतः ॥ जब्बुदेसा एुन्नावि, तब किज्जई कमो इम्मो अब्बि ॥ दिठिवाय महागम, सुत्तब्बाणं तउ पब्बा ॥ १ ॥ पढी तिहां वज्रसाधुने आचार्यपद स्थापनाने विषे तिर्यक्जृंनक जातिना देवता महोत्सव करता हवा. अनुक्रमें सिंहगिरि आचार्यें गछनो नार सर्व वज्रस्वामीने आपी पोतें स्वर्गें गया. वज्रस्वामी पांचशें साधुना समुदाय साथें गाम नगरादिकें विहार करता हवा.

हवे पाडलीपुर नगरें धनो नामें शेठ वसे ढे तेने मनोज्ञ नामें स्त्री ढे तेनें रुक्मिणीनामा पुत्री ते रूपें करी श्रीकृष्णपत्नी रुक्मिणी समान ढे. ते शेठने घरे साध्वीउ उतरी ढे, तेमनी पासें नणातां थकां रुक्मिणीयें वज्रस्वामीना गुण तथा रूपनुं वखाण सांनलीने ते कुमरीयें वज्रस्वामीनी

साथेंज पाणिग्रहण करवानी प्रतिज्ञा करी, एटले परणुं तो एनेज परणुं, नहींकां बीजा कोइनी साथें परणुं नहीं एवो निश्चय कस्यो.

एवामां श्रीवज्रस्वामी पण पाटलीपुरें पधास्या, राजा साहामो तेडवा गयो तेने यतिनां वृंद साहामां मले, तेमांहे जेने रूपवंत देखे तेने ए वज्र स्वामी छे एम मानीने राजा नमस्कार करी वंदना करे, तेवारें साधुउ कहे ता जाय के, गुरु पाछलथी आवे छे एम करतां अनुक्रमें गुरु आव्या, तेम नुं सर्वातिशायी रूप देखी राजा घणो हर्ष पाम्या. गुरुने वांदी गुणस्तुति करी, गुरु उद्यानें उतस्या, राजायें वसंतरागादिकना आलापें धर्मदेशना सांजली फरी वांदीने राजा पोताने आवासें गयो. तिहां पोताना अंतःपुर नी आगल गुरुना रूप स्वरादिकनो वर्णव कस्यो. अंतःपुरें कह्युं जे अमोने गुरु देखाडो. पढी पालखी, सुखासन, रथ प्रमुखमां बेसी अंतःपुर वांदवा निकल्यो. अनुक्रमें चालतां गुरुपासें आवीने वंदना करी राणी सर्व हर्ष पामी.

धनश्रेष्ठी पण कोटिसुवर्णें जस्था रथ साथें पोतानी रुक्मिणी पुत्रीने लइ गुरुपासें आव्यो. गुरुयें विचार्युं जे महारुं रूप देखी घणी स्त्रीयो कर्मबंध करशे, माटें रूप परावर्त्तन करी बेठा थका धर्मदेशना दीये छे. तिहां सर्व स्त्रीजन वातो करवा लागी, के हा, हा विधाता चूक्यो छे, के जेणे कोकिलना कंठथी पण अधिक एवो एमनो स्वर कीधो, पण रूप मातुं कीधुं. तेथीज विधातायें कोकिलनो दृष्टांत जगतमां प्रसिद्ध कीधो छे. जेम कोकिल काली छे तेमां स्वर मूक्यो छे, तेम रूप हंसपक्षीमां मूक्युं छे. विधाता पण एवो अवलो छे. एवुं लोकोना मुखथी साधुयोयें सांजल्युं जे गुरुनी देशना तो अमृत सरखी छे, पण रूप तो सामान्य छे, ते आलाप संलाप गुरुयें सांज ल्यो तेवारें श्रीजिनशासननी प्रजावनाने अर्थें बीजे दिवसें सुवर्णसहस्रपत्र कमल उपर तेजना पुंज जेहवुं स्वाजाविक रूप छे तेवा रूपें व्याख्यान करवा बेठा, ते देखी सर्व लोक चमत्कार पाम्यां. अने घणा जीव प्रतिबोध पाम्या ॥यतः ॥दोहो॥ किंहिं परिमल किंहिं तुछदल, किंहिं दल किंहिं नवि गंध ॥ रे चंपय तुहिं तिन्नि गुण, सदल सुरूव सुगंध ॥ १ ॥

हवे धनश्रेष्ठी बोल्यो जे सातपेढी सुधी इव्य खातां खूटे नहीं, एटला इव्यनी साथें महारी रुक्मिणी कन्यानुं पाणिग्रहण करीने सातजूमिया आवासनेविषे पधारो, यौवननो लाहो ल्यो. गुरुयें कह्युं अमें विषयना

लोनी नथी विषयसुखने तो विष समान जाणी पडता मूकीने अमें दीक्षा लीधी बे. एम कही ते कन्याने प्रतिबोध आपी धर्म पमाडीने पोतानी शिष्य णी करी. एम वज्राचार्यें श्रीजिनशासननी प्रनावना करी.

हवे एकदा प्रस्तावें गुरुयें पूर्वदेशथी उत्तरदेशें विहार कस्यो. तिहां न वितव्यताने योगें काल कराल डःकाल पड्यो, कोइ रांक पण आगल बा हेर निकली शके नहीं. तेवारें श्रीसंघें विनति करी के महाराज! तमें अ मारे माथे गुरु बतां अमो डःकालमां नूख मराथी डःखी थशुं माटें एनी लाज तमोने बे ॥ यतः ॥ रयणायर तीर परठि, याए पुरिसाए जं च दा लिद्दं ॥ सा रयणायर लज्जा, नहु लज्जा इयर पुरिसाणं ॥ १ ॥ ते सांन ली आचार्य पण लान जाणी कपडाना पट्ट उपरें पोतें वचमां बेठा अने चारे बाजु श्रीसंघ बेठो. पठी गंधर्वगीत गाते आकाशमार्गें चाल्या ॥ यतः ॥ साहाम्मिय वब्बलंमि, उजया उजया य सज्जाए ॥ चरण करणेसुयरया, तिब्बस्स पनावमाएण ॥ १ ॥ एवामां एक पडोसी ब्राह्मणे ते पट्ट जातो देखी गुरु प्रत्यें कहेवा लाग्यो महाराज ! हुं पण तमारो शय्यांतर बुं. तो मुजने एकलाने कां मूकी जाउ बो ? गुरुयें कृपा आणी तेने पण पट्टमांहे बेसाड्यो, अनुक्रमें आकाशें रह्या थका थानकें थानकें जिन चैत्यवंदावता गुरु सुनिक्ष देशनेविषे महानिशिनामा नगरीयें पट्ट लइ गया. तिहां राजा दिक सर्व बौद्धधर्मी बे ते जेवारें पजोसणना दिवसो आव्या तेवारें बौद्ध लोकोयें राजाने कहीने सर्व मालिलोकोने कहेवराव्युं जे जैनी लोकोने फूल आपवां नहीं. तेवारें उशीयाला थया थका श्रीसंघें वज्रस्वामीने विन ति करी के, महाराज ! फूल मली शकतां नथी ते सांनली गुरुयें विचार्युं जे ए कर्त्तव्य यतिने करवा योग्य नथी तथापि केवल श्रीजिनप्रवचननी उ न्नति करवाथी माहालान बे. एवुं जाणीने आकाशगामिनी विद्याने बलें मालवदेशें महेश्वरी नगरीनेविषे हुताशन व्यंतर चैत्यनी पासेंना उद्याननें विषे गया. तिहां तडित नामें माली ते आचार्यना पिता धनगिरिजीनो मि त्र बे, तेणे आचार्यने नमस्कार कस्यो, अने आव्यानुं कारण पूब्युं. तेने गुरुयें कह्युं फूल जोइये बैयें ते एकठां करी राखजो वलता आविशुं तेवारें लेता जइशुं. एवुं कहीने पठी गुरु, हिमाचलपर्वतें पद्मद्रहनिवासिनी श्री देवीनी पासें गया. तेमने श्रीदेवीयें वांद्या अने पोतानी पासें आव्यानुं

प्रयोजन पूछ्युं. आचार्यें कह्युं कमल जोइयें छैयें. ते समयें तेणे देवार्चा निमित्तें एकलक्ष कमल आण्यां हतां, तेज आप्यां. ते कमल लइने पाछा मा लवाना वननेविषे आव्या, तिहांथी माली पासेंथी वीश लाख फूल लइ पूर्वेलवना मित्र जृंभकदेवतायें विमान रच्युं, तेमां बेसिने देवडुंदुभि वाजते महानिशीपुरी नगरीयें आव्या.तिहांफूल, श्रावकोने आप्यां. श्रीजिनमंदिर ने विषे देवतायें तथा श्रावकें महोटी पूजा करी. राजायें मालीने पूछ्युं के, म्हारी आज्ञाविना फूल कोणें आप्यां ? मालीयें कह्युं अमें आप्यां नथी. पछी अनुक्रमें गुरुनुं माहात्म्य सांभली राजा पोतें वांदवा आव्यो. तिहां गुरुनुं रूप देखी धर्मदेशना सांभली राजा प्रतिबोध पाम्यो, श्रावक थयो. बीजा पण घणां लोक प्रतिबोध पाम्यां अने श्रावक थया.

एक दिवस दक्षिण मार्गमां जातां थकां श्रीवज्रस्वामीने श्लेष्म थइ आव्युं, तेवारें साधुउनी पासेंथी गोचरीमां सुंठ मगावी ते साधुउ लइ आव्या, तेने पोतें कानमां धरी राखीने विचार्युं जे पछी खाशुं, पण भूलमां एमज रही गइ, खवाणी नहीं. ते पडिक्कमणुं करती वखतें खमासमण देतां पडिलेहणां करतां नीचें पडी गइ, तेवारें गुरुयें विचार्युं जे हुं दशपूर्वधर छुं तेने आवी भूल ते वली केम पडी ? एथी जाण्युं जे हवे म्हारुं आयुष्य स्वल्प रहेलुं जणाय छे, माटें अनशन करवुं योग्य छे. अने पोताना शिष्य वज्रसेनने कह्युं के बार डुकाली पडशे, तेवारें तुं सोपारापुर पाटण जाजे, कोइ तुने पूछे के सुभिक्ष क्यारें थशे ? तेवारें ताहरे एम ध्यानमां राखवुं के जे दिवसें लाख मौल्यनी एक हांमी चडे, ते दिवसथी बीजे दिवसें सुगाल थाशे. एमविचारी जवाब आपजो अमें तो हवे अनशनकरशुं. एम कहीने वज्रसेनने विहार कराव्यो. पोतानी पासें रहेला साधुउने जेवारें भिक्षा नहिं मले, तेवारें लब्धियें विद्यापिंम करीने केटलाएकने जमाड्या, पछी एक दिवसें साधुउने कह्युं के जो चारित्रने दोष लगाडी जमो, तो ए विद्यापिंम ल्यो. तेवारें साधु बोल्या अमारे चारित्र साथें अर्थ छे, माटें ए पिंम लेशुं नहीं. पछी वज्राचार्यजी, पांचशें साधुउने लइने अनशन करवाने माटें चाल्या. तेमां एक न्हानो चेलो हतो तेने गुरूयें वार्यो के तुं अनशन करीश नहीं तेणें कह्युं हुं अशुद्ध पिंम लइश नहीं तो पण तेने भोलव्यो के तुं इहां बेश, हुं आवुं छुं पण ते चेलायें मोहथी कह्युं जे

हुं तो तमारी पछवाडे आवीश. तो पण गुरुयें समजावीने राख्यो, तेवारें चेलायें जाण्युं जे गुरु महाराजने अप्रीति न थाय, तेम करुं तो ठीक. एवुं चिंतवीने फरी पर्वतना मूलमां आवी तपेली शिला उपर ते चेलायें अनशन करी लीधुं, ते बालक हतो माटें सुकुमार पणाथी तत्काल मिणनी पेठें गली गयो. शुभध्यानें मरण पामी देवलोक गयो. देवतार्उयें भेला थइने तेनो महिमा कर्यो, तेवारें बीजा साधुर्उयें पण विशेष दृढ थइने अनशन कर्यां,परंतु मिथ्यात्वी देवीयो श्राविकार्उनां रूप करी तिहां आवीने साधुर्उने अनशनमां मोदकादिकनी निमंत्रणा करवा लागी. अने बोली के,हे महाराज ! आ शुद्ध निर्दोष आहार छे ते ल्यो. तेवारें साधुर्उने अप्रीति रूपनी जाणी नजीकना बीजा पर्वतनी शिलापट्ट उपर जइने निर्विघ्नपणे अनशन कर्युं, शुभध्यानथी काल करीने वज्रस्वामी प्रमुख देवलोक गया, तेवारें इंद्र माहाराजें रथ उपर बेशी पर्वतने प्रदक्षिणा देइ सर्व साधुर्उने वांद्या. तिहां ते इंद्र माहाराजना रथनी रेखा मंडाणी, तेथी ते पर्वतनुं रथावर्त एवुं नाम थयुं. तथा तिहांना वृक्ष पण साधुर्उने नमवाथी नमेला थकाज आज पर्यंत देखाय छे एमने पाटें वज्रसेनाचार्य पण महाप्राभाविक थया. श्रीवज्रस्वामी देवलोक गया पछी दशमुं पूर्व तथा चोथुं अर्द्धनाराच संघयण विच्छेद गयुं ॥ इति प्रावचनिक तथा धर्मकथिक प्राभाविकयुगलेंवज्राचार्यनी कथा ॥
हवे त्रीजो वादी प्राभाविक तथा चोथो नैमित्तिक प्राभाविक कहे छे.

॥ वाईपमाणं कुसलो, रायडुवारेवि लद्ध माहप्पो ॥ निमित्तिउ निमित्तं, कक्जं मि पउंजए निउणं ॥२४॥ अर्थः-(वाई के०) जे वादी होय ते (पमाणं के०) प्रमाण एटले तर्कशास्त्रनेविषे (कुसलो के०) कुशल विचक्षण जोइयें. जैनप्रमाणने विषे तथा सर्व प्रमाणने विषे निपुण होय जेमाटें अज्ञातप्रमाण जे होय ते वाद करी शके नहीं. जेम दाढारहित सर्प्प होय ते पराभव करी शके नहीं. ए प्रमाण शास्त्रथकी अजेय थाय जेम मेदपाट देशें आहडपुरी नगरीयें बत्रीश दिगम्बराचार्य साथें वाद करीने श्रीजगच्चंद्रसूरि हता, ते हीरला जगच्चंद्र एवुं बिरुद पाम्या. तेमज श्रीमुनिसुंदर सूरि श्रीस्तंभनक तीर्थें ब्राह्मणोनी साथें वाद करीने दफतरखाननी सभाने विषे “ वादिगोकुलसंढ ” एवुं बिरुद पाम्या ॥ यतः ॥ समणस्स भगवउ

महावीरस्स चत्तारिस्सया वाईणं सदेव मणुआ सुराए परिसाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाईसंपया होत्था॥ एम चोवीशे तीर्थंकरने वादीनी संपदा छे.

जिहां उत्तम वन होय, तिहां कांटाला वृक्षनी वाड पण जोइयें. तेम गच्छनायकने वादीनी वाड जोइयें. जे शास्त्रने वादें बोलतो थाके नहीं, किहांएक चालवुं पडे, तो चालवे पण थाके नहीं, भूख्युं तरस्युं रहेवुं जोइयें. तिहां भूख तृषाथी मरे नहीं. ते माटे कह्युं के (रायदुवारेविलद्धमाहप्पो के०) राजद्वारने विषे पण लब्ध एटले विशेषें पाम्युं छे माहात्म्य जेणें अर्थात् घणावाद जीतीने राजसभानेविषे प्रसिद्ध थयो होय, जेम घणा संग्राममां जय पामीने सुभट प्रसिद्ध थयो होय तेम ए जाणवो.

ए वादी प्राभाविकनी ऊपर मल्लवादीनो संबंध कहीयें छैयें. भरतक्षेत्रने विषे भृगुकच्छ नामें नगरें श्रीजिणाणंदसूरि चोमासुं रह्या हता ते समय तिहां बौद्धदर्शनी घणा रहेता हता, तेमनो जिणाणंदसूरि साथें वाद थयो, ते वखत राजानी समक्ष बेहु पक्ष वालायें एवो ठेराव कर्यो के,जे वादी हारे तेने देशोटो आपवो अने जे जीते ते देशमां रहे. तिहां वाद करतां भवितव्यताने योगें जैनमती हार्या अने बौद्धमती जीत्या, तेवारें जैनमती तिहांथी चाल्या ते वल्लभी नगरीयें आव्या, तिहां जिणाणंदसूरि घणा चिंतातुर थका रह्या, ते जिणाणंदसूरिनी दुर्लभदेवी एवे नामें बहेन छे तेना एक अजितयशा,बीजो यक्ष अने त्रीजो मल्ल एवा त्रण पुत्र छे, तेनो धणी कालधर्म पामे थके दुर्लभदेवीयें वैराग्य पामी, त्रणे पुत्रोनी साथें दीक्षा लीधी. ते साध्वीये गुरु तथा संघने पोताना गुणें करी वश कीधा, पुस्तकना भंडारनी अधिकारिणी थइ. पोतें पुस्तकोनें लखावे, छोडे, बांधे, संभारी राखे; एम सर्व भंडार तेणें पोताने हाथे राख्यो. गुरुये त्रणे चेलाने समस्त शास्त्र भणाव्यां, पण एक नयचक्र नामें प्रमाण ग्रंथ भणाव्यो नहीं. कारण के पूर्वाचार्यें प्रमाणवाद नामा पूर्वमांथी सारोद्धार करीने नयचक्र शास्त्र रच्युं छे. ते देवताधिष्ठित छे माटें जेणे श्रुतदेवतानुं आराधन करी ते देवतानी आज्ञा लीधी होय, तेनाथी भणाय. एवा हेतुथी भणाव्युं नहीं.

हवे ते त्रण शिष्यमांथी गुरुयें एक मल्लवादीने योग्य जाणीने नयचक्र ग्रंथ साध्वीना हाथ आप्यो. अने जाण्युं जे भाग्याधिक हशे, तो पोतानी मेलें वांचशे. अने जाणपणुं करशे. पछी त्रणे चेला साध्वीनी पासें मूकी

ने गुरुयें तिहांथी विहार कस्यो. हवे मल्लवादीने इच्छा उपनी जे ए ग्रंथ हुं वांचुं. गुरुयें मुजने शा माटें जणाव्यो नही होय? पछी ते ग्रंथ साध्वी थी पण छानो जंभारामांथी लइने वांचवा लाग्यो. तेमां पहेली आर्या वांचे छे, ते आवी रीतें:—विधिनियमभंगवृत्ति, व्यतिरिक्तत्वादनर्थकं बोध्धम् ॥ जैनादन्यच्छासनमनृतं भवतीति वैधर्म्यं ॥ १ ॥ ए आर्यानो अर्थ समजीने हर्ष पाम्यो थको आंख मीची एवामां श्रुतदेवी तेना हाथमांथी पुस्तक लइने अदृश्य थइ गइ. आंख उघाडी जुए छे तो हाथमां पुस्तक दीठुं नहीं. तेवारें चिंतातुर थको विचारवा लाग्यो के में गुरुनी अनाज्ञायें पुस्तक वांच्युं, तेनुं फल हुं पाम्यो.

पछी ते वात मल्लवादीयें साध्वीनी आगल कही, साध्वीयें श्रीसंघने कह्युं श्रीसंघ घणुं दुःख धरवा लाग्यो. मल्लवादीयें एवो अभिग्रह कस्यो, के जो ए पुस्तक मने पाछुं मले, तो हुं आहारमांहे विगय वहोरुं, तिहां सुधी धान्यमां एक वाल खावा मोकला राख्या तथा ज्यांसुधी पुस्तक न मले तिहां सुधी वनमांहेज रहेवुं एवो निश्चय कस्यो. पछी श्रीसंघें आग्रह करीने मल्लवादीनी देह रक्षाने अर्थें विगय मोकलुं राखवानुं कह्युं. मल्लवादीयें पण संघनुं कहेण मान्युं यतः ॥ कयकिच्चेहिवि तिहुयण, गुरुहिसिर हरिय पाणी पउमेहिं ॥ जं मन्निज्जइ संघो, आणं को तस्स लंघेइ ॥ १ ॥ पछी वल्लभी नगरीनी पासें एक पर्वत हतो, तिहां जइ रह्या. एक वाल नामे धाननुं भोजन करे, श्रीसंध पण प्रतिदिवस श्रुतदेवतानुं आराधन करे.

॥ हवे एकदा प्रस्तावें रात्रिने समयें मल्लवादी जागे छे, नयचक्र शास्त्रनी पहेली आर्यानो अर्थ विचारे छे. एवामां श्रुतदेवीयें आवी पूछ्युं के इष्टं ? मल्लें कह्युं भाग्य वल्युं. वली छ महिना पछी तेज जगायें तेज वखतें श्रुतदेवीयें पूछ्युं " काभ्यां " कोनी साथें मल्लें कह्युं " घृतगुडाभ्यां " घृत गोल साथें एवी धारणा शक्ति देखी श्रुतदेवी चमत्कार पामी अने प्रत्यक्ष थइ कहेवा लागी के, माग. माग. हुं संतुष्ट थइ छुं. मल्लें कह्युं के, नयचक्रशास्त्रनुं पुस्तक आपो. श्रुतदेवीयें पुस्तक आप्युं अने कह्युं के तुं वादने विषे अजय थाइश, एवो वर आपी देवी अदृश्य थइ. पछी श्रीसंघें महोटा आडंबरसहित मल्लने नगरमां प्रवेश करवानो महोत्सव कस्यो. तथा वली श्रीसंघें जिणाणंदसूरिने पण परदेशथी आग्रह करी तेडी आव्या. त्र

ऐ जाइने आचार्यपद देवराव्यां. मल्ल बोल्यो के, जरुअच्चमां जइ बौद्धनी साथें वाद करी बौद्धने देश त्याग करावुं, तोज मह्हारुं जण्युं प्रमाण नहीं कां अप्रमाण जाणवुं.

एवी प्रतिज्ञा करी श्रीसंघनी आज्ञा मागी, जरुअच्च नगरें आवी राजाने जइ मल्या, तिहां नविन काव्यादिक रची, राजाने खुसी करीने कह्युं के, हे राजन्! बौद्धने तेडावो, हुं तेमनी साथें वाद करीश. राजायें बुद्धाणंद नामें बौद्धमतना आचार्यने तेडीने कह्युं के आ मल्लसाथें वाद करो. नहींकां देशवटो ल्यो. तेणें पण वाद करवो कबूल कर्यो. पछी वादी, प्रतिवादी, साक्षी अने सजापति, ए चार परठव्या नंतर राजायें पूछ्युं जे तमारामांथी प्रथम प्रश्न कोण करशे? तेवारें जवितव्यताने योगें बौद्धें कह्युं के प्रथम वादी बोले, पछी प्रतिवादी बोले. राजायें मल्लवादीने कह्युं तमे प्रथम बोलो. मल्लवादीयें ते वात प्रमाण करीने नयचक्र शास्त्रनी युक्तिनो उच्चार कर्यो, जेम समुद्र गर्जना करे, तेम गर्जना करतो जेम जेम बोलतो जाय, तेम तेम तेनो स्वर मेघनी पेरें गंजीर थतो दीठामां आव्यो. एम छ दिवसपर्यंत वादी अने प्रतिवादी आपस आपसमां बोल्या. तेमां छठे दिवसें मल्लवादीयें एवो पूर्वपक्ष कीधो, के जे थकी बौद्धानंदने थरहरावी नाख्यो. जुवाब आपी शक्यो नहीं. तेवारें परिश्रांत थयो थको सातमा दिवसनो वायदो राख्यो, सजाजनो उठी ने सर्व पोतपोताने घेर गया. मल्लवादी गुरु हर्षसहित उपाश्रये आव्या, बौद्धानंदें खडी (चाक) ना कटकाथी मल्लवादीनो पूर्वपक्ष लखवा मांड्यो, पण सांजरे नहीं. तेथी चिंतातुर थयो रात्रि उजागरो करवो पड्यो, ऊंघ आवी नहीं. हृदयस्फोट थयो. तेवारें खडीनो कटको हाथमां थकांज मरण पाम्यो.

प्रजातें दातण पाणी करी तांबूल खाइ राजा सजामांहे आव्यो, मल्लवादी गुरु पण हर्षसहित सघाय करी राज्य सजायें आवी बेठा. सर्वसजा मली तेवारें पूछ्युं बौद्धानंद, हजी आव्या नथी तेनुं कारण शुं? घणी वार वाट जोतां पण नाव्यो तेवारें तेने तेडवामाटे राजायें माणस मोकल्युं. तेणे जइ उरडो उघाडी जोयुं तो आगल पाटलो पडेलो छे, तेनी ऊपर खडीथी अक्षरो लखेला छे हाथमां खडीनो कटको रहेलो छे एवो थको मुवो पड्यो छे. ते जोइ राजपुरुषें आवीने राजा आगल यथास्थित

वात कही. तेवारें राजायें बौद्धोने देशवटो दीधो. ते दिवसना बौद्ध गया छे, ते हजी हिंदुस्थानमां आव्या नथी.

पछी राजायें जिणाणंदसूरि प्रमुख सर्व संघने निशान सहित गाजते वाजते गाममांहे आण्यो. ते दिवसथी राजायें मल्लनुं नाम मल्लवादी एवुं स्थापन कर्युं. ए रीतें श्रीजिनशासननी घणी प्रभावना करीने मल्लवादी सूरि स्वर्गें गया. ए त्रीजा वादी प्राभाविक ऊपर मल्लवादी सूरिनी कथा कही ॥

हवे चोथो निमित्त प्राभाविक कह्यो, छे तेनी व्याख्या करे छे.

(निमित्तिउ निमित्तं के०) तेहवा दीत श्रीजिनशासनना कार्यने विषे जे निमित्तना जाण होय ते निमित्त प्रयुंजे, ते निमित्त आठ प्रकारनां छे १ आदित्य, २ औत्पातिक, ३ आंतरिक्ष, ४ भोम, ५ अंगफुरकण, ६ स्वर, ७ लक्षण, ८ व्यंजन, परिज्ञान रूप इहां जे कोइ अकारणे निमित्त प्रयुंजे, तो ते विराधक जाणवो ॥ यतः ॥ जोइस निमित्त अरकर, कोउ आएसभूइकं धमेहिं ॥ करणाणुमोयणेहिय, साहुस्स तवरकउ होइ ॥ १ ॥ तेमाटे (कज्जंमि के०) कार्ये एटले जिहां श्रीजिनशासननी महत्प्रभावना थाती होय एवा कार्यमां निमित्त (पउंजए के०) प्रयुंजे ते पण कोण प्रयुंजे के जे (निउण के०) निपुण डाह्यो होय ते प्रयुंजे. कारण के जे कोइने कांइ निमित्त कह्युं अने ते जो मले नहीं तो उलटी श्रीजिनशासननी अपभ्राजना थाय, माटे तेम न करवुं ॥ ३४ ॥

हवे ए निमित्त प्राभाविक ऊपर श्रीभद्रबाहु स्वामीनो दृष्टांत कहीयें छैयें. आ भरतक्षेत्रे महाराष्ट्रदेशमां प्रतिष्ठानपुर नगरने विषे वाराहमिहिर अने भद्रबाहु ए नामें बे ब्राह्मण भाइउ रहेता हता,ते चौद विद्याना पारंगामी छे, एकदा प्रस्तावें विहार करतां श्रीयशोभद्रसूरि तिहां उद्यानने विषे आवी समोसर्या, तेमने राजा प्रमुख सर्व लोक वांदवा जाय छे, ते जोइ ए बे भाइ ब्राह्मण पण वांदवा गया. तिहां गुरुनी देशना सांभली भद्रबाहु वैराग्य पाम्यो, तेवारें वाराहमिहिरने कह्युं के, हुं तो दीक्षा लइश, वाराहमिहरें कह्युं हुं पण तहारी साथें दीक्षा लइश. परस्पर प्रेम छे, माटे बेहु भाइयें दीक्षा लीधी. बेहु भाइ गुरुपासें चौद पूर्व भण्या तेमां भद्रबाहु तो सुविहित चूडामणि थयो.

हवे जो पण वाराहमिहिर महोटो भाइ छे, तो पण तेने श्रीयशोभद्र

सूरियें आचार्यपदने अयोग्य जाणीने आचार्यपद आप्युं नहीं ॥ यतः ॥ वुढोगणहर सद्दो, ग्गाय सामाइहिं धीरपुरिसेहिं ॥ जो ततठवइ अपत्ते, जाणंतो सोइ महापावो ॥१॥ जे माटे आचार्यपद तो गणधरोयें धारण कर्युं ते जो अविनीत अयोग्यने आपे, तो आपनार पण अनंत संसारी थाय. एवुं जाणीने गुरुयें श्रीसंभूतिविजयजी तथा श्रीभद्रबाहुजी ए बेहुने परस्पर प्रीति जाणी तथा आचार्यपदने योग्य जाणी बेहुने पट्टधर कीधा. भद्रबाहुने आचार्यपद मळ्युं जोइने वाराहमिहिर अभिमान आणी पूर्वे जे बार वर्षपर्यंत चारित्र पाळ्युं हतुं ते कर्मोदयने वशें चारित्रथी भ्रष्ट थयो. ॥ यतः ॥ कछवि जीवो बलिउं, कछवि कम्माइ हुंति बलियाइं ॥ जीवस्सय कम्मस्सय, पूव्वनिबद्धाइं वेराइं ॥ १ ॥ हवे वाराहमिहिर कोपानलयुक्त थयो थको गछथी बाहेर नीकळीने गुरुनी उपर द्वेष धरवा लाग्यो, चौदे पूर्व भणेलो हतो माटे चंदपन्नत्ति, सूरपन्नति प्रमुख जैनशासनना ज्योतिष्य ग्रंथो जोइ ते उपरथी बीजा नवीन ज्योतिषनां वाराहीसहिंता प्रमुख ग्रंथो बनावी साधुनो वेष मूकीने ब्राह्मणनो वेष धारण करी लोकोनी आगल निमित्त कहीने तेनाथी आजीविका चलाववा लाग्यो, तेने लोक पूछे के एटलुं तमें क्यांथी भण्या? तेवारें लोकोनी आगल एवुं कहे के में एक दिवस नगरनी बारणे लग्न कुंभली मांभी, ते कुंभलीने भांग्या विना एमज पाछो चाली निकळ्यो. पछी जेवारें याद आव्युं, तेवारें भूसाडी नाखवा गयो अने तिहां जइने जोउं तो कुंभलीमां सिंहलग्ननो स्वामी सिंह तें पूछडुं वधारीने ऊपर ऊभो. छे पछी में लग्ननी भक्तिने लीधे महारी छाती कठिण करीने सिंहनी नीचें घुसीने लग्न भुंसाडी नाख्युं. महारी भक्ति जोइने सिंहनो अधिपति जे सूर्य ते तिहां आव्यो अने महारा उपर तुष्टमान थइने बोल्यो के, माग. माग. तेवारें में कह्युं, मुझने नक्षत्रादिकनो चार खरे खरो जेवो छे तेवो बतावो. पछी सूर्य पोताना ज्योतिषना मंडल चारमां मुझने लइ गयो. तिहां मने सर्व चार बताव्या, उदयास्तचक्र बताव्युं ते ज्योतिषना बलथी हुं त्रण कालनी वात जाणुं छुं. एवी कल्पित वातो कहीने लोकोमां पूजाय, राजा प्रमुखने निमित्त कहीने खुशी करे अने चमत्कार पमाडे. एम घणा लोकोने मिथ्यात्वी कर्या. एवा अवसरमां श्रीभद्रबाहु स्वामी पण ते नगरमां आव्या तेमने राजा प्रमुख सर्व लोक वांदवा

गया श्रावकोयें मह्योटा महोत्सव सहित गाममां प्रवेश कराव्यो, पण वा राह मिहिरथी ते सहन थयुं नहीं, तेवारें विचार्युं जे एनुं मान खंमित क रुं, तो सारी वात थाय. एवुं चिंतवी एक दिवस राजसभामां जइने राजाने कहेवा लाग्यो के, आजथी पांचमे दिवसें पूर्व दिशाथी वर्षाद आ वशे, ते त्रीजे पहोरे वरसशे. आ हुं कुंमालुं करुं बुं, तेना वच्चमां बावन पलनुं माछलुं पडशे. एवुं निमित्त कह्युं ते वात श्रावकोयें आवीने भद्रबा हु स्वामी आगल कही, के हे स्वामी! आ वाराहमिहिरें कहेली वात सत्य छे किं वा असत्य छे? तेवारें भद्रबाहु बोल्या, कांइक सत्य छे अने कांइक असत्य छे, केम के पूर्व दिशाथी नहीं पण ईशान कोणेथी आवशे, ते छ घडी दिवस पाछलो रहेशे तेवारें पडशे, पण त्रीजो पहोर कह्यो ते जूगे कह्यो छे. वली बावन पलनो नहीं परंतु वायुथी सुकाइ जाशे माटे साडी एकावन पलनो मत्स्य रहेशे, तथा कुंमालानां मध्यभागमां नहीं पडे पण कुंमालानी कोर उपर एक बाजुयें पडशे, माटे ते वाराहमिहिर मिथ्यात्व ना योगथी आटलुं जुतुं बोले छे. ए वात पण श्रावकोयें राजाने कही. राजा बोल्यो. साच जूठनी खबर हवे तरत पांच दिवसमां जणाइ आवशे. एटलामां पांचमो दिवस आव्यो तेवारें वर्षाद वरश्यो अने श्रीभद्रबाहु स्वामीना कहेवा प्रमाणें सर्व वात सत्य थइ, तेवारें राजा प्रमुख सर्व लो कोयें श्रीभद्रबाहु स्वामीनुं ज्ञान वखाण्युं. अने वाराहमिहिरनी कांइ सा ची कांइ जुठी वात पडी गइ तेथी तेनी मानता कमती थवा लागी. वली एक दिवस राजाने घेर पुत्रजन्म थयो तेनी वाराहमिहिरे जन्मपत्रिका ब नावीने एकशो वर्षनुं आयुष्य वर्त्ति काहाड्युं, त्यारें सर्व लोक अक्षत लइ ने राजाने वधाववा आव्या. अन्यदर्शनी योगी, संन्यासी, प्रमुख सर्व आ शीर्वाद आपवाने आव्या, परंतु एक श्रीभद्रबाहु गया नहीं, तेवारें वारा हमिहिर राजाने कहेवा लाग्यो के, हे राजन्! तमारे घेर पुत्रजन्म थयो, ते भद्रबाहुने रुच्यो नहीं, तेथी आंही आशीर्वाद आपवा आव्यो नहीं, माटे ए श्वेतांबरनें दंमवो जोइयें. ए वात पण श्रावकोयें जइ श्रीभद्रबाहु स्वा मीने कही. तेवारें भद्रबाहु बोल्या वारंवार केम जवाय? एक वार जइशुं; श्रावक बोल्या क्यारें जाशो? गुरु बोल्या आठमे दिवसे रात्रिने वखतें बिल्लाडी

ना योगथी पुत्र मरण पामशे,तेवारें मुख देखाडी आवद्युं. ए वात श्रावकोयें
जइ राजाने कही, राजायें सर्व बिल्लाडीयोने आखा गाममांथी बाहेर का
हाडी मूकावी, तथा बिल्लाडी कोइना घरमां अथवा गाममां न आवी श
के, तेना शेंकडो गमे जाबता कस्या. परंतु आठमे दिवसे दैवयोगें दासीना
हाथथी कमाडनी गंसणी बालकना माथा उपर आवी पडी तेथी बालक
मरण पाम्यो. धावीयें जइ वाराहमिहिरने कह्युं, वाराहमिहिर मूर्छा खाइ ध
रतीयें पड्यो, वली सावधान थयो थको रोवा लाग्यो. अनुक्रमें राजायें
वात सांजली तेथी गुरुने ज्ञाने चमत्कार पाम्यो. तेवारें वाराहमिहिर बो
ल्यो, बिल्लाडीथी तो मरण पाम्यो नही ? पढी गुरुयें गंसणीनी उपर बि
ल्लाडीना मुखनो आकार लाकडामां करेलो हतो ते देखाड्यो 'राजायें कह्युं
श्वेतांबरनां वचन खोटां न थाय, पढी गुरुने पूढता हवा के एकज लग्नमां
एटलो फेर केम पड्यो ? गुरुयें कह्युं अमें बेहु श्रीयशोजद्रसूरिना शिष्य
ढैयें, पण ए गुरुप्रत्यनीक थइ चारित्र मूकी गलामां जनोइ पहेरी ज्रष्ट
थयो ढे,माटें एनुं वचन मलतुं नथी. पढी राजानुं चित्त तेना उपरथी उतरी
गयुं तेथी वाराहमिहिर लज्जा पाम्यो, माटे तिहांथी निकली अन्यत्र स्था
नकें जइ तापसी दीक्षा लइ. अज्ञानकष्टथी जैन उपर द्वेष चिंतवतो मरण
पामीने व्यंतर देवता थयो. तेणे आवी श्रीसंघमां मरकीना रोगनो उपद्
व कस्यो, तेथी घणां लोक मरवा लाग्यां, तेवारें श्रावकोनो उपद्रव टालवा
नेमाटे महामहिमावंत एवुं " उवसग्गहर " नामें स्तोत्र गुरुयें बनाव्युं. तेनुं
घरघरनेविषे गणणुं सरु थयुं तेथी सर्व उपद्रव दूर थइ गयो. पढी सर्व
श्रावकोना घरमां जो थोडुं शुं काम होय तो पण ते उवसग्गहरनो पाठ
करे, के ते काम पार पडी जाय, एम करतां करतां ढेवट लोकोमां एवी
चाल पडी गइ के जो गाय दूध न आपे, तो पण उवसग्गहर स्तोत्र गुणे,
तेवारें गाय पण दूध आपती थाय. एमज वली कोइक ढाणा वीणवा गइ
ते एकली हती तेनी ढाणानी पोटली उपाडी आपवाने कोइ बीजो माणस
ते वखत तिहां हाजर हतो नहीं तेवारें तेणें पण त्यां उवसग्गहरनो पाठ
कस्यो, तेथी नागें पोते आवीने जारी उपाडी तेना माथा उपर राखी दीधी.
एमज एक स्त्री रोटला करवा बेठी हती,तेनो ढोकरो फाडे गयो,ते रोवालाग्यो
तेणे जाण्युं जे रोटलो बली जाशे, त्यारे उवसग्गहरनो पाठ कस्यो के तर

त नागराजा आवीनें कहेवा लाग्यो जे, शुं काम छे ? स्त्रीये कह्युं छोकरो रडे छे. तेने राखो. तेवारें ते छोकराने शौच करावी रोतो रखाव्यो. एवुं प्रायें सांजलीये छैयें. एवी रीतें नीच कामो लोको कराववा लाग्या, तेवारें नागराज खीज्यो अने गुरुपासें आवी विनति करी के, हे महाराज ! संघथी हुं एक क्षणमात्र पण अलगो रही शकतो नथी,लोको तो पूर्वोक्त हलकां हलकां काम ते पण माहरी पासें करावे छे, तेवारें गुरुयें जाण्युं जे ए निर्भाग्य लोको देवने खीजावशे तो उलटो अनर्थ थइ पडशे, माटे आ स्तोत्र जंमारी मूकवुं युक्त छे. तेमने नागेंद्रें कह्युं, हे स्वामीनाथ ! आप छठी गाथा जंमारी मूको अने शेष पांच गाथाथीज हुं महारे स्थानकें बेगो थको सर्व उपद्रव टालीश. एवुं सांजलीने गुरुयें छठी गाथा जंमारी मूकी. एम संघने उपगार कीधो, श्रीजिन शासननी उन्नति थइ. वली श्रीजद्रबाहु स्वामीना करेला श्रीआचारांग, सूयगडांग, आवश्यक, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, दशाकल्प, व्यवहार, सूरपन्नति, रुषिजाषित ए दशनी निर्युक्ति प्रमुख अनेक ग्रंथ हालमां विद्यमान छे. ए श्रीजद्रबाहुस्वामी श्रीमाहावीर स्वामीथी एकसो सित्तेर वर्षे अनशन आराधी देवलोकें गयां. ए चोथा नैमित्तिक प्राजाविकनें विषे श्रीजद्रबाहुस्वामीनी कथा कही ॥

हवे पांचमो तपस्वी प्राजाविक तथा छठो सिद्ध प्राजाविक कहे छे.

॥ जिणमय मुप्नासंतो, विगिठ्ठे रकमणेहिं जस्सुइ तवस्सी ॥ सिद्ध बहू विझमंतो, विज्ञावंतो य उचियथणं ॥ ३५ ॥ अर्थः—विकृष्ट तप जे मासखमण, पासखमण, अठाइ प्रमुख तप करतो थको श्री (जिणमयं के०) जिनमतप्रत्यें जिनशासनप्रत्यें (उप्नासंतो के०) दीपावतो थको (विगिठेरकमणेहिं के०) विग्रंथ अने साधु होय तेने (तवस्सी के०) तपस्वी प्राजाविक (जस्सुइ के०) कह्यो छे. ॥ यतः ॥ एगोगु होइ हरिणो, बीउ दिठिविसस्स सप्पस्स ॥ तइउय कूव फलगे, कोसघरे थूल जद्दमुणि ॥ १ ॥

माटे जे तप करवुं ते निर्मायपणें करवुं, ए प्रकारें जे तप करे, ते तप परत्र हितकारी थाय. यतः ॥ दसहिं गसेहिं संपन्ने अणगारे आगमेसि जद्दत्ताए कम्मं पक्करेंति तं जहा ॥ अणिदाणयाए, दिठिसंपयाए,जोगवाहियाए, खंतिखमणिइं जिइंदियत्ताए, अमाइल्लयाए, अप्पसल्लयाए, संसा मस्सयाए, पवयणवछलयाए पवयण उप्नावणयाएत्ति ॥ इति श्रीगणांगे ॥

अन्यथा अज्ञान तप तो जीवें घणायें कर्यां, पण श्रीजिनशासनो सार जे दया तेने जाणी नहीं, तो सर्व तप वृथा जाणवां. कायक्लेशरूप जाणवां. जो मायायें तप करे, तो स्त्रीवेद पामी स्त्रीना कामभोग पामे, पण तेनुं फल आगल स्त्री रत्ननी परें दुर्गतिनुं जाणवुं. तेमाटे केवल कर्मनिर्ज्जरा हेतुयें तपस्या करे, प्रस्तावें तपोलब्धियें करी श्रीजिनशासननां कार्य करे, ते तपस्वी नामें पांचमो प्रभाविक जाणवो.

हवे एनी ऊपर विष्णु कुमारनो संबंध कहीयें छैयेंः—एज भरतक्षेत्रें हस्तीनागपुरें, पद्मोत्तरनामें राजा तेनें ज्वाला नामें स्त्री छे, तेणे एकदा प्रस्तावे सिंह स्वप्नमां दीठो, तेने प्रभावें विष्णुकुमर जन्म्या. अन्यदा वली ते ज्वालामुखीयें चौदस्वप्न दीठां, तेने प्रभावें माहापद्मनामें नवमो चक्रवर्त्ती लघुपुत्र जन्म्यो, विष्णुकुमार तो धुरथकीज निःस्पृही वैराग्यवान् हतो, माटे तेणें युवराज पदवी लीधी नहीं. तेवारें तेना पितायें महापद्मने युवराज पदवी आपी. हवे ते समये उज्जयिणी नगरीनो नरवर्मनामे राजा छे, तेनो मिथ्यात्ववासित नमुचि एवे नामें मंत्रीश्वर छे. एकदा श्रीमुनिसुव्रत स्वामीना शिष्य श्रीसुव्रत नामें आचार्य ते अयवंति नगरीना उद्यानने विषे आव्या, तेमने लोक वांदवा जाता देखीने राजा नमुचि प्रधानने कहे छे, के चालो आपणे पण आचार्यने वांदवा जइयें, तेवारें मंत्रीयें कह्युं के, हुं एनी सार्थे वाद करीश, तेने राजायें पण भद्रकभावें कह्युं तहारे वाद करवो होय तो सुखें वाद करजे.

पछी नरवर्मराजा नमुचिसहित जइने गुरुने वांदी बेठा, तिहां नमुचि प्रधान मदमत्त थइने आचार्य सार्थे वाद करवा लाग्यो. तेने असमंजस बोलतो जाणीने आचार्यना शिष्य बोल्या, अरे दुष्ट ! तुं आचार्यनी सार्थे शुं बोले छे ? हुंज तुजने जवाब आपुं, तेटलो बस छे. पछी ते शिष्यें प्रमाण शास्त्रनी चर्चायें नमुचिने निरुत्तर कर्यो. ते मंत्रें खील्यो सर्प जेम हालीचाली शके नहीं, तेम शिष्यनी युक्तिथी बंधायो थको नमुचि कांइ पण बोली शक्यो नहीं. मानभ्रष्ट थयो थको तिहांथी उठी गयो. पछी द्वेष धरतो थको तरवार हाथमां लइने रात्रिने समयें यतिने मारवा माटें तिहां गयो, तेने शासनदेवतायें थंभी राख्यो. हाली चाली शके नहीं, प्रभातें तेने थंभ्यो देखीने लोक सर्व चमत्कार पाम्यां. आचार्ये

करुणा आणीने शासनदेवी पासेंथी मूकाव्यो. राजायें ते वात सांभली प्रधानने दुष्ट जाणी देशबाहेर काढी मूक्यो. नमुचि तिहांथी निकल्यो थको हस्तीनागपुरें गयो, तिहां कलाना योगें महापद्म कुमारनो प्रधान थयो.

हवे तिहां कोइक सिंहबल नामें फटाइयो राजा छे ते धाड लइ महापद्मकुमारना गामोमां लूंट फाट करे छे. गाम भांजे छे, मार्गमां पंथीजनोने लूंटे छे, तेवारें महापद्में कह्युं के, कोइ सिंहबलराजाने बांधी लावे, एवो छे? नमुचियें तेने जीतवा बीडुं लीधुं अने राजानुं कटक लइ सिंहबलसाथें युद्ध करवा गयो, तिहां युद्ध करी सिंहबलने बांधी लावीने महापद्मने आवी सोंप्यो. तेवारें महापद्म प्रसन्न थइ कहेवा लाग्यो के वर माग! नमुचियें कह्युं के, हाल भंडारे राखो. जेवारे काम पडशे, तेवारें हुं मागी लइश. एवुं कहीने नमुचि पोताने घेर गयो.

हवे एकदा महापद्मनी माता ज्वालायें श्रीअरिहंतनो रथ फेरववा तैयार कीधो छे,अने तेनी शोक्य लक्ष्मी नामें छे,ते मिथ्यामतिवाली छे,माटें तेणें ब्रह्मानो रथ फेरववा माटे तैयार कीधो छे, तिहां ज्वालायें कह्युं, प्रथम महारो रथ नगरमां निकलशे अने लक्ष्मीयें कह्युं प्रथम महारो रथ नगरमां फरवा निकलशे, एम बे शोक्योने मांहोमांहे क्लेश थवा लाग्यो तेथी पद्मोत्तरराजायें क्लेश मटाडवा सारु बेहु रथ फेरववामाटे मनाइ करी. तेवारें महापद्मकुमर पोतानी मातानो मनोरथ भंग थयो देखीने देशांतर भणी चाली निकल्यो, ते कुमर भाग्यवंत छे माटें ज्यां जाय त्यां तेनी अनेक राजा सेवा करे, तेणें अनेक राज्य कुमरीयोनां पाणिग्रहण कर्यां. अनुक्रमें पितानी वृद्धावस्था जाणी पाछो हस्तिनागपुर भणी आव्यो. तेने पितायें राज्य आपी पोतें सुव्रताचार्य पासेंथी दीक्षा लीधी. तेनी साथेंज विष्णुकुमारें पण दीक्षा लीधी.

पाछल महापद्म चक्ररत्न पामी भरतक्षेत्रनी छ खंम पृथ्वी साधीने हस्तिनागपुरें आव्यो. सर्व राजायें मली बार वर्षपर्यंत राज्याभिषेकनो महोत्सव कीधो. पछी महापद्मचक्रवर्त्तियें लक्ष्मी जे पोतानी मातानी शोक्य छे, तेनो रथ रोकीने पोतानी माता ज्वालायें तैयार करेलो श्रीअरिहंतनो रथ नगरमांहे फेरव्यो. श्रीजिनशासननी प्रभावना करी, गाम गाम श्रीजिनप्रासाद कराव्यां.

हवे पद्मोत्तर साधु इंद्रियजय करी नाना प्रकारनां तप करी केवलज्ञान पामी मोक्षें पहोता. अने विष्णुकुमर मासखमण पक्षखमणादिक घणां प्रकारना तप करता थका वैक्रियादिक समस्त लब्धिउ पाम्या, मेरुपर्वत उपर जइने तपस्या करता थका काउस्सग्ग ध्याने रहे छे.

एकदा सुव्रताचार्य, श्रीहस्तिनागपुरें आवी चोमासुं रह्या छे, तिहां महापद्मचक्रवर्त्तिपासें नमुचि प्रधान छे, ते जे करें, ते थाय. तेनो हालहुकम चाले छे, ते नमुचि पूर्वेलुं वैर स्मरण करी अधिकद्वेष आचार्यनी उपर चिंतववा लाग्यो अने संधान जोइ चक्रवर्त्ती पासें जइ पूर्वेला भंमारें मूकेला वरदानने बदले सात दिवसपर्यंत राज मागी लीधुं. कोइक आचार्य वली एवुं कहे छे के छ महीना सुधी नमुचियें राज्य मागी लीधुं छे. चक्रवर्त्ती तो नमुचिनुं कूडकपट कांइ जाणतो नथी, तेथी वरदानने बदले राज्य आप्युं. नमुचि राजगादीयें बेठो अने चक्रवर्त्ती पोताना महेलमांहे रह्यो.

तिहां नमुचियें यज्ञ मंमाव्यो. तेवारें सर्व पाखंमीदर्शनीउ तेने आशीर्वाद देवा आवें, दान लेवा आवे, अने जैनना यतितो सर्व निःस्पृही छे, माटे कोइ दान लेवा आव्या नहीं. ते छल पामीने नमुचियें सुव्रताचार्यने तेडावीने कह्युं के हुं राजें बेठो छुं, यज्ञ कीधो छे. तिहां मने सर्व मलवा आव्या,अने तमें मलवा आव्या नहीं माटे जाउ इहांथी महारा देशमां तमारे रहेवुं नहीं. तेने गुरु घणां मिष्ट वचनें करी समजावता हवा,पण कोइ रीतें समजे नहीं. अने कह्युं के सातदिवसनो अवधि आपुं छुं. एटलामां जो नहीं जाशो अने आठमे दिवसें हुं तमोने देखीश तो मारी नाखीश.

आचार्य पोताने स्थानकें आवी सर्व यतियोने पूछवा लाग्या जे आपणामां कोण शक्तिवंत साधु छे? जे ए नमुचिने समजावे. यतियोयें कह्युं विष्णुकुमार एने समजावशे. गुरुयें कह्युं विष्णुकुमारने मेरु उपरथी तेडी आवे, एवो कोइ यति शक्तिमान् छे, तेवारें एक यतियें कह्युं के, महारामां मेरुपर्वतें जवानी शक्तितो छे पण पाछुं आववानी शक्ति नथी. गुरुयें कह्युं विष्णुकुमार तुजने तेडी आवशे, ते सांभली यति गुरुनी आज्ञा लइ लब्धि साधन करी मेरुपर्वतें विष्णुकुमरपासें जइ वांदीने सर्व समाचार संभलाव्या, तेवारें विष्णुकुमार पण ते मुनिनी साथे तेडी गुरुनी पासें आव्या, गुरुने वंदना करी पूछ्युं. महाराज जे कार्य करवानुं होय ते कहो. गुरुयें कह्युं

जिनशासननुं कार्य करवाथी महोटो लान्न ले, माटे नमुचिने समजावो.

विष्णुकुमार पण नमुचिनी राजसन्नाये जइ घणे मीठे वचने तेने सम जावता हवा, पण शीलानी पेरें ते डुष्ट समजे नहीं.

विष्णुकुमारें कह्युं नरतक्षेत्रमां तो तहारुं सर्वत्र राज्य ले, माटे ते मूकीने ए साधुउ क्यां जाय? तेने नमुचियें कह्युं त्रण पगलां नूमि आपुं बुं. पण तेनी बाहिर कोइ यतिने देखीश तो मारी नाखीश. ते वचन सांनली विष्णुकुमार कोपायमान थयो थको लब्धिने बले लक्ष योजननुं रूप करी बे पगें करी सर्व पृथ्वी रोकी मूकी अने कह्युं के,अरे नमुचि! हवे त्रीजो पग हुं किहां मूकुं? एम कही नमुचिना मस्तक उपर मुक्युं ते नमुचिविष्णुकुमरना पगथी आक्रम्यो थको काल करीने नरकने विषे गयो ते रूप करवाथी सर्व पृथ्वी आक्रमी,पर्वत चलाचल थया, इंद्रमहाराजें मेरुसमानरूप देखी न्र यन्नांत थइ अवधिज्ञान प्रयुंजी सर्ववृत्तांत जाण्युं. पढी समाधान करवा माटे गंधर्व देवांगना मोकली तेणें आवी वीणानादे मधुरस्वरें गीतगान करी विनति कीधी के स्वामी! प्रसन्न थाउ कोप मूको. सुव्रताचार्यें पण आवीने कह्युं हवे कोप मूको. नमुचि जिनशासननो अपराधी हतो, तेने शिक्षा दीधी. हवे रूप संकोच करो वली महापद्मचक्रवर्त्ती पण आवीने पगें लाग्यो अने कहेवा लाग्यो जे में अयोग्यने राज्य आप्युं, मांजारीने दूध सोप्युं ते विणज्ञें पण सुधरे नहीं तद्रूप महारो अपराध खमो. तेवारें विष्णुकुमारें वैक्रियरूप संहरीने पोतानुं सहज रूप आदर्युं. महापद्मने उलंनो देइ कह्युं के तें जिनशासनना द्वेषीने सर्वस्व स्वाधीन करीने तुं पोतें महेलमां जइ बेसी रह्यो, यतियोनी कांइ पण खबर लीधी नहीं, एटले तहारो वांक ले माटे उलंनो देउं बुं. चक्रवर्त्तीयें कह्युं महारो गुनो बक्षो. आज पढी कदापि एवो गुनो करुं नहीं. ए रीतें तेने उपशांत करी पगे लागी चक्रवर्त्ती पोताने घेर गयो. सुव्रताचार्य साथें विष्णुकुमार उपाश्रयें आवी गुरुपासेंथी आलोयणा लइ पडिक्कमीने स्फाटिकनी पेरे निर्मल थयो ॥ यतः ॥

आयरिय गढंमि य,कुल गण संघेय चेइय विणासे ॥ आलोइ य पडिक्कंतो, सुद्धो जं निज्जराविउला ॥ १ ॥

तिहां विष्णुकुमार त्रिविक्रम एवुं नाम पाम्यो. घणा वर्ष लगण शुद्ध दीक्षा पाली तपश्चरणे करी जिनप्रवचन दीपावी केवलज्ञान उपार्जी मो

द्धें गयो. ए रीतें तपस्वी प्राजाविकने विषे विष्णु कुमारनो वृत्तांत कह्यो.
हवे ठठो विद्याप्राजाविक कहे ठेः—

(सिद्धिबहुविद्यमंतो के०) सिद्धि पामी ठे घणी विद्याउ जेहने एटले प्रज्ञप्त्यादिक शोल विद्याउ तथा सिद्धि पाम्या ठे घणा मंत्र एटले सूरिमंत्रादिक जेहने एवो जे होय ते (विद्यावंतोय के०) विद्यावंत प्राजाविक मांहे जले तिहां जेमां स्त्री देव अधिष्ठायक होय ते विद्या कहीयें अने पुरुष देव अधिष्ठायिक होय ते मंत्र कहीयें तथा (उचियणो के०) उचितनो जाण जोइयें. जो एविद्यामंत्रने जो जिनशासनदीपाववा अर्थें फोरवे तो आराधक थाय अने तेनेज यथातथा फोरवे तो विराधक थाय ॥ यतः ॥ विद्यंमंतं जोगं, तेगिछं कुणई जूई कम्मं च ॥ अरकरनिमित्तजिंवी, आरंज परिग्गहे रमइ ॥ १ ॥ इतिउपदेशमालायां ॥ ३५ ॥

एनी उपर आर्य खपटाचार्यनो दृष्टांत कहे ठे. श्रीवर्द्धमान स्वामीना शासनने विषे विद्यामंत्र बलवंत आर्य खपटाचार्य ठे. एकदा प्रस्तावें विहार करतां जृगुकछें पधाख्या. तिहां बौद्धमत वासित बलमित्र राजा ठे माटे तिहां बौद्धाचार्य प्रतिदिन जैननी निंदामय वखाण करे एवो ठे तेथी जृगुकछना संघें मलीने गुरुने विनति करी के अमे बौद्धनी आगलें महोटुं कष्ट सहन करता रहीयें ठैयें ! ए नित्य प्रत्यें जैननी निंदा करे ठे माटे एनी सायें वाद करीने एनुं मुखजंग करो तो रुडुं थाय ॥ यतः ॥ कंटकानां द्विजिह्वानां, द्विविधैव प्रतिक्रिया ॥ उपानमुखजंगोवा, दूरतोवापसर्प्पणं ॥ १ ॥ ते सांजली आचार्य बोल्या, अमें क्लेश वाद करीयें नहीं. ते वखत आचार्यनो जाणेज जुवन नामें ठे,ते वादविवादमां शूरवीर ठे, माटे ते जइने बौद्धोनी सायें वाद करे अने बौद्धने हरावे तेथी बौद्ध नासता फरे.

ते वात सांजलीने अन्यगामथी कोइक वृद्धकर नामें बौद्धनो आचार्य आव्यो तेणे प्रथम तो जुवनसाधुनी सायें राजासमक्ष वाद करवा मांम्यो, तिहां बौद्ध हाख्या अने जुवन जीत्यो, तेवारें वृद्धकर बौद्धाचार्यें विचाखुं जे ए जैनाचार्यना शिष्यथी हुं हाख्यो तो हवे महोढुं शुं देखाडुं ? तेथी तेणे अनशन लइ जैनना साधु उपरें प्रद्वेष वहेतां थकां काल कीधो, ते मरीने कोइएक नगरना उद्याननें विषे यक्ष थयो. ते यक्ष जैनना श्रावकोने मारी प्रमुखना रोग उपजावी,उपद्रव करी संतापवा लाग्यो श्रावकोयें आ

वीने आचार्यने कह्युं त्यारें खपटाचार्यतेय क्षना चैत्यने विषे जइनें जुना खा सडां ते यक्षने काने वलगाड्यां. पछी तेनी पलोंठी ऊपर पग मूकी समस्त अवयव ढांकीने सूइ रह्या घोरनिद्रा घोराववा लाग्या.

एवामां ते देराशरनो पूजारो आव्यो. तेणे आचार्यने घणुंए जोर करी जगाडवा मांम्यो, पण आचार्य जाग्या नहीं तेवारें पूजारे जइने राजानी आगल पोकार कस्यो. राजा पोतें तिहां आव्यो अने पोते आचार्यनुं वस्त्र दूर करे तो ते वस्त्र बमणु महोटुं थाय तेवारें ताजणाना प्रहार देवा मांम्या. ते प्रहार राजाना अंतःपुरमां जइ लाग्या अंतःपुरमां सोर बकोर थइ रह्यो. ते जोइ राजायें विचाख्युं जे ए कोइ सामान्य पुरुष नथी एम जाणी राजा आवी पगे लाग्यो अने कहेवा लाग्यो के,स्वामी प्रसन्न थाउ. महारो अपरा ध माफ करो. तेवारें आचार्य तिहांथी उठ्या अने राजाने धर्मलाभ आपी जवा लाग्या यक्षने कहेवा लाग्या के अरे यक्ष उठ महारी साथें चाल ते सांभली यक्ष पण आचार्यनी साथें चाल्यो तिहां चैत्यनी आगल महोटी बे शिला पडी हती ते पण यक्षनी पछवाडे चाली ते चमत्कार राजा प्रमुख सर्व लोकें दीठो पछी राजा आचार्यने पगें पडीने कहेवा लाग्यो के,स्वामी सि लाथी यक्ष घसायछे एने दुःख थाय छे माटे कृपाकरीने मूको तेवारें खपटाचार्य बोल्या एणे अमारा संघने घणो संताप्यो छे.राजायें कह्युं हवे नहीं संतापे एवी राजानी विनति सांभली यक्षने मूक्यो यक्ष जइ पोताने स्थानकें बेठो,शिला पण स्थिर थइ. राजायें महोटा महोत्सवसहित गुरुने नगरमां प्रवेश क राव्यो गुरुनी देशना सांभली राजा प्रतिबोध पाम्यो. गुरुयें विहार कस्यो.

एकदा प्रस्तावें भृगुकछथी श्रीसंघना मोकलेला बे यति आवीने गुरुने वि नति करवालाग्या के, स्वामी ! कोइक दुर्विनीत शिष्य छे तेणे द्रव्यानुयोगम य आगमनां पानां भंमारमांहेथी काढीने वांच्या तें मांहेथी आकृष्टी विद्या काढी तेने साधीने तेना बले विविध प्रकारनां पकवान्नफलादिक अणावीने खावा मांम्यां तेने गीतार्थें वास्यां थकां तेमनी साथें वढवाड करीने बौद्धम तनेविषे जइ बौद्धनी साथें मल्या ते बौधना पात्र आकाशें मोकली वलता भरी ने मगावे. बौधनें सूखडी प्रमुख यथा वांछित खवरावे छे. ते चमत्कार देखीनें घणां लोक बौद्ध दर्शनी थायछे तेमाटे अमोने श्रीसंघे मली आपनी पासेंमो कल्या छे ते वचन सांभलीने ते यतियुगलनी साथें आचार्य भृगुकछें पधास्या.

तिहां विद्याने बलें करी आचार्यें ते शिष्यनां पात्रां विविध प्रकारनी सु भद्र भद्रिकायें भर्यां, आकाशमार्गेथी आवता हता तेने आवतांज आ काशथकी आकर्षी शिलातलने विषे आस्फाल्या थका भांगीने कटके कट टका थइ भूमिनें विषे पड्या ते देखीने पहेलो कुशिष्य तथा दुष्ट बौद्धो ते सर्व जेम वायराथी आक नाश पामे तेम नाशिगया.

पछी आर्यखपटचार्य बौद्धना चैत्यने विषे गया तिहां बौधोयें कह्युं के प्रतिमाने नमस्कार करो आचार्य क्रोधें भर्या थका बोल्या के अरे बौद्धो तमें सत्वर उठीने म्हारे पगें लागो. एवुं कहेतां वारज बौद्धदेव बौद्धिस त्वनी प्रतिमा आवी गुरुने पगें लागी ते केटलाएक दिवसपर्यंत तेमज गुरुना पगमां लागी रही एवो चमत्कार देखीने घणा बौद्धलोक प्रतिबोध पाम्या. केटलाएक दिवस तिहां रहीने गुरुयें अन्यत्र विहार कर्यो.

हवे पाडलीपुर नगरने विषे वाहड नामें राजा ते केवल विप्रभक्त छे ते राजा सर्व दर्शनीउने तेडीने कहे के तमें विप्रने पगे लागो तो म्हारा न गरमांहे रहो नहींकां नगर मूकी चालता थाउ एवा राजाना आदे शथी सर्व दर्शनी विप्रने पगे लागीने तिहां रह्या. परंतु जैनना साधुउ यें सात दिवसनी अवधि मागी ते राजायें पण आपी पछी उपाश्रयें आवी विचार करवा लाग्या के हमणा आपणामां जैनशासननो प्राभाविक थाय एवो कोण छे?

तेवारें एक शिष्य बोल्यो जे खपटाचार्यना शिष्य महेंद्र उपाध्याय हाल आपणा देशमां पधार्या छे, ते प्राभाविक छे ते सांभलीने श्रीसंघे ते मने तेडवामाटे बे यति मोकल्या. यतियें तिहां जइ सर्व वार्त्ता कही सं भलावी तेवारें महेंद्र उपाध्याय पण ते यतियुगलनी साथें पाडलीपुरें आव्या तिहां आहार करी स्वस्थ थइ घणा यतियोने परिवारें परवर्या थ का करवीर वृक्षनी लांबी बे काम हाथमां राखी राजद्वारें गया राजा प ण सिंहासने आवीने बेठा. राजानी बेहु बाजुयें पलोंठी वाली हस्त कर्णे ललाट प्रमुख अंगनेविषे लांबां लांबां टीलां काढीने ब्राह्मणोनी पंक्तियो बेठी छे, उपाध्यायने राजायें कह्युं के ब्राह्मणोने नमस्कार करो. उपाध्यायें क ह्युं, कइ पंक्तिना ब्राह्मणोने नमस्कार करीयें? राजायें कह्युं, ब्राह्मण सर्व पूजनीयज छे माटे बेहु पंक्तिना ब्राह्मणोने पगें लागो. तेवारें महेंद्र उपा

ध्यायें बेहु कांब ब्राह्मणनी बेहु पंक्तियें फेरवी तेथी विप्रोनां मस्तको द डानी पेठें आगले जइ पड्यां. ते देखी राजा प्रमुख सर्वलोक त्रास पाम्या; गाममां हाहाकार थइ रह्यो. राजा पोते सिंहासनथी ऊठीने उपाध्यायनें पगें लागो अने कह्युं के स्वामी,म्हारी भूल थइ ते माफ करो.

उपाध्यायें कह्युं, वली पण कहे के विप्रने पगें लागो. राजा बोल्यो महाराज म्हारो एकवार थयेलो अपराध खमो उपाध्यायें कह्युं तह्मारो अपराध माफ करुं छुं. पण हवे तुं विप्रनी वातमां पडीश नहीं,राजायें क ह्युं तमे दयालु छो माटे विप्रोने जीवितदान आपो एवामां अकाशवाणी थ इजे सर्व विप्रो दीक्षा लीये, तो जीवता रहे ते वात शेष विप्रोयें अंगीकार करी तेवारें उपाध्यायें तत्काल ते सर्व विप्रोनां मस्तक गला ऊपर मूकाव्यां ते मूकतावेंतज पोताने स्थानकें यथातथ्य बेसी गया ब्राह्मण सघला जीव ता रह्या. अने दीक्षा लीधी. राजायें पण श्रावकधर्म अंगिकार कस्यो.

ब्राह्मणोने दीक्षा देइ श्रीजिनशासनना प्रभाविक महेंद्र उपाध्याय भृगु कछें आव्या तिहां पोताना गुरुने वांदी बेठा. आर्यखपटाचार्यें श्रीमुनिसु व्रत स्वामीना चैत्यनी प्रतिष्ठा करी श्रीमहेंद्र उपाध्यायने आचार्य पदें स्था पी गछानुज्ञा दीधी. पोतें उत्तमार्थ साधीस्वर्गेंपहोता तेमने पाटें महेंद्राचार्य पण महाप्रभाविक थया. आम्रवृक्षनां फलपण आम्रज होय ए दृष्टांतें जा णवुं. ए विद्यामंत्रप्रभाविक ऊपर आर्यश्रीखपटाचार्यनुं चरित्र कह्युं ॥

हवें सातमा सिद्धप्रभाविक तथा आठमा कविप्रभाविकनुं स्वरूप कहे छे.

॥ संघाइ कज्जसाहग, चूसंजन जोग सिद्धउ सिद्धे ॥ भूअछ सछगाथी, जिण सासण जाणउ सुकई ॥ ३६ ॥ अर्थः-(संघाइ के०) संघ ते सा धु, साध्वी, श्रावक, अने श्राविका लक्षण जाणवो तथा आदि शब्द थकी जिनगृह, जिनबिंब, उपाश्रय, ज्ञानभंमार प्रमुख (कज्ज के०) कार्य लेवां ते कार्यना (साहग के०) साधक जे (चूसंजनजोग के०) चूर्ण तथा अं जन अने योग तेणें करीने जे (सिद्धउ के०) सिद्ध थयो तेने (सिद्धे के०) सिद्ध कहीयें. एटले एटला वानां जेनां करेला साचा थाय पण खो टा नथाय विघटे नहीं तेने सिद्ध कहीयें. हवे चूर्ण ते शुं कहीयें, तो के जे थकी सुवर्णसिद्धि, रजतसिद्धि थाय एवा चूर्ण होय छे जेम कालिकाचार्यें सोनानो इटवाह करी शाकराजानुं कटक सर्व संतोष्युं, ते चूर्ण जाणवुं.

हवे अंजननुं स्वरूप कहे छेः– आंखमां अंजन कस्याथका निधान देखी यें नूख्यो होयने राजा प्रमुखनी थालिमां बेसी जमे तोपण कोइ देखे न हीं वली बीजांपण एवा चिंतितकार्य करीयें. ते सर्व अंजन कहीयें.

तथा योग ते औषधिने योगें पादलेप करवाथी आकाशगामिनी गति आवे,तीर्थयात्रा करीयें तथा जे औषधिने योगें सौनाग्य पामीयें दौर्नाग्य पामीयें.एवा ए औषधादिकना योग कह्या छे. पण जे जाणकार होय ते मात्र संघादिकना कार्यने अर्थेंज फोरवे. ते गुरुनी तथा श्रीतीर्थंकरनी आज्ञायें फोरवे केमके श्रीजिनशासनने विषे सर्वक्रिया आज्ञा प्रधान छे ॥ यतः ॥ छठ्ठ मदसम, दूवालसेहिं मासद्ध मासखमणेहिं ॥ अकरितो गुरुवयणं, अणंत संसारिठ होइ ॥ १ ॥ इति पंचम प्रत्याख्यान पंचाशके ॥

हवे एनी उपर पादलिप्ताचार्यनो दृष्टांत कहे छेः– एहज नरतक्षेत्रने वि षे अयोध्यानगरीयें फलक नामें श्रेष्ठी धनाढ्य छे तेने पडिमा नामें स्त्री छे, तेणें पुत्र थवामाटे वैरुट्या देवीने आराधी देवीयें स्वप्नमां आवीने कह्युं के तुं श्रीनागहस्ति आचार्यनुं पगधोयण पीजे, तेथी तुजने घणा पुत्र थाशे ए वुं कहीने देवी अदृश्य थइ. प्रनातें पडिमा श्राविका पडिक्कमणुं करी, देव जुहारी, उपाश्रयें आवी एटले गुरुनो पगधोयण परठववाने वेयावच्ची साधु बाहेर निकल्यो छे तेने पडिमा श्राविकायें पूछ्युं आ शुं छे ? साधुयें कह्युं गुरु नुं पगधोयण छे, श्राविकायें कह्युं ए मुजने आपो महारे एनो खप छे ते धो यण साधुयें आप्युं घेर जइ श्राविकायें पीधुं ते पीकरीने पाछी उपाश्रयमां आवी गुरुने वांदी करी सर्ववृत्तांत कह्युं. तेवारें गुरुयें श्रुतोपयोग देइ कह्युं के हे श्राविका, तुजने जे पहेलो पुत्र थाशे तेने छोडीने तुं यमुनाना तटउपर दशवर्षपर्यंत वास करजे,तो ए पुत्र जीवशे अन्यथा पहेलोपुत्र जीवशे नहीं.

ते सांनली श्राविकायें कह्युं एटलुं महाराथी बनशे नहीं. माटें प्रथम पुत्र जे थाशे, ते हुं तमोने आपीश गुरुयें कह्युं एम करीश तो चिरंजीवी थाशे. एवी वात अंगीकार करी ते श्राविका घेर आवीने फलकशेठनी आ गल सर्ववात कही, तेणेपण ते वात अंगीकार करी पछी ते श्राविकाने ते हिज रात्रीयें नागलोकथकी चवी रत्नमयनागदर्शन स्वप्न सूचित देवता ग र्नपणे आवी ऊपनो. स्त्रीयें स्वप्ननुं वृत्तांत शेठने प्रनातें आवी कह्युं शेठ बोल्या तुजने उत्तम पुत्र थाशे. अनुक्रमे सातमे महिने ते स्त्रीने एवो दो

होलो उपनो जे हुं उद्याननेविषे जइ दान आपुं, तेवात शेठ आगल क
ही शेठें उद्याननेविषे दान देवरावी दोहोलो पूर्ण कस्यो.

हवे दिवस पूर्ण थये थके पुत्रनो जन्म थयो,शेठें जन्ममहोत्सव कीधो रत्नमय नाग स्वप्नमां दीठो तेमाटे तेनु नाम पण नागेंद्र दीधुं पछी ते पुत्र लइ गाजते वाजते उपाश्रयें आवी गुरुने अर्पण कस्यो. तेने गुरुयें कह्युं, अ मारो थको आठ वर्ष लगण तमें पालण पोषण करो, पछी अमे दीक्षा देशुं एवुं गुरुनु बोलवुं सांजली ते पुत्रने घेर लइ आव्या ते अनुक्रमें वधतो आठ वर्षनो थयो, तेवारें तेनें महामहोत्सवे गुरुयें दीक्षा दीधी. पडिमा श्राविकाने बीजा पण राजहंस सरखा घणा पुत्र थया ते कुलना आधार नूत थया अने प्रथम पुत्र गछनो आधरनूत थयो.

हवे ते न्हानो चेलो पासेना घरथकी आछण वहोरी आव्यो तेने गुरु यें पूछ्युं चेला तुं आलोइ जाणे छे चेलायें कह्युं हा महाराज तमारा प्र सादें हुं जाणुं छुं. गुरुयें कह्युं केवी रीतें आलोइयें? चेलो बोल्यो ॥ अंबतंब छीए, अपुप्फिअं पुप्फदंतपंतीए ॥ नवसालीकं जीयं, नववहूइ कुडएण म हदिन्नं ॥ १ ॥ ए आर्यामां शृंगार पोषण कस्यो माटे गुरु खीज्या थका बोल्या हे "पलीत!" तेवारें चेलायें कह्युं एक मात्रा अधिक आपो एम तेनी चतुराइयें गुरु संतोषवंता थयाथका "फापलित्त" एवो नाम देता हवा.

हवे ते शिष्य पोतानी प्रज्ञाने बलें करी जे कांइ सांजले ते सर्व जाणे ए ना मुखपाठेंज छें एम बहुश्रुत थयो जाणीने गुरुयें तेनें सूरिपद दीधुं गछा नुज्ञा दाधी. पछी ते शिष्य सर्वत्र स्वदर्शन, परदर्शनमां जाणीतो थयो गुरु यें तेने योग्यजाणीने पादलेप विद्या आपी जेनाथी आकाशमां गमन कर वानी शक्ति आवे तेथकी पादलिप्त सूरि कहेवाणा.

एकदा गुरुनी आज्ञा मागी पादलिप्तसूरि साधुना समूहसहित पाडली पुरें आव्या.तिहां मुरड नामे राजा राज्य करे छे तेने कोणिकें सूत्रनो दडो आप्यो छे. ते घणाजनोने देखाड्यो, पण तेनो कोइ तार काढी शके नहीं उखेडी शके नहीं पछी राजाये पादलिप्तसूरि आव्या जाणीने तेडाव्या.सूरि पण सजामां आवी बेठा राजायें सूत्रनो दडो आपी कह्युं ए दडो उखेली आपो. आचार्यें उष्णपाणीमांहे दडो मूक्यो तेवारे ते उष्णपाणीने योगें द डा उपर चडावेलुं मीण उतरी गयुं. तार मली आव्यो दडो उखेली आप्यो.

राजा खुशी थयो वली राजायें एक दाबडो उघाडवा माटें आप्यो तेने पण गुरुयें तेमज उष्ण पाणीमां मूक्यो उष्णताने योगें लाख उतरी गइ तेथी संधीबंधी प्रगट थइ तेवारे दाबलो उघाडी आप्यो.

हवे गुरुयें एक तूंबडूं रत्नें जरी शीवीने राजाना हाथमां उघाडवा आप्युं राजायें उघाडवा माटे घणा उपाय कर्या पण शीववानो मूलस्थानक पाम्यो नहीं ए प्रकारें राजा गुरुनी चतुराइ देखी चमत्कार पाम्यो.

एकदा राजाने असाध्य रोग थयो वली मस्तकें शूल थयुं, वैद्य तथा योगी प्रमुख घणा आव्या, पण वेदना शमे नहीं तेवारें आचार्यने तेडाव्या गुरुयें कह्युं तिहां आववानुं शुं कामछे ? तमे तिहां जइने राजाने अमारी सन्मुख सुवरावो अमे इहांज बेठां वेदना समावी देशुं तेवारें प्रधानें राजा ने गुरुनी साहामो सुवार्यो गुरुयें तिहां बेठां राजाना जानु उपर आंगुली फेरवी के राजानी वेदना तरत शमी गइ राजायें महोटो महोत्सव कर्यो पोतें श्रावकधर्म अंगीकार करी गुरुनो परमभक्त थयो.

हवे गुरु तिहांथी संघनीसाथें विहार करी मथुरा नगरीयें आव्या,तिहां देवताना करेला थूभने विषे देव जुहार्या तिहांथकी संघनी साथें गुजरात मांहें ॐकारपुरने विषे आव्या. तिहां देवयात्रा करी तिहांथी खेडपुरें आव्या, तिहां चार पाहुडा पाम्या, जेमां पूर्वना अधिकार विशेष होय तेने पाहुड कहियें. योनिपाहुड, निमित्तपाहुड, विद्यापाहुड अने सिद्धपाहुड तेमां, प्रथम योनिपाहुडमांहे तो विविध औषधीनेयोगें करी जीवनी तथा अजीवनी उत्पत्तिना प्रकार पामीयें. बीजा निमित्तपाहुडमांहे अष्टांग निमित्त पामीयें. त्रीजा विद्या पाहुडने विषे मंत्रविद्यानी साधना तथा तेनां फल कह्यां छे. चोथा सिद्धपाहुडने विषे सर्व सुवर्णसिद्धि रूपसिद्धि प्रमुख सिद्धिउ पामीयें ए चार पाहुड पामीने पादलिप्तसूरि देवदाणवने पण अजेय थया.

हवे ते समयें दक्षिणदेशे खेडपुर, लाटदेशें भृगुकछ, सोरठदेशें वल्लभी नगरी तथा सूरासनदेशें मथुरानगरी ए चार नगरने विषे जैननो संघ घणो पामीयें तिहां खेडपुरनो संघ मली गुरुने अन्यत्र विहार करवा आपे नहीं. कारण के तिहांनो राजा उग्र छे ते ए गुरुविना बीजा कोइने वश नावे.

एवामां भृगुकछने विषे ब्राह्मणो मली श्रावकोने पूजादिक कार्य करवा दीये नहीं. तेमाटे संघे गुरुने विनंति लखी मोकली जे आप अत्र पधारजो

घणी जिनशासननी उन्नति थाशे. तेवारें गुरुयें कह्युं कार्त्तिकवदि प्रतिपदाने दिवसें भरुअच्चें आवी देवजुहारवानो अमारो भाव छे एवुं सांजलीने श्री संघे पण ते दिवसें नेगाथइने महोटा विस्तारसहित पूजा मांमी.

आचार्यें पण एक प्रहर लगण वखाण वांचीने खेडपुरथकी पादलिप्त विद्यायें भृगुकच्छें पधास्या. तिहां पण समस्त संघ वाट जोतो बेठो छे एट लामां अश्वावबोध तीर्थने विषे गुरु आव्या दीठा, तेवारें संघ हर्ष पाम्यो थको आवीने गुरुने वंदना करी राजादिकने पण सूरि आव्यानी खबर थइ तेवारे राजा तथा ब्राह्मण प्रमुख समस्त लोक आवी गुरुने पगे लाग्या, संघे पण राजा प्रमुख समस्त लोकने वस्त्रादिक आपवे करी संतोष पमाड्या. राजाय गुरुने कह्युं के महारो शो वांक छे के आप महारा नगरमां पधार ता नथी? गुरुयें कह्युं खेडपुरनो संघ आववा देतो नथी, तेने डुहवीने अवाय नहिं. माटे अमे हवे आहार पाणी तिहांज जइ करशुं.

राजायें वीनव्यो के जो तमे प्रतिदिवस देव जुहारवा पधारो, तो हुं आठ दिवसपर्यंत महोटा विस्तारपूर्वक पूजा रचावुं. ए विनति गुरुयें अंगी कार कीधी. अनुक्रमें वल्लजी नगरीयें आव्या, तिहां शत्रुंजय गिरनार प्रमु ख तीर्थोनी यात्रा करी पछी ढंकपुरनगरें आवी देव जुहास्या.

ते ढंकपुरमां एक नागार्जुन योगी छे तेणे सुवर्णसिद्धिना योगथी घणा लोकने संतोष्या छे तेमाटे तेनी अत्यंत प्रसिद्धि थयेली छे ते योगी आवी आग्रह करीने गुरुने पोताना मठमां तेडी गयो, तिहां तेणे गुरुना प्रासुक पाणीयें पग धोइने भक्ति करी ते भक्तिनी साथें विनति पण करी के स्वामी मथुरामां आठ दिवस तमारे देरासरें पूजा महोत्सव छे, माटें प्रतिदिन प धारवुं. तेनुं वचन मान्य करीने गुरु, मथुरायें पधास्या. तिहां देवजुहारी खेडपुरनगरें आवी आहार करे एटला सर्व कार्य त्रण पहोरमांहे करे. एवी पादलेपशक्ति छे एम आठ दिवस लगण उपर कहेला सर्व स्थानकें यात्रा करी फरी खेडपुरमां आवी आहार करे.

हवे नागार्जुन योगीयें गुरुना पग धोयणने सूंघीने ते मांहेथी १०७ औष धीना नाम जाणीने ते कागल उपर लखी लीधा पछी ते एकशोने सात औषधी साथें आठमुं पाणी भेली पोताने पगें लेपकरी उडवा लाग्यो पण उडीने वली पडीजाय एम परिश्रम करतां ते योगीना शरीरें चांदां पड्यां तेजोइ गुरुयें

तेने चांदां पछ्यानुं वृत्तांत पूछ्युं, तेवारें तेणे यथास्थित वार्त्ता कही दीधी. गुरु तेनुं ज्ञान देखी चमत्कार पामी कहेवा लाग्या के, तें सर्व औषध जाण्यां. पण गुरुलाग रह्यो छे. तेवारें नागार्जुन पगेलागी वीनवतो हवो के, महाराज! हुं सुवर्णसिद्धि तमने आपुं, पण मुऊने ए विद्या आपो. गुरुयें कह्युं सुवर्णसिद्धिने अमे शुं करीयें एवुं कही गुरु चालता थया. जोगी तेमने वोलाववा आव्यो तिहां कुंजारनो इंटनिवाह छे, ते इंटनिवाहनी उपरें गुरुयें चूर्ण नाख्युं अने नागार्जुनने कह्युं तुं प्रजातें ए इंटनिवाह जोजे एवुं कही मथुरा जणी आकाशमार्गें चाल्या. प्रजातें योगी आवीने जूएछे, तो पहेलुं घर बधुं सुवर्णमय दीठुं ते जोइनें योगीनुं मन चलायमान थयुं अने मनमां विचार्युं जे एनी आगल महारी शी गणती छे.

वली एकदा प्रस्तावें गुरु श्रीशत्रुंजय पधार्या जाणीने नागार्जुनें आवी गुरुने पगें लागी कह्युं, स्वामी! विद्या आपो गुरुयें कह्युं तुं श्रीजिनधर्म अंगीकार करे तो हुं विद्या आपुं अन्यथा न आपुं पछी ते नागार्जुने श्रावकधर्म आदर्यो, तेने श्रावकधर्म आपी पादलेप विद्या पण आपी ते नागार्जुन धर्म पामी तथा विद्या पामी हर्ष पाम्यो थको शत्रुंजयनी तलहटीयें गुरुने नामे पालीताणुनगर वसाव्युं गुरुनुं नाम पादलिप्त हतो तेनो अपभ्रंश शब्द थइने पालीताणु नाम थयुं, पछी ते नागार्जुन हर्षवंत थको परम जैनधर्म पालतो परम श्रावक थयो.

हवे पयठाणपुरने विषे शालिवाहन राजा राज्य करे छे. तेनी सजामां हे चार पंमित लक्षलक्ष श्लोक प्रमाण शास्त्र रचीने आव्या तेमां आत्रेय कवियें एक लक्ष प्रमाण वैद्यकशास्त्र कर्युं तथा कपिल कवियें एक लक्ष प्रमाण धर्मशास्त्र रच्युं तथा बृहस्पतियें एक लक्ष प्रमाण नीतिशास्त्र रच्युं, तथा पंचाल कवियें एक लक्ष प्रमाण कामशास्त्र रच्यु. ते चारे जण आवीने राजाने कहेवा लाग्या के अमे शास्त्र रच्यां छे, ते तमारे सांजलवां जोइयें. राजायें कह्युं एवडां महोटां शास्त्र सांजलतां हुं क्यारे परवारुं ते माटे एक पद "आद्यंताभ्यां" एटले एकेका पदमां कविनुं नाम बीजुं आद्यशास्त्रनुं नाम, रहस्य आणीने मुऊने समजावो जेम हुं सांजलुं.

तेवारें ते चारे पंमित एकेका पदमांहे नामगर्भित शास्त्रनुं रहस्य करी लाव्या ॥ तद्यथा ॥ जीर्णेजोजन मात्रेयः, कपिलप्राणिनां दयां ॥ बृहस्पतिरविश्वासः,

पंचाजः स्त्रीषु मार्दवं ॥ १ ॥ ते सांजली राजा हर्ष पाम्यो. दान आपी रा जा शिवशासननी प्रशंसा करवा जाग्यो. तेवारें राजानी पट्टराणी जोगवती नामें श्राविका बे, ते राजाप्रत्यें कहेती हवी ॥ तागडयं तुवा इंद गयघडा मय जरेण डुप्पिन्ना ॥ जा जाव न पालि तवं, पंचवयण नाउ समूल सइ ॥ १ ॥ राजायें पूब्युं ते पादलिप्तसूरि कोण बे? राणीयें सर्व तेनुं वृत्तांत आद्यथी मांमीने कह्युं तेवारें शालिवाहन राजायें पोताना शंकरनामा प्र धानने खेडपुरनेविषे गुरुने तेडवा मोकल्यो ते शंकर प्रधान खेडपुरें जइ गुरुने आदरसहित तेडी आव्यो. राजायें महोटा आमंबरसहित नगरमां प्रवेश करवानो महोत्सव कस्यो. पबी राजायें चारे पंमितनी साहामुं जोयुं त्यारें बृहस्पतियें राजाने कह्युं एनी पंमिताइनी परीक्षा करशुं, पबी राजा नी आज्ञा मागी कोइ हीरो नामे राजानो सेवक हतो तेने एक थाली घृत थी नरी आपी अने कह्युं के ए थाली गुरुनी आगल जइ मूकजे तेणे पण थाली लावी गुरु आगल मूकीने कह्युं के घृतदर्शन मंगलनुं कारण बे माटे ल्यो.

गुरुयें अंतरंगनाव समजीने लघु लाघवी कलायें करी ते घृतमांहे पात ली सुइ घाली ते उपरथी एवो नाव जणाव्यो के जेम घृतमांहे बारीक सूइ घालीने घृत नेद्युं बे तेम हुं नगरमांहे आवी तमारा मर्म नेद करीश. हीरा यें तेवीज थाली तिहांथी आणीने राजा आगल मूकी तेमां सूइ देखीने बृ हस्पतिनो मद गल्यो काष्ठनी पेठें निश्चेष्ट थयो अने विचाखुं जे ए आचार्य नी साथें अमारुं काइ जोर चालशे नहीं.

हवे महोत्सवें करी गुरुने नगरमां पधराव्या प्रतिदिवस राजा पण तेमनो रचेलो ग्रंथ सांजले तेथी राजा गुरुनो परमनक्त थयो चारे ब्राह्मणने बोलावे नहीं. तेवारें पंचालय पंमित मत्सरें नराणो थको राजाने कहेवा लाग्यो के ए जैनाचार्य सर्व महारां करेलां शास्त्र चोरीने वांचे बे. राजायें पूब्युं ते केम ? पंमितें कह्युं ए तरंगलोला कथा महारे मुख पाठें बे राजायें कह्युं, ते केम जणाय ? तेवारें आचार्यनो रचेलो ग्रंथ तेने एकदा सांनली ने पंचालय पंमितें धारी राखेलो हतो, ते पाठ राजाने कही संनलाव्यो. रा जायें ते सत्य करी मान्यो.

हवे ए वातथी संघने लज्जानुं काण थयेलुं जाणी श्रीजिनशासननी दी प्ति करवाने अर्थे गुरुयें उपाय कस्यो, ते आवी रीतें के गुरु कपटथी मर

ण पाम्या, तेमनें श्रावको महोटा आडंबरथी बाहेर परठवानो उपाय क
रवा लाग्या, ते गुरुनुं मरण सांजलीने नगरनां लोक सर्व तेमना गुण सं
जारी संजारी रडवा लाग्यां, तेवारें पंचालकवि पण रडवा लाग्यो, तद्य
था ॥ सीसे कहवि न फूटं, जम्मस्स पालित्तयं हरंतस्स ॥ जस्समुह नि
ज्झराउ, तरंगलोला नईवुढा ॥ १ ॥ ते पंचालनुं वचन सांजली गुरु बेग
थया श्रीसंघें पण गुरु जीवता थया, तेनो महोत्सव कस्यो. गुरुने लोकें पू
छ्युं साहेब! आप केवी रीतें जीवता थया? गुरुयें कह्युं आ पंचालकविना
वचनामृतथी जीवतो थयो छुं. जे माटे पंचालें पोताना मुखथी कह्युं के
तरंगलोला ए ग्रंथ पादलिप्त सूरिनो करेलो छे, एवुं कह्युं तेथी एणे रा
जानो कलुषजाव दूर कस्यो. ए वातथी राजायें पण जाण्युं जे मुझने पंचा
लें खोटुं समजाव्युं तेथी राजायें पंचालपंमितने देशोटो दीधो तेवारें आ
चार्यें, राजाने समजावीने पंचालने नगर मांहेज रखाव्यो. तेवार पछी उ
पकार कस्यो. तेमाटें पंचालकवि प्रतिदिवस गुरुनी सेवा करवा प्रवृत्त्यो.
ए रीतें घणा वर्षपर्यंत श्रीजिनशासननी दीप्ति करी, छेवट आउखानो अं
तसमय जाणी अनशन आदरी इंड्नी सजाना मंमन थया. ए सिद्धप्राजा
विक उपर पादलिप्त सूरिनो संबंध कह्यो ॥

हवे आठमो कवि प्राजाविक कहे छेः—

(जूयछसछ के०) जूतार्थ शास्त्रनो जोडनार एटले श्रीजिनशासनमांहे वीतरागदेवें जेहवा जाव कह्या छे, तेवाज जावें प्ररूपणा करी नवा शास्त्रोनी (गथा के०) गाथा बांधे तथा काव्य बांधे तथा गद्यमय जोडी नवीन ग्रंथोनी रचना करे तथा (जिणसासणजाणउ के०) श्रीजिनशासनना सर्व मर्म रहस्यनो जाण श्रीजिनशासननो जक्त एवो जे होय. तेनें (सुक्कई के०) सुकवि कहायें ते जिनशासननो प्राजाविक थाय ॥ ३६ ॥

ए कविप्रजावकनेविषे श्रीसिद्धसेन दिवाकरनो संबंध कहीयें छैयें. विद्याधरगछने विषे श्रीपादलिप्तसूरिना संतानीया श्रीस्कंदिलाचार्य छे, ते विहार करता गौडदेशने विषे कोशल गामें पहोता. तिहां मुकुंद नामा ब्राह्मण गुरुनी देशना सांजली प्रतिबोध पाम्यो; जेमाटे "यथा चतुर्भिर्कनकं परीक्ष्यते, निघर्षण छेदन तापताडनैः ॥ तथैव धर्मोविदुषा परीक्ष्यते, श्रुतेन शीलेन तपोदयागुणैः ॥ १ ॥" ते ब्राह्मणें विचार्युं जे श्रुत, शील, तप

अने दया ए चार वानां मांहेलुं एके वानुं पण शिवशासनमांहे शुद्ध न थी. तेमज वली ते शासनमां अभिनिवेश मिथ्यात्व तो छेज, माटे तेनां ए चार वानां शुद्ध पण कहेवाय नहीं. अने जैननां ए चारे वानां शुद्ध छे. एम ते वैराग्य पाम्यो थको दीक्षा लेतो हवो. हवे ते मुकुंदचंद नामा साधु हरहमेश ढक्कर शब्द करतो शास्त्र गोखतो रहे.

तेने गुरुयें वार्यो के, हे महानुनाव! रात्रियें महोटे शब्दें गोखवुं नहीं. जेमाटे महोटे शब्दें गोखवाथी जो अनार्यलोक जागे तो दलवा, खांमवा, पीसवा प्रमुख आरंनमां प्रवर्त्ते ॥ यतः ॥ जागरिया धम्मिणं, अहम्मीणंतु सुत्तया सेया ॥ वत्साहिव नगिणीए, अकही सुजिणो जयंतीणं ॥ १ ॥ इति नगवती सूत्रना नावनी गाथा तथा यतिदिनचर्या ग्रंथमां पण ए गाथा छे.

पछी ते साधुयें रात्रें गोखवुं मूकी दइने दिवसेंज महोटे ढक्कर स्वरें गोखे. ते लोकोने अनिष्ट लागे तेमज न्हाना चेला तथा गृहस्थना छोकरा तेनी उपर हसे, एकदिवस तेने केटलाएकें कह्युं के आ वृद्धपणमां आकरे शब्दें गोखीने शुं मूसलो फूलावशो एवुं हांसुं सांनलीने ते विद्यानो अर्थी छतो सरस्वती देवीना चैत्यें जइ बेठो तिहां एकवीश उपवास कस्या, तेना नाग्य योगें सरस्वती प्रगट थइ ने कह्युं के हे आर्य! तुं सर्वविद्यानो पारंगामी था. एवुं कही देवी अदृश थइ.

पछी ते साधुनी जेवारें कोइयें हांसी करी तेवारें एणे कह्युं आवो मूसलो फूलावी देखाडुं. पछी चउटामां जइ स्थूल मूशलो अणावी तेने मंत्र शक्तियें करी पत्र पुष्प फलादिकें करी फूलावी देखाड्यो अने कहेवा लाग्यो के जे महारी सार्थे वादें आवे तेनी उपर पत्रावलंबन कीधुं छे. एम कहे. स्कंदिलाचार्यें तेने प्रानाविक जाणी आचार्यें पद आप्युं. तेमनुं वृद्धवादी एवुं नाम दीधुं अने पोतें अनशन करी देवसनाना नूषण थया. एकदा श्रीवृद्धवादी सूरि नरुअच्चें पधास्या तिहां तेमनो घणो महिमा वध्यो.

हवे उज्जयणी नगरीयें विक्रमादित्यराजा राज्य करे छे. तेनो प्रधान देवऋषि ब्राह्मणनी देवसिका स्त्री छे, तेनो सिद्धसेननामा पुत्र छे, ते सकल विद्यानो पारंगामी छे परंतु अहंकारी छे तेथी तेणे एवी प्रतिज्ञा करी छे के मुझने जे जीते, तेनो हुं शिष्य थाउं. पछी तेणे वृद्धवादी सूरिनुं पत्रावलंबन सांनली सुखासने बेठो थको घणा छात्रें परवस्यो थको नृगुकच्छे आवे छे.

एवामां वृद्धवादीसूरि पण कोइ कार्यार्थें घणा शिष्यने परिवारें बाहिर नि कल्या छे. तेवारें सिद्धसेनें छात्रोने पूछ्युं ए कोण श्वेतांबर जाय छे? छात्रें कह्युं ए वृद्धवादी सूरि वादि मदभंजन जाय छे.

ते सांभली सिद्धसेन, तेमनी पासें आव्या अने कहेता हवा के तमा री साथें हुं वाद करीश. आचार्यें कह्युं इहां रानमां श्यो वाद करवो, इहां पोकार करवाथी शुं वलवानुं छे चालो नगरमां जइ राज्यसभायें वाद करी यें. सिद्धसेने कह्युं आ गोवालीया आपणा साक्षी छे एज हार जीत कहे शे, ते आपणने प्रमाण छे. गुरुयें विचार्युं जे ए पंमित तो छे पण उता वलीयो छे. तेवारें गुरुयें कह्युं पूर्वपक्ष कर.

पछी सिद्धसेने गाढे स्वरें पूर्वपक्ष कर्यो, अने संस्कृतभाषामां कठिण काव्य बोलवा लाग्यो, गोवालीया बोल्या एने तो भूत लाग्युं जणाय छे? कोइ रीतें ए बोलतो रहेतो नथी। महोटे सादें बोलीनें अमारा कानने पीडा करे छे हवे ते वारंवार तर्कवादें जेवारें आरडी थाक्यो? तेवारें वृद्ध वादीने कहेवा लाग्यो के हवे तमें उत्तरपक्ष करो.

वृद्धवादीयें मनमां चिंतव्युं जे आ गोवालीयानी सभामां श्यो तर्कवा द करीयें? इहां तो आंधलाने आरीसो देखाडवानो न्याय थाय, माटें विचार करीने काछडो बांधी रजोहरण केडमां बांधी घीहीणीछंदनी राशि भणता कांइक नाचता कूदता थका मुखथी एवी रीतें कहेता हवा. तद्य था ॥ नवी मारीयें नवी चोरीयें परदारा गमन निवारीयें, थोवाथोवुं दा इयें, तो सर्गें दडवडी जाइयें ॥ १ ॥ कालुंकांबल नीचोवट्ट, छाशें भरीयो दीवडो थट्ट ॥ एवड पडीयो नीले जाड, अवर किश्युं छे सग्ग निलाड ॥ २ ॥ इत्यादिक छंद भणता जाय अने दांमो उछाली नाचता जाय, तेवा रें गोवालीया पण लाकडी उछाली गुरुने प्रदक्षिणा देता नाचता हुवा अने कहेता हवा के आ वृद्धवादी गुरु महोटा पंमित छे अने आ बापडो बां भणीयो तो मात्र महोटा पोकार करी जाणे छे, पण कांइ भण्यो नथी.

एवुं गोवालीयानुं वचन सांभली सिद्धसेन ब्राह्मण आवी गुरुने पगें लागीने कहेवा लाग्यो जे हुं तमारो शिष्य थयो मुजने दीक्षा आपो तमें समयना जाण छो अने हुं समयनो जाण नथी माटें हुं मूर्ख छुं तेथी हुं हार्यो अने तमें जीत्या तेने गुरुयें कह्युं एथी तुं कांइ हार्यो नथी अने हुं

जीत्यो पण नथी एतो मात्र आपणे रमततुल्य चर्चा थइ माटे चालो आ पणे राज्यसभामां जइ वाद करीयें, तिहां जे जीतहार थाय ते बेहुने प्रमाण छे. सिद्धसेनजीयें कह्युं के में प्रतिज्ञा करेली छे के जे मुजने हरावे तेनो हुं शिष्य थाउं माटें दीक्षा आपो. पछी गुरु नगरमां तेडी आव्या राजसभामां वादें जीतीने रूडुं मुहूर्त्त जोइ तेने दीक्षा आपी. राजायें ते वात सांभलीने जिहां गुरुयें तालोटा दीधा हता तिहां तालारस नामें गाम वसाव्युं तिहां श्रीऋषभदेवनुं प्रासाद कराव्युं तेनी वृद्धवादी सूरियें प्रतिष्ठा करी.

मुकुंदचंद साधुनुं नाम सिद्धसेन थाप्युं अनुक्रमे पूर्वगत आम्नाय मां हेली केटलिएक विद्याउ भण्या माटे योग्य जाणी गुरुयें तेमने आचार्य पद आपतां सिद्धसेनदिवाकर एवुं नाम दीधुं ॥ यतः ॥ वाईय खमासम णे, दिवायरे वायगित्ति एगठा ॥ सूत्ते पूव्वगयंमि, एए सद्दाय पयट्टती ॥१॥

एकदा सिद्धसेनसूरि गुरुनी आज्ञा मागी उज्जयणीयें आव्या तिहां श्रा वकोयें महोटे महोत्सवें पेसारो कराव्यो नगरीना चोकमां आव्या तेवारें राजा विक्रमादित्य पण हाथी उपर चडेला एमने सामा मल्या अने पू छ्युं, ए कोण आवें छे? श्रावकोयें कह्युं सर्वज्ञ पुत्र आवे छे. राजायें तेनी परीक्षा करवा निमित्ते हाथी उपर चड्यो छतां मनथी प्रणाम कर्यो गुरुयें तेने महोटे स्वरें धर्मलाभ दीधो. राजा समज्यो जे मुजने महोटो जाणी धर्मलाभ दीधो हशे. एम विचार करी गुरुने पूछ्युं तमोने जे नमस्कार क रे, तेने तमें धर्मलाभ द्यो छो के जे नही नमे, तेने पण धर्मलाभ द्यो छो? शुं तमारो धर्मलाभ घणुं सस्तो छे? गुरुयें कह्युं अमारो धर्मलाभ कोडी चिं तामणि रत्नोथी पण अधिक महर्घ्य छे माटे जे नमे तेनेज आपीयें तमे मनमां भावथी नमस्कार कर्यो माटे तमोने धर्मलाभ दीधो, जेमाटे प्रधा नपणु भावनमस्कारने छे ॥ यतः ॥ वावाराणं गुरुउ, मण वावारो जिणेहि पन्नुतो ॥ जो नेइ सत्तमिवा, अहवा मुरकं पराणेइं ॥१॥ ते सांभली राजा ह र्ष पाम्यो हाथीथकी उतरीने वंदना करी कोडीसुवर्ण नाणक आगल मूक्यां. गुरुयें कह्युं अमें ए सुवर्णने शुं करीयें अमें तो निर्ग्रंथ छैयें. राजा बोल्यो में ए धर्मादा कल्प्यो माटे हवे महारें भंडारमां ए द्रव्य खप आवे नहीं. पछी ते द्रव्य राजायें जीर्णचैत्योद्धार निमित्तें श्रावकोने भलावी, अने वहीमां आवी रीतें धर्मलाभे लखाव्युं ॥ यतः ॥ धर्मलाभ इति प्रोक्ते दूराडुच्छ्रितपाणये ॥

सूरये सिद्धसेनाय, ददौकोटि धराधिपः ॥१॥ पुसे वास सहस्से, सयंमि व रिसाए नवनवइ कलिए ॥ होइ कुमर नरिंदो, तुहविक्कमराय सारिछो ॥ १ ॥ राजा विक्रम गुरुनो नक्त थयो पछी गुरु अनुक्रमें विहार करतां चित्रकूटें आव्या. तिहां प्रासादें देव जुहारी समस्त प्रासाद जोतां एक प्रासादें लेखमय स्तंन दीठो वृद्धश्रावकने पूछ्युं ए शुं छे ? श्रावकें कह्युं ए पूर्वाचार्यें मंत्राक्षरमय पुस्तक नाखी लीप्तमय स्तंन कीधो छे. एने कोइ उघाडी शके नहीं. गुरु प्रतिदिन देरासरें आवी स्तंनने सूंघे. एम सुंघता तेनी सर्व औषधियो जाणवामां आवी, पछी तेनी प्रतिपक्षी औषधि पाम्या ते औषधि उनो रस छांट्यो तेथी पाका चीनडानी पेरें स्तंन फाटी पड्यो, तेमांहेथी एक पानुं काहाडी वांच्युं तेमांथी एक सरशवविद्या अने बीजी सुवर्ण विद्या ए बे विद्या मली एटलामां थांनो फाटेलो हतो ते मली वज्रमय थइ गयो. अने आकाशवाणी एवी थयी जे हे आचार्य ! ए विद्याने तुं अयोग्य छो माटे चपलस्वनाव मूक नहींका जीवितना संदेहमां पडीश. बे विद्या पाम्या तेमां सरशव विद्या तो कोइ काम पडे तो जेटला सरशवना दाणा मंत्रीने जलाशयमां नाखीयें तेटला असवार बेंहेंतालीश प्रकारना हथीयारें सहित बाहेर निकलीने लडाइना मेदानमां खडा थइ आवी उना रहे. ते शत्रुनी सेनानो नंग करी पछी अदृश्य थइ जाय अने सुवर्णविद्याथी वगर प्रयासें जेटलुं सुवर्ण जोइयें तेटलुं तयार थइ जाय. ए बे विद्या गुरुने मली पछी तिहांथी विहार करीने गुरु, पूर्वदिशें कुमारपुरने विषे गया तिहां देवपाल नामें राजा छे तेने प्रतिबोधीने पाको जैनधर्मी कर्यो. ते प्रतिदिन एमनी पासें वखाण सांनलवा आवे, तेथी परस्पर प्रीति थइ एम केटलोएक काल व्यतीत थयो. एकदा राजाने चिंतातुर देखी गुरुयें चिंतानुं कारण पूछ्युं, राजायें कह्युं स्वामी ! महारा घणा वैरी एकठा थइ कटक लइ आवे छे, माटे हवे महारे शुं करवुं ? गुरुयें कह्युं कांइ चिंता म करो. सर्व रूडुं थाशे.

केटलाएक दिवस पछी वैरीउयें आवी राजानुं नगर वींटयुं गुरुयें पाणीयें नरेलुं कुंडुं अणावी तेमां विद्यायें अनिमंत्रित सरशव मूक्या, तेमां जेटला सरशव हता तेटला समस्त आयुधें सहित असवार निकल्या तेणे वैरीना सवारो साथें युद्ध करी हतप्रहत कीधा नंतर पोतानी मेलें अदृश्य थइ गया. राजायें, जयनंना वजडावी सूरिनी पासें आवी पगे लागीने

कह्युं महाराज! तमें मुजने जीवाड्यो अने आ राज्य पण तमें आप्युं.

हवे राज्यमान पामीने शिद्धसेन सिथिलाचारी थया. दरवाजा आगल असवार ऊभा रहे, कोइ श्रावकमांहे जइ शके नहीं ॥

हवे श्रीवृद्धवादिसूरि शिद्धसेननुं सिथिलाचार सांभली दया आणी प्रतिबोध देवा माटे तिहां आवी दरवाजा आगल उभा रही कहेवराव्युं जे एक बुढोवादी आव्यो छे. ते सांभली सिद्धसेने तेमने बोलावीने पोतानी आगल बेसाड्यो. तेवारें वृद्धवादी पोतानुं सर्व शरीर वस्त्रोथी ढाकीने बोल्या. अणफुल्लिय फुल्ल म तोडहिं, मारोवा मोडहिंमणुकुसुमेहिं ॥ अच्चिनिरंजणंजिण,हिंमइकाइवणेण विणु ॥३१॥ ए गाथा सांभलीने सिद्धसेने विचार कर्यो पण गाथानुं अर्थ न पाम्यो तेवारें विचार्युं के शुं आ महारा गुरु वृद्धवादी छे? के जेनी कहेली गाथानो हुं अर्थ समजी शकतो नथी. पछी वारंवार तेमना साहामुं जोवा लाग्यो. तेवारें जाण्युं जे ए महारा गुरु छे तेथी नमस्कार करी क्षमापन मागी पूर्वोक्त श्लोकनो अर्थ पूछ्यो तेवारें वृद्धवादीजीयें कह्युं के अप्राप्त फूलोने तुं त्रोडी म नाख. भावार्थ ए छे के योग जे छे ते कल्पवृक्ष छे जेमां यम नियम तो मूल छे अने ध्यानरूप महोटो स्कंध छे तथा समतापणुं, वक्ता, यश, प्रताप, मारण, उच्चाटन, स्तंभन, वशीकरणादिक सिद्धिउनुं जे सामर्थ्य ते फूल छे अनें केवलज्ञानरूप फल छे तेमां हजी तो मात्र योगकल्पवृक्षना फूलज लागां छे ते केवलज्ञानरूप फले करीने आगल फलशे माटे जे फूलोमां फल प्राप्त थयां नथी एवा अप्राप्त फल पुष्पोने तुं शामाटे त्रोडे छे? अर्थात् म त्रोड,एवो भावार्थ छे. तथा "मारोवामोडेहिं" ज्यां पांच महाव्रत आरोप्या छे तेने मरोडी म नाख. तथा मणुकुसुमेत्यादिनुं अर्थ आम छे जे मनरूप कुसुमें करी निरंजनजिनने पूज. तथा "वनात्वनंकिंहिंमसे" एटले राज सेवादिक मार्गां नीरस फल कां करे छे? ए सांभली सिद्धसेनसूरि गुरुनी आज्ञा पोताना शिर उपर चडावी राजाने पूछी गुरुनी साथें विहार कर्यो अने निविड चारित्र धारण कर्युं. एम गुरुयें प्रतिबोधी समजावी राज सेवा मूकावी पोतानी साथें तेडी गया, प्रायश्चित्त आपी चारित्र शुद्ध कीधुं हवे सिद्धसेनसूरि अन्य आचार्य पासेंथी पूर्वगत विद्या लेइने श्रुतधर थया. अनुक्रमें श्रीवृद्धवादी आत्मार्थ साधी देवसभामांहे जइ बेठा.

एकदा सिद्धसेनसूरि अहंकारमां मग्न थया थका श्रीसंघने कहेवा ला ग्या के तमे कहो तो सर्व सिद्धांतनो प्राकृत जाषा टालीने संस्कृत करुं जे म लोक आपणने हसे नहीं ते सांजली श्रीसंघें कह्युं के तमोने प्रायश्चित्त उपनुं जेमाटें सर्वाक्षर सन्निपात लब्धिना धणी एवा श्रीगणधर देव तेमांहे संस्कृत जाषा करवानी शक्ति हती तथापि लोकोपकारने अर्थे सिद्धांतो प्रा कृत जाषामां कर्यां ठे, तेथी श्रीतीर्थंकरनी तथा गणधरनी आशातना तमें करी, माटे तमोने पारांचिक नामें प्रायश्चित्त उपनुं तेथी केम बूटशो ?

तेवारें पश्चात्ताप करता श्रीसंघने विनति करता हवा के दशमुं प्रायश्चि त्त विछिन्न थयुं ठे तो पण श्रीसंघनी आज्ञा होय तो तुल्यना रूप दशमुं प्रा यश्चित्त हुं आदरुं. संघें कह्युं जेम तमारो जाव होय तेम करो. पढी सिद्धसेन सूरियें मौन आदरी रजोहरण मुहपत्ति गोपवी अवधूतनो वेश धारण करी जेम कोइ उलखे नहीं एवी रीतें बार वर्षपर्यंत जमवानो निर्धार कर्यो. जेमाटे कोइ उलखे तो वली बीजी वार बार वर्षपर्यंत एमज करवुं पडे, तेमाटे अज्ञात थका जमवा लाग्या एम आठ वर्ष वीत्या केडे उज्जयणीयें आवी महाकालने प्रासादें लिंग उपरें पग राखी पठेडी उढीने सूता. पूजा रे उगाडवा माटे घणुं जोर कर्युं पण उठ्या नहीं तेवारें राजाने खबर करी राजा विक्रमादित्यें पोतें आवी उगाड्या तोपण उठ्या नहीं तेवारें राजायें ताजणानो मार देवा मांड्यो, ते ताजणा सर्व राजाना अंतःपुरने लाग्यां तिहांथी बूमो आवी राजायें विचार्युं ए सामान्यपुरुष नथी सिद्धपुरुष ठे, तेमाटे पगे लागीने उगाड्या पढी राजायें कह्युं आ देव ठे एनी स्तवना करीये पण एने रुसवीयें नहीं. सिद्धसेने कह्युं ए देव महारी स्तुति खमी शके नहीं जो हुं स्तुति करुं, तो ए लिंग फाटी पडे.

राजायें कह्युं स्तुति करतां जे थाउ ते जलें थाउ. कपूर खातां दांत प डी जाय, तो पण कपूर खावुं. सिद्धसेनजीयें कह्युं हमणां तो एम कहो ठो पण पढी तमोने दुःख उपजशे, दुःहवाशो. राजायें कह्युं मुजने दुःख न हीं उपजे तमे एनी स्तुति करो, एवुं कहे थके सिद्धसेनदिवाकरें श्रीमहा वीरनी स्तुतिरूप बत्रीशी करी तेनो पहेलोज श्लोक कहेतां लिंगमांथी धू म्र निकल्यां पढी श्रीपार्श्वनाथनो महिमा जाणी कल्याणमंदिरस्तोत्र कर्युं, तिहां “ यस्मिन् हरप्रजृतयोपि हतप्रजावा ” ए अगीयारमुं काव्य कहेतां

धूम्रज्वाला प्रगट थइ. ते जोइ मिथ्यात्वी लोकें कह्युं के महादेवनुं त्रीजुं नेत्र प्रगट थयुं हवे आ भिक्षुकने बाली भस्म करशे. तेवारें तो वली तड तडाट करतो अग्नि निकल्यो. पछी कल्याणमंदिरनुं तेरमुं काव्य कहेतां थकां लिंग फाटी पड्युं, धरणेंद्रना सहाय थकी श्रीपार्श्वनाथनी प्रतिमा पगट थइ. पछी कल्याणमंदिर पूर्ण चुम्मालीकाव्य प्रमाण कर्युं प्रभुनी स्तवना करी भगवान् पासेंथी क्षमापन माग्युं तेवारें राजायें पूछ्युं के, हे भगव न्! आ शुं अपूर्व अदृश्य दीठामां आव्युं? आ ते वली कयो नवीन देव छे अने आ शी रीतें प्रगट थयो? तेवारें सिद्धसेनजीयें अयवंतिसुकुमार नो पुत्र माहाकाल हतो, तेणें पोताना पिताना नामथी अयवंती पार्श्व नाथनुं मंदिर बंधावी तेमां श्रीपार्श्वनाथनी मूर्त्ति स्थापी, तेनी केटलाएक वर्षपर्यंत लोकोयें पूजा करी. पछी अवसर पामीने ब्राह्मणोयें पोता नुं जोर वधेलुं जाणी श्रीजिनप्रतिमाने नीचें दाबीने तेनी ऊपर आ शि वनुं लिंग स्थापन कर्युं छे. इत्यादि जे कांइ वृत्तांत हतुं, ते सर्व राजानें कही संभलाव्युं. वली हे राजन्! आ महारी स्तुतिथी शासन देवतायें शिवनुं लिंग फाडीने वचमांथी आ प्रतिमा प्रगट करी दीधी. हवे तमें स त्यासत्यनो निर्णय करी ल्यो. तेवारें राजायें सो गाम मंदिरनो खरच च लाववामाटे आप्यां. अने देवनी समक्ष गुरुमुखथी बार व्रत ग्रहण कर्यां. अने श्रीसिद्धसेनसूरिनो महोटो महिमा वधारीने पोताने स्थानकें गया. वादींद्रसिद्धसेन दिवाकरनी पदवी आपी राजा प्रतिबोध पाम्यो. घणाएक मिथ्यात्वीजीवो मिथ्यात्व मूकीने श्रावक थया. तिहां अयवंति पार्श्वनाथ नुं तीर्थ स्थापन थयुं. ते श्रीजिनशासननुं महोटुं कार्य कीधुं, माटें श्रीसं घें शेष चार वर्षनुं प्रायश्चित्त बक्षीसमां मूक्युं. तेवारें संघना कहेणथी उ घो, मुहपत्ति, लइ गछमांहे आव्या. घणा नविन ग्रंथो रचीने श्रीजिनशा सननी प्रभावना करी. हवे एकदा प्रस्तावें सिद्धसेन दिवाकर विहार करता करता मालवामां ॐकार नामें नगरें आव्या. ते नगरना भक्त श्रावकोयें विनतिकरी जे हे भगवन! आ नगरनी समीपें एक गाम हतुं, तेमां सुंदर नामा राजपुत्र ग्रामणी हतो, तेने बे स्त्री हती, तेमां एक स्त्रीयें प्रथम पु त्री जन्मीने ते वखतें तेनी शोक पण प्रसुतवान हती तेथी ते स्त्रीयें मन मां खीजीने विचार कर्यो जे महारीशोक जो पुत्र न प्रसवे तो ठीक. केम के

जो तेने पुत्र प्रसवथशे तो ते पतिनी वल्लन थाशे, तेथी तेणे दाइनी साथें मलीनें जेवो तेनी शोकें पुत्र प्रसव्यो, तेवोज बहार नाखी दीधो. अने तुरत नो मरी गयेलो गेकरो तेनी पासें राखी दीधो. पढी जे पुत्रने बहार नाखी दीधो हतो, तेने कुलदेवीयें गायनुं रूप करीने पाल्यो, ने ज्यारें ते आठ वर्षनो थयो, त्यारें ॐकार नगरना शिवनवनना अधिकारी नरडे, तेने देखीने पोतानो चेलो बनाव्यो. एकदा प्रस्तावें कान्यकुब्ज देशनो राजा आंखे आंधलो छे, तेणे दिग् विजय कार्यथी त्यां पडाव कस्यो, तेवामां रात्रियें शिवनक्त व्यंतर देवताये ते गेटा चेलाने कह्युं के शेषनोग राजाने देवाथी तेनी आंख सारी थाशे. ने तेणें तेम कस्याथी राजानी आंख सारी थइ तेथी राजाये मंदिरना खरचसारु सो गाम तेने आप्यां, ने आ महोटां शिवमंदिर छे ते पण, तेणें बनाव्यां छे. अने अमें आ नगरमां रहीयें छैयें परंतु मिथ्यादृष्टियो बलवान् होवाथी अमोने जिनमंदिर बनाववा देता नथी, ते वास्ते आपने विनति करीयें छैयें के, आ शिवमंदिरोथी अधिक इहां जैनमंदिर बने तो ठीक थाय. आपतो सर्व रीतें समर्थ गे. एवां श्रावकोनां वचन सांनलीने, वादीन्द्रअवंतीमां आव्या अने चार श्लोक हाथमां लइने विक्रमादित्यना द्वार पासें आवी द्वारपालनी साथे राजाने कहेवराव्युं जे " दिदृक्षुर्निक्षुरायातस्तिष्ठति द्वारवारितः ॥ हस्तन्यस्तचतुः श्लोकः, किमागच्छतु गच्छतु ॥ १ ॥ ते श्लोक सांनलीने विक्रमादित्यें तेना बदलामां बीजो श्लोक लखीने मोकल्यो जे " दत्तानि दश लक्षाणि, शासनानि चतुर्दश ॥ हस्तन्यस्तचतुः श्लोको, यदागच्छतु गच्छतु ॥२॥ ते श्लोक सांनलीने आचार्यें कहेवराव्युं के निक्षु तमने मलवा चाहे छे, परंतु धन लेवा आव्या नथी, त्यारें राजायें तेने सन्मुख बोलाव्या ने उलखीने कहेवा लाग्या के गुरुजी ; घणो दिवसें आजे दर्शन दीधां ? त्यारें आचार्य कहेवा लाग्या के धर्मकार्य करवामां घणोकाल रोकाण थवाथी आपनी पासें आवी शक्यो नही. हवे चार श्लोक हुं कहुं बुं ते सांनलो ॥ अपूर्वेयं धनुर्विद्या, नवता शिक्षिता कुतः ॥ मार्गणौघः समभ्येति, गुणोयाति दिगंतरें ॥ १ ॥ सरस्वती स्थिता वक्त्रे, लक्ष्मी करसरोरुहे ॥ कीर्त्तिः किंकुपित राजन्, येन देशांतारंगता ॥ २ ॥ कीर्त्तिस्ते जातजाड्येव, चतुरंनोधिमज्जनात् ॥ आतपाय ध

रानाथ, गता मार्त्तंडमंडलम् ॥ ३ ॥ सर्वदा सर्वदोसीति, मिथ्या संस्तूयसे जनैः ॥ नारयो लेभिरे पृष्ठं, नवक्षःपरयोषितः ॥ ४ ॥

ए चार श्लोक सांभलीने राजा नानाप्रकारना वस्त्र देवा लाग्यो, गुरुयें कह्युं तुं राजा बो, माटें तह्मारां वस्त्र अमनें कल्पे नहीं. राजायें कह्युं तो तमें शुं कहो बो? जे आप कहो, ते हुं करुं. आपनी आगल हाथ जोडी उभो बुं. गुरुयें कह्युं ॐकारपुरनेविषे महादेवना प्रासाद थकी उंचुं जैन नुं प्रासाद करावी तिहां जइने तेनी प्रतिष्ठा करावो.राजायें तेमज प्रासाद कराव्युं अने सिद्धसेनसूरीश्वरने हाथें तेनी प्रतिष्ठा करावी. तेथी तिहां भरडा लोकोना श्यामवदन थयां. श्रावकजनो घणुंज हर्ष पाम्या. एम सिद्धसेनसूरियें गाम गाम जिनशासननी प्रभावना करी.

पढी प्रतिष्ठान नगरें आव्या, तिहां आयुष्य पूर्ण थयुं जाणी अनशन व्रत करी अतिचार आलोइ पृथ्वीने विषे जिनशासनना प्राभाविक थइ,स्वर्ग लोकें जिनशासननी प्रभावना करवा गया. श्रीसंघे महोटो महोत्सव कस्यो.

पढी संघें गुरु देवगति पाम्या तेना समाचार जणाववाने अर्थें चित्रकूट गामें भाट मोकल्यो, ते भाटें जइने आचार्यनां वखाण कह्यां, ते आवी रीतें ॥ स्फूरंति वादिखद्योताः, सांप्रतं दक्षिणापथे ॥ वारं वार एवुं कहेवाथी तिहां सिद्धसेन दिवाकरनी न्हानी बहेन बालसरस्वती एवे नामें हती, तेणें पूर्वलां बे पद सांभलीने आगलां बे पद कह्यां, ते कहे बेः— नूनमस्तगतोवादी, सिद्धसेनदिवाकरः ॥ १ ॥ ते सांभलीने चित्रकूटना संघने घणुज दुःख ऊपनुं. भाटने संतोषी वीसर्ज्यो. ए कविप्राभाविकआश्रयी श्रीसिद्धसेनदिवाकरनो संबंध कह्यो.

हवे प्रकारांतरें प्राभाविकना भेद कहे बेः—

॥ सव्वे पभावगा ते, जिणसासण संसकारिणा जे उ ॥ भंगंतरेणवि जउ, ए ए भणिया जिणमयम्मि ॥ ३७ ॥ अर्थः—(सवेपभावगाते के०) ते सर्वे प्रभावक कहीयें (तु के०) वली (जे के०) जेणे प्रकारें (जिणसासणसंसकारिणा के०) श्रीजिनशासननी श्लाघाना करनारा (जउ के०) जे कारण माटे कह्युं बे के (भंगंतरेणवि के०) भंगांतरें एटले प्रकारांतरें पण (एएभणिया के०) ए प्राभाविक आठ प्रकारें कह्या बे. (जिणमयम्मि के०) श्रीजिनमतनेविषे ते आगली बे गाथायें कहेबे ॥ ३७ ॥

॥ अइसेसित्ता इढ्ढिं, धम्मकहि वाइ आयरिय खवग ॥ निमित्त विज्ञा राया, गणसंमउ अ तिह्न पन्नाविंति ॥ ३७ ॥ ॥ इय संपत्ति अन्नावे, जत्ता पूआइ जिण मणोरमणं ॥ जिणजइवि सयं सयलं, पन्नावणा सुद्ध न्नावेणां ॥ ३ए ॥ अर्थः–(अइसेसित्ता के०) अतिशेषिता एटले परम उत्कर्ष पामी बे जंघाचारण, विद्याचारण, आशिःविष, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, प्रमुखनी (इढ्ढिं के०) रुद्धि जेणे एवा जे होय तेने अतिशेष रुद्धि प्रान्ना विक कहीयें. ए प्रथम प्रान्नाविक जाणवो.

तथा बीजो (धम्मकहि के०) धर्मकथिक ते व्याख्यान करवानी लब्धि वंत प्रान्नाविक जाणवो. त्रीजो जे परवादीनें जीतीने जय पामे, ते (वाइ के०) वादी प्रान्नाविक कहीयें. चोथो बारशें ने बत्रुं आचार्यना गुण तेणे करी अलंकृत जे होय ते (आयरिय के०) आचार्य प्रान्नाविक कहीयें. पांचमो जे विकृष्ट तपस्यानो करनार होय, ते (खवग के०) क्षपक प्रा न्नाविक जाणवो. बठो जे त्रिकाल निमित्तनो जाण होय, ते (निमित्तं के०) नैमित्तिक प्रान्नाविक जाणवो. सातमो जे नाना प्रकारनी विद्या मंत्रादिक नो जाण होय, ते (विज्ञा के०) विद्यावंत प्रान्नाविक जाणवो. आठमुं जे (राया के०) राजाउनो (गण के०) समूह तेने (संमउ के०) संमतो एटले वल्लन्न होय ते (तिह्नंपन्नाविंति के०) तीर्थ प्रन्नाविक एटले श्रीजिन शासन प्रत्यें प्रन्नावना करे दीपावे ते तीर्थप्रान्नाविक कहीयें ॥३७॥

हवे कालना विषम पणा थकी कदापि ए आठ प्रान्नाविक न होय, तो प्रान्नावकपणुं केम थाय ? ते कहे बेः–(इय के०) ए पाछल बे प्रकारें कह्या एवा जे प्रन्नाविको तेनी (संपत्ति के०) संपदा तेने (अन्नावे के०) अन्नावे ए टले पाछल कहेला प्रान्नाविक जेवा कोइ प्रान्नाविक कदापि कोइ कालादि कनें दोषें न लान्ने तो ते समयें आ प्रमाणेना कार्य करनारा जे पुरुषो हो य, तेने पण श्रीजिनशासनना प्रान्नाविक कहीयें. ते जेम के श्रीशत्रुंजय, गिरनार, अर्बुदाचल, प्रमुख तीर्थोनी (जत्ता के०) यात्रा महोटा महोटा संघने साथें तेडीने करवी, केम के एवी यात्रा घणा जीवने प्रतिबोधवानुं कारण थाय. जेम श्रीन्नरतचक्रवर्त्तियें संघने यात्रा करावी, जेमाटें आ अ वसर्प्पिणीने विषे प्रथम संघवी न्नरतचक्रवर्त्ती थयो ते श्री अष्टापदें प्रथम प्रासाद बंधावी तेनी आचार्यपासें प्रतिष्ठा करावीनें प्रान्नाविक थयो.

तथा (पूआइ के०) पूजादि ते श्रीअरिहंतनी तथा अरिहंतनी प्रतिमानी, गुरु जे आचार्य उपाध्याय प्रमुखनी यथायोग्य पूजा करवी. तेमज आदि शब्द थकी सर्वजीवने अभयदान देवानी पटह उद्घोषणा करवी,अद्भुत प्रासाद निर्म्मापण, ए शिवाय बीजां पण श्रीजिनशासनना अद्भुत कार्य लेवां.

तथा जेथकी (जनमणोरमणं के०) लोकना चित्त हर्ष पामे, घणा योजन थकी अभिग्रह धरीने लोक यात्रा करवा माटे चाली आवे, तेवा कार्य करवा तेने जनमनोरमण कार्य कहियें.

तथा (जिणजइ विसयं सयलं के०) श्रीजिन अने यति एटले साधु ते संबंधिया सकलकार्यनुं करवुं, ते जिनशासननी प्रभावना कहीयें, पण ए (पभावणा के०) प्रभावना केवी रीतें करवी ? तो के (सुद्धभावेणं के०) शुद्धभावनाथी एटले निर्मायपणे दृष्टिराग रहितपणे केवल गुणानुरागीपणे करवी. पोताना चित्तमांहे लेशमात्र पण रागद्वेषनो परिणाम आणवो नहीं ते शुद्धभाव कहीयें. तेवा भावें करी करवी यतः ॥ शैथिल्यमात्सर्यकदाग्रहः क्रुधोनुतापमानाविधि गौरवाणि च ॥ प्रमाददंभौ कुगुरुः कुसंगतिः, श्लाघार्थिता वासुकृतांतदा इमे ॥ १ ॥

तथा वली जे कार्य करे, ते श्रीतीर्थंकरनी तथा प्रवर्त्तमान गच्छनायकनी आज्ञायें करे, जेमाटें आज्ञा विना करे, ते निष्फल थाय यतः ॥ समिति पवित्तिसव्वा, आणावज्झंति भवफला चेव ॥ तित्थ गुरुद्देसे णवि, ण तत्त उ सा तदुद्देसा ॥१॥ मूढा अणादिमोहा, तहा तहा एछ संपयट्टंता ॥ तं चेव यमसुंता, अवमणंता ण याणंति ॥२॥ मोरकछीणा तउ तह, आणाए चेव सव जेतेण ॥ सवछ विजय इयवं, सम्मंति कयं पसंगेणं ॥ ३ ॥ इतिश्रीअष्टम प्रतिष्ठापंचाशके ॥ ३ए ॥

हवे एनी उपर संघपति श्रावकोमांहे रत्नसमान रत्नश्रावकनो संबंध कहीयें छैयें. एज भरतक्षेत्रें काश्मिर देशें नवफूल नामा पाटण तिहां नवहंस नामा राजा राज्य करे छे. तेने विजयादेवी पटराणी छे.

हवे तेहज नगरने विषे पूर्णचंद्रनामा शेठ वसे छे. तेना त्रण पुत्ररत्न छें, एक रत्न, बीजो मदन अने त्रीजो पूर्णसिंह, एवं त्रण पुत्र छे. तेमां रत्नने पोमिणी नामें स्त्री छे, तेनो कोमल नामें पुत्र छे.

हवे श्रीनेमीश्वरना निर्वाण पछी आठसहस्र वर्ष वीत्या केडें पद्ममहा

देव नामें केवली साधु घणा साधुने परिवारें परवस्था. नवफूल नगरना उ
द्याननें विषे आव्या देवकृत सहस्रपांखडीनुं कमल तद्रूप सिंहासने बेठा
थका देशना देवा लाग्या, उद्यानपालकें राजाने खबर आपी. राजा पण
तिहां आवी बेठो, रत्नप्रमुख त्रण नाइ पण परिवार सहित वांदवा आ
व्या. धर्मदेशना सांनलवा बेठा. तिहां केवली नगवान् देशनामां तीर्थ
यात्राना फल वर्णवता हवा ॥ तद्यथा ॥ अहो तीर्थस्य माहात्म्यं, पुंमरीक
मिहागिरेः ॥ पशवोपि हि यत्रस्था, लन्यंते सुरसंपदम् ॥ १ ॥ ततोपि रेवत
गिरेः, कृता सेवा महाफला ॥ विमलाचलदेशत्वा, त्तद्रूपोयं यतःस्मृतः ॥२॥
विशेषतस्त्वयं नेमिः, पवित्रं कृतवान्निजः ॥ प्रव्रज्याज्ञाननिर्वाण, कल्याणिक
महामतिः ॥३ ॥ श्रीमद्भैवेयमाहात्म्यं, ब्रुवंति लौकिकाअपि ॥ श्रूयंते च प्रना
साख्य, पुराणे वदतांवर ॥ १ ॥ पद्मासन समासीने, श्याममूर्त्ति दिगंबरं ॥
नेमनाथं शिवेत्येवं,नाम चक्रेऽस्य वामनः॥२॥ कलिकाले महाघोरे, सर्व कल्मष
नाशकः ॥ दर्शनात् स्पर्शना देव, कोटियज्ञफलप्रदः ॥ ३ ॥ तेमाटे जेणें
नावशुद्धियें श्रीशत्रुंजय रेवताचलनी यात्रा करी तेणे मोक्षकमला वरी.
इत्यादि धर्मदेशना सांनली रत्नश्रावक गुरुनें पगे लागी अनिग्रहधारी थयो.
जे हुं श्रीशत्रुंजय तथा गिरनार तीर्थनी यात्रा करुं तोज बीजी विगय ले
उं तथा तिहां सुधी ब्रह्मचर्य पालुं. एवो अनिग्रह करी घेर जइ सजाइ करी
अने श्रीसंघने खोला पाथरी अरजी करी. संघ सर्व यात्रा माटे तैय्यार थ
यो. शाह रत्नसिंह राजानी आज्ञा मागवा गयो.राजायें कह्युं के घोडा, हाथी,
मेरा, निशान, जे जोइयें, ते ल्यो. अने शीघ्र यात्राना मनोरथ पूर्ण करी
आवजो. एम कहीने राजायें नालिकेर प्रमुख आपीने विदाय कस्यो.

हवे एनी स्त्री पोमिणी ते राजानी विजयापटराणीने मलवा गइ. वि
दायगिरी मागी, तेणे पण घणी आगता स्वागता करी. श्रीफल पटकूल
आपी पोमिणीने विदाय करी. पढी रूडुं मुहूर्त्त लग्न साचवी रत्नशाह घ
णा संघनी साथें निशान गाजते प्रयाण कर्युं, तेमनी साथें पट्टमहादेवसू
रि पण यात्रायें चाल्या. प्रतिदिन व्याख्यान सांनले देवपूजा स्नात्रादिक
कार्यमां प्रवर्त्ते, रत्नशाह सर्व संघनी आगल चोकी करतो चाले अने म
दन तथा पूर्णसिंह ए बे नाइ श्रीसंघनी बेहु पासें रखवाल करे. तथा रत्न
शाहनो पुत्र कोमल ठे, ते श्रीसंघनी पढवाडे चोकी करतो चाले. एम अ

विछिन्न प्रयाणें चालतां पंथमां लोल अने तोल एवे नामें बे पर्वत आव्या. तिहां संघें उतारो कर्यो, नोजन करी रात्रियें संघ तिहांज रह्यो.

प्रनातें प्रयाणनंनानाद साथें संघ चालवा लाग्यो, एटले कज्जल वर्णे महोटा दांत महोटी दाढें करी नयंकर माहाकाय मुख वाघनी पेठें प सारी रहेलो बे. एवो राक्षस, खाउं खाउं करतो प्रगट थयो. स्त्री प्रमुख लोक सर्व नासवा लाग्यां. आगल फोजना सुनटो हता तेणें आवी पूब्धुं के अरे तुं कोण बो ? तेणें कह्युं के हुं राक्षस बुं. मुऊने समजाव्या विना जो आगल जाशो तो हुं सर्वलोकने नक्षण करीश. एवामां रत्नशाह आ वी ऊनो रह्यो. तेमने सुनटें सर्व हकीगत कही संनलावी. केटलाएकें कह्युं पाबा वलीयें. केटलाएकें कह्युं एनी साथें युद्ध करीयें; रत्नशाहें कह्युं पाबा तो सर्वथा नज वलीयें, श्रीनेमीश्वरनी यात्रा तो अवश्य करवी.

पबी रत्नशाहें तेने समजाववा कह्युं के तमें जइने एने जेम तेम सम जावो. नाट तेने समजाववा गयो. राक्षसें कह्युं एक माणस मुऊने आपी ने बीजा सर्व कुशलें जाउ. ते राक्षसनो एवो निश्चय जाणी नाटें आवी शेठने कह्युं तेवारें रत्नशेठें समस्त श्रीसंघने कह्युं तमें जाउ सुखें समाधें यात्रा करो. हुं आहीं राक्षसपासें रहुं बुं. तेवारें शेठना बे नाइ तथा पुत्रें कह्युं तमें संघवी बो, माटें तमारे आगल चालवुं जोइयें, तेथी तमें जाउ अने अमेज ए राक्षसना मुख आगल रहीशुं. रत्नशेठें ते सर्वने समजावी तेमने संघनी साथें चालता करी साहसिकपणुं आदरी श्रीनेमिनाथनुं श रण पडिवज्जी कायोत्सर्ग करीने पोतें तिहांज रह्या. तेनी साथें पोमिणी संघवीयण तथा कोमलपुत्र ए बेहु जण पण रत्नशाह न जाणे तेवी रीतें कायोत्सर्ग करीने बाना तिहांज शेठनी पासें रह्या.

हवे ते राक्षसें, संघवीने तिहांथी उपाडीने पर्वतनी गुफामांहे घाली बा हेर शिला देइ बेसाड्यो अने ते दुष्ट राक्षस अट्टाट्टहास्य करी बीहीवरा ववा लाग्यो. संघवीयें श्रीनेमीश्वरनुं ध्यान धर्युं.

एवा अवसरें श्रीगिरनारजीने विषे मेघनाद, कालमेघ, गिरिविदारण, कपाट, सिंहनाद, खाटिक, रैवतक, एवे नामें सातक्षेत्रपाल श्रीअंबिकादेवीने नमस्कार करवा आव्या बे एटलामां रैवताचल जाणीयें त्रूटीज पडशे एवो कंपवा लागो, साते क्षेत्रपाल श्रीअंबिकाजी प्रत्यें कहेवा लाग्या के हे स्वा

मिनि! शा कारण माटे श्रीगिरनारजी कंपायमान थाय ढे? तेवारें अंबिकाजीयें ज्ञानें करी जोयुं तो शाहरत्नशंघवीने उपद्रव थतो दीगे. ते जोइ अंबिकाजी साते क्षेत्रपालनी साथें तिहां आवीने राक्षसने पगे जाली जेटले शिलातलें पछाडवा लागी, एटलामां पोतानी आगल दिव्याजरणें नूषित एवा एक मनुष्यने देखती हवी तथा शाहरत्न संघवीनी स्त्री पोमिणी अने कोमलपुत्र ए बेहु जणने पण आगल उजां रह्यां दीगं.

हवें ते दिव्यस्वरूपी नर अंबिकाजीने कहेवा लाग्यो के हुं शंकरनामा वैमानिक देव बुं. पट्टमहादेवसूरियें गिरनारनुं माहात्म्य कह्युं. ते सांजली रत्नशाहें अजिग्रह कीधो. जे गिरनारजीनी यात्रा अवश्य करवी, तिहां सुधी बीजी विगय लेवी नहीं,तेवारें हुं सजामां बेगे हतो,ते में एं शेउनी परीक्षा करवा माटे एटला वानां कस्यां. ए त्रणे मनुष्य रत्न जेवांज ढे, जे माटें ए लेश मात्र सत्त्वथी चलायमान थया नहीं. वली ते देवता, अंबिकाजी तथा सातक्षेत्रपालने कहेवा लाग्यो के, धन्य ढे तमोने जे तमें संघवीनुं सहाय करवा आव्या. हुं जो तमारी साथें युद्ध करुं तो तमारुं कांइ महारी आगल चाले नहीं कारण के हुं वैमानिक देव बुं. तो पण तमारा साहसनी प्रशंसा करुं बुं. एवुं कही संघवीने पगे लागी अपराध खमावी त्रणे जणने उपाडी संघमांहे मूकीने देवता पोताने स्थानकें गयो.

इहां सर्वने हर्ष उपनो हर्षजंजा वजडावी अंबिका अने क्षेत्रपाल पण गिरनारें आव्या ते पण संघवीनी साथें गिरनारना पाहाड उपर चड्या. श्रीनेमीश्वर जगवानने प्रणाम कीधो. गजेंद्रपदकुंमे जइ स्नान करी सोनाना तथा रूपाना कलश जरी गंधोदकें महमिकायें अजिषेक कस्यो, रत्नशाहें कोइक लेपमय बिंबने अजाणतां घणा सुगंध जलें करी न्हवण पूजा करतां ते प्रतिमा गली गइ तेवारें संघवी पश्चात्ताप करतो कहेवा लाग्यो के हा हा मुजने तीर्थजंगनुं पाप लागुं! हवे हुं ए पापथी केम बूटीश!!! एवो खेद करी अजिग्रह कीधो के जेवारे हुं ए तीर्थोद्धार करुं तेवारेंज जोजन करुं तिहांसुधी महारे जोजन करवुं नहीं.

एवो निश्चय करी संघना रखोपा माटे पोताना बे जाइनें राखीने पोतें अंबिका देवी आगल जइ बेगा. बे माससुधी उपवास थया तेवारें अंबिकाजीयें आवी कह्युं हे वत्स! उग अने महारी साथें कंचनबलानक तीर्थे

ने विषे चाल. एम कही अंबिकाजी आगल चाल्यां अने तेमनी पाछल र त्नशाह चाल्यो जाय अनुक्रमें कंचनबलानक तीर्थें गया तिहां अढार प्रतिमा रत्नमय अढार हेममय, अढार वज्रमय अने अढार रौप्यमय एम बहोत्तेर प्रतिमा दीठी, तेवारें हर्ष उपनो तेथी भूख तृषा सर्व वीसरी गइ.

हवे शेठने अंबिकायें कह्युं तहारुं मन माने ते एक प्रतिमा ले. शेठें रत्न मयबिंब लीधुं अंबिकायें कह्युं आगल काल विषम आवशे म्लेछराजा था शे तेवारें ए प्रतिमा रही शकशे नहीं तेमाटे वज्रशिलामय बिंब ले. शेठें पण ते वचन सत्य जाणीने वज्रशिलामय बिंब लीधुं अने देवीने पूछ्युं ए बिंब वज्रमय घणुं भारी छे माटें केवीरीतें लइ जाउं? देवीयें कह्युं काचें सूत्रें वींटी सूत्रनो छेहडो हाथमां झाली चाल्यो जा, पण पाछुं वली जोइश मां. शेठ एमज लइ चाल्यो घणी भूमि उलंघी पण हाथमां लगार मात्र भार जणायो नहीं तेथी संघवीयें जाण्युं प्रतिमा आवे छे के नथी आवती? ए वी शंका आणी पाछुं वली जोयुं तो बिंब तिहांज स्थिर थइ रह्युं घणा प्र कारें उद्यम कस्यो पण बिलकुल हाले नहीं, तेवारें तिहांज प्रासादनी रच ना करी; श्रीनेमिनाथजीनी प्रतिमानी पूजा करीने पछी पारणुं कस्युं, सर्व संघें पण पूजा करी. एम तिहां घणा दिवस रही मनना मनोरथ पूर्ण करी पछी संघवी श्रीशेत्रुंजयनी यात्रा करवा चाल्या.

अनुक्रमें श्रीशत्रुंजयें आव्या. यात्रा कीधी साधर्मिकवात्सल्य प्रमुख कार्य कस्यां. एवी रीतें घणा तीर्थोनी यात्रा करी क्षेमकुशलें काश्मीरदेशें नवफूल पाटणे पोताने घरे आव्या. राजायें नगर प्रवेशादिक महोत्सव कस्या. पछी ते शेठ, नवानवां जिनशासननां कार्य करी जिनशासननो प्रभाविक थयो. एम यात्रादिक कार्यें करी पण श्रीजिनशासननो प्रभाविक थाय, ए रत्न संघवीने दृष्टांतें जनमनोरमण कार्य जे करें, ते प्रभाविक थाय ॥

इति तपागछालंकार भट्टारक श्रीहीरविजयसूरिश्वर क्रमात् पट्टप्रभाकर श्रीविजय देवसूरीश्वर विजयमानराज्ये महोपाध्याय श्रीशकलचंद्रगणि शि ष्योपाध्याय श्रीशांतिचंद्रगणिशिष्योपाध्याय श्रीरत्नचंद्रगणिविरचिते श्रीस म्यक्त्वरत्नप्रकाशनामनि सम्यक्त्वसप्ततिकाबालावबोधे अष्टप्राभाविकस्वरूप निरूपण नामा षष्ठोधिकारः समाप्तः ॥ ६ ॥

हवे समकेतनां पांच भूषणनुं सातमुं द्वार कहे छेः—

॥ समत्त भूसणाइं, कोसल्लं तिब्ब सेवणं भत्ती ॥ थिरया पभावणाविय, भावछं तेसि वुछामि ॥ ४० ॥ अर्थः—ए आगल कहेशे ते पांच (समत्तभूसणाइं के०) समकेतनां भूषण कहीयें. जेम पुरुषने मुकुट, कुंमल, हार, अर्द्धहार, कटिसूत्र, मुद्रिकादिक भूषण छे तेणें करी पुरुष शोभायमान देखाय छे तेम समकेत पण ए पांच भूषणें करी शोभायमान देखाय ते पांचे भूषणनां नाम कहे छे.

१ एक (कोसल्लं के०) कुशलपणुं एटले श्रीसमकेतना क्षायिक, क्षयोपशमादिक जे भेद कह्या छे तेना जाणवाने विषे दक्षपणुं होय. तथा बीजा पण दिनकृत्य, रात्रिकृत्य, पक्षकृत्य, चातुर्मासिककृत्य, संवत्सरकृत्य, जन्मकृत्यादिकने विषे जे निपुणपणुं होय तेने कौशल्य कहीयें.

२ बीजुं (तिब्बसेवणं के०) तीर्थ जे जिनजन्मादिक कल्याणकनी भूमि तेनुं सेवन करवुं ॥ उक्तं च ॥ जम्म दिरका नाणं, तिछयराणं महाणुभावाणं ॥ जछयकिर निवाणं, आगाढं दंसणं होइ ॥ १ ॥ अथवा जंगम तीर्थ जे आचार्य, उपाध्याय, महानुभाव अणगार, तेमना विनय वेयावच्चादिकनुं करवुं ते तीर्थसेवन कहीयें.

३ त्रीजुं (भत्ती के०) भक्ति करवी ते जे समकेतधारी होय तेनो विनय वेयावच्च श्लाघा करवी तेने भक्ति कहीयें तिहां देवगुरुनी भक्ति करवी.

४ चोथुं (थिरया के०) स्थिरता ते कोइ देव दानव आवीने चलावे तो पण चले नहीं मनमां विचारे के जेवारें तेवारें जीव मोक्ष फल जे पामशे ते ए समकेतथीज पामशे, माटे एनी आस्था राखवी. यतः ॥ चारित्र याने भग्नेपि, गुणमाणिक्यपूरिते ॥ तरंत्येव महांभोधौ, सम्यक्त्वफलकग्रहात् ॥१॥ ध्यानं दुःखनिधानमेव तपसः संतापमात्रं फलं, स्वाध्यायोपि हि वध्य एव कुधियां तेभिग्रहाः कुग्रहाः ॥ अश्लाघ्या खलुदान शीलतुलना स्तीर्थादियात्रा वृथाः, सम्यक्त्वेन विनैवस्यादपिच यत्तत्सर्वमंतर्गडुः ॥ २ ॥ एवी समकेतने विषे श्रेणिकादिकनी पेरें स्थिरता राखवी.

पांचमुं (पभावणाविय के०) प्रभावना ते श्रीजिनशासननी उन्नत्तिनुं करवुं मनमां ए प्रमाणे विचार राखवो के जेणे करी श्रीजिनशासननी दीप्ति थाय एवो प्रकार कह्यो छे, तेनीज शोधमां रहेवुं अने छतीसामर्थ्ये ते

जिनशासननी दीप्ति पण करे तेने प्रनावना कहीयें. (तेसि के०) तेनो (नावञ्च के०) नावार्थ आगली गाथायें (वुञ्चामि के०) कहीशुं. ४०

हवे पांच नूषणमांहेला पहेला कौशल्यनुं स्वरूप कहे ढेः–

॥ वंदण संवरणाइ, किरिया निउणत्तणं तु कोसल्लं ॥ तिञ्चनिसेवाय सयं, सविग्गं जणेण संसग्गी ॥४१॥ अर्थः–(वंदण के०) देववंदना, गुरुवंदना तथा (संवरणाइ के०) संवरण ते पच्चरकाण प्रमुख आदि शब्दथकी षडावश्यक, पौषध, सामायिक, स्नात्रविधि, सत्तरनेदें पूजानोविधि प्रमुख सर्व कार्य लेवां. ते संबंधि जे (किरिया के०) क्रिया तेने विषे जे (निउणत्तणं के०) निपुणपणुं होय ते (तु के०) वली (कोसल्लं के०) कौसल्पपणुं कहीयें जेमाटे श्रावक जो सर्वक्रियाने विषे निपुण होय तो अनार्यदेशने विषे पण धर्मप्रवृत्ति चलावे जो एक श्रावक निपुण होय तो घणाजीवोने समकेत तथा देशविरति सर्वविरति पमाडवानुं कारणनूत थाय जे श्रीजिनशासनने विषे निपुण होय तेनां त्रणवानां प्रशस्त थाय ॥ यतः ॥ तउ गणा सुसीलस्स सुव्वयस्स सुगुणस्स समेरस्स सुपच्चरकाण पोसहोववासस्स पासञ्चा नवंति तंजहा १ अस्सिलोए पसञ्चे नवति २ उववाए पसञ्चे नवति ३ आयातिपसञ्चा नवति, एवं तउ गणानि सीलस्स निवयस्स निगुणस्स निमेरस्स निपच्चरकाणपोसहोववासस्स गरहिया नवंति तं जहा १ असीलोए गरहिए नवति २ उववाए गरहिए नवति ३ आयाति गरहिया नवतित्ति ॥ ए गाथाना पूर्वार्द्धनो अर्थ कह्यो उत्तरार्द्धनो अर्थ कथा आव्या पढी कहेवाशे.

हवे ए कौशल्यताने विषे उदायी राजानो संबंध कहीयें ढैयें. राजगृही नगरीयें श्रेणिकराजानो पुत्र अशोकचंद्र तथा अपरनाम कोणिक राज्य पाले ढे. तेने पद्मावती नामें पटराणी ढे तेनी सायें विषयसुख नोगवतां कोइ देवतानो जीव पुण्यवंत आवी गर्नपणे उपनो ते गर्नें रह्या पढी राजानो घणो उदय थयो माटे ते पुत्र जन्म्या पढी तेनुं नाम उदायिन दीधुं. एकदा प्रस्तावें मावी सायल उपर पुत्रने लइ श्रेणिकनोपुत्र अशोकचंद्र राजा नोजन करवा बेठो ढे एवामां बालक मूतरवा लाग्यो ते मूतरनी धारा नोजननी थालीमांहे पडी तो पण पुत्र उपर प्रेम ढे माटे विचार्युं जे रखेने ए बालकने मूत्रनो रोध थाय? एवुं चिंतवी एमज मूतरवा दीधो.

पढी ते मूत्रधारासहित नोजन ढांकीने थाली अणधोइ हाथ अण

धोया थका बीजी रसवती लइ जमवा लागो. ते देखी चेलणामाताने हासुं आव्युं, तेवारें कोणिकें हास्यनुं कारण पूछवाथी चेलणामाता कहेवा लागी के सांभल हे पुत्र! तुं जेवारें गर्भमां आव्यो, तेवारें मुजने श्रेणिकराजाना कालजां खावानो दोहोलो उपन्यो ते अभयकुमारें श्रेणिकने सूवाडी तेना हिया ऊपर मांस पाथरी कापी कापी मांसना खंम मुजने आपीने महारो दोहोलो पूर्ण कस्यो. अनुक्रमें तहारो जन्म थयो, तेवारें में जाण्युं जे ए पुत्र पितानो घातक थाशे, तेमाटे में तुजने उकरडे नखाव्यो ते वात श्रेणिकें जाणी मुजने गालो दइने उकरडाथकी पाछो अणाव्यो. उकरडामां तहारी आंगलि कोइक जीवे करडी ते आंगलि पाकी तेनी वेदनाथी तुं रडवा लाग्यो त्यारें श्रेणिकें तहारी आंगुली मुखमांहे घाली राखी तेथी तुजने शातां थइ अने उंघ आवी ते वखत तहारी आंगुली पाकी हती ते फूटी पडी तेना परुथी राजानुं महोडुं भराणुं तो पण विचास्युं जे आंगुली मुखमांथी काहाडीश तो रखेने ए बालकनी उंघ जती रहे? तेमाटे मुखमांथी काढी नहीं तुं जाग्यो तेपछी आंगुली काढीने मुखथुंकी परु बाहेर नाख्युं, तुजने वेदना समी गइ ते आंगुली मुखमां राखतां राखतां रुजी ने सारी थइ एवी रीतनो तहारा उपर तहारा बापनो प्रेम हतो ते आज तुं तहारा बापने काष्टपिंजरमां नाखीने दिनप्रत्यें नाडी मरावे छे अने तुं सुखें भोजन करवा बेठो. ए कारण माटे संसारनुं स्वरूप मातुं देखीने मुजने हांसुं आव्युं.

ते वात सांभली कोणिक, लोहनो दंमलेइने काष्टपिंजर भांजवामाटे बापने बाहेर काढवा चाल्यो. तेनें आवतो देखतांज श्रेणिकें जाण्युं जे मुजने मारवा आवे छे ते अपमृत्युना भयथी तालपुट विष खाइने श्रेणिकें काल कस्यो. आयुखानो निकाचितबंध हतो माटे मरीने नरकें गयो. तेथी कोणिकने घणुंज डुःख लागुं, शोक करवा लागो, पछी ते जग्या देखे तेवारें बाप सांभरी आवे तेथी कोणिकें विचास्युं जे महारे आंहीं न रहेवुं पछीएक सुजगा जोइने चंपानगरी वासी राजगृही नगरी मूकी चंपामां आवी रह्यो.

अनुक्रमें कोणिकें त्रण खंम साध्या कारिमा चौद रत्न करी तेरमो चक्रवर्त्ती कहेवाउं. एवी बुद्धिथी वैताढयनी तिमिस्रागुफाने दंमरत्नेंकरी उघाडवा गयो गुफाने दंमरत्ननो प्रहार दीधो. तिहां गुफाधिपति जे कृतमाल देवताते कोपें चडयो हतो तेणें कोणिकनें सैन्यसहित बाली भस्म कीधो को

णिक मरीने छठी नरकपृथ्वीयें गयो. तेने पाटें उदायी राजा राज्यें बेठो.

हवे उदायीराजाने पिताना दुःखने लीधे चंपानगरीमां रहेवुं सोहाय नहीं. तेथी प्रधानने कह्युं के कोइ रूडुं स्थानक जूउ. तिहां नगरवसावीने रहीयें.

मंत्रीश्वरें स्थानक जोतां जोतां गंगातटें अन्निकासुत आचार्यनी करोडी पडी हती तिहां पाम्मलवृक्ष ऊग्यो छे तेनी पासें आव्या तिहां एक सूडो मुखवि कासी रह्यो छे तेना मुखमांहे सहेजें आवी जीवडा पडे छे तेनो सूडाने आहार थाय छे ए वृत्तांत देखीने प्रधाने विचार्युं जे इहां सूडाना मुखमांहे सहेजें प्रयासविना जीव आवी पडे छे तेहज सूडाने आहार थाय छे तेम ए जगायें नगर वसावीने वास करवाथी राजा अने प्रजा बेहुने सुखें प्रया सविना आजीविका चालशे. एवुं निर्धारी नगरस्थापनाने काजें सूत्र दीधुं. नगर वसाव्युं पाम्मलवृक्ष तिहां हतुं माटे पाडलीपुर नाम दीधुं. उदायी राजा तिहां आवी वश्यो ते उदायीयें घणीपृथ्वी जीतीने पोताने वश करी, गुरुसमीपें सम्यक्त्व मूलद्वादशव्रत उच्चार करी परमश्रावक थयो. चार पर्वना अहोरत्ता पौषध करे प्रतिदिवस देवपूजा कस्या पछी मुखमां पाणी घाले घरमां पोषधशालायें उन्नय संध्यायें पडिक्कमणुं करे. तेथी उदायीरा जा रुषि कहेवाणो उदायिराजर्षी एवुं नाम पड्युं, जिनशासननो परमन्नक्त थयो, जिनशासननी सर्वक्रियाने विषे निपुण थयो.

हवे उदायीराजायें युद्ध करीने कोणिक राजाने मास्यो तेहनुं सर्वस्व लीधुं तेनो पुत्र असमर्थथको उज्जयणीना राजानी चाकरी करवा लाग्यो. तेणे एकदा प्रस्तावें उज्जयणीना राजाने कह्युं जो तमे सहाय करी महारुं राज्य पाछुं अपावो तो हुं उदायीराजाने मारी आवुं, उज्जयणीना राजायें जाण्युं जे सहेजें माथाथकी वैरी जाय छे तो हवे बीजुं शुं जोइयें? एवुं विचारी तेने संबल आप्युं ते दुष्टात्मा तिहां आवी उदायीराजाने मारवाना घणा उपाय करे छे, पण लाग पामतो नथी पछी उदायीना घरमां यतिउनो प्रवेश निर्गमन देखी विचार्युं जे एवो वेष धारण करवाथी महारुं कार्य थाशे तेवारें कपट वैराग्य देखाडी गुरुनी पासेंथी दीक्षा लीधी. पांच समिति त्रणगुप्ति शीखे, गुरुने खुशी करे, विनयवैय्यावच्च करी गुरुने वश करे, एम शोल वर्षसुधी कपट दीक्षा पाली, पण जातें अन्नव्य छे माटे करुणारसें रोम मात्र नेदाय नहीं. केवलराजाने मारवाने अर्थें चारित्रशुद्ध पाले छे.

एकदा आचार्य पाडलीपुर पधास्या छे. उदायीराजा पर्वदिवसने विषे प्रभातें उठी, प्रतिक्रमण करी श्रीमहावीरनी प्रतिमा पूजी, उपाश्रयें आवी, गुरुमुखें पौषध उच्चरी, १८४ स्थानक साचवतो,द्वादशावर्त्त वंदन देइ, व्याख्यान सांभली, चैत्यपरिपाटी करी, आपणा महोलने विषे पौषधशालायें जइ पुस्तक वांचनायें करी पौषध आराधे. संध्यायें प्रतिक्रमण कराववा गुरुने तेडुं मोकल्युं, गुरुयें साधुउने कह्युं कोण यतिपरवास्या छे जे महारी सार्थे आवे? तेवारें ते अभव्यसाधु उपधि लइने तैयार थयो कहे पधारो स्वामी! हुं आपनी सार्थे आवुं छुं. गुरु भद्रकभावें कपट अणजाणतो सार्थे तेडी गयो. तिहां रजोहरणें करी राजाने प्रतिक्रमण करावे, राजा प्रतिक्रमण करी, सद्याय करी, पोरिसी भणावी, विधि संथारो पाथरी, संथराविधि भणी, चउसरण गणी, नवकरवाली गणी, धर्मजागरण करी, कुर्कुटनी पेरें पग पसारीने सूतो, क्रियाध्यायें थाक्या माटें उंघ आवी गइ तेमज गुरुने पण उंघ आवी गइ. तेवारें पहेलो अभव्य साधु कपटनिद्रा करी उठ्यो कंकोलहनी पाली गुप्त राखी हती ते काढीने राजाना कंठमां मारी राजायें स्मरणसहित काल कीधो. अने पहेलो अभव्यसाधु शरीर बाधानुं मिषकरीने तेनुं कारण द्वारपालने समजावीने बाहेर नीकली गयो.

रुधिरप्रवाह गुरुने संथारे आव्यो. गुरु जाग्या अजवाली रात्रि हती माटे अजवाले जोयुं तो रुधिर वहेतुं दीठुं तेनुं मूल जोवा लाग्या तो राजाने गले पाली दीठी, पासें जोयुं तो कुशिष्य देखातो नथी तेवारें गुरुयें विचास्युं जे ए कुशिष्यनुंज काम करेलुं छे. पछी गुरुयें विचास्युं जे प्रभातें जिनशासननो उड्डाह थाशे, माटें अमने पण एज श्रेयस्कर छे. एम निरधारी गुरुयें पण अणसण आराधना करी गलें पाली भरावी काल कीधो. राजा तथा गुरु बेहु आराधक थइ स्वर्गें गया. प्रभातें कुशिष्यनो उड्डाह थयो. ते अभव्यने घणुए शोध्यो पण किहांय मल्यो नहीं. नासीनें उज्जयणीयें जतो रह्यो. उज्जयणीना राजानी आगल स्वरूप कह्युं. राजायें तेने महा अधर्मी दुष्ट जैनशासननो उड्डाहकारक जाणी देशबाहिर काढी मूक्यो. जे माटे पापीने क्यांय जगा मले नहीं. अने धर्मीनी सर्वत्र जय छे ए समकेतना कौशल्य नामें भूषणनी उपर उदायी राजानुं दृष्टांत कह्युं.

हवे गाथाना पाछला बे पदना अर्थें करी बीजुं तीर्थसेवा भूषण कहे छे.

(तिछ के०) तीर्थ जे श्रीशत्रुंजय, उज्ञयंतगिरि, अष्टापद प्रमुखनी निरंतर (सेवाय के०) सेवा ते (सयं के०) स्वयं पोतें करवी यात्रायें जइ तिहां केटलाएक दिवस रही पूजा करवी जो सामग्री होय तो अंतसमय जाणी पुत्रादिकने घरनो भार सोंपी पोतें निश्चिंत थइ संबल लेइ तीर्थनी सेवा करवी तथा (संविग्गजणेणसंसग्गी के०) संविग्नजन एटलें संवेगी जननी साथें संसर्ग करवो. जेमाटें संवेगीनो संसर्ग करतां थकां पोताने संवेगनी प्राप्ति थाय. तेथी वली बीजा घणा जीवोने ते संवेगी करे, जेम फूल स्वयं सौगंधिक तो हतां ते तेलने सौगंधिक करे तेथकी मोघरेल चंपेलादिक तेल लगाडे थके पुरुषमां सुगंध थाय ए दृष्टांते जाणवुं ॥ यतः ॥ वसइ गुरुकुले निच्चं, जो गव्वं उवहाणवं ॥ पियंकरे पियंवाइ, से सिरकं लहु मरहइ ॥ १ ॥ इति उत्तराध्ययने ॥ तथा ॥ एसोपुण संविग्गं, संविग्गं सेसया ण जणयंतो ॥ कुग्गह विरहेण लहु, पावेइ मोरकं सया सोरकं ॥ १ ॥ इति एकादशे साधुपंचाशके ॥

जेम श्रीगौतमस्वामी तथा केशीगणधर ए बेहु मले थके तेनो धर्मवाद सांभलीने घणा जीव संवेग पाम्या. तेमाटें सुविहित, शुद्धप्ररूपक, ज्ञानवंतनी सायें गोष्टि करवी. पण मिथ्यादृष्टि तथा भ्रष्टाचारी कुमत्यादिकनो संसर्ग न करवो. केम के तेनुं ज्ञानपण नरकपातने अर्थें थाय ॥

हवे एने विषे नागदत्तनुं दृष्टांत कहीयें छैयें. कुसुमपुर नगरने विषे धने करी धनद समान एवा नागचंद्र नामा शेठ वसे छे तेनी नागश्री नामें भार्या छे, तेने घणा मनोरथें नागदत्त नामें पुत्र थयो. ते बालपणे पण प्रियधर्मे दृढ धर्मी थयो. बालपणामां बार व्रत पालनार, तप करनार, उपधान वहेनार देवभक्ति, गुरुभक्ति कारक नवतत्त्वज्ञाननो विज्ञानवंत थयो.

एकदा प्रस्तावें नागदत्त चैत्यपरिपाटी करतां कोइ एकने श्रीजिनभवनने विषे अपूर्व आभरण,अपूर्व फूल,श्रीखंड, केसर,कर्पूर, अगरु, धूप, अने दीपश्रेणियें करी महोटे विस्तारें पूजा करतो देखीने चमत्कार पाम्यो. अने मनोरथ करवा लाग्यो के एवी पूजा हुं पण करुं तो मने आनंद थाय. ॥ यतः ॥ स्वर्गस्थितानामिहजीव लोके, चत्वारि चिन्हानि वसंति देहे ॥ दान प्रसंगो मधुरा च वाणी, देवार्चनं सद्गुरुसेवनं च ॥ १ ॥

पछी ते वात पोताना पिता नागचंद्रशेठनी आगल करी, के हे पिताजी! आजे रुषजदत्तशेठनो पुत्र जिनदत्त नामें छे,ते प्रवहणथकी घणुं इव्य उपार्जी आव्यो छे. तेणे देवगृहमां अपूर्व पूजा करी छे. एवी पूजा आजपर्यंत में क्यांहिपण दीठी नथी तेमाटे एवी पूजा करवानो मुऊने जाव छे,तैरे नागचंद्रश्रेष्ठियें कह्युं,आपणी पासें पण इव्य घणुं छे माटे सुखें पूजानो मनोरथ पूर्ण करो. नागदत्तें कह्युं तमारा इव्यें हुं मनोरथ पूर्ण न करुं, हुं पण प्रवहण लेइ परदेशें जइ इव्य कमावी एवी पूजा करुं तो मनोरथपण पूर्ण थाय.

शेठें पुत्रनो हठ जाणी प्रवहणे चढवानी आज्ञा दीधी, तेणें पांचशो वाहाण करियाणांनां जर्यां.गाममां पडह वजडाव्यो के जेने प्रवहणें चडी देशांतरें जावुं होय ते सुखें आवजो. जे जेम केशे,तेम जाडावगेरेनो ठीक बंदोबस्त करी आपीशुं, माटें कोइ वातें सीदाववुं नहीं. एवुं सांजली घणां लोक तेनी साथें चालवाने तैय्यार थइ वाहणें बेठां. अनुक्रमें रूडे मुहूर्त्तें सर्वे सामग्री करी पांचशें वाहण लइ चाल्यो. वाहणो वेगें चाल्यां जाय छे, एवामां अकस्मात् वादलां थयां मेह अंधार्यो तोफान लागवाथी वाहण उन्मार्गें पड्यां. जेम उन्मत्तशिष्य गुरुनी आज्ञाना वशथकी टली जाय, तेम नाखवाना वशथकी वाहाण टली गयां. पर्वतोनी वचमां आवी गया. एवामां एक वाहाण बूड्युं ते वाहाणमांहेला मरीगयेला माणसोने पाणीमां तरतां लोकोयें दीठां, ते जोइ सर्व वहाणोनां लोक जयज्रांत थयां.

एवामां एक वाणीयो कंठगतप्राण थयो हतो, तेणें हाथनी संज्ञायें पाणी माग्युं, नागदत्तें तेने पाणी लावी पीवराव्युं. तेथी कांइक स्वस्थ थयो थको नागदत्तें पूछ्युं के,तुं कोण छो ? तेणे कह्युं हुं कोसंबी नगरीनो रहेवासी धनश्रेष्ठीनो पुत्र छुं. हुं एकशो वहाण लइने चाल्यो, ते पापने उदयें वायरे करी प्रेर्यां प्रवहण गिरिकुंमलने विषे पड्यां. इहां चारे बाजु पर्वत आवी गया, माटें वायरानो संचार न होवाथी वहाण ठामनां ठाम पडी रह्यां हाले चाले नहीं. अनुक्रमें जातुं पाणी खुटुं जूख तृषायें माणस सर्वे मरण पाम्यां. हुं एक जीवतो रह्यो छुं. ए में महारुं वृत्तांत कह्युं. हवे तुं मुऊने परलोकनो संबल आप. तेवारें तेने नागदत्तें ॥ पाणाइवायं मलियं.चोरिकं मेहुणं दविण मुछं ॥ कोह माणं मायं, लोजं पिज्जं तहा दोसं ॥ १ ॥ कलहं अप्नरकाणं, पेसुन्नं रई अरइ समाउत्तं॥ परपरिवायं माया मोसं मिछ

त्तसह्लं च ॥ २ ॥ वोसीरसूरमाइ, मुस्क मागसंसग्ग विग्घनूयाइं ॥ डुग्गइ निबंधणाइं, अ्ठारस पावठाणाइं ॥३॥ एगो हं नव्थि मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सइ ॥ एवं अदीणमणसो, अप्पाणं मणुसासउ ॥ ४ ॥ एगो मे सासउ अप्पा, नाणदंसणसंजुउ ॥ सेसा मे बाहिरानावा, सव्वे संजोग लरकणा ॥ ॥ ५ ॥ संजोग मूला जीवेण, पत्ता डुरकपरंपरा ॥ तम्हा संजोग संबंधं, स व्वं तिविहेण वोसिरियं ॥ ६ ॥ अरिहंतो मह्देवो, जावजीवं सुसाहुणो गुरु णो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इयसम्मत्तं मए गहियं ॥ ७ ॥

ए प्रमाणें ते कुमरें संबल आप्युं तेने लइने शुजध्यानें परलोकें पहोतो. देवलोकें जइ उपनो. तिहां देवांगना साथें रमवा लागो. ए वृत्तांत सांजली सर्वलोक नयभ्रांत थयां थकां नागदत्तने गालो देवा लाग्यां. कहेतां हवां के तें अमने आपदामां नाख्यां अमें इहां नूख तरषथी मरण पामशुं.

एवा समयें सिंहलद्वीपना राजायें एवी प्रतिज्ञा करेली ठे, के कोइ पण पुरुष आपदामां पड्यो होय, ते वात राजाना सांजलवामां आवे, तो तेनी आपदा टाल्या विना राजा जमतो नथी. ते पांचशें वहाण पर्वत कुंजलने विषे पडेलां देखी राजाना पुत्रें जइ पोताना पितानी आगल, ए वात कही. ते सांजली राजायें पडह वजडाव्यो के जे कोइ प्रवहणने इहां लइ आवे, तेने हुं लक्ष टका सुवर्णना आपुं. ते पडहने एक वृद्ध नाखवो ठव्यो तेणें राजानी पासेंथी लक्ष सुवर्ण लइ पोताना पुत्रने आप्यां. पोतें पुत्रपासेंथी विदायगिरि मागी एक लघु प्रवहण लइने समुद्रमांहे चालतो नागदत्तनी पासें आव्यो, तेने देखी नागदत्त हर्ष पाम्यो.

पठी ते वृद्ध नावडीउ वहाणने बाहेर काहाढवा माटें उपाय कहेवा लाग्यो जे आ पर्वतना शिखरने विषे एक महोटुं चैत्य ठे, तिहां महोटी नंनिका ठे ते शिखरनी उपर तमारामांथी कोइएक पुरुष चडीने ढक्का वजाडे, ते ढक्काना शब्दथी तिहां जारंम पंखी घणां ठे, ते उडशे तेनी पांखोना वायराने योगें सर्व वहाणो चालवा मांमशे. ते पाधरा इहांथी सिंहलद्वीप ढूकडो ठे, तिहां जाशो. तिहां गया पठी सर्वजनोने कल्याण ठे. परंतु जे एक जण ढक्का वजाडवा जाशे, तेनुं मरण थाशे. कारण के तिहां कांइ फल जल अन्न, मलशे नहीं. एटलुं बोलीने नावडीयो ठानो रही गयो.

पठी कुमरें सर्वजनोने पर्वतना शिखर उपर चडवा माटे पूठ्युं, पण

कोइ हा नणे नहीं. तेवारें कुमरें विचार्युं जे एक महारा मरणथी घणा लोक जीवता रहेशे, माटें हुंज जाउं. एवुं साहस आदरी पर्वतना शिखरने विषे चडीने ढक्का वजडावी, तेना नाद थकी घणां नारंम पंखी उड्यां, तेनी पांखना वायराने योगें वहाण चालतां थयां ते सिंहलद्वीपें आव्यां. राजा हर्ष पाम्यो कोइ पासेंथी दाण पण लीधुं नहीं पण वहाणना मुख्य वेपारी नागदत्त न आव्यानी खबर सांजलीने खेद पामतो बीजानी उपर अजाव करवा लाग्यो सर्वलोकोयें वसाणां वेची नवां करियांणां लइने वहाणो जर्यां. घणो लाज लइने पोताना नगरने विषे आव्यां, नागचंद्र शेठ तेमनी साहामो आव्यो पण पुत्रने दीठो नहीं अने लोकोना मुखथी नागदत्तनुं वृत्तांत सांजली घणुंज डुःख पामतो देखी बीजा वाणीया कहेवा लाग्या के, हे शेठ! तहारा पुत्रें साहस अंगीकार करीने अमो सर्वने जीवता राख्या, अमें अमारे घरें कुशलें आवी पहोता, ते नागदत्तना पसायथी समजजो. एवुं कही सर्वलोक डुःख धरे छे.

एवामां आकाशमार्गें एक विमान आवतुं दीठुं, तेने सर्वलोक उंची नजर करी जोवा लाग्यां. थोडीशी वारमां विमान पण जूमियें उतरी आव्युं, तेमांथी नागदत्तकुमर स्त्री साथें उतरी आवीने पिताने पगे लागो, तेने जोइ सर्वलोको चमत्कार पाम्यां. तिहां नागदत्त पोतानुं वृत्तांत कहेतो हवो, के हुं सत्त्व आदरी पर्वत शिखरें चढी ढक्का वजाडी तिहांथी पाछो उतरी नीचें श्रीऋषजदेवजीने देहरे जइने प्रतिमाने वांदी पूजी उपवास करी बेठो. केटलाएक दिवस वीत्या पछी तिहां आजरणालंकृत शरीरवालो दिव्यरूप धारण करनारो एवो एक पुरुष आव्यो,ते पण प्रतिमाने वांदी पूजी बाहिर आव्यो तेने में हाथ जोडी पूछ्युं स्वामी! तमें कोण छो? तेणें कह्युं के हुं वैताढ्यपर्वतनो रहेवासी विद्युत्प्रजनामा विद्याधर बुं हमणां हुं नंदीश्वरद्वीपें देव वांदवा गयो हतो तिहांथी फरी आहीं देव वांदवा आव्यो. बुं इहां तुजने देखी अवलोकनी विद्याने पूछ्युं,ए पुरुष कोण छे? विद्यायें तहारुं सर्ववृत्तांत कह्युं ताहारुं चरित्र सांजलीने हुं हर्ष पाम्यो. हुं महारी पुत्रीनुं पाणिग्रहण करवा तमोने विनति करुं बुं. तथा वली तेनी साथें हुं तमोने आकाशगामिनी विद्या आपुं, ते पण ल्यो. एम कही ते विद्याधरें विद्याशक्तियें करी तिहां पोतानी पुत्री अणावी परणावी दीधी. विविधप्रका

रनां भोजन अणावी मुजने घणादिवसना उपवासनुं पारणुं कराव्युं. आ काशगामिनी विद्या आपी, महोटा पुरुष प्रसन्न थया तो शुं न करे ?

पछी में कह्युं म्हारा माता पिता घणुं दुःख करतां हशे, माटें म्हारे न गरें पहोचतो करो. तेवारें तेणें मुजने घणी ऋद्धिसहित विमान आपी इ हां पहोंचाड्यो. ते वात सांभली सर्वलोक हर्ष पाम्यां. महोत्सव सहि त कुमरने नगरप्रवेश कराव्यो.

हवे नागदत्तें विचार्युं जे जेहने अर्थें हुं देशांतर गयो हतो, तेना पसा यथी हुं घणी ऋद्धि पामीने कुशलें क्षेमें घेर आव्यो, तो हवे महोटा वि स्तारें श्रीजिनेश्वरनी पूजा करुं. एम चिंतवी जिनमंदिरमां नित्यप्रत्यें नव नवां विस्तारपूर्वक नवनवा प्रकारनी पूजा करे. तेथी घणा जीव बोधबी ज पामे. वली साधुजनने शुद्धमान अशन, पान, खादिम, स्वादिम, वस्त्र, पा त्रादिकने दानें करी लक्ष्मीने कृतार्थ करे. एम छेहले समयें वैराग्य पामी सु स्थित आचार्यनी पासेंथी दीक्षा लइ उग्र तपश्चर्या करी अंतें अनशन आ राधि स्वर्गरूप श्रेष्ठपद पाम्या. ए तीर्थ सेवाने विषे नागदत्तशेठनी कथा कही.

हवे भक्तिभूषण तथा प्रभावनाभूषणनुं दृष्टांत कहे छे.

॥ भत्तिं आयर करणं, जहोचियं जिणवरिंद साहूणं ॥ थिरया दढ स म्मत्तं, पभावणुस्सप्पणा करणं ॥ ४१ ॥ अर्थः–(भत्तिं के०) भक्ति ते (आयरकरणं के०) आदरनुं करवुं, (जहोचियं के०) यथोचितपणे (जि णवरिंद के०) श्रीजिनवरेंद्र तथा तेमनी आज्ञायें युक्त एवा जे (साहूणं के०) साधुजनो तेमनी भक्ति एटले आदर करवो. हवे जिनभक्ति केवी री तें होय ते ? कहे छे ॥ यतः ॥ तिन्निनिसिहि तिन्निउ, पयाहिणा तिन्नि चेव य पणामा ॥ तिविहा पूया य तहा, अवच तिय भावणं चेव ॥ १ ॥ ति दिसि निरखण विरइ, पयभूमि पमज्जणं च तिरकुत्तो ॥ वमाइ तियं मुद्दा, तियंच तिविहं च पणिहाणं ॥ २ ॥ इयदसतियं संजुत्तं, वंदणयं जो जिणाण तिकालं ॥ कुणइ नरो उवउत्तो, सो पावइ सासयं गणं ॥३॥ ए जिनभक्ति. कही अने साधुनी भक्ति तो वली साधु आवता जाणी सन्मुखजावुं, मस्तकें अंजलि बंध करवो, आसन देवुं, वंदन पर्युपासनानुगमन करवुं, दश प्रकारनुं वैय्यावच्च करवुं, अन्न, पान, वस्त्र, पात्र, पीठ, फलकनुं देवुं, औषध भैषज्य पथ्यादिक सामग्रीना संप्रदान प्रमुख करवे करी साधुनी भक्ति थाय ॥ यतः ॥

भक्तिर्जिनेंद्रस्य गुरोः सुसेवा, क्रियापरत्वं व्यवहारशुद्धिः ॥ जितेंद्रियत्वं सुकृताश्रयत्वं, धन्यस्य धर्मो हृदि वर्त्त तेऽसौ ॥ १ ॥

हवे एने विषे बाह्याभ्यंतररूप कामिनीनो दृष्टांत कहे छेः— राजगृह नगरें अमिततेज नामें राजा छे तिहां एक पारिव्राजक रहे छे. ते विद्या मंत्रें करी जे कांइ नगरने विषे सार वस्तु देखे, तथा स्त्रीरत्न देखे तेने चोरी लइ जाय. तेवारें समस्त पुरनां लोक एकठां मली राजानी आगल पोकार करवा गयां. राजायें तेमने कह्युं के तमें सहु पोतपोताने घेर जइ निश्चिंत थइने सूइ रहो. हुं पांच दिवसमांहे ते चोर पकडीने जो शिक्षा न करुं, तो अग्निमां प्रवेश करुं ! एवुं कही लोकोने विसर्जन कर्युं. पछी राजायें ते चोरनी शुद्धिने अर्थे पोतानां घणां माणसो मोकल्यां, पण चोर हाथ लागो नहीं. एम चार दिवस वीती गया. पांचमे दिवसें राजा पोतें हाथमां तरवार लइने चोरने शोधवा निकल्यो. तेणें संध्या समयें पहेला पारिव्राजकने तंबोलीनी दुकानें पाननां बीडां लेतो दीठो तिहांथी वली सरईयाने हाटें मोघरेल, चंबेली अने केवडानां तेल लेतो दीठो. राजायें विचार्युं जे चोर तो एज जणाय छे. पछी राजा प्रछन्नवृत्तियें तेहनी पछवाडें लाग्यो.

ते पारिव्राजक नगर बाहेर जइने एक जगायें शिला उघाडी भूमिगृह मांहे पेठो. राजा पण तेनी पछवाडे उघाडी तरवार सहित गयो, तिहां चोरीनी सर्व वस्तु दीठी, ते पारिव्राजकें राजाने आव्यो देखी तेने मारवा दोड्यो, राजायें लघुलाघवी कलायें ते पारिव्राजकनी चोटली झाली वश आणी शिर छेदी नाख्युं. पछी राजा ते रात्रियें तिहांज रह्यो, प्रभातें सर्व नगरनां लोकोने तेडीने कह्युं के सहु कोइ पोतपोतानी चीज उलखी ल्यो. तेवारें जेनी जेनी जे जे वस्तुउ हती, तथा स्त्रीयो हती ते सहुयें पोतपोतानी लइ लीधी. तिहां राजानी कीर्त्ति विस्तार पामी.

हवे ते स्त्रीयोमांथी एक स्त्रीने ते पारिव्राजकें कामण कीधां हतां, तेथी ते पोताना पतिने वश थइ नहीं. पतिनी साथें बोले पण नहीं तेवारें तेना धणीयें घणा मंत्र तंत्रना जाणने पूछ्युं. एकें कह्युं के एने पारिव्राजकें कामण कीधां छे, माटें ए पारिव्राजकना हाड दूधमां धोइने एने पीवरावो तो एनां कामण उतरे, तेवारें पारिव्राजक उपरथी राग उतरी जाशे, अने पो

ताना धणी उपर रागिणी थशे. पछी तेना पतियें तेमज कर्युं. तेथी तेनां कामण उतरी गयां, अने पोताना धणी उपर रागी थइ.

हवे एनो उपनय कहे छे. जेम ए स्त्री कामणने योगें ते पारिव्राजकने मूकी अन्य कोइनी उपर अभिलाषा न करे, तेम जे सुश्रावक होय ते पण निःकेवल श्रीजिनधर्मभावित छतो केवल श्रीजिनवर तथा सुसाधुनी उपर प्रेम राखे, परंतु अन्य कोइनी उपर भक्तिराग राखे नहीं. ए त्रीजुं भक्तिराग नामें समकेतनुं भूषण कह्युं.

हवे चोथुं स्थिरता नामें भूषण कहे छे. (थिरया के०) स्थिरता निश्चलता तेने (दढसम्मत्तं के०) दृढ समकेत कहीयें, जे माटे दृढसम्यक्त्ववान् पुरुषने जो देव, दानव,चलाववा मगाववा आवे, तो पण ते चले नहीं समकेतथकी खसे नहीं. अन्यदर्शननी अत्यंत पूजा प्रभावना थती देखे तो पण तेनो लेशमात्र रोमोत्कंप न थाय. समकेत विना बीजा सर्व अज्ञानमार्ग छे, एम माने, वायराथी जेम पूणी उडी जाय छे तेम ए अज्ञानी मिथ्यादृष्टियो संसारचक्रने विषे उडता फरशे एवुं माने ॥ यदुक्तं ॥ चत्तारि पुरिस जाया पसुत्ता तं जहा ॥ एगेपिय धम्मे नो दढधम्मे. दढधम्मे णाम एगे नोपिय धम्मे एगे पियधम्मेवि दढधम्मेवि. एगे पियधम्मे नो दढधम्मे ॥ इति ठाणांगसूत्रे ॥

हवे ए स्थिरता भूषण उपर सुलसानो दृष्टांत कहीयें छैयें, मगधदेशें राजगृहि नगरें प्रसेनजितराजा राज्य करे छे, तेनो नाग एवे नामें सारथिनी प्रियात्मा सुलसानामें स्त्री हती ते नागसारथिने पुत्र नथी तेनो दुःख धरतो शोकातुर थको रहे. तेने सुलसा कहे के हे स्वामी ! तमें दुःख म करो. जे कर्ममां लख्युं हशे, ते थाशे, ते अन्यथा थनार नथी. एम करतां पण जो आपने स्थिरता न रहे, तो अन्यस्त्रीनुं पाणिग्रहण करो, के जेम तेथकी पुत्रप्राप्ति थाय, तो पण रूडुं छे. तेने नागें कह्युं अन्यस्त्रीनुं पाणिग्रहण तो हुं सर्वथा नहींज करुं परंतु अन्यदेव जे खेत्रपालादिक छे तेमनी मानता पूजा करिशुं. जे थकी आपणने पुत्र प्राप्ति थाशे.

सुलसायें कह्युं एक श्रीवीतरागदेवने पूजतां जे थाउ ते भलें थाउ, पण सर्वथा अन्यदेवनुं आराधन तो हुं मन, वचन अने काया ए त्रणे योगें करुंज नहीं. हवे सुलसा एकाग्र मनें त्रिकाल देवपूजा करे, विशेष

थकी साधु नक्ति करे. एकदा प्रस्तावें इंद्रमहाराजें सनामां बेठा. सुलसानी जिनधर्मने विषे स्थिरतासंबंधि प्रशंसा करी. ते एक मिथ्यादृष्टि अदेखा देवतायें सद्दही नहीं. पछी ते देव साधुनुं रूप करी सुलसाने घरे आव्यो. धर्मलाज दइ उनो रह्यो. ते साधुने आवता देखी सुलसा नक्ति रागें उठी थइने वंदन कर्युं अने पूछ्युं स्वामी ! शे कामें पधार्या छो ? साधुयें कह्युं के ग्लान साधुना वेयावच्चने माटें लक्षपाक तेल जोइयें छैयें ते तहारे घेर छे, एवुं सांनलीने लेवा आव्यो छुं. एवुं वचन साधुनुं सांनली हर्ष पामती थकी घरमां जइ सुलसायें तेलनो घडो नरेलो आएयो पण देवप्रनावें ते हाथथी विछूटो थयो, तेथी घडो नांगी पड्यो. तेवारें बीजो घडो लइ आववा लागी, ते पण देवप्रनावें हाथमांथी छूटी नांगी पड्यो, एम सात घडा आएया ते साते नांगी पड्या, तो पण सुलसानो चित्तरूपी घट नांग्यो नहीं. घडा नांगी पड्या तेनुं लगार मात्र पण मनमां चिंतवण थयुं नहीं. जे आ अनागीयो कोण तेल लेवा आव्यो छे, के जेना आववाथकी महारा सात घडा तेलना फूटी पड्या ? एवी वातनी चिंतवणा लगार पण मनमां आवी नहीं. परंतु उलटी एवी चिंतवणा करवा लागी जे धिक्कार छे मुजने हुं अल्पपुण्यवान् छुं जेमाटे महारुं तेल साधुने अर्थें काममां न आव्युं कारज साध्य न थयुं ! एम पश्चात्ताप करवा लागी.

एवी रीतें सुलसानुं मन साधु नक्ति उपर अत्यंत रागी थयेलुं जोइने हार अर्धहारें मंमित पहेलो साधु देवरूपें थइ उनो रह्यो अने सुलसा प्रत्यें कहेवा लाग्यो के माग. माग. हुं तहारी उपर संतुष्ट मान थयो छुं. जे हवा देवसनामांहे इंद्रमहाराजें तहारा गुण वखाएया, तेथकी पण तहारा मां अधिक गुण छे. एवुं देवतानुं बोलवुं सांनलीने सुलसायें कह्युं महारे पुत्र नथी ते तमें प्रसन्न थाउ. जेम महारे पुत्र थाय एवुं कहे छते देवतायें बत्रीश गोली आपी अने कह्युं जे एक गोली खावाथी एक पुत्र थशे एम अनुक्रमें बत्रीश गोली खावाथी बत्रीश पुत्र थाशे. वली पण काम पडे, तेवारें मुजने संनारजे हुं आवीश. एम कही देवता अदृश्य थयो.

पाछलथी सुलसायें विचार्युं जे एकेक गोली खावाथी बत्रीश वखत सूवावड करवानां डुःख नोगववां पडशे माटें बत्रीशें गोलीने एकजवार आरोगी जाउं के जेथकी एकज बत्रीश लक्षणो पुत्र थाय, तो बहु सारुं. जेमा

टे क्रमी सरखां घणां गेकरां थयां तो पण शुं ? अने न थयां तो पण शुं ? ॥ यतः ॥ एकेनापिहि पुत्रेण, सिंहः स्वपिति निर्भयं ॥ सदैव दशभिः पुत्रैर्भारं वहति गर्दभी ॥ १ ॥ एवुं विचारी बत्रीशे गोली एकठी साथे खाधी, तेने लीधे बत्रीश गर्भ एकठा साथें रह्या. तेनो भार खमी शकायो नहीं. तेवारें देवताने संभार्यो तेणें आवीनें कह्युं के, हे सुलसा ! आ तें शुं कर्युं ? हवे तहारे बत्रीश पुत्र महाबलवान् थाशे. परंतु जेम बत्रीशेनो जन्म साथें एकज वखतें थाशे, तेम एमनुं मरण पण समकालें एकठुंज थाशे. ए भवितव्यता कोइ टाली शके नहीं, माटें हवे तहारे चिंता न करवी, तहारी गर्भसंबंधि वेदना हुं टालीश. एम कही ते देव वेदना टाली ने जतो रह्यो. पूर्ण मासें सुलसाने बत्रीश पुत्रनो जन्म थयो, नागसारथि हर्ष पाम्यो, तेणें जन्ममहोत्सव कर्यो, अनुक्रमें महोटा थया यौवन पाम्या, श्रेणिकराजाने ते बत्रीशे परमवल्लभ थया. सदैव श्रेणिकनी पासें रहे.

हवे चेडामहाराजानी सुज्येष्ठा तथा चेलणा प्रमुख सात पुत्री छे ते मां सुज्येष्ठायें श्रेणिकनुं रूप सांभलीने पोतानी पासें छानो तेडाव्यो छे, ते वारें श्रेणिकराजा सलंग खोदावी रथ तैयार करी, तेमां बेसी सुलसाना बत्रीश गेकराने साथें लइने सलंगने रस्तेथी संकेत करेला स्थानकें आ व्यो. सुज्येष्ठाने चेलणा साथें घणो प्रेम छे माटें चेलणा आगल ते वा त कही, तेवारें चेलणायें कह्युं हुं पण तहारी साथें आवीश ! बे जणी रथ ऊपर बेसी चालती थइ संकेतस्थानकें आवी सुज्येष्ठायें कह्युं महारो आभरणनो करंमियो वीसरी गयो छे, माटें रथनें आहीं राखजो, हुं लइ आवुं छुं. एम कही ते करंमीयो लेवा गइ, तेने विलंब थयो तेवारें सुल साना बत्रीश पुत्रें श्रेणिकने कह्युं महाराज ! इहां वैरीनां स्थानकें आपण ने रहेवानुं काम नथी, जो चेडो महाराजा जाणशे, तो आपणने जीवता जावुं मुशकील थाशे. माटें रथ चलावीयें, तेवारें चेलणानो रथ आवतो जोइ तेने सुज्येष्ठा जाणी सलंगना अंधारामां पोताना रथमां बेसाडी ली धी. अने श्रेणिकें रथ चलाव्यो. पाछल बत्रीश रखवाला रह्या, एवामां सु ज्येष्ठा आवी तेणें रथ दीठो नहीं, तेवारें मनमांहे चिंतव्युं जे महारा म नोरथ फल्या नहीं, माटें हुं पोकार करुं. एवुं विचारी पोकार कर्यो के चे लणाने श्रेणिक लइ जाय छे, ते सांभली चेडो महाराजा युद्ध करवा स

ढ्ध थयो. तेवारें तेनो वैरंगिक सुजट चड्यो तेणें सलंगमांहेथी जाता दीठा, तेथी बाण ताणीने मूक्युं, ते एके बाणे सुलसाना बत्रीशे पुत्र मरण पाम्या. श्रेणिक रथने आकरो चलावी आगल निकली गयो, अने वैरंगिक सुजट पण सुलसाना बत्रीश पुत्र मुवा पड्या हता, तेथी सलंगमांहे आगल पहोंची शक्यो नहीं, पाछो वली गयो. श्रेणिकें राजगृहीमां आवी गंधर्वविवाहें चेलणाने परणी.

हवे नागसारथि अने सुलसा बेहु जण पोताना बत्रीश पुत्रोनुं मरण सांजली डुःख करवा लाग्यां, श्रेणिकें तेमने घेर जइ धीरज आपी समजाव्यां, शोक निवर्त्ताव्यो. पछी ते बेहु कर्मना कटुकविपाक जाणी विशेषथकी श्रीजिनधर्मने आराधता थयां.

एकदा श्रीमहावीरस्वामी चंपा नगरीयें समोसस्या छे, तिहां अंबडपरिव्राजकवेषी श्रीवीरदेवनो परम श्रावक छे, ते राजगृहि नगरें जावा लाग्यो, तेवारें जगवानने पूछतो हवो के स्वामी! हुं राजगृही नगरें जाउं छुं. आपने कोइने कांइ संदेशो कहेवो छे? जगवानें कह्युं सुलसा श्राविकाने अमारो धर्मलाज कहेजो. हवे अंबडपारिव्राजक वीरने वांदीनें चाल्यो. विचार्युं जे सुलसामां श्यो गुण छे के बीजा अनेक श्रावक श्राविकानें मूकीने नीरागी पुरुष सुलसानेज धर्मलाज कहेवरावे छे? माटे कांइ विशेष गुण होवो जोइयें. हुं सुलसाना गुणनी परीक्षा करुं. एम चिंतवतो राजगृहीमां पाधरो सुलसाने घेर आव्यो अने कहेवा लाग्यो के मने जिक्षा आपो. हवे सुलसाने एवी प्रतिज्ञा छे जे सुपात्र टाली अन्यदर्शनीने जिक्षा न आपवी, तेमाटें व्रतजंग थवाना जयथी तेने जिक्षा न आपी, अने ते पारिव्राजकनी सामुं पण जोयुं नहीं. तेवारें ते तेमज पाछो वली गामनी पूर्व दिशिनी पोलें चार जुजावालो हंसना वाहन उपर बेसी ब्रह्मानुं रूप लइने बेठो. पासें सावित्री बेठी छे, राजगृही नगरीना लोक सर्व नमस्कार करवा गयां. पण सुलसा वांदवा आवी नहीं. बीजे दिवसें गामनी दक्षिणदिशिनी पोलें गरुडासन शंख, चक्र, गदादिक धारक कृष्णनुं रूप लइ बेठो, तेने जोवाने तथा नमस्कार करवाने सर्व लोक गयां, पण सुलसा गइ नहीं. त्रीजे दिवसें पश्चिमदिशिनी पोलें वृषजवाहन, शूलपाणि, कपालधर, जटाधारी, अर्धांगें पार्वतीसहित माहादेवनुं रूप लइ बेठो. तिहां प

ए सर्व लोक वांदवा आव्यां, पण सुलसा आवी नहीं. चोथे दिवसें उत्तर दिशिनी पोलें समवसरण प्राकार त्रय चामर अशोकवृक्षादिक ऋद्धियें करी बिराजमान पच्चीशमो तीर्थंकर थइ बेठो. जैनलोको कहेवा लागां के पच्चीशमा तीर्थंकर समोसस्या छे, चालो तेमने वांदवा जइयें, पण सुलसायें कह्युं पच्चीशमो तीर्थंकर होयज नहीं. एतो कोइ माया करी बेठो छे. मह्यारो देव तो चोवीशमो तीर्थंकर श्रीवीर विराजमान चंपानगरीयें समोसस्या छे तेज छे.

एवी सुलसानी परीक्षा जोइने अंबडें विचार्युं जे एवा गुण एमां छे तो ज नगवंत नीरागी पुरुषें धर्मलाभ कहेवराव्यो छे, माटें ते योग्यज छे. पछी वैक्रियलब्धि विसर्जिने अंबड सुलसाने घेर आव्यो, अने कह्युं जे श्रीमहावीरें तुऊने धर्मलाभ कह्यो छे. एटलुं सांजलतां तेनी साह्यमुं जोयुं. हर्षित थइ बेसवाने आसन मूक्युं. कुशलादिक पूछवा लागी देरासरें देव जुहास्या, परस्परें हर्षवार्त्ता करी अंबड पोताने स्थानकें गयो. एम स्थिरता नामा नूषणने विषे सुलसा श्राविकानी कथा कही.

हवे पांचमा प्रनावना नामा नूषणनुं स्वरूप कहे छेः—(पजस्सप्पणा करणं के०) श्रीजिनशासनोनुं जे तें प्रकारें करीने प्रोत्सर्प्पणा एटले प्रसिद्धिनुं करवुं तथा धारवुं तेने (पनावणा के०) प्रनावना कहीयें. साधुसाध्वीनी शक्तियें करी प्रनावना करे तथा श्रावक श्राविकानी शक्तियें करी प्रनावना करे. पण छतीशक्ति गोपवे नहीं ॥ ४२ ॥

हवे ए प्रनावनानेविषे कालिकाचार्यनो दृष्टांत कहीयें छैयें. नरतक्षेत्रें धारावास नामें नगर तिहां वैरिसिंह नामें राजा छे, तेनी सुरसुंदरी नामें पटराणी छे, तेमनो समस्त कला तथा रूपनो निधान एवो कालिक नामें पुत्र छे, ते एकदा प्रस्तावें अश्वक्रीडायें निकल्यो, ते घणा वखत सुधी अश्वक्रीडा करी विश्रांत थयो. उद्यानमांहे बेसवा माटें सारी छांयडानी जगायें जाय छे, एटलामां देशनामृतमेघें वर्षता एवा गुणसुंदर नामें आचार्यने दीठा, तेमने वंदना करीने कालकुमार पण देशनामृत पीवा बेठो. आचार्य पण योग्यजीव जाणी उपशम, संवेग, निरवद्यादिकनी करवा वाली धर्मदेशना आपता हवा. ते सांजली कुमर प्रतिबोध पाम्यो, तेवारें हाथ जोडीने आचार्यप्रत्यें विनववा लाग्यो के तमें इहां रहो. हुं माहरां माता पिताने समजावीने दीक्षा लइश. सूरियें कह्युं "जहासुखं देवाणुप्पिया महापडिबंध करे

ह ” पढी कुमर आचार्यने वांदी घेर गयो, मातापिताने समजाववा लागो पण ते समजे नहीं. अने दीक्षा लेवानी आज्ञा आपे नहीं, तेवारें कुमरें कह्युं मुजने नरक तिर्यंचनां डुःख तथा रोग शोक आवे तेना जामीन थइ ने घरमां राखो अने कहो के ए डुःखने तह्मारी पासें अमें आववा नहीं देशुं ? एवी जामीनगरी लखी आपो.

माता पितायें कह्युं ए वातोनो कोइ जामीन थायज नहीं, कुमरें कह्युं श्रीगुणसुंदर आचार्य जामीन थाय ढे, अने कहे ढे के हुं कहुं ते प्रमाणे कर, तो नरकादिकनां डुःख तथा रोगशोकादिक क्यारें पण न आवे, तेमाटे हुं तेमनी पासें जाइश, अने जो तमें जामीन थइ राखो, तो हुं तमारी पासेंज रहुं. एम महत्कष्टें मात पिताने समजावी महामहोत्सवपूर्वक पांच शें राजपुत्रसहित गुरु समीपें आवीने दीक्षा लीधी. अनुक्रमें प्रज्ञा बलें करी सकल आगमशास्त्रना पारंगामी थया. योग्य जाणी गुरुयें आचार्यपद दीधुं.

अनुक्रमें विहार करतां धारावास नगरें आव्या, तेमने समस्त स्वजनवर्ग वांदवा आव्यो. गुरुयें धर्मदेशना दीधी, पोतानी न्हानी बेहेन सरस्वती नामें हती. तेने प्रतिबोधीने दीक्षा दीधी, अनुक्रमें विहार करतां पांचशें साधुयें परिवस्या थका नवितव्यताने योगें उज्जणीनगरीयें आव्या. उद्यानने विषे उतस्या, नगरनां लोक सर्व वांदवा आव्यां. गुरुयें धर्मदेशना दीधी. सर्व लोक देशना सांजली गुरुने वांदी पोतपोतानें घेर गयां.

एकदा प्रस्तावें सरस्वती साध्वी गुरुने वांदवामाटे उपासरे आवे ढे, तेवामां गर्दनिल्लराजानी सवारी निकली, ते राजानी दृष्टि सरस्वती साध्वी उपर पडी अत्यंत सुंदर रूप देखी कामनूतें ग्रस्यो थको सुनटने हाथे साध्वीने पकडी पोताना अंतःपुरमां रखावी तिहां जेम सींचाणे ग्रहण करेली चीडी पुकार करे, तेम सरस्वती साध्वी पोकार करवा लागी. घणा विलाप करती हवी. अनुक्रमें ते वात आचार्यें सांजली, तेवारें गर्दनिल्लराजानी पासें जइ न्यायरीतें समजाव्यो राजरीतें, धर्मरीतें समजाव्यो. एम अनेक प्रकारें समजाव्यो तो पण जेम सन्निपातग्रस्त रोगीने कोइ औषध लागे नहीं, तेम राजाने उपदेश लाग्यो नहीं. गर्दनिल्ल ते खरेखरो गर्दनज थयो. जेमाटे पशुजातिमां पण सर्व पशुजातिने शिक्षा लागे, पण एक गधेडाने शिक्षा लागे नहीं. तेम ए राजाने पण शिखामण लागी नहीं. तेवारें गुरु पाढा वली

आव्या. श्रीसंघने सर्व वात कही. सर्व संघ मलीने ते राजाने समजाववा गयो, पण राजा महेलथी बाहिर निकल्योज नहीं. तो पछी कोनी आगल जइ विनति करे! सर्व प्रधानो मली समजाववा गया, तेवारें तेनें कह्युं के तमें जाउ तमारा मात पिताने उपदेश आपो. मुजने तमारो उपदेश लागे नहीं. तेवारें श्रीसंघनी समक्ष गुरुयें प्रतिज्ञा करी ॥ यतः ॥ जे संघपवय णीया, पवयण उवघायगा नरा जेहा ॥ संघें उवघाय करा, तंडुवेस्का का रिणोजेय ॥ १ ॥ तेसि वच्चामिगइ, जई एयं गद्दनिल्ल रायमहं ॥ उम्मूलेमि णसहसा, रज्जाउ नठ मज्जायं ॥२॥ जे माटे आगममांहे कह्युं छे ॥ यतः ॥ साहूण चेइयाणय, पडिणियंतह अवन्नवायेव ॥ जिण पवयणस्स अ हियं, सव्वछामे ण वारेइ ॥ ३ ॥

एम संघ समक्ष प्रतिज्ञा करीने पछी घेलानी पेरें नगरमांहे नमतां फ रे, अने कहेता जाय के ए गर्दनिल्ल राजा ते महारी आगल शा हिसाबमां हुं एनो राज्यछेद करी महारी बहेनने पाछी लइश. एम बोलतां चहुटा मांहे फस्या करे, लोक सर्व गर्दनिल्लराजाने वगोवे, अने कहे के राजा अ न्याय करे छे, एनुं राज्य हवे रहेशे नहीं. ए राजा माहादुष्ट छे, साध्वीना शीलनो खंमनार थयो, माटे हवे कांइ ए राजा राज्य उपर रही शकशे नहीं. जे साध्वीना विरहथी कालिकाचार्य जेवा पण घेला थया. माटे ए महापापी राजा छे, महोटां पाप करे छे. इत्यादिक लोको परस्पर वातो करे, ते पण राजा सांनले, तो पण ते वात मनमां आणे नहीं.

हवे कालिकाचार्य राजाने समजाववो सर्वथा असाध्य जाणीने गछनो नार गीतार्थेने नलावी तिहांथी चाल्या ते अनुक्रमें जतां जतां शाककुलने विषे गया. तिहां प्रथम सांइना प्रधानने मल्या, तेनी साथें वार्त्ताविनोदें करी सलाहसंप कीधो, ते प्रधाने पोताना सांइसाथें आचार्यनो मेलाप करा व्यो. पछी प्रतिदिन सांइनी पासें जाय मंत्रतंत्रादिकें तेने वस कस्यो.

एकदा प्रस्तावें आचार्य सांइनी साथें गोष्ठि करे छे, एवामां पडिहारें आवी सांइने विनव्यो, के हे स्वामी! आपणा साहनो जे सांइ तेनो दूत आव्यो छे. सांइयें कह्युं इहां तेडी लावो. तेवारें द्वारपाल तेने तेडी लाव्यो. आवी प्रणाम करीने सांइ पासें उनो रह्यो, अने कहेवा लाग्यो के साह ना साइयें छन्नुसांइने नेटणुं मोकल्युं छे, एवुं कहीने छुरीनुं नेटणुं सांइनी

आगल मूक्युं. ते जेटणुं देखी वर्षाकालें जेम आकाश श्याम थइ जाय, तेम ते सांइनुं श्यामवदन थयुं. आचार्यें पूछ्युं हर्ष थवो जोइयें, ते स्थानकें विषाद श्यो ? तेवारें ते सांइयें कह्युं के अमारा प्रनु सांइ जेनी उपर रुसे, तेने तेनी नामांकित छूरी मोकले. तेमाटे शुं जाणुं जे शे कारणें महारी ऊपरें कोप करीने छुरी मोकली छे ? हवे तेनी आज्ञा उलंघीयें तो समस्त कुटुंब परिवार सहित अमने मारी नाखे, तेमाटे गले छुरी लीधी जोइयें. कारण के अमारो स्वामी उग्रदंम छे. आचार्यें पूछ्युं के, एकला तमारा उपरज रुष्ट थयो छे, किंवा बीजा घणा उपर रूठो छे ? तेवारें सांइयें कह्युं महारी छुरीनी उपर छन्नुमो आंक छे तेमाटे बीजा पंचाणुं सांइ उपरें छुरी आवी छे. ते पंचाणुं सांइ सर्वे गले छुरी लेशे अने छन्नुमों हुं पण गले छुरी लइश.

तेने गुरुयें कह्युं मरवामांहे जली वार नथी, जो जीवता रहेशो, तो सेंकडा गमे कल्याण देखशो. तेमाटे तमें सर्वे पंचाणुए सांइने दूत मोकलीने तेडावो तो हुं तमो सुधां छन्नुं सांइने हिंडुस्थानमां तेडी जाउं, अने तमोने राज्य अपावुं. एवुं आचार्यनुं वचन सांजली पंचाणुं सांइने दूत मोकली तेडावी लीधा, ते पण सर्वेने आचार्यें समजाव्या. सर्वें छन्नु एकमते थया. पछी शाहाना सांइना दूत विसर्जिने समस्त कुटुंबपरिवार साथें लइ गुरुने आगल करी यानपात्र मंमावी सिंधुनदी उतस्या. सिंधुदेशमांहे थइ सोरठदेशें आव्या. तिहां सोरठना राजाने वश करी सोरठ लीधी. एवामां वर्षा काल आव्यो, तेवारें छन्नुं जणे मली छन्नुजागें सोरठ वेहेंची लीधो. जूदा जूदा परगणामां रह्या सुखीया थया तिहां सुखमां वर्षाकाल व्यतिक्रम्यो अनुक्रमें शरत्काल आव्यो, धान्य नीपनां, मार्ग चोखा थया.

तेवारें कालिकाचार्यें कह्युं हुं तमोने ए देश अपाववा सारु तेडी नथी आव्यो, परंतु माहारी साथें चालो हुं तमने मालवदेश जे सर्वदेशोनुं मंमन छे. जिहां घणा गोल, गहूं, शाली, अफिम प्रमुख उपजे छे, ते देश तमोने लइ आपुं. तेवारे सांइयो बोल्या के, जो द्रव्यनो खजानो होय तो कटकाइ थाय. ते खजानो खूटो छे तमारा माटे देश लूंटी शकता नथी इहां सोरठमां तो अमें जोजन मात्र पामीयें छैयें, पण खजानो थतो नथी अने खजानाविना कटकाइ पण थाय नहीं. आचार्यें ते वात मान्य

करीने एक कुंभारनो इंटवाह वेचातो लइ तेमां एक चपटीमात्र चूर्ण प्रक्षे प कर्युं. तेथी ते आखो इंटवाह सोनानो थइ गयो, अने कह्युं के सुवर्णनो इंटवाह वेहेंची ल्यो. ते बन्नुं साइयें वेहेंची लीधो. गुरुनी कला देखी हर्ष पामीने सर्व लश्करनी तैयारी करी चालता थया. ते अनुक्रमें लाटदेशने विषे आव्या. तिहां नृगुकच्छें बलमित्र भानुमित्रराजाने साथें लइ अनुक्रमें मा लवानी गडासंधी लगें आव्या, तेवारें गर्दभिल्लें सांभल्युं जे कटक लइने कालिकाचार्य आवे छे. तेवारें पोतें पण सज्ज थइ लश्कर लइने साहामो लडवा चाली आव्यो, परस्पर युद्ध थयुं. गर्दभिल्ल हार्यो थको अयवं तीना कोटमां पेसी पोल देइने मांहे बेसी रह्यो. कटकें आवीने चारे बा जुयें कोट वींटी लीधो. कोटनी मांहे धान्य पाणि चारो प्रमुख जइ शके न हीं प्रतिदिवस युद्ध थाय.

एकदा सांइनुं कटक चडयुं पण मांहे कोट शूनो दीठो, कोइ साहामो लडवा चडी आव्यो नहीं, तेवारें आचार्यने सांइयोयें पूछ्युं के कोट सूनो देखाय छे, अने गर्दभिल्ल गर्दभ देखातो नथी, तेनुं शुं कारण हशे? तेवारें गुरुयें कह्युं आज आठमनो दिवस छे तेथी ए गर्दभी विद्या साधे छे, माटे तमें जूउ कोटनी अटाली ऊपर गर्दभी हशे. पछी तेणें उंचा चडी जोयुं तो गर्दभी दीठी, गुरुने कह्युं स्वामी गर्दभी देखाय छे? तेवारें गुरुयें कह्युं ए ग र्दभी विद्या साधीने ए गर्दभी मूकशे तेनो शब्द जे कोइ द्विपद अथवा चतु ष्पद जीवो सांभलशे, ते सर्व लोही वमता भूमियें पडशे. तेमाटे आपणो द्विपद तथा चतुष्पद सर्व कटक जे होय, ते इहांथी उसरीने गर्दभीनो शब्द कानें न पडे, एटला दूर जइ बेशो जेम ए गर्दभीनो शब्द आपणे सांभलीयें नहीं. एवुं आचार्यें कहे छते सर्व कटक बे गाउ दूर जतो रह्यो.

वली आचार्यें कह्युं के एकशो आठ धनुर्धर शब्दवेधी होय ते महारी साथें आवो. पछी तेमांथी १०८ शब्दवेधी अचूकबाणलक्ष वेधी एवा सु भट शोधी तेने पोतानी साथें लइ गुरु पण बाण लइ कोट समीपें गया अने सर्व १०८ ने कह्युं, के जेवारें ए गर्दभी भूंकवा माटें मुख पसारे. एटले समकालें एकसाथेंज बाण मूकजो. ए गधेडीनुं मुख बाणोथी भरी मूकजो के जेम ए बोली शके नहीं, तेम करजो जो चूकशो तो एनो शब्द सांभ लतांज तमारुं मरण छे, एम निश्चय जाणजो. तेमाटे घणी खबरदारीथी

सावधान रहेजो, रखे चूकी जाउ. गुरुयें एवुं कहे थके जेवुं गधेडीयें नूक वामाटें मुख पसार्युं, तेवांज एकसो ने आठ बाण समकालें बूट्यां तेथी ते गधेडीनुं महोडुं नराइ गयुं. नूंकी शकी नहीं. तेवारें ते गर्द्दनी विद्या, गर्द्द जिल्लराजाना मुखमां मूत्र तथा लींडां करी लात मारी जती रही, गुरुयें कह्युं ए राजानुं बल एटलुंज हतुं ते गयुं. हवे सर्व जण सामटा एकठा थइ नगरना कोटने नेलो, गुरु आगल थइ कटक लइने कोट नेल्यो,गुरुयें कह्युं लूंटशो मां. कोइने मारशो मां. निःकेवल गर्द्दजिल्लने जीवतो पकडजो. एवुं कही वडासाहनी आण वर्त्तावी गर्द्दजिल्लने जीवतो गुरुनी आगल मूक्यो. के आ तमारो वैरी छे, माटे तमारुं मन माने ते करो.

गुरुयें कह्युं अरे पापिष्ट ! अरे निर्लज्ज ! अरे दुष्ट ! अरे अकार्य कारक ! हवे साध्वीनुं शीलनंग कर्युं, तेनुं फल तुं पाम. एम कही वली करुणा आणीने कह्युं तें अमारुं वचन न मान्युं, तथा संघनुं वचन न मान्युं, साध्वीना शीलनुं खंमन कीधुं तेमाटें नरक तिर्यंच गतिने विषे अनंत संसार नमीश ॥ यतः॥ जो अवगमइ संघं, पावोसोवपि माणमयलित्तो ॥ सो अप्पाणं बोलइ, दुरकमहासागरे नीमे ॥ १ ॥ सिरिसमणसंघ यसा, यणाए पावंति जं दुहं जीवा ॥ तं साहिउ समञ्जो, जइ परनयवंति णो होइ ॥२॥ ते माटें ए पाप आलोइ प्रायश्चित्त कर, तो बूटीश, एवुं कहे थके जेम सन्निपातियाने दुग्धादिकनुं पान करवाथी विष व्यापे, तेम ते राजाने ए शीखामण वचन रुच्यां नहीं, तेवारें जैनयतिनी एवी मर्यादा छे के वैरीने पण मारवो नहीं. एवुं विचारी करुणा आणी तेने मूकी दीधो अने कह्युं के तहारे हवे आ देशमां रहेवुं नहीं. एम कही विसर्जन कर्यो. ते गर्द्दजिल्ल राज्य न्रष्ट थयो थको इहलोकने विषे घणां दुःख पामी काल करीने नरक निगोदादिकनी गतिने विषे अनंता काल पर्यंत अनंता नव नमशे.

हवे गुरुयें जे सांइने प्रथम जइ मल्या हता, ते सांइने अयवंतीनुं राज्य आप्युं अने बीजा पंचाणुं सांइने सामंत पणे तेनी चाकरीमां राख्या, पण ते सर्वगुरुनी आज्ञा मानवा लाग्या. पछी ते शाककुलमांथी आव्या माटें शाक वंश कहेवाणो. सरस्वती साध्वीने पाछुं मूलथकी चारित्र थापीने शुद्ध कर्युं. पोतें पण आलोइ पडिक्कमीने पाछा गच्छमांहे आव्या. हवें सरस्वती साधवी तथा आचार्य सुखें चारित्र पालवा लाग्या, जिनशासननी उ

ज्नति करवाथी समस्त देशनो तथा नगरनो संघ सर्वे हर्ष पाम्यो. जेम कोइनुं निधान गयुं होय, तेने कोइ पाबुं वाली आपे, ते जेम हर्ष पामे, तेम सरस्वती साध्वी पोतानुं गयेलुं शील तथा गयेलुं चारित्र पामी हर्ष पामी.

हवे नृगुकब्रने विषे श्रीकालिकाचार्यना नाणेज बलनानु कुमार राज्य करे बे. ते आचार्यनी जगिनी जानुश्रीना पुत्र बे, ते बलमित्र जानु कुमारें गुरुने तेडवाने अर्थे मतिसागर नामा प्रधानने मोकल्यो, तेणें आवी कह्युं के स्वामी ! तमारा जाणेजें तमोने घणी विनति करी कहेवराव्युं बे, के एक वार श्रीजरुचें चैत्य जुहारवाने पधारो जेम अमारी उत्कंठा पूर्ण थाय, ते सांजली घणे कष्टें शाकराजाने समजावी गुरु जरुच्चें पधास्या. जाणेजे घणा महोत्सवे पेसारो कराव्यो. स्वजनवर्गने हर्ष ऊपनो. गुरु प्रतिदिवस धर्मदेशना दीये, ते देशना सांजली बलजानु कुमार प्रतिबोध पाम्यो. कह्युं के मुऊने दीक्षा आपो, गुरुयें समस्त स्वजनवर्गने समजावी दीक्षा दीधी.

हवे गुरुनी देशना सर्वजनोने मीठी लागे, पण एक राजाना पुरोहितने कडवी लागे, जेम सूर्य उग्यो ते सर्व कोइने रुचे, पण एक घूडने रुचे नहीं, ए दृष्टांतें जाणी लेवुं.

ते पुरोहित गुरुनी संघाते वांकुं बोले, तेम तेने 'वांकुं लक्कड वांकु वहे' ए उखाणो जाणीने गुरुपण प्रश्न प्रमुख करे वलतुं ते बोली न शके एवो करी मूके.

हवे ते पुरोहित मनमां प्रद्वेष वहेतो थको राजाप्रत्यें कहे के हे स्वामी ! ए महातपस्वी यति माहाशीलवंत सत्यवंत बे, पण ए यतिना पद आक्रमे माहा प्रायश्चित्त लागे, तेमाटें जे वाटें ए जाय तेवाटें तमारे जावुं युक्त नथी. राजा पण डुब्बलकन्नो थाय माटे जेम कोइ कहे तेम तेने काने लागे, परंतु तत्त्वातत्त्व विचारे नहीं ॥ यतः ॥ बह्लीनरिंद चित्तं, वरकाणं पाणियं च महिलाउ ॥ तब्रय वच्चंति सया, जब्रय धुत्तेहि निज्जंति ॥ १ ॥ राजायें पुरोहितने पूबयुं एना पदनुं आक्रमण केम टले ? पुरोहितें कह्युं अनेषणा करावीयें, तो टले.

राजा पुरोहितने वचनें कामण्यो थको जाणे पुरोहितें कामण कीधां होय नहिं एवो थको कहेतो हवो के हे पुरोहित ! तुं जाणे तेम कर. जेम ए गुरु जता रहे ते उपाय कर, इहां दूध मांजारने जलाव्युं, ते दृष्टांत आवी मल्युं. पबी ते पुरोहित लोकोने उपदेश दीये जे गुरुने आधाकर्मी

आहार आपीयें. तो आपणने आप्यानुं फलज होय, पण ए वातमां पाप नथी, तेवारें लोक पण नडक ते आधाकर्मी नेली नेली वस्तु गुरुने वहो रावे. यति जिहां जिहां वहोरवा जाय, तिहां सर्वत्र अनेषणीय आहार दे खे, ते आवी गुरुने कहे, तेवारें गुरुयें पण राजारूपी दूध ते पुरोहितरूपी आढणने योगें विनष्ट थयुं जाण्युं, तेमाटे हवे इहां रहेवानो लाग नथी ॥ यतः ॥ असिवे ऊणोयरिए, रायासप्पेजणय गेलन्ने ॥ एएहिं कारणेहिं, अ पत्ते होइ निग्गमणं ॥ १ ॥ एवुं विचारी गुरु पजोसण कस्या विनाज चालता थया. उपज्या जगवंतने न गणे चोमासुं, ए उखाणो साचव्यो. अनुक्रमें चालतां चालतां मरहठदेशें पइठाणपुरना संघने आगलथी जणाव्युं, के अ मो आवीयें बैयें. जिहां सुधी अमे आवीयें नहीं तिहां सुधी तमें पजोस ण करशो मां. अमो आव्या पढी पजोसण करशुं. हवे तिहां परमश्रावक शालिवाहन राजा छे ते गुरुनुं आगमन सांजली हर्ष पाम्यो थको, श्रीसं घनी साथें घणे आडंबरें साहामो आव्यो, घणे विस्तारें नगरप्रवेश महो त्सव कीधो. शालिवाहन राजा प्रमुख प्रतिदिन धर्मदेशना सांजले. घणा ध र्ममहोत्सव थाय. अनुक्रमें पजोसणपर्व नजीक आव्यां. गुरुयें राजाप्रत्यें कह्युं जादरवा शुदि पंचमीने दिवसें पजोसण छे. राजायें कह्युं तेहीज दिवसें इंद्रमहोत्सव छे माटे लोकानुवृत्ति तें दिवस साचव्यो जोइयें. तेमाटे पजो सणनां कर्त्तव्य जे पूजा स्नात्रादिक छे, ते सचवाय नहीं. तेथी प्रसाद क रीने छठने दिवसें पजोसण करो के, जेम पजोसणनां कर्त्तव्य सर्व सुखें स चवाय. गुरु कहे ॥ अविचलइ मेरुचूला, सूरो वा उग्गमिज्ज अवराए ॥ न यपंचमीइ रयणी, पज्जूसवणा अइक्कमई ॥ १ ॥ जहाणं जगवंमहावीरे वासाणं वासइ राएमासेविइक्कंते वासावासं पज्जोसवेइ तहाणं गणहराविं, जहाणं ग णहरा तहाणं गणहरसीसा, जहाणंगणहरसीसा तहाणं अम्मगुरुणो,जहाणं अम्मगुरुणो तहाणं अम्मेवि वासावासं पज्जोसवेमो तं रयणि णोअइक्कमिज्जा ॥

एवुंसांजली राजायें कह्युं चोथें पजोसण करो, तेवारें सूरि कहे एमज हो. चोथें पजोसण करतां दोष नथी " अंतराविअसेकप्पइ णोतं रयणिं उवा यणावि तए " ए श्रीकल्पसूत्रना अक्षरने मेले चोथें पंजोसण करतां दो ष नथी,ते वचन सांजली राजा प्रमुख सकल संघ हर्ष पाम्यो. राजायें ज इ अंतःपुरमांहे वात कही. अंतःपुरी हर्ष पामती कहेवा लागी जलुं थयुं जे

अमावास्यायें तो उपवास छे, तेने पारणे साधु अष्टम तपनुं उत्तर पारणुं करशे तेने प्रतिलाभना करी पछी पारणुं करीशुं. तेथी महोटो लाभथाशे, ॥यतः॥ पहसंतगिलाणेसु, आगमगाहीसु तहय कवलोए ॥ उत्तर पारणगं मि य, दिन्नंसु बहु फलं होइ ॥ १ ॥

पछी ते लोक हर्ष पाम्यां थकां साधुभक्ति विशेष करे मरहठदेशें ते दिवसें साधुनी पूजानो महोत्सव प्रवर्त्त्यो. ए कारणें श्रीकालिकाचार्यें चोथे पजोसण आण्युं, ते सर्वसंघें मान्युं ॥ यतः ॥ असढाइण न वज्जं,गीयछ्वारियंति मछ्छ ॥ आयरणविहु आणंति, वयणउ सुबहुमणंति ॥ १ ॥ तेवारें ते समयें जेटला सुविहित आचार्य हता, तेणें कालिकाचार्यनुं वचन प्रमाण कीधुं. जेमाटें जेणे सुविहिताचार्यनुं वचन न मान्युं तेणें तीर्थंकरनुं वचन पण न मान्युं, अने जेणें तीर्थंकरनुं वचन न मान्युं तेणे सुविहित आचार्यनुं वचन पण न मान्युं एम परस्पर संबंध जाणवो.

तथा चोथ प्रमाण करवाने अर्थें चोमासा त्रण पण चौदशें कीधां अन्यथा चोमासा त्रण पूनमें हतां. एम कालिकाचार्यनुं वचन सघला गछ्वासी आचार्यें मान्युं, पछी घणाकालांतरे एटले संवत् ११५९ वर्षें पूनमीयो मत प्रगट थयो. तेमांथी वली संवत् १२०४ना वर्षें आंचलीयो मत प्रगट थयो, पण कालिकाचार्यना वखत मांहेला कोइ पांचमीया देखाता नथी ते माटे जाणीयें छैयें जे चोथनुं पजोसण ते शुद्ध छे अने पंचमीयें करे ते मिथ्यावाद छे. एम उत्तममतिना धणीयें विचारवुं. तथा अधिक मास आवे श्रावण महिने पजोसण करे छे, ते पण घटमान नथी जेमाटे पजोसण भादरवा शुक्लपक्ष प्रतिबंध छे माटे श्रावणनां पजोसण करवां ते पण एक मत वादज कहेवाय, पण गछ्परंपरा न कहेवाय. ए पण विचारजो.

हवे कालिकाचार्य अनुक्रमें विहार करता कर्मयोगें तेमना सघला शिष्य दुर्विनीत थया, कोइ आज्ञा माने नहीं, अने शास्त्रमां तो आज्ञा तेज प्रमाण छे ॥ यतः ॥ छठ्ठम दसम दुवालसेहिं मासद्ध मासखमणेहिं ॥ अकरितो गुरुवयणं, अणंत संसारिउ होइ ॥ १ ॥ गुरुआणा भंगाउ, रसं कठं तवंपि काऊणं ॥ तहविहु पत्तो नरयं, सो कुलअवालूउ साहू ॥२॥ गुरुआणाअइक्कमणे, आयाविन्तो करेइ वित्तवं ॥ तहवि न पावइ मोरकं, पुवभवे दोवई चेव ॥

हवे आचार्य शिखामण आपे, तेवारें शिष्य उद्धंठ वचन बोले ते सांभली

गुरु विचारे ॥ यतः ॥ तारिसा मम सीसाउ, जारिसा गलिगद्दहा ॥ गलिग द्दहे चइत्ताणं, दढं गिण्हइ संजमं ॥ १ ॥ तहा छंदेण आगाउ, चिठएइ अ छंदेण॥छंदेअ वढमाणोवि, सिसे छंदेण मुत्तवे ॥ २ ॥ हुं एमने छोडी जाउं तो महारुं चारित्र सुखें पले अने ए शिष्यनी शुद्धि पण ठेकाणे आवी जाय. एवुं चिंतवी ते परमार्थ शय्यातर श्रावकनें कही वली एवुं कह्युं के, अमे अमारा शिष्यना शिष्य श्रीसागरचंद्र आचार्य छे तेमनी पासें जाशुं. तमोने म्हारा शिष्यो घणाज अमारा अर्थीथका पूछे तो जवाब आपजो नहीं, कां सहेज साज पूछे तिहांसुधी जवाब आपशो नहीं. एम शय्यातर श्रावकनें समजावीनें रात्रियें शिष्योने सूता मूकी आचार्य चाल्या, ते अविछिन्नप्रयाणे चालतां सागरचंद्राचार्य पासें गया. सागरचंद्राचार्यें जाण्युं जे कोइक म्होसो आव्यो छे, मार्टे अवज्ञायें उठी उना थया नहीं. बेसवाने आसन पण आप्युं नहीं ॥ यतः ॥ अपुवं दंठुणं, अप्नुठाणं तु होइ कायवं ॥ साहुम्मि दिठपुवे, जहारियं जस्स जं जोगं ॥ १ ॥ एवो आगमोक्त आचार छे ते अहंकारथी संजाल्यो नहीं. आचार्य आवी पासें बेठा, सागरचंद्राचार्यें वखाण कर्युं, वखाण पूर्ण थये थके कालिकाचार्य प्रत्यें पूछयुं जे में केवुं वखाण कीधुं? आचार्यें कह्युं रूडुं कीधुं.

पछी कालिकाचार्यने पूछता हवा के मने विषमजाव व्याख्यान पूछो? तेने गुरुयें कह्युं धर्मास्तिकाय वादनुं वखाण करो. तेवारें गुरुसंघाते धर्मास्तिकायवादनी प्रमाणवार्दे चर्चा करी, पण गुरुयें पोतानुं नाम तथा स्वरूप प्रकट न कर्युं ॥ यतः ॥ देवतानां गुरूणां च, नाम नोपपदं विना ॥ उच्चरेन्नैव जायायाः, कथंचिन्नात्मनस्तथा ॥ १ ॥ ए प्रकारें गुरु सागरचंद्राचार्य पासें रह्या पण कोइ उलखे नहीं.

पाछलथी तिहां ते दुष्ट शिष्य प्रजातें जाग्या थका आचार्य प्रत्यें न दीठा, तेवारें शोधवा लाग्या, शोधतां न मल्या, ते वखत शय्यातर श्रावक पासें जइ पूछवा लाग्या के आचार्य किहां गया? श्रावकें कह्युं हुं शुं जाणुं? तमारा गुरुनी वात तमें जाणो. तेवारें शिष्य बोल्या जिहां गया हशे तिहां तमने कहिने गया हशे. तमने कह्या विना जाय नहीं. ते सांजली श्रावक जमुह चडावी बोल्यो अरे अविनीतो! तमें गुरुनी आज्ञा मानता न हता, अने गुरुनी साथें विरुद्ध वचन बोलता हता, तेवारें गुरु तुमथी

वाजें आवी चाल्या गया. हवे गुरु विना अबद्ध थका रडता फरो ॥ यतः ॥ रुसइ चोइज्जतो, वहइ हियएण अणुसयं भणिउ ॥ नव कहिंकरणिज्जे, गुरुस्स आलोण सो सीसो ॥ १ ॥ जीहाएविलिहिंतो, न भद्दउ सारणा जहिं न त्थि ॥ दंडेण य वि पोहो, गुरुकुलवासेण कित्तस्स ॥ २ ॥ एम शय्यातर श्रावकें घणुंये हंकाख्या छता भय पाम्या थका बोल्या जे अमने गुरुनो वरांसो पड्यो आज पछी अविनीतपणुं नहिं करीयें, माटे अमने गुरुनी शुद्धि कहो, तो तिहां जइ गुरुने पगे लागी अविनय खमावी गुरुनी आज्ञामां रहीयें!

त्यारें शय्यातर श्रावकें ते सघला चेलाने पाधरा थया जाणीने कह्युं के गुरु आहींथी अमुक नगरें गुरुना शिष्यना शिष्य श्रीसागरचंद्राचार्य छे, तेमनी पासें गया छे, तिहां तमें जाउ.

पछी ते सर्व शिष्योनो समुदाय तिहां चाल्यो. मार्गमां लोक पूछे ए कोण जाय छे ? तेने कहे के ए कालिकाचार्य जाय छे. एम परंपरायें सागरचंद्राचार्यें सांजल्युं, जे महारा गुरुना गुरु कालिकाचार्य आवे छे. तेवारें हर्ष पाम्यो थको पासें बेठेला तेहिज कालिकाचार्य छे, तो पण पोतें अजाण छे, माटें तेमनेज कहे छे, के आज महारा पितामह आवशे, ते वारें तेणें कह्युं में पण ए वात सांजली छे. एम करतां केटलिएक वेलायें साधुनो समुदाय आव्यो. सागरचंद्राचार्य पोताना गुरु आव्या जाणी उठी उजा थया, तेवारें साधुउ बोल्या तमें बेसो. अमें तो सर्व यति छैयें, अने आचार्य तो पहेलाज घणा दिवस थया तमारी पासें आव्या छे. सागरचंद्राचार्यें कह्युं इहां तो एक मोसो साधु आव्यो छे, आचार्य तो आव्या नथी. एम वात करे छे, एटलामांज गुरु पण बाहिर थंडिलें गया हता, ते आवी पहोता. तेमने साधुसमुदाय जइ पगे लाग्यो. सागरचंद्राचार्यें कह्युं ए कोण छे ? शिष्य बोल्या ए कालिकाचार्य आपणा गुरु छे. ते सांजली सागरचंद्राचार्य लज्जा पामीने खमावता हवा. अने घणुं फूरवा लाग्या के हा हा में चिंतामणिरत्न महारा हाथमां आव्युं पण जाण्युं नहीं !!! गुरुयें कह्युं ए तहारो वांक नथी,परंतु अज्ञाननो वांक छे. पछी तेणे अज्ञान दोष खमावी गुरुने द्वादशावर्त्त वंदन करी अशन, पान, खादिम,स्वादिमादिकें भक्ति करी.

हवे गुरु वखाण करे अने सागरचंद्राचार्य पासें बेसे ते सागरचंद्रें प्रथम ज्ञाननो गर्व कीधो छे, माटे ज्ञानगर्व उतारवानें अर्थें वखाणमां गुरु

दृष्टांत देखाडवा सारुं एक पाथो ते नाजनविशेष गुरुयें नदीनी वालुकायें नराव्यो. वली खाली कराव्यो वली नराव्यो वली खाली कराव्यो एम करतां वालुका सर्व जडी गइ, अने पाथो खाली रही गयो. सागरचंद्राचार्यें पूछ्युं के स्वामी! ए श्यो विनोद कस्यो? तेवारें गुरुयें तेना उपर नय देखाड्यो के सांनल! हे वत्स! जेम वालुकायें नरेलो पहेलो संपूर्ण पाथो तेम सुधर्मा स्वामी कने प्रतिपूर्ण श्रुत पामीयें, ते पण वली सातिशय पामीयें. तेनी अपेक्षायें जंबुस्वामीमां कांइक न्यून अल्पातिशय पामीयें. जे कारण माटे छठाणवडीया साधु छे ए प्रकारें श्रुत न्यून थातां थातां यावत् महाराथकी तहारा गुरुपासें अति हीनश्रुत, अने तेथकी वली तहारे विषे हीनतर पामीयें ते पण दुःसमकालना अनुनावथकी प्रणष्टातिशय पामीये. तेमाटे हवे श्रुतनो गर्व न करवो ॥ यतः ॥ आसवणं मईउ, तरतम जोगेण हुंति मइविनवा ॥ मा वहउ कोवि गव्वं, अहमे को पिंम्हिउ इब्वं ॥ १ ॥ एवुं कहे थके सागरचंद्राचार्य श्रुतगर्वनुं मिछामिदुक्कड देइ गुरुने खमाव्या. पछी गुरु घणा शिष्यने परिवारें परिवस्या तिहांथी विहार करी जिनशासनने प्रनावता पृथ्वीतलने पवित्र करता पइठाणपुरने विषे आव्या.

हवे एकदा सौधर्माधिपति शक्रेंद्र माहाविदेहने विषे सीमंधरस्वामीनां वखाण सांनले छे, तिहां अधिकार विशेषें निगोदना स्वरूपनो विचार चाल्यो ॥ यतः ॥ गोलाय असंखिज्जा, असंख निगोदउ हवइ गोलो ॥ इक्कंमि निगोयए, अणंत जीवा मुणेयव्वा ॥१॥ अछि अणंता जीवा, जहिं न पत्ता तसाइ परिणामो ॥ उवक्कंति चयंति य, पुणोवि तछेव तछेव ॥ २ ॥ इत्यादि सौधर्मेंद्र निगोदना विचार सांनली हर्ष पाम्यो थको प्रनुने पूछतो हवो. हे स्वामी! आजना समयमां नरतक्षेत्रनेविषे एवा निगोदना विचार कहेनार कोइ छे किंवा नथी? तेवारें नगवाने कह्युं हे सौधर्माधिप! जेवो अमो निगोदनो विचार कह्यो,तेवो विचार कहेनार नरतक्षेत्रमां एककालिकाचार्य छे.

ते वात सांनली इंद्र आश्चर्य पाम्यो थको वृद्धब्राह्मणनुं रूप धारण करी ललाटें महोटुं टीलुं करी बाहुयुग तथा हृदयमां तिलक करी महोटी, धोली, सर्वत्र सरखी जे दाढा, तेणें करी शोनायमान थइने कालिकाचार्य पासें आवी बेठो अने पूछ्युं, कहो स्वामीजी! श्रीजिनशासननेविषे निगोदना विचार केवी रीतना कह्या छे? आचार्यें हर्ष पामीने जेहवा सीमंधर

स्वामीयें विचार कह्या तेवाज कही संभलाव्या. इंद्रें वली विशेष ज्ञान जोवा माटें पूछ्युं, के स्वामी! हुं वृद्ध छुं अणसण करवा वांछुं छुं. माटें म हारुं आयुष्य शेष केटलुं छे? एवुं कहीनें हाथ देखाडवा मांम्यो तेवारें आचार्यें श्रुतोपयोग देइ पक्ष, मास, वर्ष, पल्योपमादिकनी वृद्धि करतां बे सागरोपमायु कह्युं, ते सांभली इंद्रें कह्युं महाराज! मनुष्यनुं एटलुं आयुष्य क्यांथी होय? आचार्यें कह्युं मनुष्यनुं आयुष्य एटलुं न होय पण तुं तो इंद्र छो. एवो आचार्यनो ज्ञानातिशय देखी हर्षित थयो थको इंद्र बोल्यो, स्वामी! धन्य छे तमारा ज्ञानने जेना श्रुतज्ञाननी सीमंधरस्वामीयें पण साक्षी पूरी, एम कही घणी प्रशंसा करी कहेवा लाग्यो, स्वामी! मुफ सेवकने कांइ कार्य प्रसाद करो. आचार्यें कह्युं जे कार्य करवानुं हतुं ते करी बेठा छैयें, बीजुं निःस्पृहीने वली शुं कार्य कराववुं होय? एवुं आचार्यें कहे थके य तिउ सर्व गोचरीयें गया हता, तेमने जाण कराववामाटे इंद्र महाराज उ पाश्रयनुं बारणुं फेरवी गुरुने वांदीने स्वर्गें गया.

केटलिएक वेला पछी यतियो वहोरी आव्या पण उपाश्रयनुं बारणुं देखे नहीं, तेने गुरुयें आवी देखाडयुं अने इंद्र आव्या संबंधि सर्ववृत्तांत यति यो आगल कही संभलाव्युं. यति तथा श्रावक लोक सर्व आश्चर्य पाम्यां, श्रीजिनशासननी प्रभावना थइ. एम जिनशासननी घणी प्रभावना करी आयुनो अंत आव्यो जाणी अनशन आदरी आहीं मनुष्योने प्रतिबोधी पछी देवसभामां जइ तिहां देवताने प्रतिबोध देवा गया. ए प्रभावनारूप स म्यक्त्वनुं पांचमुं भूषण तेनेविषे कालिकाचार्यनुं दृष्टांत कह्युं.

इहां एक शंका रहे छे के कालिकाचार्यजी त्रण थया छे, तेमां प्रथम श्रीविक्रमाजितना संवत्नी आगल श्रीपन्नवणाजी सूत्रना कर्त्ता जे कालि काचार्यजी महाराज थया छे, तेमने इंद्रमहाराज निगोदना विचार पूछवा आवेला छे, एवुं महारा सांभलवामां आव्युं छे, अने आ कालिकाचार्यजी महाराज, लग भग विक्रम संवत्ना ९९३ वर्षे विद्यमान हता, माटे तेम नुं तथा एमनुं अगीयारशें वर्षनुं लगभग आंतरुं छे, तेम छतां जे प्रत उप रथी ए पुस्तकमें छाप्युं छे, ते प्रतमां ए वात लखेली हती तेथी में छापी छे. पछी जेम बीजी प्रतोमां अथवा अन्यग्रंथोमां वृद्धवचन होय ते प्रमाण छे.

इतिश्री तपागछालंकारोपाध्याय श्रीशांतिचंद्र गणिशिष्योपाध्याय श्रीरत्न

चंद्रगणि श्रीसम्यक्त रत्नाधिष्ठान श्रीसूर्यपुरस्थादि चतुर्विधसंघस्य चतुर्दश्यष्टम्यादिपर्वसु वांचनार्थं अप्रमत्त तथा पौषध प्रतिपालनार्थं विरचिते श्रीसम्यक्तरत्नप्रकाशनामनि सम्यक्त्व सप्ततिकाबालावबोधे पंच सम्यक्त्व नूषणस्वरूपनिरूपण नामा सप्तमोऽधिकारः समाप्तः ॥ ७ ॥

हवे समकेतना पांच लक्षणनुं आठमुं अधिकार कहे छे.

॥ लक्खिज्जइ सम्मत्तं, हियय गयं जेहिं ताइं पंचेवा ॥ उवसम संवेगो तह, निव्वेयणुकंप अच्छिक्कं ॥ ४३ ॥ अर्थः– (जेहिं के०) जेणें हेतुयें करी (हिययगयं के०) हृदयगत (सम्मत्तं के०) सम्यक्त्वने (लक्खिज्जइ के०) लखीयें जाणीयें जे आ अमुक नव्यजीवना हृदयमां उपशमादिक समकेत छे, एवुं जाणीयें जेम धूमें करी पर्वतनेविषे अग्नि जाणीयें, एटले पर्वतनेविषे अग्नि हशे, त्यारेंज धूम देखाय छे, पण अग्निविना धूम होय ज नहीं तेम ए पांच लक्षण जे कहेशे, तेविना सम्यक्त्व पण नहींज होय. जो ए पांच लक्षण होय तोज ते समकेतधारी होय जेम जे छत्र चामरादिक धरावतो होय तेज राजा कहेवाय, तेम ए पण जाणवुं.

(ताइं के०) ते समकेतनां लक्षण (पंचेव के०) पांचज होय, तेनां नाम कहे छेः–एक (उवसम के०) उपशम, बीजुं (संवेगो के०) संवेग (तह के०) तथा त्रीजुं (निव्वेय के०) निर्वेद, चोथुं (अणुकंप के०) अनुकंपा, पांचमुं (अच्छिक्कं के०) आस्तिक्य ए पांच नाम कह्यां. हवे एनो अर्थ कहीयें छैयें.

प्रथम उपशम ते क्षमा धारण करवी, बीजुं संवेग ते नववैराग्य संसारना सुखनेविषे आसक्तता न होय. त्रीजुं निर्वेद ते मोक्षनी वांछा एटलेमनमां एवो विचार रहे, के ते दिवस केवारें आवशे, के जेवारें हुं मोक्ष सुख पामीश! एवी वांछा हरहमेश तेना मनमां रहे. जेम घृतपूर खावानी वांछा रहे. पछी ते तुरत न पामे ते प्रारब्धाधीन छे पण घृतपूर खावानी इच्छा रहे तेपण रूडी जाणवी तेम मोक्ष पण तुरत पामे अथवा घणे काले पामे तो पण मोक्ष पामवानी इच्छा रहे, ते पण रूडी जाणवी. चोथुं अनुकंपा ते दुःखीया जीवनेविषे करुणा रहे. छती सामर्थ्यें दुःखीया जीवनुं दुःख टाले अने न टाली शके तो पण मनमां एवी अभिलाषा रहे जे आ जीवने हुं दुःखथकी मुक्त करुं तो रूडुं. पांचमुं आस्तिक्यता ते श्रीवीतरागें जे

जीवादिक नवतत्त्व कह्यां छे, तेनेविषे शुद्ध सद्दहणा राखे, तेनां मनमां ए वात तो निश्चल थयेली होय के जे श्रीअरिहंतजीयें भाख्युं छे, तें सर्वथा अन्यथा होयज नहीं. एवे वैराग्यें बराबरी थाय ॥यतः॥ इयसिलिंगजूआ खलु, दुक्कंल कराजिणेहि पसुत्ता॥भावपहाणा सद्दुणं,ठ अन्ने दव्वलिंगधरा ॥१॥ संपुस्नाविहि किरिया, भावेण विणा न हुंति किरियत्ति ॥ णयफलविगलत्तणठ, गवेजववायणाएणं ॥ २ ॥ आणोहेणाणंता, मुक्को गेवेजगेसुठ सरीरा ॥ णयतब्बा संपुस्ना, एस किरियाए उववाठ ॥ ३ ॥ ताणंत सोविपत्ता, एसाणउ दंसणंति सिद्धंति ॥ एवं मग्गह्कुत्ता, एसाण बुहाणइहति ॥ ॥ ४ ॥ इयणिय बुद्धि इ इमं, आलोवे ऊण इब्ब जइयव्वं ॥ अयंत भावसाइ, भवविरहब्ब महं जणेण ॥५॥ इति चतुर्दश शिलांगपंचाशके ॥ ४३ ॥

हवे प्रथम उपशम लक्षणनुं अने बीजुं संवेगनामा लक्षणनुं स्वरूप कहे छे.

॥ अवराहेवि महंते, कोहाणुदठवियाहिं उवसम्मो ॥ संवेगो मुरकं पइ, अहिलासो उ भवविरागो ॥ ४४ ॥ अर्थः— कोइयें (महंते के०) महोटो आपणो अपराध कस्यो, ते अपराधीनो (अवराहेवि के०) अपराध छे तो पण तेनी उपर (कोहाणुदठवियाहिं के०) क्रोधनो अनुदय करवो एटले क्रोध प्रगट न करवो, तथा ते क्रोधनुं फल जे ताडनादिक ते पण न करवुं तेने (उवसम्मो के०) उपशम कहियें जेम कुरगडूना पात्रामांहे, यति थूंक्यो तोपण तेने उपशम आव्यो परंतु लेशमात्र कषायोदय न थयो ॥ यतः ॥ कडुअ कसाय तरूणं, पुप्फं च फलं च दोवि विरसाइं ॥ पुप्फेण जाइ कुविठ, फलेण पावं समायरइ ॥ १ ॥ जो पण छद्मस्थने विषे सत्तामां कषाय होय, तो पण ते उदय प्राप्त न करे, तेने क्षमावंत कहीयें ॥ यतः ॥ किंसक्कावुत्तुजे, सराग धम्मंमि कोइ अकसाठ ॥ जो पुण धरिज धणियं, डुवयणु जालि एस मुणि ॥ १ ॥ ए गाथाना पूर्वार्द्धे उपशमनुं स्वरूप कह्युं हवे कथा कह्या पछी गाथाना उत्तरार्द्धे संवेगनुं स्वरूप कहेशे.

ए उपशम क्षमानी उपर मेतार्य मुनिनुं दृष्टांत कहे छेः— सांकेतपुरनें विषे चंद्रावतंसक राजाने बे स्त्री परमवल्लभ छे. प्रथम सुदर्शना अने बीजी प्रियदर्शना, तेमां सुदर्शनाने एक सागरचंद्र अने बीजो मुनिचंद्र ए बे पुत्र छे, अने प्रियदर्शनाने पण एक बालचंद्र अने बीजो गुणचंद्र एवे नामें बे पुत्र छे, ते मेरुपर्वत जेम बे सूर्य अने बे चंद्रमा तेणें करी शोभे,तेम चंद्रा

वतंसक राजा पण पुत्रनां बे जोडलायें करी शोजे बे. राजायें सागरचंड्ने युवराज पदवी आपी अने मुनिचंड्ने उज्जयणीनुं राज्य आप्युं.

एकदा हिमंतऋतुनेविषे राजा, राज्यकार्य करी मंत्रीश्वर प्रमुखने विसर्जीने रात्रें वासघरनेविषे आव्यो. घरमां घणो उद्योत करतो दीवो दीठो. तेवारें विचार्युं जे ए दीवो ज्यां सुधी उलवाइ न जाय तिहांसुधी म्हारे काउस्सग्ग पारवो. एम निर्धारी काउस्सग्ग धारी उनो रह्यो. वली प्रथम प्रहरनेविषे शय्यापालिकायें जाण्युं जे रखे अंधकार थाय? एवी वांबायें ते दीवो सींच्यो. पछी ते दीवायें करी जेम बाह्य अंधकार नाश पामे, तेम शुनध्यानें करी राजानो कर्मरूप अंधकार नाश पाम्यो, एमज बीजे त्रीजे अने चोथे पहोरें पण शय्यापालिका दीवो सींचती जाय, पण ते राजानो अनिग्रह जाणती नथी, हवे जेवारें थोडीसी रात्रि शेष रही, तेवारें शय्यापालिकाने उंघ आवी गइ. दीवो बूफाइगयो जोइने राजायें काउस्सग्ग पार्यो, काउस्सग्ग पारी जेटले शय्यायें सूवा जाय, तेटले घणो वखत सुधी काउस्सग्गमां रह्या हता, तेने लीधे पग लोहियें नराणा, तेथी जेम छिन्नवृक्ष त्रूटी पडे, तेम राजानुं सुकुमाल शरीर नूमियें पड्युं, तेवारें नमस्कारमंत्र स्मरण करतो शुनध्यानें आयु पूरें मरण पामी राजा स्वर्गे गयो. प्रनातें खबर पडवाथी सर्व परिवार शोक करतो तेनी अंतक्रिया करी.

हवे सागरचंड् पोतानी उरमान माताने कहेवा लाग्यो, हुं दीक्षा लउं. अने तमारा पुत्रने राज्य आपुं, उरमान मातायें कह्युं राज तमोने बाजे माटे तमें राज्य नोगवो म्हारो पुत्र तमारी चाकरी करशे म्होटा नाइनी चाकरी करवामां कांइ लाज नथी. एम कहे थके मंत्रीश्वरें सागरचंड्ने राज्य आप्युं. हवे स्त्रीनुं चित्त चंचल थाय बे माटे उरमान मातायें विचार्युं जे एने मारी नाखीने म्हारा पुत्रने राज्य अपावुं, एवु चिंतवी ते बल जोयां करे.

एकदा प्रस्तावें सुदर्शना राणीयें सागरचंड्ने अर्थें दासीने हाथें उद्याननेविषे एक लाडु मोकल्यो, प्रियदर्शनायें ते दासीने पूछ्युं तुं क्यां जाय बे? दासीयें कह्युं राजाने उपवासना पारणा माटें लाडु लइ जाउं बुं. तेवारें प्रियदर्शनायें दासीना हाथथी लाडुउ लइ लघुलाघवी कलायें तेने विष लिप्त करी तेमज दासीना हाथमां पाछो आप्यो. दासीयें जइ सागरचंड्राजाने आप्यो, तेणे विचार्युं जे प्रथम न्हाना नाइने खवरावीने पछी

हुं खाउं, तो ठीक. एवुं विमासी तेमांथी अडधो लाडवो लघु भाइने वहेंची आप्यो भाइयें तरतज खाधो. तेवुंज तेना शरीरमां विष व्यापी गयुं. अने भूमियें पड्यो. राजायें औषध प्रमुख करी लघुभाइने जीवाड्यो. पछी दासीने पूछ्युं, कोना हाथथी लाडवो लीधो हतो? तेणें प्रियदर्शनानुं नाम कह्युं. राजायें विचार्युं ए काम एणे कर्युं हशे, पण जो ए लाडुउं में आरोग्यो हत, तो अपध्यानें मरी नरकें जात, माटे हजी सावधान थाउं.

एम विमासी प्रियदर्शनाना पुत्रनें राजपाटें बेसाडी पोतें दीक्षा लइ अनुक्रमें गीतार्थ थया. विहार करतां उज्जयणी नगरीयें आव्या. तिहां साधुना संघने पूछ्युं जे तमारुं चारित्र सुखें पले छे? तेवारें यतिना समुदायें कह्युं राज्यपुत्र तथा पुरोहितपुत्र उच्छंछ छे, ते यतियोने संतापे छे, माटें इहां रहेवुं विषम छे. ते वात सांभली पाधरा पुरोहितने घरे आव्या, तिहां आकरे शब्दें धर्मलाभ दीधो, घरना चाकर सर्वें वारवा लाग्या के, अरे साधु! तुं इहां किहां आवी चड्यो? जो राजपुत्र जाणशे, तो तुजने संताप करशे माटे जो तुं तहारुं भलुं चहातो हो, तो इहांथी जतो रहे. एवुं सांभलतां वली पण गाढे शब्दें धर्मलाभ दीधो.

ते धर्मलाभ सांभली राजानो पुत्र तथा पुरोहितनो पुत्र बेहु नीचें आव्या बलात्कारें यतिने हाथें जाली मेडी उपर अगासीयें लइ गया, अने कहेवा लाग्या अरे मुंम! अमारी आगल तुं नाच. यतियें कह्युं तालविना नाटक थाय नहीं माटे तमें ताल वजावो, ने हुं नाचुं. पछी यतियें नाचवा मांड्युं अने ते बे जण ताल वजाडवा लाग्या, तेने यतियें कह्युं अरे मूर्खो! तालभंग शुं करो छो? अरे कुलने कलंक सरखा एटलो ताल वजाडवो, ते पण तमारा माता पितायें शीखव्यो नथी, के जे तमें नृत्यने विषे तालभंग करो छो? एवी यतिनी वाणी सांभली ते क्रोधांध थइ बोल्या के आ मुंमानी मुंम फोडो. एवुं कही ते बेहु दुष्ट मली यतिने मारवा उठ्या, यति पण बल करी तेमना अंगोपांगनी संधि उतारी मेडीथकी उतरीने वनमांहे जतो रह्यो. संधियो उतरी जवाथी बेहु जण बुंबारव करवा लाग्यो.

ते वात सांभली राजा तिहां आव्यो जूए तो बेहु आंख उघाडी पड्या छे, राजायें विचार्युं महाराजाइ सागरचंद्रविना एवो कोइ युद्धनेविषे कुशल नथी, जे संधियो उतारी नाखे! पछी उपासरे आवी यतिउंने पूछ्युं,

सर्वयतिउ बोल्या, अमारामां कोइ एवो ठेज नहीं जे एवुं काम करे! परं तु एक परोणो यति आव्यो हतो तेणे कीधुं होय तो तेनी अमने खबर नथी. पठी तेनी खबर काहाढवामाटे वनने विषे गया, त्यां सागरचंद्रसा धुने दीठा, तेमने देखीने राजा लज्जा पाम्यो थको नीचुं मुख करी उनो र ह्यो. सागरचंद्रसाधुयें कह्युं के नलो तें चंद्रावतंसक राजानो वंश दीपाव्यो! जेमाटे तुं तहारा पुत्रने तथा पुरोहितना पुत्रने यतिउने उपद्रव करतां वारी नथी शकतो? माटें धिक्कार ठे तहारा राज्य नोगववाने! तेवारें रा जा पगे लागी विनति करवा लाग्यो के, महाराज! ए महारो अपराध क्षमा करो अनें प्रसन्न थाउ. आवीने बेहु जणने समाधि करो. आज पठी यतिने कोइ पण उपद्रव करे नहीं. यतियें कह्युं जो बेहु जण दीक्षा लीयें,तो हुं एने साजा करुं. राजायें कह्युं ते कहे ठे,के अमें दीक्षा लइशुं पण साजा क रो. पठी साधुयें आवी बेहुने साजा करी दीक्षा दइने पोते अन्यत्र विहार कस्यो.

हवे राजपुत्रें विचास्युं जे काकायें मुजने रुडुं कीधुं जे संसारमां पाप करवा थकी निवारीने दीक्षा दीधी, तेमाटें कर्मक्षय करवा निमित्तें दीक्षा पालतो तपस्या करतो विचरवा लाग्यो अने पुरोहितपुत्र जे दुःख पामतो थको जैनधर्मनी दुगंठा करतो हतो ते पण शुद्ध चारित्र पाली तप कर तो विचरवा लाग्यो. ते बेहु आयु पूर्ण थये देवलोकें देवपणे एकठा जइ उपना. परस्पर प्रेमथी कामनोग विलसता थका परस्पर बोलबंध करता हवा के आपण बेहुमांथी जे प्रथम चवे, तेने बीजो आवी प्रतिबोध करे.

तेमां प्रथम पुरोहितनो जीव देवपणाथी चवीने दुगंठाकर्मने योगें रा जगृहनगरें चांमालने घेर गर्नमां पुत्रपणे उपनो. हवे तेहिज नगरें धन्ना सार्थवाहनी नार्याने पुत्र जीवता रहेता नथी तेमाटें दुःखणी थइ ठे तेने ते चांमालिनी स्त्री साथें प्रीति ठे, एकदा ते चांमालिणी गर्नवती थकी सार्थवाहनी स्त्रीपासें मलवा आवी ठे सार्थवाहनी स्त्री पण गर्नवती ठे तेणीयें तेनी आगल पोताना पुत्र मरणनां दुःख कह्यां,तेवारें चामालिणी यें कह्युं जो महारे हमणां पुत्र आवशे, तो ते पुत्र हुं तुजने आपीश. अ नुक्रमें समकालें बेहुने प्रसव थया, चांमलिणीयें पुत्र जन्म्यो अने सार्थ वाहणीयें मुवेली दीकरी प्रसवी. पठी अंतरंग माणसनी साथें मूवेली पुत्री मोकलीने चंमालिणीनो पुत्र पोताने घेर कोइ न जाणे, तेम अणाव्यो.

अने ते पुत्रनुं मेतार्य एवुं नाम दीधुं. चांमालिनी स्त्रीयें पोताना धणीनें मृतपुत्री जणेली देखाडी. अनुक्रमें ते मेतार्यपुत्र सर्वकलानो पारंगामी थयो, यौवन पाम्यो पितायें इभ्यकुलनी उपनी आठकन्या साथें विवाह जोड्यो.

हवे ते पूर्वभवना मित्र देवतायें अवधिज्ञानें जोइ तिहां आवी प्रतिबोध दीधो, पण कर्मने वशें तेने उपदेश लागे नहीं. तेवारें देवतायें विचार्युं जे एने कष्टमां पाडीश, तो ए प्रतिबोध पामशे. अन्यथा सुखीयो थको प्रतिबोध पामशे नहीं. पछी जेवारे मेतार्य आठ कन्यानुं पाणिग्रहण करवा वरघोडे चड्यो छे, चहुटामांहे आव्यो, तेवारें ते देवता पहेला मातंगना शरीरमां अधिष्ठित थयो तेवारें वरघोडाने देखी मातंग पोतानी स्त्रीने कहेवा लाग्यो के हे प्रिये ! आपणी बेटी मुइ न हत तो तेनो आवो विवाह महोत्सव करत, ते सांभली स्त्रीनी जाति तुछ होय माटे तेणें अंतरनी वात कही दीधी, जे हे प्रिये ! तमें शोक न करो. ए पण तमारोज पुत्र छे. तेनुं कारण चांमालें पूछवाथी ते चंमालिणीयें बधी प्रथमथी वात कही संभलावी दीधी, तेवारें चंमालें तेने पोतानो पुत्र जाणी अश्वथकी पग झालीने नीचें पाडी नाख्यो. अने कहेवा लाग्यो अरे पापी! तुं मह्यारो पुत्र थइ उत्तमकुलना लोकने केम अपवित्र करे छे? हवे हुं एक मह्यारा कुलनी कन्या परणावीश. एवुं कही बलात्कारें हाथ झाली वणवानी खाडमां नाखी दीधो. मेतार्य लाज्यो थको दीनवदन करी रह्यो बोली न शक्यो. सार्थवाह अने तेनी स्त्री प्रमुख लोक सर्व उशीयाला थइ पोताने घेर गया. देवतायें बधा लोकोने मनमां संशय पाड्यो अने सर्वें जाण्युं जे ए सत्यवात जणाय छे.

पछी देवता दिव्यस्वरूप धारण करी मेंतार्यने कहेवा लाग्यो के आवी अवस्था पाम्यो तो पण प्रतिबोध केम नथी पामतो ? हजी कांइ वधारे संकटमां पडवा इछे छे? मेतार्यें कह्युं मह्यारा कुलनुं कलंक उतार तो पछी तुं जे कहे, ते धर्म अंगीकार करुं. देवतायें कह्युं कुलनुं कलंक हुं केम टाली शकुं? तें पूर्वले भवें यतिनी निंदा करी पछी चारित्र पाल्युं छे, माटे चांमालनुं कुल पाम्यो. मेतार्यें कह्युं आ आठ कन्या उपरांत श्रेणिकराजानी पुत्री परणावी कलंक टाली बार वर्ष घरवास रहीनें पछी हुं दीक्षा लेउं. एम कर.

ते सांभली देवतायें वली सर्व सज्जननां मन फेरवी नाख्यां, तेथी सर्व चहूटामां आवी पाछी जाननी तैय्यारी करवा लाग्यां, मातंग पाछो जान

मां चाली आव्यो. अने हाथ जोडी कहेवा लाग्यो के में ते वखत मदिरा पीधी हती, तेथी एल फेल बकी गयो, पण ए मह्हारो पुत्र नथी. मह्हारो अपराध माफ करो. तेवारें सर्वना नर्म टल्या, आठकन्या परण्यो.

हवे श्रेणिकनी कन्या परणाववामाटें देवतायें एक ढाग आप्यो, ते प्रतिदिन रत्नमय लींमी करे, तेथी मेतार्यना पितायें रत्नोनो थाल नरीने श्रेणिक आगल नेटणुं मूक्युं. श्रेणिकें कह्युं श्या कामें आव्या ढो ? तेणें कह्युं ताह्हरी पुत्री मह्हारा पुत्रने परणावी आप. राजायें गलहत्बो दइ बाहिर कढाव्यो. तो पण प्रतिदिवस रत्नोनो थाल नरी राजा आगल नेटणुं लइ आवे, अने कन्यानी मागणी करे, तेवारें राजा तेने तिरस्कार करी कढावे.

हवे अनयकुमारें विचार्युं एटला रत्नने मातंग क्यांथी लइ आवे ढे ? एम विमासी अनयकुमारें मातंगने पूढ्युं. मातंगें कह्युं अमारे घेर एक बकरी ढे, ते जेटली लींमी करे ढे,तेटलां सर्व रत्न थाय ढे. तेथी मह्हारे घेर रत्न घणां ढे, अनयकुमारें कह्युं ए ढागली राजाने आप तो हुं तह्हारी वांढा पूरुं, ते सांनली मातंग ते ढागली राजाने घेर लइ आव्यो, तिहां लींमी करे पण रत्न थाय नहीं, तेवारें राजायें ढागली पाढी तेने घेर मोकली तो तेमज रत्न थवा लाग्यां. तेवारें अनयकुमारें देवमहिमा जाण्यो पढी मातंगने कह्युं वैनारगिरिसुधी सुखें गाडां, वहेल, रथ, जइ शके तेवो मार्ग करी आप. तेणें देवप्रनावथकी तेज वखतें सुखें रथ, हाथी, घोडा जइ शके एवो सरलमार्ग करी आप्यो. जेथी सर्वलोक सुखसमाधें जइ श्रीवीरने वांदवा जवा लाग्या, वली अनयकुमारें कह्युं राजगृहने फरतो अनंग प्राकार, रूडां कोशीसां सहित करी आप. तेणें ते पण तत्काल करी आप्यो, वली अनयकुमारें कह्युं क्षीरसमुद्रनुं जल आणी आप के जेथकी तह्हारा पुत्रने स्नान करावी पवित्र करीयें. तेणें कहेतां वारज खीरसमुद्रनुं जल आणी आप्युं.

एटलां कार्य कस्या पढी श्रेणिकराजायें अनयकुमारनुं वचन पालवाने अर्थें ढत्रतलें क्षीरसमुद्रना पाणीथी मातंगना पुत्रने न्हवरावी पवित्र करी कन्यानुं पाणिग्रहण प्रथमनी आठ कन्याउं साथें कराव्युं. बार वर्ष मेतार्यें देवता पासें मागी लीधां हतां, अने वली बीजां बार वर्ष नव स्त्रीयें मली देवता पासेंथी माग्यां. सर्व मली चोवीश वर्ष पर्यंत नव स्त्रीयो साथें

कामभोग भोगवी पछी नव स्त्रीसहित दीक्षा लइ मेतार्य साधु गुरुनी पासें नव पूर्व भण्या. निर्मल चारित्र पालतां विचरवा लाग्या.

एकदा विहार करतां राजगृही नगरीयें सोनीने घेर आहार लेवाने अ र्थें आव्या. श्रेणिकराजायें अभिग्रह कर्यो छे जे १०८ यव सोनाना लइ तेनुं जगदीश्वर आगल स्वस्तिक करुं, तो मुखमां पाणी घालुं. तेमाटें ते सोनीयें १०८ यव सोनाना घडी चोकी उपर मूक्या, पोतें कार्य विशेषें उरडामां गयो, एवामां क्रौंचपक्षी ते भक्ष वस्तु जाणीने गली गयो. ते साधुयें दीठा. सोनी बाहिर आव्यो, तो यव दीठा नहीं. मेतार्यने पूछयुं महाराज ! यव क्यां गया ? तेवारें मेतार्यें विचार्युं जे ए सोनी दुष्ट छे ते क्रौंचपक्षीने मारी एना पेटमांथी यव काढी लेशे. तेना मरणनुं निमित्त हुं थाइश! माटे म्हारे मौन धारण करवुं,एज श्रेय छे. एम धारी मौन रह्या. सोनारें चोर जाणी वाधरीयें माथुं वींटयुं खेंची करी बांध्युं. तेना जोरें आंख बेहु निकली पडी उपर चाबकाना प्रहार दीधा, तेवारें ते यति चा मडाना पटबंधने संयम राज्य पटबंध करी जाणतो अने चाबकाना प्रहारने अमृतधारा जेवुं मानवा लाग्यो. मेतार्यमुनि उपशमसुधा पान करी क्षपक श्रेणि आरोहि केवलज्ञान पामी, सिद्धशिलानो शृंगार थई अनंत सुख पाम्यो.

हवे सुवर्णकारना गृहनेविषे सुतारे कुहाडे करी काष्ट फाडयुं तेनो खं ड उडीने क्रौंचपक्षीने गले लागो. तेना घातनी पीडायें १०८ यव निक ली पडया. ते देखी सोनार पश्चात्ताप करवा लाग्यो के, हा हा ! ! आ में शुं कर्युं !!! जो राजाश्रेणिक जाणशे, तो मुजने बेहाल करी मारी नाख शे. एवुं जाणी भय पामी दीक्षा लइ मेंतार्यनांज रजोहरण प्रमुख उपकरण लइ श्रेणिकराजानी पासें जइ धर्मलाभ दीधो, पोतानुं सर्व वृत्तांत श्रेणिक आगल कह्युं. श्रेणिकें कह्युं, तें भयथी दीक्षा लीधी, पण हवे निर्भयपणे पा लजे. एवुं कही सुवर्णकार ऋषिप्रत्यें विदाय कर्यो. ए मेतार्यमुनिनुं चरित्र सांभली कर्णपवित्र करी श्रीसम्यक्त्वनुं उपशमनामे लक्षण आदरवुं ॥

हवे गाथाना उत्तरार्द्ध करीसंवेगनामा बीजुं लक्षण कहे छेः—तिहां (मो क्खपइं के०) मोक्षप्रत्यें जे (अहिलासो के०) अभिलाष एटले वांछा ते (संवेगो के०) संवेग कहीयें. (तु के०) वली (भव के०) संसार तेथकी जे (विरागो के०) वैराग्य ते पण संवेग कहीयें, जेमाटें जे मोक्षाभिलाषी

होय, तेनें नववैराग्य अवश्य होयज. अने जेने नववैराग्य होय, तेने मोक्षाभिलाष अवश्य होय. एम ए बेहुने परस्पर संबंध छे ॥ यतः ॥ संवेगेणं भंते जीवे किं जणयति, संवेगेणं अणुत्तरं धम्मं सद्धं जणयति, अणुत्तराए धम्मसद्धाए संवेगहव्वमागच्छंति अणंताणुबंधि कोह माण माया लोहे पावंति नवं कम्मं न बंधंति॥ तप्पवइयं वणं मिछत्तविसोधिं काऊण दंसणग राह एहभवति दंसण किंसुद्धिए अछेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिझंति सोहियणं विसुद्धाइ तंच पुणा भवग्गहणंणाइक्कमतित्ति ॥ ४४ ॥

हवे ए संवेगने विषे दंमदंतमुनिनो दृष्टांत कहे छे. हस्तिशीर्ष नामा नगरें दमदंत नामें राजा हतो, ते एकदा जरासंध प्रतिवासुदेवनी सेवा निमित्तें राजगृही नगरीयें गयो छे. ते अवसर पामी पांच पांमवो पोतानुं सबल सैन्य लइने दंमदंतराजानो देश भांज्यो, लूंट्यो, ते वात सांभली दंमदंत राजायें जरासंधनुं साहाय्य पामी सबल कटक लइ आवी हस्तिनागपुर पर घेरो नाख्यो. दूत मोकली पांमवोने कहेवराव्युं के, हुं जरासंधनी सेवायें गया पछी तमें छल करीने म्हारो देश लूंट्यो, पण हवे तमें हस्तिनागपुरथी बाहेर निकलीने म्हारी साहामा आवी युद्ध करो तो हुं जाणुं, जे तमें खरा बलवंत छो. पांमवो भयभ्रांत थया थका बाहेर आवे नहीं त्यारें दंमदंत राजायें कहेवराव्युं के जो सिंह होता तो साहमा आवी युद्ध करता. पण हुं एटला दिवस तमारुं गाम वींटी बेठो छुं, तेम छतां तमें लडवा आव्या नहीं, ते उपरथी जाणुं छुं जे तमें शीयालीया छो. एवुं कहेवरावी दमदंत पोताने नगरें पाछो आव्यो.

एकदा श्रीधर्मघोषसूरिनी देशनारूप सुधा पान करी संसारविषय मदिरापानथकी विरक्त थयो थको परमसंवेग पामी दंमदंतराजायें दीक्षा लीधी, अनुक्रमें गीतार्थ थइ एकलो विहार करतो हस्तिनागपुरनी पोले मेरुनी परें अचल थइ काउस्सग्गें रह्यो. एवामां अश्वक्रीडायें निकलेला युधिष्ठिर प्रमुख पांचे पांमवो ते मुनिने देखता हवा, तेवारें अश्वथकी उतरी पगे भालस्थल लगाडी वांदी गुणस्तुति करी जे धन्य तमारो अवतार जे तमो आवुं दीक्षारूप राज्य पाम्या! एवुं कही आगल क्रीडा करवा गया. पाछलथी दुर्योधन पण घणा परिवारसहित निकल्यो, तेणे पण ते मुनिने दीठा, तेवारें क्रोधें भर्यो बोल्यो के, अरे आ पापीने मारो. एणें घ

णा दिवससुधी आपणने गढरोहमां राख्या हता, हवे कपट करी इहां बे ठो छे. एवुं कही सामो पथरो नाख्यो ते साधुने लाग्यो तो पण साधु समन्नावथी चूक्या नहीं. पढी यथा राजा तथा प्रजा ए न्यायें ते डुर्योधन गया पढी तेना माणसो पण ते साधु उपर पथरा फेंकता गया, ते पाषा ण खंन्नै करी यति दटाइ गयो, अचेष्ट थइ पड्यो देखायो नहीं.

एवामां पांच पांमव क्रीडा करी पाठा वल्या, तेणें यतिने दीठो नहीं. लोकोने पूछ्युं अरे आहीं यति हता, ते किहां गया ? लोकें डुर्योधननुं वृ त्तांत कह्युं. ते सांन्नली युधिष्ठिरें विचार्युं जे हा हा ए पापी नरकगामीयें आ शुं अकार्य कर्युं छे! यतः ॥ ठाणंउव्वय वयरं, मयं हीणं तरंगवा ॥ जे णजहियगंतव्वं, चिंताविताडी सोहीइ ॥ १ ॥ एवुं कही पाषाण सर्व परा करावी यतिनुं वैयावच्च करी वांदी स्वस्थ करी अपराध खमावीने घेर आव्या.

हवे ते महामुनि वेदनायें पीडित थको अपकारी जे कौरव अने उप कारी जे पांमव ते बेहुनी उपर समन्नाव चिंतवतो थको क्षपकश्रेणि आरो ही केवलज्ञान पामी शिवपुरनेविषे अनंतसुखराशि न्नोगवतो थयो ॥ यतः॥ परिक्कंतो डुक्को, हणेण तह पंमवेण थुवंतो ॥ समसत्तुमित्त न्नावो, सो दमदंतो मुणी जयउ ॥ १ ॥ इति ऋषिमंमलसूत्रे ॥

प्रन्नातें राजा युधिष्ठिरनी सेवा करवामाटे डुर्योधन आव्यो, तेने युधिष्ठिरें कह्युं अरे कुलांगार! तुं हमणां यतिने मारवा लागो पण जे दिवसें आपणुं नगर वींटी पड्यो हतो ते दिवसें तुं क्यां गयो हतो? शामाटे युद्ध करवा सामो न थयो? ते ऋषि हमणां जेवारें क्षमा आदरी हथीयार ठोडी ने बेठा, तेवारें तुं मारवा दोड्यो? इत्यादिक घणां वचन कही शिखामण आपी. पण ते डुर्योधनने नरकें जावुं छे माटे कांइ जवाब न आपतां नीचुं मुख करीने रह्यो. दमदंत राजऋषि कृतकृत्य थयो. ए संवेग लक्षणनेविषे दमदंतराजानी कथा कही, माटे समतारूप सुधापान करी संवेग आदरो॥४४॥

हवे त्रीजुं लक्षण निर्वेद छे तथा चोथुं लक्षण अनुंकपा छे अने पांच मुं लक्षण आस्तिक्य छे, ए त्रणेनुं स्वरूप अनुक्रमें कहे छेः–

॥ निव्वेउ न्नागिछा, तुरियं संसार चारयगिहस्स ॥ डुहिए दयाणुकंपा, अछिक्क नछि जिणवयणे ॥ ४५ ॥ अर्थः–हवे (निव्वेउ के०) निर्वेद ते शुं कहीयें ? तो के (तुरियं के०) उतावले (संसार के०) संसाररूपीयो

(चारयगिहस्स के०) चारक घर एटले बंधिखानानुं घर तेहने (चागि च्छा के०) त्यागवानी इच्छा तेने निर्वेद एवे नामें समकेतनुं लक्षण कहीयें; एटले संसाररूप बंदिखानाना घरने उतावले त्यागवानी जे इच्छा करवी ते निर्वेद जाणवो संसाररूप बंदीखानाना घरथी निर्वेद एटले निकलवुं.

केटलाएक आचार्य संवेगनो अर्थ नववैराग्य कहे छे, अने मोक्षनी वांछा, तेहने निर्वेद कहे छे ए अर्थ पण घटे छे ॥ यतः ॥ निव्वेएणं नंते जीवे किंजणयइ निव्वेएणं जीवे दिव्वमाणुस्स तिरिच्छएसु कामनोगेसु विरज्ज माणे निव्वेयं हव्वमागच्छत्ति सव्वविसएसु विरज्जत्ति सव्वविसएसु विरज्जमाणे आरंनपरिग्गह परिव्वायं करेंति आरंन परिग्गह परिव्वायं करेमाणे संसार मग्गं वुच्छिदंति सिद्धिमग्गं पडिवन्नेय नवति ॥ इति उत्तराध्ययन सूत्रे ॥ ए गाथाना पूर्वार्द्धनो अर्थ कह्यो, उत्तरार्द्धनो अर्थ कथा कह्या पछी आवशे.

हवे ए निर्वेद लक्षण उपर हरिवाहनराजानी कथा कहीयें छेयेंः—एहिज नरतक्षेत्रें नोगवती नगरीयें इंइदत्तराजा राज्य करे छे, तेनी मणिप्रना नामें पट्टराणी छे तेनें हरिवाहन नामें पुत्र छे. हवे तेहज नगरमां जमंदर नामें सूतार वसे छे, तेनो नरवाहन नामें पुत्र छे, तथा वसुसार नामें श्रेष्ठी वसे छे. तेने धनंजयनामे पुत्र छे. हवे राजपुत्र हरिवाहन तथा सुतार पुत्र नरवाहन अने श्रेष्ठीपुत्र धनंजय, ए त्रणेने मांहोमांहे मित्राचारी थइ, प्रतिदिन एकठा मली रमतक्रीडादिक करे.

एकदा राजायें पोताना पुत्रने घणीज आकरी शिखामण आपी जे हे पुत्र ! तुं मित्रोनी साथें रमत कस्या करे छे ते मूकीने आयुधान्यास कर. नहीं कां महारो देश मूकीने चाल्यो जा. एवी राजानी वात सांनली त्रणे मित्रें मली आपसमां विचार कस्यो, के जो राजायें देश मूकवा कह्युं, तो हवें आपणने परदेशेंज जावुं, अने आपणा नाग्यनी परीक्षा करवी. एवुं विचारी त्रणे जण पोताना पिता प्रमुखने पूछ्या विनाज देशांतरें चालता थया. मार्गें जातां महोटा अरण्यने विषे पड्या. एवामां एक गजेंइ पोतानो शुंढादंम उंचो करीने हरिवाहन कुमरनी साहामो दोडयो. एटले शेठनो पुत्र अने सूतारनो पुत्र ए बेहु जण नाशि गया. पछी गजशिक्षामां विचक्षण एवा कुमरें पोतानी कलायें हाथीने वश कीधो. पोतें ते हाथीनी उपर चडी बेठो अने पोताना बे मित्रोने शोधवा चाल्यो. घणोय शोध कस्यो, पण मित्र मल्या नहीं.

आगल जातां एक महोटुं सरोवर दीठुं, तिहां कुमर हाथीथकी उतरीने श्रम टालवाने अर्थे सरोवरमांहे स्नान करवा पेठो, जलक्रीडा करी खेद टाली बाहेर निकल्यो. तिहां मित्रोना विरहथी दुःखी थयो थको सरोवर नी समीपें एक महोटुं आराम छे, तेमांहे क्षेमंकर नामें यक्षनुं एक महोटुं चैत्य दीठुं तेमांहे पेठो. रात्रियें एक खूणामां जइ सूइ रह्यो.

एवामां तिहां रात्रियें अप्सराउयें आवी नाटक मांड्युं ते नाटक देखी कुमर चमत्कार पाम्यो. पछी ते अप्सराउ नाटक करी परिश्रांत थइ थकी पोतानां सखरां वस्त्र मूकी बीजां वस्त्र पहेरी पुष्करिणीमां जलक्रीडा कर वा गइ. पाछलथी कुमरें उठी तेमनां वस्त्र लइ लीधां. केटलिएक वार पछी ते जलक्रीडा करी देहरे आवीने जूए, तो कपाट दीधां दीठां. तेवारें विचार्युं जे कोइक धूतारो छे ते आपणां वस्त्र लइ कपाट देइ मांहे बेसी रह्यो छे. पछी ते बाहिर रही थकीज हरिवाहनने घणुं घणुं बीहीवरावबा लागी, पण मृगलीनो बीहीवराव्यो सिंह कांइ बीये नहीं. तेम हरिवाहन पण तेना थी बीहीनो नहीं. तेवारें अप्सराउयें जाण्युं जे मांहे कोइ साहसिकपुरुष छे माटे एने मन गमतुं करीयें तो वस्त्र पामीयें, अन्यथा वस्त्र मलशे नहीं. तेथी सौम्यवचन कहीने वस्त्र मागवा लागी. कुमरें कह्युं, तमारा वस्त्रने वा यरो लइ गयो छे माटे जाउ वायरापासेंथी वस्त्र मागी ल्यो.

ते सांजली अप्सराउ बोलीयो तहारो सत्त्वगुण जोइ अमे संतुष्ट थये लीउ छैयें माटे वर माग. एवुं सांजली कुमरें कपाट उघाडी वस्त्र आप्यां. सहु पोतपोतानां वस्त्र लइ कुमरने कहेती हवी के तुं राजपुत्र छो, एवो अमें निश्चय कर्यो माटे आ खड्गरत्न आपीयें छैयें ते ले. एनाथी युद्धमां तहारो जय थशे तथा आ कंचुकरत्न आपीये छैयें ते तुं तहारी स्त्रीने आपजे. तथा अमारा वचनथकी शीघ्र राज पामीश. एवी आशीष देइ दे वांगनाउ पोतपोताने स्थानकें गइ.

प्रजातें खड्गरत्न लइने कुमर चाल्यो, आगल जातां एक नगरी दीठी. तेमां घरहाट प्रमुख सर्व विविध वस्तुयें जरेलां छे, पण कोइ मनुष्यने दीठुं नहीं. तेवारें आश्चर्य पामतो राजाना महेलमां गयो. तेनी त्रीजी जूमियें चड्यो तिहां एक मनोहर रूपवंती कन्या तेणे दीठी, कन्यायें पण कुमरनें देखी उठी उजी थइ बेसवानुं आसन मूक्युं, तेना उपर कुमर बेठो. पछी कन्या

प्रत्यें पूबवा लाग्यो के आ कयुं नगर बे? एनी शी हकीगत बे? अने तुं पण एकाकी इहां केम रही बो? ते मने समजाव.

तेवारें कन्या हाथ जोडी कुमरप्रत्यें कहेवा लागी के हे महापुरुष! सांजल. एनुं वृत्तांत कहुं बुं. सावस्तिनगरीना विजय नामें राजा तेनी अनंगलेखा नामें हुं पुत्री बुं,एकदा हुं गवाक्षें बेठी हती,तेवारें जयंतनामा विद्याधरें मुजने दीठी, ते कामविव्हल थइ मुजने तिहांथी अपहरीने इहां पुर स्थापना करी आणी मूकी बे. अने मुजने कहे बे के तुं महारीसाथें पाणिग्रहण कर. हुं आ नगरनुं राज्य पालतो थको तहारी साथें जोगजोगवतो रहीश. ते विद्याधर विवाहनी सामग्री करवा गयो बे. आज काल आवी बलात्कारें महारुं पाणिग्रहण करशे. पण पूर्वें मुजने महारा पितांने घेर ज्ञानवंत मुनिराजें कह्युं बे के प्रियदत्तराजानो पुत्र हरिवाहन नामें बे, ते ताहारो पति थाशे. ते मुनिनुं वचन खोटुं थाय बे,तेनुं पण मुजने महोटुं दुःख लागे बे, के एवा महानुजावनां वचन केम व्यर्थ थाय बे?

तेवारें हसी करीने कुमर कहे बे के हे सुभ्रु! एवा विद्याधरने मूकीने हरिवाहनना पाणिग्रहणने शुं वांबे बे? हंसली हंसने मूकी बगलाने केम वांबे? माटे हरिवाहनने मूकी विद्याधरसाथें पाणिग्रहण कर, हवे कुमरनुं रूप, तेज, वचनचातुर्य, देखी कुमरीयें विचार्युं जे रखे ने ए हरिवाहनज महारा जाग्ययोग्यें खेंचाइ आव्यो होय,तो केम? ए पण एवां वचन कही महारी परीक्षा करतो हशे शुं? एम चिंतवी कुमरप्रत्यें कहेवा लागी के, हे स्वामिन्! तमें जूउ महारो चित्तोल्लास तेवोज थाय बे, माटे जाणुं बुं जे हरिवाहन ते तमेंज बो, तो हवे महारी ऊपर कृपा करी आपणो वंशादिक प्रगट करो. जेम मुजने हर्ष ऊपजे एवी वार्त्ता करे बे, एवामां तो शरणाइ नफेरी प्रमुख तूर्यनाद थयो, ते सांजली कुमरीयें कह्युं, हे स्वामी! शीघ्र नासो, शीघ्र नासो. जेमाटे जयंतिविद्याधर आव्यो ते महादुष्ट बे तमोने मारी नाखशे. माटे तमे हवें लगारमात्र विलंब म करो.

कुमरे कह्युं हे सुभ्रु! तुं चिंता म कर. महारुं बल जो जे कहेवुं बे? एवामां तो विद्याधर आव्यो, ते कुमरने देखी कोपाकुल थइ बोल्यो अरे महारा अंतःपुरमांहे कोण आव्यो बे? कुमर बोल्यो, श्रीइंद्रदत्तराजपुत्र हरिवाहन आ कुमरीनुं पाणिग्रहण करवा आव्यो बे. जो तुजने युद्ध करवानी इबा

होय तो आव म्हारी साहामो. जो के म्हारा हाथ कहेवा छे ? एवुं सांजल तांज कुमरनी साथें युद्ध करवा माटें ते विद्याधर खड्ग लइ आव्यो, कुमरें ख ड्गलें करी तेनी तरवारना बे कटका करी नाख्या. उंचो उबली मुष्टिना प्रहारें माथानो मुकुट जांगी चोटली जाली हेठो नाखी तेना हृदय ऊपर चडी बेठो. तेवारें विद्याधरें कह्युं, हे महापुरुष ! मूक. मूक. बले करीनेज में तहारुं कुल जाणी लीधुं. माटे सुखें तुं ए कन्यानुं पाणिग्रहण कर. अने आ नगरीनुं राज्य पण तुंज जोगव. मुऊने तहारो मित्रकरी लेखव. कुमरे तेने मूक्यो तेवारें ते कुमरने पगें लागी घणो जक्तिजाव देखाडी वैताढ्यें गयो.

हवे कुमरें अनंगलेखानुं पाणिग्रहण करी ते अप्सरायें आपेलुं कंचुक पहेराव्युं तिहां तेनी साथें विषयसुख जोगवतो ते नगरीनुं राज्य पाले छे. सुराज्यें करी गामगामनां लोक आवी तिहां वस्यां. नगरी एवी संकीर्ण थइ के मांहे तिल पडवा जेटली पण जगा मले नहीं. एवुं नगर वस्युं, तेनुं विद्याधर नगर एवुं नाम दीधुं. हवे ते नगरनी पासें एक रेवानदी छे, तिहां हरिवाहन राजा अनंगलेखानी साथें जलक्रीडा करवा गयो छे. अनंगलेखा पण कंचुकादिक नवां वस्त्रने नदीना तट उपर राखी जलक्रीडा करवा पाणीमां पेठी छे, घणी वार जलक्रीडा करी पाछी आवी जींजेलां वस्त्र उतारी नवां वस्त्र पहेरवा लागी एवामां एक मत्स्य आवीने ते कंचुकरत्ननी मांहे पद्मराग नामें रत्न छे, तेने विषे मांसनी बुद्धि आणी गलामांहे उतारी गयो. तेनी पाछल घणा सुजटो दोड्या पण मत्स्य पाणीमांहे अदृश्य थइगयो.

ते राणी कंचुकने दुःखें दुःख करती रहे राजा पण दुःख करवा लाग्यो हवे ते मत्स्य तिहांथी दूरदेशें बेनानदीने तटें महापुरी नगरी छे तिहां नरकुंजरराजा छे ते जलक्रीडा करी मंत्री प्रमुख परिवारसहित क्रीडा पर्वत उपर बेठा छे, एवामां एक माछीयें आवी तेमनी आगल कंचुकरत्न मूक्युं अने राजाने कह्युं आज महोटो मत्स्य आव्यो हतो, तेना उदरमांहेथी ए कंचुकरत्न नीकल्युं छे, राजायें विचार्युं जेनुं ए कंचुक छे, ते स्त्रीरत्ननुं रूप पण कहेवुं हशे ? एम राजा कंचुकने देखी कामें पीडित थयो, अने माछीने प्रसाद दान आपी विसर्जन कर्यो.

हवे राजा कामज्वर पीडित थयो थको मंत्रीप्रत्यें कहेवा लाग्यो के हे मंत्री ! तुं जो मुऊने जीवाडवो वांछतो होय, तो आ कंचुकनी पहेरनार स्त्रीने

पेदा कर. मंत्रीयें ते स्त्रीने मेलववा माटे घणा उपाय कस्या, पण शोध पाम्यो नहीं. तेवारें सातदिवस उपवास करी राज्यनी अधिष्ठायिका देवी आराधी. ते देवी प्रगट थइ कहेवा लागी के, सर्वथा ए वात तमें करशो नहीं केम के ए हरिवाहन राजानी अनंगलेखा नामें स्त्री छे, हजी सर्प्पनी मणि लेवानी हिम्मत चाले, पण ते स्त्रीनुं शीलरत्न लेवाय नहीं. तेने मंत्रीयें कह्युं एक वार ते स्त्री मने आणी आप. पछी राजा छे, ने ते स्त्री छे. एवुं प्रधाननुं बोलवुं सांभलीने देवीविद्याधर पुरें आवी तिहां अरिहंतनी प्रतिमानी पूजानेविषे प्रवर्त्तमान थयेली अनंगलेखाने दीठी, तेवीज तिहांथी अपहरीने नरकुंजर राजाना घरनेविषे लावी मूकी पछी मंत्रीनी विदाय गीरी मागीनें देवी पोताने स्थानकें गइ.

नरकुंजर राजा आवी कहेवा लाग्यो के, हे प्रिये! आ तहारुं कंचुक देखी कामें पीडित थइने में देवांगनानें हाथे तुजने इहां अणावी छे, माटे हवे तमें महारी साथें कामभोग करवाने प्रवर्त्तो, यौवन सफल करो.

अनंगलेखायें कह्युं जो मुजने हाथ लगाडीश तो तहारुं मरण छे माटे साडा त्रण हाथ दूर रहीने माहारी साथें वात कर. राजायें विचार्युं एने एना धणीनो ताजो विरह थयेलो छे माटें ए एम कहे छे, पण विलंबे सिद्ध थाशे. एवुं विचारी राजा पाछो वली गयो. अने ते स्त्री अश्रुपातें भूमिका सींचती हरिवाहननुं रूप आलेखी तेनुं मुखडुं जोती रहे छे.

हवे पूर्वेला हरिवाहनना बे मित्र एक तो सुतारनो पुत्र, अने बीजो शेठनो पुत्र, ए बे जण हस्तीना भयथकी हरिवाहनने एकला मूकी नाशि गया हता, ते दूर देशांतर भमतां भमतां विंध्याचलनी अटवीमां गया, तिहां तेणे वंशजालमांहे नीचुं मुख अने उंचा पग करी धूम्रपान करतो हाथमां जपमाला लइ जाप करतो थको एक पुरुष दीठो, ते पुरुष पण मनुष्यनो संचार जाणी मंत्रजाप पूर्ण थये थके बाहिर आवी बेहुप्रत्यें कहेवा लाग्यो के, हे महापुरुषो! तमें कोण छो? इहां केम आव्या छो? एवुं सांभली ते बेहु जण बोल्या, हे वीर पुरुष! कुलादिक पूछवानुं शुं काम छे! अमे दैवयोगें भमता भमता इहां निकली आव्या छैयें, तहारे जे काम होय ते कहे. तेवारें विद्याधरें कह्युं हुं त्रिलोकी विद्या साधुं छुं. तेनी में पूर्वसेवा तो करी छे, हवे उत्तरसेवाने विषे तमें उत्तरसाधक थाउ, के जेम महारे वि

द्या सिद्ध थाय. एवुं सांभळी ते बेहु जण उत्तरसाधक थया. अने विद्याधरें उत्तरसाधक पामीने होमपूर्वक विद्या साधवा मांमी, ते थोडे दिवसें वि द्यासिद्धि पाम्यो. तेवारें विद्याधरें कह्युं तमो बेजण थकी म्हारी विद्या सि द्ध थइ हवे तमोने शुं आपीने हुं कृतकृत्य थाउं? एम कही एक रूप प रावर्त्तनी अने बीजी अंजनसिद्धि, त्रीजी वैरीसैन्यविमोहिनी, चोथी विमा नकारिणी, ए चार विद्याउ आपीने विद्याधर गयो. ते गगनवल्लभ नगरने विषे जइ वैरीने जीती पोतानुं राज्य कबजे करी राज्य सुखे भोगववा लाग्यो.

हवे ते शेठपुत्र तथा सूतार पुत्र बेहु जण भमता भमता बेना नदी ने तटें आव्या, तिहां लोकोना मुखथी अनंगलेखानी वात सांभळी ते स्त्री ने जोवा वांछता अंजने करी अदृश्य थइ अनंगलेखानी पासें आव्या ति हां जूवे छे, तो ते हरिवाहननुं रूप आलेखी तेनुंज ध्यान करती रहेली दीठी. पछी ते बेहु जणें तेनी परीक्षा करवा निमित्तें हरिवाहननी छबीनो पट्ट अपहरि लीधो, ते पट्ट गयो जाणी वळी घणुं दुःख करवा लागी ते ने बेहु जणे कह्युं तहारुं दुःख शुं छे? अमनें कहे तो अमें टाळीयें. तेवा रें तेणें हरिवाहननुं प्रथमथी मांमीने पाणिग्रहणपर्यंत सर्व वृत्तांत लखी देखाडयुं. ते वांचीने बेहु जणे पोताना मित्रनी स्त्री जाणी आवी पगें ला ग्या, अने कहेता हवा के तुं कशी वातनी चिंता करीश मां. अमें तहा रा पतिना मित्र छैयें. एवुं कहीने पछी बेहु जण राजानी सभायें गया, राजायें तेमने आसन आपी बेसाड्या, अने पूछवा लाग्यो के तमें कया देशथकी आव्या छो? वळी ज्ञान विज्ञान कांइ जाणता हो, तो मने क हो. एवुं राजानुं वचन सांभळी ते बोल्या अमो भोगवती नगरीथकी आव्या छैयें. मोहनी अने वशीकरणी प्रमुख घणी विद्याउ जाणीयें छैयें. तमारे कोइ काम होय ते कहो, तो ते अमें करी आपीयें.

राजायें तेमने एकांतें तेडीने कह्युं के आ अनंगलेखा स्त्री मने वश करी आपो. तेवारें तेणे एक चूर्ण काढीने राजाने आप्युं अने कह्युं के, ए चूर्णनुं तिलक करी ए स्त्रीपासें जाजो, तो तमारे वश थाशे. एवुं तेमनुं कथन स त्य मानी राजा तिलक करी स्त्री पासें गयो, तिहां हरिवाहनना मित्रोयें पूर्वें कही मूकेलुं हतुं ते संकेतप्रमाणें अनंगलेखा उभी थइ राजानी सा हामी चाली आवी, तेने राजायें भोगनी प्रार्थना करी तेवारें अनंगलेखा

यें कह्युं मह्यारे श्रीअष्टापदजीनी यात्रा करवानो अभिग्रह छे. ते पूर्ण थाय तो पछी तमें जेम कहेशो, तेम करीश. राजा पोतानो अर्थ सिद्ध थयो जाणीने पहेला बेहु जण पासें आवी ते वात कही. तेवारें ते बेहु जणे कह्युं तमें कांइ चिंता म करो. अमें एनें अष्टापदनी यात्रा तरत करावी तमारी पासें लइ आवशुं, कारण अमारी पासें आकाशगामिनी विद्या छे तेथी बत्रीश कोश उंचे चडतां अने अष्टापदें जतां आवतां कांइ पण विलंब लागशे नहीं. एवुं कही विमाननी रचना करी, तेमां अनंगलेखाने बेसाडी विमानने आकाशमार्गें चडाव्युं. पछी आकाशें रह्यांथकां कहेवा लाग्या के, अमो बे जण हरिवाहनना मित्र छैयें अनंगलेखाने लइ जाइयें छैयें. जो तमारामां शक्ति होय, तो अमारी सामा आवो.

ते सांजली राजा पोताना सुजटोने कहेतो हवो के, अरे सुजटो ! तमें एने पकडो. ए स्त्री लइ जाय छे पण आकाशगामिनी विद्या कोइ पासें न होवाथी सर्व सुजट हारी पाछा वली आव्या, राजा निराश थइ बेठो, तेवारें पहेला बेहु जण वली विमानमांहेथी उतरी अंजनविद्यायें करी राजाना घरथकी बे कन्याउने अपहरी विमानमां बेसाडी लइ चाल्या, ते विद्याधरनगरने उद्यानें आव्या, तिहां सर्व लोकोने शोकातुर दीठां. तेवारें लोकोने पूछवा लाग्या के, केम आहीं सर्व लोक शोकमय देखाय छे तेने कोइकें कह्युं के अनंगलेखा राणीना विरहथी अमारो राजा सशोक छे, ते माटें राजाना शोकने लीधे लोक पण सशोक छे.

हवे श्रेष्ठीपुत्र सिद्धपुरुषनुं रूप लइने राजसजायें गयो, तेने राजायें पूछयुं तहारामां शी शी विद्याउ छे ? तेणें कह्युं मह्यारी पासें तो घणी विद्याउ छे, तमारे जे अर्थ होय ते कहो. राजायें कह्युं मह्यारी स्त्री अनंगलेखा आणी आपो. तेवारें ते सिद्धपुरुष पूर्वें सूतारनी साथें संकेत कस्या प्रमाणें पछेडी उढी ध्यानमां बेठो के तरतज विमाने बेठीथकी अनंगलेखा तिहां आवी. तेने देखीने राजा घणुंज हर्ष पाम्यो. विमानथकी अनंगलेखा बे कन्याउनी सायें उतरी राजाने पगे लागी राजा चमत्कार पाम्यो थको सिद्धपुरुषने कहेतो हवो के हवे मने मह्यारी स्त्री तो मली पण मह्यारा बे मित्रोनी साथें वियोग थयेलो छे, तेनो मेलाप करी आपो, तो हुं आपनो मह्योटो उपकार मानुं. एवो राजानो पोतानी उपर प्रेम देखी

ते बेहु मित्र पोतानुं मूलरूप प्रगट करी राजाने पगे लाग्या. राजायें आनंदयुक्त थकां विचार्युं जे विधाता अनुकूल होय तेवारें सर्व अनुकूल थाय.

पछी राजायें बेहु मित्रो पासें पोतानी सर्व वार्त्ता मूलथी मांडी कही, तेमणें पण पोतानी सर्व हकीगत कही. त्रणे मित्र परस्पर प्रेमथी रह्या बे कन्या आणी ते बेहु मित्रने परणावी, पछी पोतानी शक्तियें घणां राज जीती मित्रने बीजा देशोनां राज्य आपी पोतें विद्याधरपुरनुं राज्य पालतो विचरे छे.

हवे इंद्रदत्तराजा वृद्ध थयो, तेवारें हरिवाहनकुमरने पोतानी पासें तेडावी रूडुं मुहूर्त्त जोवरावी राज्यपाटें थाप्यो. पोतें दीक्षा लइ घणुं तप तपी कर्मक्षय करी शाश्वतुं मुक्तिनुं राज्य लीधुं.

पितायें जेवारें दीक्षा लीधी, तेवारें हरिवाहन, बे मित्र अने अनंगलेखा ए चारे जणे सम्यक्त्वसहित श्रावकधर्म आदर्यो. पछी हरिवाहन राजा तीर्थयात्रा, रथयात्रा, अष्टाह्निक, अनयदान पट्टह, जिनप्रासादबिंबप्रतिष्ठादिक अनेक उत्तम कार्य करी श्रीजिनशासननो प्रानाविक थयो.

एक सहस्र वर्ष वीत्या केडें उद्यानेविषे केवली नगवान् पधार्या, उद्यानपालें वधामणी आपी तेने हर्षदान देइ राजा हरिवाहन पोताना बे मित्र तथा अनंगलेखा सार्थे वांदवा गयो. धर्मदेशना सांनली संसारथकी निर्वेद पाम्यो थको पूछवा लाग्यो के कहो स्वामी ! म्हारुं आयुष्य केटलुं छे ? केवलीयें कह्युं तहारुं आयुष्य नवप्रहर मान छे, ते सांनली राजा ध्रूजवा लाग्यो के हा!!! हवे नवप्रहर मांहे हुं म्हारुं शुं आत्मसाधन करीश ! केवलीयें कह्युं चिंता म कर. हजी कांइ विणइयुं नथी तुं तरत दीक्षा ले ॥ यतः ॥ अंतोमुहूत्तमित्तं, विहिणाविहिया करेइ पव्वज्जा ॥ पुरकाणं पज्जत्तं, चिरकाल कयाइं किं नणिमो ॥ १ ॥ कंचणमणि सोवाणं, थंनसहस्सुसियं सुवस्र तलं ॥ जोकारिज्ज जिणहरं, तउवि तव संजमो अहिउ ॥ २ ॥ केवलीयें एवुं कह्या नंतर पोताना विमलवाहन पुत्रने राज्य आपी राजायें मित्र द्वय तथा अनंगलेखानी सार्थे दीक्षा लीधी संसारथकी निर्वेद पाम्यो नावना नावतो हूउ, के धन्य ए गुरु के जेणें हुं संसार समुद्रमांहे बूडताने बाहिर काढयो तथा अनित्यादिक बार नावना नावतो रह्यो एवामां अकस्मात् मस्तकें शूल उपनुं घणी वेदना थइ तो पण चिकित्सानी वांछा कीधी नहीं. मनमां विचार्युं जे रूडुं थयुं के पाछला नवनां करेलां कर्म उद

य आव्यां, तेने जोगवीने रण उतारुं छुं एम वेदना अहियासतो शुन ध्या नें काल करी सर्वार्थसिद्धविमाने तेंत्रीश सागरोपमने आउखे देवता थयो. तिहांथी चवी महाविदेहमांहे उत्तमकुल पामी दीक्षा लइ मोक्षें जाशे. तथा बे मित्र अने अनंगलेखा पण माहाविदेहमां मोक्षें जाशे. ए त्रीजा निर्वेद लक्षणनी उपर हरिवाहनराजानी कथा कही ॥ ३ ॥

हवे समकेतनुं चोथुं लक्षण अनुकंपा छे, ते कहीयें छैयें. (दुहिए दया णुकंपा के०) दुःखीया प्राणीने विषे जे दया करवी, तेने अनुकंपा कहीयें ते अनुकंपा बे प्रकारें छे. एक द्रव्यथकी अने बीजी जावथकी तेमां पोतानी शक्तिने अनुसारें द्रव्यादिक आपीने आगलानुं दुःख टालवुं ते द्रव्यथकी अनुकंपा जाणवी अने जावथकी तो आर्द्रहृदय थाय जे अरे आ दुःखी जीव छे, हुं एनुं दुःख जांजी शकतो नथी? एवुं मनमांहे जावे ते जावथकी दया कहीयें ॥ यतः ॥ दट्ठूणपाणि निवहं, जीमे जवसायरम्मि दुरकत्तं ॥ अविसेसोऽणुकंपा, दुहावि सामछउ कुणइ ॥ १ ॥

हवे ए अनुकंपाने विषे जयराजानी कथा कहीयें छैयें. हस्तिनागपुरने विषे जयनामें राजा छे, ते एकदा सजा पूरी बेठो छे एवामां अकस्मात् लोकोने दोडतां दीठां, तेवारें राजायें वेत्रीने पूछ्युं ए लोक धाय छे, ते शुं छे ? वेत्रें समाचार लइ आवी राजाने कह्युं स्वामी पूर्वें तमारा पितायें प्रजातें एक स्वप्न दीठुं हतुं. ते स्वप्ननो विचार करी रूडेवानें स्वप्नमां जेहवा विचार कह्या हता. तेवां चित्रामण चितरावीने तेने लुगडाथी ढांकी राख्यां हतां, ते प्रतिदिन पूजाता हता हवे आज उन्मत्तशतामंद, गोविंद, धरणीधर, प्रमुख कुमरें लुगडुं उघाडी ते चित्र जोयुं तेथी ते त्रणे कुमर तत्काल अचेत थयाथका पड्या छे. तेने जोवा माटे लोक दोडे छे.

ते सांजलीने तेनो प्रतिकार करवा माटे राजा तिहां गयो, ते पण मूर्त्ति देखतांज मूर्छा खाइ पडी गयो, तिहां मंत्री प्रमुख परिवारें मली शीतलोपचारें करी राजाने सावधान कस्यो. कुमरो पण सावधान थया, पछी राजा स्वस्थ थइ दंतधावन करी सजामां आवी बेठो. मंत्रीश्वरें राजा प्रत्यें पूछ्युं, स्वामी! मूर्त्ति देखीने त्रण कुमर तथा तमोने मूर्छा आवी तेनुं कारण शुं हशे ? राजायें प्रधानने कह्युं सांजल. एनुं घणुं वृत्तांत छे ते कहुं छुं

विजयवर्द्धन नगरें शार्दूल नामें राजा तेनी निंदा नामें जार्या, तेनो चं

द नामें पुत्र हतो. तेने पुरोहितनो पुत्र विष्णु अनें मंत्रीनो पुत्र सुबुद्धि तथा श्रेष्ठीनो पुत्र शंख, ए त्रणे जणनी साथें मित्राचारी हती प्रतिदिन एकठा रमे, एकठा जमे अने एकठा नमे. अन्यदा अश्वक्रीडायें करी परिश्रांत थको राजानो कुमर महोटा आंबाना वृक्षनी हेठे वीसामो लीये छे. एवामां एक कापालिक आव्यो तेने कुमरें नमस्कार कीधो. कापालिकें आशीर्वाद दीधो जे तुं नागलोकनी स्त्रीनो नाथ थाजे. तेवारें कह्युं हुं मनुष्य छुं, ते नागलोकनी स्त्रीनो स्वामी शी रीतें थाउं ? योगीयें कह्युं गुरुना प्रसादथकी शुं न थाय ? सर्व चिंतव्या पदार्थ थाय. जे पृथ्वीमां भ्रमण करे, ते सर्व कांइ पामे, पण जे कूपना देडका सरखां होय, ते कांइ पण न पामे ? एवां योगीनां वचन सांभली मंत्रिपुत्रनी साथें कुमर घेर आव्यो.

रात्रें कुमरें आवी योगीने पूछ्युं के स्वामी ! नागलोकनी स्त्री शी रीतें पामीयें. योगी कहे सांभल. वंध्याचल नामा पर्वतें सुवेल नामा यक्षनुं प्रासाद छे. तेनी माबी भीतें गुफा छे तिहां नागस्त्री घणी छे. तेनो भोक्ता तुं थाइश. एवो हुं तह्मारुं सौभाग्य देखुं छुं. एवुं सांभली कुमर कामवश थयो थको पिताने पूछ्याविना त्रण मित्रसहित योगीनी साथें जवा लाग्यो तेने त्रण मित्रें कह्युं के, हे कुमर ! तुनें योगीनो विश्वास करवो योग्य नथी ॥ यतः ॥ न नारिषु न मूर्खेषु, न विरोधिषु शत्रुषु ॥ नचाविज्ञातशीलेषु, विश्वसंति विपश्चिताः ॥ १ ॥ भवितव्यताने योगें ते त्रण मित्रोनां वचन अवगणीने कुमार ते योगीसाथें चाल्यो. अनुक्रमें विंध्याचलें गया, तिहां योगीयें चार बोकडा वेचाता लीधा. ते चार जणने एकेको बोकडो आप्यो. अने कह्युं के सर्व जण एकेको बोकडो मारीने यक्षनी पूजा करो. पछी आंख मीचीने पगे लागो, के जेम साध्य सिद्ध थाय.

तिहां त्रण जणा तो योगीनुं वचन मानी बोकडाने मारी आंख मीची यक्षनें पगें लाग्या अने श्रेष्ठीपुत्रें तो पापथकी भयपामी छागनो वध न कर्यो. योगीयें तरवार काढी ते त्रणेनो शिरछेद कीधो. अनें श्रेष्ठी पुत्र शंखने पण योगी मारवा लाग्यो, तेवारें यक्षें कह्युं हे पापिन् ! एने मारीश नहीं, कारण के एणे तह्मारुं कथन कीधुं नथी एणे बोकडो मार्यो नथी. एतो जीवदयावान् पुरुष छे, तेमाटे एने मारीश नहीं. एवुं कहेथके योगी यक्षने मनाववा गयो, एटलामां श्रेष्ठीपुत्र शंख ते बोकडाने लइ

ने नाशी गयो. बोकडाने जीवतो सुगामें मूकीने विचार्युं जे ए त्रणे मित्रें पाप कीधुं तो ते पापनुं फल पाम्या. पण हवे हुं म्हारा स्वजनने मुख शुं देखाडुं ? माटें जिहां कोइ मुझने उलखे नहीं एवी भूमियें जतो रहुं. एम चिंतवी आगल चाल्यो, तेने भाग्ययोगें मार्गमां सुबुद्धि नामें श्रावक मल्यो, तेनी आगल पोताना दुःखनी वात कही, त्यारें श्रावकें कह्युं धन्य छे तुझने के तें जीवदया पाली पोतानो आत्मा उगार्यो. हवे तुं धर्म मूकीश मां. एम मारगमां बेहुने मित्राइ थइ. श्रावकें तेने चौद पूर्वनुं सारभूत एवुं पंचपरमेष्ठीनुं स्मरण आप्युं, अने कह्युं जे एनुं स्मरण करवाथी तुझने इहलोकें तथा परलोकें रूडुं थाशे.

एम ते एकठा पंथें चाल्या जाय छे एवामां मार्गें भीमनामें पल्लीपति नी धाड आवी, तेणें सथवारो लूंट्यो, घणां लोको नासी गयां. तथा मराणां अने ए शंख प्रमुख दश बंदीवानो पकडाया. तेने पल्लिपतिपासें लइ गया, पल्लिपतियें कह्युं जाओ. एमने देवीने देहरे राखो. जेवारें अगीयारमो नर मलशे. तेवारें देवीने बलि आपीशुं. एम कही राख्या. हवे शंख पोताना मुखथी नवकारमंत्रनुं स्मरण मूके नहीं गण्याज करे. एम करतां अगीयारमो पुरुष पण कोइ स्थलथकी आण्यो तेवारें अष्टमीने दिवसें चामुंडानी आगल अग्यार जणने बली देवामाटें उभा कीधा. तेमने अंघोल करावी तरवार तैयार करे छे. एवामां पोकार करतो पल्लिपतिनो माणस आव्यो के, स्वामी ! धाओ, धाओ. तमारो पुत्र भूतग्रस्त थयो छे, मरणदशानी ढूकडो आव्यो छे, ते सांभलतां वार पल्लिपति तिहां गयो. तेवारें शंख नवकारमंत्रनो महिमा जाणी चोकीदारने कहेवा लाग्यो के अमो अगीयार जणने तमें जीवता मूको. तो ए तमारा पुत्रने हुं जीवाडुं. पल्लिपतियें कह्युं एने तेडी लावो. शीपाइओ आवी शंखने तेडी गया. हवे शंखें तिहां मंडलरचना करी पछेडी ओढी कमलबंधन नमस्कार जाप करवा लाग्यो, तेना महिमाथकी भूतडुं नासी गयुं. कुमर उठी बेठो थयो. पल्लिपतियें तेने खोलामां लीधो, नवो जन्ममहोत्सव कीधो. शंखना कहेवाथी दश बंदीवानोने जमाडी वस्त्र आपीने पल्लिपतियें छोडी मूक्या. अने निरपराधी जीवोनो हवेथी वध करवो नहीं. एवो पडह वजडाव्यो. ते दिवसथी पल्लिपति ते शंखने गुरुनी पेरें आराधवा लाग्यो.

एकदा प्रस्तावें शंखना मात पितायें पोताना पुत्रनी खबर पामीने तिहां तेडुं मोकल्युं पल्लिपतियें घणा आमंबरसहित तेने घेर पहोंचतो कीधो. ते आवी पोतानां मातपिताने मल्यो, त्रणे मित्रनुं स्वरूप कह्युं. राजा प्रमुख सर्व लोक डुःख करवा लाग्यां. तिहां शंख गुरु समीपें शुद्ध धर्म पामी शुनकार्योमां इव्यव्यय करतो घणी श्रीजिनशासननी उन्नति करतो जीवदयामां तत्पर थयो. एम घणुं पुण्यकर्मोपार्जन करी मरीने देवलोकें देवता थयो.

ते देवनुं जेवारें शेष स्वल्पायु रह्युं, तेवारें गुरुने पूब्युं नगवंत ! हुं बोधबीज केम पामीश ? गुरुयें कह्युं हस्तिनागपुरें शूरराजानो पुत्र जय एवे नामें तुं थाइश. तिहां चित्र जोतां जोतां त्रण मित्रनी साथें तुं प्रतिबोध पामीश. ते वात गुरुनी पासेंथी सांजलीने ते देवता शूरराजा पासें आव्यो, अने राजाने कह्युं के तमारी नींतने विषे माहारा पूर्व वृत्तांत आलेखवो, तेणे महारा स्वप्न पाम्याथकी महारुं तथा महारा त्रण मित्रनुं पूर्ववृत्तांत चितराव्युं तेने लूगडांथी ढांकी मूक्युं, अने हुं शंखनो जीव देवलोकथी चवी आहीं शूरराजानो पुत्र थयो बुं. तथा ए त्रणराजपुत्र महारा पूर्व नवना मित्र ते पण ए चित्र देखी मोह पामी. जातिस्मरण पाम्या अने मुजने पण जातिस्मरण उपनुं तेणें करी में महारुं समस्त पूर्वनव वृत्तांत कह्युं. तिहां समस्त लोक राजानो तथा त्रण मित्रनो पूर्वनव सांजली दयाने विषे तत्पर थया. सर्व लोको नवकारमंत्र तथा जीवदयानी आस्ता आणी धर्म करवाने प्रवर्त्त्या. पढी ते जयराज त्रण मित्रनी साथें गुरुनी समीपें चारित्ररत्न पामी आराधक थइ अनंतसुखनुं नाजन थयो. ए समकेतना चोथा अनुकंपा लक्षणने विषे जयराजानुं चरित्र कह्युं.

हवे पांचमुं आस्तिक्य नामें समकेतनुं लक्षण कहे बे.

(अब्किमब्जिजिणवयणे के०) श्रीजिनेश्वरना वचन उपर जे आस्थाराखे, तेने आस्तिक्यता कहीयें ॥ यतः ॥ मन्नइ तमेव सव्वंमि, सकज्जिणेहि पसुत्तं ॥ सुहपरिणामो सम्मं, कंखाइवि मुत्तिया रहित्तं ॥ १ ॥ ४५ ॥

ए आस्तिक्यने विषे पद्मशेखरनी कथा कहीयें बैयें. आ नरतक्षेत्रने विषे पृथ्वीपुर नगरें पद्मशेखर नामें राजा राज्य करे बे. तेणें श्रीविनयंधरसूरिनी पासेंथी जीवादिक नवपदार्थनो विचार लेइ वज्रलेखनी पेरें श्रीजिनवचन ऊपर आस्ता राखी बे. ते राजा प्रतिदिन सनायें बेगो थको गुरु

ना गुणवर्णन करे. तेथी घणा जीवने धर्मउपर, गुरु ऊपर तथा श्रीजिन वचननी उपर आस्ता आवे. परंतु एक श्रेष्ठीनो पुत्र विजय नामें छे ते राजा प्रत्यें कहे के जे ए साधुनी गुणस्तुति करे छे ते सर्व पलाल फूलनी परे छे, एवा ते वली जगतमां कोण छे के जे पांचे इंद्रियना विषय जीती शके? ते माटे ए सर्व यतिउनी कपटाइ छे माहारो तो ए अभिप्राय छे के दुःखी या जीवने मारीयें तो ते माखा थका पूर्वकर्मवेदीने भवांतरें सुगति पामे.

हवे ते विजयने प्रतिबोधवा माटे राजायें पोताना यक्ष एवे नामें अंत रंग पुरुषने कह्युं के ए विजयनी साथें तुं मित्राइ करी तहारा उपर विश्वास उपजाव. पछी तेणे तेम कराने जेम ए विजय न जाणे, तेवी रीतें विजयना रत्नकरंमकमांहे राजानुं आभरण मूक्युं. राजायें पडह वजडाव्यो जे महारुं आभरण गयुं छे माटे जेना घरमांहेथी निकलशे तेने हुं चोरनो दंम आपीश. तेमाटें जे कोइ जाणो तो मने आवी कहेजो, जे कहीने पाछुं आपशे तेनी उपर दंम नथी. हवे जेवारें कोइयें पण आवीने राजाने न कह्युं तेवारें राजायें पोताना सुभटो मोकलावीने घेर घेर शोध करी ते शोध करतां विजयने घरे करंमीया मांहेथी आभरण निकल्युं, तेवारें राजायें विजयने तेडावी पूछ्युं तें केम महारुं आभरण चोर्युं? विजयें कह्युं हुं जाणतो पण नथी. राजायें कह्युं जे चोर होय, ते क्यारे पण पोताना मुखें माने नहीं. एम कही राजायें तेने मारवानो हुकुम आप्यो. एवो अकस्मात् चोरीनुं कलंक चडे छतें मरवाना भयथी कंपतो एवो जे विजय ते पोताना यक्षनामें मित्रने कहेवा लाग्यो के तुं महारो मित्र छो, माटें हमणां मने गमे ते उपाय करीने जीवतो रखाव. दंम परछीने पण जीवतो रहुं तेम कर.

तेवारें यक्षमित्रें राजानी आगल जइ कह्युं के स्वामी! विजय कहे छे, के हुं तमारा आभरणनी वात जाणतो पण नथी. महारे माथे फोकट कलंक चड्युं छे, माटें महारी पासेंथी दंम लइने मने मुक्त करो. ते सांभली राजायें कह्युं अरे यक्ष! ए विजय कहे छे, के दुःखीया जीवने मारी नाखीयें तो मखा थकां ते जीव पोतानुं कर्म भोगवी सुगति पामशे, तो ए पण रूडुं छे, जे ए विजयपण मख्यो थको सुगति पामशे. जेमाटे विजयना कहेवा प्रमाणे जीव तो मरवा माटे वांछेज छे, तो हवे विजयने मरवा माटें शी हरकत छे? एमां एने शा वास्ते आटलुं बधुं दुःख लागे छे? अने प्रपं

च करवो पडे छे ? दंम आपवो पडे छे ? ए वात यद्दें आवी विजयनें कही तेवारें विजयें कह्युं आवी रीतें मरण पामीने मने सुगति जोइती नथी माटे जेम तेम करी मने जीवित दान अपाव. ते सांभली वली पण यद्दें आवीने राजाने वीनव्यो के स्वामी विजय तो कहे छे, के मुझने मरण थकी जीववुं घणुं वल्लभ छे, तेमाटे एने मूकी द्यो. त्यारें राजायें कह्युं महारा घरथकी एक तेलनुं भरेलुं भाजन लइ आखा नगरमां भमवुं अने तेमांथी एक तेलनो बिंदुमात्र पण नीचें पडवा न देतां तेवुंनुं तेवुं भाजनमहारी आगल पाछुं आवी मूके, तो हुं जीवतो मूकीश. तेणे ते वात कबूल करी.

पछी राजायें समस्त नगरलोकने कहेवराव्युं के चहूटे चहूटे शेरीयें शेरीयें वीणा, वेणु, मृदंग वजाडो. अने वेश्याउने कहेवराव्युं के तमें शोल शणगार सजी रस्तामां आवी नृत्य करो, मधुरस्वरें गीतगान करो. एवा राजाना हुकुम प्रमाणें सर्व कोइ कार्य करवामां प्रवर्त्तन थयां. एवामां विजयपण कंठसुधी भरेलुं तेलनुं भाजन लेइ रस्तामां निकल्यो, घणुये रसीयो हतो, पण मरणना भयथी मार्गें जातां वीणा वेणुनादें करी वेश्याने नाचवामां एणे काननो तथा नेत्रनो चालो कीधो नहीं, एनुं एक तेल मांहेज ध्यान रह्युं. जे रखे ने तेलनुं एक बिंदु पडी जाय ? जो बिंदु पडशे तो राजा मारी नाखशे. तेमाटें घणेज सावधानपणे तेलना भाजनने नगरने विषे भमाडी जेहवुं भरेलुं हतुं तेवुंने तेवुंज राजानी आगल आवी मूक्युं अने राजानें प्रणाम कर्यो. तेवारें राजा हसीने बोल्यो के अरे विजय ! तुं कहेतो हतो जे इंद्रियो चपल छे, तेने कोइ पण जीती शके नहीं, अने यतिउ कपट करे छे, तो हवे तें आजे इंद्रियोने केम जीती लीधीयो ? तेवारें विजयें कह्युं सर्वथकी मरणनुं भय महोटुं छे, में पण मरणना भयथी इंद्रियोनें जीती. एम सर्व जीवोनें जीवितव्य वल्लभ छे, मरणने कोइ वांछतो नथी.

हवे राजा पोतें दृष्टांत आपीने विजयने समजावे छे, राजा कहे छे के जेम तें मरणना भयें करी इंद्रियोवश कीधीयो, मरण थकी तुं बीहीनो, तेम ए यतिउ पण अनंता भवनेविषे मरण करवुं, तेना भयथी इंद्रिय जय करे छे. तेमाटें तुं कां नास्तिक थाय छे ? एम दृष्टांत आपी राजायें प्रतिबोध्यो थको विजयश्रेष्ठियें आस्तिकपणुं आणीने श्रावकपणुं पडिवज्युं. ए रीतें पद्मशेखर राजायें घणा जीवोने युक्तिपूर्वक प्रतिबोध आपी श्रीजिनवचन उप

र आस्ता अणावी. एम श्रीजिनधर्म आराधि श्रीजिनवचन उपर आस्ता धरतो अंतें अनशन लइ सुरभिवनने विषे जइ देववृंदने प्रतिबोध देतो हुवो. ए आस्तिक्यनामा समकेतलक्षणने विषे पद्मशेखर राजानुं दृष्टांत कह्युं.

इति महोपाध्याय श्रीचंद्रगणि शिष्योपाध्याय श्रीशांतिचंद्रगणितत्शिष्य श्रीरत्नचंद्रगणिविरचित श्रीसमक्त्वरत्नप्रकाशनामनि सम्यक्त्वसप्तिका बालावबोधे सम्यक्त्वलक्षणस्वरूपनिरूपण नामाऽष्टमोधिकारः संपूर्णः ॥ ८ ॥

हवे ब प्रकारनी जयणा राखवी, तेनुं नवमुं अधिकार कहे बेः—

॥ परतित्थियाणं तद्दे, वयाण तग्गहिय चेइयाणं च ॥ जं बव्विहवावारं, न कुणइ सा बव्विहा जयणा ॥ ४६ ॥ अर्थः—(परतित्थि के०) परतीर्थी ते अन्यतीर्थी मिथ्यादर्शनी जे तापस पारिव्राजकादिक तेने तथा (तद्देवयाण के०) तेना देव जे हरि, हर, ब्रह्मादिक तेहने तथा (तग्गहिय के०) तेणें ग्रहण कस्या एवा जे श्रीअरिहंतना (चेइयाणंच के०) चैत्य प्रतिमा तेने (जं के०) जे (बव्विहवावारं के०) षड्विध व्यापार एटले ब प्रकारनो व्यवहार (नकुणइ के०) न करे (सा के०) ते (बव्विहाजयणा के०) ब प्रकारनी जयणा एटले यत्ना कहीयें, एम सिद्धांतना जाण कहे बे.

हवे ते ब प्रकारनां नाम कहे बेः—

॥ वंदण नमंसणं वा, दाणाणुप्पयाणमेसि वज्जेइ ॥ आलावं संलावं, पुव्वमणालित्तगो न करेइ ॥ ४७ ॥ अर्थः—एक (वंदण के०) वंदन, बीजुं (नमंसणं के०) नमस्कार, (वा के०) वली त्रीजुं (दाण के०) दान अने चोथुं (अणुप्पयाण के०) अनुप्रदान (एसि के०) ए चार वानां परतीर्थि प्रमुखने विषे (वज्जेइ के०) वर्जे, तथा पांचमो (आलावं के०) आलाप अने बहो (संलावं के०) संलाप एवा ब प्रकार, ते पूर्वोक्त परतीर्थि प्रमुखने विषे न करवा. तिहां जे (पुव्वमणालित्तगो के०) प्रथम अनालापक एटले पहेलुं बोलाव्याविनानुं तेनी सायें बोलवुं,ते (ण करेइ के०) करे नहीं, एटले अणबोलाव्यो बोले ते आलाप कहीयें, जे कारण माटे बोलाव्या पबी तो श्रीगौतमस्वामीयें पण जगवती प्रमुख सूत्रनेविषे प्रश्नना उत्तर आप्या बे, तथा मडुआ प्रमुख श्रावकें पण उत्तर आप्या बे, एम जगवती प्रमुख सूत्रोनेविषे देखीयें बैयें ॥ यतः ॥ तेणं काले

एं तेणं समएणं समणभगवं महावीरे जावगुणसीलए चेइए समोसढे जा परिसापडीगया तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवउ महा वीरस्स जिठे अंतेवासी इंदभुइणामं अणगारे गोयमगोत्तेणं एवं जहा वित्तीयसए नियंठुदेसए जावभिस्कायरियाए अडमाणे अहापज्जत्तं भत्त पाणं पडिग्गहं इम पडिग्गाहि रायगिहाउ जावअतुरियम चवलजाव रीयं सोहेमाणेरा तेसिं अन्नउछियाणं अडुरसामंतेणं विति वयति त तेण ते अन्नउछिया भयवं गोयमं अडुरसामंतेणं वित्तिवयमाणं पासंती पासेत्ता अन्नमन्न सदावंतीता एवं वयासी ॥ एवं खलु देवाणुप्पिया, अम्हं इमाकहा अविउप्पकडा अयंचणं गोयमे अम्हं अडुरसामंतेणं वित्ति वयति तं सेयं खलु देवाणुप्पिया अम्हं इमा कहा अविउप्पकडा अयंच णं गोयमे अम्हं अडुरसामंतेणं वित्तिवयति तं सेयं खलु देवाणुप्पिया अ म्मं गोयमं एयमठं पुछित्तए तिकट्टु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमठं पडिसुण तित्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागछंति उवागछित्ता ते भयवं गोयमं एवं वयासी एवं खलु गोयमा तव धम्मायरीए धम्मे वादेसए णायपुत्ते पंचछि काए पन्नवेति तं जहा धमछिकायं जाव आगासछिकायं तं चेव जावरुविकायं अरुविकायं पन्नवेत्ति स कहमेयं गोयमा एवं तएणं से भगवं गोयमे ते अ न्नउछिए एवं वयासी नो खलु देवाणुप्पिया अछिभावं नछित्ति वंदामो ता वयंसाखलु तुम्मे देवाणुप्पिया एयमठं सयमेव पच्चुस्केवह तिकट्टु न अन्नउ छिए एवं वयासित्ति ॥ श्रीभगवतीसूत्रे ॥ ४१ ॥

हवे एज गाथानो अर्थ, ग्रंथकार विवरीने देखाडे ठेः–

॥ वंदणयं करजोडण, सिरनामण पूयणं च इह नेयं ॥ वायाइ नमुक्का रो, णमंसणं मण पसाउ य ॥ ४८ ॥ अर्थः–प्रथम हाथनुं जोडवुं, अं जलि करवे करी तेने (वंदणयं के०) वंदनक कहीयें, तथा (सिरनामण के०) शिरनुं नमाववुं तथा पुष्पादिकें करी (पूयणंच के०) पूजवुं (इह के०) ए श्रीजिनशासननेविषे एटलां वानां वंदनमांहे अवतरे,एम (नेयं के०) जाणवुं. एटलां वानां परतीर्थीने न करवां ॥यतः॥ परतिछियाण पणमण, उप्नावण थुणण भत्तिरागं च ॥ सक्कारं सम्माणं, दाणं विणयं च वज्जइयं ॥ १ ॥ ए प्रथम यत्ना कहीयें. (हवे बीजी यत्ना कहे ठे. (वायाइ के०) वचनें करी (नमुक्कारो के०) नमस्कारनुं करवुं, तथा गुणकीर्त्तन ते स्तूयी

दिक देवनुं स्तवन करवुं तथा (मणपसाउय के०) मनप्रसाद ते मिथ्याद्द ष्टि देव तथा तेमना तापसादिक गुरुउ जे छे, तेमने दीठे थके हर्षनुं पामवुं आदरनुं देवुं ते नमंसणरूप बीजी यत्ना कहीयें ॥ ४७ ॥

हवे एनेविषे संग्रामशूरनो दृष्टांत कहीये छैयेंः– एहज नरतक्षेत्रें प पद्मिनीखंम नामें नगरी छे. तिहां शूरसेनराजा राज्य करे छे. तेनो संग्राम शूरनामा कुमार छे, तेने बालपणाथी आहेडानुं व्यसन छे, माटें ते आहे डो करवाने अर्थें परदेशथी शिकारी कुतरा मगावे ने प्रतिदिन आहेडो करे. एकदा तेना पितायें तेने समजाव्युं के हे पुत्र ! आहेडानो उद्यम तुं करे छें, ते नरकनुं कारण छे, जे माटे निरपराधी जीवोनो वध करवो, तुज ने योग्य नथी. ए आहेडानुं व्यसन मूकी दे अने जो नहीज मूके, तो मै हारा नगरथी बाहिर जतो रहे, जेम हुं ताहारुं मोहोढुं देखुं नहीं ? तेम कर. एवां पितानां वचन थकी दुःख पाम्यो थको ते दुष्ट गामथकी निकली नगरनी बाहिर घर बांधीने रह्यो. तिहां नित्यप्रत्यें प्रजातें उठी साथें कुतरा लेइने घणा जीवोनो संहार करी आवे.

एकदा ते सघला कुतराने मूकीने कोइ ग्रामांतरें गयो छे, एवामां ते कु तरानां स्थानकनी समीपें एक श्रुतकेवली, अवधिज्ञानना धणी एवा श्री शीलंधराचार्य आवी उतरया, तेमणें ते कुतराने प्रतिबोधवाने अर्थें मधुरस्व रें सिद्धांतनी गाथा जणवा मांमी, ते गाथा आ प्रमाणें ॥ यतः ॥ खिणमित्त सुरक कज्जे, जीवा निहणंति जे महा पावा ॥ हरिचंदण वणसंमं, दहंति ते छार कज्जंमि ॥ १ ॥ जीवस्स दया रहिउ, जीवो अन्नं करेइ जो धम्मं ॥ आरुहइ छिन्नकन्नं, सो खरमेरावणं मुत्तं ॥ २ ॥ इत्यादिक ते आचार्यनी वाणी सांजलतां कुतराउने जीवदयानी वासना आवी. अने चिंतववा ला ग्या के अमो जीववध करी नरकें जाशुं, घणां दुःख पामशुं, तेमाटे हवे आपणने आ जन्मपर्यंत जीववध न करवो. एवुं व्रत लइ बेठा.

हवे संग्रामशूर कुमार ग्रामांतरथी आव्या नंतर आहेडे चढ्यो, तिहां कू तराने छूटा मूक्या. पण ते कोइ जीवनी साहामा दोडे नहीं, घणुं ए तु तु करे तथा कालीया कालीया, मोतीया मोतीया, धोलीया, धोलीया, बा जीया बाजीया, एवां एवां नाम लइ पोकारे, तो पण कुतरा तो जाणे पथ रानाज घडेला होय नहिं? तेवा स्तब्ध थइ रह्या.

एवुं जोइ कुतराना रखवाळने ते फुष्ठ पूछतो हवो के ए कुतरा हरणा दिकनी साहामा धसता नथी तेनुं शुं कारण छे ? तेणे कह्युं बीजुं तो कांइ कारण हुं जाणतो नथी पण ए कुतरा जिहां रहे छे, तेनी साहामा यति उ आवी रह्या छे, ते जीवदयानां शास्त्र नणता हता, न जाणीयें ते सांन ळीने एमनां चित्तपण जीवदयावासित थयां होय ?

एवी वात तेना मुखथी सांनळीने चिंतववा लाग्यो जे हाहा यतियोनी वाणीथी आ पशुउ पण प्रतिबोध पाम्या, अने हुं अनागीउ अधम थको रात्रिदिवस निरपराधी जीवोने मारतो फरुं छुं, तो नरक विना बीजे क्यां हिपण जवाने महारुं स्थानक देखातुं नथी. एवुं विचारी कुतराने ढोडी मूंक्या अने कह्युं के तमें तमारा गुरु जेथकी प्रतिबोध पाम्या तेनी पासें जाउ.

एवुं सांनळतांज ते सर्व कूतरा गुरुनी पासें आव्या अने हाथ जोडी विनीत श्रावकनी पेरें आगळ आवी बेठा. कुमर पण कौतुकें वाह्यो गुरु समीपें आव्यो अने गुरुने नमस्कार करी कहेतो हवो, स्वामी ! मुजने प ण धर्म कहो, जेम हुं पण प्रतिबोध पामुं. तेवारें गुरु बोल्या, हे कुमर ! देव श्रीअरिहंत अढार दोषें रहित अने गुरु सुविहित शुद्ध प्ररूपक, श्री अरिहंतनी आज्ञा प्रतिपाळक, तथा धर्म, श्रीअरिहंत नाषित विनयमूळ जीवदयासार, ए रत्नत्रयनुं तुं आराधन कर ॥ यतः ॥ जे अईया जेय पडि पुन्ना जेय आगमिस्सा अरिहंता नगवंता ते सवे एवमाइरकंति एवं नासं ति एवं परूवयंति सवे पाणा सवे नूआ सवे जीवा सवे सत्ता ण हिंसीय वा ण उवदवेयवा ण परियावेयवत्ति अपिच किंताए पढियाए पलालनूयाए पय कोडीए जंइतियंननायं परस्स पीडा ण कायवा. एवो उपदेश सांनळीने कुमरें शुद्ध निरतिचार समकेत उच्चर्युं. तथा निरपराधी जीवोना वध कर वानुं पच्चरकाण कर्युं. पछी आत्माने कृतार्थ मानतो थको पोताने घेर आ व्यो. अने कूतरा पण तिर्यंचने उचित धर्म पाळता थका सुखें रहे छे. पो तानुं कुमर आहेडो मूकीने श्रावक थयो, एवुं जाणी शूरसेनराजायें हर्ष पामता तेहने युवराज पदवी आपी. एम पिता पुत्र बेहु सुखें राज्य पाळे छे.

एकदा कुमरनो मित्र, सागर नामे हतो, ते समुद्रमांहे यानपात्र लइ पर देशें जइ घणी लक्ष्मी उपार्जीने घेर आव्यो, ते नेटणुं लइ कुमरने मळवा आ व्यो, तेणे नेटणुं मूकी प्रणाम करी समुद्र संबंधी वार्त्ता कही. कुमरें पूछ्युं,

कांइ आश्चर्य दीठुं होय, तो कहो. तेवारें ते कहेवा लाग्यो के सांजलो, आश्चर्यनी वात कहुं छुं. में जरसमुद्रमांहे कल्पवृक्षनी शाखायें हिंचतो पल्यंक ते ऊपरें अद्भुत रूप लावण्यने धरनारी चोशठ कलामां कुशल, शोल शृंगारें जूषित एवी कन्या बेठेली दीठी. ते देखीने जेटले हुं महारा प्रवहणने तेनी पासें लइ गयो, तेटले कल्पवृक्ष पल्यंक अने कन्या सर्व अदृश्य थइ गयां. हुं चमत्कार पाम्यो. एटले महारा सेवकें कह्युं इहां कोइ देवांगना वसे छे, ते आपणने देखी पाणीमां अदृश्य थइ गइ. ए आश्चर्य में दीठुं.

हवे कुमर, कामें पीडित थयो थको विचारे छे जे ए स्त्रीने हुं केम पामुं ? पछी हरखी पितानो आदेश मागी सागरमित्रने साथें लइ प्रवहणे बेसी समुद्रमार्गे चाल्यो. जातां जातां ते स्थानक पाम्या, तिहां तेमज कल्पवृक्षनी शाखायें बांधेला पल्यंकनी ऊपर कुमरीने रमती दीठी, पछी जेवारें तेनी साहामुं वहाण चलावे, तेवारें सर्व इंद्रधनुष्यनी पेरें अदृश्य थइ जाय. पछी कुमरने सर्व जनोयें वार्यां छतां पण हाथमां तरवार लइ ते कन्यानी पाछल झंप दीधो, तिहां जलकांतरत्न निर्मित सप्तजूमि प्रासादनेविषे सातमी जूमिका उपर पड्यो थको चिंतववा लाग्यो के ए प्रासाद पाणीमां केम रहेतुं हशे ? एवो संशय मनमां उपनो तिहां तेने जलकांतरत्ननो महिमा सांजरी आव्यो तेवारें तेनो संशय मट्यो.

हवे कुमर तिहांथकी हेठलनी जूमिकायें गयो, तिहां कल्पवृक्षनी शाखानेविषे पल्यंक प्रलंबमान दीठो, ते उपरें दिव्यरूप कन्या सूती दीठी. पछी उढणुं परहुं करीने तेनुं मुखकमल जोयुं ते पण तेहनो स्पर्श पामी तत्काल उठीने कहेवा लागी के, हे स्वामी ! जलें आव्या. एवुं कही पल्यंकें बेसाडी नाम स्थानादिक पूछवा मांड्यां, कुमर पण हर्ष पाम्यो थको नगरनुं नाम पितानुं नाम अने पोतानुं नाम तथा इहां आववानो हेतु पण कह्यो वली कुमरें कह्युं के तुं कोण छो ? अने इहां केम रहेली छो ? इत्यादिक चरित्र कहे.

तेवारें कुमरी बोली. सांजल हे महापुरुष ! वैताढ्यपर्वतें दक्षिणश्रेणीयें रथनूपुरचक्रवाल नगरनेविषे विद्युत्प्रज्ञविद्याधर राजानी मणिमंजरी नामें हुं पुत्री पिताने अत्यंत वल्लज छुं, अन्यदा महारे पिताये निमित्तियाने पूछ्युं महारी पुत्रीनो वर कोण थाशे ? तेवारें निमित्तिये कह्युं समुद्रमांहे जलकांतरत्ननुं सप्तजूमिकामय प्रासाद करावी, तिहां कल्पवृक्षनी शाखायें प्र

लंबमान पर्य्यंकें बेसी वीणा वजाडती ए ताहरी पुत्रीने राख, तिहां शूर सेनराजानो पुत्र संग्रामशूर आवीने एनुं पाणिग्रहण करशे. ते निमित्तिया ना कहेवाप्रमाणें सर्व सज्जाइ करीने महारे पितायें मुजने इहां राखी छे. आज दिवससुधी तमारी वाट जोती इहां रही छुं. ते आज महारो मनो रथरूप वृक्ष अकस्मात् फलीभूत थयो. हवे तमने भासे, तेम करो.

एवी बेहु जण परस्पर प्रेमवार्त्ता करे छे, एवामां तिहां एक अकस्मात् थयो ते कहीयें छैयें. एक घोर विक्रालरूपवालो, हाथमां खड्ग धारण करनारो, अने जाणे मशीमां बोली काढयो होय नहिं ? एवा काला शरी रवालो एक राक्षस तिहां प्रगट थइने कहेवा लाग्यो के अरे कुमर ! हुं सात दिवसनो भूख्यो छुं, अने ए कन्या महारुं भक्ष छे, तो तेने तुं केम परणवा वांछे छे ? एवुं कही कुमरीना नेउरसहित पग उपाडीने पो ताना मुखमांहे घाल्या, कुमरें तेनी उपर खड्ग वाह्युं, पण खड्गना बे कटका थइ पड्या. तेवारें कुमर बाहुयुद्ध करवा लाग्यो, तेमां पण राक्षसें कुमर नें हेठो नाखी बांह वाली पिछवाइयें बांध्यो, पछी कुमरप्रत्यें कहेवा लाग्यो के, हे कुमर ! आ तहारी स्त्रीने हुं मूकुं पण जो एना बदलामां तुं मु जने एक स्थूलशरीरवाली स्त्री आणी आपे. अथवा तहारी नगरीमांहे घणी दासीयो महोटा स्थूलशरीरवाली छे, ते आणी आपे, तो हुं एने मूकुं. अने तेनुं भक्षण करुं. अथवा जो एम पण न करे,तो आ निकट ढू कडा महारा गुरु चरक पारिव्राजक छे, तेने आवी पगे लाग. अथवा एज महारा प्रासादनेविषे हरि, हर अने ब्रह्मानी मूर्त्तियो छे, तेने नमस्कार करी, पूजा कर. अथवा महारीप्रतिमा करावीने तेनी नित्यप्रत्यें पूजा कर. तो हुं तहारी स्त्रीने मूकी आपुं. जो एम नहीं करीश, तो आखी गली जइश.

ते सांभली कुमरें कह्युं के हुं जो स्थूलदेहवाली स्त्री तुजने आणी आ पुं, तो तेनो तुं वध करे. ते वध करवानुं पाप मने पण लागे, तेथी महा रो व्रतभंग थाय. माटे ए काम महाराथी न थाय, तेमज वली देव तो श्रीजिनेश्वर अने तेमनी आज्ञाना प्रतिपालक सुसाधु ते महारा गुरु छे तेम ने मूकीने बीजा कोइने हुं नमस्कार पण करुं नहीं. एक श्रीअरिहंत वि ना बीजा लौकिक देवने हुं प्रणाम पण न करुं, अने पूजा पण न करुं. वली हे राक्षस ! ए तुजने पण योग्य नथी, जे देवता थइने जीववधनो

धंधो करे छे ? तेवारें राक्षसें कह्युं जो एटलां वानां तुं न करे, तो इहांज श्रीजिनगृह छे तेनेविषे श्रीवीतरागनी प्रतिमा छे, तेने पूज. ते वात कुमर कबूल करीने हर्षवंत थयो थको प्रतिमा पूजवा गयो. तो तिहां ते प्रतिमाप्रत्यें बौद्धोने पूजा करतां दीठा. ते जोइ कुमर बोल्यो ए बिंब मिथ्यादृष्टि जनोयें परिग्रहीत छे तेमाटे मुझने पूजवुं कल्पे नहीं. ए कार्य करुं तो म्हारा सम्यक्त्वनी हाणी थाय. माटें जो तुं म्हारो शिरछेद करे ते हुं कबूल करीश, पण जे कार्य करवाने तुं कहे छे, ते मांहेलुं एक पण कार्य हुं करीश नहीं. हवे तहारा विचारमां आवे ते कर.

एवुं सांभली ते राक्षस कुमरीप्रत्यें तेना पगथी गलवा लाग्यो, तेवारें कन्या बुंबारव करवा लागी, के अरे आर्यपुत्र ! आ राक्षस जे कहे छे, ते कार्य करीने हमणां तुं मुझने जीवती रखाव. वली गुरु समीपें जइने सम्यक्त्वनो उच्चार करजे. एम कुमरीयें बुंबारव करतां राक्षस, कुमरीने गलतो गलतो गलासुधी आव्यो, अने कुमरने कहेवा लाग्यो के एने संपूर्ण गली ने पछी हुं तुझने पण गली जइश. अरे ! एक दासी पण तहाराथी अपाती नथी, भला नथी अपाती तो रह्युं, पण हजी तुझने जीववानी आशा होय तो दासी रही, पण एक बगली पाणीमांथी पकडीने मुझने लावी आप. तेने कुमरें कह्युं के तुं गमे ते कर, पण हुं कांइ तहारुं वचन मान्य करीने व्रतभंग करनार नथी. जेमाटें मारी नाखवाथी उपरांत बीजी कोइ शीक्षा कांइ तहाराथी थाय तेम नथी, अने मरवुं तो एक वार छेज, पण समकेत पामवुं माहादुष्कर छे, ते कांइ वारंवार पमातुं नथी माटें तुं तहारुं वचन मानवा संबंधी कांइ पण आशा राखीश नहीं. हुं मरवाथी बीहीतो नथी. एवुं कुमरनुं साहस देखीने चमत्कार पाम्यो थको ते राक्षसनुं रूप मूकीने दिव्यरूप धारण करी कुमरने पगे लाग्यो, अने कह्युं के, जेहवो सौधर्मेंद्रें तुझने सभामांहे वखाण्यो. तेहवोज तुं साहसिक छो. हुं इंद्रमहाराजनुं वचन मानतो न हतो, पण में तुझने सोनानी पेठें कसी जोयो, तो तुं तेवोज छे. हवे हुं सौधर्मवासी देव छुं, ते तहारी उपर संतुष्ट थइ कहुं छुं. के तुं जे कांइ म्हारी पासें माग, तेहुं आपुं. कुमरें कह्युं म्हारे देव गुरुना प्रसादथकी कोइ वस्तुनी खपती नथी. एवुं कहे छते ते देवता गंधर्व विवाहें कुमरीनुं पाणिग्रहण करावी कुमरनी रजा लइ देवलोकें गयो.

कुमर पण मणिमंजरीनी साथें विषयसुख भोगवतो थको तिहांज रह्यो.

एकदा प्रज्ञप्ति विद्यायें जइने मणिमंजरीना पिताने समाचार कह्या, ते वारें ते तिहां आवी घणी ऋद्धि आपीने मणिमंजरी सहित कुमरने पद्मि नीखंम नगरें तेडी गयो, कुमर पोताना माता पिताने पगे लाग्यो, मणि मंजरीनो पिता विदायगिरि मागी वैताढ्यें गयो. शूरसेन राजा पण वृद्धा वस्थायें पुत्रने राज्य आपी पोतें दीक्षा लइ धर्मराज्य पालवा लाग्यो. कु मर पण सम्यक्त्वमूल श्रावकव्रतरूप धर्म पाली अंतें समाधिमरण करी देवलोकनां सुख भोगवी अनुक्रमें मुक्तिने विषे अनंत सुखनो भोक्ता थाशे. ए वंदन अने नमनरूप बे यत्नाने विषे संग्रामशूरनी कथा कही ॥

हवे त्रीजी दान अने चोथी अनुप्रदान ए बे यत्ना तथा पांचमी आला प अने छठी संलाप एवी चारे यत्नानुं स्वरूप कहे छेः—

॥ गउरव पिसुणं वियरण, मिठासण पाण खज्ज सज्जाणं ॥ तंचिय दाणं बहुसो, अणुप्पयाणं मुणि बिंति ॥ ४९ ॥ सप्पणयं संभासण, कुसलं वोसागयं च आलावो ॥ संलावो पुणरुत्तं,सुहडुह गुण दोस पुब्वाउ ॥ ५०॥

अर्थः—जे (गउरवपिसुणं के०) गौरव एटले आदर तेनुं पिशुन एटले सूचक एवुं (वियरणं के०) वितरण जे दान ते दानेंकरी आदर जाणियें. ते माटे गौरव पिशुन कह्युं हवे ते दान कइ कइ वस्तुनुं होय ? ते कहे छे. (इ ठासण के०) इष्ट वल्लभ एवुं अशन जे उदनादिक अने (पाण के०) पा णी ते द्राक्ष जल, इक्षुरस, नालिकेरजलादिक जाणवा तथा (खज्ज के०) खाद्य ते फलादिक अने (सज्जाणं के०) शय्या, वस्ति, रहेवानुं स्थानक इत्यादिकनुं जे दान ते महत्त्वनुं जणावनारुं छे, माटें एवुं दान मिथ्यादृष्टि ने देतां थकां कोइ देखे, तो एवुं जाणे जे ए श्रावक थइने मिथ्यादृष्टिने ए वडो आदर करे छे. तो ए पण गुणवंतज हशे, माटें अमें पण एने आदर आपीयें एम मिथ्यात्वनी वृद्धि थाय. एटला माटे न देवुं ए दानरूप त्रीजी यत्ना कहीयें. हवे (तंचियदान के०) तेहज दान जे एकवार आपवुं तेतो दान कहेवाय पण जे (बहुसो के०) बारंवार देवुं तेने (अणुप्पयाणं के० अनुप्रदान एटले अनुप्रसाद कहीयें. ए रीतें (मुणि बिंति के०) मुनियो कहे छे,ए चोथी अनुप्रदान यत्ना कहीयें. इहां घर आगल कोइ अन्यदर्शनी नो भिक्षाचर आव्यो होय तेने लोकव्यवहारें तथा अनुकंपायें दान देवानो

कांइ निषेध नथी ॥ ४९ ॥ अर्थः— (सप्पणयं के०) सप्रणय एटले स्नेह सहित जे (संनासण के०) संनाषण करवुं, ते आलाप कहीयें. ते केवी रीतें थाय ? ते कहे छेः—(कुसलं के०) तुमने कुशल छे ? (वा के०) अथवा (सागयं के०) स्वागतं एटले सुआगतं अर्थात् तमें आव्या ते नलुं थयुं ? तमें नलें आव्या ? अथवा सुखें आव्या इत्यादिकनुं जे पूछवुं, तेने (च के०) वली (आलावो के०) आलाप कहीयें, ते आलाप मिथ्यादृष्टिनी साथें न करवो. ए पांचमी आलाप नामें यत्ना जाणवी.

अने (संलावोपुणरुत्तं के०) पुनरुक्त एटले वारंवार जे आलाप करवो तेने संलाप कहीयें. अथवा (सुहडुह गुणदोसपुछाउ के०) सुख डुःख गुण दोषना पूछवाथकी पण संलाप थाय. पुत्र, पुत्री, कुटुंब, परिवार, तथा शरीर आश्रयी इव्यआश्रयीआय व्ययादिकना सुखनुं जे पूछवुं ते सुखपृछा कहीयें. तथा हमणां तमें डुचित्ता देखाउ छो. राजा, चोर, गोत्री प्रमुख तमने संतापे छे. एटला माटें तमें डुःखीया छो ? एवुं पूछवुं, ते डुःखपृछा जाणवी. तथा कथा कया शास्त्रने विषे तमारो परिचय छे ? अथवा तमें कां नणता नथी ? कलान्यास करो जेम रूडुं थाय ? तमारामां औदार्य, धैर्य, सत्त्वादिक गुण रूडा छे ? इत्यादिकनुं जे पूछवुं, ते गुणपृछा कहीयें. तथा तमें डुर्बल देखाउ छो, तेमज वली ज्वर, ताप, पित्त कफादिक रोगनुं पूछवुं, ते दोष पृछा कहीयें. ए प्रकार करवे करी संलाप कहीयें. ते संलाप मिथ्यादृष्टिनी साथें न करवो. जे माटें मिथ्यादृष्टिनी साथें जे अलाप संलाप करवो, ते डुर्गतिनुं कारण छे. ए छ यत्ना कहीयें ॥ यतः ॥ आलावो संलावो, विसंनो संथवो पसंगो य ॥ हीणायारेहि समं, सवंजिणंदेहिं पडिकुठो ॥ १ ॥ आणाइ अवट्टंतं, जो उववुहिज्ज मोहदोसेणं ॥ तित्थयरस्स सुयस्स य, संघस्स य पच्चणीउ सोय ॥

हवे ए पाछली चार यत्नाने विषे मंत्रितिलकनो संबंध कहीयें छैयें. एज नरतक्षेत्रें विजयपुर नगर तिहां नलराजा राज्य करे छे. तेनी सौनाग्यमंजरी एवे नामें पट्टराणी छे, अने मंत्रितिलक एवे नामें प्रधान छे. ते सकलबुद्धिनिधान छे. एकदा राजा पोताना मंत्रीनी साथें आहेडो करवा निकल्यो, वनमांहे एक मृगलो दीठो, राजा तथा मंत्री बेहु मृगलानी पूठें लागा, ते जेटले मृगनी उपर बाण नाख्युं, एटले मृग बोल्यो, के हे क्षत्री न

त्तम ! तुं तृणना खानार अने निर्झरना जलना पीनार एवा निरपराधी अमोने शुं करवा मारे ळे ? अमने मारतां लाजतो नथी ?

एवी मृगनी वाणी सांजलीने राजायें मंत्री प्रत्यें पूठ्युं के हे मंत्री ! आ मृगलो मनुष्यनी जाषायें बोले ळे, एनुं शुं कारण हशे ? मंत्रीयें कह्युं ए मृग न होय ए तो कोइक देवता जणाय ळे, माटें आपणें एनी पाळल दोडीयें, ए क्यां जाय ळे ? हवे ते मृग फाल देतो चाल्यो जाय, तेनी पाळ ल राजा अने प्रधान बेहु घोडा दोडावता जाय. एटले मृग एक वनमां हे गयो, तेनी पाळल राजा अने मंत्री पण गया. तिहां ध्यानैकतान, उ पशमरसनो कूप, क्षमानो आगर, सकलसाधु गुणसागर, एवो एक साधु दीठो, तेनी पासें जइने पहेलो मृगलो बोल्यो के हे महानुजावो ! तमें आ साधुने वांदो, एवुं मृगनुं वचन सांजली बेहु जण घोडाथी उतरी साधुने वांदता हवा. वांदीने बेठा, तेवारें साधु धर्मोपदेश देवा लाग्या ॥ यतः ॥ दानं सुपात्रे विशदं च शीलं, तपो विचित्रं शुजजावना च ॥ जवार्णवोत्तारण सत्तरंडं, धर्मं चतुर्द्धा मुनयो वदंति ॥ १ ॥ ए चारमां दान घणा प्रकारनां ळे, तेमां अजयदान अने सुपात्रदान ए बे दान मुख्य ळे. तेना फलनो क्षय नथी एवो धर्मोपदेश सांजलीने राजा धर्माजिलाषी थयो.

हवे साधुनुं रूप अने तेज देखी करी चमत्कारपूर्वक राजा पूठवा ला ग्यो, हे स्वामिन् ! तमोने शुं वैराग्यनुं कारण थयुं ? जे एवुं रूप, तेज, ला वण्य ळतां यौवनावस्थायें दीक्षा लीधी ? साधु बोल्या, हे राजन् ! संसा रमां जो परमार्थदृष्टियें विचारीयें, तो सर्व कांइ वैराग्यनांज कारण देखाय ळे. हवे सांजलो. हे राजन् हुं महारा वैराग्यनुं कारण कहुं ठुं.

सिद्धपुर नामें नगर तेनो जुवनसार नामें राजा, तेने कनकश्री पटरा णी ळे तथा तेनो मतिसागर नामें प्रधान ळे. एकदा राजसजायें नाटकी या आव्या, तेणें महोटे विस्तारें नाटक करवा माम्ड्युं, ते जोवामाटें रा जायें पोतानुं अंतःपुर पण तेडाव्युं. तिहां राजा रससहित नाटक जूवे ळे.

एवामां द्वारपालें आवी कह्युं, हे स्वामिन् ! निमित्तियो ब्राह्मण आव्यो ळे, आपनी आज्ञा होय, तो आहीं तेडी लावुं. राजायें कह्युं तेडी लाव. द्वार पालें तेड्यो थको आवीने आशीर्वाद देइ बेठो. नाटक पूरुं थयुं तदनंतर राजायें निमित्तियाने पूठ्युं, तुजने कल्याण ळे ? निमित्तियें कह्युं, हे स्वामि

न्! मुजने कल्याण नथी, तुमने कल्याण नथी, अनें आ घरमां कोइने प ण हुं कल्याण देखतो नथी. एवुं तेनुं बोलवुं सांजली राजा रीश चडावीने कहेवा लाग्यो के अरे शुं आकाश त्रूटी पडशे? किंवा पर्वत त्रूटी पडशे? आ बांजणनी वात जो जो कहे ले, के कोइने कल्याण नथी. प्रधाने कह्युं स्वामी! रोष शा माटें करो लो? कारण पूली ल्यो के शाथकी अकल्याण ले? तेवारें राजायें पूले थके निमित्तियो बोल्यो स्वामी! अकस्मात् मेघ वर सशे तेथकी सर्व नगर जलमय थइ जाशे. माटे अकल्याण देखुं बुं.

एवुं कहेतांज उत्तरदिशाथकी एक हाथप्रमाणें वादलुं चड्युं. ते थोडा वखतमां सर्वआकाशें व्यापी गयुं. गर्जारव तथा वीजलीना जबकारा था वा लागा, एटले राजा, मंत्री अने निमित्तियो ए त्रणे जण तिहांथी उठी ने सातमी जूमियें चड्या. तिहां राजा, प्रधानप्रत्यें कहेवा लाग्यो के हा हा इतिखेदे आपणुं अकस्मात् मरण आव्युं!! आपणे कांइ पुण्य कीधुं नथी तो हवे मरीने किहां जइशुं? एटलामां तो सातमी जूमिसुधी पाणी चडी आव्यां, राजाना पग जीजावा लाग्या, राजा जयच्रांत थयो थको न मस्कारमंत्र गणवा लाग्यो, एटले जेनी उपर पग मूकीने चडीयें एवुं एक महोटुं यानपात्र प्रगट थयुं, तेवारें प्रधानें कह्युं पाणी सातमी जूमियें आव्युं माटे हमणांज ए वहाणमां बेसो. कोइक देवतायें तमने सहाय कीधुं ले. ते सांजलीने राजा जेटलामां जमणो पग उपाडीने वाहाणमां मूकवा जा य ले, एटलामां तो मेघ पण न दीठो, अने यानपात्र पण न दीतुं नगर जेहवुं पूर्वें हतुं तेहवुं ने तेहवुंज दीतुं, लोक गातां वातां व्यापार करतां दीठां. राजायें निमित्तियाने कह्युं ए शुं थयुं! निमित्तिये कह्युं में कांइक इं इजाल देखाडी तेमज संदेहथी राजायें जाणियें इंइजालिक निमित्तियाने बे कोडी सुवर्ण आपी विदाय कर्यो.

पली राजा पोताना अंतःपुरादिक आगल कहे ले के जेहवी आ इंइजाल दीठी तेहवुंज संसारनुं स्वरूप पण जाणजो. यौवन, लक्ष्मी, राज्य प्रमुख ए सर्व इंइजालने दृष्टांतें ले. में मनुष्यजवादिक सामग्री पामीने आज पर्यंत निरर्थक गमावी हवे हुं दीक्षा लइ सामग्री सफल करीश. एम कही पोता ना विक्रम नामें पुत्रने राज्य आपी राजायें दीक्षा लीधी. तेज जुवनसागर

राजा हुं छुं. हमणां भुवनसार साधु कहेवाउं छुं. एवुं पोताना वैराग्यनुं कारण कही साधु छाना रह्या.

नलराजा पण साधुना वैराग्यनुं कारण सांभली हर्ष पामी कहेतो ह वो, के हे महाराज! एवी मति तमारा सरखा उत्तमपुरुष होय तेनेज आ वे. पण हुंतो भारे कर्मी छुं माटे मने एवो वैराग्य आवतो नथी. तथापि मने आप कृपा करी शुद्ध समकेतनो उच्चार करावो. समकेत हुं पालीश. तेवारें साधुयें समकेतनुं स्वरूप राजाने समजावीने पछी समकेत उच्चराव्युं.

राजायें पूछ्युं स्वामी! ए मृग कोण हतो के जेणे महारी उपर आट लो उपकार कस्यो. साधुयें कह्युं ए तहारो पाछला भवनो ब्राह्मण मित्र ह तो, ते अज्ञानकष्ट करी यक्ष थयो छे, हमणां मुजने देखी भद्रकभावी थ यो, अने तुजने देखी तहारी उपर एने प्रीति उपनी, तेवारें मृगलानुं रूप धारण करी तहारी उपर साधुसमागमरूप उपकार कीधो ॥ यतः ॥ चंदनं शीतलं लोके, चंदनादपि चंद्रमाः ॥ चंद्रचंदनयोर्मध्ये, शीतः साधुसमागमः॥ ॥ १ ॥ पछी यक्ष पण मृगलानुं रूप छांमी साधुने पगें लागी, समकेत आ दरतो हवो. वली राजाने कह्युं अवसरें संभारजो, हुं आवीश. एम कही ते यक्ष पोताने स्थानकें गयो.

राजा तथा प्रधान बेहु नगरमां आवी राजायें रत्नमय जिनप्रतिमा क रावी तेनी पूजा करतो साधर्मिकवात्सल्य, अष्टमी, चतुर्दशी, पौषधोप वासादिकने पारणे साधर्मिकवात्सल्य प्रमुख कार्य करवामां प्रवर्त्ततो हवो मंत्रितिलक प्रधान पण राजानी पेठें शुभकृत्य करवा लाग्यो.

एकदा कर्मयोगें मंत्रितिलकने असाध्य रोग थयो. वैद्यें पण हिम्मत मूकी कह्युं, के ए रोग अमारे साध्य नथी. एवुं कही पोताने घेर गयो. ए वामां एक परिव्राजकनो वेश धारी वैद्य आव्यो तेणे प्रधानने समाधि करी तेथी प्रधान तेनो पक्षपात करवा लाग्यो. मिष्ट मिष्ट अशनपानादिक रूडां रूडां वानां तेनें आपे, घणो आदर आपे, राज्य सभायें तेडी लावे, राजा नी आगल तेना गुण बोले, तेने राजा कहे ए मिथ्यादृष्टिनी स्तुतिरूप मु खें करी कां आपणा समकेतरूप क्षीरोदक वस्त्रने मलीन करे छे? मंत्री कहे गुणवंतना गुण बोलतां समकेत मलिन न थाय.

एकदा पृथिवीस्थान नगरथी कोइ चार पुरुषें मली नलराजाने कागल

लख्यो जे हे स्वामिन्! तमारो वैरी जे नीलराजा तेणे एक पांत्रीश व र्षनो पारिव्राजक पापरूप मक्षिकायें कालो थयेलो महामायावी वाचाल बे, तेने तमोने मारवामाटे मोकल्यो बे, तेनो विश्वास करशो नहीं. एवो लेख राजायें एकांतें वांचीने पारिव्राजकने पकडवामाटे सुजटो मोकल्या, ते सुजटें तेने पकडी बांधी लातो तथा मुष्टिना प्रहार कस्या तेथी तेनी क डमांथी कंक लोहमय बुरी निकली आवी, सुजटें ते बुरी लइने राजाने देखाडी, तेवारें राजायें पूब्युं आ शुं आश्चर्य? तेणें नीलराजानी यथा स्थित वार्त्ता कही संजलावी. राजायें प्रधानने तेडी कह्युं के जेनां तुं वखा ण करतो हतो, तेनां चरित्र जोइ ले. एम कही राजायें तेने मंत्रिपदथी उतारी बीजो मंत्री थाप्यो. मंत्री पण पोतानुं समकेत मलीन थयुं जा णी आलोयण प्रायश्चित्त लइ समकेतनी शुद्धि करतो हवो. पबी तेने शु द्धसमकेत पालतो जाणीने राजायें तेडीने वली पण तेने मंत्रिपदें स्था प्यो. वली पण राजा तथा प्रधान बेहु जनने परस्पर तेमज प्रीति थइ.

हवे घात करनारो परिव्राजक, राजाप्रत्यें कहेवा लाग्यो में जावथकी जैनदीक्षा लीधी बे, माटे मारवो होय तो मार, अने जीवतो मूके तो मूक. तहारुं मन माने, तेम कर. राजायें विचाखुं के जो तुं सम्यक्त्व पाम्यो हो, तो पण जावचारित्रीयो थयो कहेवाय तेमाटे हुं तुजने मूकुं बुं. एम कही परिव्राजकने मूक्यो. राजायें चिंतव्युं महारो वैरी नीलराजा बे, तेनी सार्थे युद्ध करुं तो घणा जीवोनो संहार थाय, माटे यक्षनुं स्मरण करुं पबी राजा यें अष्टम तप करी पौषध लइ पौपधशालायें बेसी यक्षनुं स्मरण कखुं. य क्ष तेना मनोगत जावने जाणी नीलराजाने बांधीने तेनी पासें लइ आव्यो. तेने नलराजायें कह्युं अरे पापी! हवे कहे हुं तुजने केवी शिक्षा करुं? नी लराजायें कह्युं हुं तहारे शरणें आव्यो बुं, माटें मन माने तेम कर. एम क हे थके नलराजायें तेने पोतानी आज्ञा मनावी पोतानो सेवक करी मूकी दीधो.

हवे नलराजा कर्मराज तथा धर्मराज बेहु राज्यने सरखां पालतो थ को रह्यो. एकदा उद्यानपालें आवी वधामणी दीधी जे स्वामी! उद्यान नेविषे मुनि पधास्या बे, तेने राजा हर्षदान आपी पोतें मुनिने वांदवा गया. तिहां जोयुं तो जेमनी पासेंथी पोतें धर्म पाम्यो बे, तेज साधु पधा स्या दीठा. साधुयें पण कह्युं, हे राजन्! तुं मने उलखे बे? राजायें कह्युं

हा स्वामी ! तमें म्हारा धर्माचार्य बो, तमाराथी हुं धर्म पाम्यो बुं.

हवे आचार्यें लोकोनी आगल पोतानुं वृत्तांत मांमी कह्युं, ते सांभली ने घणां लोक संवेग पाम्यां. राजायें पण धर्मदेशना सांभली संवेग पाम्यो थको पोताना पुत्रने राजपाटें थापी अमारी पट्टहोद्घोषणा करावी दीन जनोने दान आपी दीक्षा लीधी. मंत्रितिलक प्रधानें पण राजानी सार्थे दीक्षा लीधी. राजायें पडह वजडाव्यो के म्हारी साथें जे दीक्षा लेशे, तेना कुटुंबनी चिंता म्हारो पुत्र करशे. एवुं करवाथी घणे लोकें दीक्षा लीधी. राजा ते सर्वेनी दीक्षानो संघवी थयो. राजा दीक्षा पाली तपस्या करी अंतें अनशन आदरी सर्वार्थसिद्धविमानें स्वेबायें सुख भोगवतो थयो. मंत्रितिलक समाधि मरण करी सौधर्म देवलोकें सौधर्मेंद्रनो मंत्री थयो. अनुक्रमें बेहु जण मोक्षपद पामशे. ए चार यत्नानेविषे मंत्रितलक प्रधान तथा नलराजानां दृष्टांत कह्यां.

इति महोपाध्यायश्रीशांतिचंद्रगणिशिष्योपाध्याय श्रीरत्नचंद्रगणिविरचितें श्रीसम्यक्त्वरत्नप्रकाशनामनि सम्यक्त्वसप्ततिकाबालावबोधे षट्यत्नास्वरूपनिरूपणनामा नवमोऽधिकारः सपूर्णः ॥ ए ॥

हवे ब आगारनो दशमो अधिकार कहे बे.

॥ आगारा अववाया, बव्विह कीरंति भंग रस्कहा ॥ राय गणं बल सुरक, म्म गुरुनिग्गह वित्तिकंतारं ॥ ५१ ॥ अर्थः—(आगारा के०) जे आगार ते (अववाया के०) अपवाद कहीयें. जे कारणमाटें श्रीजिन शासन जे बे, ते एकलाज उत्सर्ग मारग अंगीकार करवे चाले नहीं. ते माटे अपवाद कह्यो ॥ यतः ॥ उवसग्गसु अकिंचि, किंचिअपवायवं भवेसुत्तं ॥ तडुभयसुत्तं किंचि, सुत्तस्स गमा मुणेयव्वा ॥ १ ॥ तेमाटे जिहां उत्सर्गी घटमान होय, तिहां उत्सर्ग आदरवो. अने जिहां अपवाद घटे तिहां अपवाद आदरवो. श्रीजिनशासनरूप प्रासादनेविषे उत्सर्ग जे बे, ते मूल बारणुं बे. अने अपवाद जे बे, ते नासता जीवने बारी बे उत्सर्ग्ग जे बे, ते यथाख्यात ज्ञान, दर्शन, चारित्रियानो निरतिचार मार्ग बे. ते हमणाने कालें संघयण, धृतिबल रहितपणे करी सेवन करी न शकीयें तेमाटे अपवाद सेवन करी पबी आलोयण प्रायश्चित्त लइ सम्यक्त्व नियमादिक शुद्ध करवा.

ते आगार श्रीसमकेतने विषे (छविहकीरंति के०) छ प्रकारें करीयें, ते शे अर्थे करीयें ? तो के (नंगरस्कहा के०) समकेतना नंगनी रक्षाने अर्थें करीयें. जो ए छ आगार न करीयें, तो समकेतनो नंग थाय? अने जो ए छ आगार करीयें तो समकेतनो नंग न थाय? अने समकेतनो नंग थवाथी डुर्गतिपात थाय ॥ यतः ॥ वयनंगे गुरुदोसो, थोवस्सवि पालणा गुण करीय ॥ नंगा गुरुयंपि वयं, सगडंवन होइ फल हेक ॥ १ ॥

ते छ आगारनां नाम कहे छेः—एक (राय के०) राजा, बीजो (गणं के०) गण ते इष्ट स्वजन बांधव प्रमुखनो वर्ग, त्रीजो (बल के०) बल पराक्रम ऐश्वर्यादिकवंतनो हठ, चोथो (सुरकम्म के०) देवतानो क्रम एटले पराक्रम, पांचमो (गुरुनिग्गह के०) गुरु जे मिथ्यादृष्टि माता पितादिक तेनों निग्रह, छठो (वित्तिकंतारं के०) वृत्तिकंतार तिहां वृत्ति एटले आजीविका तेनो कांतार एटलें अटवी एटले सर्वथा आजीविका नज चाले ए छ आगार समकेतने विषे जाणवां. ए छ आगार मोकलां राखीने समकेत उच्चरे, तो सम्यक्त्वनो नंग न थाय ॥ ५१ ॥

हवे ए छ आगारनो अर्थ ग्रंथकार विवरी देखाडे छे.

॥ राया पुराइ सामी, जण समुदाउ गणो बलं बलिणो ॥ कारंति वंदणाइं, कस्सवि ए ए तह सुरावी ॥ ५२ ॥ गुरुणो कुदिठि नत्ता, जणगाइ मिछदिठिणो जेउ ॥ कंतारोउ माइ, सियणमिह वित्तिकंतारं ॥ ५३ ॥ अर्थः— (रायापुराइसामी के०) पुर आदि शब्दथकी नगर ग्राम खेट खर्वट देशनो स्वामी धणी होय तेने राजा कहीयें, तथा (जण समुदाउ गणो के०) स्वजननो समुदाय तेने गण कहीयें. तथा (बलंबलिणो के०) आमात्य, नगर, श्रेष्ठी, कानुगा प्रमुख बलवंतपुरुषो तेनुं बल (ए ए के०) एटला जन बलात्कारें करी (कस्सवि के०) कोइक समकेतवंत जीवने (वंदणाइं के०) वंदन नमस्करण पूजन सत्कारादिक करावे, एवी रीतें बलात्कारें परपाखंमीने वंदनादिक करतां समकेतनो नंग न थाय. (तहसुरावि के०) तथा क्षेत्रपाल, शाकिनी, माकिनी, नूत, प्रेत, पिशाचादिक देवताने पण बलात्कारें करी कोइक सम्यक्त्ववंतपासें वंदनादिक करावे, तो तेथी तेना समकेतनो नंग न थाय ॥ ५२ ॥ अर्थः—(गुरुणो के०) गुरु जन जे (कुदिठिनत्ता के०) कुदृष्टि एटले मिथ्यादृष्टि एवा शाक्यादिक लोक तेना (नत्ता के०) नक्त हो

य एटले मिथ्यादृष्टि गुरुउना नक्त होय एवा (जेउ के०) जे (जणगाइ के०) जनकादिक ते माता पिता ज्येष्ठ नाइ, तथा काका प्रमुख तेने गुरु कहीयें ॥ यतः ॥ पिता माता कलाचार्यो, एतेषां ज्ञातयस्तथा ॥ वृद्धधर्मो पदेष्टारो, गुरुवर्गः सतां मतः ॥ १ ॥ ए जनकादिक (मिन्नदिठिणो के०) मिथ्यादृष्टि होय एटले कुदृष्टि शाक्यादिकना नक्त होय ते बलात्कारें करी पोताना पासेंथी गुरवादिकने वंदावे तथा नियमनंग करावे, तेने गुरु निग्रह कहीयें तेथी समकेतनो नंग न होय. तथा (कांतारोउमाईसियणं के०) कुधादिकरूप कांतारने विषे जे सीदाववुं तेणें करी (इह के०) आहिं (वृत्तिकांतारं के०) आजीविकारूप वनाटवि तडूप दुःखें करी नियमनो नंग थाय नहिं ॥ ५३ ॥

हवे एनो नावार्थ कहीयें बैयें. कोइक सम्यग्दृष्टि जीव उत्सर्ग अपवादनो जाण होय, ते वृत्ति चलाववा रूप कांतारने विषे पड्यो, अर्थात् महा दरिद्री अवस्थाने विषे पड्यो, कोइ रीतें पण आजीविका चाले नहीं, अने जीव्युं पण जोइयें ते पुरुष पोताना चित्तने विषे श्रीजिनधर्मनेज तत्त्वपणे जाणतो बतो तेने मिथ्यादृष्टियें हव थकी नियमनंग करावीयें, ते वृत्तिकांतार कहीयें, तेणे करी सम्यक्त्वादिक नियमनो नंग न थाय ॥५३॥ हवे ए ब आगारें करी समकेत नंग न थाय ते शामाटें ? तेनो हेतु कहे बे.

॥ न चलंति महासत्ता, सुनिज्ज माणावि सुद्ध धम्माउ ॥ इयरेसि चलण नावे, पइन्न नग्गेन एएहिं ॥ ५४ ॥ अर्थः-(महासत्ता के०) महा सत्त्वना धणी होय ते देव, दानव मानवादिकें (सुनिज्ञमाणावि के०) घणुए नेदाता थकां कदर्थना पमाड्या थका पण (सुद्धधम्माउ के०) शुद्धधर्म जे श्रीवीतराग देवनो नांखेलो निर्मल धर्म तेथकी (नचलंति के०) चलायमान थाता नथी. जेम मेरुपर्वत वायरे करी चलायमान थाय नहीं तेम धर्मने विषे जेमनुं अत्यंत दृढ मन थयेलुं बे एवा महा सत्त्ववान् पुरुषो पण तेनी पेठें जाणवा. परंतु एवा महासत्त्व पुरुषोथी (इयरेसि के०) इतर जे मंदसत्त्ववान् पुरुषो बे, तेमने (चलणनावे के०) चलवापणुं बे, तेवा जनोने (एएहिं के०) ए ए ब आगार मोकलां राखवे करी (पइन्न नंगोन के०) प्रतिज्ञानो नंग न थाय, जे

माटें जे उत्सर्ग्गे मार्गे राखी शके, तो ते घणुंज रूडुं छे, परंतु जे उत्स र्गेमार्गे राखी न शके, तो ते ए छ आगार मोकलां राखीने समकेत पाले, तो पण जलुं छे ॥ यतः ॥ महासत्ताणुन्ना, सत्तनिसे होय पवयणे नडि ॥ अयंवयंतुलीक्षा, लाहा कंखित्र वाणीयउ ॥ ५४ ॥

हवे ए छए आगारने विषे मृगांकलेखानुं दृष्टांत कहे छेः—मालवदेशें उज्जयणी नगरीयें अवंतीसेन नामें राजा राज्य करे छे, तेज नगरमां एक धनसार एवे नामें सार्थवाह रहे छे, तेनी रंजा नामें जार्या छे, तेने मृगांकलेखा नामें पुत्री छे. ते बालजावथकी पण निर्मलसमकेतनी धरनारी श्री जिनधर्मने विषे तत्पर अने जीवाऽजीवादिक नवतत्त्वनी जाण छे.

एकदा ते कुमरी उद्यानने विषे धनसारसार्थवाहनुं करावेलुं उत्तंग तोरण शिखरबंध श्रीजिनप्रासाद छे, तिहां सकल सामग्री लइने पूजा करवाने अर्थे गइ. प्रथम इव्यपूजा करीने पछी जावपूजा निमित्तें काउस्सग्ग करी उनी रही छे. एवामां तिहां सागरश्रेष्ठीनो पुत्र पोताना मित्रने सार्थे लइ देव जुहारवा आव्यो छे. तेणें देव जुहारी वली जइक पणाथी काउस्सग्ग धारी प्रतिमाने नमी पगे लाग्यो वांद्यो. ते जोइ हाथ तालोटो देइ तेनो मित्र हस्यो, श्रेष्ठी पुत्रें पूछ्युं शा कारणें हस्यो? मित्रें कह्युं ए प्रतिमा नथी पण धनसार्थवाहनी पुत्री मृगांकलेखा छे, तेने तुं पगे लाग्यो.

हवे ते श्रेष्ठिपुत्र मृगांकलेखानुं रूप जोइ कामजूतें ग्रस्त थयो थको घेर जइ उखरडे पर्यंकें सूतो, मात पितायें बोलाव्यो बोले नहीं, घणुंए पूछे, पण पाछो उत्तर आपे नहीं. तेवारें तेना मित्रें सर्व वात मातपिता आगल कही समजावी. मातपितायें कह्युं, ए योग्य वात छे, ते अमें करीशुं, तुं आवी जोजन कर. इत्यादिक घणुं समजावीने जमाड्यो.

पछी तेज उद्यानमां तेज देरासरनी पासें सागरदत्तें पण एक श्रीरूषजदेवनुं प्रासाद कराव्युं, तेनी प्रतिष्ठा करावचा तेना दशान्हिकना दशमा दिवसने विषे जमणवार करी छे. तिहां धनसार्थवाहने तेड्यो छे, ते कुटुंबसहित आवी जोजन करी मंमपमां बेठा छे, तेवारें सागरदत्तें ज्योतिषियाने संज्ञा करी ते उपरथी ज्योतिषीयो बोल्यो जे आज विवाह मेलववानो अत्यंत श्रीकार सर्वोत्तम श्रेयस्कर दिवस छे, एवो दिवस कोइ कालांतरेंज आवे छे. जो धनसार्थवाहनी कन्या मृगांकलेखा अने सागरदत्त

नो पुत्र सागरचंद्र ए बेहुनो विवाह आज थाय,तो सर्वोपरि रूडो योग गणाय, तेवारें धनसार सार्थवाह पण सागरचंद्रनुं रूप देखी हर्ष पाम्यो थको बोल्यो, नलुं. एम कही तिहांज विवाह मेलवीने बेहु जण उठ्या, पोतपोताने घेर जइ विवाहनो महोत्सव करवा प्रवृत्त्या कन्याना बापें कन्याने पीठी चोली बे, अने वरना बापें वरराजाने पीठी चोली बे.

एवामां सागरचंद्र पोताना धनमित्र प्रत्यें कहे बे. के ते वखत देरासरमां में मृगांकलेखाने रूडी रीतें निरखी नथी, तेमाटें मुजने रूप जोवानी उत्कंठा बे, ते जो तुं महारी साथें आवे, तो तिहां जइ एनुं रूप रूडी रीतें जोइ आवीयें, धनमित्रें कह्युं तुं पाटें बेठो बो ते शी रीतें निकली शकीश? तेणें कह्युं रात्रें बानुं बाहिर निकलवामां कांइ विशेष नथी. एम कदाग्रह लइ बेठो, तेवारें मित्रें कह्युं चाल जइ आवीयें? पढी रात्रें श्याम वस्त्र पहेरी हाथमां खड्ग लइ जिहां कन्या पाटें बेठी बे तिहां आव्या, ते अवसरें मृगांकलेखा पोतानी चित्रलेखा अने पत्रलेखादिक सखीयोना परिवारें परवरी थकी पोत पोतामां गोष्टि करे बे, तिहां चित्रलेखा मृगांकलेखाने कहे बे, के धन्य तहारो अवतार! जे तुजने सागरचंद्र जेवो वर मल्यो ॥ यतः ॥ अनुरूपकलाशाली, पंमितःसवयः सुधीः ॥ धनवाननुरक्तश्च, पुण्यैःसंप्राप्यते पतिः ॥ १ ॥

हवे स्त्रीजातिनो स्वनावज बे, के एक बोले तो तेथकी वली बीजी जे बोले, ते अवलुंज बोले, ते प्रमाणें पत्र लेखा बोली उठी के मृगांकलेखाने योग्य वर तो धनश्रेष्ठीनो पुत्र अनंगदेव हतो कारण के ते रूपें करी साक्षात् अनंग जेवोज बे. तेवारें वली चित्रलेखा बोली जे मृगांकलेखाना वरने अर्थें संवर नामा ज्ञानीने पूढ्युं तेवारें तेणें कह्युं के अनंगदेवनुं वीश वर्षनुं आयु बे, माटे ते योग्य नथी. तेथी अनंगदेवने शुं करीयें? ते सांनली पत्रलेखा बोली अरे सखि! तुं जाणती नथी? जे थोडुं होय तो पण अमृत नलुं जाणवुं अने विष तो एक नार जेटलुं होय तो ते पण शा कामनुं?

एवी सखियोनी वातो थती मृगांकलेखायें बेठी सांनली पण लाजनें लीधे निवारण कीधी नहीं. अने ते बेहु सखीयोनी वात सागरचंद्रे बानो रही सांनली, तेथी घणो रीषें चढी खड्ग काढीने मारवा दोड्यो, तेने मित्रें हा

थ जाली राख्यो, अने कह्युं के सखीयो परस्पर वातो करे छे. एमा मृगां कलेखानो श्यो वांक छे? एम समजावीने घेर लइ गयो.

पछी सागरचंद्रें विरक्तचित्तें करी पितानी लज्जायें पाणिग्रहण कीधुं, प रण्या पछी तेना पिता सागरदत्तें सूवाने माटे महोटो आवास करावी आ प्यो पण सागरचंद्र दुष्टात्मा ते मृगांकलेखानी साथें द्वेष धरतो ढूकडो ना वे. बोलावे पण नहीं, मृगांकलेखानुं नाम सांजले तो पण रीष करी उठे.

ए विषे मृगांकलेखा परमार्थ अजाणती, कर्मनो दोष त्रेवडती घणो खेद करती थकी दुःखें काल निर्गमन करे छे, एम ते विरहाग्नियें पीडित थकां श्रीजिनधर्माराधन करतां एकवीश वर्ष निर्गमन कर्यां.

हवे एकदा अवंतीसेन राजा, लाटदेशना राजाने जीतवामाटे जांय छे, तेवारें सागरदत्तने तेडीने राजा कहेवा लाग्यो के तमारा पुत्र सागरचं चंद्रने महारी सार्थे मोकलो, जेमाटें महारा सैन्यने अन्न वस्त्रादिक सर्व वस्तु पूरे. सागरदत्तें पोताना पुत्रने कह्युं के राजा तेडी जाय छे, तेनी सा थें जरूर जवुं जोइयें,ते सांजली सागरचंद्र पण अश्व रथ मेरा प्रमुख सज्ज करी माता, पिता,जाइ, काका प्रमुखने पगें लागी विदायगिरि मागी चालवा लाग्यो, ते जेवारें मृगांकलेखाना घर आगल आव्यो, तेवारें मृगांकलेखाने दीठी पण बोलावी नहीं, तो पण मृगांकलेखा आवी पगें लागीने अ श्रुपात करवा लागी तथापि तेने अवगणी तिरस्कार करी चाल्यो तेथी मृ गांकलेखा वली घणुंज दुःख पामी थकी शय्यायें आलोटती रोवा लागी, मनमां विचारे छे,जे घरना दासने पण बोलावे छे, अने मुजने आवी रीतें ठेली नाखे छे. माटें ए महारा पूर्वकर्मनो दोष समजवो. एवुं चिंतवती रही.

सागरचंद्र गाम बाहिर नदीने तटें जिहां कटकें उतारो कीधो छे,तिहां मेरा देइ पर्यंकें सूतो छे. एवामां वारंवार करुणस्वरें रुदन करती कोइक किन्नरीनो स्वर सांजल्यो, तेवारें मनमां विचार्युं जे आ रात्रिने विषे कोण स्त्री रुदन करे छे? एम चिंतवी खड्ग लइ शब्दने अनुसारें चाल्यो आगल जातां वनना कुंजमांहे सर्वाजरणें जूषित एवी एक स्त्रीने रडती दीठी. तेने कहेवा लाग्यो के हे बहेन! तुं शा माटे रडे छे? त्यारें स्त्रीयें कह्युं एवो कोइ नथी जे महारुं दुःख जांगे, सागरचंद्रें कह्युं एक वार तहारे दुःख शुं छे, ते कहे तो पछी दुःख जांगवानी वात छे? स्त्री बोली महारो प्राणेश्वर हरि

प्रन्न नामें किन्नर बे मह्वारुं नाम ह्वारावलि बे, ते अमें बेहु विमानें बेसी चालतां मार्गमां मह्वारो पति बोल्यो, चालो आ वन निकुंजमांहे केलीगृह बे तिहां रमीयें. में कह्युं इहां नहीं रमशुं, परंतु मेरुपर्वतना शिखरने विषे उद्यान बे, तिहां रमशुं. एवुं कह्याथी मह्वारो धणी मह्वाराथी रीसावी बे गो बे, चालतो नथी, बे प्रहर थया घणी ए पगे लागुं बुं, पण मानतो नथी. तेथी मह्वारुं हृदय फाटी पडे बे. पण ए मह्वारो पति तो वज्र जेवुं हृदय करी बेगे बे, तेमाटे तुं मह्वापुरुष गो. तेथी अमारो बेहुनो मेलाप करावी आप.

ते सांनली सागरचंद्र पहेला किन्नरपासें जइ तेने मनाववा लाग्यो, तेवारें किन्नर हसीने बोल्यो, अरे सागरचंद्र! तुं मुऊने मनाववा आव्यो गो, पण तुं तह्वारुं पोतानुं पाप जोतो नथी? जे एकवीश वर्ष थइ गयां बतां नि रपराधी सतीमांहे शिरोमणि एवी मृगांकलेखाने तें बोलावी पण नथी, अने मुऊने समजाववा आव्यो गो, तो तें ए सुनाषित साचुं कस्युं जणाय बे? ते सुनाषित आ प्रमाणें बे ॥ यतः॥ परोपदेशे कुशला, दृश्यंते बह्वो नराः॥ स्ववाक्यमनुवर्त्तंते, ये ते जगति डुर्लनाः ॥१॥ एवुं कहेतो थकोज ते किन्न र पोतानी किन्नरीने विमानमां बेसाडी आकाशमार्गें चालतो थयो.

पाबलथी किन्नरीनी दासी आवीने सागरचंद्रने कहेवा लागी जे मह्वा री स्वामिनीयें मह्वारे मुखें तुमने कहेवराव्युं बे, के तमें मह्वारी उपर उप कार कस्यो तेनो मह्वाराथी कांइ प्रत्युपकार थयो नथी, माटें आ बे वस्तु आपुं बुं, ते तमें ल्यो. एवुं कही एक मूली आपी जे घसीने पगें लेप करी यें तो आकाशें गमन करवानी शक्ति आवे, वली बीजी एक औषधी आपी तेने घसीने कपालें तिलक करीयें तो रूप परावर्त्तन करवानी शक्ति आवे, एवुं कही बे औषधि आपीने दासी जती रही.

ह्वे कुमर विचारे बे, के धन्य बे तेह्वने के जे स्त्रीना सेंकडागमे दोष देखे बे, तो पण पाणीमां रेखानी पेरें क्रोध धरे बे. परंतु हुं कहेवो अ धम पुरुष बुं, के जे स्त्रीमां दोष अणदीगे पण स्त्रीनी उपर पाषाण मांहेली रेखा सरखो कोप करी बेगो बुं, हा हा निरपराधी अबलाने एकवीश वर्षप र्यंत विरहें संतापी!!! एम चिंतवी ते वात धनमित्र आगल कही. धनमित्रें कह्युं तें ए मह्वोटुं पाप कीधुं. ए पाप तुं तह्वारा उपरथी उतार, नहीं कां ए अ बला डुःख करती मरण पामशे, ते वात सांनली मूली घसी पादलेप करी

आकाशगमनी विद्या साधी मृगांकलेखाने घेर गया तेंमां प्रथम तो धनमित्र गयो तेने मृगांकलेखायें हांकी काढयो, के अरे तुं कोण छे ? जे रात्रिने वखतें महारा घरमां प्रवेश करे छे? जलो हो तो नीकल. नहीं कां महारा शीलने प्रजावें करी जस्म थाइश! धनमित्रें कह्युं हे बहेन! हुं सागरचंद्रनो मित्र बुं तहारे घेर सागरचंद्र आवे छे, तेनी वधामणी देवा आव्यो बुं. माटें दुःख बांमीने आनंद पाम. एवुं कहेतां वार तिहां सागरचंद्र पण आव्यो, एटले सखीयोनो वर्ग उठी गयो अने धनमित्र पण बीजा घरमां जइ बेगे.

हवे सागरचंद्र अश्रुजलें पोतानो अपराध धोतो थको कहेवा लाग्यो के तुं निरपराधी बतां में तुऊने घणुं संतापी ते महारो अपराध तुं क्षमा कर. जेम विद्या जणीने वीसारी मूकीयें, तेम में तुऊने परणीने वीसारी मूंकी ते महारो सर्व अपराध तुं वीसारी मूक. अने संतोष आणीने महारी साथें बोल. ते सांजली मृगांकलेखायें कह्युं ए सर्व महारा पूर्वकर्मनो दोष छे, तमारो एमां कांइ वांक नथी. एम कही स्त्री जरतार घणाकालना विरहाग्नि प्रत्यें सुखजलें करी उलवतां हवां. तिहां स्त्री जर्त्तार परस्परें रमतां रात्रि अतिक्रमी, प्रजात थवा लाग्यो, तेवारें सागरचंद्रें कह्युं हुं कटकमां जाउं बुं केम के राजा संजारशे माटे हाजर रहेवुं जोइयें, मृगांकलेखायें कह्युं के तमे जाउ गो. महारे ऋतुस्नाननो दिवस छे, जो गर्ज रह्यो हशे, तो पाबलथी सासु ससराने महारे उत्तर श्यो आपवो ? तेने सागरचंद्रें स्वनामांकित मुद्रिका आपी. मृगांकलेखानो हार लीधो. अने कह्युं के महारा मातापिता तुऊने पूछे तो आ मुद्रिका देखाडजे. एवुं कही तेनी आंखमांथी आंसु लुही पोतानी आंखें आंसु आणतो सैन्यमांहे गयो.

पाबल मृगांकलेखाने उदरें कोइ पुण्यवंत देवतानो जीव आवी उपनो. उदर वृद्धि पामवा लाग्युं. तेवारें पद्मा सार्थवाही सापणनी पेठें कोप करती पूछवा लागी. ते मृगांकलेखायें सागरचंद्रनी मुद्रिका देखाडी तो पण सासु ससरो बेहु कहेवा लाग्यां जे एवां स्त्रीनां कपट अमें घणां जाणीयें बैयें. तें अमारा कुलनेविषे कलंक लगाडयुं. माटें हवे तमें घरबाहिर निकलो. एम कहीने जेम निर्धनपुरुष पामेली लक्ष्मीने हांकी काढे, तेम मृगांकलेखाने काढी मूकी तेमनी साथें चित्रलेखा सखी पण निकली. पद्मा सासुयें तेना पीयरने पण केवरावी मोकल्युं जे तमारी पुत्री कुचरित्र

कमाइ करी आवे छे, माटें जोइ तपासीनें घरमां पेसवा देजो. तेथी माता पितायें पण तेने कह्युं के इहां तहारे माटें रहेवानी जगा नथी. जिहां तहारी इछा आवे, तिहां जा. मृगांकलेखायें विचार्युं जे एक विधाता वांके सर्व वांकुं थाय अने विधाता पाधरो होय, तो सर्व पाधरुं थाय.

एम माविेत्रें काहाढी थकी तिहांथी निकली मध्यान्ह समय एक वृक्षनी नीचें विसामो लेइ आगल चाली एटले रात्रि पडी, ते रात्रि वृक्षनीचें अतिक्रमी प्रजातें तिहांथी चालती थइ, पण मार्ग जूली थकी एक विकट अटवीमां जइ पडी. तिहां रोवा लागी,तेवारें चित्रलेखायें कह्युं हे बहेन! तुं त्रण दिवसनी जूखी छो, माटे कंदमूलादिकना आहार पाणी कर, तो जीवती रहीश अन्यथा गर्जपात थशे, तो बालहत्यानुं पाप लागशे.

मृगांकलेखायें कह्युं यद्यपि कंदमूलनुं जक्षण वृत्तिकांतार आगारें करी अनुज्ञात छे एथी नियमजंग न थाय, तो पण हुं जक्षण करीश नहीं. एवो हठ लइने एमज जूखी रही. एवामां तिहां एक चित्रगुप्त नामें सार्थवाह आव्यो, तेणें आवी कह्युं हे बहेन! में महारा माणसना मुखथकी तहारुं वृत्तांत सांजल्युं छे,हवे तुं रडीश मां. महारा सथवाराने विषे आव, तुं कहीश तिहां हुं तुऊने मूकीश. एवा सार्थवाहनां वचनामृतें हर्ष पामी थकी पोतानुं सर्ववृत्तांत सार्थवाहनी आगल कही संजलाव्युं,अने कह्युं के हे सार्थवाह! तुं मुऊने अवंतीसेनराजाना कटकमां पहोंचाड. हुं तहारो उपकार मानीश, सार्थवाहें हाकारो कस्यो. सार्थवाह तेने साथें लेइ आगल चाल्यो. कुलदेवीनी पेरें मृगांकलेखाने आराधतो हवो,तेथ। तिहां घणुं सुख पामी.

एवामां चित्रलेखा सखी वनमांहे इंधण लेवा गइ, तेने एक जिल्ल उपाडी लइ गयो. सार्थवाहें घणुं जोवरावी,पण जडी नहीं. तेवारें मृगांकलेखा बोली हवे वली पूरां कर्म उदय आव्यां,जे महारी सखी पण महाराथी विछूटी पडी. तेथी रोवा लागी. तेने सार्थवाहें आश्वासन देइ समजावी राखी.

एवामां लाटदेश नजीक आव्यो, ते राजानें विजयराजासाथें मित्राचारी छे, तेमाटें तेणे मालवाथकी सार्थवाहने आव्यो जाणी मालवाना अवंतीसेन राजानी साथें पोताना मित्रनुं वैर छे माटे सार्थवाहने लूंट्यो. तेवारें मृगांकलेखा एक देवकुलने खूणे छुपी बेसी रही. अरण्यमांहे सिंहादिक श्वापदोनो स्वर सांजलवे करी जयाकुल थइ तेथी पुत्र जन्म थयो, तेनी

चंद्रमा जेवी कांति देखी खोलामां लइ रोवा लागी, अरे पुत्र ! आ वखतें तह्यारो पिता होत, तो जन्ममहोत्सव करत, पण ह्मणां आहीं जंगलमां तह्यारो जन्म महोत्सव कोण करशे ? एवुं कही विलाप करे छे. तेने वनदेव तायें समजावी ॥ यतः ॥ बुद्धिवाहाणिवा, गुरुयाणं नडणं हीण दीणाणं ॥ महिमा उवरागोवा, ससीसुराणं न ताराणं ॥१॥ एवुं कहीने रोती राखी.

अनुक्रमें प्रजात थयुं तेवारें सागरचंद्रनी नामांकित मुद्राने वस्त्रनी गांठे बांधी ते वस्त्रथी पुत्रने ढांकी पोतें स्नान करवा तथा वस्त्रधोवाने तलाव उपर गइ, एवामां कोइ नूख्यो कूतरो आव्यो, ते मांसनी गंधें बालकने दांतथी ग्रहण करी लइने चालतो थयो, दैवयोगें ते छोकरानुं आयुष्य बल वान् होवाथी ते वखत तिहांथी ढूकडुं एक वैश्रमण नामें नगर छे तेनो रहेवासी एक श्रेष्ठी, नदी तटें शौचने अर्थें आव्यो छे, तेनी दृष्टियें पड्यो, तेवारें तेणें कूतराने हांकी तेना मुखमांथी बालक जीवतो पडाव्यो, कूतरो नाशी गयो, शेठ हर्ष पामतो छतो निधाननी पेरें ते बालक लइने पोतानी अपुत्रीयाणी धनवती नार्याने जइ आप्यो. धनवतीयें पण तेज समयें एक मुवेलो पुत्र जण्यो छे, तेने दासीने कही नखावी दीधो अने पहेलो जीवतो बालक पोतानी पासें सुवाख्यो. पछी तिहां शेठें मह्यारे घेर पुत्र जन्म थयो, एवुं लोकोमां कहीने महोटो महोत्सव कीधो. तेनुं नाम सुरेंद्रदत्त दीधुं. ते पुत्र बीजना चंद्रमानी पेरें वधतो महोटो थाय छे. ते पुत्रना आव्या पछी तेना माहात्म्यथी वैश्रमण श्रेष्ठी धनें करीने साचे साचो वैश्रमणना जेवोज थयो. धनवतीने मृतगर्भनुं कलंक उतखुं, ते पछी वली बीजा पण एक नरदेव अने बीजो धनद एवा बे पुत्र तेणें जण्या, सुरेंद्रदत्त पण अनुक्रमें सर्वकला नण्यो, यौवन पाम्यो, वैश्रमणश्रेष्ठीयें तेने बत्रीश कन्यानुं पाणिग्रहण कराव्युं ते कुमर, दोगुंदक देवना सुख नोगवतो हवो.

पाछलथी मृगांकलेखा स्नान करी आवीने जूवे छे, तो पुत्र दीठो नहीं. तेवारें विलाप करवा लागी, हा हा मुझने शी डुर्मति उपनी जे हुं आवा रत्न जेवा बालकने अरण्यमां मूकीने स्नान करवा गइ !!! एम विलाप करवा लागी, एवामां तिहां ललिता एवे नामें एक गोवालीयानी स्त्री आवी तेणें मृगांकलेखाने समजावीने रोती राखी, अने पोताना गोकुलमांहे तेडी गइ, तिहां तेने दूध दहीं पीवरावी सुखिणी करी.

एकदा गोकुलनो धणी वसंत नामें छे,तेणे तेने दीठी,तेवारें कामें पीडित थको भोगनी प्रार्थना करतो हवो. तेणे जेम कोइ दासीनो तिरस्कार करीयें, तेवो तिरस्कार कस्यो. तेने ललितायें समजाव्यो, जे ए सती छे, आपणा गोकुलमां आवी छे,माटें एनो केड तुं मूकी दे. तो पण तेणें विचार्युं जे मह्वारे घेर आवी छे माटे मह्वारुं कथन मानेज छूटे, एवुं निर्धार्युं एकदा मृगांकलेखाने उंघमा सूती देखी उपाडीने पोताने घेर लइ गयो. अने विषय भोगववानी प्रार्थना करी तिहां मृगांकलेखायें यद्यपि " बला भिउगेणं " ए आगार छे, तो पण पोतानुं शील राख्युं, शील लोपवा दीधुं नहीं. तेना शीलना प्रभावें वसंतने वासी वल्यूं, तेह्ज रात्रियें मरण पामीने डुर्गतियें गयो. गोकुलने विषे मृगांकलेखानो शीलमहिमा विस्तार पाम्यो. वसंतना कुटुंबपरिवारें तेने घणुं मान आपीने ललिताने घेर मोकली, पण मार्ग भूली पडी तेथी अरण्यमां निकली गइ. मार्गमां वडवृक्षनी छायायें जइ बेठी थकी कर्मनो परिणाम विचारे छे.

कर्मयोगें मकरंद नामें तापस तिहां आव्यो, तेणे मृगांकलेखाना सर्व समाचार सांभली आश्रमें लइ जइ कुलपतिने आपी. तेणें पोतानी पुत्री करी मानी अने एक तापसनी साथें कोइ महिरनामा ग्रामनी निकट जइ मूकी. तिहां ते गामनो सुंदर नामें स्वामी छे, तेना माणसें तेने पकडीने आगल उगणीश माणस बंदीवान छे, तेनी पासें जइ वीशमी एने पण मूकी. ते सुंदरने घेर पुत्रनो जन्म थयो छे,तेमाटे तेणें दश पुरुष अने दश स्त्री भद्रकाली देवीने चडाववानी मानता करी छे,तेथी ए वीशे बंदीवानोने देवीना मठने विषे लइ आव्या, तिहां सुंदर पोतें आवीने वीश जणने कहेवा लाग्यो जे अमारे घेर पुत्र जन्म थाय, तो भद्रकालीदेवीने दश स्त्री तथा दश पुरुष, मली वीश माणसनो बलि आपीयें. एवी अमें मानता करी छे. माटें तमारो इहां बलि देवाशे, तेथी जेह्ने जे इष्ट होय, तेनुं स्मरण करो. एवुं सांभली उगणीश माणस तो भयें करी त्रास पामतां बोली शक्यां नहीं परंतु एक मृगांकलेखा बोली जे प्रथम मुझने मारी बलि आपो. जेम हुं बीजा माणसनुं मरण मह्वारी नजरें देखुं नहीं. मने माह्वारा मरणनी चिंता नथी, पण उगणीश जणना मरणनी चिंता छे.

एवुं सांभली सुंदर बोल्यो के हे भगिनी! एकली तुझनेज हुं मूकुं छुं.

तेंने मृगांकलेखायें कह्युं हे जाइ सुंदर ! मुजने मारी नाख. पण उगणीश जनने मूकी आप. जो उगणीशने मारे, तो हुं एकली जीवती रहीने शुं क रुं ? तेवारें सुंदर, मृगांकलेखानो करुणामय परिणाम देखीने चिंतवे ठे ॥ यतः ॥ निजप्राणैः परप्राणान्, परित्राति सउत्तमः ॥ मादृशाविपरीतं तु, प्र कुर्वंति महाधमाः ॥१॥ एवुं विचारी जीववधनुं पच्चरकाण करी वीशे माण सने मूकी दीधां. सर्वे मृगांकलेखाने आशीष देतां पोतपोताने स्थानकें गयां.

मृगांकलेखा तिहांथी चालती वली पण मार्ग नूलीने एक अटवीमां जइ पडी. तिहां एक कालविकराल जेवो नूख्यो सिंह, तेने खावा आव्यो. तेवारें मृगांकलेखा बोली एक महारो पति सागरचंद्र मूकीने आजपर्यंत में परपुरुष चिंतव्यो नथी, एवा महारा शीलनो जो महिमा होय, तो आ विघ्न विलय थइ जजो. एटलुं कहेतांज ते सिंह काष्ठना पुतला जेवो थ इने तिहांज उनो रही गयो. मृगांकलेखा आगल चाली संध्यासमयने विषे काली मशीमांहे त्रण वार जबोली काढी होय, एवी एक राक्षसी नूखीथ की तिहां आवती दीठी, तेवारें पण मृगांकलेखायें तेमज कह्युं, के महारो पति सागरचंद्र विना जो अवर पुरुष में महारा मनें करी चिंतव्यो न हो य, तो ते महारा शीलना प्रनावें करी ए राक्षसी हताशा थाउ. ए वचन थी राक्षसी पण निराश थइ चाली गइ. मृगांकलेखायें तिहां एक वटवृक्षनी नीचें रात्रि काहाढी, प्रनातें चालवा मांड्युं. चालतां चालतां सिद्धार्थपुरनी बाहिर उद्याने देवकुलने विषे पथिश्रांतथकी विश्राम लेवा बेठी.

कर्मना वशथकी तिहां एक कामसेना नामें वेश्या आवी, ते तेनुं रूप सुंदर देखी तिहांथी जोरावरीयें उपडावीने घेर लइ गइ. अने कहेवा लागी के तुं महारे घेर गणिकानो धंधो कर. मृगांकलेखायें कह्युं हुं कुलीन स्त्री थइ ए काम न करुं, तेवारें तेने वेश्यायें घणुं संतापी, तो पण तेणें वेश्या पणुं अंगीकार न कीधुं. पापना वशथकी तेहिज रात्रियें कामसेना वेश्या मरण पामी, तेवारें तेनी दासीयें जोरावरीथी मृगांकलेखाने कामसेनाने पा टें थापी तो पण तिहां ते निष्कलंक शील पाले, दासीनो स्वार्थ न पहों चे. तेवारें ते दासीयें रीष आणीने कनकध्वज राजानी आगल जइ मृगां कलेखाना रूपनुं वर्णन कर्युं, राजायें तेने तेडवा माटे पोतानो प्रतिहा र मोकल्यो, तेणें आवी कह्युं के चाल, तुजने कनकध्वज राजा तेडे ठे.

मृगांकलेखायें कह्युं राजा कोण, अने हुं कोण? जा हुं नथी आवती. ते सांभली प्रतिहारें कह्युं राजाभियोग मानवोज जोइयें, तेमाटे खुशीथी आवो, तो रूडुं. ते सांभली मृगांकलेखा अणबोली रही, तेवारें ते सुखासने बेसाडी लइ जावा लाग्यो, मृगांकलेखा कपटें गांभी बनीने सुखासनथकी नीचें पडी, लुगडां फाडे माथें धूड घाले, लोकोने पथरा मारे, यद्वा तद्वा बोले, ते जोइ वेश्यानी दासी तेने उपाडी पोताने घेर लइ गइ. मंत्र वादीने तेडाव्या, मंत्रवादी ढूकडा आवे, तो तेने माटीना ढेफाथी मारे. तेवारें मंत्र तंत्रने विषे निपुण एवो कनकबाहु नामें पोतानो अंगरक्षक हतो, तेने राजायें कह्युं के एने श्यो दोष छे? ते तुं जइने जोइ आव.

ते कनकबाहुयें तिहां जइ एकांतें श्रीचंद्रप्रभस्वामीना शासननी अधिष्ठायिका ज्वालामालिनी नामें देवी छे, तेने मृगांकलेखाना शरीरमां उतारीने पूछवा लाग्यो, के मृगांकलेखाने श्यो दोष छे. तेवारें ते देवी मृगांकलेखाने मुखें कहेवा लागी के एने कांइ पण दोष नथी परंतु ए माहासती अवंतीराजाना मंत्री सागरचंद्रनी भार्या परमश्राविका छे,ते कर्मने वश इहां आवी चडी छे. अने शील पालवाने माटें घेली बनी गइ छे,तेने तमें कुलदेवीनी पेठें आराधो के जेथी तमारुं कल्याण थाय.

एवुं सांभली देवीने विसर्जन करी राजा पासें जइ परमार्थ समजावी कनकबाहु पोताने घेर मृगांकलेखाने तेडी गयो. लोकोमांहे सती कहेवाणी. देवांगनायें साख पूरी. हवे मृगांकलेखा तिहां सुखें रही थकी चिंतववा लागी, के हा हा जूवो कर्मपरिणाम कहेवा छे!! मह्यारो धणी सागरचंद्र किहां छे! मह्यारो पुत्र किहां छे! मह्यारी सखी चित्रलेखा किहां छे! कहेवां विकट कर्म कीधां छे के एटलानो वियोग हुं पामी! वली माथें कलंक चढेलुं छे! निरंतर एवी चिंतवणा करती तिहां कालक्षेप करे छे.

हवे मृगांकलेखानो पुत्र सुरेंद्रदत्त महोटो थयो, तेवारें घणुं धन कमाइने पिताने वल्लभ थयो ते जोइ धनवती जननी चिंतववा लागी जे ए सुरेंद्रदत्त छतां मह्यारा अंगजात बे पुत्र कांइ सुखी थाय नहीं, तेम पिताना मानेता पण थाय नहीं, माटें ए सुरेंद्रदत्तने विषप्रयोगें मारी नाखुं. एवा अभिप्रायथी त्रण मोदक बनाव्या, तेमां बे न्हाना निर्विष कस्या अने एक महोटो विषमिश्रित कस्यो, ते लाडु भांभागारें त्रणे भाइ बेठा हता, तिहां

दासीने हाथें मोकल्या. दासीयें धनवतीना कह्याप्रमाणें बे न्हाना लाडु नरदेव तथा धनदेवने आप्या अने एक महोटो लाडु सुरेंद्रदत्तने आप्यो. पण सुरेंद्रदत्त कार्याकुल हतो, तेथी तेणें खाधो नहीं, एमज राखी मूक्यो. अने बे नाइयें बे लाडवा खाधा. वली नूख्या थया त्यारें सुरेंद्रदत्तें पोतानो लाडवो अडधो अडध करी बे नाइने वहेंची आप्यो बे नाइयें तरत खाधो, ते खातां वार मूर्छा खाइ पडी गया, तेनां घणां औषधादिक उपचार कस्था, पण कांइ टांकी लागी नहीं, बे नाइयें काल कीधो. वैश्रमण शेठें सर्व समाचार जाण्या अने विचाखुं जे धनवती निश्चें एने मारशे, तेवारें सुरेंद्रदत्तने एकांतें तेडीने शेठे तेने सर्व वार्त्ता कही तथा सागरचंद्रनामांकित मुद्रारत्न आप्युं, अने कह्युं के तुं तामलिप्ती नगरीयें जा. जो इहां रहीश तो ए डुष्ट स्त्री तुऊने विषादिक प्रयोगें कपटथी मारशे.

एवुं सांजली सुरेंद्रदत्त तामलिप्ती नगरीयें आव्यो, तिहां घणुं धन उपार्जीने एकदा श्रीऋषजदेवना प्रासादें पूजाने अर्थें गयो. तिहां शासनदेवी चक्रेश्वरी मातानी मूर्त्ति ठे, तेनो महोटो महिमा जाणीने अठम तप करी ब्रह्मचर्य धारी थइ देवीनुं आराधन करवा बेठो. तेवारें चक्रेश्वरी प्रगट थइने बोली के हे वत्स ! तहारो पिता सागरचंद्र अने मृगांकलेखा माता ए बे तुऊने सिद्धार्थपुरी नगरीना प्रियमेलक उद्यानमां मलशे. तेमाटें खेद म कर. तुऊने देखवाथी जेना स्तनमांहेथी दूधनी धारा वरसे, तेहने तुं तहारी माता करी जाणजे. लोक सागरचंद्रने देखी कहेशे, ए सुरेंद्रदत्तनो पिता ठे. आज थकी एक महीनामां तहारां माता पिता मलशे, एम निश्चय जाणजे. एवुं कही देवी अदृश्य थइ. सुरेंद्रदत्त पण देवीने वचने श्रीऋषजदेवने पूजी पारणुं करी सिद्धार्थपुर जणी चाल्यो.

हवे अवंतीसेन राजायें विजयराजाने जीती लीधो, तेवारें कटकथी विदायगिरी मागीने सागरचंद्र पोताने घेर आव्यो. माता पिताने पगे लाग्यो जे द्रव्य उपार्जन करी लाव्यो हतो, ते सर्व पिताने आपीने पठी मृगांकलेखाने घेर आव्यो. तिहां जेम चक्षुर्हीन मनुष्य शून्य देखाय, तेम ते घर पण मृगांकलेखा विना शून्य दीठुं, तेवारें विचाखुं जे ए शुं पीयर गइ ठे ? किंवा कोइ बीजो विचार होय तो ते केम घटे ?

पठी तिहांथी आवी माताने पूठ्युं, तेवारें मातायें कह्युं के हे वत्स !

ए पापिणीनुं नाम कोण लीये ? तुं आंहीथी गया पछी एणें कोइकनी साथें अनाचार सेव्यो तेथकी गर्भ रह्यो, कुलने कलंक लगाड्युं, माटें अमें घरथकी कहाढी मूकी, एटलुं सांजलतां वारज सागरचंड मूर्छा खाइ धरती उपर पड्यो. तेने शीतलोपचारें करी मूर्छा टाल्यानंतर विलाप करवा लाग्यो. मातायें कह्युं के हे पुत्र ! तुं तहारी स्त्री पासें आव्यो हतो, तो अमने जणावी कां न गयो ? सागरचंडें कह्युं तमें महारुं नामांकित मुड्रारत्न केम न उलख्युं ? मुड्रारत्न तेणें देखाड्युं तेम छतां तमें केम घरथी बाहिर काढी मूकी. इत्यादिक घणा उलंजा दीधा. बीजुं माता पितानी सार्थे शुं जोर चाले!

पछी धनुष बाणनो जाथो लइ अजिग्रह करी चाल्यो जे जिहांसुधी मृगांकलेखा न मले, तिहांसुधी महारे घेर आववुं नहीं. एवो निश्चय करी मित्रने जाण कर्याविना एमज चाल्यो, ते गाम, नगर, खेट, खर्वटें जमतो पंथीजनोने पूछतो पूछतो जाय छे, एवामां हेडंब नामें राक्षस मल्यो, ते प्रगट थइ कहेवा लाग्यो के मुजने तहारी स्त्रीनुं रूप पूछ. ते मृगांकलेखाने हुं गली गयो छुं ते वचन सांजली सागरचंड कोपाकुल थको राक्षसने गाल देइ मारवा उठ्यो. राक्षस पण वेतालरूपें वधवा लाग्यो, वधतां वधतां तालप्रमाणें थयो, तेवारें कुमरें वेताल जाणी पंचपरमेष्टिनुं स्मरण कर्युं. तेना महिमाथी वेताल नाशि गयो.

सागरचंडें स्त्रीना वियोगथी मरवाने अर्थें केटलांएक काष्ठ एकठां करी महोटी चिता रची, अनें कहेवा लाग्यो अरे देव, दाणव, सिद्ध, गांधर्व, सर्व सांजलजो जे में निरपराधा सतीयोमांहे शिरोमणि एवी महारी प्रियानें घणा वर्षलगण संतापि तेमाटे हुं महापातकी थयो छुं, ते पाप शुद्धकरवाने अर्थें अग्निमांहे झंपापात करुं छुं. एवुं कही जेटले अग्निमां पडवा कुदको मारवा लाग्यो, एटलामां सुयशा नामा सिद्धपुत्रें आवी वार्यो. के हे महापुरुष ! तुं आत्मघात म कर, तुं तहारी प्रिया अने पुत्र सार्थे मली घणां सुख जोगवी दीक्षा लइने मोक्षें जाइश. तहारो सुरेंड्दत्त पुत्र तथा मृगांकलेखा स्त्री सिद्धार्थपुरने विषे प्रियमेलक उद्यानें श्रीरूषजदेवना चैत्यने विषे मलशे. तेनुं एंधाण ए जे एज जिल्लनी पालीथकी नाशि गयेली मृगांकलेखानी सखी चित्रलेखा तुजने मार्गमां मलशे. तो ए वात तुं सत्य मानजे. पछी चित्रलेखाने लइ तुं सिद्धार्थपुरमां जाजे. हवे मुजने अनुज्ञा आप तो हुं नं

दीश्वरद्वीपें जिनचैत्य जुहारवा जाउं. एम कही सिद्धपुत्र आकाशें उत्पत्यो.

एवुं सिद्धपुत्रनुं वचन सांभली सागरचंद्र, आनंदरसामृतमांहे झीलतो थको विचारें छे जे धन्य छे मुजने ! जे माटे मने मृगांकलेखा पुत्रसहित मलशे. पछी चिता उलवीने तिहांथकी चाल्यो केटलिएक भूमि उलंघी गयो तिहां रुदन करती हा हा मृगांकलेखा तुं क्यां गइ ? एकली केम जीवती र हीश ! एवा विलाप करती स्त्रीनो शब्द सांभली कुमरें जाण्युं जे आ चित्र लेखानो स्वर छे, तेवारें ते तिहां जइनें तेने मल्यो चित्रलेखा पण सागर चंद्रने उलखी पगे लागी. तेने मृगांकलेखानो समाचार सागरचंद्रें पूछयो, सखीयें कह्युं के हे स्वामिन् ! सासु ससरायें काढी थकी पितानें घेर गइ,ते णें पण राखी नहीं, तेवारें तमारी पासें कटक मांहे आवतां चित्रगुप्त सा र्थवाहनी सार्थे चाली, तिहां हुं इंधण लेवा गइ हती तिहां मने दुष्टभिल्ल प कडीने पल्लीमांहे लइ गया. अने महारां आभरण उतारी लीधां. ते पालि आजेज श्रीविजय राजायें भांजी, तेवारें हुं नाशीने इहां आवी बेठी छुं. ते सांभली वली सागरचंद्रें पण सिद्धपुरुषनी वात तेनी आगल कही संभ लावी. पछी बेहुजण एकठां मली श्रीसिद्धार्थपुरीना मार्गभणी चालतां थयां.

हवे सुरेंद्रदत्त, सिद्धार्थपुरीयें आवी श्रीऋषभदेवने देहरे घणो द्रव्य व्यय करीने अठाइ महोत्सव करावे छे. तिहां हजारो माणस गाम गामनां आ व्यां छे, तेनी सार्थे मृगांकलेखा पण आवी छे, तेणें सुरेंद्रदत्तने दीठो, ते वारें स्तनयुगलथी कांचली भेदी दूधनो प्रवाह चाल्यो. ते जोइ सुरेंद्रदत्तें विचार्युं जे एज महारी माता जणाय छे. एवामां ते सिद्धपुत्र पण श्रीनं दीश्वरद्वीपनी यात्रा करी तिहां आव्यो छे, तेणें सुरेंद्रदत्तने कह्युं शुं विचा र करे छे ? ए तहारी मृगांकलेखा माता आवी छे, माटें एने पगे लाग. एवुं सांभली सुरेंद्रदत्त आवी पगे लाग्यो. मातायें तेने उत्संगें बेसाड्यो, बेहुनें आनंद उपनो, परस्पर पोतानुं वृत्तांत कही हर्ष पामे छे. एवामां सुय शा सिद्धपुत्रें कह्युं के हे सुरेंद्रदत्त ! तुने वधामणी आपुं छुं, के तहारो पिता सागरचंद्र चित्रलेखानी सार्थे ढूकडो आव्यो छे, चाल. तेनी साहामा म लवा जइयें ! एवुं कही सुरेंद्रदत्तने आंगलीयें वलगाडी मृगांकलेखा तथा घणां नगरना लोकसहित सिद्धपुत्र चाल्यो. वली ते सिद्ध पुत्र आगलथी जइ सागरचंद्रने पण कहेवा लाग्यो के तहारो पुत्र मृगांकलेखा सार्थे त

हारी साहामो आवे ले, एटलामां सुरेंद्रदत्त दूरथी दंमवत् प्रणाम करतो आवीने पिताने पगे लाग्यो, तेने सागरचंद्रें उपाडीने उत्संगें बेसाड्यो, आनंदाश्रुयें स्नान कराव्युं. सर्व आवी सोपारीना वृक्ष नीचें बेठां. मृगांकलेखायें चित्रलेखायें परस्पर आलिंगन लीधां, ते दिवसें ते चार जणने जे आनंद उपनो, तेनी सीमा केवली जाणे, अथवा ते चारे जणनां मन जाणे!

हवे कनकध्वजराजा कनकबाहुना मुखथी सागरचंद्रनुं आगमन जाणी साहामो चाली आव्यो. तेमने हस्ती उपर चडावी नगर सणगारीने पोताने आवासें तेडी लाव्यो. घणी आगता स्वागता करी, एक महीनासुधी पोताने घेर खमावी पछी साथें कटक आपी उज्जयणीयें पहोंचतो कीधो. तिहां पण सुयशा सिद्धपुत्रें अवंतिसेनराजाने तथा कुमरना माता पिताने आगलथी जइ मृगांकलेखा तथा सुरेंद्रदत्त पुत्रनी साथें सागरचंद्र आव्यानी वधामणी दीधी, ते सांजली अवंतीसेन राजा सागरदत्तशेठनी साथें तेमने तेडावा माटें सामो आव्यो. सागरचंद्र राजाने तथा पोताना पिताने पगे लाग्यो. नगर शणगार्युं, हाथी उपर बेसाडी नगरमां प्रवेश कराव्यो. सागरचंद्र तथा मृगांकलेखा आवी पद्माने पगे लाग्यां. सुरेंद्रदत्त पण वडी आइने पगे लाग्यो. वडी आइयें खोलामां बेसाड्यो. समस्त नगरलोकने हर्ष उपनो, वधामणां थयां, सागरचंद्रे घणुं द्रव्य खरचीने श्रीजिनजुवननें नाना प्रकारें पूजा करी, साते खेत्रें वित्त वावर्युं.

एकदा प्रस्तावें श्रीयुगंधर केवली उद्याननें विषे समोसर्या, तेनी उद्यानपालें वधामणी दीधी. तेवारें राजा तथा सागरचंद्र, सुरेंद्रदत्त, मृगांकलेखा, चित्रलेखा, जनक, जननी आदिक नगरवासी समस्त लोक वांदवा गयां. वांदी धर्मदेशना सांजली घणा जनोयें सम्यक्त्वादिक उच्चर्यां.

हवे मृगांकलेखा पूछती हवी, के हे जगवन्! में पूर्वें श्यां कर्म कीधां के जे थकी हुं कलंकादिक अनेक दुःख पामी? केवली कहे, हे मृगांकलेखा! सांजल. सिंहपुर नगरने विषे कंदर्प्प नामें ब्राह्मण हतो, ते कनकरत्नमय प्रासादने विषे अनंगदेवराजपुत्रें आराधतो थको अहंकार वहेतो रहे ले. तेहीज नगरें एक सत्यकीर्त्ति नामें तापस रहे ले, ते माहातपस्वी लोकमांहे पूजातो प्रसिद्ध ले. हवे पुरोहित ते तापसनी पूजाने अणसहेतो थको अनंगदेव राजपुत्रने मुखें कंदर्पविप्रने कहेवरावतो हवो, जे शत

कीर्त्ति तापसनी उपर कोइ एवुं कलंक चडावीयें के जेथकी एनी पूजा प्रनावना घटी जाय, ते सांजली कंदर्प ब्राह्मणें पणं कह्युं के हुं लाग जोइने वखत आवे ए कार्म जरूर करीश. एनी प्रतिष्ठाने हाणी पहोंचाडीश.

हवे तेंहीज नगरने विषे पद्मदेवश्रेष्ठीनी कमला नामें पुत्री छे, ते ललितांगशेठना पुत्रनी उपर आसक्त छे. तेमाटें ते पुत्री लोकोमांहे व्यनिचारिणी कहेवाय छे. ते कमला कन्या एकदिवस पोताना माता पिताने कह्याविनाज किहांएक जती रही छे, अने दैवयोगथी सत्यकीर्त्ति तापस पण तेज दिवसें कोइने कह्याविना एमज ग्रामांतरें गयेलो छे. तेवारें लोकमां वात चाली रही जे कमला कोइकनी सार्थे चाली गइ छे, ते लाग पामीने कंदर्पविप्रें वात चलावी जे कमलाने तो सत्यकीर्त्ति तापस लइ गयो छे. ते वात लोकोयें सत्य करी मानी लीधी अने सत्यकीर्त्तिनो निरादर थयो. पछी सत्यकीर्त्तिने ग्रामांतरथी आवतो जाणीने कंदर्प ब्राह्मणे विचार्युं जे हुं लोकमांहे खोटो पडीश. तेमाटें लोकोने कह्युं के दुष्ट तापस आव्यो छे तेने शिक्षा आपीयें पछी घणालोकनी सार्थे जइ यष्टिमुष्टिने प्रहारें करी तापसने मार मार्यो. ते तापसें उपशांत पणे ताडना सहन करी.

कंदर्पविप्रने सातमे दिवसें जीनमां फोडलो थयो, तेनी वेदनायें मरण पामी कूतरो थयो, कूतरो पण तेवीज जीनननी वेदनायें मरण पामी वेश्या थइ. तिहां चंदनव्यवहारीयानो पुत्र श्रावक हतो, तेनी सार्थे वेश्यानो संबंध होवाथी वेश्या जिनधर्म पामी. एकदा सरोवरें गइ, तिहां विलास करतुं राजहंसनुं मिथुन दीठुं, तेवारें क्रीडायें हंसने लइ कुंकुमें करी तेनुं शरीर विलेपी मूक्युं. तेमाटें हंसलीयें तेने चक्रवाल जाणीने एकवीश घडी काल प्रमाण तेनी सार्थे क्रीडा नहीं. धणीने विरहें दुःख पामती करुणस्वरें रोवा लागी, तेने देखी ते वेश्याने करुणा आवी, तेवारें जलें करी कुंकुम धोइ हंसने उजलो कीधो. हंस, हंसी, बेहु संयोग पामी रमवा लाग्यां. पछी ते वेश्या पोताने घेर जइ घणा कालसुधी श्रीजिनधर्म पाली मायादोषें सौधर्मेंइनी अग्रमहिषी थइ. तिहांथी चवीने इहां तुं मृगांकलेखा थइ छो.

तथा अनंगदेव जे राजपुत्र हतो, तेणें कंदर्पविप्रें करेला पापनी अनुमोदना कीधी. तेथी ते घणा नव संसारमांहे नमीने इहां चित्रलेखा नामे तहारी सखीपणे आवी उपनो छे. तें जे तापसने कलंक दीधुं तेना पापें

करी तुं इहां कलंक पामी. वली तें जे तापसने मार्यो हतो, तेणे करी तुं दुःख पामी तथा अनंगदेवें तहारा पापने सहाय कीधुं, तेमाटें इहां चित्रलें खायें तहारी सार्थे दुःख जोगव्युं, तथा एकवीश घडी पर्यंत हंस हंसीने वियोग पाड्यो, तेथी तुं एकवीश वर्षसुधी पतिनी सार्थे वियोग पामी, एवी कर्मनी विपरीतता जाणीने कर्म छेदवाने अर्थें साधुनो धर्म तथा श्रावकधर्म पालो.

मृगांकलेखा केवलीना मुखथी पूर्वजवनां कर्म सांजली ते कर्मोने आलोइ पडिक्कमी प्रायश्चित्त आलोइ शुद्ध श्रावकधर्म पालती हवी. सागरचंद्र पण समकेतमूल श्रावकधर्म आदरी धर्मकार्यने विषे तत्पर थयो. अंत समयें सागरचंद्र तथा मृगांकलेखा बेहु जण दीक्षा लइ कर्मक्षय करी शिवपदने अनुजवता हवा. ए समकेतना छ आगारने विषे मृगांकलेखानी कथा कही.

इति महोपाध्यायश्रीशांतिचंद्रगणिशिष्योपाध्याय श्रीरत्नचंद्रगणिविरचिते श्रीसम्यक्त्वरत्नप्रकाशिकानामनि श्रीसम्यक्त्वसप्ततिकाप्रकरण बालावबोधे सम्यक्त्वषडाकारस्वरूपनिरूपण नामा दशमोऽधिकारः समाप्तः ॥ १० ॥

हवे अगीयारमुं समकेतनी छ जावनानुं द्वार कहे छेः—

॥ जाविज्ज मूलनूअं, डुआरनूयं पइठ निहि नूअ ॥ आहार जायणमिमं, सम्मत्तं चरण धम्मस्स ॥ ५५॥ अर्थः—(सम्मत्तं के०) समकेत प्रत्यें (जाविज्ज के०) एवुं जावीजें विचारीयें जे (चरणधम्मस्स के०) चारित्र धर्मनुं (मूलनूअं के०) मूलनूत छे जेम जे वृक्षनुं मूल सबल होय ते वृक्ष वायरादिकें पडे नहीं. सुकाइ पण न जाय, तथा तेने शीत तापना पराजव पण न थाय, शाखा, प्रतिशाखा, पत्र, फूल फलें करी विस्तार पामे, तेम चारित्ररूप धर्मनुं समकेतरूप मूल जो दृढ होय, तो ते चारित्रधर्म देव, दानव, मानवादिक रूप वायरायें चलाव्यो चले नहीं, परिसहादिकें विणसे नहीं, तेमाटें समकेतने मूलनूत कहीयें. ए प्रथम जावना जाणवी.

२ तथा समकेत जे छे ते चारित्र धर्मरूप राजनगरनुं (डुआरनूअं के०) द्वारनूत छे एटले चारित्रधर्मरूप राज्यनगर तथा राज्यमंदिर छे ते मांहे जो समकेतरूप द्वार होय तो प्रवेश कराय. ते द्वार सबल जोइयें जे द्वार मिथ्यात्वमोहनीय कर्मादि रिपुयें जांगी शकाय नहीं. जेमां प्रमादरूप चोर प्रवेश करी शके नहीं, तेमाटे समकेतने द्वार नूत कहीयें ए बीजी जावना.

३ तथा चारित्रधर्मरूप प्रासाद जे छे, तेनो समकेत जे छे, ते (पइठ

के०) प्रतिष्ठानभूत छे. एटले चारित्रधर्मरूप प्रासाद जे छे, तेने जो सम्य क्त्वरूप प्रतिष्ठान सबल होय तो ते चिरस्थायी थाय,जेम राजप्रसादादिक नेविषे पीठ बंध सबल जोइयें,तो ते प्रासाद पडे नहीं तेम चारित्रधर्म रूप प्रासाद छे, तेने समकेतरूप प्रतिष्ठान पीठबंध सबल होय तो ते पडे नही. तेमाटे समकेतने प्रतिष्ठानभूत कह्युं. ए त्रीजी भावना जाणवी.

४ तथा समकेत जे छे, ते (निहिभूअ के०) निधिभूत छे एटले चारित्र धर्मना मूलगुण अने उत्तरगुणरूप आदिक जे रत्न, तेने राखवाने समकेत निधानभूत छे. जेम चक्रवर्त्तीना निधानमांहे सघली वस्तु पामीयें, तेम समकेतरूप निधानमांहे चारित्रधर्मना मूलगुण उत्तरगुणरूप रत्न पामीयें, तथा ते मूलगुण उत्तरगुणनुं उत्पत्ति स्वरूप पामीयें, तेमाटें समकेतने नि धिभूत कह्युं. ए चोथी भावना जाणवी.

५ तथा समकेत जे छे, ते (आहार के०) आधारभूत छे, जेमाटें चा रित्रधर्म जे रहे, ते समकेतने आधारें रहे, जेवारें समकेतरूप आधार भां गो, तेवारें तेनुं आधेय जे चारित्र ते पण गयुं, एम जाणवुं. कारण के चारित्रधर्मविना समकेत रहे, पण समकेतविना चारित्रधर्म रहे नहीं. माटें चारित्र ते आधेय छे अने समकेत ते आधारभूत छे. ए पांचमी भावना.

६ तथा (इमं के०) आ समकेत जे छे, ते (भायणं के०) भाजन छे, एटले चारित्रधर्मरूप जे घृत, दुग्ध, दहीं, इक्षुरस, श्रीफल जल प्रमुख छे, ते समकेतरूप सुवर्णादि भाजनविना रही शके नहीं. तेमाटें समके तने भाजन कह्युं, ए छठी भावना जाणवी ॥ ५५ ॥

हवे एज गाथानुं विवरण सूत्रकार त्रण गाथायें करी करे छे.

॥ देइ लहुं मुरकफलं, दंसणमूले दढम्मि धम्मदुमे ॥ मुत्तुं दंसण दारं,ण पवेसो धम्मनयरम्मि ॥ ५६ ॥ नंदइ वयपासाउ, दंसण पीढम्मि सुप्प इठंमि ॥ मूलुत्तरगुण रयणा,णं दंसण अरकय निहाणं ॥ ५७ ॥ सम्मत्त महाधरणी, आहारो चरण जीव लोअस्स ॥ सुयसील मणुन्नरसो, दंसण वर भायणे धरइ ॥ ५८ ॥ अर्थः–(धम्मदुमे के०) यतिधर्म तथा श्रा वकधर्मरूप डुम एटले वृक्ष तेने विषे (दंसणमूले दढंमि के०) दर्शन जे समकेत ते रूप मूल दृढ छते (मुरकफलं के०) मोक्षरूप फल प्रत्यें (लहुं के०) शीघ्र (देइ के०) दीये छे, जेम बीजा पण सबलवंत जे आम्रादि

कनां वृक्ष छे, ते शीघ्र फलप्रत्यें आपे छे. तेम यतिधर्म अने श्रावकधर्मरूप जे वृक्ष छे,तेने जो समकेतरूप मूल थइ निश्चल होय, तो ते मोक्षरूप फल शीघ्र उतावलां आपे. ए प्रथम नावना जाणवी.

तथा (धम्मनयरम्मि के०) चारित्रधर्मरूप नगरने विषे (दंसणदारं के०) सम्यक्त्वदर्शनरूप द्वारप्रत्यें (मुत्तुं के०) मूकीने (णपवेसो के०) प्रवेश न थाय, एटले बीजा जीवो धर्मरूप नगरनी मांहे तोज पेशी कही यें, के जो समकेतरूप दरवाजो पाम्यो होय तो. जिहां सुधी जे जीवने समकेतरूप दरवाजो प्राप्त थयो नथी, तिहां सुधी ते जीवने धर्मरूप नगर मां प्रवेश थयो नथी. तिहां सुधी ते जीवो नूलाज नम्या फरे छे. परंतु जे वारें जीवनें समकेतरूप दरवाजो प्राप्त थशे, तेवारेंज धर्मरूप नगरमां प्रवेश कराशे ॥ यतः ॥ अन्नाणं खलु कठं,अन्नाणाउ ण किंचि कष्टयरं ॥ नव सायरं अपारं, जेणावरिया नमंति जीआ ॥ १ ॥ संमत्तसार रहिया, जाणंता बहुविहाइं सवाइं ॥ अरयव तु बलग्गा, नमंति संसार कांतारे ॥२॥ ए बीजी नावना जाणवी ॥ ५६ ॥

यति अने श्रावकना (वयपासाउ के०) व्रतरूप जे महोटो धर्मप्रासाद छे तेने दृढ एवो (दंसणपीठंमि के०) समकेतदर्शनरूप पीठ जे पायो ते (सुप्पइठंमि के०) सुप्रतिष्ठ एटले सारो थाप्यो होय तो (नंदइ के०) नांदे एटले चिरकालपर्यंत रहे पण पडे नहीं. ते प्रासाद डगमगे नहिं पण निश्चल रहे. परंतु समकेतरूप पायाविना अन्यदर्शनरूप पायायें करी धर्मरूप महोटा प्रासादनुं मंडाण थाय नहीं, ए त्रीजी नावना जाणवी.

तथा (मूलुत्तरगुणरयणाणं के०) मूलगुण अने उत्तरगुणरूप रत्न तिहां साधुना मूलगुण ते पंचमहाव्रत अने उत्तरगुण, ते पिंडविशुध्यादिक ॥यतः ॥ पिंडस्स जा विसोही, समईउ नावणा तवो डुविहो ॥ पडिमा अनिग्गहा विय, उत्तरगुणमो वियाणाहिं ॥ १ ॥ ए उत्तरगुण जाणवा. तेमज श्रावकना मूलगुण ते पांच अणुव्रत जाणवां. अने उत्तरगुण ते त्रण गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत छे, अथवा आवीरीतें कहेवुं ॥ दशविध पच्चरकाण, चार अनिग्रह, सात शिक्षाव्रत, बार प्रकारनां तप, अगीयार प्रतिमा, बार नावना, चारप्रकारनो धर्म, सत्तरप्रकारनी पूजा, इत्यादिक ए सर्व श्रावकजनोनां उत्तरगुण जाणवा. एम साधु श्रावकना मूल उत्तरगुणरूप जे रत्न

तेनुं (अरकयनिहाणं के०) अक्षय अखूट निधान ते (दंसण के०) सम केत छे. जेम निधानविना रत्ननुं अवस्थान न पामीयें, तेम सम्यक्त्वविना मूलोत्तरगुणरूप रत्न पण न पामीयें. ए मूलोत्तरगुण जे छे, ते अमूल्य छे, माटे रत्ननुं उपमान दीधुं, अने पूर्वोक्त समस्त गुणरूपजे रत्न तेनो आधार समकेत छे, गुण आधेय छे माटें समकेतने निधाननी उपमा दीधी. एवुं जे मनमां भाववुं, ते चोथी भावना जाणवी ॥ ५७ ॥

तथा महोटी पृथ्वी एटले जेनुं १८०००० योजन प्रमाण जाम पणे पृथ्वीपिंम छे, तलीयामां तीर्छि सातराज प्रमाण विस्तार वाली ते जे म असंख्याता द्वीपसमुद्र परिवेष्टिता सचराचर जीवलोक तेनो आधार छे, तेम (चरणजीवलोअस्स के०) चरण जे देशविरति सर्वविरति रूप चा रित्र प्रधान एवो जे जीवलोक एटले भव्यप्राणीनो गण, तेनो (आहारो के०) अधार ते क्षायिक, क्षायोपशमिक, औपशमिक, वेदक अने सास्वाद न, ए पांच प्रकारनुं जे (सम्मत्त के०) सम्यक्त्व, तद्रूप (महाधरणी के०) महोटी पृथ्वी छे, केम के? ए समकेतरूप पृथ्वीना आधारविना चारित्ररूप जीवलोक रही शके नहीं, एवी भावना ते पांचमी भावना.

तथा (सुय के०) श्रुत ते द्वादशांगीरूप अने (सील के०) शील जे आचार ते सर्वसावद्य वर्झनरूप क्रिया एनो अभिप्राय कहीयें छैयें. सम्य ग्ज्ञान अने सम्यक् चारित्र, ए बेहु परस्पर मल्यां थकां अर्थ साधक था य ॥ यतः ॥ संजोग सिद्धीइ फलं वयंति, न इग्ग चक्केण रहो पयाइ ॥ अंधोय पंगूय वणे समिच्चा, ते संपउत्ता नयरं पविठ्ठा ॥१॥ तेमाटे श्रुतशी लरूप जे (मणुन्नरसो के०) मनोज्ञ रस छे, ते प्रत्यें (दंसणवर के०) वर प्रधान समकेत दर्शन रूप जे (भायणे के०) भाजन, पात्र विशेष तेने विषे (धरइ के०) स्थापे, धरी राखे, कारण के समकेत रूप भाजनवि ना श्रुतशीलरूप मनोज्ञ रस रही शके नहीं. ए छठी भावना जाणवी ॥५८॥

हवे ए छ भावनाने विषे चंद्रलेखानुं दृष्टांत कहीयें छैयें. आ जंबुद्वीपने विषे मलय नामें पर्वतनी उपर छत्र समान वटवृक्ष छे, तिहां शुकमिथुन व से छे, ते मिथुनने रूडुं देखी कोइक विद्याधर लइ गयो. तेणें लइ जइ मणि मय पांजरमां राख्युं. सारा सारा कूर दाडिम बीजादिकनुं भोजन करा वे, समस्त कला भणावी. छए दर्शनना भेद शीखाव्या, जिहां पोतें जाय,

तिहां तेने साथें लइ जाय. एक घडी मात्र पण अलगा मूके नहीं. एकदा चारणश्रमण साधुयें ते विद्याधरने प्रतिबोधीने शुकमिथुनने मलयाचल पर्वतें पाबुं वटवृक्ष उपर मूकाव्युं. पढी ते मिथुनने स्वेछायें विविधप्रकारना नोग विलास नोगवतां एक पुत्र थयो, अनुक्रमें सूडासूडीने परस्परें कलह थयो, तेवारें सूडायें बीजी सूडी संघरी अने आगली सूडीने बोलावे नहीं, पढी सूडीयें कह्युं मह्यारो पुत्र मने आप. सूडायें कह्युं ए मह्यारो पुत्र ढे, ते हुं नहीं आपुं. जेमाटे पुत्र ते पितानो अने पुत्री ते मातानी एवो लोक व्यवह्यार ढे. सूडीयें कह्युं, ए न्याय ते कोना घरनो ? जेमाटे में गर्न धस्यो, पाली पोषी मह्योटो कीधो, माटे मह्यारोज पुत्र कहेवाय. एम बेहु पोतपोतामां विवाद करवा लाग्यां, तेवारें सूडायें कह्युं के चाल. आ नगर आपणी नजीक ढे, तिहां राजसनायें जइ न्याय करावीयें. जे प्रमाणें ते ठेरावी आपशे, ते प्रमाणें आपणने कबूल ढे.

पढी ते बेहु जण नगरने विषे गयां. राजसनायें जइ बेठां. राजा, मंत्री प्रमुख सनानां लोक आगल विवाद कस्यो. मंत्री प्रमुखें घणो विचार कस्यो, पण कोइने रूडो विचार चित्तमां प्रतिनासे नहीं. तेवारें प्रधानें कह्युं ए वातनी समज अमनें पडती नथी माटें अन्यत्र स्थानकें जइ कोइ रूडा जाण पुरुष ह्योय तेनी पासें न्याय करावो. तेवारें ते गामना डुर्ललित नामें राजायें कह्युं जे आपणी पासें न्याय करावावा आव्यां ढे, ते जो आपणे न्याय न करीयें, तो आपणने लक्का जेवुं ढे. माटें ए विवाद हुं पोतें नांजीश.

पढी राजायें पोतें विचार करीने एवो ठेराव कस्यो, के जे बीज वावे ढे, तेमांथी जे अनाज उपजे ढे ते बीज वावनार धणी लइ जाय ढे. तेम बेटो ते बापनोज कहेवाय अने बापज लीये, परंतु माता तो नियमा अलगीज रहेवी जोइयें. जेम नूमिकामां बीज वावनारो बीज लइ जाय, अने नूमि क्षेत्राधिपनी कहेवाय. नूमिकाने बीजनो संबंध नथी, तेमाटे सूडी, पोतानुं क्षेत्र जे शरीर तेने नलें लइ जाय, पण पुत्रनो संबंध एने नथी. एवो विचार करी राजायें शुकपुत्र सूडाने आप्यो, तेवारें सूडी रोवा लागी अने राजाने कहेवा लागी के जे न्याय तमें कीधो,ते नलो कीधो ? राजा आगल कोनुं चाले ? पण ए न्याय तमारी वहीमां लखावो. जेम ए वली पण बीजा विवादमां काम आवे. बीजो कोइ विवाद आवे, तो तेनो चुकादो प

ण एमज कराय! राजायें पण ते वात कबूल करीने ते न्याय मंत्रीने हाथे वहीमां लखाव्यो ॥ यतः ॥ बीजिनएव हि बीजं, क्षेत्रं नवतीह तद्भृतामेव ॥ डुर्ललितमहिनाथो, निर्णयमेवं स्वयं चक्रे ॥ १ ॥

ए श्लोकने सूडीयें राजाना दफतरमां लखाव्यो अने पोतें पुत्रने विरहें मूर्छा पामी ढली पडी. सूडो हर्ष पाम्यो थको पुत्रने लइ गयो. प्रधाने शीतलोपचारें करी सूडीनें सावधान करी. सूडी पोताना धणी तथा पुत्रथकी विछूटी थकी श्रीशत्रुंजयतीर्थे जइ श्रीऋषजदेवनां दर्शन करी संसारथी विरक्त थइ थकी कहेती हवी ॥ यतः ॥ न गिहं न हि नरतारो, नय सयणा नेय अंगजाउ य ॥ सरणं इह संसारे, एग मिह जिणमय मुत्तं ॥ १ ॥ एम कही अनशन करी बेठी. अंतसमयें डुर्ललित राजानो अन्याय तेना मनमां आव्यो, तेमाटे मध्यमनावथकी कांची नगरीयें चंदनसागरशेठने घरे घणा पुत्र छे, तेनी उपर ए पुत्रीपणे उपनी, तेनुं नाम चंद्रलेखा दीधुं. ते पूर्वनवना अन्यासथी निश्चल सम्यक्त्वधारिणी जिनधर्ममांहे प्रवीण थइ.

पछी तिहां तेने राज्यसनादिकनी नूमि देखी जातिस्मरण ज्ञान उपनुं, सूडासूडीनो नव दीठो, विवादनी वात सांजरी आवी, कर्मप्रकृति खेत्रसमास प्रमुख ग्रंथोना विचार जाणवामां प्रवीण थइ. तेवारें चिंतववा लागी जे राजायें अन्याय कीधो छे, माटें हवे एनां फल हुं एने देखाडुं. एवुं मनमां विचारी चंदनसागरश्रेष्ठीनी पासें सेराह, खुगह, हांसला, नीलुआ, कालुआ प्रमुख नानादेशना घोडा अणावी श्रीकार पायगायें बांध्या. डुर्ललितराजा जोवा आव्यो, घोडा देखी घणो हर्ष पाम्यो. वेचाता लेवानी मागणी करी. शेठें कह्युं ए घोडा हुं वेचतो नथी ए मह्यारे घेर बांध्या रहे शे. वली राजायें कह्युं ताह्यारा किशोर आप. तेवारें शेठें पांच वर्ष पर्यंत माग्या आप्या, तेमांथी घणा किशोर थया, तेवारें पोतानी पुत्री चंद्रलेखाना कहेवाथी शेठें ते किशोर पोताने घेर आणी बांध्या ते वात अश्वरक्षके जइ राजा आगल कही. राजायें रोष करी चंदनशेठने तेडाव्यो, तेवारें चंद्रलेखायें पिताने कह्युं के राजा पूछे, तो कहेजो जे मह्यारी पुत्रीने खबर छे.

हवे चंदनशेठने राजायें पूछ्युं के तमें मह्यारा अश्वकिशोर केम लीधा? शेठें कह्युं ए वातनो जवाब मह्यारी पुत्री आपशे. हुं जाणतो नथी. राजायें कह्युं तमारी पुत्रीने तेडावो. तेवारें चंद्रलेखा अद्भुत श्रृंगार करी सुखासने

बेसी, घणी दासीयें परवरीथकी म्होटा आडंबर सहित राजसभायें आवी. राजा तेनुं रूप देखी चमत्कार पाम्यो. हवे राजाने चंद्रलेखा प्रत्युत्तर आपशे, ते कौतुक जोवाने अर्थे तिहां घणां लोक एकठां थयां. चंद्रलेखा पण राजाने प्रणाम करी पोताना पिताना खोलामां आवी बेठी.

राजायें पूछ्युं तहारा पितायें म्हारी घोडीना जणेला किशोर घोडा केम लइ लीधा? चंद्रलेखा बोली के हे राजन्! तहारुं वचन संभाल. राजा घणुयें संभारे पण सांभरे नहीं. तेवारें चंद्रलेखायें कह्युं के एकने आ भव नी वात पण सांभरे नहीं अने एकने घणा भवांतरनी वातो सांभरे! ए आप आपणा ज्ञानावरणीय कर्मनी केवी विचित्रता छे? ते वचन सांभलीने वली पण राजा घणो उपयोग दीये पण कांइ स्मरणमां आवे नहीं, तेवारें राजायें चंद्रलेखाने कह्युं, मने कांइ सांभरतुं नथी, माटे तुंज कहे. चंद्रलेखायें कह्युं, तहारेज वचनें ए तुरंगम जो म्हारा पिताना थाय, तो हुं लउं, नहीं कां म्हारा घरनुं सर्वस्व आपुं. एवुं पण करी पछी राजाना न्यायना दफतर मगाव्यां, तेमां लखेलो श्लोक काहाडी राजाने कह्युं आ श्लोक वांचो. ते श्लोक वांच्यो के तुरत ते राजानुं श्यामवदन थयुं. चंद्रलेखायें कह्युं न्यायपूर्वक बोलजो. ए अश्वकिशोर म्हारा थाय, के नहीं थाय? राजा शुं करे वचने बंधाणो, ते केम पलटाइ शके? मंत्री प्रमुख समस्त लोक चंद्रलेखानी चतुराइ देखी चमत्कार पाम्यां. चंद्रलेखा राजानी विदायगिरी मागी गाजते वाजते घेर आवी. सघला किशोर घरे आणी बांध्या. नीला नीला जव मगावीने किशोरने खवरावता हवा.

हवे राजा अपमान पाम्यो थको विचारवा लाग्यो के हुं एनुं पाणिग्रहण करी मारे वश आणीने हेरान करुं! एवुं चिंतवी चंदनशेठने तेडावी कह्युं, तहारी पुत्रीनुं पाणिग्रहण तुं म्हारी साथें कराव. शेठें आवी पुत्रीने पूछ्युं पुत्रीयें ते वात कबूल करी, तेवारें म्होटा म्होत्सवें राजाने पुत्री परणावी दीधी. परण्या पछी राजायें तेने रहेवामाटें पोताना महेलथी घणुंज दूर एक प्रासाद करावीने तेमां तेने राखी. अने कहेतो हवो के तुं तो गमे तेवी धूतारी हती, पण जो के म्हारी खबडदारीथी में पण तुजने कहेवी धूती छे? राजा कहे छे, के हुं प्रतिज्ञा करुं छुं ते तुं सांभल. आजदिवस थी मांडीने हुं तुजने कामरागें करी बोलावीश नहीं. ते सांभली चंद्रलेखा

बोली, स्वामी! हुं पण प्रतिज्ञा करुं बुं ते सांजलो! जो हुं चंदनशेठनी पुत्री हुइश, तो म्हारी एठ तमने जमाडीश, तमारे हाथे ह्मालनी माफक म्हारी शय्यासुधां उचकावीश, एवां वचन तेनां सांजली राजा क्रोधें जराणो थको अणमानीती स्त्रीयोना समूहमां तेने बेसाडी दीधी. अने तेनी साथें बोलवा चालवानो व्यवहार पण बंध कस्यो.

हवे चंडलेखा प्रतिदिन अष्टप्रकारी पूजा करे, सौजाग्यकल्पवृक्ष प्रमुख घणां तप करे, एकदा राजानी शिख मागी तपनुं उजमणुं करवा पिताने घरे आवी. पितायें तेनी दुर्बलकाया देखी दुःख करवा मांम्युं. पुत्रीयें कह्युं हे पिताजी! दुःख म करो. जे वाव्युं होय ते लूणीयें, लख्युं होय, ते पामीयें! कीधुं होय, ते जोगवीयें! एम पिताने समजावी तपनुं उजमणुं कस्युं.

पडी पिताने कह्युं अत्यंत रूपवंत अने सकल कलाकलापवंत एवी पच्चास कन्याउ मुजने आणी आपो. तथा तमारा घरथी मांमीने म्हारा घरसुधी ढानी मानी एक सलंग खोदावी आपो. तथा म्हारा घरथी मांमीने द्वार वासिनी देवीना देरासरसुधी बीजी पण एक सलंग खोदावी आपो. तथा म्हारा घरनी नीचेंनी सलंगमांहे एक म्होटुं सुंदरप्रासाद करावो. एटलुं माहरुं काम करीने तमें निश्चिंत थाउ. पडी म्हारी कला जूउ. जे पुत्रीनो पिता इव्यवान् होय, तेने कांइ अडे नहीं. तेथी चंडलेखायें कह्युं तेटलुं काम तेना पितायें इव्यने बलें थोडा दिवसमां तैय्यार करी आप्युं.

पच्चास कन्या जे आणी डे तेहने चंडलेखायें सलंगना मार्गेथी जइ पोताना पिताना घरमांहे गीत, नृत्य, वाद्य, वेणु, वीणा, तालवादन प्रमुख समस्त कला शीखावी. पडी मणिमय जिनप्रासाद कराव्युं डे, तेमां सिंहासन मंमावी इंडाणीनी पेरें चंडलेखा बेसे. अने पचास कन्याउनी पासें रात्रियें नाट्य करावे, राजा बे पहोर रात्रि वखतें मृदंगादिक वाद्यनो शब्द सांजली चमत्कार पामे, अने मनमां विचारे, जे ए नाट्य पातालने विषे! अथवा आकाशने विषे! किंवा पृथ्वीतलने विषे थाय डे! तेनो निश्चय करवा माटें राजा पल्यंक मूकी नीचे बेसी कान देइ सांजले. चंडलेखा पण प्रजातना वाजां वागे के संगीत वीसर्जी पच्चास कन्याउने सलंगने रस्ते पिताने घेर मोकली आपे. अने पोतें पोताना प्रासादने विषे आवी बेसे, वली पण एक दिवसनो आंतरो नाखी तेमज मध्यरात्रिने

समयें संगीत मंमावे. राजा पण तेमज विस्मय पामतो सांनले. अने चंड लेखा पण प्रनातनां वाजा वाग्यां सांनले के नाटकने विसर्जन करी कन्याउने पिताने घेर मोकली पोतें महेलमां आवी बेसे.

राजा ते नाचनी जगा शोधवा माटें घणुंय नमे, पोतें जूवे, जोवरावे, पण नाटकनी जगा क्यांहि मले नहीं. एकदा राजा, राजसनायें आवी बेठा, तेवारें सर्वेने पूब्युं के रात्रें संगीत क्यां थाय ठे? पण कोइ जवाब आपे नहीं. एम ते राजा नाटकना स्थलनी शोध माटे कष्टें दिवस अतिक्रमतो, क्यारें ए स्थानक देखशुं! एवे ध्यानें रहे ठे.

चंडलेखायें राजानो मनोगत नाव जाणी एक कन्याने योगणीना वेषनो आंमबर करावी संकेत करी शीखवीनें राजानी समीपें मोकली. ते योगणीने वेशें राजसनायें आवी. राजायें मान देइ आसन आपी बेसाडी. ते पण राजाने आशीष आपी बेठी. राजायें पूब्युं हे स्वामिनि! तमारा मांहे शी शी शक्ति ठे? योगणीयें कह्युं तमारे शक्ति पूठीने शुं करवानुं ठे? जे काम होय, ते कहो, तो करी आपीयें. एवुं तेनुं वचन सांनली राजा तेने पोताने घेर तेडी लइ गयो. नलां नोजन करावी, नलां वस्त्रें करी संतोषी. वली रात्रिने समयें संगीत सांनली राजायें कह्युं ए संगीत क्यां थाय ठे? ते मुजने देखाडो. योगणीयें कह्युं ए देवतानां नाटक एवी रीतें देखाडाय नहीं माटें जो तमने जोवानी इछा होय, तो तमारी आंखे त्रण पाटा बांधी पठी देव शरीर तमने आपीने तिहां तेडी जइशुं. राजायें ते वात पण अंगीकार करी. प्रनात समयें योगणीयें मंमल मंमाव्युं, मंत्रजाप करवा लागी. 'ॐफुट्फुट्स्वाहा' एवो जाप करती रात्रिने समयें लोकोनी आव जाव बंध थया पठी राजानी आंखें त्रण पाटा बांधीनें चंडलेखाने घेर तेडी गइ. तिहांथी चंदनश्रेष्ठीने घेर लइ गइ, तिहांथी द्वारनिवासिनी देवीने घरे लइ गइ, पठी सलंग नवनना द्वारने विषे एकांतें राखीने आंखना पाटा ठोड्या, तेवारें राजायें पाताल नुवन दीठुं ते जाणे साक्षात् देवनुवनज होय नहिं? तेनी मध्यमां रत्नमय सिंहासने बेठी चंडलेखा दीठी, राजायें जाण्युं ए कोइक महर्द्धिक देवनी देवांगना ठे.

पठी राजाने देखी पच्चास कन्यायें न्हाना प्रकारनुं संगीत मांमयुं, ते जोइ राजायें विचार्युं, जे मने जे लोचन मल्यां ठे, तेनुं फल हुं आजे पा

म्यो. जेमाटें में साक्षात् देवांगनाउने म्हारी नजरें दीठी. तथा देव नाटक पण साक्षात् दीठुं. पछी एक प्रहर लगण नाटक करी तत्काल विसर्ज्यु.

एवामां एक दासी कहेवा आवी के हे स्वामिनि ! रसवती नीपनी छे, माटें जमवा पधारो. तेवारें ते जमवा उठी. भोजनशालायें गइ. तिहां थाली वाटका प्रमुख सर्व सुवर्णना आणी मूक्या. राजा एक खूणे उनो जूवे छे, तो जे जे वस्तु देखे, ते सर्व मणिमय सुवर्णमय देखे, ते देखीने आश्चर्य पामे. चंद्रलेखा, दासीयोना यूथ सार्थे जमवा बेठी. योगणी पण पासें जइ बेठी. तिहां विविध प्रकारना मेवा, सुखडी, शाल, दाल सालणा प्रमुख जे जे राजा देखे छे, ते ते सर्व अपूर्वगंध अपूर्व रसमय देखे छे.

हवे योगणीयें पूछ्युं के स्वामिनि ! तमें कोण छो ? आ पृथ्वीतल केम पवित्र कर्युं छे ? ते कृपा करी अमोने कहो. एवुं पूछवाथी स्त्री मायास्वभाव केलवी अश्रुपात करी बोली के हे योगणी ! हे स्वामिनी ! म्हारुं वृत्तांत सांभलो. हुं धरणींद्रनी पटराणी धरणींद्रने परमवल्लभ छुं अने आ म्हारी दासीयो ते वीणावादमां अत्यंत कुशल एमनी बराबर वीणा कोइ पण वजाडी शके नहीं. ए मुजने अत्यंत वल्लभ छे, ते दासीयो म्हारा स्वामी धरणींद्रें म्हारी पासेंथी मागी, में कह्युं हुं नहीं आपुं. जो ए तमने आपुं, तो म्हारा नाटकनो भंग थाय, तेवारें नागराजायें कह्युं, तमें नहीं आपशो, तो हुं जोरावरीथी लइ मूकीश. एवुं वचन म्हारा स्वामीनुं सांभली हुं तिहांथी रीसाइ आवीने इहां रत्नमय भुवन करी रहेली छुं. हवे तुमने कहुं छुं के जे रीतें नागराजा म्हारुं आ रहेवानुं स्थानक न जाणे, तेवी रीतें तमें मंत्रनी शक्ति फोरवजो. एवुं कही वली पण चंद्रलेखा योगणी प्रत्यें कहेवा लागी, के घणे कालें तमें मुजने मल्या छो, माटें आपणे एक थालमां भेगां जमवा बेसशुं, एम कही बेहु जणी एकज थालमां जमवा बेठी.

तेवारें चंद्रवतीनी संज्ञायें पहेली योगणी बोली हा, हा, हुं एक परोणो सार्थे तेडी आवी छुं, ते वीसरी गयो. चंद्रलेखायें कह्युं कोण परोणो छे ? योगणी कहे, दुर्ललितराजा छे, तेवारें चंद्रलेखा नाक मरोडी कहेवा लागी के अरे रे औदारिक शरीरवालो मलमूत्रनो आगर, अपवित्रतानो सागर, एवो मनुष्य ते वली इहां केम आव्यो छे ? योगणी कहे हे स्वामिनि ! तमें नाक शा वास्ते मरडो छो ? में मंत्रशक्तियें करी तेनुं दिव्य शरीर क

खुं छे. तेमाटे महारा वचनथी एने एकज थालमांहे जमाडो. ए देवतानी रसवती एणे चाखी नथी, जेथी ए पण जमीने पछी मनुष्यलोकमांहे वा तो करशे? एम कही योगणीयें राजाने तेड्यो, तिहां ते राजा एवी रस वतीने पण कृतार्थपणुं मानतो जमतो हवो. जम्या नंतर छेहेडे गंगोदकें चलु कराव्यो, पंच सौगंधिक अपूर्व तंबोल आप्यां.

पछी योगणीयें कह्युं हे राजन्! उठो आ घरनी सर्व शोभा जूवो, राजा पण ठाम ठाम दासीयो साथें हसतो थको जोवा लाग्यो. जोइ जो इने हर्ष पामतो हवो. पछी योगणीने राजायें कह्युं, तहारा प्रतापथी महारी सघली वांछा पूर्ण थइ. हवे ए देवांगना साथें जो रमवानो अव सर आपो, तो हुं कृतार्थ थाउं. योगणीयें कह्युं ए वात कहेशो मां. कारण के जो मनुष्यनी साथें रमी छे, एवी वात धरणींद्र जाणे, तो एनो त्याग करी मूके, तथापि महारी पासें मंत्रबल छे, तेणें करी तमारी इच्छा पूर्ण करीश. पण एक वात तमोने कबूल करवी पडशे, के आ जन्मपर्यंत एनुं वचन माथे चडावी रहेवुं पडशे. राजायें कह्युं जेम तमें कहेशो, तेम हुं करीश. तेवारें योगणीयें चंद्रलेखाने कह्युं ए राजा ताहरो आज्ञाकारक छे, माटे एनुं मनोवांछित पूर्ण कर. वली हमणां ए घणी रात्रिनो जागेलो छे, माटे तहारा भुवननी मेडीयें सुखशय्यायें सूवाडीने देवशय्यानुं सुख पामवा दे. चंद्रलेखायें हा कही. तेवारें एक दासी बोली उपर पल्यंक न थी,माटे जो सूवो तो उपर पल्यंक लइ जाउ. ते सांभली राजा हर्ष पाम्यो थको योगणीना वचनथकी पल्यंकने पोताना मस्तकें उपाडी उपर लइ ग यो. तिहां पल्यंक अने तलाइ सर्व दासीनी पेरें पोतें पोतानें हाथे पाथरी. पछी चंद्रलेखा नाना प्रकारना संभोगरसें करी राजानुं चित्तरंजन करती हवी.

पछी राजा बीजी पोतानी स्त्रीयोने रासभी जेवी गणीने तेमने पडती मू की अने प्रतिदिवस ते योगणीनी साथें आवी चंद्रलेखानी संघातें कामभोग मां प्रवर्त्ते. अने पल्यंक पण उपर लइ पाथरें. पछी योगणीयें कह्युं अरे चंद्र लेखा! तहारो पति तहारो दास थयो अने तहारी प्रतिज्ञा पूर्ण थइ. चंद्रले खायें पण पोतानी प्रतिज्ञा पूर्ण थइ जाणीने शोलश्रृंगार सजी हसती हसती अंतःपुरमां आवी राजाने कहेवा लागी,के स्वामी! में तो तमोने डह्व्या हता माटें मुझने तमें त्यागी दीधी, पण आ बीजी अंतःपुरीयें श्यो अपराध की

धो छे, जेमाटे एमने त्यागी दीधी छे ? अथवा देवांगनाना विलासमां अमा रा जेवीना साहामुं तमे किहां जोशो ? ते वचन सांभली राजा चमक्यो अने चंद्रलेखानी साहामुं जोइ जोइने उलखी लीधी, तेवारें कह्युं के ए सर्व तहारां चरित्र जणाय छे. एवुं कहेतांज चंद्रलेखा आवीने राजाने पगे लागी, अने कह्युं स्वामी योगणीने वचने में आपनो अपराध कीधो, ते क्षमा करजो. राजायें चंद्रलेखानुं बुद्धिविज्ञान देखीने पटराणी करी थापी. पछी राजाने पाताल भुवनें सर्व अंतःपुरनी साथें रमतां थकां हजारो वर्ष व्यतिक्रम्यां.

एकदा उद्याननें विषे अभयंकर सूरि समोसख्या. उद्यानपालकें वधामणी दीधी तेमने यथायोग्य दान देइने सर्व सज्जाइ करी चंद्रलेखाने साथें तेडी राजा, वांदवा गयो. वांदीने योग्यस्थानकें बेठो. आचार्यें धर्मदेशना दीधी. नानाप्रकारनी धर्मदेशनाने अधिकारें गुरु, चंद्रलेखाप्रत्यें कहेता हवा, के हे चंद्रलेखा ! तुं कां प्रतिबोध पामती नथी ? आपणा पूर्वभवें समकेतनां फल पाम्यां जाणी शामाटें प्रमाद करे छे ? पूर्वें सूडीने भवें श्रीशत्रुंजयतीर्थें श्रीऋषभदेवने आराधी दुर्ललितराजानी उपर कोप धरीने. समकेतना वशथी चंदनसारश्रेष्ठिनी तुं सर्वकलानिधान पुत्री थइ. अने वली इहां धर्म पण पामी छो, तो हवे प्रमाद शा माटें करे छे ? एवुं गुरुनुं वचन सांभली चंद्रलेखायें श्रावकनां बार व्रत उच्चस्यां. तथा राजा प्रमुख लोक पण सर्व यथाशक्तियें समकेतादिक व्रत उच्चरी पोत पोताने घेर गयां.

एकदा चंद्रलेखा पर्वतिथियें व्रत पालवाने अर्थें पोताने घेर पोषधशालायें पोषध लइ करीने निश्चल मेरुनी परें अकंप थइ काउस्सग्ग करी रही छे. एवामां एक मिथ्यादृष्टि देवी अने बीजी सम्यग्दृष्टि देवी छे तेमने परस्पर प्रीति छे, तेमां सम्यग्दृष्टि देवीयें श्रीजिनधर्मनी प्रशंसा करी अने जिनधर्मना पालनारा साधुउनी दृढतातो अत्यंत श्रेय छे, परंतु श्रावक श्राविकामां पण धैर्यता संबंधी वखाण करतां वर्त्तमानकालें चंद्रलेखानी धीरज वखाणी ते सांभली मिथ्यादृष्टि देवी चंद्रलेखा पासें आवी. राक्षसनुं रूप विकूर्वी, जाणे पाहाडने फाडी नाखशे, एवा महोटा छरा हाथमांहे लइ महोटे सादें बोलती हवी के आ तहारा पौषध काउस्सग्ग प्रमुख मूकी चरवला मुहपत्तिने नाखी दइने आ अमारा पगनी पूजा कर, नहींकां तुजने एकज कवलें आखीने आखी महारा मुखमांहे उतारीश. एवी

राक्सीनी वाणी सांजली चंड्लेखा लेशमात्र पण काउस्सग्गथकी चला यमान थइ नहीं. तेवारें महोटा हाथीयोनां रूप लइने चंड्लेखाने बीहीव रावा माटे घणा उपसर्ग्ग कस्या. पबी सिंहनां,सर्प्पनां, विकराल रूप करी बीहीरावी तो पण अचल रही. पबी डुर्ललितराजाने चोटलीयें पकडी चंड् लेखा आगल आणीने कहेवा लागी के आ तहारुं कपट मूकी दे. नहीं तर आ तहारा धणीने मारी नाखीश. एम कही राजाने चाबके मारवा मांन्यो. राजा बुंबारव करी बोल्यो,अरे मनें मूकाव,मूकाव; ए मुऊने मारे बे. ते सांजली चंड्लेखायें विचास्युं के धर्म करतां थकां जे होनार हो, ते नलें हो. जेमाटे धर्म करतां मातुं थायज नहीं.

ए रीतें जेम जेम क्षोनावे, तेम तेम चंड्लेखानुं मन निश्चल थातुं जाय. एम शुनध्यानें चडती क्षपकश्रेणि आरोहि केवलज्ञान पामी तेवारें ढूकडा रहेला सम्यग्दृष्टि देवतायें साधुनो वेश आणी आप्यो. चंड्लेखायें पण चार मुष्टि लोच करी वेश परिधान कीधुं, देवतायें सुवर्णकमल रच्युं तेनी उपर बेसी धर्मदेशना देवा लागी. ते उपसर्ग्ग करनारी मिथ्यादृष्टि व्यंतर देवीयें आवीने अपराध खमाव्यो. चंड्लेखायें, डुर्ललित राजा प्रमुखने प्रतिबोध देइ घणा काल पर्यंत विहार करी नव्यलोकोने तारी श्रीशत्रुंजयपर्वतें मोक्ष कमला वरी. ए ब नावनाने विषे चंड्लेखानी कथा कही.

इति महोपाध्याय श्रीशांतिचंड्गणिशिष्योपाध्याय श्रीरत्नचंड्गणिविरचितें श्रीसम्यक्त्वरत्नप्रकाशनामनि सम्यक्त्वसप्ततिकाबालावबोधे सम्यक्त्व षड्नावना स्वरूप निरूपणनामा एकादशोऽधिकारः संपूर्णः ॥ ११ ॥

हवे समकेतनां ब स्थानकनुं बारमो अधिकार कहीयें बैयें.

॥ अत्थि जिउ तह निच्चो, कत्ता नुत्ता य पुस्म पावाणं॥ अत्थि धुव निव्वाणं, तस्सोवाय उबठाणा ॥ ५ए ॥ अर्थः-(अत्थिजिउ के) जीवड्व्य अत्थि एटले बे, एथी नास्तिक वाद उबाप्यो, ए प्रथम लक्षण बे (तह के०) तथा जीव जे बे ते ड्व्यनी अपेक्षायें (निच्चो के०) नित्य शाश्वतो बे. ए बीजुं लक्षण तथा (कत्ता के०) जीव कर्त्ता बे, एटले ज्ञानावरणीयादिक आठे कर्मनो कर्त्ता बे, तेमां सात कर्मनो निरंतर समयसमयें बंधक बे, अने कदाचित् कोइक समयें आठे कर्मनो बंधक बे, ए त्रीजुं लक्षण. तथा (य के०) वली (नुत्ता के०) जीव नोक्ता बे, शेनो नोक्ता बे?

तो के (पुसुपावाणं के०) पुण्य अने पापनो नोक्ता ठे, तिहां शुनकर्म नो बंधक जीव पुण्यनो नोक्ता ठे, अने अशुनकर्मनो बंधक जीव पापनो नोक्ता ठे, ए चोथुं लक्षण. तथा (अत्थिधुवनिव्वाणं के०) ध्रुव एटले निश्चें निर्वाण जे सकलकर्मक्षयरूप मोक्ष ते अत्थि एटले ठे, ए पांचमुं लक्षण. तथा (तस्सोवायउ के०) ते मोक्षनो ज्ञान दर्शन चारित्रादिक उपाय ठे, ए ठठुं लक्षण ए (ठठाणा के०) ठ स्थानक कहीयें ॥ ५ए ॥

ए ठ स्थानकना जाणवाथकी तथा सर्द्दहवाथकी जाणीयें जे एनी पासें सम्यक्त्व ठे, पण जेने ए लक्षणनुं श्रद्धान न होय, तेनी पासें समकेत न कहेवाय. जे माटें ज्ञान तो मिथ्यादृष्टि पाखंमी पासें पण पामीयें केम के किंचिदून दश पूर्वनो जणनार तो मिथ्यादृष्टि पण कह्यो ठे. तेना किंचिदून दश पूर्व ते पण मिथ्याश्रुत कहीयें. मिथ्यादृष्टियें ग्रहण कखुं माटें जेटलुं मिथ्यादृष्टियें परिग्रहीत पूर्वश्रुत,ते सर्व मिथ्याश्रुत कहीयें. कारण के मिथ्यादृष्टि जेटलुं श्रुत जणे,ते सर्व विपरीत पणे सर्द्दहे. अने विपरीत पणे वखाणे. अने सम्यग्दृष्टिपरिग्रहीत मिथ्याश्रुत होय ते पण सम्यग्श्रुत थाय ॥ यतः ॥ व्याकरण ठंदोलंकृति, नाटक काव्यतर्क गणितादि ॥ सम्यग्दृष्टि परिग्रह, पूतं जयति श्रुतज्ञानम् ॥ १ ॥ इति सिद्धांतस्तोत्रे.

हवे ए ठ लक्षणनुं स्वरूप कहे ठे.

॥ आया अणुनवसिद्धो,गमई तह चित्तचेयणाईहिं ॥ जीवो अत्थि अवस्सं, पच्चरको नाण दिठीणं ॥ ६० ॥ अर्थः–(आया के०) आत्मा (अणुनवसिद्धो के०) अनुनव सिद्ध ठे, प्रत्यक्षपणे सिद्ध ठे (तह के०) तेम (गमई के०) गमति ते अनुमानें पण जाणीयें ठैयें. ते शी रीतें जाणीयें ठैयें ? तो के (चित्तचेयणाइहिं के०) चित्त एटले ज्ञानगुणे करी जाणीयें ठैयें, तथा चेयणाइ एटले चेतना चैतन्य तेणे करी जाणी ठैयें, आदि शब्दथकी सुख, डुःख,इहा,नय इत्यादिक जे आत्मगुण ते लेवा. सुखडुःखादिकनो वेत्ता आत्मा होय, पण अचेतन स्तंनादिक जे ठे ते सुख डुःखना वेत्ता न होय. एटला माटे (जीवो अत्थि अवस्सं के०) जीव अवश्य निश्चय ठे, (पच्चरकोनाणदिठीणं के०) ज्ञानदृष्टिने प्रत्यक्ष ठे, जेहवो आत्मा लोकाकाश प्रदेश प्रमाण असंख्यात आत्मप्रदेशवंत ठे. तेहवो, ज्ञानदृष्टियें देखे ठे. ए प्रथम स्थानकनुं स्वरूप कह्युं ॥ ६० ॥

हवें बीजा स्थानकनुं स्वरूप कहे छे.

॥ दव्वठ्ठायनिच्चो, उप्पायविणास वज्जिउ जेण ॥ पुव्वकयाणुसरणाउ, पज्जाया तस्स उ अणिच्चा ॥ ६१ ॥ अर्थः–(दव्वठ्ठायनिच्चो के०) द्रव्यार्थनयने मतें विचारतां आत्मा नित्य छे, जे कारण माटें (उप्पायविणासवज्जिउजेण के०) उत्पाद ते उपजवुं अने विणास जे विणसवुं तेणें करीने वर्जित छे रहित छे, जे कारण माटे जो घट अनित्य छे, तो तेनी उत्पत्ति पण छे,तथा विनाश पण छे अने आत्मानी उत्पत्ति पण नथी अने विनाश पण नथी परंतु आकाशनी परें नित्य छे, (पुव्वकयाणुसरणाउ के०) पूर्वकृत कर्मना अनुस्मरणथकी (पज्जाया तस्स उ अणिच्चा के०) ते आत्माना पर्याय ते वली अनित्य छे जेमाटे पर्यायार्थिक नयें विचारतां आत्मा अनित्य छे जेम पूर्वभवने विषे हुं श्रावक हतो, में प्रतिष्ठा करावी हती,प्रतिमा भरावी हती. प्रासाद कराव्युं,इत्यादिक जे पूर्वें करेलां कृत्य तेना अनुस्मरणथकी एटले सांभरवा थकी आत्माना पर्याय जे मनुष्यत्व, तिर्यंचत्व, देवत्व, नरकत्व इत्यादिक छे ते अनित्य छे, एवा अनेक पर्याय उपजे विणसे छे. तेमाटे आत्मा, पर्याय आश्रयी अनित्य छे. अने आत्मा मूल द्रव्यें नित्य छे. ए बीजुं स्थानक कह्युं ॥ ६१ ॥

हवे त्रीजुं स्थानक कहे छे.

॥ कत्ता सुहासुहाणं, कम्माण कसाय जोग माईहिं ॥ मिउ दंम चक्क चीवर, सामग्गिवसा कुलालु व ॥६२॥ अर्थः–ए आत्मा (सुहासुहाणं कम्माण के०) शुभाशुभकर्मनो (कत्ता के०) कर्त्ता छे एटले करणशील छे, जेमाटें रूडी सामग्री पामीने शुभकर्म करे छे, अने भूंमी सामग्री पामीने अशुभकर्म करे छे. ते शेणे करी करे छे? तो के.(कसायजोगमाइहिं के०) कषाय योगादिकें करीने एटले अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यानी प्रत्याख्यानी अने संज्वलन, ए चार चार भेदें क्रोध, मान, माया अने लोभना मली शोल भेद तथा सत्यमनोयोगादिक पन्नर प्रकारना योग, एवं एकत्रीश तथा आदिशब्दथकी हास्यादिक नव नोकषाय, आभिग्रहिकादिक पांच प्रकारनुं मिथ्यात्व तथा पांच इंद्रिय अने छठा मननो अनिग्रह तथा पृथ्वीकायवध, अप्कायवध, तेउकायवध, वायुकायवध, वनस्पतिकायवध, त्रसकायवध, एवं सत्तावन्न हेतुयें करी जीव,कर्मनो बंध करे छे. तिहां दृष्टांत क

दे बे:-(मित्त के०) माटी (दंम के०) दंम (चक्क के०) चक्र अने (चीवर के०) चीवर लुगडुं इत्यादिकनी (सामग्गिवसा के०) सामग्रीना वश थकी (कुलालुव के०) कुलालवत् एटले कुंजारनी परें अर्थात् जेम कुंजार जे बे, ते माटी, दंम चक्र अने चीवर प्रमुखनी सामग्री पामीने घट करे बे, तेम जीव कषायादिकनी सामग्री पामीने कर्मबंध करे बे,ए त्रीजुं स्थानक कह्युं.

हवे चोथुं स्थानक कहे बे.

॥ ज़ुञ्जइ सयं कयाइं, परकय जोगे अइप्पसंगो उ ॥ अकयस्स नत्थि जोगो, अन्नह मुरकेवि सो कज्ज ॥ ६३ ॥ अर्थः-(सयंकयाइं के०) स्वकृतकर्मप्रत्यें (ज़ुञ्जइ के०) जोगवे ॥ यतः ॥ नाजुक्तं क्षीयते कर्म, कल्पकोटिशतैरपि ॥ अवश्यमेव जोक्तव्यं, कृतं कर्म शुजाशुजम् ॥ १ ॥ अने (परकयजोगे के०) परकृतकर्मनो जोग मानीयें तो (अइप्पसंगो के०) अतिप्रसंग दोष आवे तथा तुकार निश्चयनयार्थें बे जो जीवने अन्यकृत कर्मनुं जोगववुं मानीयें, तो देवदत्तना जमवाथकी यज्ञदत्तने पण तृप्ति थावी जोइयें, पण एम तो देखातुं तथी जे जमे बे, तेनेज तृप्ति थती देखाय बे, पण अन्यने तृप्ति थती नथी माटें परकृतकर्म जोगवे नहीं. स्वयंकृत कर्मज जोगवे ॥ यतः ॥ जीवेणं जंते अत्तकडे डुरक परकडे डुरके इति अकयस्सत्ति माटे (अकयस्सनत्थि जोगो के०) अकृत कर्मनो जोग नथी(अन्नह के०) अन्यथा जो अकृतकर्मनो जोग मानीयें तो (मुरकेवि के०) मोक्षने विषे पण (सो कज्ज के०) ते कर्मनो जोग होय. उडता रोगनी परें जो कर्म पण उडीने वलगी जाय,त्यारे तो सिद्धना जीवने पण कर्म लागी जाय ! तेमाटें स्वयंकृत कर्मज आत्मा जोगवे. ए चोथुं स्थानक कह्युं ॥ ६३ ॥

हवे पांचमुं स्थानक मोक्ष बे तेनुं स्वरूप कहे बे.

॥ निवाण मरकय पयं, निरुवम सुहसंगयं सिवं अरुयं॥ जियराग दोस मोहे, हिं जासियंता धुवं अत्थि ॥ ६४ ॥ अर्थः-(निवाणं के०) निर्वाण एवुं (अरकयपयं के०) अक्षयपद बे, शाश्वतुं स्थानक बे, ते एक सिद्धनी अपेक्षायें सादि अनंत बे अने सर्वसिद्धनी अपेक्षायें अनादि अनंत बे. सिद्धने पतनना अजावथकी पाबो अवतार लेवो नथी माटे अक्षय बे वली कहेवुं बे ? तो के (निरुवमसुहसंगयं के०) निरुपम सुखसंगत बे, ते डुःखवर्जित नथी, तेमाटे निरुपम सुखसंगत कह्युं. तथा (सिवं

के०) निरुपद्रव छे, एटले उपद्रव रहित छे. केम के तिहां सात भय मांहेलो एके भय नथी, तथा बावीश परिसह मांहेलो एके परिसह नथी, तेमाटे शिव कह्युं उपद्रवरहित कह्युं तथा (अरुयं के०) अरुज छे एटले रोगरहित छे जेमाटे रोग तो शरीराश्रित छे तिहां मोक्षमां शरीरना अभावथी रोगरहित पणुं छे, तेमाटे अरुज कह्युं. हवे ते मोक्ष केवी रीतें जाणीयें ? ते कहे छेः-(जिय राग दोस मोहेहिं के०) जीत्या छे राग द्वेष अने मोह जेणें एवा आप्त पुरुषोयें (भासियंता के०) भाषित कथित छे पण धूतारवाने अर्थें नथी कह्युं. जितरागदोषमोह एवा जे जिन, तेणें कह्युं छे. (ता के०) तेमाटे (धुवं के०) निश्चें (अत्थि के०) छे. जे श्रीवीतराग देवें कह्युं ते छतुंज छे, एमज जाणवुं. ए पांचमुं स्थानक कह्युं ॥ ६४ ॥

हवे छठुं स्थानक, ते मोक्ष साधवानो उपाय कहे छे.

॥ सम्मत्त नाण चरणा, संपुस्रो मोरक साहणोवाउ ॥ ता इह जत्तो जुत्तो, स सत्तिउ नाण तत्ताणं ॥ ६५ ॥ अर्थः-(सम्मत्त के०) सम्यक्त्व जे औपशम, क्षयोपशम क्षायिकादिक आत्मानो शुभपरिणाम तथा (नाण के०) ज्ञान विशेष जे मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान अने केवलज्ञान तथा (चरणा के०) चारित्र जे सामायिक छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय अने यथाख्यात ए त्रण वानां तेणें करी (संपुस्रो के०) संपूर्ण पूरे पूरो छे. (मोरकसाहणोवाउ के०) मोक्ष साधवानो उपाय (ता के०) ते कारण माटे (इह के०) ए उपायने विषे एटले मोक्षरूप कार्यनुं जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप उपाय छे तेने विषे (जत्तो के०) यत्न करवो ते (जुत्तो के०) युक्त छे (ससत्तिउ के०) स्वशक्तिथकी पण, कोने ? तो के (नाणतत्ताणं के०) जेणे ज्ञाने करी तत्त्व जाण्युं छे, तेहने एटले जेणे श्रीजिनवचननां रहस्य जाण्यां छे, तेनें ए उपायने विषे स्वशक्तिथकी यत्न करवो युक्त छे,ए छठुं स्थानक कह्युं ॥६५॥

हवे ए छ स्थानकने विषे नरसुंदर राजानो संबंध कहीयें छैयें. एहीज भरतक्षेत्रने विषे कांची नामें नगरमां नरसुंदर नामें राजा राज्य करे छे ते राजा नास्तिक वादी छे. जीवादिक पदार्थ मानतो नथी, देवगुरुनो द्वेषी छे,तेने सुरसुंदरी नामें अग्रमहिषी छे, अने सुमति नामें प्रधान छे.

हवे चंद्रपुरनगरने विषे चंद्रसेन नामें सामंत छे, तेने मंत्रतंत्रादिकनो

जाण एवो एक योगी मित्र छे, ते चंद्रसेन सामंत नरसुंदर राजानी सेवा थकी उद्वेग पाम्यो थको योगीने कहेवा लाग्यो के तुं मह्हारो मित्र छो माटें मह्हारुं एक काम कर. योगीयें कह्युं शुं काम छे ?.ते मने कहे. चंद्रसेनें कह्युं नरसुंदरराजानी चाकरीमां मने कांहिं पण सुख नथी. माटे ए राजाने मारी नाखीयें, तो हुं सुखसमाधिमां रहुं ! ते वात पहेला दुष्टात्मा योगीयें अंगी कार करी. पछी ते योगी कांचीनगरीयें आव्यो, अने मंत्रतंत्रादिक विद्यायें करी लोकोमांहे प्रसिद्धि पाम्यो. राजायें तेनी कलासंबंधी तारिफ सांजली तेडावीने पूछ्युं, तमें कया देशथकी आव्या छो ? योगीयें कह्युं आप योगी योना नक्त छो. एवुं सांजली हुं श्रीपर्वतथकी तमारुं दर्शन करवा आव्यो छुं.

राजायें पूछ्युं तमारी पासें कइ कइ विद्याउ छे ? तेवारें योगी बोल्यो हुं रात्रिने दिवस करी देखाडुं अने दिवसने रात्रि करी देखाडुं. धरतीने आका श करुं, आकाशने धरती करुं, समुद्रनें एक चुलुकें आचमन करुं इत्यादि विद्याउ छे, माटे तह्हारे जे काम होय ते कहे, तो हुं करी आपुं. तेवारें योगीने प्रधानें कह्युं एटला मह्होटा आडंबर अमारे करावना नथी पण मह्हारी स्त्री प्रणयकलह थकी रीसाईने ग्रामांतरें गइ छे, तेने इहां वेगं आणी आप, तो ए सर्व तह्हारुं बोलवुं साचुं करी मानीयें. ते सांजलीने योगीयें मंडल मांड्युं, मंत्र साध्यो, आकर्षण मंत्रें करी लोटथी खरडेला हाथे रोटला करती एवी थ कीज मंत्रीश्वरनी स्त्री आणी. मंत्री हर्ष पाम्यो थको नाचवा लाग्यो, राजाने ते योगीनी उपर आस्ता आवी. तेवारें राजायें एकांतें तेडीने योगीने पूछ्युं हे स्वामी ! कालवंचना थाय के न थाय ! एटले आयु पूरण थये मरण प्राप्त थाय छे, ते न थाय, एवो कोइ उपाय छे, के नथी ? योगीयें कह्युं जे थकी कालने वंची घणुं जीवीयें मरीयें नहीं, एवो उपाय छे. पण जो तुं मह्हारी दीक्षा लइ मह्हारो चेलो था, तो ते उपाय चाले नहीं कां चाले नहीं. ते सांजली राजायें प्रधाननें राज्य जलावी पोतें योगी पासे दीक्षा लीधी.

योगीयें कह्युं नासिकाथकी बार आंगुल पवन बाहिर निकले अने दश आंगुलमांहे पेसे, तेथी जे विपरीत करे, ते मरणने वंचे. इत्यादिक कही योगीयें राजाने जूमिमांहे घाल्यो. पछी हिंसादिक पापमांहे बोल्यो, एम नि त्यप्रत्यें करावतां एकदा राजाने विषमविष आपीने योगी नाशी गयो, वि ष चड्या पछी राजा अचेतन थइ पड्यो. समस्त परिवार रोवा लाग्यो, प्र

धानें योगीने पकडवा माणस मोकल्यां. योगी कागडानी पेरें नाशी गयो, मल्यो नहीं. घणा मंत्रवादी तेड्या, पण कोइनो उपाय लाग्यो नहीं. जे वारें पूर्ण विष व्यापी गयुं, तेवारें मरी गयो जाणी हाथणी उपर चडावी आमंबर सहित स्मशाने लइ गया, अगरुचंदननी चिता करीने जेह्वो रा जाने चितामांहे मूकवा लाग्या, तेह्वोज राजा आंख उघाडी जोवा ला ग्यो. अने बोल्यो के आ मुजने शुं करो छो ? तेवारें प्रधानें कह्युं महापात की योगी तमोने विष देइ नाशि गयो पण हाथमां न आव्यो, मंत्रवादी तेड्या तेणें पण हाथ खंखेख्या, तेमाटें तमने मृत जाणीने इहां आण्या, तें सांनली राजायें कह्युं हुं केम निर्विष थयो ? प्रधानें कह्युं ते कारण तो कांइ समजातुं नथी पण में एवुं सांनल्युं छे जे कोइएक उग्रतपस्वी लब्धि वंत साधु थाय छे, तेना शरीरनो जो कोइने पवन लागे तो पण तेनुं विष जतुं रहे. ने निर्विष थइ जाय,तेवा कोइ साधु आव्या होय, तो हुं कही शकतो नथी.

राजायें तेनी खबर करवा माणस मोकल्यां के जाउ कोइ तपस्वी लब्धि पात्र साधु आव्यो छे ? ते जोइ आवो. माणस पण जोइ आवी राजाने कहेवा लाग्या के हे स्वामिन् ! तमारा पुष्पाकर उद्याननें विषे चंद्रप्रनाचार्य समवसख्या छे, राजा कहे साची वात छे, एने प्रसादें महारुं विष उतरी गयुं, तेमाटें ए साधुने जइ वांदीयें. एम विचारी राजा तथा मंत्री प्रमुख सर्व लोक आचार्यने वांदवा आव्यां. राजा वांदी हाथ जोडी बेठो,आचार्यें धर्मोपदेश दीधो. अवसर जाणी जीवास्तिवादनी प्ररूपणा करी तेवारें राजा यें नास्तिकवाद स्थाप्यो,अने कह्युं के जीव नथी,जो जीव होय तो घटपटा दिकनी परें देखाय ते देखातो नथी, माटें आकाशपुष्पनी परें जीव नथी.

गुरुयें कह्युं तें नजरें दीठो नथी,माटे कहे छे के जीव नथी तो तहारी स मज प्रमाणें मेरु महिधरादिक पर्वत पण नथी, तेम तहारा पूर्वज पण न थी. केम के ते पण तें दीठा नथी, परंतु तहारा पूर्वज नहीं,तो तहारी उ त्पत्ति पण न जोइयें, माटें तहारा पूर्वज तो अनुनवसिद्ध थाय छे, तेम सु ख दुःखादिक जे आत्माना गुण छे,ते पण प्रत्यक्ष देखाय छे. सुख दुःखादि क आत्मा अनुनवे छे. जे सुखदुःखादिकनो कोइक धणी छे,ते आत्माज छे.

राजायें कह्युं ए सत्य वात थइ, पण जीव पापें करी नरकें जाय अने पुण्यें करी स्वर्गें जाय, ए वात मलती नथी, जे माटे महारा पितायें घणां

पाप कर्यां छे, माटे तमारे मतें नरकें गयो हशे तो तें इहां आवीने मुऊ ने पापथकी शामाटें निवारतो नथी ?

गुरु बोल्या सांजल. हे राजन् ! कोइक चोर चोरी करतां पकडायो होय, तेने हाथे पगें गलायें ऊकडी बांध्यो होय, ते कहे के मुऊने बूटो मूको. हुं म्हारा कुटुंबने मली आवुं ! पण ते चोरने कुटुंबने मलवा माटे कोइ बूटो मूके? राजायें कह्युं न मूके. गुरु बोल्या तेम नारकी जीवने परमाधार्मिक देवोयें वींटी लीधेलो तेणे मारतो छेदातो जेदातो ते केवी रीतें निकल वा पामे ? ए दृष्टांतें तुऊने समाचार आपवा सारु केवी रीतें आवी शके ?

राजायें पूछ्युं म्हारी माता परमश्राविका जीवादिक नवतत्त्वनी श्रद्धा वंत हती, प्रतिक्रमण सामायिक पौषधनी करनारी हती ते तमारे मतें स्व गें जवी जोइयें, तो ते मुऊने प्रतिबोध देवा केम नथी आवती ?

गुरुयें कह्युं सांजल. ते स्वर्गमां विविध प्रकारना कामजोगने विषे आ सक्तथकी तथा वली मनुष्य लोकनो डुर्गंध चारशें तथा पांचशें योजन सु धी उंचो पसरे छे, एवा डुर्गंधमांहे केम आवे ? ॥ यतः ॥ चत्तारि पंच जो यण सयाइं, गंधोअ मणुअ लोगस्स ॥ उढ्ढं वच्चइ जेणं, नहु देवा तेण आ वंति ॥ १ ॥ पंचसु जिणकल्लाणेसु, चेव महरसितवाणु जावाउ ॥ जम्मंतर निहेण य,आगच्छंति सुरा इहयं ॥२॥ माटें जीव छतो छे,एवी सद्दहणा कर.

वली राजायें कह्युं में जीवनी सद्दहणाने अर्थे एक चोरनें पकडी तेना रा इ जेवडा खंम कीधा, पण तेमांथी कांइ जीवनो खंम निकलतो दीठो नहीं. ते माटें जाणुं छुं जे जीव नथी जो जीव हत, तो तेनो खंम पण दीठामां आवत ?

गुरुयें कह्युं कोइक पुरुषें अरणीनुं काष्ठ लइ तेनो लोट करी नाख्यो प ण तेमां अग्नि दीठो नहीं, तेम वली बीजा कोइक पुरुषें अरणीनुं काष्ठ म थन कर्युं, ते मथन करतां अग्नि प्रगट थयो. खंमोखंम करतां, लोट कर तां, अग्नि प्रगट न थयो अने मथन करतां प्रगट थयो, तो ए अग्नि किहां थी निकल्यो ? एवी रीतें रूपी पदार्थ जो सामग्रीविना नथी देखाता तो जीवतो पदार्थ छे, ते केम देखाय ? तेमाटे चैतन्य गुणें करी जीव जाणीयें.

वली राजायें कह्युं में एक चोरने पकडी लोहनी मंजूषामांहे घाल्यो, ते मंजूषाने लाख देइने निश्छिड्ड कीधी. अनुक्रमें जूख तरष वेठी ते चोर मरण

पाम्यो पण तेनो जीव कया रस्ताथी निकली गयो ! एवुं कोइ छिद्र मंजूषा मां दीठुं नहीं, तेवारें में निर्धार कर्यो जे जीव नथी.

गुरुयें कह्युं तेनुं दृष्टांत कहुं छुं, ते सांजल. कोइक शंखवादक महाबल वान् हतो,ते घणो वेगलो रही शंख वजाडे,तो पण सर्व कोइ जाणे जे ए अमारी पासेंज शंख वजाडे छे. एकदा राजा शरीरचिंतायें प्रवृत्त्यो छे, ते वारें वेगलो रही तेणें शंख वजाड्यो, तेथकी राजा क्षोन पाम्यो, राजाने बंधकोष्ट थयो. तेथी बाधा निसरी नहीं. राजायें ते शंखवादकने बंधावी अणाव्यो, अने कह्युं के एने मारी नाखो. तेवारें तेणें विनति करी के स्वा मि ! में दूर रही शंख वजाव्यो छे, तो पण तमें जाण्युं जे महारी पासें र हीने शंख वजाडे छे, तो एमां महारो श्यो वांक छे ? जो महारुं वचन न मानो, तो आप परीक्षा करो. राजायें कह्युं नलें हुं परीक्षा करुं छुं. एम कही राजायें ते शंखवादकने निश्छिद्र कुंनमां घाल्यो कुंनने घणो बूरी ली धो लेशमात्र छिद्र राख्युं नहीं, तिहां रही तेणें शंख फूंक्यो, ते राजा प्रमु ख समस्तलोकें सांनल्यो, तो हवे ते शब्द कुंनमांहेथी कये मार्गें निकल्यो ? छिद्र तो कोइ देखातुं न हतुं,तथा लुहारें लोह घडयुं, ते लोहमांहे अग्नि कया मार्गें पेठो छिद्र तो हतुं नहीं, तेम जीव पण शरीरमांहे पेसतो निकलतो देखाय नहीं, पण बोलावीयें तेवारें हुंकारो करी उठे छे, ते जीव जाणजे.

वली राजा बोल्यो स्वामी ! महारी एक वात सांनलो. में एक चोरने प्रथम तोल्यो, पछी मारी नाख्यो, मार्या नंतर फरी पण तोल्यो, परंतु जीव निकल्या पछी तेमां वजन कमती थयुं नहीं. जो जीव होय, तो जीव जतो रह्यो तेनो नार उंछो थवो जोइयें, तेमाटे जीव नथी. ए वात निःसंदेह छे.

गुरुयें कह्युं एक गोवालीयें एक दडो वायरे नरीने तेने तोल्यो पछी वली वायरो काहाढीने पण तोल्यो, तो पण सरखो उतर्यो तो हवे वायरानो नार क्यां गयो ? ए दृष्टांतें जाणवुं, जे शरीरमांहे जीव पेसे तो शरीर नारी न थाय अने शरीरमांथी जीव निकले, तो हलवुं न थाय. जीव अरूपी द्र व्य छे, तेने चेतनादिक गुणें करी जाणीयें. इत्यादिक अनेक प्रकारनी युक्ति प्रतियुक्ति सांनलीने राजा प्रतिबोध पाम्यो थको गुरुप्रत्यें कहेवा लाग्यो के महाराज ! तमारे प्रसादें करी माहारुं बहु प्रकारें मोहविष गयुं, तो पण महारो नास्तिकवाद कुलक्रमागत आव्यो छे, ते केम मूकाय ?

गुरुयें कह्युं विवेकरूप दीपक पामी अंधकारमांहे कोण पेसे? कोण रहे? सन्मार्ग पामी उन्मार्गे कोण जाय? ॥ यतः ॥ जइ केवि पुव्वपुरिसा, अंधलया अंधकूवए पडिया ॥ ताकिं सच्चरकणं, जडत्ति तव्वं व पडियव्वं ॥ १ ॥ तद्यथा ॥ कोइक चार वाणीया व्यापारें धन उपार्जन करवा माटे चाल्या, अनुक्रमें चालतां चालतां लोहनी, रूपानी, सुवर्णनी अने रत्ननी खाण पामी, लोह नाखी रूपुं लीधुं, रूपुं नाखी सुवर्ण लीधुं, सुवर्ण नाखी रत्न लीधां. घरें आवी नवा घर कराव्यां, पाणिग्रहण कीधां, पुत्र पुत्री प्रमुख कुटुंबनी वृद्धि थइ. घणां धर्मकर्मनां कार्य करी इहलोकें परलोकें सुखी थयां, पण ते चारमांहे एक वाणीयो कदाग्रही हतो तेणें लोह लीधेलुं मूक्युं नहीं. तेने घणाय बीजा त्रण जणे समजाव्यो, तो पण लोहने मूकी रूप्य, सुवर्ण, रत्न लीधां नहीं. घणा योजनसुधी लोहनो भार उपाड्यो पण लोह नाख्युं नहीं. हव लइ रह्यो, ते वाणीयो पापनो प्राणीयो घरे आव्यो, दारिद्र भोगवतां कालने प्राप्त थयो, इह लोकें परलोकें दुःखी थयो. ए दृष्टांतें हे राजन्! तुं पण ते लोहवाणीयानी पेरें पूर्वभवें दुःखी थयो छो तेम आगले भवें दुःखी थाइश.

तेवारें राजायें पूछ्युं में पूर्वभवें शी रीतें दुःख भोगव्यां छे? तेवारें आचार्य राजाप्रत्यें पूर्वभव कहे छे. एहज भरतक्षेत्रें मवगाम नामें गाममां अर्जुन नामें कुलपुत्र रहे छे. तेने सुश्रावक शुभंकर एवे नामें मित्र हतो, एकदा ते गामें एक साधु पधास्या. तेवारें शुभंकर श्रावकें, अर्जुनने कह्युं चालो, साधुने वांदवा जइयें! धर्मश्रवण करीयें! तेने अर्जुनें कह्युं हे मित्र! में एमना आगमनुं रहस्य जाण्युंज छे, ए आगम सर्व लोकोने धूतवाने अर्थें धूर्त्तोयें करेलां छे, लोकने पासमां पाडवाने अर्थें तेनुं नाम सिद्धांत करी थाप्युं छे. एवां वचन बोलवाथी तेणें कुकर्म उपार्ज्युं अनुक्रमें ते अर्जुन मरण पामीने छाग थयो, तेज छागने अर्जुनने पुत्रें अर्जुनना श्राद्धने दिवसें मारीने ब्राह्मणोने आप्यो. तिहांथी मरीने रासभ थयो, ते घणी ताडना तर्जना सहेतो भार वहन करे, ते गलीया रासभने कुंभारे घणो मास्यो ते थकी मरण पामीने गर्त्तासूकर थयो, अशुचि उकरडे लोटतो थको अशुचि भक्षण करतो थको रहे, तेने आहेडीना कूतरायें मारी भक्षण कस्यो, तिहांथी मरी उंट थयो. तिहां पण घणो भार वहन करवे करी तेनी पीठ सडी गइ. तेनी वेदनाथी मरण पामीने गोबर गामने विषे धना नामें वाणीयाने

घेर पुत्र थयो, ते जन्मथी मुंगो बहेरो थयो, तेथी तेनी उपर लोक हांसी करे थके ते मूर्खो क्रोधनें वशथको कूवामां पडी मरण पाम्यो. तिहांथी मरी नंदगामने विषे ठाकोरने घेर दासपुत्र थयो, तेणे एकदा मदिरापान ने उन्मत्तपणे करी ठाकोरने गाल दीधी, ठाकोरें तेनी जीन कपावी तेथी महा पीडायें नूमियें पड्यो, रडवा लाग्यो. एवामां एक साधु चारित्रीयो ज्ञानवंत आव्यो, तेणें आवी कह्युं के हे नद्दे ! तुं शुं रडे बे ? तुं तहारुंज पूर्वे कृत कर्मसंनार. तेणें अर्जुनना नवथकी मांफीने सघला नव कही संनला व्या, ते सांनलवाथी तेने जातिस्मरण ज्ञान उपनुं, तेथी पोतानां करेलां पापने निंदतो साधुयें दीधेलो नमस्कारमंत्र तेने सांनलतो थको काल करीने तुं इहां राजकुमर थयो बो. पूर्वनव अन्यासथी तुऊने नास्तिक मत आव्यो. राजा पोताना पूर्वनव सांनली जातिस्मरणें करी पूर्वनव चरित्र देखी आचार्यप्रत्यें कहेवा लाग्यो के हे स्वामी ! तमें कह्युं ते सर्व सत्य बे, हवे मुऊने जीवादिक नवतत्त्वनी सद्दहणा आवी. जे तमें कह्युं, ते तेमज बे. महारो एटलो काल निरर्थक गयो. हवे प्रसन्न थइ संसार समुद्रथी तारवा माटे मुऊने दीक्षा द्यो, गुरु कहे. जहासुहं देवाणुप्पिया मा पडिबंध करेह.

हवे राजा परम संवेग पाम्यो थको पुत्रने राज्य आपी पोतें आचार्य पासें दीक्षा लेतो हवो. गुरुयें शीखामण दीधी ॥ यतः ॥ जयं जरे जयं चिट्ठे, जयंमासे जयं सए ॥ जयं नुंजंतो फासंतो,पावं कम्मं न बंधइ ॥ १ ॥ इत्यादिक गुरु शिक्षा पामीने निरतिचार चारित्र पालतो हवो. सकलसिद्धांत नणी प्रवचननो पारंगामी थयो. आचार्यें योग्य जाणी आचार्यपद दीधुं. अनेक जीवने प्रतिबोधी पोतानी पाटें शिष्यने थापी पोतें जिनकल्प आदस्यो, “ गामेएगराइयं, नगरे पंचराइयं ” ए रीतें विहार करता हवा, बेहले अवसरें पादपोपगमन अणसण करी सर्वार्थसिद्ध विमाने देवता थयो. तिहां स्वेबायें सुख नोगवी मनुष्यनव पामी चारित्र आराधी मोक्षें जाशे. ए समकेतनां ब स्थानकने विषे नरसुंदर राजानुं चरित्र सांनली दृढ थवुं. ए समकेतना शडशठ बोल सांनली हृदयमां धारी निश्चल समकेत आदरवुं. जेम समकेत मोहनीय कर्मक्षय करी क्षायिकसमकेत आवे.

हवे सकलशास्त्रार्थनुं निगमन वाक्य कहे बे.

॥ इयसत्तसट्ठि पयाइं, उद्धिणि उ विउल आगमारामा ॥ संगहिया इब म

ए, मंदमईणं सरणहेकं ॥ ६६ ॥ अर्थः–(इयसत्तसछिपयाइं के०) इति ते परिसमाप्तिने अर्थें ठे चार सद्दहणा प्रमुख बोर द्वार तेना उत्तर शडशठ पद ते प्रत्यें (विउल के०) विपुल महोटो एवो जे (आगमारामा के०) आगम रूप आराम ते आराममांहेथी परमार्थें फूलनी परे (उद्धिणि के०) वीणी लइने (उ के०) वली (इह के०) ए समकेत सप्ततिकाना मा प्रकरणने विषे (मए के०) में (संगहिया के०) संग्रह कीधां एकठां कीधां. ते शेने अर्थें एकठां कीधां ? तो के (मंदमईणं के०) मंदमति एटले तुछ ठे मति जेनी तेवा नव्य जीवोने (सरणहेकं के०) स्मरणहेतुने काजे एकठां कीधां. जेम माली महोटा आरामथकी फूल लेइ चंगेरी नरे, पठी देवगृहें अथवा घरे आवीनें तेनी माला गुंथे ते श्रीजिनप्रतिमानो नोगमां आवे, तथा व्यवहारीया अने राजा प्रमुखने नोगमां आवे तेम विपुल एवा सिद्धांतरूप आरामथकी आ शडसठ बोलरूप पुष्प लइने ए समकेत सप्ततिका नामा प्रकरणरूप चंगेरीमांहे माला रूपें एकठा कीधां ठे, ते नव्यजीवोने कंठे करवाने अर्थें कीधा ठे. एटलें नव्यजीवोनें काम मां आववा माटे कीधा ठे, ए नाव ठे ॥ ६६ ॥

हवें एना परिज्ञानथकी शुं फल थाय ? ते कहे ठे.

॥ एसिं डुविह परिस्सा, दंसण सुद्धिं करेइ नवाणं ॥ सुद्धम्मि दंसण म्मि, करपल्लवसंठिउ मुरको ॥ ६७ ॥ अर्थः–(एसिं के०) ए समकेतना सडशठ नेदनी (डुविह के०) बे प्रकारनी (परिस्सा के०) परिज्ञा एटले परिज्ञान ते एक सामान्यथकी अने बीजी विशेषथकी ए बेहु परिज्ञा जे ठे, ते (दंसणसुद्धिंकरेइनवाणं के०) नव्यजीवने दर्शनशुद्धि एटले समकेतनी शुद्धि करे समकेत निर्मल करे. जेमाटें अनव्यजीवने तो समकेतज नथी, तो तेनी शुद्धि पण क्यांथकी होय ? जेम कोइ स्त्रीयें पुत्र प्रसव्योज नथी तो ते स्त्री, नामस्थापना पण कोनी करे ?

आगमना नाव बे प्रकारें ठे. एक आज्ञागम्यनाव अने बीजा युक्तिगम्यनाव तेमां जे निगोदादिकना विचार ते आज्ञागम्य नाव ठे. अने बीजा विचार युक्तिगम्यनाव ठे. ते जेम ठे, तेम गीतार्थें वखाणवा अने सद्दहणा करनारें तेमज सद्दहवा ॥ यतः ॥ आणागिज्जो अछो, आणाए चेव सो कहियवो ॥ दिठंतिउ दिठंता, कहणविहराहणा इयरा ॥ १ ॥ श्री

जिनन्नइगणिक्कमणेनाप्पुक्तं ॥ कब्बइय मइ डुब्बलेणं, तव्विहायरियविरहर्ज वावि ॥ नयगहयत्तणेण थ, नाणावरणोदएणं च ॥ १ ॥ हेउदाहरण संनव, असइसुठु जं विबुज्जिज्जा ॥ सव्वणुमयमवितहं, तहावि तं चिंतई मइमं ॥१॥ अणुवकय पराणुग्गह, परायणा जं जणाजुगप्पवरा ॥ जिय राग दोस मोहा, नन्नहा वाइणो तेणं ॥ २ ॥ इति प्रतिक्रमण सूत्रवृत्तौ ॥

तेमाटे जे नव्यजीव होय तेहज आज्ञारुचि होय ॥ यतः ॥ अहिगा रिणा इमं खलु, कारेयवं विवज्जए दोसो ॥ आणानंगा उच्चिय, धम्मोअस्स ई पडिबद्धो ॥ १ ॥ आराहणाइतिए,पुस्सं पावं विराहणाउ य ॥ एयं धम्म रहस्सं, विणेयं बुद्धिमंतेहिं ॥ २ ॥ इति सप्तमपंचाशके ॥ तथा ॥ विशि ष्टकष्टस्य कर्म क्षयं प्रयांत्यकारणत्वाज्जिनाज्ञया, एवं कर्मक्षयं प्रति का रणत्वादीनि नगवतीवृत्तौ ॥

माटे अनव्यजीव जे होय,ते आज्ञारुचि न होय तेने "खाधे पीधे दी वाली ने क्रगरे उच्चाट" एवो नास्तिकवादी होय तेमाटे 'नवाणं' ए पद कह्युं.

(सुद्धिम्मि दंसणंमि के०) जेने समकेत शुद्ध ठे,ते हुते थके तेने (क रपल्लवसंठिउमुरको के०) करपल्लव जे हस्त तेमांहे मोक्ष, संस्थित एटले रह्यो ठे. ए नाव जाणवो ॥ यतः ॥ सम्मत्तंमि उ लद्धे, पलिय पुहत्तेण स व्वउ हुज्जा ॥ खाउवसम खयाणं, सायरसंखं सया हुंति ॥ १ ॥ ६७ ॥

हवे ते समकेतशुद्धि केम थाय ? तेनो प्रकार कहे ठेः—

॥ संघे तिब्बयरम्मि, सूरीसु रिसीसु गुण महग्घेसु ॥ अप्पच्चउ न जेसिं, तेसिं चिय दंसणं सुद्धं ॥६८॥ अर्थः—(संघे के०) संघ जे साधु, साधवी, श्रावक, श्राविकारूप तेहने विषे तथा (तिब्बयरम्मि के०) तीर्थंकरने विषे तथा (सूरीसु के०) सूरिने विषे, पंचाचार प्रतिपालक एवा आचार्य नें विषे (रिसीसु के०) साधुने विषे (गुणमहग्घेसु के०) गुणेकरी महर्घ्य तेने विषे अर्थात् ए सर्वने विषे (जेसिं के०) जे विवेकी साधु तथा श्रावकने मन, वचन अने कायायें करी (अप्पच्चउन के०) अप्रत्यनीकपणुं न हो य एटले अविश्वास न होय अनास्ता न होय (तेसिंचियदंसणंसुद्धं के०) ते साधु तथा श्रावकनुंज दर्शन एटले समकेत शुद्ध होय, अर्थात् श्रीसं घ तीर्थंकरादिकने देखीने तेनी उपर जे अनास्ता न आणे, तेनुं समकेत शुद्ध होय, अने जे अनास्ता आणे, तेनुं समकेत शुद्ध न होय ॥ ६८ ॥

हवे जे एवा न होय तेनां लक्षण कहे छेः–

॥ जं पुण इय विवरीया, पल्लवग्गहा संबोह संतुष्ठा ॥ सुबहुंपि उज्जमं ता, ते दंसण बाहिरा णेया ॥ ६७ ॥ अर्थः–(जंपुण के०) जे वली (इय के०) ए पूर्वें कह्या तेथकी (विवरीया के०) विपरीत होय, एटले संघ, तीर्थंकर, आचार्य अने साधु, तेने विषे प्रत्यनीक होय (पल्लवग्गहा के०) पल्लवग्रहा तिहां पल्लव एटले छेहडो तेना जालनारा एटले जेम कोइकें रुणुं नांग्युं होय तेहनोज छेहडो पकडी बेसें, तेम कांइक शास्त्र न ण्या होय तेनाज अभिमानें संघादिकनो छेहडो पकडे, झाले, कहे के एनो प्रत्यु त्तर आप. एवी रीतें हुंकार तुंकार करे, बराबरी करे तेने पल्लवग्गहा कहीयें पण ते कहेवा होय? तो के (संबोहसंतुष्ठा के०) संबोध एटले पोतें कांइक नण्याथकी पोताना ज्ञानें करी संतुष्ट थयाथका होय, परंतु पूरण आगम ना नाव जाणे नहीं. तेमाटे जे कदाग्रह लीधो, ते मूके नहीं, एवा ज म्माली अने गोशाला सरखा जे होय, ते (सुबहुंपिउज्जमंता के०) घणुये तप संयम क्रियाने विषे उद्यम करता होय तो पण (ते के०) ते जीवो (दं सणबाहिरा के०) समकेतदर्शनथकी बाह्य छे एम (णेया के०) जाणवा एटले ते जीवो समकेतथी रहित जाणवा ॥ यतः ॥ दाणं डुरकनिहाणं, क ठ्ठाणं तहा अणुठ्ठाणं ॥ सम्मत्त विरहियाणं, तवोविसं तावगो नणिउ ॥ १ ॥ इति श्रीहरिनद्रसूरिकृत मूलशुद्धिप्रकरणे ॥ तथा जेणे एक तीर्थंकरादिक नी हेलना करी, तेणे अनंत तीर्थंकरादिकनी हेलना करी, एम समजवुं. ॥ यतः ॥ एगंमि हेलियं मिवि, सवे ते हेलिया मुणेयवा ॥ नाणाईण गु णाणं, सवत्रवि तुल्ल नावाउ ॥ १ ॥ इतिपुष्पमालाप्रकरणे ॥ माटे जे सं घादिकनी आशातना करे, तेनी पासें समकेत न पामीयें, अनें समकेत विना घणांय तप जपादिक जे कांइ करे, ते सर्वमुक्तिना मूलने अर्थें न हो य केटलाएक अनव्य जीव पण साधुने वेशें जैनी क्रियाने बलें करी नवमी ग्रैवेयकें जाय, तो पण ते प्रशंसवा योग्य न थाय ॥ यतः ॥ ग्रैवेयकाप्तिर प्येवं, नातः श्लाघ्या सुनीतितः ॥ यथान्यायार्जिता संप, द्विपाकं विरसा त्वतः ॥ इति श्रीहरिनद्रसूरिकृतयोगबिंदौ ॥ ६७ ॥

हवे एने विषे सुंदरनो दृष्टांत कहे छेः–जंबूद्वीपना पूर्वमहाविदेहें मणि वती नामा देशनेविषे मणिवती नामा नगरी ते परिणामे पण मणिवतीज

छे, तिहां सुस्थित नामें शेठ परमसम्यग्दृष्टि बार व्रतधारी श्रावक रहे छे, तेने घेर एक वातागरो विनयादि गुणें करी संयुक्त कामकाज करवाने निपुण, सुंदर एवे नामें छे, अने परिणामे पण सुंदर छे. ते एकदा पुण्ययोगें साधुनी संगति पामीनें सिद्धांतनां रहस्य प्रत्यें सांजलतो हवो, तेणे गुरुनी पासेंथी व्रत लीधुं जे मह्रारे अष्ट प्रकारी पूजा कस्या विना तथा छती जोगवाइयें साधुने वांद्याविना जमवुं नहीं. ते नियम दृढ आस्तायें पाले छे. ते प्रकृतियें अल्पकषाय वालो देवगुरुने विषे जक्तिवंत हतो, तेथी अंतें पंचपरमेष्ठीनुं स्मरण करी समाधि मरण पामी तिक्षशिला नगरीयें त्रिविक्रम नामें राजा तेनी सुमंगला राणीनी कुखने विषे पुत्रपणे आवी उपनो. राणीयें पूर्णकलशनुं स्वप्न दीठुं, ते स्वप्न राजानी आगल कह्युं. राजायें कह्युं तुजने उत्तम राज्य धुरंधर पुत्र थाशे, ते सांजली राणी हर्ष पामी.

अनुक्रमें गर्ज वधते थके राणीने दोहोलो उपनो तेथी डुर्बल थवा लागी. राजायें डुर्बलतानुं कारण पूछ्युं तेवारें राणीयें कह्युं के हुं हाथणी उपर बेसुं, अने तमें छत्रधार थाउ. एवी रीतें हुं गामने चोराशी चहूटे फरुं तथा उद्याननी क्रीडा करुं, याचकने दान आपुं, दीनजननो उद्धार करुं एवो मुजने दोहोलो उपनो छे, ते हवें हुं शी रीतें तमोने छत्रधारक करीने दोहोलो पूर्ण करुं? राजायें ते दोहोलो पूर्ण कस्यो.

अनुक्रमें पुत्रजन्म थयो राजायें बंदीवान प्रमुख मूक्या, घणो महोत्सव कस्यो, वली ए पुत्र गर्जमां आवें थके एनी माता घरमांथी निकली उद्याने क्रीडा करवा लागी, तेमाटें एनुं निर्गतमुख एवुं नाम दीधुं. अनुक्रमें तेपुत्र बालजाव मूकी चंद्रमानी पेठें सर्वकलामां प्रवीण थयो.

एवामां वैशाली नगरीनो राजा वासव नामें छे, तेनी कामकीर्त्ति नामें पुत्री छे, ते निर्गतमुख कुमरना गुण सांजलीने तेनी उपर अनुरक्त थइ थकी पोताना माता पिताने कहेवा लागी के हुं निर्गतमुख कुमरनी साथें मारुं पाणिग्रहण करीश. अन्य पुरुष सर्व मह्रारे पिता ज्राता स्थानकें छे. तेमाटें मुजने तिहां स्वयंवरा मोकलो,ते पुत्रीनुं वचन सांजली माता पिता पण घणी सज्जाइ सहित ते पुत्रीने तिहां मोकलतां हवां. ते पुत्रीयें पण आगलथकी सांपरायण नामा ब्राह्मणने मोकल्यो, तेणे जइ त्रिविक्रम नृपने आशीर्वाद देइने कह्युं के हे स्वामी! वैशालिका नगरीनो स्वामी वासव

नामें राजा तेनी कामकीर्त्ति नामें पुत्री छे, ते तहारा पुत्रना गुण सांजली अनुरक्त थइ थकी परणवा आवे छे, ते वात सांजली त्रिविक्रम राजा हर्ष पाम्यो. पढी केटले एक दिवसें कन्या पण आवी पिताना कहेवाथकी कुमरें पाणिग्रहण कर्युं बेहुने परस्परें चंद्रमा रोहिणीनी परें प्रीति थइ.

हवे रणसिंह नामें सीमाडीयो राजा छे ते त्रिविक्रमराजानी आज्ञा मानतो नथी घणो उन्मत्त थयो छे, तेनी उपर त्रिविक्रम राजा कटकलइ चडे छे, ते वात जाणी कुमरें आवी पिताने कह्युं के हुं पुत्र, सन्नाह पहेरवा योग्य छतें तमें सन्नाह पहेरो, ते युक्त नहीं. माटे तमें बेग रहो. हुं रणसिंहनें वश करी आवीश. ते वचनामृत सांजली राजा हर्ष पामीने घेर रह्यो अने कुमरने सैन्यनी साथें मोकल्यो. कुमर तिहां जइ प्रजातनो सूर्य जेम अंधकारनो नाश करे, तेम वैरीरूप अंधकारनो नाश करी रणसिंह राजाने वश करी बांधी आणीने पिताने पगे लगाड्यो, जय पामी जयनिशान वजडाव्युं.

एकदा त्रिविक्रम राजायें पुत्रने राज्ययोग्य जाणी राज्य आपी पोतें गुरु समीपें दीक्षा लीधी. पाछल श्रीनिर्गतमुख राजा राज्य पाले छे, जेहवो नामें तेहवोज परिणामें पण प्रजापालक थयो. हवे ते राजाने युवराज मदन नामें छे तथा सुमति नामें प्रधान छे अने सुवचन नामें दूत छे, ते त्रणे जण अहंकार करवा लाग्या जे अमें छैयें, तो ए राजानुं राज्य चाले छे, अमारा पसायथी राजा सुखें बेसी रहे छे. अनुक्रमें राजा ते त्रणेनां गर्वित चित्त जाणी तेमनो गर्व उतारवाने अर्थें सेना साथें लइ पोतें देश जोवा निकल्यो, ते देशने जोतो जोतो सीमाडीया राजाउने वश करतो करतो अनुक्रमें पाछो पोताना देशनी गडासंधियें आव्यो.

तेवारें राजा, मदन युवराजने तथा सुमति प्रधान अने सुवचन दूतने कहेवा लाग्यो जे आपणे चारे जण मली पोत पोताना जाग्यनी परीक्षा करी जोइयें के कहेनां कहेवां जाग्य छे. एम कही बीजा मंत्रीने राज्य जलावी एकेकुं खड्ग हाथमां लइने चारे जण खाली हाथें निकल्या, ते चालता चालता कांची नगरीयें आवी थाका थका तलाव उपर बेठा. दातण कीधा पढी राजायें कह्युं आज जोजननी सामग्री कोण करावशे ? तेवारें सुवचन दूत बोल्यो तमें त्रणे जण इहां बेसो. जोजननी सामग्री आजे हुं करावीश. एम कही दूत नगरमांहे गयो. एक व्यवहारीयाने हाटें जइ बेठो. हवे ते दिवसें नगरमां

हे महोत्सव छे, परगामनां लोक घणा व्यापारने अर्थे आव्यां छे, हाट उपर ग्राहकोनी भीड छे, अने व्यवहारीयो हाट उपर एकलोज छे तिहां सुवचने तेने सहाय करी, तेथी ते व्यवहारीयानो व्यापार घणो थयो अने सारो लाभ थयो, व्यवहारीयो हर्ष पामी हाट बंध करी पोताने घेर जमवा जाय छे, तेवारें सुवचनने कहे छे, के हे महापुरुष! उठो म्हारे घेर जमवा चालो. तेने सुवचनें कह्युं हुं एकलो नथी म्हारी साथें त्रण जण बीजा छे, ते विना हुं एकलो जमुं नहीं. तेने शेठें कह्युं तमें जाउ. ते त्रणे जणने म्हारे घेर तेडी लावी भोजन करावो, तेवारें सुवचन दूत आवी त्रणे जणने तेडी गयो तेमने व्यवहारीयें भली सझाइयें भोजन कराव्यां, तेमने भोजन करावतां शेठने सवा दाम खरच थयो.

बीजे दिवसें रत्नपुर नगरने विषे गया. तिहां पण परिश्रांत थया थका तलावें जइ हाथ पग धोइ दातणपाणी करी बेठा, निर्गतमुख राजायें कह्युं हे युवराज! आज भोजन करवानो तहारो वारो छे, माटे भोजन कराव. ते सांभली युवराज नगरमांहे आव्यो तेने रूपें करी मन्मथ जेहवो हतो माटे तिहां एक पुरुषद्वेषिणी मगधा नामें वेश्या छे, तेणे दीठो. तेथी ते कामातुर थइ. तेवारें बेटीनो अनुराग जाणी अक्कायें दासी मोकली, तेने तेडावी लीधो ते पण मगधा वेश्यानुं रूप देखी हर्ष पाम्यो. परस्परें द्यूतक्रीडा करवा लाग्या, एम करतां भोजन वेला थइ, तेवारें वेश्यायें कह्युं स्वामी उठो भोजन करीयें? तेणें कह्युं म्हारा त्रण मित्र तलावें बेठा छे, तेमना विना हुं भोजन करुं नहीं. वेश्यायें कह्युं जाउ त्रणेने तेडी लावो. भोजन आपणे घेर करावो. ते सांभली त्रणेने तेडी आव्यो. स्नानपूर्वक भलि सझाइयें भोजन कराव्यां. तेने भोजन करावतां पांचशो रौप्यक खरच लाग्यो.

त्रीजे दिवसें पंचपुर नामा नगरें गया तिहां पण तेमज परिश्रांत थकां तलावनी पालें पूर्वोक्त सर्व सझाइ करी बेठा. राजायें मंत्रीश्वरने कह्युं आज भोजन करावववाने तमारो वारो छे माटें तमे नगरमां जइ भोजन करावो. मंत्रीश्वर नगरमां आव्यो, अनुक्रमें नगर जोतो जोतो राज्यसभायें गयो, आदर मान महत्त्वसहित राजाने प्रणाम करी बेठो. एवामां तिहां एक झगडो आव्यो छे, ते आ प्रमाणें छे. के कोइ दूर ग्रामने विषे एक व्यवहारीयो वसे छे, तेनी बे स्त्री छे तेमां लघुस्त्रीने पुत्र थयो, तेवारें व्यवहारीये

काल कीधो. लघु शोक्यनो पुत्रमहोटी शोक्यें पाल्यो, तेथी ते तेहनोज कहेवा
णो परस्पर बेहुने मांहो मांहे प्रेम हतो,माटें लघु शोक्यें कांइ मनमां आ
ण्युं नहीं, अनुक्रमें द्रव्यने अर्थें वढवा लागी. एक बीजाथी जूदी थइ तेवा
रें महोटी शोक्यें कह्युं पुत्र महारो छे,तहारे एनी साथें श्यो संबंध छे ? ल
घु शोक्यें कह्युं ए पुत्र महारो छे गामना लोकोने कांइ पण समजण पडती
नथी तेवारें ते बेहु स्त्री वढती वढती राज्यसनायें आवी, राजा आगल
पोतपोतानां दुःख रोवा लागी. राजाने पण कांइ समजण पडी नहीं. तेवा
रें सुमतिप्रधान जे प्राहुणो थइ आव्यो छे, तेणे कह्युं स्वामी मुऊने हुकुम
आपो,तो हुं ए विवादनो निवेडो करी आपुं. राजायें कह्युं घणुंज रूडुं. नले
न्याय करी आपो ! राजानो आदेश पामी सुमति प्रधानें कह्युं तमें बेहु
जणी मांहोमांहे समजी ल्यो. तो सारी वात छे. नहींतर द्रव्य अर्धो अर्ध
वहेंची ल्यो,अने पुत्रना बे कटका करी एकेको कटको वहेंची ल्यो. ते सांन
ली महोटीयें विचार्युं जे पुत्र मरी जाय तो महारे शुं छे, पण द्रव्य तो अ
र्धुं मने मले छे, जो पुत्र जीवतो रहीने एनो उरे, तो द्रव्य बधुं पुत्रने मली
जाय अने पुत्र तो महारो नथी, एनोज छे, एम चिंतवी तेणें हा पाडी. पण
लघु स्त्रीयें विचार्युं जे महारो अंगजात पुत्र जीवतो हशे, तो महारे काम
आवशे, पण पूत्र मूआ पछी हुं द्रव्यने शुं करुं ! पुत्रने जीवतो देखीश तो
पण एम जाणीश जे महारो पुत्र छे. एवुं तत्त्व विचारी ते उतावली बोली
जे एम हुं नहीं करीश. नलें ए पुत्र महारी वडी शोक्य लइ जाय, अने द्रव्य
पण एनेज आपो. हुं महारा पुत्रने जीवतो देखीनेज संतोष पामीश, महा
रे द्रव्य खपतुं नथी. महारुं एकलीनुं पेट नरवा माटें हुं लोकोनुं काम का
ज करीश ! पण पुत्रने मारी नाखवानो न्याय क्यांय पण सांनल्यो नथी,
एवी रीतें तेनुं लोही तप्युं देखी प्रधानें कह्युं पुत्रनी खरेखरी साची माता
एज छे,माटें एने पुत्र तथा द्रव्य आपो अने महोटीने पुत्रनी उपर निःस्ने
हीपणुं जोइ तेने खोटी जाणी काढी मूकी. एवी तेनी बुद्धि देखी राजा खुशी
थयो. अने नोजनादिकें करी चारे जणने संतोष्या, ते राजाने नोजन क
रावतां चार हजार द्रव्यनो खरच थयो.

हवे चोथे दिवसें हस्तिनागपुरें गया, तिहां राजा पछेडी उढी महोटा
वृक्षनी नीचें निश्चिंत जइ सूतो,ऊंघ करवा लाग्यो, ते जोइ त्रण जण हस

वा लाग्या के आजे राजा पोतानो वारो जाणीने सूइ रह्यो. हवे आजे आपणे भोजन शी रीतें करशुं? ते त्रण जण जेहवामां एवी वात करे छे, तेहवामां ते हस्तिनागपुरनो अपुत्रीयो राजा मरण पामेलो छे,तेवारें मंत्रीश्वर प्रमुखें पंचदिव्य कीधां छे,ते पासेंना नगरने विषे भमतां भमतां क्यांहि योग्यपुरुष न पाम्या,तेवारें नगरनी बाहिर निर्गतमुख राजा सूतो छे,निद्रा करे छे,तिहां ते पंचदिव्य आव्यां,राजा उपर अभिषेक कलश ढोल्यो,हाथीयें शुंढमां लइ तेने पोतानी उपर चडाव्यो! अश्वें हेंषारव कर्यो. छत्र चामर विकस्वर थयां,त्रण जणने पूछ्युं एनुं नाम शुं छे? तेणें कह्युं एनुं निर्गतमुख नाम छे,तेवारें समस्त लोक बोल्या आपणो निर्गतमुख राजा थयो,एम कही प्रणाम करता हवा. राजा, पंचदिव्यनी साथें तथा त्रणमित्रनी साथें सिंहासनें जइ बेठो, तिहां जयश्री नामें राजपुत्री छे,तेनुं पाणिग्रहण कर्युं, ते दिवसें भोजन करावतां सवा लाख द्रव्य बेठुं. ए रीतें राजानुं भाग्य कह्युं.

हवे तिहां नवो राजा राजगादीयें बेठो तेने जोइ अन्यायी लोक आज्ञा न मानता हवा. तेवारें राजायें प्रतिहारोने कह्युं जे अन्याय करे तेनुं निवारण करजो. ते सांभली प्रतिहार हसवा लाग्या, जे ए राजाथकी राज्य ते केम चालशे? राजायें तेने हसता देखीने भींतीउपर चित्रेला चित्रधरने कह्युं के जे आज्ञा न मानें, तेने सारी पेठें शिक्षा आपजो. एवुं सांभलतांज चित्रधरो उठीने पहेला हास्यकरनारा प्रतिहारो प्रत्यें ताडवा लाग्या, ते आश्चर्य देखी सर्व वैरी जन आवीने राजाने पगें लाग्या, जे माटे मूर्ख जनने जिहां सुधी ताडना न करीयें, तिहां सुधी पाधरा थाय नहीं. अनुक्रमें ते वात सीमाडीया राजायें सांभली तेथी तें पण सर्व आवी वश थया.

ए आश्चर्य जोइनें युवराज, मंत्री, तथा दूत, ए त्रण जणनुं मान गली गयुं. अने तेउ जाणवा लाग्या जे ए राजानुं भाग्यज महोटुं छे,एने भाग्यें ज राज्य चाले छे. एमां आपणुं कांइ पराक्रम नथी.

एकदा बे पुरुष आवीने निर्गतमुख राजा प्रत्यें विनवता हवा, के हे स्वामीन्! श्रीपुरनगरने विषे नरकेशरी नामें राजा राज्य करे छे, ते समस्त राजाउने तृण समान गणे छें, तेहनी जयलक्ष्मी नामें पुत्री छे, ते महारूपवंत छे विधातायें घणा आदरसहित घडी छे, ते कुमरी एकदा सभामां राजाने उत्संगें बेठी थकी तेने एक निमित्तिये दीठी, राजाये पूछ्युं, ए पु

त्रीनां लक्षण कहेवां ठे ? निमित्तियायें कह्युं जे पुरुष ए पुत्रीनुं पाणिग्रहण करशे, ते सकलपृथ्वीनुं पाणिग्रहण करशे ? एवो एना लक्षणें करी जाणुं बुं. ते सांजली राजायें विचार्युं जे एनुं हुंज पाणिग्रहण करुं जेथकी समस्त पृथ्वीनो मालक थाउं ते पाप वार्त्ता मंत्रीश्वरें जाणी तेवारें राजाने निवार्यो जे आ अकार्य तमें करशो मां. ते सांजली राजायें नृतने कह्युं, ए मंत्रीश्वरने मारो. ए म्हारी वस्तु ठे, तेने म्हारुं मन मानशे, तेम हुं करीश, तेमां एनें वचमां आववानुं शुं काम ठे ? हवे ते कन्याने प्रधाने कोइ प्रछन्नघरने विषे ठानी राखी, वली ते वातनो नेद कोइक पुरुषें राजाने कह्यो. तेथी राजा क्रोधें चड्यो थको प्रधानने मारी नाखवानो उपाय चिंतवे ठे,ते जोइ अमो बेहु जणने प्रधानें तमारी पासें मोकलीने कहेवराव्युं ठे,के तमो आवीने ए कन्यानुं पाणिग्रहण करो. राजाने पापचिंतवणाथी वारो.

ते वात सांजली प्रधानने राज्य नलावी हाथमां एक खड्ग लइ ते बे पुरुषने आगल करीने निर्गतमुख राजा, तिहांथी चाल्यो, ते श्रीपुरनगरें आवी पहोतो. तिहां मंत्रीश्वरें तेनी साथें जयलक्ष्मी कन्यानुं पाणिग्रहण कराव्युं. अने श्रीपुरनगरनुं राज्य आपी, तेनी आज्ञा प्रवर्त्तावी. नरकेशरी राजा शीयालीयानी पेठें बीहीने नासी गयो. ए रीतें निर्गतमुख राजा, पूर्वनवना पुण्यप्रनावें करी त्रणे राज्यनुं सुख नोगववा लाग्यो.

एवामां तिक्षशिला नगरीथी एक दूत आवीने कहेवा लाग्यो के स्वामी ! तमारा पितानी नगरी तमारा विना शून्य करी जाणजो. हालमां तमारी नगरीने शूरतेज राजायें वींटी ठे, ते वात सांजलतांज राजा नृकुटिनीषण थइ सैन्य सज्ज करीने चड्यो,तिहां जातां वार संग्राम करी शूरतेज राजाने आकरे बंधनें बांध्यो. तेने केटलाएक दिवस राखी वश करी आज्ञा मनावी, पोतानो सेवक करी मूक्यो, तेणें पण पोतानी पुत्री यशोमती एवे नामें हती, ते निर्गतमुख राजाने परणावी. राजायें तिक्षशिला नगरीयें म्होटा महोत्सवें प्रवेश कीधो. इहां चार स्त्रीनी साथें विषयसुख नोगवतां त्रण राज्य पालतां, दिवस निर्गमन करे ठे. जता कालने जाणतो नथी.

एकदा राजा विचारे ठे, जे में पूर्वनवें श्या पुण्य कीधां हशे ! के जेना योगें हुं एटली राजक्रुद्धि पाम्यो ? एवामां उद्यानपालें आवी विनव्यो के हे राजेंड ! तहारा नंदनवनने विषे चार ज्ञानना धारक श्रीधर्मघोषसूरि प

धास्या ढे ते वात सांनली उद्यानपालकने घणुं प्रीतिदान आपी, चार अं तेउर सहित राजा वांदवा माटें गुरुनी पासें आव्यो. तिहां गुरुने वांदी यु क्तस्थानकें बेगे. आचार्यें धर्मदेशना देवा मांमी ॥ श्लोक ॥ उत्सर्गे परमे ष्ठिमंत्रपठनं देवार्चनं वंदनं, प्रत्याख्यानविधानमागमगिरामश्रांतमाकर्णनं ॥ कालेऽर्हद्गुरुसंविन्नक्तमशनं, न्याये न वित्तार्जनं, शीलावश्यकशीलनैरनुदि नं कार्यं शुनाः सेवनं ॥ १ ॥ एवुं देशनामृत पान करीने हर्षवंत थको रा जा गुरुने पूढतो हवो, के नगवन्! में पूर्वनवें श्यां पुण्य कीधां ढे के जेथकी एवी राज्यसंपदा पाम्यो? आचार्यें कह्युं तुं पूर्वनवें व्यवहारियाने घेर सुंदर नामें कर्मकर हतो, तिहां साधुने संयोगें धर्म पामीने देव जुहास्या विना तथा गुरुने वांद्या विना हुं जमुं नहीं एवो तें नियम लीधो. ते शुद्ध मनथी पाल्यो, ते पुण्यना योगें तिहांथकी काल करीने इहां एवी राज्य संपदा पाम्यो ढो. हवे इहांथी काल करी देवतानां सुख पामीश. सातमे नवें मोक्षसुख पा मीश. एवा आचार्यना मुखरूप कुंनथकी वचनामृत पान करीने राजा, संतोष पामी समकेत मूल बार व्रत गुरुमुखें उच्चरी वांदी पोताने घेर आव्यो.

पढी देवपूजा, गुरुपूजानां फल देखी विशेषथकी चैत्यनिर्माणादिक ध र्मकार्य करी श्रीजिनशासननो दीपक थयो. एवी रीतें राज्यसुख नोगवी सातमे नवें मोक्षें जाशे. ए श्रीदेवगुरु नक्तिने विषे सुंदरनी कथा सांनली ने हे नव्यो! तमें देवगुरुनी नक्ति करजो ॥ इति ॥

हवे शास्त्रनुं तत्त्वनूत वाक्य कहे ढेः—

॥ इय नाविऊण तत्तं, गुरुआणाराहणे कुणह जत्तं ॥ जेण सिवसुरक बीयं, दंसणसुद्धी धुवं लहह ॥७०॥ अर्थः—(इय के०) ए पूर्वोक्त प्रका रें कह्युं जे (तत्तं के०) तत्त्व श्रीजिनधर्मनुं सारनूत सम्यक्त्व तेने (ना विऊण के०) नावें करी चिंतवीने तेनी वासना राखीने (गुरुआणाराह णे के०) श्रीगुरुनी आज्ञा आराधनने विषे (कुणहजत्तं के०) यत्नने क रो. हे नव्यो! एहवुं संबोधनपद बाहिरथकी लेवुं. गुरु आज्ञा आराधनने विषे यत्न करो. एवुं कह्युं ते शा माटे? तो के जेमाटे देवनुं आराधन जे करवुं, ते पण हमणां गुरुने आयत ढे, कारण के देवतत्त्व जे ढे, ते पण गुरुना कह्याथी जाणीयें ढैयें. एरीतें देवतत्त्व अने धर्मतत्त्व ए बे गुरुने आयत्त थयां, ए बेनुं स्वरूप जो गुरु समजावे, तो समजीयें, तेमाटे जेणें शु

द प्ररूपक सुविहित नट्टारक श्रीविजयदेवसूरि प्रमुखनी आज्ञानुं आराधन कीधुं,तेणें देवनी आज्ञानुं पण आराधन कीधुं,तेथी " गुरुआराहणेकुणह जत्तं " ए पद कह्युं ॥ यतः ॥ महागरा आयरिया महेसि, समाहि कामे सुयसीलबुधिए ॥ संपाविउ कामेणुत्तराइं, आराहईतोसहधम्मकामी ॥ १ ॥

(जेण के०) जेणे गुरु आज्ञा आराधन यत्ने करी कीधुं तेणे (शिवसुखबीयं के०) शिवसुख जे मोक्ष सुख तेनुं बीज एटले कारणनूत एहवी (दंसण सुद्धी के०) समकेतदर्शननी शुद्धि जे निर्मलता ते प्रत्यें (धुवंलहइ के०) निश्चें पामी. अने जेवारें जीवने समकेतशुद्धि आवी तेवारें ते जीवने अवश्य मोक्षसुख आव्युं. केम के जे जीवने क्षायिक समकेत आव्युं ते जीव उत्कृष्टा चार नव, संसारने विषे करे ॥ यतः ॥ तइय चउत्ते तेमिउ, नवम्मि सिव्वंति दंसणेखीणे ॥ जं देवनिरय संखाउ चरम देहेसु ते हुंति ॥१॥ दर्शनशुद्धि पण तेवारेंज कहीयें, के जेवारें जीव क्षायिक समकेत पामे. इहां शिव एवुं पद आणवे करी ग्रंथकारें ग्रंथने विषे अंतने पातें मंगलाचरण कीधुं ॥ यतः ॥ मंगलादीनि मंगलमध्यानि मंगलावसाना निशास्त्राणि विदुषामुपादेयानि निःश्रेयससाधकानिजवंतीति ॥ ७० ॥

॥ इति श्रीतपागछालंकार सार नट्टारक श्रीहीरविजयसूरीश्वर पट्टालंकार हार सार नट्टारक श्री ५ श्रीविजयसेनसूरीश्वर पट्टप्रनाकर नट्टारक श्री ५ श्रीविजयदेवसूरीश्वर विजयमानराज्ये महोपाध्याय श्रीसकलचंद्रगणि शिष्योपाध्याय श्रीशांतिचंद्रगणि शिष्योपाध्याय श्रीरत्नचंद्रगणिनिः श्रीसम्यक्त्वरत्नाधिष्ठानश्रीसुरतबंदरादिचतुःसंघस्याष्टम्यादिपर्वसु श्रीसम्यक्त्व सप्ततिका प्रकरणबालावबोधे सम्यक्त्वस्थान षट्स्वरूपनिरूपणोनामा द्वादशोधिकारः समाप्तः ॥ १२ ॥

॥ प्रशस्तिश्लोकाः ॥

श्रीवीरपट्टांबुज नास्करानः, श्रीमत्सुधर्मागणनृद्बनूव ॥ अद्यापि वाणी प्रसरीसरीति, यस्य प्रनोः पंडितवक्त्रवासा ॥ १ ॥ बनूव तत्पट्ट परंपरायां, सूरिर्जगच्चंद्र इति प्रसिद्धः ॥ लेने तपोगछ इति प्रसिद्धिं, यस्माद्गुणोयं प्रथितावदातः ॥ २ ॥ परंपरायामपितस्य जातः, साधुक्रियामार्गविकासनास्वान् ॥ आनंदपूर्वोविमलाग्रसूरि, जगज्जनानंदकरः प्रसिद्धः ॥ ३ ॥ तस्यापि

पट्टे विजयाग्रदानः,सूरिर्बनूव प्रबलप्रतापः ॥ राशिर्गुणानां किल यस्यवारां, राज्ञोः समानीकुरुते कवींद्रः ॥ ४ ॥ बनूव सूरिः किल तस्य पट्टे, श्रीहीरपूर्वो विजयोर्जितश्रीः ॥ लेने प्रतिष्ठां किलनूयसीं यो,नरेंद्रलक्ष्मींद्रकृतामजस्त्रं ॥५॥ तस्यापि पट्टेऽजनि सूरिराजः, सेनोत्तरश्रीविजयोयशस्वी ॥ ततार जैनागम वारिराशि, नावः स्वबुध्योत्तमनाग्यनाग्यः ॥ ६ ॥ विजयते किल तत्पदसेवया, सुलनसूरिपदं प्रणयी गुणैः ॥ विजयदेवगुरुर्गरिमांबुधि, स्तपगणे गगने किमु चंद्रमाः ॥ ७ ॥ श्रीआनंदविमलगुरुशिष्याः, श्रीसहजकुशलनामानः ॥ लुंपाकमतमपास्य, गजमलमिव निर्मलाजाताः ॥ ८ ॥ तेषां च शिष्य मुख्याद्वाचकवरसकलचंद्रनामानः ॥ चंद्राइव वचनसुधां, वलृषुर्येविबुधवरपेयां ॥९॥ श्रीशांतिचंद्रावरवाचकेंद्रा, स्तेषां च शिष्या बहुशिष्यमुख्याः ॥ बनूवुरुद्दामगुणैरुपेताः, प्रनावकाः श्रीजिनशासनस्य ॥ १० ॥ श्रीमज्जंबुद्वीप,प्रज्ञप्तेर्वृत्तिविरचनाचतुराः ॥ येषां बुद्धिं सुरगुरु,रपीह ते विश्वगेयशुनयशसां ॥ ११ ॥ गीतार्थाः ॥ तेषां गुरूणां गुणसागराणां, प्रसादलेशं समवाप्य चक्रे ॥ अनेकशास्त्रार्थविचारसारः, परोपकृद्वाचकरत्नचंद्रः ॥१२॥ सम्यक्त्वसप्तत्यमलप्रबोधं, बालावबोधं पटुनिः सुबोधं ॥ सम्यक्त्वरत्नप्रवरप्रकाश,नामानमेनं, समयानुसारात् ॥ १३ ॥ युग्मं ॥ रस मुनि रस शशिवर्षे, (१६७६) पौषे शुक्ले त्रयोदशीदिवसे ॥ सूरतबंदरमुख्ये,परमार्हत्संघरमणीये ॥ १४ ॥ इति रत्नचंद्रनामा चकार बालावबोधमतिसुगमम् ॥ सम्यक्त्वसप्ततिवर, प्रकरणतत्त्वार्थबोधकरं ॥ १५ ॥ सूर्याचंद्रमसौ यावत्, यावत्सप्तधराधराः ॥ यावत्तपागणस्तावदिदं जयतु पुस्तकं ॥ १६ ॥ इति महोपाध्याय श्रीशांतिचंद्रगणि शिष्योपाध्याय श्रीरत्नचंद्रगणिविरचित सम्यक्त्व सप्ततिकाबालावबोधग्रंथः समाप्तः ॥ श्रीरस्तु शुनंनवतु ॥

इति श्री दर्शनसित्तरी ग्रंथ समाप्त तत्समाप्तोयं

जैनकथा रत्नकोषस्य तृतीय नाग समाप्त ॥